सूरह ताहा

२०.सूरह ताहा

नामः शुरू में यह शब्द आए हैं। इस मुनासिबत से सूरह का नाम ताहा है।

नाज़िल होने का समयः मक्की है (अर्थात् हिजरत से पहले की है) और हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु के ईमान लाने से पहले (नुबुव्वत के लगभग छटे वर्ष) अवतरित हो चुकी थी। क्यों कि हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्ह के ईमान लाने की जो घटना इब्ने इस्हाक़ ने बयान की है उस में इस बात का उल्लेख है कि उन की बहन ने उन को जो ग्रंथ दिया था उस में सूरह ताहा लिखी हुई थी और जब हज़रत उमर ने इस की आरम्भिक आयतें पढ़ीं तो बोल उठे कितना उत्तम और कैसा प्रतिष्ठित कलाम है यह। (सीरत इब्ने हिशाम खण्ड १ पृ. ३६७)

केन्द्रीय विषयः वह्य और रिसालत का उद्देश्य एवं अभिप्राय बयान करना और उस का इन्कार करने वालों को सचेत करना है।

कलाम की तरतीबः आयत १ से ८ में क़ुर्आन और उस हस्ती का परिचय जिस के आदेश की हैसियत से यह अवतरित हो रहा है।

आयत ९ से ९८ में हज़रत मूसा को ईश-दूत नियुक्त किए जाने की घटना वर्णित हुई है तथा उन की दअवत को प्रस्तुत करते हुए उन का विरोध करने वालों के बुरे अन्जाम को दर्शाया गया है।

आयत ९९ से ११२ में हज़रत मूसा के वृत्तांत से जो पाठ मिलता है उस की ओर संकेत करते हुए क़ियामत के हालात बयान किये गए हैं ताकि ईशदूतत्व (रिसालत) का इन्कार करने वाले सचेत हों।

आयत ११३ और ११४ में बयान का संकेत फिर क़ुर्आन अवतरण के उद्देश्य की ओर मुड़ गया है।

आयत ११५ से १२३ में आदम का वृत्तांत बयान हुआ है और उस का यह पक्ष उजागर किया गया है कि मानव जाति का जब इस पृथ्वी लोक पर आरम्भ हुआ तो उस पर यह तथ्य पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया गया था कि अल्लाह तआला मानव जाति की हिदायत तथा उस के मार्गदर्शन के लिए वह्य (प्रकाशना) तथा रिसालत (ईश्दूतत्व) का सिलसिला जारी करेगा। तो जो लोग अल्लाह के मार्गदर्शन का अनुसरण एवं अनुपालन करेंगे वही शैतान द्वारा भटकाए जाने तथा उस के कुपरिणाम से सुरक्षित रहेंगे।

आयत १२४ से १२९में अल्लाह की आयतों से विमुखता बरतने का अन्जाम बयान किया गया है।

आयत १३०से १३२ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के माध्यम से ईमान वालों को सब्र, धैर्य एवं दृढ़तापूर्वक जमे रहने का निर्देश दिया गया है और तसल्ली दी गई है कि भला अन्त उन्हीं के लिए है।

आयत १३३ से १३५ में इन्कार करने वालों के आरोपों का उत्तर दिया गया है।

२०.सूरह ताहा

سُوْرَةُ طٰهٰ

आयतें : 135

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. ता - हा [1]

طٰهٰ ①

2. हम ने तुम पर क़ुर्आन इस लिए नाज़िल नहीं किया कि तुम मुसीबत में पड़ो।

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ②

3. यह तो एक याददेहानी (नसीहत) है उन के लिए जो डरें [2]।

اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ③

4. उस का उतारा हुआ है जिस ने ज़मीन और बुलन्द आसमान पैदा किए [3]।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ④

5. वह रहमान अर्श पर बुलन्द है [4]।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ⑤

6. उसी का है जो कुछ आसमानों में है। जो कुछ ज़मीन में है, जो कुछ इन दोनों के बीच है और जो कुछ मिट्टी के नीचे है [5]।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ⑥

7. यदि तुम पुकार कर बात कहो तो (उस की शान तो यह है कि) वह चुपके से कही हुई बात और अत्यंत छिपी बात तक को जानता है [6]।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ⑦

8. अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं। उस के लिए है सारे उत्तम नाम [7]।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ⑧

9. और क्या तुम्हें मूसा की घटना की ख़बर पहुँची [8]?

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ⑨

10. जब उस ने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा जरा ठहरो मुझे आग दिखाई दी है। (मैं जाता हूँ) ताकि तुम्हारे लिए अंगारा ले आऊँ या हो सकता है कि आग के पास कोई रहनुमाई (मार्ग का पता) मिल जाए [9]।

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ⑩

1. ''ता'' का संकेत ''तुवा'' की ओर है जिस का वर्णन आयत १२ में हुआ है। यह सीना पर्वत की उस घाटी का नाम है जहाँ अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को नुबुव्वत से अलंकृत किया ।

''हा'' का संकेत हारून की ओर है जिन का वर्णन इस सूरह में कई जगहों पर हुआ है। विभक्त अक्षरों (हुरूफ़े मुक़त्तआत) की अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट १ और सूरह यूनुस नोट १.

2. जिन परिस्थितियों में इस सूरह का अवतरण हुआ है वह ईमान वालों के लिए अत्यंत कठिन थीं। क़ुर्आन का इन्कार करने वालों ने उन का जीना दूभर कर दिया था जिस से विवश हो कर कुछ लोगों का एक समूह हिजरत कर के हब्शा चला गया था। ऐसी परिस्थिति में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथियों को इन आयतों के माध्यम से धैर्य एवं संतोष दिलाया गया कि वे दिल छोटा न करें। क़ुर्आन का अवतरण इस लिए नहीं हुआ कि तुम मुसीबत में पड़ो। बल्कि इस लिए हुआ है कि जो शिक्षा एवं जो भाव मनुष्य के मूल स्वभाव पर अंकित हैं, तथा ग़फ़लत में पड़े रहने के कारण वे धूमिल हो चुकी हैं। उस की याददेहानी हो। स्पष्ट है कि यह याददेहानी मनुष्य के लिए भलाई और सौभाग्य ही का रास्ता है क्यों कि मनुष्य के लिए कल्याण एवं सौभाग्य अपनी प्राकृति के समान्तर चलने में है न कि उस से विद्रोह करने में। अब यदि बिगड़ी हुई मानसिकता के लोग क़ुर्आन पर ईमान लाने वालों की राह में कांटे बिछाते हैं तो इस पर सब्र करना चाहिए क्योंकि क़ुर्आन ने सौभाग्य एवं कल्याण का जो मार्ग तुम पर खोला है उसे ये लोग किसी सूरत में तुम पर बन्द नहीं कर सकते और वह मनुष्य को जो भूला हुआ पाठ याद दिला रहा है उस से हर वह व्यक्ति लाभ उठाएगा जिस में तनिक भी ईश-भय है।

3. इन आयतों में क़ुर्आन उतारने वाले का सही परिचय कराया गया है ताकि लोगों पर पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाए कि यह अत्यंत प्रतिष्ठित एवं उच्च कोटि का कलाम है जो एक महान हस्ती की ओर से उस के आदेश की हैसियत में अवतरित हुआ है।

4. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ८३

यहाँ अल्लाह की यह विशेषता कि वह रहमान (करुणामय है इस बात को स्पष्ट कर रही है कि वह ब्रह्माण्ड पर पूरी दयालुता एवं करुणा के साथ शासन कर रहा है।

5. अर्थात् इस पूरे ब्रह्माण्ड का स्वामी अल्लाह ही है, कोई चीज़ ऐसी नहीं जिस का स्वामी उस के सिवा और कोई हो। वह स्वामी है और सब उस की संपत्ति, उस के दास हैं । फिर उस के सिवा किसी के ख़ुदा होने का प्रशन कहाँ पैदा होता है?

6. अर्थात् उस के ज्ञान की महिमा यह है कि तुम कोई बात आलानिया कहो या चुपके से, उस पर प्रत्येक बात स्पष्ट है यहाँ तक कि अत्यंत गुप्त बातें भी जो दिल ही दिल में रहती हैं।

7. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २७८

8. हज़रत मूसा की घटना बाद की आयतों में स्वयं अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाई है। यहाँ यह प्रश्न कि क्या मूसा की घटना की ख़बर तुम्हारे पास पहुँची, ध्यानअकर्षित करने के लिए है।

9. यह उस समय की बात है जब हज़रत मूसा मदयन में कई वर्ष बिताने के बाद अपनी पत्नी और बच्चों के साथ मिस्र लौट रहे थे।

स्पष्ट रहे कि बनी इस्राईल हज़रत यूसुफ़ के ज़माने से मिस्र ही में आबाद थे और हज़रत मूसा भी वहीं पैदा हुए थे। मगर जवान होने के बाद एक ख़ास अवसर पर मदयन चले गए थे जहाँ वे लम्बे समय तक ठहरे रहे ।

मदयन से वापस होते हुए वह सीना के बियाबान में तूर पर्वत के पास से गुज़र रहे थे। ठंडी की रात थी और रास्ते का कुछ पता नहीं चल रहा था कि अचानक उन्हें एक आग दिखाई दी। उन्होंने घर वालों से कहा कि तुम यहाँ ठहरे रहो मैं जा कर अंगारे ले आता हूँ ताकि तुम लोग ताप सको और यह भी हो सकता है कि वहाँ रास्ते का कुछ पता चल जाए।

11. जब वह उस के पास पहुँचा तो आवाज़ आई ऐ मूसा !

فَلَمَّآ أَتَىٰهَا نُودِيَ يَٰمُوسَىٰٓ ١١

12. मैं हूँ तुम्हारा रब ![10] अपनी जूतियाँ उतार दो। तुम तुवा की पावन घाटी में हो [11]।

إِنِّيٓ أَنَا۠ رَبُّكَ فَٱخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِٱلْوَادِ ٱلْمُقَدَّسِ طُوًى ١٢

13. और मैं ने तुम्हें चुन लिया है,[12] तो जो प्रकाशना (वह्य) की जा रही है उसे ध्यान से सुनो [13]।

وَأَنَا ٱخْتَرْتُكَ فَٱسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰٓ ١٣

14. मैं ही अल्लाह (एक मात्र पूज्य) हूँ मेरे सिवा कोई ख़ुदा (इष्ट पूज्य) नहीं [14]। तो मेरी ही इबादत (पूजा) करो [15] और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो [16]।

إِنَّنِيٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدْنِي وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِيٓ ١٤

15. निस्संदेह क़ियामत (महाप्रलय) की घड़ी आने वाली है [17]। मैं उसे गुप्त रखने को हूँ [18] ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रयासों के अनुसार बदला पाये [19]।

إِنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعَىٰ ١٥

16. जो लोग उस पर ईमान नहीं रखते और अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ गए हैं वे तुम्हें कहीं इस से रोक न दें कि तुम विनाश में पड़ो [20]।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَن لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ فَتَرْدَىٰ ١٦

17. और ऐ मूसा ! यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है ?

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَٰمُوسَىٰ ١٧

18. कहा, यह मेरी लाठी है, इस पर मैं टेक लगाता हूँ, अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ, और इस में मेरे लिए दूसरे लाभ भी हैं [21]।

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّؤُا۟ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَـَٔارِبُ أُخْرَىٰ ١٨

19. फ़रमाया डाल दो इस को ऐ मूसा !

قَالَ أَلْقِهَا يَٰمُوسَىٰ ١٩

20. उस ने उस को डाल दिया तो अचानक वह साँप बन गया जो दौड़ रहा था।

فَأَلْقَىٰهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ٢٠

21. फ़रमाया पकड़ लो इस को और डरो मत, हम इसे फिर इस की पहली दशा में लौटा देंगे [22]।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا ٱلْأُولَىٰ ٢١

22. और अपना हाथ अपने बाज़ू में दबाओ। रौशन हो कर निकलेगा बिना किसी दोष के [23]।यह दूसरी निशानी है।

وَٱضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ ءَايَةً أُخْرَىٰ ٢٢

10. जब हज़रत मूसा आग के पास पहुँच गए तो अल्लाह ने उन्हें आवाज़ दी, ''मैं हूँ तुम्हारा रब''वह्य का एक तरीक़ा यह भी है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे से सीधे वार्ता करे और मूसा अलैहिस्सलाम की यह विशिष्ट प्रमुखता है कि उन्हें अल्लाह तआला ने हम कलामी (परस्पर वार्ता) का सम्मान प्रदान किया और उन की नुबुव्वत का आरम्भ ही फ़रिश्ते के माध्यम के बग़ैर अल्लाह तआला से सीधी वार्ता द्वारा हुआ।

स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआला ऐसी बातों से पवित्र है कि वह किसी भौतिक वस्तु में जो उस की अपनी सृष्टि है,समाविष्ट हो जाए। इस लिए जो आग मूसा अलैहिस्सलाम को दिखाई दी थी वह न ख़ुदा थी और न ख़ुदा उस में समाविष्ट हो गया था बल्कि वह एक विशेष प्रकार की रौशनी थी जिस ने मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। उन्हों ने अल्लाह की पुकार और उस का कलाम ज़रूर सुना किन्तु उन्हों ने अल्लाह को देखा नहीं। और क़ुर्आन इस बात की पुष्टि करता है कि बाद में जब तूर पर्वत पर मूसा अलैहिस्सलाम को शरीअत प्रदान करने के लिए बुलाया गया था तो उन्हों ने अल्लाह तआला से यह निवेदन किया था कि वह अपना जलवा उन्हें दिखाए। उन के इस निवेदन पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया था ''लन तरानी '' अर्थात ''तुम मुझे हरगिज़ न देख सकोगे।'' (सूरह आराफ़ १४३)

11. तुवा तूर पर्वत की एक घाटी का नाम है जो पावन बन गई थी। किन्तु अब यह इस नाम से नहीं जानी जाती । जान पड़ता है कि यह पूरी घाटी उस आग की रौशनी से जो विशेष प्रकार की थी ज्योतिर्मय हो गई थी और अल्लाह तआला मूसा अलैहिस्सलाम को हमकलामी (परस्पर वार्ता) से सम्मानित कर रहा था । इस लिए विशेष तैयारी के साथ, आदर के साथ आने का आदेश हुआ । अत: इर्शाद हुआ अपनी जूतियाँ उतार दो और इस का कारण भी बता दिया कि इस समय तुम तूवा की पावन घाटी में हो इस का पावन होना बाह्य एवं आंतरिक पहलुओं से था । चूँकि इस सरज़मीन में अल्लाह तआला की यह महिमा उजागर हो रही थी कि वह हज़रत मूसा से हमकलाम हो। इस लिए इसे शैतान और उस के फ़ित्नों से पूरी तरह सुरक्षित कर दिया गया था और इस के माहौल को बरकतों से भर दिया गया था। इस असाधारण पवित्रता का तक़ाज़ा यह था कि आदर एवं सम्मान का स्तर बुलन्द रहे, आदर और सम्मान की मर्यादा बनी रहे। जूतियाँ उतारना इस मनोवैज्ञानिक भाव की अभिव्यक्ति थी। इस लिए इस का विशेष रूप से आदेश दिया गया। रहा यह प्रश्न कि फिर जूते पहन कर यदि वे साफ़ हों या मिट्टी से रगड़ दिये गए हों नमाज़ पढ़ना हदीस में किस तरह जायज़ बताया गया है। तो इस का उत्तर यह है कि यह सुविधा है जो इस्लाम ने सामान्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए दी है जब कि मूसा अलैहिस्सलाम को जो आदेश दिया गया था वह आदर और सम्मान के विशिष्ट आयोजन का था क्यों कि सारे जगत का प्रभु उन से स्वयं वार्ता कर रहा था जिसे वे सुन रहे थे। जब कि नमाज़ में ऐसी अवस्था नहीं होती बल्कि बन्दे की ओर से प्रार्थना होती है।

अल्लाह तआला के इस इर्शाद का कि ''तुम तुवा की पावन घाटी में हो'' यह भी लाभ हुआ कि हज़रत मूसा जो मार्ग ढूँढ रहे थे उन्हें ज्ञात हो गया कि वे तुवा के पावन स्थल पर हैं। स्पष्ट है कि इस से आगे के रास्ते का पता चलाना उन के लिए सरल हो गया होगा।

12. अर्थात् रिसालत के दायित्व के लिए।

13. हज़रत मूसा सफ़र में थे कि आचानक उन्हें अल्लाह ने पुकारा और नबी का प्रतिष्ठित दायित्व सौंप दिया। इस से स्पष्ट हुआ कि नुबुव्वत और रिसालत एक उपहार है जिसे अल्लाह तआला अपने चुने हुए बन्दों को प्रदान करता रहा है। इस दायित्व का भारवाहक कोई व्यक्ति अपने प्रयासों एवं चेष्टाओं से नहीं हो सकता।

मूसा अलैहिस्सलाम को नुबुव्वत प्रदान किये जाने और उन पर वह्य अर्थात् अल्लाह की प्रकाशना के अवतरण की घटना को बयान करने से अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्य और रिसालत से अलंकृत किये जाने की घटना अनोखी नहीं है बल्कि इस से पहले भी अल्लाह तआला अपने चुनिन्दा बन्दों को यह दायित्व सौंपता रहा है जिस का स्पष्ट उदाहरण मूसा की घटना है।

14. अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को संबोधित कर के जो पहली शिक्षा दी वह तौहीद (एकेश्वरवाद) की थी। यह वह आधारशिला है जिस पर इस्लाम की पूरी इमारत खड़ी है और यह वह ज्योति है जिस से हिदायत की सारी किरणें फूट पड़ी हैं।

15. इबादत की सार अत्यंत निष्ठा और चाह के साथ अत्यधिक आदर और सम्मान करना तथा अपनी तुच्छता को व्यक्त करना है। यह हक़ इष्ट पूज्य को ही पहुँचता है। और जब इष्ट पूज्य अल्लाह के सिवा कोई नहीं तो इबादत का हक़दार भी अल्लाह के सिवा कोई नहीं । और एक बन्दे का उस के बन्दा होने की हैसियत से फ़र्ज़ है कि उस की पूजा और उस की इबादत करे और यह अल्लाह के संविधान की इन्सान से पहली माँग है।

16. अर्थात नमाज़ इबादत का उत्तम स्वरूप है अत: इस का पूरा पूरा आयोजन करो और नमाज़ का यह आयोजन अल्लाह की याद के लिए है। मालूम हुआ कि नमाज़ का मूल उद्देश्य अल्लाह को याद करना तथा इस से जुड़ जाना है । बन्दा जब अपने रब को याद करता है तो बन्दगी का संबन्ध

उस से बंध जाता है। और मनुष्य की सारी सफ़लता तथा उस के वास्तविक प्रगति का दारोमदार इस बात पर है कि वह अपने रब से सही समबन्ध स्थापित करे और उस को सुदृढ़ करने के प्रयासों में जुटा रहे।

जिक्र का मतलब दिल से याद करने के भी हैं और जबान से पाठ करने के भी ।''नमाज़ को मेरे ज़िक्र के लिए क़ायम करो'' का मतलब मात्र ज़बान से कुछ ख़ास कालिमों का पाठ कर लेने से नहीं बल्कि दिल से याद करते हुए उन कलिमों को अदा करना है। इस का तक़ाज़ा है कि बन्दा नमाज़ में अपने रब की ओर ध्यान लगाए रहे और पूरे मन से उस की प्रशंसा एवं गुणगान करे।

17. हज़रत मूसा को नुबुव्वत से अलंकृत करते हुए जो मौलिक शिक्षा दी गई थी उस में क़ियामत (महाप्रलय) के आने और कर्म फ़ल का विधान भी बयान हुआ था। किन्तु वर्तमान तौरात में जहाँ मूसा को नुबुव्वत से अलंकृत किए जाने की कथा बयान हुई है वहाँ इस शिक्षा का कोई उल्लेख नहीं है। (देखिये निर्गमन ३ व ४) और इतना ही नहीं बल्कि पूरी तौरात में आख़िरत (परलोक) के इनाम और दंड का वर्णन मुश्किल ही से कहीं मिलेगा। इस से अन्दाज़ा होता है कि अहलेकिताब कर्मफल के विधान को किस तरह भुला चुके थे और क़ुर्आन ने इसे किस प्रकार उजागर किया।

18. ''मैं इसे गुप्त रखने को हूँ'' का मतलब यह है कि यद्यपि क़ियामत की घड़ी को गुप्त रखा गया है इस लिए कोई व्यक्ति उस को आने से पहले न अपने शरीर की आँखों से देख सकता है और न उस के घटित होने की तारीख़ मालूम कर सकता है किन्तु इसे ऐसा गुप्त भी नहीं रखा गया है कि उस के आसार न दिखाई दें और उस के प्रमाण एवं साक्ष्य न स्पष्ट हों। अत: क़ियामत (महाप्रलय) का मामला गुप्त अवश्य है परन्तु इस के बावजूद आसार सामने आते रहेंगे।

19. अर्थात् क़ियामत इस लिए बरपा की जाएगी ताकि हर व्यक्ति अपने कर्मानुसार बदला पाऐ और गुप्त भी इस लिए रखा गया है ताकि मनुष्य को परिक्षा से गुज़ारा जाए और परीक्षा के इस जीवन में उस के प्रयास जैसे कुछ रहे होंगे उसी के अनुसार उसे क़ियामत के दिन इनाम या दंड मिले।

20. इन्सान माहौल से शीघ्र ही प्रभावित होता है। और दुनिया का माहौल आख़िरत (परलोक) को नकारने तथा इच्छाओं के पीछे चल पड़ने का माहौल है। प्रत्येक युग में सांसारिक प्रगति का मार्ग इसी को समझा गया है कि मनुष्य ख़ुदा के समक्ष उत्तरदायी होने की चिन्ता से मुक्त हो कर जीवन यापन करे। फिर इस सिलसिले में माहौल का दबाव अत्याधिक होता है। यदि आदमी इस ग़लत और निराधार धारणाओं की ओर से चौकन्ना न रहे तो माहौल का सैलाब उसे बहा ले जाता है। इस लिए हज़रत मूसा को और उन के माध्यम से उन के अनुयायियों को यह निर्देश हुआ कि वे उन लोगों की तरफ़ से चौकन्ना रहें जो आख़िरत को नहीं मानते और इच्छाओं के दास बन कर रह गए हैं।

21. यह प्रश्न इस लिए नहीं था कि कुछ मालूम किया जाए क्यों कि अल्लाह तआला को हर चीज़ का ज्ञान है। उसे मालूम था कि मूसा के हाथ में क्या था। इस के बावजूद उस ने यह प्रश्न इस लिए किया ताकि मूसा अपनी लाठी को उस के साँप बन जाने से पहले भली भाँति समझ ले और साँप बन जाने के बाद उन्हें विश्वास हो जाए कि यह उन्हीं की लाठी है जो साँप बन गई है।

यह समझना सही नहीं है कि मूसा ने ख़ुदा के सवाल का लम्बा जवाब दिया जो उचित न था। सवाल जिस अन्दाज़ में हुआ उस से हज़रत मूसा समझ गए कि लाठी के बारे में स्पष्टीकरण मांगा जा रहा है कि वह किस उद्देश्य से रखी गई है। यही स्पष्टीकरण हज़रत मूसा में दृढ़ विश्वास पैदा करने के उद्देश्य से था कि जिस लाठी से कभी कोई असाधारण बात घटित नहीं हुई वही लाठी आज तुम्हारे सामने साँप बन कर दौड़ रही है। यह एक ख़ुला मोज्ज़ा (स्पष्ट चमत्कार) है।

22. इस चमत्कार का वर्णन तौरात (पुराने नियम) में भी हुआ है।

''यहोवा ने उस से (मूसा से) कहा कि ये तेरे हाथ में क्या है? वह बोला लाठी। उस ने कहा उसे भूमि पर डाल दो। जब उस ने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई और मूसा उस के सामने से भागा। तब यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ा कर उस की पूँछ पकड़ लें...... जब उस ने हाथ बढ़ा कर उस को पकड़ा तब वह उस के हाथ में फिर लाठी बना गई।''(निर्गमन ४:२ से ४)

23. यह दूसरा चमत्कार था जो मूसा को प्रदान किया गया वह अपना हाथ अपने बाज़ू में दबा कर निकालते तो वह बिलकुल सफ़ेद बन जाता था। यह सफ़ेदी सफ़ेद कोढ़ आदि के कारण से नहीं थी और न उस में कोई दोष पाया जाता था। यदि ऐसा होता तो हाथ पुन: अपनी मूल दशा पर लौट न आता। यह उस के मोज्ज़ा (चमत्कार) होने का स्पष्ट प्रमाण था।

बाइबिल में इस चमत्कार का वर्णन तो अवश्य हुआ है परन्तु इस को कोढ़ जैसा बताया गया है। (देखिए निर्गमन ४:६) इसी लिए क़ुर्आन ने स्पष्ट कर दिया कि हाथ बिना किसी दोष के सफ़ेद हो जाता था। इस से बाइबिल में उल्लिखित बयान का खण्डन होता है और क़ुर्आन के बयान की सत्यता स्पष्ट होती है अत: इस में दोष का कोई पहलू नहीं हो सकता ।

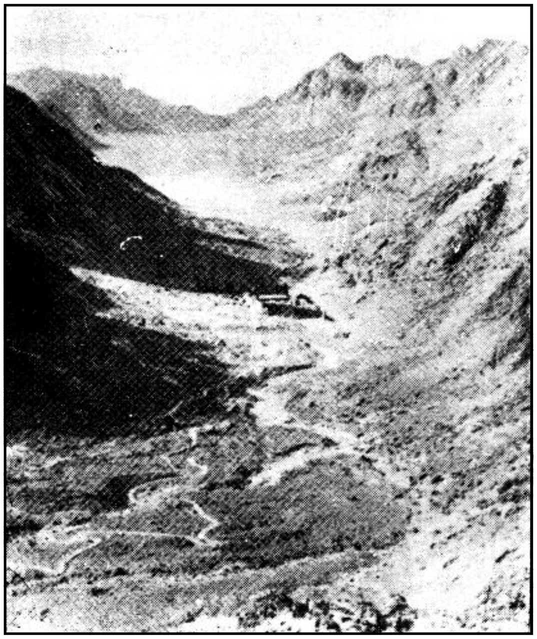

तुवा की घाटी

संभवत: यही वह घाटी है जहाँ हज़रत मूसा को आग दिखाई दी थी और आल्लाह तआला ने उन्हें पुकारा था। सीना द्वीप में फ़ारान के जंगलो से लगभग सत्तर किलो मीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ एक गिरजा है जो सेन्ट कथ्राइन के नाम से प्रसिद्ध है और एक मस्जिद है जो सुल्तान सलीम की बनवाई हुई है ।

23. ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी निशानियाँ दिखाऐं [24]।

لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾

24. तुम फ़िरऔन के पास जाओ वह बड़ा उद्दंड हो गया है [25]

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٢٤﴾

25. कहा, ऐ रब ! मेरा सीना खोल दे [26]।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾

26. और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे । [27]

وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾

27. और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे ।[28]

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾

28. ताकि लोग मेरी बात समझ सकें।

يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾

29. और मेरे ख़ानदान से मेरे लिए एक वज़ीर निर्धारित कर दे [29]।

وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾

30. हारून को जो मेरा भाई है [30]।

هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾

31. उस के द्वारा मेरी कमर मज़बूत कर।

اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾

32. और उस को मेरे काम में शरीक कर दे।

وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

33. ताकि हम ख़ूब तेरी पाकी बयान करें।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾

34. और तेरा ख़ूब ज़िक्र करें [31]।

وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾

35. निस्संदेह तू हमारे हाल की देख रेख करने वाला है।

اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾

36. फरमाय तुम्हारा अनुरोध स्वीकार कर लिया गया ऐ मूसा [32]।

قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾

37. और हम तुम पर एक बार और एहसान कर चुके हैं [33]।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾

38. जब कि हम ने तुम्हारी माँ की ओर प्रकाशना (वह्य) की, [34] वह जो वह्य की जा रही है [35]।

اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

24. अर्थात् ये दो निशानियाँ ही नहीं आगे चल कर तुम अन्य बड़ी निशानियाँ भी देखोगे। अत: बाद में इस लाठी के द्वारा कितनी ही निशानियाँ प्रकट हुईं और यही लाठी थी जिस को मारने से बनी इस्राईल के लिए समुद्र में रास्ता बन गया।

25. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नाज़िआत नोट १३

26. मूसा अलैहिस्सलाम ने महसूस किया कि नबी का दायित्व एक महान दायित्व है और विशेषकर फ़िरऔन जैसे निरंकुश शासक को हक़ की दअवत देना बहुत बड़े साहस की बात थी इस लिए उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि वह उन्हें इस काम के लिए साहस प्रदान करे। ''शरह सद्र'' अर्थात् सीने का खुल जाना संकेत है हौसले की वृद्धि, हिम्मत और साहस एवं शांत चित के लिए।

27. अर्थात् जो काम तू ने मेरे सुपुर्द किया है उसे सुचारु रुप से करना मेरे लिए आसान कर दे।

28. ज़बान की गिरह से मुराद बोलने के प्रवाह में कमी है न कि हकलाना । इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि हज़रत मूसा हकलाते थे । और यह जो क़िस्सा तफ़सीरों में बयान हुआ है कि हज़रत मूसा ने बचपन में जब कि वे फ़िरऔन के यहाँ परवरिश पा रहे थे, मुँह में अंगारा डाल दिया था जिस के कारण उन की ज़बान अटकने लगी थी तो यह इस्राईलियात में से है तथा अमान्य है। सही बात यह है कि दअवत को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अच्छा बोल लेना आवश्यक होता है। हज़रत मूसा अपने अन्दर प्रवाहित भाषा बोल लेने की कमी महसूस कर रहे थे इस लिए उन्होंने अल्लाह तआला से प्रार्थना की कि ज़बान की इस कमी को कि वे प्रवाहित भाषा नहीं बोल सकते, दूर कर दे।

29. वज़ीर अर्थात् ऐसा सहायक जो दयित्व को निभाने में हाथ बटा सके और प्रतिनिधित्व कर सके।

30. हज़रत हारून मूसा के बड़े भाई थे। वे चूँकि नेक भी थे और प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण शैली में दक्ष होने के कारण दाअवती ज़िम्मेदारियों को अदा करने के अधिक योग्य थे इस लिए उन को मूसा ने नबी बनाने का अनुरोध किया।

31. हज़रत मूसा को जब नुबुव्वत प्रदान हुई तो उन पर गहरे भेदों और वास्तविकताओं का भी रहस्योदघाटना हुआ। वे समझ गए कि नुबुव्वत के कार्यकलापों में जो चीज़ महत्व रखती है और जिस को एक उच्च उद्देश्य की हैसियत से तमाम कामों में सामने रखना चाहिए वह है अल्लाह की पाकी बयान करना उस की ख़ूब चर्चा करना, ज़िक्र करना। मामला चरित्र निर्माण का हो या इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार का या मार्गदर्शन एवं नेतृत्व का, तमाम मामलों में इस इबादत को जैसी कि इस की शान है उसी के अनुकूल अदा करना आवश्यक है।

32. हज़रत मूसा को जब अल्लाह तआला ने नुबुव्वत का दायित्व सौंपा तो वे इस के दायित्व का भार महसूस कर रहे थे उन के अन्तर्मन से निकली हुई वह दुआ अल्लाह के दरबार में स्वीकृत हुई और जो कुछ उन्होंने माँगा सब दिया गया।

33. दुआ स्वीकार कर लेने के बाद अल्लाह तआला ने अपने उन उपकारों का उल्लेख किया जो उस ने मूसा पर नुबुव्वत से पहले किया था, ताकि यह बात स्पष्ट हो जाए कि मूसा पर उन की पैदाइश के समय से ही अल्लाह की ख़ास कृपा दृष्टि रही है और वह क़दम क़दम पर उन की सहायता करता रहा है, फिर नुबुव्वत के बाद वह उन की सहायता कैसे नहीं करेगा?और उन की ढारस बंध जाए कि जब उन के पालन पोषण के लिए अल्लाह की ओर से कुदरती करिशमा हो गया था तो जिस दुष्कर अभियान पर उन को भेजा जा रहा है उस के लिए उस के करिशमों का ज़हूर (स्पष्ट) क्यों नहीं होगा?

34. यह इल्क़ा, वह्य अर्थात् दिल में कोई बात डालना के अर्थ में नहीं हो सकती क्यों कि सूरह क़सस में बयान हुआ है कि हज़रत मूसा की माँ को यह भी बता दिया गया था कि इस बच्चे को हम तुम्हारे पास लौटा देंगे और इसे हम रसूल बनाने वाले हैं। ज़ाहिर है इतने स्पष्टीकरण के साथ यह बात उसी रूप में उन्हें मालूम हो गई होगी जब कि शब्दों के साथ उन्हों ने सुनी होगी इस लिए उन के पास परोक्ष प्रकाशना (ग़ैबी वह्य) आवाज़ के रुप में आई होगी। वल्लाहु आलम बिअस्रारी कलाम:

यहाँ यह तथ्य ध्यान में रहे कि वह्य की किसी ग़ैर नबी की ओर भेजा जाना एक अपवाद है। हज़रत मूसा की माँ और हज़रत मरयम के साथ वह्य का मामला सामयिक एवं सीमित था। और यह एक अपवाद की सूरत थी तथा इस वह्य का सम्बन्ध वास्तव में हज़रत मूसा और हज़रत ईसा जैसे नबियों की पैदाइश से था। और बाद में इन नबियों के द्वारा इस वह्य की पुष्टि भी हुई। इस लिए वह्य की इन घटनाओं में नुबुव्वत के झूठे दावेदारों के लिए कोई तर्क एवं कोई दलील नहीं है।

35. अर्थात् ऐ मूसा तुम्हारी माँ की ओर जो बातें वह्य की गई थीं वह तुम्हें वह्य के द्वारा बताई जा रही है। आगे इसी का वर्णन है।

39. कि इस को सन्दूक़ में रख दो, फिर इस (सन्दूक) को दरया में छोड़ दो। दरया को चाहिए कि इस को किनारे पर डाल दे और इसे वह व्यक्ति उठा ले जो मेरा भी शत्रु है और इस (बच्चे) का भी।[36]और मैं ने तुम पर अपनी ओर से मुहब्बत डाल दी थी [37] और यह इस लिए किया था कि तुम्हारा पालन पोषण मेरी देखरेख में हो [38]।

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ
بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً
مِّنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ﴿٣٩﴾

40. जब तुम्हारी बहन (पीछे पीछे) जा रही थी [39]। कहने लगी मैं तुम्हें (ऐसी औरत) बताऊँ जो उस की परवरिश करे,[40] इस प्रकार हम ने तुम्हें तुम्हारी माँ की ओर लौटा दिया ताकि उस की आँखे ठंडी हों और वह ग़म न करे [41]। और तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी तो हम ने तुम को शोक से मुक्ति दी [42] और तुम्हें तरह तरह से आज़माया [43]।और तुम कई वर्ष मदयन वालों में रहे [44] फिर तुम ठीक समय पर आ गए ऐ मूसा ! [45]

إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ
فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ
نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ
فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ ﴿٤٠﴾

41. मैं ने तुम्हें अपने (ख़ास काम के) लिए चुन लिया है [46]।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ﴿٤١﴾

42. तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ जाओ और मेरे ज़िक्र (चर्चा) में कोताही न करो [47]।

اذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِآيَاتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ﴿٤٢﴾

43. जाओ फ़िरऔन के पास वह उद्दंड हो गया है।

اذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾

44. उस से विनम्रता से बात करो [48] हो सकता है वह नसीहत हासिल करे या डर जाए [49]।

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

45. उन्हों ने निवेदन किया [50] ऐ हमारे रब ! हमें भय है कि वह हम पर ज़्यादती करे या उद्दंडता दिखाए [51]।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾

46. फ़रमाया डरो मत ।मैं तुम्हारे साथ हूँ , सब कुछ सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ।

قَالَ لَا تَخَافَا ۖ إِنَّنِي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾

47. उस के पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के रसूल हैं । बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे [52]।और उन को कष्ट न दे [53]।हम तेरे रब की ओर से निशानी ले कर आये हैं और सलामती है उस पर जो हिदायत (सीधे मार्ग) का अनुसरण करे [54]।

فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي
إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ
عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾

36. यह क़िस्सा सूरह ''क़सस'' में विस्तार से बयान हुआ है। यहाँ हम इस घटना की पृष्ठ भूमि संक्षेप में उल्लिखित करते हैं। बनी इस्राईल हज़रत यूसुफ़ के ज़माने में फ़िलस्तीन से मिस्र स्थानांतरित हो गए थे। कुछ सदियों में उन की आबादी वहाँ ख़ूब बढ़ी और जब फ़िरऔन सत्ता में आया तो उस ने उन की आबादी बढ़ जाने का ख़तरा महसूस किया। चूँकि बनी इस्राईल इस्लाम के मानने वाले थे और मिस्री बहुदेववादी धर्म के, इस लिए फ़िरऔन और सत्ताधारी वर्ग बनी इस्राईल के बारे में बड़े ही विद्वेष एवं साम्प्रदायिकता में लिप्त था और उन के साथ पक्षपात का रवैया अपनाता था। यहाँ तक कि फ़िरऔन ने उन की संख्या को घटाने के लिए उन के बच्चों अर्थात लड़कों को पैदा होते ही मार डालने का आदेश दे दिया था। मूसा जब पैदा हुए तो उन की माँ ने उन्हें छिपाया। किन्तु मामला कब तक ढका छिपा रहता। फ़िरऔन के राज कर्मचारियों को ख़बर होती तो वे उस बच्चे को भी मार डालते। इस लिए अल्लाह तआला ने अपने उदार अनुग्रह एवं अनुकंपा से उन की सुरक्षा और उन के पालन पोषन का असाधारण विधि से साधन उपलब्ध किया। मूसा की माँ को वह्य के रूप में यह निर्देश दिया कि एक सन्दूक में बच्चे को रख कर दरया में छोड़ दे और दरया को यह आदेश हुआ कि वह सन्दूक़ को किनारे पर डाल दे। अत: मूसा की माँ ने इस हिदायत पर अमल किया और वह सन्दूक़ ऐसी जगह किनारे पर लगा जहाँ फ़िरऔन अपनी पत्नी के साथ मौजूद था। उस ने अपने आदमी के द्वारा सन्दूक़ को उठवा लिया। इस प्रकार मूसा उस व्यक्ति के पास पहुँच गए जो ख़ुदा का भी शत्रु था और स्वयं उन का भी। यह अल्लाह का करिश्मा था। इस के बाद अन्य जो चमत्कार सामने आए उन का उल्लेख आगे आ रह है।

37. अर्थात् बच्चे को बेहद प्यारी और मोहनी सूरतवाला बनाया गया था ताकि देख कर कोई भी मुग्ध हो जाए और उस पर अपना क्रोध नहीं बल्कि अपनी दया उंडेले। अल्लाह की यह नीति ऐसी थी कि फ़िरऔन अपनी क्रुरता के बावजूद उस को मारने के लिए आमादा न हो सका। और जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे। बाइबिल में भी बच्चे के सुन्दर होने का वर्णन है।

''और वह स्त्री गर्भवती हुई और उस के एक पुत्र उत्पन्न हुआ और यह देख कर कि यह बालक सुन्दर है उसे तीन महीने तक छिपा रखा।'' (निर्गन २:२)

38. अर्थात् ऐसी नाज़ुक परिस्थितियों में अल्लाह ने मूसा के पालन पोषण की विशेष व्यवस्थ की।

39. जब मूसा को सन्दूक में रख कर दरया में छोड़ दिया गया तो उन की बहन चुप चाप उस सन्दूक के पीछे पीछे जा रही थी ताकि देखे कि उस सन्दूक का क्या बनता है।

40. सन्दूक को फ़िरऔन के घरवालों में से किसी ने उठा लिया और फ़िरऔन तथा उस की पत्नी के पास ले गया। फ़िरऔन का महल संभवत: नील नदी के किनारे था। इस लिए किनारे के समीप घर का कोई न कोई व्यक्ति मौजूद रहा होगा। बाइबिल का बयान है कि फ़िरऔन की बेटी वहाँ मौजूद थी और उस ने सन्दूक ले लिया था। (निर्गमन २ :५)

बच्चा जब फ़िरऔन के घर पहुँच गया तो फ़िरऔन की पत्नी उसे देख कर प्रसन्न हो गई और फ़िरऔन को इस बात के लिए आमादा किया कि उस को पाला पोषा जाए। परन्तु बच्चा किसी औरत का दूध पीने के लिए तैयार न हुआ। इस लिए उस को बड़ी चिन्ता हुई। मूसा की बहन जो दूर से देख रही थीं। क़रीब आई और जब उसे मालूम हुआ कि बच्चे के लिए दूध पिलाने वालिया वांछित हैं तो उस ने उन्हें बतलाया कि फ़्लाँ घर में इस बच्चे की परवरिश की व्यवस्था हो सकती है। यह घर उन की अपनी माँ का था। मगर रहस्य को रहस्य रखते हुए उस ने यह सुझाव दिया।

41. मूसा की बहन के सुझाव को फ़िरऔन के घर वालों ने स्वीकार कर लिया और उस दाया के हवाले कर दिया जिस का सुझाव मूसा की बहन ने दिया था अर्थात् मूसा की सगी माँ के। इस प्रकार बच्चा परवरिश के लिए दोबारा अपनी माँ की गोद में पहुँच गया। और अल्लाह का यह वादा कि हम इसे तुम्हारे पास लौटाऐंगे एक चमत्कार के रूप में पूरा हुआ।

42. यह क़िस्सा भी सूरह क़सस में बयान हुआ है। मूसा जब बड़े हुए तो एक दिन यह घटनी घटी कि दो आदमियों को लड़ते हुए देख कर वह मज़लूम की मदद के लिए गए। मज़लूम इस्राईली था और ज़ुल्म करने वाला क़िब्ती। उन्हों ने क़िब्ती को ज्यों ही घूँसा मारा वह ताब न ला सका और मर गया। मूसा का इरादा उस को जान से मारने का नहीं था। परन्तु यह ग़लती उन से हो गई। जिस का उन्हें शोक रहा। इस की सूचना जब फ़िरऔन को मिली तो उस ने मूसा को मौत का दंड देने के उद्देश्य से उन की ग़िरफ़तारी का आदेश जारी कर दिया। मूसा को जब यह ख़बर मिली तो वे मिस्र छोड़ कर मदयन चले गए। इस प्रकार अल्लाह तआला ने उन की मुक्ति का साधन कर दिया।

43. हज़रत मूसा का पूरा जीवन परीक्षा से भरा हुआ रहा है। और इन परीक्षाओं में जब वे पूरे उतरे तो अल्लाह ने उन्हें अतयंत उच्च स्थान प्रदान किया इस से पता चला कि मनुष्य परीक्षा में ख़ूब ख़ूब निखरता है और वह परीक्षाओं से गुज़र कर महत्वपूर्ण दायित्व निभाने के योग्य बनता है।

44. हज़रत मूसा मिस्र से निकल कर क़रीब के देश मदयन में पहुँच गए थे जहाँ उन्हों ने कई वर्ष बिताए। तफ़सील

सूरह क़सस में आ रही है।

45. अर्थात् नुबुव्वत प्रदान करने के लिए अल्लाह तआला ने जो समय निर्धारित किया था ठीक उस समय पर पहुँच गए।

46. अर्थात् नुबुव्वत के कार्यभार के लिए।

47. अर्थात् दिल से मुझे ख़ूब याद रखो। ज़बान से अधिकता के साथ मेरा ज़िक्र करो और लोगों में मेरी ख़ूब चर्चा करो। इसे करने के लिए कोई कसर उठा न रखो।

48. फ़िरऔन बड़ा उद्दंड एवं घमण्डी था परन्तु उस से विनम्रता पूर्वक बात करने का निर्देश दिया गया ताकि दअवत उस के सामने सकारात्मक एवं स्वीकार्य रूप में आ जाए और वह विचार करने के लिए आमादा हो जाए। इस से पता चला कि आहवानकर्ता को अपने ढंग और अपनी शैली में सामने वाले की मानसिकता का लिहाज़ करना चाहिए।

49. अल्लाह तआला जानता था कि फ़िरऔन इस्लाम की दअवत को स्वीकार नहीं करेगा इस के बावजूद मूसा का यह निर्देश हुआ कि वह उस के बारे में दअवत स्वीकार करने की संभावनाओं को नज़रंदाज़ न करे। अर्थात् आहवानकर्ता की हैसियत से तो उन्हें यह मान कर अपने दायित्व को निभाना चाहिए कि जिस के सामने वे अपनी बात रख रहे हैं हो सकता है कि वह इसे स्वीकार कर ले। यदि इस बात का ध्यान न रखा जाए तो न आहवानकर्ता अपने दायित्व को पूर्ण रूप से पूरा कर सकता है और न उन लोगों पर पूरी तरह से तर्क स्पष्ट कर सकता कि जिस से वे लाजवाब हो जाए जिस के सामने दअवत प्रस्तुत की जा रही है।

यह सच्चाई भी सामने रहे कि अल्लाह की महानता की अवधारणा से उस का भय पैदा हो जाना प्रथम एवं मौलिक बात है और जब यह चीज़ पैदा हो जाती है तो दिल नसीहत स्वीकार करने के लिए आमादा हो जाता है और फिर हर वह बात जो सत्य है उस के दिल में उतरने लगती है। अत: सूरह अअ्ला में है:- سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى

अर्थ:- ''नसीहत हासिल करेगा वह जो (अपने रब से) डरता है।''

अत: फ़िरऔन के बारे में यह जो फ़रमाया कि ''संभव है वह नसीहत हासिल करे या डर जाए'' तो यह इस भावार्थ में हज़रत मूसा को निर्देश था कि यह आशा रखते हुए उस से नरमी से बात करो कि वह नसीहत हासिल करेगा किन्तु यदि यह उद्देश्य अभी पूर्ण रुप से प्राप्त नहीं होता और उस में कुछ ईश्वर का डर ही पैदा हो जाता है तो समझो मौलिक रूप से दृष्टिकोण बदल जाता है। इस के बाद मन और मस्तिष्क के भी बदल जाने की संभावनाएं जाग सकती हैं।

50. इधर मूसा को फ़िरऔन के पास जाने का आदेश दिया गया। उधर हारून की तरफ़ प्रकाशना भेज कर के उन्हें भी यही आदेश दिया गया। इस अवसर पर दोनों ने फ़िरऔन के बारे में आशंकाएं व्यक्त कीं इस लिए यहाँ दोनों की बातों को समेट कर प्रस्तुत किया गया है।

51. अर्थात् यूँ तो परिस्थितियों से इस बात की आशंकाए झलकती हैं कि वह तौहीद (एकेश्वरवाद) की बात सुनते ही अन्याय और अत्याचार पर उतर आएगा या अपनी उद्दंडता दिखाने पर तूल जाएगा।

52. यह आयत इस अध्याय में बिलकुल स्पष्ट है कि हज़रत मूसा को जब फ़िरऔन के पास भेजा गया तो उन्हें दअवत के साथ यह मुतालबा भी सामने रखने का निर्देश दिया गया कि बनी इस्राईल को उन के साथ जाने दिया जाए। यह डिमांड चूँकि अतिमहत्वपूर्ण दीनी मसहलतों (नीतियों) के तहत थी इस लिए आरम्भ ही में इस को प्रस्तुत करने का आदेश हुआ। इस मसले पर हम विस्तृत वार्ता सूरह आराफ़ नोट १६१ में कर आए हैं उस को इस अवसर पर ध्यान में रखा जाए।

53. मालूम हुआ कि यदि कोई ताग़ूती हुकूमत (दैत्य शासन) मूसलमानों पर अत्यचार तोड़ती हो तो उस से यह माँग करना कि वह उन पर अत्याचार न करे दीन का तक़ाज़ा है। और इसे प्रचार नीति के विरूद्ध समझना सही नहीं। आहवानकर्ता को प्रत्येक दशा में मज़लूम का समर्थन करना ही होगा । चाहे उस के बारे में कोई अच्छी भावना रखे या दुर्भावना ।

54. यह अल्लाह के आदेशों के अनुपालन का मार्ग अपना लेने की दअवत भी थी और इस बात से आगाही भी कि उसी का अंत भला है जो अल्लाह के अनुपालन का मार्ग स्वीकार करे और उस की रौशनी में चले।

उस ने कहा ऐ मूसा क्या तुम इस लिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू के बल से हमें हमारे देश से निकाल बाहर करो ? तो हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे। तुम हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर लो। न हम उस से फिरेंगे और न तुम। एक समतल मैदान में ।*(अल-क़ुर्आन)***

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

48. और हम पर वह्य की गई है कि यातना (अज़ाब) है उस के लिए जो झुठलाए और मुँह मोड़े [55]।

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾

49. उस ने कहा तुम दोनों का रब कौन है ऐ मूसा?[56]

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾

50. मूसा ने कहा हमारा रब वह है जिस ने हर चीज़ को अस्तित्व प्रदान किया।फिर उस पर राह खोल दी [57]।

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾

51. उस ने सवाल किया फिर गुज़री हुई क़ौमों का क्या हाल है ?

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

52. मूसा ने जवाब दिया उस का ज्ञान मेरे रब के पास एक लेख्य (नविश्ते) में है। मेरा रब ऐसा नहीं है कि उस से ग़लती या भूल हो जाए [58]।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ
أَزْوَاجًا مِنْ نَبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

53. वह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श (बिछौना) बनाया।[59] उस में तुम्हारे लिए राहें निकालीं और आसमान से (ऊपर से)पानी बरसाया फिर उस ने विभिन्न प्रकार की वनस्पति (उपज)पैदा कर दी।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَىٰ ﴿٥٤﴾

54. खाओ और चराओ अपने पशुओं को। इस में निशानियाँ है बुद्धि रखने वालों के लिए।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ﴿٥٥﴾

55. इसी ज़मीन से हम ने तुम्हें पैदा किया, इसी में तुम्हें लौटाएंगे और इसी से पुनः तुम को निकालेंगे [60]।

وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٦﴾

56. हम ने उस को अपनी सारी निशानियाँ दिखाईं परन्तु उस ने झुठलाया और इन्कार किया [61]।

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٥٧﴾

57. उस ने कहा ऐ मूसा क्या तुम इस लिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू के बल से हमें हमारे देश से निकाल बाहर करो [62]?

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ
مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

58. तो हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे। तुम हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर लो [63]।न हम उस से फिरेंगे और न तुम। एक समतल मैदान में [64]।

55. बात तो इस तरह भी कही जा सकती है कि ऐ फ़िरऔन अगर तूने झुठलाया तो तुझे यातना भुगतनी होगी। मगर हज़रत मूसा को संकेत हुआ कि उस से कहें '' हम पर प्रकाशना (वह्य) की गई है कि यातना (अज़ाब) है उस के लिए जो झुठलाए और मुँह मोड़े'' यह अत्यंत भावपूर्ण शैली थी जिस में साधारणतया सभी झुठलाने वालों का अन्जाम बयान कर दिया गया था ताकि फ़िरऔन इसे अपने ऊपर किया गया आक्रमण न समझे बल्कि एक उसूली बात समझ कर आचार-विचार के लिए आमादा हो जाए। साथ ही उस पर यह भी स्पष्ट हो जाए कि अज़ाब अर्थात् कठोर यातना की यह चेतावनी अल्लाह के निर्देशानुसार है।

56. मतलब यह कि जब फ़िरऔन के पास हज़रत मूसा और हज़रत हारून पहुँचे और उस के सामने अल्लाह की बात रखी तो उस ने मूसा से यह प्रश्न किया।

57. फ़िरऔन इस बात का दावेदार था कि वह स्वयं ''सर्वोच्च प्रभु'' है। परन्तु हज़रत मूसा ने साफ़ तौर से उस से कहा कि वह तो अपना रब और प्रभु कायनात के रचयिता को मानते हैं। उन के इस उत्तर में यह युक्ति निहित थी कि जो सृष्टा एवं रचयिता है वही वास्तव में प्रभु है। दूसरी बात यह कि उस ने प्रत्येक वस्तु को गढ़न प्रदान करने के बाद उस पर उस के अनुकूल मार्ग को भी प्रशस्त कर दिया। जानवर घास खाता है, पत्थर नहीं खाता, यह किस ने सिखाया है? मधुमक्खियाँ दूर दूर तक फूलों का रस चूस चूस कर लाती हैं और छत्ते में जमा करती हैं। यह काम वे किस के निर्देशानुसार करती हैं? स्पष्ट है कि यह प्राकृतिक सीख है जो उन के रचयिता ने उन के अन्दर भर दी है। इसी प्रकार पेड़, पौधे, ईंट पत्थर चल एवं अचल सभी अपने अपने कर्तव्य एक ख़ास विधि पर अन्जाम देते रहते हैं। वृक्ष धरती से अपना आहार प्राप्त कर के फल देने लगता है। और दरया ढलान की ओर बहता है। यह सब कुछ किस के आदेश पर होता है ? जब सत्यता यह है कि प्रत्येक वस्तु अपने सृष्टा एवं रचयिता के निर्देशानुसार मार्ग पर चल रही है तो मनुष्य का शासक और मार्गदर्शक भी वास्तव में वही है। और उसी का बताया हुआ मार्ग मानव जीवन के लिए वास्तव में सीधा मार्ग (हिदायत) है।

58. फ़िरऔन का यह प्रश्न कि फिर तुम गुज़री हुई जातियों के बारे में क्या कहते हो? वे क्या सब गुमराह थीं? मात्र उलझा देने के लिए था परन्तु हज़रत मूसा ने एक उसूली बात बयान कर के फ़िरऔन के मस्तिष्क को दअवत के मूल विषय तौहीद (एकेश्वरवाद) पर केन्द्रित करने का सामान किया। उन्होंने फ़रमाया कि पिछली क़ौमों का जो हाल भी रहा हो, मेरे रब को इस का ज्ञान है और उस ने प्रत्येक मनुष्य के कर्मों का लेखा जोखा तैयार कर रखा है उस से कोई ग़लती और भूल नहीं होती कि एक का खाता दूसरे में जमा हो जाए और न वह भूलता है कि किसी के कर्म उसे याद न रहें।

59. हज़रत मूसा के बयान पर अल्लाह तआला की ओर से यह वृद्धि है ताकि क़ुर्आन के पाठकों के सामने तौहीद का पहलू और अधिक प्रज्जवल हो।

60. मनुष्य की संरचना मिट्टी से हुई है। वह मर कर मिट्टी ही में मिल जाता है और क़ियामत के दिन उसे इसी ज़मीन से उठा खड़ा किया जाएगा। इन्सान चाहे समुद्र में मरे या हवा में या अन्तरिक्ष में उस का अन्त प्रत्येक दशा में इसी पृथ्वी पर होगा और इसी ज़मीन से वह उठाया जाएगा।

61. अर्थात् वे सारी निशानियाँ जो हज़रत मूसा और हज़रत हारून की रिसालत को प्रमाणित करने तथा सत्य को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक थीं।

62. यह एक झूठा आरोप था जो फ़िरऔन ने हज़रत मूसा पर लगाया । वरना हज़रत मूसा ने फ़िरऔन वालों को मिस्र से निकाल बाहर करने का कोई राजनैतिक प्रोग्राम नहीं बनाया था। बल्कि वह स्वयं बनी इस्राईल को ले कर मिस्र देश से चले जाना चाहते थे। और इस अभियान में रुकावट न डालने की उन्होंने फ़िरऔन से माँग की थी। इस लिए फ़िरऔन का हज़रत मूसा पर यह आरोप कि तुम हमें अपने देश से निकालना चाहते हो ऐसा ही था जैसा कि उन पर जादू का आरोप।

63. हज़रत मूसा ने अपनी लाठी के सांप बन जाने का चमत्कार फ़िरऔन को दिखाया किन्तु उस ने इसे जादू बताया और चैलेन्ज किया कि हम भी ऐसा ही जादू बनाकर ला सकते हैं तुम मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाओ और दिन सुनिश्चित कर लो ।

64. अर्थात मुक़ाबला ख़ुले मैदान में हो ताकि सब देख सकें।

59. मूसा ने कहा तुम्हारे लिए जश्न (उत्सव) का दिन सुनिश्चित है। और लोगों को दिन चढ़े जमा किया जाए [65]।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

60. फिर फ़िरऔन पलटा, अपने तमाम दाँव इकट्ठे किए और मुक़ाबले में आ गया [66]।

فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦٠﴾

61. मूसा ने कहा, तुम्हारी शामत ! अल्लाह पर झूठ न बाँधो कि अज़ाब से तुम्हें विनष्ट कर दे।और जिस ने झूठ गढ़ा वह नामुराद (असफल) हुआ [67]।

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ﴿٦١﴾

62. यह सुन कर उन के बीच वाद-विवाद होने लगा और वे चुपके चुपके परस्पर मंत्रणा करने लगे [68]।

فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا النَّجْوَىٰ ﴿٦٢﴾

63. कहने लगे [69] ये दोनों जादूगर हैं। ये चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर से तुम को तुम्हारे देश से निकाल बाहर करें और तुम्हारे उत्तम धर्म (आदर्श प्रणाली) को समाप्त कर के रख दें [70]।

قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسَاحِرَانِ يُرِيدَانِ أَنْ يُخْرِجَاكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ
بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾

64. अतः अपने सारे दाँव इकट्ठा कर लो और एक पंक्ति बना कर आओ [71]। आज उसी की जीत होगी जो हावी हो गया।

فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ
أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾

65. उन्हों ने कहा मूसा या तुम डालो या हम पहले डालते हैं।

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾

66. उस ने कहा,नहीं तुम ही डालो [72]।अचानक उन की रस्सियाँ और लाठियाँ उन की जादूगरी के ज़ोर से उस को दौड़ती हुई महसूस होने लगी [73]।

قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ
أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾

67. और मूसा ने अपने दिल में भय महसूस किया [74]।

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَىٰ ﴿٦٧﴾

68. हम ने कहा डरो मत। तुम ही हावी रहोगे।

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾

69. तुम्हारे दाएं हाथ में जो (लाठी) है उसे डाल दो। इन्होंने जो कुछ बनाया है वह उस को निगल जाएगा [75]। ये जो कुछ इन्हों ने बनाया है जादूगर का फ़रेब है [76]।और जादूगर सफल नहीं हो सकता चाहे किसी राह से आए [77]।

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا
صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾

65. ''यौमुज़्ज़िनत:''जश्न (उत्सव) के दिन'' का चुनाव हज़रत मूसा ने इस लिए किया ताकि लोग सरलतापूर्वक अधिक से अधिक संख्या में एकत्रित हो सकें और अल्लाह के चमत्कार का प्रत्यक्ष दर्शन कर सकें। यह दिन राष्ट्रीय उत्सव का दिन रहा होगा । दिन चढ़ने का समय हज़रत मूसा ने इस लिए निर्धारित किया ताकि लोग पूरे प्रकाश में उन के चमत्कार को देख लें और उन की लाठी के साँप बन जाने में उन को कोई संदेह न रहे।

66. अर्थात् इस सभा के समाप्त हो जाने के बाद फ़िरऔन षडयंत्र की तैयारी में जुट गया और योजना बनाई कि देश के कोने कोने से माहिर एवं अभ्यास्त जादूगरों को बुलाया जाए ताकि वे सब इकट्ठे हो कर अपना करतब दिखाएं । और इस जादू से लोगों पर यह बात स्पष्ट हो जाए कि मूसा की लाठी का साँप बन जाना ख़ुदा का चमत्कार नहीं बल्कि यह मात्र मूसा की जादूगरी है। अत: वे अपने इन हथकन्डो के साथ अभ्यस्त जादूगरों को लिए हुए उत्सव के दिन मुक़ाबले के लिए मैदान में आ गया।

67. हज़रत मूसा का यह संबोधन फ़िरऔनियों और जादूगरों से था जिस में उन्हों ने सावधान किया कि अल्लाह के मोज़्ज़े को जादू और उस के रसूल को जादूगर बताना अल्लाह पर झूठ बाँधना है। और जो व्यक्ति भी अल्लाह पर झूठ बाँधना है वह अल्लाह के अज़ाब को न्योता देता है। ऐसे लोगों के भाग में असफलता एवं नामुरादी के सिवा कुछ नहीं आ सकता।

68. हज़रत मूसा की ठीक ठीक चेतावनी को सुन कर जादूगर असमंजस में पड़ गए और चुपके चुपके आपस में मंत्रणा करने लगे कि मुक़ाबला किया भी जाए या नहीं।

69. कहने वाले फ़िरऔन के दरबारी रहे होंगे।

70. इसी प्रकार उन दरबारियों ने तनाव एवं विद्रेष उत्पन्न करने की चेष्टा की ताकि जादूगर पूरे आवेश के साथ मुक़ाबले के लिए सामने आऐं।

71. अर्थात् तुम्हारे बीच कोई मतभेद नहीं होना चाहिए बल्कि मूसा और हारून के मुक़ाबले में तुम सब जादूगरों का एक संयुक्त मंच होना चाहिए।

72. हज़रत मूसा ने इस बात को वरीयता दी कि पहले जादूगर अपना करतब दिखाऐं फिर वे अपना मोज़्ज़ा प्रस्तुत करें। असत्य के अंधकार के बाद सत्य का प्रकाश प्रस्फुटित हो।

73. पता चला कि जादू किसी चीज़ के मूल तत्व अथवा उस की वास्तविकता को नहीं बदलता बल्कि मात्र नज़र का धोखा एवं वैचारिक वाहकाब है। जादूगरों की रस्सियाँ और लाठियाँ वास्तव में साँप नहीं बन गई थीं, बल्कि ऐसा दिख रहा था कि वे साँप की तरह दौड़ रही है। सूरह आराफ़ में हैं :-

فَلَمَّا اَلْقَوْا سَحَرُوْا اَعْيُنَ النَّاسِ ۔(اعراف۔١١٦)

अर्थ:- '' फिर जब उन्हों ने (अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ) डाल दीं तो लोगों की निगाहें जादू से मार दीं।''

और जहाँ तक हज़रत मूसा की बात है क़ुर्आन कहता है :-

يُخَيَّلُ اِلَيْهِ

अर्थात् ''उन को ऐसा प्रतीत हुआ'' कि जादूगरों की रस्सियाँ और लाठियाँ दौड़ रही हैं। और वह भी तब जब कि वे पहले से ही जानते थे कि जो कुछ जादूगर प्रस्तुत करने वाले हैं वह बस जादू है न कि वास्तव में वस्तु की प्राकृति । फिर वह चीज़ भी क्षणिक थी । इस के बाद उन का माया जाल छिन्न भिन्न हो गया। जादू का धोखा थोड़ी देर ही के लिए होता है। इस के बाद वह लुप्त हो जाता है। अत: यह मानना सही नहीं कि हज़रत मूसा पर नबी होने के बावजूद जादू का असर हुआ था।'' जादू का असर होना और बात है और जादू को देख लेना और बात। हज़रत मूसा ने जादू को देख लिया था। उन पर जादू का कोई असर नहीं हुआ था । उन का मानसिक संतुलन बिलकुल सही सलामत था। उन्हों ने लाठियों और रस्सियों को साँप के रूप में जो देखा तो यह ऐसा ही है जैसे कोई सराब (मृगतृष्णा) को देख कर पानी समझ बैठे। ज़ाहिर है यह नज़र का धोखा क्षणिक होता है और इस को कोई व्यक्ति भी मानसिक सन्तुलन का डोल जाना नहीं समझता।

74. भय इस बात का कि यह जादू लोगों को ऐसा प्रभावित न कर दे कि वे जादू और मोज़्ज़ा में अन्तर न कर सकें ।

75. अर्थात् उन के मायाजाल को निगल जाएगा । अत: मूसा का साँप जहाँ गया जादू के प्रभाव को मिटाता गया।

76. अर्थात यह जादूगरों का करतब और नज़र का धोखा है वरना उन की लाठियों और रस्सियाँ वास्तव में साँप नहीं बन गई हैं।

77. अर्थात् जादूगर जो करतब भी दिखाए और फ़रेब देने की जो विधि भी वह अपनाए, अल्लाह के मोज़्ज़े के मुक़ाबले में न उस की जीत हो सकती है और न वास्तविक सफलता उस को प्राप्त हो सकती है। जादू और मोज़्ज़े के अन्तर के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट. १६९

70. आख़िरकार जादूगर बेइख़्तियार (सहसा) सज्दे में गिर पड़े [78]।वे पुकार उठे हम ईमान लाए । मूसा और हारून के रब पर [79]।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوٓا ءَامَنَّا بِرَبِّ هَٰرُونَ وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾

71. (फ़िरऔन ने) कहा तुम इस पर ईमान ले आए इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति देता [80]?ज़रूर यह तुम्हारा गुरू है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है [81]। तो मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कटवाऊँगा और मैं तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा।फिर तुम्हें पता चलेगा कि हम में से किस की यातना अधिक कठोर और अधिक स्थायी है [82]।

قَالَ ءَامَنتُمْ لَهُۥ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُۥ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِى عَلَّمَكُمُ
السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَٰفٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ
فِى جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَآ أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ﴿٧١﴾

72. उन्हों ने जवाब दिया हम इन स्पष्ट निशानियों पर जो हमारे सामने आई हैं, और उस हस्ती पर जिस ने हमें पैदा किया है, तुझे कदापि वरीयता नहीं देंगे। तू जो चाहे कर गुज़र।तू जो कुछ कर सकता है वह बस इस सांसारिक जीवन की हद तक ही कर सकता है [83]।

قَالُوا لَن نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنَٰتِ وَالَّذِى فَطَرَنَا ۖ
فَاقْضِ مَآ أَنتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِى هَٰذِهِ الْحَيَوٰةَ الدُّنْيَآ ﴿٧٢﴾

73. हम तो अपने रब पर ईमान लाए ताकि वह हमारी ख़ताओं को क्षमा कर दे तथा जादू के इस काम को भी जिस पर तू ने हमें विवश किया था [84]।अल्लाह ही बेहतर और बाक़ी रहने वाला है [85]।

إِنَّآ ءَامَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَٰيَٰنَا وَمَآ أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ
مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ﴿٧٣﴾

74. निश्चय ही जो व्यक्ति अपने रब के समक्ष अपराधी की हैसियत से उपस्थित होगा उस के लिए जहन्नम है [86] जिस में (वह) न मरेगा और न जियेगा [87]।

إِنَّهُۥ مَن يَأْتِ رَبَّهُۥ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُۥ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ
فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾

75. और जो व्यक्ति मोमिन की हैसियत से उपस्थित होगा और अच्छे कर्म भी किये होंगे तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे दर्जे होंगे [88]।

وَمَن يَأْتِهِۦ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّٰلِحَٰتِ فَأُولَٰٓئِكَ
لَهُمُ الدَّرَجَٰتُ الْعُلَىٰ ﴿٧٥﴾

76. सदैव रहने के बाग़ जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। उन में वे हमेशा रहेंगे।यह फल है उस का जिस ने पवित्रता अपनायी [89]।

جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ
فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَآؤُا مَن تَزَكَّىٰ ﴿٧٦﴾

77. और हम ने मूसा पर प्रकाशना की कि मेरे बन्दों को रातों रात ले कर चल पड़ो [90]। और उन के लिए समुद्र में सूखा मार्ग निकाल लो [91]।न तुम्हें पीछा करने वालों का कोई भय होगा और न (डूबने का) डर।[92]

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِى فَاضْرِبْ
لَهُمْ طَرِيقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَٰفُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ﴿٧٧﴾

78. इस मुक़ाबले का परिणाम यह सामने आया कि जादूगरों का सारा मायाजाल लुप्त हो गया और हज़रत मूसा की लाठी सांप बन कर चमत्कार दिखाती रही।

इस प्रकार स्पष्ट हुआ की हज़रत मूसा जो कुछ प्रस्तुत कर रहे हैं वह जादू नहीं है बल्कि अल्लाह का मोज्ज़ा (चमत्कार) है जो इस बात का तर्क एवं साक्ष्य है कि वे अल्लाह के रसूल हैं। इस प्रकार जब सत्य बिलकुल खुल कर उन के सामने आ गया तो वे बिलकुल बेक़ाबू हो कर सज्दे में गिर पड़े।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १७१

79. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट १७२ और १७३ में गुज़र चुकी है।

80. यह इस बात का प्रमाण है कि फ़िरऔन का रब होने का दावा मात्र राजनैतिक संप्रभुता का न था बल्कि पूर्ण संप्रभुता का था । अत: वह ख़ालिस धार्मिक एवं व्यक्तिगत कृत्यों में भी हस्तक्षेप करता था। उस के राज्य में न सत्य धर्म का प्रचार करने की स्वतंत्रता थी और न किसी सच्चे नेतृत्व के लिए उभरने का कोई अवसर। और न ही उस की क़ौम का कोई व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा की पुकार पर अल्लाह की प्रदान की हुई जीवन प्रणाली को स्वीकार कर सकता था।

81. फ़िरऔन जब पराजित हुआ तो अपनी पराजय पर परदा डालने के लिए हज़रत मूसा पर यह आरोप लगा दिया कि वे इन जादूगरों के गुरू हैं सब ने मिल कर यह षडयंत्र रचा था ।

82. अर्थात् इस दुखदायी यातना के मिलने पर तुम्हें पता चलेगा कि ख़ुदा की यातना बड़ी है या मेरी। इस से पता चलता है कि फ़िरऔन कैसा अहंकारी, ज़ालिम और उद्दंड शासक था।

83. यह थी ईमान की शक्ति कि जिस से लैस हो कर जादूगर फ़िरऔन के आगे सीना तान कर खड़े हो गए कि

तू तीर आज़मा, हम जिगर आज़माऐं

ईमान जब दिल में घिर कर जाता है तो दिल और दिमाग़ बदल जाते हैं और साहस बहुत बढ़ जाता है। जादूगर क्या थे और देखते देखते क्या हो गए।

84. मालूम हुआ कि जादूगर हज़रत मूसा के मुक़ाबले में आने के लिए दिल से तैयार नहीं थे। मगर फ़िरऔन का दबाव ऐसा रहा कि वे मुक़ाबले के लिए आ गए।

85. अर्थात् फ़िरऔन तो आज है और कल मरा। किन्तु अल्लाह तआला की हस्ती तो सदा सर्वदा बाक़ी रहने वाली है। अत: वही इस योग्य है कि उस पर भरोसा किया जाए और वही इस का योग्य पात्र है कि उस से आशाऐं बाँधी जाऐं।

86. यह अल्लाह तआला का अपना बयान है जो जादूगरों के बयान पर दिया गया बयान है।

87. मतलब यह कि न तो उसे मौत आएगी कि मुसीबत की समाप्ति कर दे और न जियेगा कि जीवन का आनन्द उठाए। दोनों के बीच एक जान लेवा मुसीबत में फंसा रहेगा ।

88. ईमान के साथ अच्छे कर्म की अनिवार्यता इस वास्तविकता को स्पष्ट करती है कि जन्नत का यह वादा उन ही लोगों से है जो ईमान ला कर अपने आप को अच्छे कर्मों से सुसज्जित करेंगे। अफ़सोस कि मुसलमानों ने क़ुर्आन के इस स्पष्ट बयान को जिस को क़ुर्आन ने बार बार दोहराया है, नज़रन्दाज़ कर के उन हदीसों का सहारा लिया है जिन में संक्षिप्त रूप से ईमान लाने वालों को जन्नत की शुभ सूचना दी गई है। जैसे हदीस में इर्शाद हुआ है:-

من قال لا اله الا اللّٰه دخل الجنة

अर्थ:- ''जिस ने कहा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं वह जन्नत में दाख़िल हुआ।''

स्पष्ट है, इस का यह मतलब नहीं कि आदमी ज़बान से ''ला इलाह इल्लल्लाह'' कहे और इस के बाद जो चाहे करे। जन्नत में उस के लिए जगह आरक्षित हो गई। अगर हदीस को क़ुर्आन की रौशनी में समझने की कोशिश की जाती तो यह ग़लत मतलब कभी न लिया जाता। मगर हदीस को क़ुर्आन से अलग कर के उस के शाब्दिक अर्थ का सहारा लिया गया ताकि दुनिया के लाभ भी ख़ूब बटोरें और जन्नत भी हाथ से न जाए।

89. पवित्रता से अभिप्रेत शिर्क (बहुदेववाद) कुफ्र (अनीश्वरवाद) और पापाचार से पाक होना है। मूल शब्द तज़क्का प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ पवित्र होने ही के नहीं बल्कि अपने आप को संवारने का भी है। इस लिए इस के भावार्थ में अपना सही प्रशिक्षण एवं तरबियत करना और नेकियों से अपने आप को संवारना भी शामिल है।

90. हज़रत मूसा के लंबे दअवती संघर्ष एवं प्रयास और तरह तरह के मोजज़े दिखाने का वर्णन क़ुर्आन में दूसरी जगहों पर भी हुआ है।

देखिए सूरह आराफ़ आयत १३० से १३५

यहाँ आख़िरी चरण का बयान हो रहा है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट १३७ और १३८

91. अर्थात अपनी लाठी समुद्र पर मारो तो वह फट जाएगा और तुम्हारे गुज़रने के लिए बिलकुल सूखा मार्ग निकल आएगा। यह अल्लाह तआला का मोज्ज़ा (चमत्कार)

था जो मूसा की लाठी द्वारा प्रकट हुआ । यदि संयोगवश समुद्र का पानी एक तरफ़ हुआ होता या दो भागों में बट गया होता तो जो मार्ग निकल आता वह सूखा नहीं हो सकता था। सूखा मार्ग समुद्र के बीच से अकस्मात निकल आना चमत्कारिक रूप से ही संभव है। इस लिए सीधी बात यही है कि इसे अल्लाह का चमत्कार माना जाए और आयत की उल्टी सीधी व्याख्या न की जाए। सूरह शुअरा आयत ६३ में यह घटना और अधिक स्पष्ट रूप से बयान हुई है।

92. अर्थात् फ़िरऔन तुम्हारा पीछा तो करेगा किन्तु तुम को पकड़ न सकेगा । इस लिए तुम निर्भय चले जाओ। तुम्हारे समुद्र में डूबने का भी कोई ख़तरा नहीं है क्यों कि समुद्र में से तुम्हारे लिए चमत्कारिक रूप से मार्ग निकाला जाएगा।

फिर फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया तो समुद्र ने उन को ढाँक लिया जिस तरह ढाँक लिया ।और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया। सही मार्ग न दिखाया । (अल-क़ुर्आन)

78. फिर फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया तो समुद्र ने उन को ढाँक लिया जिस तरह ढाँक लिया [93]।

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

79. और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया। सही मार्ग न दिखाया [94]।

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾

80. ऐ बनी इस्राईल ! हम ने तुम को तुम्हारे दुश्मन से मुक्ति दी और तूर की दायीं ओर तुम से वादा किया [95]और तुम पर मन्न और सलवा उतारा [96]।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ
جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾

81. खाओ हमारी प्रदान की हुई पाक चीजें और इस मामले में सरकशी न करो वरना मेरा प्रकोप तुम पर उतरेगा और जिस पर मेरा प्रकोप टूटा वह विनाश में गिरा।

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ
فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾

82. और मैं बड़ा क्षमा करने वाला हूँ उस के लिए जो तौबा करे, ईमान लाए, नेक अमल करे और हिदायत (सीधे मार्ग) पर चलता रहे [97]।

وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ
تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾

83. और ऐ मूसा ! अपनी क़ौम को छोड़ कर शीघ्र उपस्थित होने पर तुम्हें किस चीज़ ने उभारा [98]?

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾

84. निवेदन किया, वे मेरे पद्चिन्हों पर ही हैं और मैं ने तेरे समक्ष आने में जल्दी की तकि तू राज़ि हो [99]।

قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ
رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾

85. फ़रमाया हम ने तुम्हारे पीछे तुम्हारी क़ौम को परीक्षा में डाल दिया और सामिरी ने उसे गुमराह कर दिया ।[100]

قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ
وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾

86. मूसा बड़े ही ग़ुस्से में अफ़सोस करता हुआ अपनी क़ौम की तरफ़ लौटा [101]।उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! क्या तुम्हारे रब ने तुम से अच्छा वादा नहीं किया था।[102] क्या तुम पर बड़ी अवधि गुज़र गई [103]। या तुम यही चाहते थे कि तुम्हारे रब का प्रकोप तुम पर उतर पड़े, इस लिए तुम ने मुझ से वादा ख़िलाफ़ी की [104]।

فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ
اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ
اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ
مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾

93. फ़िरऔन बनी इस्राईल का पीछा करता हुआ जब समुद्र के पास पहुँचा तो रास्ता ख़ुला पा कर वह भी अपने लश्कर के साथ चल पड़ा। जब समुद्र के बीच पहुँच गया तो दोनों तरफ़ से पानी आ कर मिल गया। अब यह दशा थी कि वह पूरी तरह समुद्र की प्रचण्ड मौज़ों की चपेट में था।

अल्लाह तआला की यह बहुत बड़ी निशानी थी जो प्रकट हुई। बनी इस्राईल को तो समुद्र ने सही सलामत गुज़ार दिया किन्तु फ़िरऔनियों को बुरी तरह अपनी लपेट में ले लिया।

94. अर्थात् फ़िरऔन का यह दावा ग़लत सिद्ध हुआ कि वह लोगों को सही मार्ग की प्रेरणा दे रहा है। यदि वह सही मार्ग बताता तो उस का अपनी क़ौम समेत यह अन्जाम न होता। इस घटना में उन लोगों के लिए बड़ी शिक्षा है जो अल्लाह की हिदायत को जिस को वह अपने रसूल के माध्यम से भेजता है, स्वीकार नहीं करते । राजा और नेता स्वयं गुमराह होते हैं और सीधी सादी जनता को भी गुमराह करते हैं। अंततः ख़ुद भी डूबते हैं और जनता को भी ले कर डूबते हैं।

95. अर्थात् तूर सीना के पावन क्षेत्र में तुम्हें शरीअत (संविधान) जैसा उपहार प्रदान करने का वादा किया।

''ऐमन'' अर्थात् ''दाहिने'' की व्याख्या सूरह मरयम नोट ७२ में गुज़र चुकी।

96. मन्न और सल्वा की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ७६।

97. यह आयत बताती है कि अल्लाह तआला ने मग़्फ़िरत अर्थात् क्षमादान का वादा उन लोगों से किया है जो शिर्क, कुफ्र और पापाचार से बाज़ आऐं। उन बातों पर ईमान लाऐं जिस की दअवत अल्लाह का रसूल देता है। नेक अमल करें और हिदायत की राह अर्थात् अल्लाह की प्रदान की हुई जीवन प्रणाली एवं संविधान पर मरते दम तक जमे रहें।

98. हज़रत मूसा की तूर पर्वत पर उपस्थिति के लिए जो समय निर्धारित किया गया उस से पहले ही वे उपस्थित हो गए। अल्लाह तआला ने इस का कारण उन से पूछा। अल्लाह तआला को सारी बात का ज्ञान था किन्तु प्रश्न इस लिए किया ताकि मूसा पर यह स्पष्ट हो कि एक तरफ़ उन की अभिरूचि है जो संविधान की प्राप्ति के लिए उन को समय से पहले ही तूर पर ले आई है और दूसरी ओर उन की क़ौम है जो ख़ुदा के आदेशों एवं निर्देशों से विमुख हो कर शिर्क अर्थात् बहुदेववाद की राह पर चल पड़ी है। तफ़सील आगे आ रही है।

यह प्रश्न संभवतः अवधि की समाप्ति पर किया गया था जब कि हज़रत मूसा को ''अलवाह'' प्रदान हुई जैसा कि बाद की आयतों से स्पष्ट है जिन में बयान हुआ है कि हज़रत मूसा यह ख़बर पा कर कि उन की क़ौम बछड़े को पुज्य मान कर उन की उपासना में लिप्त हो गई है, क्रोध की हालत में क़ौम की ओर लौटे थे।

99. अर्थात् बनी इस्राईल मेरा अनुपालन कर रहे हैं और मैं समय से पहले तेरे समक्ष उपस्थित हुआ ताकि तेरी प्रसन्नता मुझे प्राप्त हो।

हज़रत मूसा को भरोसा था कि उन की क़ौम उन के पीछे उन के ही पद्चिन्हों पर चलेगी इस लिए उन्हों ने अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने के समय से पूर्व तूर पर्वत पर जाने में कोई आपत्ति महसूस नहीं की । किन्तु बाद की परिस्थिति ने बता दिया कि उन की क़ौम पर उन की अनुपस्थिति हानिकारक रही । तूर पर उन की उपस्थिति के लिए अल्लाह तआला ने एक महीने की अवधि निर्धारित की थी बाद में दस दिन की वृद्धि कर के उसे चालीस दिन कर दिया गया। इधर हज़रत मूसा निर्धारित समय से कुछ दिन पहले ही तूर पर पहुँच गए थे। इस लिए एक माह गुजर गया और हज़रत मूसा लौटे नहीं तो उपद्रवी तत्वों को क़ौम में ग़लतफहमियाँ पैदा करने और विवाद ख़ड़ा करने का अवसर मिल गया ।

100. सामरी एक मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) तथा फ़ित्ना एवं विवाद खड़ा करने में अभ्यस्त था । यह बनी इस्राईल में घुस आया था और जिस ने हज़रत मूसा की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर बनी इस्राईल को बहकाया और बछड़े की पूजा पर आमादा किया । रही बात इस नाम के अन्वेषण एवं खोज की तो इस बारे में दृढ़ता के साथ कुछ कहना मुश्किल है और इस का कोई लाभ भी नहीं है। हो सकता है सामरी कोई ख़ास क़बीला या कोई गऊ भक्त जाति रही हो और यह व्यक्ति उस का सदस्य हो और इस कारण क़ुर्आन ने उसे अस्सामिरी (The Samiri) कहा हो । क़ुर्आन ने इस के नाम की पुष्टि इस लिए की ताकि स्पष्ट हो जाए कि वास्तवविक पापी जिस ने बछड़े को पूज्य बनाकर प्रस्तुत किया था वह सामिरी था। और बाइबिल में हज़रत हारून को जो इस का ज़िम्मेदार ठहराया गया है वह सरासर ग़लत और झूठ है।

यह भी स्पष्ट रहे कि क़ुर्आन ने जिस सामिरी का वर्णन किया है उस का सामिरी साम्राज्य से कोई संबन्ध नहीं है। क्यों कि सामिरी साम्राज्य यहूदियों का साम्राज्य था जो बहुत बाद में अर्थात् हज़रत सुलैमान के बाद अस्तित्व में आया।

101. ग़ुस्सा इस बात पर कि क़ौम शिर्क जैसे महापाप में लिप्त हो गई है और अफ़सोस इस बात का कि एकेश्वरवादी जीवन प्रणाली का जो बहुमूल्य उपहार उस ने प्राप्त किया था और जिस की सुरक्षा एवं स्थापना के लिए वे क़ुर्बानियाँ देते हुए मिस्र से तूर के दामन में पहुँचे उस को उन्हों ने खो दिया।

102. अच्छे वादे से अभिप्रेत संविधान प्रदान करने का

वादा है जिस से लिए हज़रत मूसा तूर पर गए थे।

103. अर्थात् मेरी अनुपस्थिति किसी लम्बी अवधि के लिए नहीं हुई थी। यदि एक महीने की निर्धारित अवधि में कुछ दिन की और वृद्धि हो गई थी तो बहरहाल यह ऐसी अवधि नहीं थी कि तुम इसे अनिश्चित अनुपस्थिति समझते और किसी फ़ित्ने का शिकार हो जाते।

104. अर्थात् मेरे अनुपालन का जो तुम ने प्रण किया था उस से फिर गए।

उस ने कहा ऐ मेरी माँ के बेटे ! मेरी दाढ़ी न पकड़िए और न मेरा सर। मुझे आशंका हुई कि आप कहेंगे, तुम ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरे आदेश की प्रतीक्षा न की । मूसा ने पूछा सामिरी तेरा क्या मामला है ? उस ने उत्तर दिया मुझे वह बात सुझाई दी जो दूसरों को सुझाई नहीं दी। अतः मैं ने रसूल के पद्चिन्हों से एक मुट्ठी ले ली। फिर उस को छोड़ दिया । मेरे मन ने मुझे ऐसा ही सुझाया ।*(अल-क़ुर्आन)*

87. उन्हों ने जवाब दिया हम ने अपने अधिकार से आप से किये हुए वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया। बल्कि क़ौम के ज़ेवरों के बोझ से हम भर गए थे इस लिए हम ने उन को फ़ेंक दिया [105]। इस प्रकार सामिरी ने (उन को आग में) डाला।

قَالُوْا مَآ أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ
الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾

88. और उन के लिए एक बछड़ा निकाल लाया। एक धड़ (आकृति) जिस से गाय की सी आवाज़ निकलती थी [106]। लोग देख कर कहने लगे यह है हमारा ख़ुदा (इष्ट पूज्य) और मूसा का भी ख़ुदा, मगर वह भूल गया [107]।

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ إِلٰهُكُمْ وَإِلٰهُ
مُوْسٰى فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

89. क्या ये लोग देख नहीं रहे थे कि न वह उन की बात का जवाब दे सकता है और न लाभ और हानि पहुँचा सकता है [108]।

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَّلَا يَمْلِكُ
لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

90. और हारून ने उन से पहले ही कह दिया था कि लोगो ! तुम इस के द्वारा फ़ित्ने (आज़माइश) में डाल दिए गए हो। तुम्हारा रब तो रहमान है। तुम मेरा अनुपालन करो और मेरी बात मानो।[109]

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ وَإِنَّ
رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَأَطِيْعُوْا أَمْرِيْ ﴿٩٠﴾

91. उन्हों ने उत्तर दिया, हम इस की पूजा पर जमे रहेंगे जब तक कि मूसा वापस न आ जाएं।[110]

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾

92. मूसा ने पूछा हारून ! तुम ने जब देखा कि ये गुमराह हो रहे हैं तो तुम्हें किस चीज़ ने रोका।

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوْا ﴿٩٢﴾

93. कि तुम मेरी हिदायत पर अमल न करो। क्या तुम ने मेरे आदेशों का उल्लंघन किया [111]?

أَلَّا تَتَّبِعَنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

94. उस ने कहा ऐ मेरी माँ के बेटे ! मेरी दाढ़ी न पकड़िए और न मेरा सर। मुझे आशंका हुई कि आप कहेंगे, तुम ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरे आदेश की प्रतीक्षा न की [112]।

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَأْسِيْ إِنِّيْ خَشِيْتُ أَنْ
تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾

95. मूसा ने पूछा सामिरी ! तेरा क्या मामला है [113]?

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

96. उस ने उत्तर दिया मुझे वह बात सुझाई दी जो दूसरों को सुझाई नहीं दी।अतः मैं ने रसूल के पद्चिन्हों से एक मुट्ठी ले ली।फिर उस को छोड़ दिया।मेरे मन ने मुझे ऐसा ही सुझाया [114]।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً
مِّنْ أَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾

105. यह बनी इस्राईल के उन सरदारों का बयान है जिन को उन्हों ने अपने ज़ेवरात अमानत के तौर पर सुपुर्द किये थे। ये ज़ेवरात बनी इस्राईल ही के थे जिन्हें वे अपने साथ मिस्र से लाए थे । परन्तु बियाबानी जीवन में उन की औरतों के लिए इस्तेमाल का न कोई अवसर था और न उस की सुरक्षा ही आसान थी । इस लिए उन्हों ने अपने ज़ेवरात कुछ विश्वास पात्रों के हवाले किये थे ताकि वे उस को सुरक्षात्मक ढंग से रखें। परन्तु यह ज़िम्मेदारी ऐसी थी कि वे उस के बोझ तले दबे जा रहे थे क्यों कि उन के लिए भी उस बियाबान में उस की देख रेख करना आसान न था। इधर सामिरी ने क़ौम को गऊ पूजा में लिप्त करने के लिए एक चाल चली। उस ने कुछ इस विधि से लोगों को बहकाया कि मूसा ने तुम को ला कर बियाबान में छोड़ दिया है और ख़ुद ग़ायब हो गए। अब यदि तुम को अपने सच्चे प्रभु की तलाश है तो अपने ज़ेवरात चन्दे में दे दो मैं तुम्हें आश्चर्य चकित चमत्कार दिखाता हूँ। लोग उस के बहकावे में आ गए और अपने उन सरदारों से जिन को उन्हों ने अपने ज़ेवरात अमानत के तौर पर सौंप रखे थे यह माँग की कि वह उन के ज़ेवरात सामिरी को चन्दे में दे दें। सरदार चूँकि उन ज़ेवरों की ज़िम्मेदारी के बोझ तले दबे जा रहे थे इस लिए उन्हों ने उस बोझ को उतार फेंक दिया सामिरी ने उन तमाम ज़ेवरों को जमा कर के आग में डाला और बछड़ा ढाल कर निकाल लिया ।

स्पष्ट रहे कि बाइबिल का यह बयान सही नहीं कि बनी इस्राईल जब मिस्र से चले हैं तो उन्हों ने मिस्रियों से ज़ेवर क्षणिक रूप से मंगनी के तौर पर माँग लिए और उन को ले कर मिस्र रवाना हो गए। इस प्रकार उन्हों ने मिस्रियों को लूट लिया था (देखिए निर्गमन १२:३५,३६)

बाइबिल के इस बयान पर विश्वास करते हुए क़ुर्आन के टीकाकारों ने लिखा है कि यही ज़ेवर थे जिन को बनी इस्राईल ने फेंक दिया था और सामिरी ने उन को ले कर बछड़ा बना लिया था। मगर क़ुर्आन से इस का अनुमोदन नहीं होता क्यों कि सूरह आराफ़ में ज़ेवरात को मूसा की क़ौम से सन्बन्धित बताया गया है।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسىٰ مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلاً۔(اعراف۔١٤٨)

अर्थ:- '' और मूसा के (तूर पर) चले जाने के बाद उस की क़ौम ने अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा ढाल लिया।'' (आराफ़ १४८)

इस से साफ़ स्पष्ट है कि यह मूसा की क़ौम के अपने ज़ेवर थे और मिस्रियों को लूटने की बात नैतिक दृष्टि से भी सही नहीं मालूम होती । फिर हज़रत मूसा ने किस प्रकार इस की अनुमति दी होगी।और मिस्री इतने भोले नहीं थे कि अपने ज़ेवर निकाल कर बनी इस्राईल को,जिन को उन्हों ने अपने अत्याचार का निशाना बनाया था, दे देते ।

106. अर्थात् सामिरी ने ज़ेवरात को जो सोने के रहे होंगे पिघला कर बछड़े के आकार में ढाल लिया और अपनी कला का ऐसा प्रदर्शन किया कि हवा के आने जाने से गाय की सी आवाज़ निकलने लगी। क़ुर्आन कहता है कि वह एक आकृति अर्थात् धड़ था। प्राण उस में नहीं थे बल्कि मात्र भाँ भाँ की आवाज़ उस में से निकलती थी।

107. लोग उस सुनहरे बछड़े पर ऐसे रीझ गए कि उस को पूज्य बना बैठे और यह दावा भी कर दिया कि मूसा का ख़ुदा यही है। परन्तु वे भूल कर किसी और ख़ुदा की खोज में तूर पर गए हैं।

108. मतलब यह कि इन अक़्ल के अन्धों को यह बात भी दिखाई नहीं दी कि यह बछड़ा एक ही तरह की आवाज़ निकालता है इस से आगे वह उन की किसी बात का भी जवाब नहीं देता और न उस में यह शक्ति एवं सामर्थ्य है कि किसी को लाभ या हानि पहुँचाए। फिर उस में इश्वरीय गुण कहाँ से आ गये? वास्तविकता यह है कि गऊ भक्तों का इष्ट पूज्य केवल भाँ भाँ करता है परन्तु तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद पर ईमान रखने वालों का ख़ुदा सब कुछ सुनता और देखता है, दुआऐं सुनता और पूरी करता है और उन का सही मार्गदर्शन भी करता है।

109. हज़रत हारून नबी थे। वे इस गुमराह करने वाले फ़ित्ने को देख कर कैसे चुप रह सकते थे। उन्हों ने संपूर्ण जाति को सावधान किया कि देखो इस बछड़े का अस्तित्व सरासर फ़ित्ना है और तुम इस आज़माइश में डाल दिए गए हो कि अपने ईमान पर दृढ़ता पूर्वक जमे रहते हो या कुफ्र और शिर्क (इन्कार एवं बहुदेववाद) का मार्ग अपनाते हो। तुम्हारे लिए बछड़े की पूजा का क्या सवाल पैदा होता है? जब कि तुम्हारा प्रभु ब्रह्माण्ड की वह महान हस्ती है जिस को तुम रहमान (दयावान ख़ुदा) के नाम से जानते हो। मैं उस का रसूल हूँ अत: मेरा अनुपालन करो और जो आदेश मैं दे रहा हूँ उस को मानो।

110. यह था बनी इस्राईल का दुस्साहस कि एक नबी की समय पर दी गई चेतावनी पर भी कान नहीं धरा और उन्हें ऐसा उत्तर दिया जिस के एक एक शब्द से उद्दंडता झलकती है।

111. हज़रत मूसा ने हज़रत हारून से भी कड़ी पूछ ताछ की, कि जब लोग गुमराह हो रहे थे तो क्या कारण था कि तुम ने फ़ित्ने को मिटाने के लिए मेरे निर्देशों पर अमल नहीं किया अर्थात् ऐसे लोगों के विरुद्ध कोई क़दम नहीं उठाया। हज़रत

मूसा जब तूर पर जा रहे थे तो उन्हों ने हज़रत हारून को यह निर्देश दिए थे कि وَاَصۡلِحۡ अर्थात् '' इस्लाह (सुधार) के काम करना'' जिस में बुराई को दूर करना भी शामिल था।

112. हज़रत हारून ने बड़े धैर्य से काम लिया और हज़रत मूसा पर वास्तविकता स्पष्ट कर दी। उन्हों ने देखा कि बनी इस्राईल की बड़ी संख्या पर सामिरी का जादू चल गया है और यह बछड़े के मोह का नशा उन पर कुछ ऐसा छा गया कि उस की पूजा से उन को रोकना बल प्रयोग के बग़ैर संभव नहीं और बल प्रयोग के लिए बनी इस्राईल के जो लोग बढ़ेंगे उन पर बछड़े के ये भक्त तलवारें उठाऐंगे। इस प्रकार बनी इस्राईल का समूह टूट फूट का शिकार हो जाएगा। और वह एक नबी (हज़रत हारून) को मार देने से भी पीछे न हटेंगे। और यदि ऐसा हुआ तो बनी इस्राईल को एक भारी दुर्घटना का मुँह देखना पड़ेगा। और अब हज़रत मूसा की वापसी कुछ ही दिनों में संभावित है तो उचित यही है कि उन के आने की प्रतीक्षा की जाए। यह हज़रत हारून की दूर दृष्टि थी जिस के चलते उन्हों ने मामले को कुछ रोज़ के लिए टाल दिया। इस में आलस्य करने या साहस छोड़ देने की कोई बात न थी। और न एक नबी के बारे में इस प्रकार की दुर्भावना पाली जा सकती है। इस के बावजूद मूसा का कड़ी पूछ ताछ करना औचित्य पूर्ण ही था।

क्यों कि उन का क्रोध और आवेश ईमानी ग़ैरत के फ़ल्सवरूप था । ऐसे अवसरों पर आदर सम्मान का ध्यान रखने में जो कोताही होती है वह लक्ष्य अर्थात टाल देने योग्य होती है। अत: अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की न इस बात पर पकड़ की कि उन्हों ने हारून की दाढ़ी क्यों पकड़ी और न इस बात पर पकड़ की कि तख़्तियाँ जिन पर तौरात लिखी हुई थी, क्यों नीचे डाल दी। विवाद प्रेमियों ने जब देखा कि वे एक नबी के साथ भी कड़ा रूख अपना रहे हैं तो उन की हिम्मत नहीं हुई कि सामिरी के समर्थन में उठ खड़े हों। इस प्रकार हज़रत मूसा के प्रताप ने क़ौम को अपने क़ाबू में कर लिया और बछड़ो के पुजारियों पर यह बिजली बन कर गिरी। अत: उस रोज़ जैसा कि बाइबिल का बयान है तीन हज़ार आदमी मार दिए गए। ये वे लोग थे जिन्हों ने बछड़े की पूजा की थी और यह उन के मुर्तद होने अर्थात् दीन से फिर जाने की सज़ा थी। इस मौक़े पर सूरह बक़र: नोट ७३ और सूरह आराफ़ नोट २२० से २२६ भी ध्यान में रहे।

113. क़ौम को अपने क़ाबू में करने के बाद हज़रत मूसा ने विवाद (फ़ित्ना) के असली सरग़ना सामिरी को बुलवाया और उस से पूछा कि तूने यह क्या किया ?

114. सामिरी ने जो हरकत की थी उस को न्यायोचित ठहराने के लिए उस के पास कोई तर्क नहीं था। और चूँकि वह मुनाफ़िक़ (पाखण्डी एवं कपटी) था इस लिए खुल कर अपने अपराधपूर्ण पाप को स्वीकार भी न कर सका। अलबत्ता दबे शब्दों में उस ने अपनी परास्त मानसिकता ज़ाहिर कर दी। उस ने तीन बातें कहीं, एक यह कि मुझे वह बात सुझाई दी जो दूसरों को सुझाई नहीं दी। अर्थात् ज़ेवरों को एकत्र कर के सुनहरा बछड़ा ढालने की बात मेरे मन में आई किसी और के मन में नहीं आई। ऐसा क्यों हुआ इस का कोई स्पष्टीकरण मैं नहीं कर सकता। दूसरी बात उस ने यह कही कि यह बात चूँकि मेरे मन में नाच रही थी इस लिए मैं ने रसूल के अनुपालन में थोड़ा ही भाग लिया। और जो कुछ प्राप्त किया था उसे भी बाद में त्याग दिया। और तीसरी बात उस ने यह कही कि इस प्रकार मेरे मन ने मेरी दृष्टि में इस काम को सुन्दर एवं भला बना दिया। मतलब यह कि सामिरी ने सीधे तरीक़े से न तो अपने अपराध को स्वीकार किया और न तौबा की। बल्कि यह देख कर कि वह हज़रत मूसा की पकड़ में बुरी तरह फँस चुका है गोल मोल शब्दों में इस बात को स्वीकार किया कि यह मेरी मनचाही उपज थी। और क्या करूँ मेरे मन ने मुझे ऐसा ही समझाया।

स्पष्ट रहे कि मुफ़स्सिरीन अर्थात् क़ुर्आन के टीकाकारों के एक समूह ने इस आयत का कुछ और ही मतलब बताया है उन के निकट

فَقَبَضۡتُ قَبۡضَةً مِّنۡ اَثَرِ الرَّسُوۡلِ فَنَبَذۡتُهَا

का अर्थ है:- मैं ने रसूल के पद्चिन्हों से एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली और बछड़े के अन्दर डाल दी।''

और इस की व्याख्या वे इस प्रकार करते हैं कि सामिरी ने जिब्रील (अ.) के घोड़े को देखा था और उस के पाँव के नीचे से मुट्ठी भर मिट्टी उठाई थी। इस मिट्टी में प्राण फूँकने का गुण विद्यमान था। इस लिए जब उस ने बछड़े को ढालते हुए यह मिट्टी अन्दर डाली तो उस बछड़े में प्राण घुल गया। परन्तु आयत की यह व्याख्या न क़ुर्आन से अनुकूल है और न हदीस ही से प्रमाणित होती है। फिर टिकाकारों को कैसे यह ज्ञात हुआ कि सामिरी ने जिब्रील को देख लिया था और यह कि वे घोड़े पर सवार थे और उस के टापों की मिट्टी प्राणदायक थी और यह उस मिट्टी का ही चमत्कार था कि उस ने बछड़े में प्राण फूँक दिए? यह सरासर एक मन गढ़ंत कथा मात्र है जिस को ग़लती से टीकाकारों ने स्वीकार कर लिया है। आयत कि यह व्याख्या कई तर्कों द्वारा ग़लत सिद्ध होती है।

(१)''बसुर्तु'' से तात्पर्य यहाँ आँख नहीं बल्कि ज़ेहन

(मन) है। इसी लिए हम ने इस का अनुवाद ''मुझे सुझाई दिया'' किया है। अरबी की प्रसिद्ध एवं प्रमाणित शब्द कोष ''सिहाहे-जौहरी'' में है

وَبَصُرتُ بِالشَّيءِ : عَلِمْتُهُ " بَصُرت بِالشَّيءِ

''बसुर्तु बिश्शैइ अलिम्तुहू'' का अर्थ है मैं ने उस को जान लिया'' (जिल्द २ पृष्ट ५९१)

यदि जिब्रील को देखना तात्पर्य होता तो इस के लिए رَأَيتُ، نَظَرْتُ، اَبْصَرْتُ ''रऐतु, नज़र्तु या अबसर्तु'' जैसा कोई शब्द इस्तेमाल होता न कि بَصُرْتُ बसुर्तु,--------जो कम ही इन अर्थो में प्रयुक्त होता है। यह तो था शब्दकोष के माध्यम से सही अर्थ का निर्धारण। अब ज़रा इस बात पर भी विचार कीजिए कि हज़रत जिब्रील के देखने का सौभाग्य सामिरी जैसे मुनाफ़िक़, (पाखण्डी एवं कपटी) को क्यों प्राप्त होने लगा? जिब्रील के घोड़े पर सवार होने का प्रमाण क्या है? और सामरी को यह कैसे मालूम हो गया कि उन के घोड़े के पाँव के निशान की मिट्टी ऐसी चमत्कारी है कि किसी चीज़ में डालते ही उस में जान आ जाती है। और यदि वह उसे जीवनदायक समझता था तो फिर वह किसी मुर्दा व्यक्ति को जीवित भी कर सकता था। या स्वयं मिट्टी खा कर सदा के लिए अमर हो सकता था। इस तरह तो वह हमेशा हमेशा जीवित रहने का सौभाग्य भी पा जाता। फिर उस ने ऐसा क्यों नहीं किया। क़ुर्आन में तो हज़रत जिब्रील के पाँव की मिट्टी की यह विशेषता कहीं भी बयान नहीं हुई है और न बछड़े के बारे में यह कहा गया है कि उस में जान पड़ गई थी। बल्कि क़ुर्आन साफ़ कहता है कि वह मात्र एक धड़ (शरीर) था। सच्ची बात यह है कि यह कथा बिलकुल झूठी एवं मनगढ़ंत है। इमाम राज़ी ने तफ़्सीर कबीर में और मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने तर्जुमानुलक़ुर्आन में ठोस सबूत के साथ इस का खण्डन किया है। किन्तु जो लोग बिदअतों का पक्ष लेते हुए ऊट पटांग बातें करते रहते हैं उन्हें यह कहने का अवसर मिल गया कि :

''जब हज़रत जिब्रील के घोड़े के पैरों की धूल बेजान सोने में जान पैदा कर सकती है तो बुज़ुर्गों के क़दमों की मिट्टी मुर्दा दिलों को ज़रूर ज़िन्दा कर सकती है। (तफ़सीर नुरूलइर्फ़ान पृष्ट ५०८)

(२) आयत में '' अर्रसूल '' का शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस प्रसंग में यह शब्द इस्तेमाल हुआ उस से वही प्रतीत होता है कि इस से तात्पर्य हज़रत मूसा ही हो सकते हैं क्यों कि बात तो उन्हीं के अनुपालन की थी। हज़रत जिब्रील का वर्णन इस प्रसंग की आयत में कही भी नहीं हुआ फिर इस से किस प्रकार उन्हें तात्पर्य लिया जा सकता है? रहा यह प्रश्न कि फिर सामिरी ने हज़रत मूसा को जवाब देते हुए ''आप के अनुपालन'' के बजाय ''रसूल के अनुपालन'' का शब्द क्यों इस्तेमाल किया तो इस का कारण वास्तव में उस की गोल मोल बातें थीं।

(३) रसूल के पद्चिन्हों से एक मुट्ठी लेने का अर्थ मुट्ठी भर मिट्टी लेने के नहीं बल्कि प्रसंग से इस का अर्थ ''रसूल का थोड़ा अनुपालन करना'' अथवा '' रसूल के अनुपालन में थोड़ा भाग लेना'' है। यही अर्थ तार्किक है। इसी प्रकार نَبَذْتُهَا ''नबज़्तुहा'' का अर्थ यह नहीं है कि मैं ने इस मुट्ठी भर मिट्टी को बछड़े के अन्दर डाल दिया क्यों कि ''नबज़'' का अर्थ अरबी में फेंक देने या बेकारी के साथ किसी चीज़ को डाल देने के आते हैं।

النَّبْذُ اِلْقَاءُ الشَّيْ وَطَرْحُهُ لِقِلَّةِ الْاِعْتِدَادِبِهِ وَ لِذٰلِکَ
يُقَالُ نَبَذْ تُهُ نَبَذَالنَّعَلِ الخَلَقِ ۔(المفردات۔راغب ص ۴۹۸)

अर्थ :- نَبَذْ ''नब्ज़'' का अर्थ किसी चीज़ को उस के बेकार होने के कारण डाल देने और फेंक देने के हैं। इसी लिए कहा जाता है, मैं ने इस को इस तरह फेंका जिस तरह पुरानी जूतियों को फेंका जाता है।'' (अलमुफ़रदात पृष्ट ४९८)

अगर सामरी रसूल के पाँव की धूल को बरकत वाली और जीवन दायक समझता था तो बछड़े के अन्दर डालने के लिए एक ऐसा शब्द कैसे इस्तेमाल करता जिस से उस मिट्टी का व्यर्थ एवं बेकार होना सिद्ध होता है। वह इस के लिए ''इल्क़ा'' (डालने) का शब्द प्रयोग करता अर्थात् कहता ''फ़अलक़ैतुहा''(मैं ने इस मुट्ठी भर मिट्टी को डाल दिया) अत: शब्द कोष के अनुसार ''नबज़'' का शब्द रसूल का अनुपालन छोड़ देने तथा उस के आज्ञापालन को बेक़ार एवं व्यर्थ समझ कर छोड़ देने के अर्थ में तार्किक एवं उचित बैठ रहा है। क़ुर्आन करीम में भी यह शब्द इसी अर्थ में इस्तेमाल हुआ है:-

نَبَذَ فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ اُوْتُوا الكِتٰبَ كِتٰبَ اللّٰهِ
وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ط (بقرہ۔۱۰۱)

अर्थ:- ''अहले-किताब के एक गिरोह ने अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे डाल दिया कि जैसे वे जानते ही नहीं । (अलबक़र: १०१) स्पष्ट है यहाँ ''नबज़'' (डाल दिया) का अर्थ अल्लाह की किताब को बेकारी के साथ पीठ पीछे डाल देने के हैं।

97. मूसा ने कहा जा। अब जीवन भर तुझे यह कहते
रहना है कि मुझे न छूना[115]। और तेरे लिए एक
और समय निर्धारित है जो तुझ से हरगिज़ न
टलेगा।[116] और देख अपने इस इष्ट पूज्य को
जिस की पूजा पर तू जमा रहा, हम इसे जला
डालेंगे, फिर इस को टुकड़े टुकड़े कर के दरया
में बहा देंगे [117]।

قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ
وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَنْ تُخْلَفَهُ وَانْظُرْ إِلَىٰ إِلَٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ
عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

98. तुम्हारा इष्ट पूज्य केवल अल्लाह है जिस के
सिवा कोई इष्ट पूज्य नहीं उस का ज्ञान हर चीज़
पर हावी है [118]।

إِنَّمَا إِلَٰهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

99. इस प्रकार हम तुम्हें गुज़रे हुए वृत्तांत सुनाते हैं,
कि हम ने तुम्हें ख़ास अपने पास से ज़िक्र (क़ुर्आन)
प्रदान किया है [119]।

كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَاكَ
مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾

100. जो लोग इस से मुँह फेरेंगे वे क़ियामत के दिन
भारी बोझ उठाऐंगे [120]।

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

101. वे इसी हालत में हमेशा रहेंगे [121]। और यह
बहुत बुरा बोझ होगा जिस को क़ियामत के दिन
वे अपने ऊपर लादे होंगे।

خَالِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

102. वह दिन कि सूर फूँका जाएगा [122]। और हम
मुजरिमों को उस दिन इस हाल में एकत्र करेंगे
कि उन की आँखें निली पड़ी होंगी [123]।

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾

103. वे आपस में एक दूसरे से चुपके चुपके कहते
होंगे कि तुम केवल दस दिन रहे होगे।

يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾

104. हम ख़ूब जानते हैं वे जो कुछ कहेंगे। उस समय
उन में जो सब से बेहतर अन्दाज़ा लगाने वाला
होगा, कहेगा कि तुम बस एक दिन रहे हो। [124]

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ
لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

105. और यह लोग तुम से पहाड़ो के बारे में पूछते हैं,
कहो मेरा रब इन को धूल बना कर उड़ा देगा।[125]

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

106. ज़मीन को इस हाल पर छोड़ेगा कि वह साफ़
और चटियल मैदान होगा।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾

115. शब्दों से स्पष्ट होता है कि यह अल्लाह का अज़ाब था जो उस के लिए सुनिश्चित हुआ और जिस का एलान हज़रत मूसा ने किया उसे समाज से काट दिया गया कि कोई व्यक्ति उस के पास फटकने न पाए। वह शिर्क की गन्दगी में लिप्त हो चुका था इस लिए दंड स्वरूप उस के पूरे अस्तित्व को अपवित्र घोषित कर दिया गया कि कोई व्यक्ति उस को छूने न पाए। अपमान की अति यह कि वह स्वयं अपनी ज़बान से अपने अछूत होने का ऐलान करता रहे। संभव है कि वह किसी भयंकर एवं जानलेवा रोग में ग्रस्त कर दिया गया होग।

जिन लोगों ने बछड़े को पूजा था उन को क़त्ल कर दिया गया। (सूरह बक़र: आयत ५४ नोट ७३) किन्तु सामिरी को अज़ाब भुगतने के लिए ज़िन्दा छोड़ दिया गया। ताकि उसे देख कर लोग इबरत पकड़ते रहें।

116. तात्पर्य यह दंड है जो क़ियामत के दिन मिलेगा।

117. बछड़ा ज़ेवरों से बनाया गया था जो सोने चाँदी के रहे होंगे। हज़रत मूसा ने उसे जला कर राख कर दिया और उस राख को दरया में बहा दिया । इस प्रकार हज़रत मूसा ने बुतशिकनी (मूर्ति तोड़ने) की इब्राहीमी-सुन्नत को ज़िन्दा कर दिया और देखने वालों ने देख लिया कि अगर बछड़ा ख़ुदा होता तो वह राख का ढेर न बन जाता और उस का पुजारी तिरस्कृत एवं मरदूद हो कर न रह जाता। इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि बछड़ा एक बेजान धड़ (शरीर) था। यदि उस में जान होती और वह अपने हाथ, पैर, तथा मांस रखने वाला बछड़ा होता तो उसे ज़बह (बध) कर दिया जाता और तब आग की भेंट चढ़ाया जाता।

इस से एक बात यह भी मालूम हुई कि बुराईयों को मिटाने और उस से अत्याधिक घृणा पैदा करने के लिए सोने चाँदी की मूल्यवान वस्तुओं को भी नष्ट किया जा सकता है। क्यों कि ईमानी ग़ैरत के मुक़ाबले में मूल्यवान वस्तुओं की क्षति एक व्यर्थ की बात है।

118. यह तौहीद (एकेश्वरवाद) की एक और दलील है। ख़ुदा वही हो सकता है जिस का ज्ञान संपूर्ण एवं सार्वभौमिक हो। यह गुण केवल अल्लाह ही का है। इस लिए ख़ुदा (इष्ट पूज्य) वही है। परन्तु जो लोग शिर्क (बहुदेववाद) एवं मूर्तीपूजा में लिप्त होते हैं उन के नज़दीक एक बैल भी भगवान (पूज्य) हो सकता है और एक मूर्ख भी।

119. ज़िक्र से अभिप्रेत क़ुर्आन है। क़ुर्आन को इस लिए ज़िक्र कहा गया है कि वह ख़ुदा की याद दिलाने वाली किताब है। बन्दा उसे जहाँ से भी पढ़े ख़ुदा की याद में डूब जाता है। क़ुर्आन उन बातों की भी याददेहानी करता है जिन से मानव स्वभाव पहले ही से परिचित है तथा उस के लिए भी वह सरासर नसीहत है।

120. क़ुर्आन को एक धार्मिक ग्रंथ समझकर नज़रंदाज़ करना ऐसी महान ग़लती है जिस में संसार की अधिकतम जातियाँ लिप्त हैं। वास्तविकता यह है कि क़ुर्आन अल्लाह का आदेश है, किसी जाति विशेष, देश एवं युग की सीमा से परे, पूरी मानवता के लिए और हर युग के लिए नाज़िल हुआ है जिस का सम्बोधन प्रत्येक व्यक्ति है। अत: जिस व्यक्ति तक भी क़ुर्आन या उस की निमंत्रण (दअवत) पहुँच जाए और वह उस से मुँह मोड़े, वह अपने आप को गुमराही एवं पाप के रास्ते पर डाल देता है। क्यों कि अल्लाह के आदेश को ठुकराने का अर्थ विद्रोह का मार्ग अपनाना है। और विद्रोह के मार्ग पर चल कर विद्रोही कार्यकलापों से लिप्त हो कर आदमी बहुत बड़े गुनाह का बोझ अपने सर ले लेता है। परन्तु इस का आभास उसे क़ियामत के दिन होगा कि वह कितना बड़ा बोझ अपने सर पर लादे हुए है।

121. अर्थात् सदैव गुनाहों के बोझ तले दबे रहेंगे और उस की सज़ा भुगतेंगे क्यों कि कुफ्र और शिर्क का गुनाह ऐसा है जो चिपक कर रह जाता है और कभी अलग नहीं होता।

122. यह क़ियामत का साइरन (Siron) होगा जिस की आवाज़ पृथ्वी के कोने कोने तक पहुँच जाएगी। जब पहला साइरन होगा तो पृथ्वी के सारे जीवधारी मर जाएंगे और ब्रह्माण्ड की वर्तमान व्यवस्था बिलकुल उलट पलट हो जाएगी। और जब दूसरा साइरन होगा तो सारे इन्सान जो आदम से ले कर क़ियामत तक पैदा होते रहें हैं अपने शरीर सहित दोबारा जीवित हो कर ज़मीन से निकल पड़ेंगे।

123. अर्थात् भय और दहशत के कारण मुजरिमों की आँखों का रंग नीला पड़ा होगा दूसरे शब्दों में उन की आँखें बुझ गई होंगी।

124. मरने के बाद मनुष्य की आत्मा क़ियामत तक आलमे बर्ज़ख (यमलोक) में रहती हैं जो दुनिया और आख़िरत के बीच की दशा है। इस दशा में इन्सान ने चाहे कितनी ही लम्बी अवधि गुज़ार दी हो क़ियामत के दिन उसे ऐसा महसूस होगा कि यह घटना बस कुछ ही दिन की थी और इन्कार करने वालों में से जो सब से बेहतर अनुमान लगाने वाला होगा वह कहेगा कि नहीं यह अवधि केवल एक दिन की रही है।

गुज़रे समय को महसूस न करने का अनुभव हमें दुनिया के जीवन में भी होता रहता है। कई घंटे सोते रहने के बाद जब हम जागते हैं तो लगता है कि अभी हम सोये थे और अभी हम उठ गए। जब समय के बारे में हमारे अनुभव का हाल यह है तो क़ियामत को दूर समझ कर सांसारिक ऐश्वर्य में मस्त रहना मूर्खता और अपने आप को धोखा देना नहीं तो और क्या है।

125. व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ६६ और सूरह क़ारिअ: नोट ५

107. उस में न तुम टेढ़ देखोगे और न बुलन्दी [126]।

لَا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾

108. उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और उस से तनिक इधर उधर न कर सकेंगे [127]। और सारी आवाज़ें रहमान के आगे दब जाऐंगी। एक आहट के सिवा तुम कुछ न सुनोगे [128]।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ
الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

109. उस रोज़ सिफ़ारिश काम न देगी मगर उस की जिस को रहमान इजाज़त दे और उस की बात पसंद फ़रमाए।[129]

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ
لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

110. वह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है। और उन का ज्ञान उस का इहाता नहीं कर सकता (अर्थात् उस को पा नहीं सकता) [130]।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

111. तमाम चेहरे उस ''हैय्यिल क़य्युम''के आगे झुके होंगे। और आसफ़ल होगा वह जो जुल्म [131] का पाप-भार उठाए हुए होगा।

وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ
خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

112. और जिस ने नेक काम किए होंगे और वह मोमिन भी होगा तो उस के लिए न किसी ज़ुल्म का भय होगा और न हक़ मारे जाने का।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

113. और इसी तरह हम ने इस को अरबी क़ुर्आन के रूप में उतारा [132] और हम ने इस में तरह तरह से चेतावनी प्रस्तुत कीं [133] ताकि लोग अल्लाह से डरें या उन के लिए याददेहानी का कारण हो।[134]

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

114. अतः सर्वोच्च है अल्लाह, वास्तविक सम्राट [135]। और क़ुर्आन पढ़ने में जल्दी न करो जब तक कि इस की वह्य तुम पर पूरी न कर दी जाए [136]। और दुआ करो कि ऐ मेरे रब ! मेरा ज्ञान और अधिक कर [137]।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾

115. हम ने [138] इस से पहले आदम को ताक़ीदी हुक्म दिया था [139] परन्तु वह भूल गया। और हम ने उस में दृढ़ संकल्प न पाया [140]।

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

126. अर्थात् पृथ्वी का स्वरूप बिल्कुल बदल जाएगा न कही टेढ़ मेढ़ होगा और न कहीं ऊँच नीच। मनुष्यों के बनाये हुए ऊँचे ऊँचे भवन तो पहले ही ढेर हो चुके होंगे और पहाड़ टुकड़े टुकड़े कर के हवा में उड़ा दिए गए होंगे। वृक्ष झाड़ झनकाड़ और जंगलो का सफ़ाया कर दिया गया होगा। भौगोलिक परिवर्तन कुछ इस प्रकार होगा कि किसी भी देश का चिन्ह बाक़ी नहीं रहेगा। इस प्रकार ज़मीन एक समतल और चटियल मैदान का रूप धारे सामने होगी ताकि असंख्य लोग अपने प्रभु के समक्ष हाज़िरी के लिए एकत्र हो सकें।

127. पुकारने वाले से तात्पर्य फ़रिश्ता है,हश्र के मैदान में जिस के खड़े होने की जो जगह सुनिश्चित होगी उस की ओर फ़रिश्ता उसे ले जाएगा और वह उस फ़रिश्ते के पीछे पीछे चला जाएगा। किसी की मजाल नहीं होगी कि उस से बच बचाकर कहीं और निकल जाए।

128. क़ियामत का यह जमघट क्या होगा इन्सानों का ठाठें मरता समुद्र, मगर न कोई हंगामा होगा और न कोई शोर। मजाल नहीं कि कोई आवाज़ ऊँची कर सके। सब की आवाज़ें दयावान ख़ुदा के समक्ष दब गई होंगी। उस समय केवल क़दमों की आहट सुनाई देगी।

129. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ४१२ और सूरह मरयम नोट १११

130. मतलब यह है कि कौन इस बात का पात्र है कि उस के पक्ष में आख़िरत की यातना से छुटकारे की सिफ़ारिश की जाए और कौन इस का पात्र नहीं है इस का पता केवल अल्लाह ही को है। क्यों कि वह भूत,वर्तमान,भविष्य,परोक्ष,अपरोक्ष सब का जानने वाला है और वह प्रत्येक व्यक्ति की नीयत और उस के हालचाल से पूरी तरह भिज्ञ है अत: सिफ़ारिश की अनुमति साधारणतया किसी को नहीं दी जाएगी कि वह जिस के लिए चाहे सिफ़ारिश करे। बल्कि यह अनुमति इस शर्त के साथ होगी कि उन ही के लिए सिफ़ारिश की जाए जिन के बारे में सिफ़ारिश सुनना अल्लाह पसन्द फ़रमाएगा।

131. यहाँ ज़ुल्म से अभिप्रेत जैसा कि बाद की आयतों से स्पष्ट है, वह रवैया है जो ईमान और उस के अनुसार अच्छे कर्मों के विरुद्ध हो। शिर्क, कुफ्र और पापाचारी होना (गुनाह का जीवन गुज़ारना) इस में शामिल है।

132. इस की व्याख्या सूरह यूसुफ़ नोट ३ में गुज़र चुकी

133. चेतावनी अल्लाह के प्रतापी गुणों की प्रस्तुत कर के चेतावनी, गुज़री हुई उद्दंड क़ौमों के वृत्तांत को याद दिला कर, चेतावनी उन प्रकोपों के द्वारा जो बिगड़े हुए फ़सादी लोगों और क़ौमों पर दुनिया में टूटता रहता है। चेतावनी मौत की कड़ूवाहटों का वर्णन कर के, चेतावनी क़ियामत की विनाशलीला बयान कर के और चेतावनी जहन्नम की धमकी सुनाकर।

134.अर्थात् क़ुर्आन के अवतरण का उद्देश्य यह है कि लोग तक़वा (ईश-भय और परहेज़गारी) का जीवन गुज़ारें। किन्तु यदि लोग इस को स्वीकार नहीं करते तो क़ुर्आन उन को उन का भूला हुआ सबक़ याद दिलाए ताकि अल्लाह की हुज्जत (तर्क) उन पर पूरी हो जाए।

135. अल्लाह के वास्तविक सम्राट होने का अर्थ यह है कि कायनात (ब्रह्माण्ड) का शासक अल्लाह और केवल अल्लाह है। रहे सांसारिक सम्राट तो उन के शासनाधिकार अल्लाह ही के प्रदान किये हुए हैं इस लिए वे मात्र कल्पित सम्राट हैं और वे क़ानूनन इस बात का अधिकार नहीं रखते कि अल्लाह के हुक्म की जगह अपना हुक्म चलाएं।

136. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निर्देश है कि जब क़ुर्आन नाज़िल हो रहा हो तो उस को पढ़ने में जल्दी न करो जब तक कि वह्य पूरी न हो जाए। अर्थात पहले वह्य को ध्यान पूर्वक सुन लो और जब वह पूरी हो जाए तो उसे पढ़ो। इस से अन्दाज़ा होता है कि आप किस रुचि और लगाव से वह्य को ग्रहण (Grasp) करते थे। इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि क़ुर्आन पूर्ण रूप से अल्लाह की ओर से उतारा गया है। और इस की रचना में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई हाथ नहीं।

137. यहाँ इल्म से अभिप्रेत वह ज्ञान है जो वह्य के द्वारा प्राप्त होता है। यह ज्ञान ब्राहमाण्ड के भेदों एवं रहस्यों तथा परोक्ष वास्तविकताओं को जानने और ख़ुदा की पसन्द और ना पसन्द को ज्ञात करने का सही माध्यम हैं। इस लिए दुनिया के समस्त ज्ञानों पर इस की प्रमुखता स्पष्ट है। इस ज्ञान की अभिलाषा सच्ची अभिलाषा है और इस ज्ञान में वृद्धि की दुआ उस का मूल्य समझने का प्रतीक है।

यह ज्ञान क़ुर्आन के रूप में हमारे सामने मौजूद है और इस पर विचार एवं चिन्तन करने से ज्ञान और ध्यान के दरवाज़े खुलते हैं। परन्तु इस ठोस ज्ञान से कम ही लोग लाभन्वित हो रहे हैं। दुनिया इस से बिलकुल अनजान है।

138. अब हज़रत आदम के वृत्तांत के कुछ पहलू प्रस्तुत किये जा रहे हैं। अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि मनुष्य की वास्तविक कमज़ोरी क्या है और वह किस प्रकार शैतान के बहकावे में आ जाता है।

139. ताक़ीदी हुक्म इस बात का कि फ़्लाँ वृक्ष के पास न जाना (सूरह बक़र: आयत ३५)।

140. अर्थात् आदम में दृढ़ संकल्प की कमी थी इस लिए उस से यह चूक हुई कि शैतान के बहकावे में आ गया और चूँकि ख़ुदा के ताकीदी हुक्म को वह भूल गया इस लिए उस ने उस वृक्ष का फल खा लिया जिस से मना किया गया था। मालूम हुआ कि मनुष्य की बुनियादी कम्ज़ोरी भूल और दृढ़ संकल्प का न होना है।

116. और जब हम ने फ़रश्तिों से कहा था कि आदम को सज्दा करो तो उन्हों ने सज्दा किया परन्तु इब्लीस ने नहीं किया। उस ने इन्कार किया [141]।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ ﴿١١٦﴾

117. इस पर हम ने कहा ऐ आदम यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का दुश्मन है, तो ऐसा न हो कि यह तुम्हें जन्नत से निकलवा दे और तुम मुसीबत में पड़ जाओ।

فَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا
مِنَ ٱلْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰٓ ﴿١١٧﴾

118. यहाँ तुम्हारे लिए यह (सुविधा) है कि न भूखे रहो और न नंगे।

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ﴿١١٨﴾

119. न प्यास लगे और न धूप [142]।

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا۟ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ﴿١١٩﴾

120. मगर शैतान ने उस को बहकाया [143]। कहा ऐ आदम ! मैं तुम्हें बताऊँ हमेशगी (सदवता) का वृक्ष और ऐसा राज्य जिस पर कभी ज़वाल (अवनति) न आए?[144]

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ ٱلشَّيْطَٰنُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ
ٱلْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ﴿١٢٠﴾

121. अतः दोनों ने (आदम और हव्वा ने) उस वृक्ष का फल खा लिया। परिणाम यह कि दोनों के सतर (गुप्तांग) उन पर खुल गए और वे जन्नत के पत्तों से अपने को ढाँकने लगे [145]। आदम ने अपने रब की अवज्ञा की [146] और वह बेराह हो गया।[147]

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا
مِن وَرَقِ ٱلْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰٓ ءَادَمُ رَبَّهُۥ فَغَوَىٰ ﴿١٢١﴾

122. फिर उस के रब ने उसे स्वीकार कर लिया, उस की तौबा क़ुबूल की और उसे हिदायत दी।[148]

ثُمَّ ٱجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿١٢٢﴾

123. इर्शाद हुआ, तुम सब यहाँ से उतर जाओ। तुम एक दूसरे के दुश्मन हो [149]। फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास कोई हिदायत [150](मार्गदर्शन) पहुँचे तो जो कोई मेरी हिदायत का अनुपालन करेगा वह न गुमराह होगा और न मुसीबत में पड़ेगा [151]।

قَالَ ٱهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًۢا ۖ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم
مِّنِّى هُدًى فَمَنِ ٱتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ﴿١٢٣﴾

124. और जो मेरे ज़िक्र (उपदेश-पाठ) से मुँह मोड़ेगा उस के लिए संकिर्ण जीवन [152] होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अन्धा उठाएंगे [153]।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِى فَإِنَّ لَهُۥ مَعِيشَةً ضَنكًا
وَنَحْشُرُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ أَعْمَىٰ ﴿١٢٤﴾

141. इस की व्याख्या सूरह बक़रः नोट ४७,४८ में गुज़र चुकी।

142.आदम अलैहिस्सलाम को जिस जन्नत में रखा गया था उस की विशेषता यह थी कि वहाँ भूख और प्यास की कोई तकलीफ महसूस नहीं होती थी। इस के बावजूद खाने पीने की वस्तुएं भारी मात्रा में उपलब्ध करा दी गई थीं ताकि वे निश्चिन्त हो कर खाऐं पिऐं। इसी प्रकार वस्त्र ऐसे पहना दिए गए थे कि शरीर पर टिका रहने वाला था। इस लिए उन्हें नग्न होने का कभी एहसास नहीं हुआ। सूरज की धूप और गर्मी से भी उन्हें सुरक्षित रखा गया था। वह एक स्थाई जन्नत थी जिस में इतनी तैयारी के साथ हज़रत आदम और हज़रत हव्वा को रखा गया था। रहा यह प्रश्न कि यह जन्नत कहाँ थी तो क़ुर्आन ने इस का उल्लेख नहीं किया। क्यों कि जो उद्देश्य सामने था उस के लिए ये तफ़सीलात अनावश्यक थीं।

143. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट २५ में गुज़र चुकी ।

144. शैतान ने आदम को बहकाने के लिए तरह तरह की बातें कहीं थीं। कभी तो यह कहा कि इस वृक्ष का फल खाने से तुम्हें इस लिए रोका है कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ (सूरह आराफ़ आयत २०) और कभी यह कहा कि यदि तुम ने इसे खा लिया तो तुम्हें सदवता जीवन (हमेशा हमेशा का जीवन) तथा अवनति राज्य प्राप्त होगा।

145. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २६,२९ और ३०

146. हज़रत आदम ने अवज्ञा तो की किन्तु यह अवज्ञा योजना बद्ध नहीं थी और न उस में उद्दंडता का कुछ भी समावेश था। बल्कि यह तो एक चूक और उस का परिणाम था जिस का स्पष्टीकरण स्वयं क़ुर्आन ने किया है। और इस भूल पर पकड़ इस लिए हुई कि उन्हों ने अल्लाह के उस ताक़ीदी हुक्म को याद रखने की पूरी पूरी कोशिश नहीं की, कि एक विशेष वृक्ष उन के लिए मना है।

रहा यह प्रश्न कि आदम नबी थी और नबी गुनाह से सुरक्षित होता है तो पहली बात तो यह कि यह घटना उन को नबी नियुक्त किए जाने से पूर्व की है। दूसरी बात यह कि यह घटना अस्थायी जन्नत में घटी थी जो इस लिए बनाई ही गई थी कि ख़ास तरह से परीक्षा ली जाए। तीसरी बात यह कि गुनाह और गुनाह में अन्तर होता है। यह गुनाह एक भूल थी जो शैतान के बहकावे में आने के कारण हुआ था।

147. मूल शब्द ''ग़वा'' प्रयुक्त हुआ है जिस का मतलब गुमराही भी है और जिहालत या इच्छाओं के दबाव में आ कर बेराह हो जाना भी। अतः सूरह क़सस आयत १८ में एक झगड़ालू व्यक्ति के बारे में हज़रत मूसा का यह बयान उद्धृत हुआ है:-

اِنَّکَ لَغُوِیٌّ مبین

अर्थः- ''तू बिलकुल बहका हुआ आदमी है।''

हज़रत आदम को जो कि गुमराह धारणा में लिप्त नहीं हुए थे और न उन्होंने उद्दंडता का मार्ग अपनाया था। बल्कि शैतान के बहकावे में आने के कारण उन का क़दम ग़लत दिशा पर जा पड़ा था। उन की इसी दशा को ग़वा अर्थात् बेराह हो जाने से व्यक्त किया गया है।

148. जब हज़रत आदम के शरीर से जन्नत का लिबास उतर गया तो उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने ठोकर खाई है और इस पर पछताए। उन के पश्चाताप को देखते हुए अल्लाह तआला ने उन को उठाया, कि वह गिरतों को उठाता है और ऐसा उठाया कि उस के समक्ष वह तिरस्कृत नहीं बल्कि स्वीकार्य ठहरे। उन के गुनाह के दाग़ को धोने के लिए उन को तौबा (प्रायश्चित) की तौफ़ीक़ प्रदान की यहाँ तक कि तौबा के शब्द भी सिखाए और हिदायत भी प्रदान की।

इस घटना में इन्सानों के लिए यह पाठ है कि यदि उस से कोई गुनाह हो जाता है और उस पर उसे पश्चाताप होता है, फिर वह अपने प्रभु के समक्ष उस का प्रायश्चित करता है तो प्रभु उस को क्षमा कर देता है और उस का हाथ पकड़ कर उस को उठाता है।

इस आयत से यह बात भी स्पष्ट होती है कि हज़रत आदम नबी थे। क्यों कि उन की तौबा स्वीकार करने के बाद उनको हिदायत देने का उल्लेख हुआ है। इस हिदायत से तात्पर्य ईमान (अर्थात् अक़ीदा अथवा मौलिक धारणा) और अमल का मार्ग है जिस पर चल कर अल्लाह की प्रसन्नता, उस का सामीप्य और इस के फलस्वरूप हमेशा हमेशा की कामयाबी प्राप्त की जा सकती है।

इस प्रकार पहला इन्सान जो ज़मीन पर आया हिदायत पाया हुआ (अर्थात् सत्य मार्ग एवं ज्ञान प्राप्त) इन्सान था और चूँकि यह हिदायत उसे सिधे अल्लाह तआला से मिली थी इस लिए वह नबी था।

149. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट ३३ में गुज़र चुकी ।

150. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़रः नोट ५६

151. यहाँ मुसीबत में न पड़ने से तात्पर्य आख़िरत के अज़ाब में न डाले जाने से है। सूरह बक़रः में यह बात इस प्रकार कही गई है:-

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ـ

अर्थ :- ''उन के लिए न कोई भय होगा और न वे दुखी

होंगे।''

152. ''मअीशतन ज़न्का'' अर्थात् संकीर्ण जीवन से तात्पर्य हृदय और आत्मा, मन और अन्तर्मन की वह संकीर्णता है जो घुटन का कारण बनती है। धन दौलत तथा ऐशवर्य के साधनों की कितनी ही बाढ़ क्यों न हो अल्लाह की याद और उस के ध्यान से मुँह फेर लेने के फलस्वरूप न कभी मन को शान्ति प्राप्त होती है और न अन्तर्मन ही तृप्त होता है। ऐसा व्यक्ति सदैव एक मानसिक रोग में लिप्त रहता है और वह परेशानी और बेचैनी ।

आज जब कि दुनिया अपने भक्तों पर अत्याधिक विशाल एवं विस्तृत हो गई है, अधिकतर लोगों का हाल यह है कि बहुत कुछ कमाने के बावजूद उन्हें दिल का सुकून मयस्सर नहीं । व्याकुलता की मनोदशा उन के चेहरों से स्पष्ट हो रही है और कितने हैं जो जीवन से ऊब कर मौत को निमंत्रण देते हैं।

वास्तविकता यह है कि मनुष्य को खुशी एवं प्रसन्नचित्त जीवन तभी मिलता है जब कि वह अपने प्रभु से बन्दगी का लगाव उत्पन्न कर के याद करता है और उस की याददेहानी अथवा उपदेश-पाठ (क़ुर्आन) से लाभ उठाता है।

153. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १०२

वह कहेगा ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया मैं तो आँखों वाला था ? इर्शाद होगा इसी प्रकार हमारी आयतें तेरे पास पहुँची थीं तो तू ने उन को भुला दिया था । उसी तरह आज तू भी भुलाया जा रहा है। इस प्रकार हम बदला देंगे उस को जो हद से गुज़र गया था।और अपने रब की आयतों पर ईमान नहीं लाया था।और आख़िरत का अज़ाब तो अत्याधिक कठोर और सदैव बाक़ी रहने वाला है। *(अल-क़ुर्आन)*

125. वह कहेगा ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया मैं तो आँखों वाला था ?

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيٓ أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ﴿١٢٥﴾

126. इर्शाद होगा इसी प्रकार हमारी आयतें तेरे पास पहुँची थीं तो तू ने उन को भुला दिया था । उसी तरह आज तू भी भुलाया जा रहा है। [154]

قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ ءَايَٰتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ ٱلْيَوْمَ تُنسَىٰ ﴿١٢٦﴾

127. इस प्रकार हम बदला देंगे उस को जो हद से गुज़र गया था[155]।और अपने रब की आयतों पर ईमान नहीं लाया था।और आख़िरत का अज़ाब तो अत्याधिक कठोर और सदैव बाक़ी रहने वाला है।

وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنۢ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ ۚ وَلَعَذَابُ
ٱلْءَاخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَىٰٓ ﴿١٢٧﴾

128. क्या इन लोगों के लिए यह बात हिदायत का कारण न हुई कि इन से पहले हम कितनी ही क़ौमों को विनष्ट कर चुके हैं जिन की (उजड़ी हुई) बस्तियों में ये चलते फ़िरते हैं [156]। इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि वाले हैं।[157]

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ ٱلْقُرُونِ يَمْشُونَ
فِى مَسَٰكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّأُو۟لِى ٱلنُّهَىٰ ﴿١٢٨﴾

129. यदि तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बात [158] पहले ही तय न पा चुकी होती और एक अवधि [159] निर्धारित न की गई होती तो अज़ाब उन को पकड़ में ले लेता।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ
لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

130. अतः इन की बातों पर सब्र करो [160]। और अपने रब की प्रशंसा (हम्द) के साथ गुणगान (तस्बीह) करो [161] सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले और रात की कुछ घड़ियों में भी तस्बीह (गुणगान) करो और दिन के हिस्सों में भी [162] ताकि तुम ख़ुश हो जाओ [163]।

فَٱصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ ٱلشَّمْسِ
وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ ءَانَآئِ ٱلَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ ٱلنَّهَارِ
لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ﴿١٣٠﴾

131. और निगाह उठा कर भी न देखो सांसारिक जीवन के उस वैभव को जो हम ने उन के विभिन्न समूहों को दे रखा है ताकि हम उन्हें परीक्षा में डालें। और तुम्हारे रब की रोज़ी ही बेहतर और अधिक स्थायी है [164]।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ
ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ
خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾

132. अपने घर वालों को नमाज़ का आदेश दो और उस पर जमे रहो [165]।हम तुम से (कोई)रोज़ी नहीं माँगते [166]।रोज़ी हम तुम्हें देते हैं और परिणाम की भलाई धर्म परायणता के लिए है ।[167]

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ
رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَٱلْعَٰقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ﴿١٣٢﴾

154. अर्थात् तुझे बिलकुल नज़रन्दाज़ किया जा रहा है तेरी ओर कृपा दृष्टि नहीं की जाएगी।

155. अर्थात् जिस ने बन्दगी की सीमा पार की और जो अपने आप को ख़ुदमुख़्तार समझ कर मनमानी करता रहा।

156. अभिप्रेत समूद और मदयन आदि की उजड़ी बस्तियाँ हैं जो खुले राजमार्ग पर स्थित थीं और जिन पर से अरबों का आना जाना होता था। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट ७८)

157. निशानियाँ इस बात की, कि यह दुनिया अंधेर नगरी नहीं है बल्कि एक तत्वदर्शी एवं नीतिज्ञ हस्ती पूरे न्याय के साथ उस पर शासन चला रही है और उस की महान शक्ति एवं सामर्थ्य के आगे सब बेबस हैं। वह इन्सानों की हिदायत के लिए रसूल भेजता है और उन की निमंत्रणा तथा उन की दअवत सत्य ही सत्य है। जो क़ौम रसूल का विरोध करती है उस पर इस संसार में भी प्रकोप टूट पड़ता है।

158. तात्पर्य कर्म की मोहलत है।

159. अर्थात् मोहलत की अवधि।

160. अर्थात् इन के उलटे सीधे आरोपों पर ध्यान न दो और इन की कष्टदायक बातों पर धैर्य एवं सहिष्णुता से काम लो।

161. तस्बीह करो بِحَمْدِ رَبِّكَ अर्थात् पाकी बयान करो, गुणगान करो और अपने रब की प्रशंसा के साथ। मतलब यह है कि अल्लाह की पाकी उस का गुणगान करते हुए बयान करो। उस ईमानी मनोभाव के साथ कि अल्लाह हर प्रकार के दोष एवं त्रुटियों से पाक है और उस के लिए ख़ूबियाँ ही ख़ूबियाँ हैं। तस्बीह और हम्द (अर्थात् प्रशंसा एवं गुणगान) के प्रवचन ज़बान से अदा करो कि यह ज़िक्र (अर्थात् यह चर्चा) ख़ालिस इबादत है।

तस्बीह अर्थात् पाकी बयान करने के प्रवचनों का उदाहरण है ''सुब्हानल्लाह'' سُبْحَانَ اللّٰه अर्थात अल्लाह के लिए पाकी है। और ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई इष्ट पूज्य नहीं और हम्द (प्रशंसा) के प्रवचन उदाहरण स्वरुप ये हैं ''अल्हम्दुलिल्लाह'' اَلْحَمْدُ لِلّٰه अर्थात् सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है और اَللّٰهُ اَكْبَرُ ''अल्लाहु अकबर'' अर्थात अल्लाह सब से बड़ा है। और जिन प्रवचनों में दोनों पहलुओं का समन्वय है उन के उदाहरण ये हैं :- ''सुबहान रब्बियल अज़ीम'' سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم अर्थात् पाक है मेरा रब जो बड़ी शान वाला है, ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही'' سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ अर्थात् मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ उस की प्रशंसा के साथ।

सही बुख़ारी में आख़िरी हदीस जो इमाम बुखारी ने उद्धत की है वह यह है:-

عَنْ ابی هریرة رضی اللّٰه عنه قال قال النَّبِىُّ ﷺ كَلِمتَانِ حَبِيْبَتَانِ اِلَى الرَّحْمٰنِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيْلَتَانِ فِى الْمِيْزَانِ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ.سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ ـ (بخاری کتاب التوحید)

अर्थ :- अबू हुरैरा रज़ि. फ़रमाते है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया दो कलिमे (प्रवचन) ऐसे हैं जो रहमान को अत्याधिक प्रिय हैं, ज़ुबान पर हलके मगर वज़न में भारी हैं वे हैं ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही'' (मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ उस की प्रशंसा के साथ) ''सुब्हानल्लाहिल अज़ीम'' (अल्लाह के लिए पाकी है जो बड़ी शान वाला है) बुख़ारी किताबुत्तौहीद)

इस से अच्छी तरह स्पष्ट होता है कि एक सच्चे मोमिन की ज़बान से इन कलिमों (प्रवचनों) का पूरे बोध के साथ अदा होना अल्लाह के निकट अत्याधिक प्रिय कर्म है। प्रतिदिन इन को बार बार दोहराना ही अभीष्ट है।

यहाँ इस बात की ओर संकेत करना भी असामयिक न होगा कि अल्लाह के ज़िक्र (अर्थात् उस की चर्चा) के बारे में मुसलमानों के विभिन्न समूहों के विचार और कार्य शैली भिन्न भिन्न हैं। एक समूह अल्लाह के प्रति सही दीनी समझ पैदा किये बग़ैर कलिमों को दोहराते रहने अर्थात प्रवचनों के जाप पर ज़ोर देता है। इस के निकट मनोभाव से अधिक महत्व इस बात का है कि कितनी मात्रा में जप (विर्द) किया गया दूसरे समूह ने अल्लाह के जिक्र के लिए विशेष मनोभाव को पैदा करने और मार (ज़र्बें) लगाने का तरीक़ा अपना रखा है। और तीसरा समूह जो आधुनिक विचारों वाला है अल्लाह के जिक्र के महत्व के मामले में आलस्य बरतना है इस लिए वह इस का कुछ अधिक ध्यान नहीं करता । इन अतिवादी विचारों के मुक़ाबले में वही तरीक़ा सही है जिस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनाया था और क़ुर्आन के मंशा को आप से बेहतर कौन समझ सकता है?

162. इस तस्बीह के लिए दो समयों का विशेषता के साथ उल्लेख किया और वे हैं सूरज के उदय होने और अस्त होने के पहले के समय। अर्थात् फ़ज्र और अस्र की इबादत के लिए। ये सर्वाधिक महत्वशाली हैं। फिर रात के कुछ समयों और दिन के समयों में भी तस्बीह करने का निर्देश किया। दिन का एक भाग तो वह होता है जब की सूरज कुछ ऊपर चढ़ गया होता है उसे ज़ुहा और इशराक़ कहते हैं। दूसरा भाग ज़ुहर का

होता है और तीसरा अस्र का। तस्बीह की यह हिदायत पंजवक्ता नमाज़ के फ़र्ज़ होने से पहले दी गई थी। पंजवक्ता नमाज़ का आदेश सूरह बनी इस्राईल आयत ७८ में दिया गया जो सूरह ताहा के कुछ ही सालों बाद अवतरित हुई। तस्बीह का यह आदेश उसी प्रकार सर्वसाधारण के लिए है जिस प्रकार अल्लाह की राह में ख़र्च करने का सार्वजनिक आदेश मक्का में दिया गया था। और जब ज़कात फ़र्ज़ (अनिवार्य) हुई तो ख़र्च करने का सार्वजनिक आदेश निरस्त नहीं हुआ बल्कि उस के दो प्रकार (Kinds) माने गए। एक अनिवार्य ख़र्च (फ़र्ज़ इन्फ़ाक़) जिस के लिए ज़कात की परिभाषा इस्तेमाल हुई और नफ़्ल इन्फ़ाक़ जिस की ओर प्रोत्साहन निरन्तर दिया जाता रहा। इसी प्रकार तस्बीह का आदेश आरंभ में दिया गया था उस का अनुपालन दो प्रकार से मान्य ठहरा। एक पंजवक्ता नमाज़ों के रूप में और दूसरा नफ़्ल नमाज़ों और नफ़्ल अज़्कार के रूप में। अत: हदीस में भी नमाज़ के बाद अज़्कार अर्थात अल्लाह के प्रवचनों का जप करने की प्रेरणा दी गई है।

163. अर्थात् इस इबादत का फल यह है कि तुम खुश और प्रसन्नचित हो जाओगे।

मालूम हुआ कि जिस व्यक्ति का दिल अल्लाह की तस्बीह और उस की प्रशंसा एवं गुणगान में लगता है उस को हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होती है और आख़िरत में तो वह निहाल हो जाएगा।

164. अर्थात् दुनिया के पुजारियों एवं सांसारिक मोह रखने वालों के वैभव एवं धन दौलत को लोभी दृष्टि से न देखो कि यह तो उन के लिए परिक्षा के संसाधन हैं। इस के मुक़ाबले में वह रोज़ी अधिक बेहतर और पायेदार है जिस का वादा अल्लाह ने तुम से किया है और वह है जन्नत की रोज़ी।

165. प्रत्येक मुसलमान का परम कर्तव्य है कि वह स्वयं भी नमाज़ की पाबन्दी करे और अपने घर वालों को भी इस का आदेश करे और सही तरीक़ा यह है कि अपने घर से सुधार की शुरूआत करे। नमाज़ के मामले में अपनी बीवी बच्चों की ओर से बेपरवाही किसी कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति का काम नहीं हो सकता।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि नमाज़ का आदेश पंजवक्ता नमाज़ की अनिवार्यता से पहले आ गया था।

166. यही बात सूरह ज़ारियात में इस प्रकार आयी है:-

مَا اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِنْ رِّزْقٍ وَمَا اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنَ ۔(ذاریات:۵۷)

अर्थ:- मैं न इन से (कोई) रोज़ी चाहता हूँ और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाऐं (अज़्ज़ारियात :५७)

मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी इबादत और नमाज़ का जो आदेश दिया है वह इस लिए नहीं है कि इस का कोई लाभ उस को पहुँचेगा बल्कि यह मुतालबा इस लिए है कि बन्दों में तक़वा (परहेज़गारी) के गुण पैदा हों।

167. अर्थात् नमाज़ से तक़वा (अर्थात् ईश-भय एवं परहेज़गारी) के गुण पैदा होते हैं और आख़िरत की कामयाबी उन ही के लिए है जो अपने अन्दर ये गुण पैदा करें। स्पष्ट रहे कि तक़वा का भावार्थ केवल बुराइयों से बचना ही नहीं बल्कि आदेशों का अनुपालन भी है। अर्थात् नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलू इस में शामिल हैं अत: अल्लामा इब्ने तीमिया लिखते हैं:-

''कौन कहता है कि तक़वा केवल बुराइयों से परहेज़ कर लेने का नाम है। तक़वा तो -------------जैसा कि अगले पिछले इस की व्याख्या करते चले आए हैं --------------- आदेशों का अनुपालन भी है और मना की गई बुराइयों को छोड़ना भी।''

(संग्रह फ़तावा इब्ने तीमिया जिल्द २० पृष्ट १३२

ये लोग कहते हैं, यह अपने रब की तरफ़ से कोई निशानी हमारे पास क्यों नहीं लाता । क्या उन के पास अगले ग्रंथों में जो कुछ (बयान हुआ) है उस की शहादत (साक्ष्य) नहीं पहुँची ?और यदि हम इस से पहले ही उन्हें अज़ाब (यातना) से विनष्ट कर देते तो वे कहते ऐ हमारे रब तूने हमारे पास कोई रसूल (संदेश वाहक) क्यों न भेजा कि हम अपमानित एवं अनादृत होने से पहले तेरे आदेशों पर चलते। कहो हर एक प्रतीक्षा में है । तो तुम भी प्रतीक्षा करो। शिघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि कौन सीधी राह पर है तथा कौन हिदायत (सीधा मार्ग) पाए हुए है ।*(अल-क़ुर्आन)*

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ
مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ١٣٣

133. ये लोग कहते हैं,यह अपने रब की तरफ़ से कोई निशानी हमारे पास क्यों नहीं लाता । क्या उन के पास अगले ग्रंथों में जो कुछ (बयान हुआ) है उस की शहादत (साक्ष्य) नहीं पहुँची ?[168]

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ
أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ١٣٤

134. और यदि हम इस से पहले ही उन्हें अज़ाब (यातना) से विनष्ट कर देते तो वे कहते ऐ हमारे रब तू ने हमारे पास कोई रसूल (संदेश वाहक) क्यों न भेजा कि हम अपमानित एवं अनादृत होने से पहले तेरे आदेशों पर चलते।[169]

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ١٣٥

135. कहो हर एक प्रतीक्षा में है [170]। तो तुम भी प्रतीक्षा करो। शिघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि कौन सीधी राह पर है तथा कौन हिदायत (सीधा मार्ग) पाए हुए है ।[171]

168. मक्का के बहुदेववादियों का कहना था कि यदि यह व्यक्ति वास्तव में रसूल है तो कोई प्रत्यक्ष एवं महसूस किया जाने वाला चमत्कार क्यों नहीं दिखाता। इस के जवाब में फ़रमाया गया कि क्या जो कुछ अगले ग्रंथों में उल्लिखित है उस की बातें उन तक नहीं पहुँची । मतलब यह है कि तौरात और इन्जील में जो भविष्यवाणियाँ आने वाले रसूल के बारे में उल्लिखित हैं ठीक ठीक उसी के अनुसार इस रसूल की नियुक्ति हुई है । और यह साक्ष्य उस के रसूल होने का स्पष्ट प्रमाण है। इस प्रमाण के बाद अन्य प्रत्यक्ष चमत्कारों की आवश्यकता बाक़ी नहीं रहती।

ध्यान रहे कि क़ुर्आन अवतरण के समय तौरात और इन्जील की जो प्रतियाँ उपलब्ध थीं उन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में स्पष्ट रुप से भविष्यवाणी मौजूद थी किन्तु बाद में यहूदियों और ईसाईयों ने कितनी ही पंक्तियां इन ग्रन्थों में से ग़ायब कर दीं ताकि क़ुर्आन की हुज्जत (तर्क) के मुक़ाबले में उन की बातों की कमज़ोरी ज़ाहिर न हो जाए। और कुछ पंक्तियों का अनुवाद ऐसा किया गया कि किसी के पल्ले कुछ न पड़े। फिर भी तौरात और इन्जील के वर्तमान अनुवादों में कुछ भविष्यवाणियाँ मौजूद हैं जिन का उदाहरण हम इस से पहले प्रस्तुत करते आए हैं। उदाहरण स्वरूप तौरात (पुराने नियम) में यह भविष्यवाणी मौजूद है:-

''सो मैं उन के लिए उन के भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा, और अपना वचन उस के मुँह में डालूँगा और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उन को कह सुनाएगा।''

(व्यवस्थाविवरण १८:१८)

इस भविष्यवाणी में एक बात तो यह कही गई है कि बनी इस्राईल के भाइयों में से नबी उत्पन्न करूँगा । बनी इस्राईल के भाई बनी इस्माईल हैं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनी इस्माईल ही में से थे और आप के अतिरिक्त कोई रसूल बनी इस्माईल में नहीं हुआ। दूसरी बात यह कही गई है कि वह शाने-नुबुव्वत में मूसा के समान होगा। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसी पाए के नबी थे। अत: क़ुर्आन कहता है :-

'' हम ने उसी प्रकार रसूल को तुम पर साक्षी बना कर भेजा है जिस प्रकार हम ने फ़िरऔन की ओर रसूल भेजा था।'' (मुज़्ज़म्मिल-१५)

और तीसरी बात यह कि '' मैं अपना वचन उस के मुँह में डालूँगा और जिस जिस बात की उसे आज्ञा दूँगा वही वह उन को कह सुनाएगा ।''

यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सर्वाधिक प्रमुख गुण था। अत: अल्लाह का कलाम आप की ज़बान से अदा हुआ और क़ुर्आन आप का मोज़्ज़ा (चमत्कार) तय पाया। गोया यह मोज़्ज़ा ठीक उस भविष्यवाणी के अनुकूल है जो तौरात में वर्णित हुई है। और यह प्रमाण है आप के वास्तविक रसूल होने का।

स्पष्ट रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी नियुक्त होने से पहले ईसाई और यहूदी उन भविष्यवाणियों के आधार पर आने वाले रसूल की प्रतिक्षा में थे और इस का चर्चा करते थे (देखिए सूरह बक़र: आयत ८९) अत: अरब वासी इस से अनभिज्ञ नहीं हो सकते थे।

169. अपमानित अपनी नज़रों में और निरादृत लोगों की नज़रों में।

170. अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति इस प्रतिक्षा में है कि रसूल की दअवत (उस की निमंत्रणा) का क्या नतीजा निकलता है।

171. अर्थात् शीघ्र ही तुम देख लोगे कि नबी की दअवत और उस की निमंत्रणा भलाई, सफलता एवं कल्याण का कारण थी या नहीं। और अल्लाह की सहायता नबी के साथ रही या तुम्हारे साथ?और क़ियामत के दिन तो दो और दो चार कि तरह तुम पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि रसूल और उस के अनुयायी ही सत्यमार्ग पर थे और वही सफलता की मन्ज़िल पर पहुँच गए।

सूरह
अल अम्बिया

२१.सूरह अल अम्बिया

नामः इस सूरह में कई नबियों का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से इस का नाम अल अम्बिया है।

नाज़िल होने का समयः सूरह मक्की है और इस के मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के आख़िरी दौर में नाज़िल हुई होगी । खास तौर से अन्तिम आयतों से जिस में पैग़म्बर ने फैसले के लिए दुआ की है।

केन्द्रीय विषयः लोगों के अन्दर समक्ष उत्तर देने का आभास उत्पन्न करना है ताकि उन का दृष्टिकोण और कार्य-दिशा बदल जाए। नबी हज़रात ग़फ़लत में पड़ी हुई क़ौमों को यह पाठ बराबर याद दिलाते रहे हैं किन्तु लोग संभलने के बजाय उलटे उन का विरोध करते रहे हैं। और यह भी एक अटल सच्चाई है कि अल्लाह की मदद हमेशा नबियों के साथ रही हैं और वे विशेष अनुग्रह एवं कृपा दृष्टि से अलंकृत किये जाते रहे हैं ।

कलाम की तरतीबः आयतें १ से १५ में लोगों को उन की ग़फ़लत पर झकझोरा गया है और रसूलों का विरोध करने वालों का जो अन्जाम इस से पहले हो चुका है उस से आगाह किया गया है।

आयत १६ से १८ में स्पष्ट किया गया कि इस जगत को इस के सृष्टा ने क्रीड़ा स्थल नहीं बनाया है बल्कि सत्य और असत्य की रणभूमि बनाई है।

आयत १९ से ३३ में तौहीद का बयान है।

आयत ३४ से ४७ में रिसालत अर्थात् इशदूतत्व से सम्बन्धित संदेहों एवं शंकाओं का उत्तर दिया गया है और रसूल की खिल्ली उड़ाने वालों को चेतावनी दी गई है।

आयत ४८ से ९४ में नबियों का वृत्तांत प्रस्तुत किया गया है जिन से एक ओर उन की शिक्षा को सामने लाना अभिप्रेत है और दूसरी ओर यह स्पष्ट करना है कि उन के पक्ष में अल्लाह की क़ुदरत और उस की रहमत के कैसे कैसे चमत्कार प्रकट होते हैं ।

आयत ९५ से ११२ सूरह का आख़िरी हिस्सा है जिस में इन्कार करने वालों को यातना से आगाह किया गया है और ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाई गई है साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि रसूल की नियुक्ति दुनिया वालों के हित में और सरासर रहमत है। यदि वे इन का निरादर करेंगे तो अपना ही नुक़सान करेंगे।

२१.सूरह अल अम्बिया

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَاۗءِ

आयतें : 112

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. निकट आ लगा है लोगों के लिए उन के हिसाब का समय और वे हैं कि ग़फ़लत में मुँह फेरे चले जा रहे हैं [1]।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝١

2. उन के रब की ओर से जो भी ताज़ा नसीहत आती है उस को वे इस प्रकार सुनते हैं कि खेल में लगे रहते हैं [2]।

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٢

3. उन के दिल ग़ाफ़िल हैं [3] और ये ज़ालिम चुपके चुपके कानाफूसी करते हैं कि यह तुम जैसा ही तो एक मनुष्य है, फिर क्या तुम आँखों देखे जादू के पास जाओगे [4]?

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ڰ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ڰ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣

4. उस ने (रसूल ने) कहा मेरा रब जानता है जो बात भी आसमान और ज़मीन में की जाए। वह सब कुछ सुनने वाला, ज़ानने वाला है [5]।

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٤

5. उन्हों ने यहाँ तक कहा कि यह तो बिखरे स्वप्न हैं, बल्कि यह इस का मनगढ़ंत (कलाम) है, बल्कि यह शायर है [6]। वरना यह हमारे पास कोई ऐसी निशानी लाए जिस प्रकार पहले के रसूल निशानियों के साथ भेजे गए थे।

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ښ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥

6. इन के पहले कोई बस्ती भी जिस को हम ने विनष्ट किया, ईमान नहीं लाई,[7] फिर क्या ये लोग ईमान लाऐंगे [8]?

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

7. और तुम से पहले हम ने आदमियों ही को रसूल बना कर भेजा था जिन पर हम वह्य करते थे। अगर तुम नहीं जानते तो अहले किताब से पूछ लो [9]।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧

1. हिसाब के समय से तात्पर्य क़ियामत की घड़ी है। जब प्रत्येक व्यक्ति को ख़ुदा के समक्ष अपनी धारणाओं और अपने कर्मों के बारे में जवाबदेही करना होगी।

जवाबदेही की यही धारणा है जो आदमी के अन्दर कर्तव्य बोध पैदा करता है और उसे अल्लाह के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने पर आमादा करता है। परन्तु हर दौर में लोग इस महत्वपूर्ण वास्तविकता की ओर से बेपरवाह रहे हैं और आज भी अरबों मनुष्य इस बात से बिलकुल बेख़बर हैं कि निकट भविष्य में उन्हें हिसाब किताब के उस चरण में जाना ही जाना है जहाँ उन से पूछ ताछ होगी। क़ुर्आन की यह उद्घोषणा अचेत मानवता को सचेत कर देने वाली है। यदि वह इस पर विचार करे। परन्तु लोगों का हाल यह है कि वे क़ियामत और हिसाब की बातें सुनना ही नहीं चाहते। वे केवल ऐसी बातें सुनना चाहते हैं जिन से उन की बदमस्तियों में बढ़ोत्तरी होती हो।

हिसाब की घड़ी निकट आ लगने का अर्थ यह है कि मानव जाति अपने दौर के अन्तिम चरणों में है। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بُعِثْتُ اَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَا تَيْنِ (مسلم کتاب الفتن)

अर्थ:- "मैं और कियामत की घड़ी इन दो उंगलियों की भाँति साथ साथ भेजे गए हैं।" (मुस्लिम किताबुलफ़ितन)

तथा हिसाब की घड़ी इस दृष्टि से भी निकटतम है कि आदमी के और मृत्यु के बीच बहुत थोड़ा फ़ासला है। और जब मौत आ जाती है तो वह हिसाब ही के चरण में प्रविष्ट हो जाता है और उसी समय से इनाम और दण्ड का क्रम शुरू हो जाता है।

2. अर्थात् क़ुर्आन की जो सूरह नाज़िल होती है एक नये उपदेश भाव के साथ नाज़िल होती है। परन्तु ये लोग इतने निर्भीक सिद्ध हुए हैं कि उस से उपदेश लेना तो दूर उलटे उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं

यह हाल जाहिल अरबवासियों ही का नहीं था। आज के बुद्धिजीवियों का भी यही हाल है। वे ख़ुदा और धर्म के मामले में इतने निर्लज्ज एवं निर्भीक सिद्ध हुए हैं कि जहाँ जन्नत और दोज़ख़ की बात आई उन्हों ने कटाक्ष कहे।

3. यह है मूल कारण उन की निर्लज्ज हरकतों का कि उन के दिल ख़ुदा की ओर से ग़ाफ़िल और दुनिया को हासिल करने के लिए लालायित हैं।

4. अर्थात् यह वयक्ति जो कलाम हमारे सामने रखता है उस की वास्तविकता कुछ भी नहीं बस शब्दों का मायाजाल है जिस से लोग प्रभावित हो जाते हैं। फिर क्या तुम जानते बूझते जादू के फंदे में फंसोगे?

5. यह पैग़म्बर का कथन है जो अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया है और यह बहुदेववादियों की कानाफूसी का जवाब है।

6. इन्कार करने वाले क़ुर्आन और पैग़म्बर के बारे में तरह तरह की बातें करते रहते हैं। कभी कहते हैं यह जादूगरी है। कभी कहते हैं यह बिखरे स्वप्नों का संग्रह है। कभी कहते यह मनगढ़ंत बातें हैं। और कभी कहते यह व्यक्ति शायर है और क़ुर्आन उस की शायरी का शिखर है। इस से स्वयं इन्कार करने वालों की उलझी मानसिकता का पता चलता है। कभी वे एक बात कहते और जब वह फिट न बैठती तो दूसरी बात कहते। और जब वह उचित न बैठती तो तीसरी बात कहते और जब यह भी बिलकुल अनुकूलन होती तो चौथी बात कहते। इस प्रकार एक न एक आरोप लगाकर हक़ीक़त पर परदा डालने की कुचेष्टा करते।

7. अर्थात् प्रत्यक्ष चमत्कार देख कर कोई बस्ती भी ईमान नहीं लाई थी।

8. अर्थात् यदि उस पैग़म्बर के हाथों कोई प्रत्यक्ष चमत्कार उन लोगों को उन की माँग पर दिखा दिया जाए तो ये लोग इस के बाद भी ईमान नहीं लाऐंगे। क्यों कि हठ्धर्म लोगों का स्वभाव यही है।

9. इस की व्याख्या सूरह नह्ल नोट ६४ और ६५ में गुज़र चुकी।

8. उन को हम ने ऐसे शरीर का नहीं बनाया था कि खाना न खाते हों और न ही वे सदैव रहने वाले थे [10]।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾

9. फिर हम ने उन से वादा पूरा किया, और उन्हें और जिन को हम ने चाहा बचा लिया, और हद से गुज़रने वालों को विनष्ट कर दिया।

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ
وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾

10. हम ने तुम्हारी ओर ऐसी किताब भेजी है जिस में तुम्हारे लिए याद्देहानी है।क्या तुम समझते नहीं ?

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾

11. और कितनी ही ज़ालिम बस्तियाँ हैं जिन को हम ने विनष्ट कर दिया और उन के बाद दूसरे लोगों को उठा खड़ा किया।

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا
قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾

12. जब उन्हों ने हमारा अज़ाब (यातना) महसूस किया [11] तो लगे वहाँ से भागने।

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾

13. भागो नहीं । लौटो अपने ऐश्वर्य और अपने घरों की तरफ़, ताकि तुम से पूछा जाए [12]।

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

14. वे पुकार उठे, अफ़सोस हम पर। हम ही ज़ालिम थे [13]।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾

15. वे यही वावेला करते रहे यहाँ तक कि हम ने उन को कटे हुए खेत की तरह कर दिया [14]। वे बिलकुल बुझ कर रह गए [15]।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى
جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾

16. हम ने आसमान और ज़मीन और उन के बीच की वस्तुओं को खेल के तौर पर नहीं बनाया है [16]।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾

17. यदि हम खेल बनाना चाहते तो खास अपने पास से बना लेते, यदि हमें ऐसा करना ही होता [17]।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ
مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾

18. परन्तु हम तो सत्य को असत्य पर दे मारते हैं तो वह उस का सर कुचल देता है और वह (असत्य) नष्ट हो जाता है [18]।और तुम्हारे लिए तबाही है उन बातों की वजह से जो तुम बयान करते हो [19]।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۗ
وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

10. अर्थात् जो पैग़म्बर भी भेजे गए वे सब खाना खाने वाले मनुष्य थे। मानव से ऊपर (Super Human) कोई भी नहीं था । और न कोई सदा के लिए संसार में जीवित रहा । जो चीज़ पैग़म्बर को दूसरे मनुष्यों से अलग एवं प्रमुख करती रही है वह उस पर अल्लाह की प्रकाशना वह्य का उतरना है। इस आयत से इस धारणा का भी खण्डन होता है कि हज़रत ख़िज्र दुनिया में हमेशा के लिए जीवित हैं।

11. अर्थात् जब अजाब के लक्षण देख लिए।

12. यह व्यंग्य है । मतलब यह है कि अब भागते क्यों हो तुम तो क़ब्र के अज़ाब (यातना) का मज़ाक उड़ाते रहे अत: यदि तुम्हारे बस में है तो अपने ऐश्वर्य एवं भोग विलास के साधनों और अपने भव्य भवनों की ओर लौटो ताकि तुम्हारे साथी तुम्हारा हाल मालूम कर सकें कि क्या घटना घटी जो तुम अपने घर बार छोड़ चले गए थे?

13. उस समय उन्हों ने अपना दोषी होना स्वीकार किया और अपने किए पर पछताए।

14. अर्थात् उन की दशा उस खेत की सी हो गई जिस की फसल कट चुकी हो और वह घास फूस हो कर रह गई हो।

15. अर्थात् जीवन का अंश समाप्त हो गया और वे बिलकुल निष्प्राण जड़ हो कर रह गए।

16. आख़िरत का इन्कार करने के बाद मनुष्य इस कायनात (ब्राह्माण्ड) के पैदा किये जाने का कोई अर्थ नहीं बता पाता। ऐसे लोगों के नज़दीक इस कायनात का अस्तित्व ख़ुदा के सुनियोजित एवं गंभीर निर्णय का परिणाम नहीं है बल्कि मात्र बहलावे एवं मनोरन्जन का सामान है जो उस ने अपने लिए कर लिया है। हिन्दू दर्शन में यह लीला के नाम से प्रसिद्ध है।

" In the beginning God was alone, and he desired to become many. As a consequence, he created the world out of mere pleasure, as a sport (lila)."

-(Outlines of Hinduism, by T.M.P. Mahadevan p. 163).

"अर्थात् शुरू में ईश्वर अकेला था। उस ने (एक से) अनेकता में परिवर्तित होना चाहा जिस के फलस्वरूप उस ने संसार की रचना मात्र बहलावे के लिए खेल (लीला) के तौर पर की ।"

सही बात यह है कि ख़ुदा को ग़ैर संजीदा वही लोग समझते हैं जो स्वयं आवारा एवं ग़ैर संजीदा होते हैं।

17. अर्थात् खेल बनाना हमारी शान के ख़िलाफ़ है किन्तु चलो मान लो कि हमें खेल बनाना होता तो हम अपने पास से इस का सामान कर लेते। इस के लिए इस विशाल कायनात की संरचना करने और मनुष्य जैसी विवेकशील एवं उत्तरदायी सृष्टि का सृजन करने की आवश्यकता नहीं थी। मतलब यह है कि वह जीवन का कारखाना किसी खुलंडरे का खेल नहीं बल्कि इस का एक उद्देश्य और एक लक्ष्य है।

18. अर्थात् यह समझना सही नहीं कि यह जगत कोई क्रीड़ा स्थल अथवा तमाशे की जगह है और हम उस के दर्शक बल्कि हम ने इस दुनिया को परीक्षा स्थल बनाया है और आदमी की हम परीक्षा ले रहे हैं। इस लिए यह दुनिया सत्य और असत्य का रणक्षेत्र बन गया है। यह और बात है कि इस का परिणाम आख़िरत में सामने आएगा जहाँ सत्य ही सत्य होगा और असत्य का बिलकुल नामो-निशान न होगा। फिर भी इस जगत में भी हम सत्य के द्वारा असत्य पर करारी चोट लगाने का साधन करते रहते हैं। अत: मानव इतिहास में बार बार ऐसा हुआ है कि जब असत्य ने सर उठाया तो हम ने अपने रसूलों के द्वारा उस का सर कुचला। सत्य विजयी हो कर रहा और असत्य को मुँह की खानी पड़ी। इस पैग़म्बर के द्वारा भी सत्य को असत्य पर हावी होना है, और यह क़ुर्आन तो अल्लाह की वह तर्क है जिस के सामने असत्य कदापि नहीं टिक सकता । इस के बाद वही लोग इस जगत को क्रीड़ा स्थल अथवा मनोरंजन का साधन ठहरा सकते हैं जिन्हों ने वास्तविकता की ओर से आँखें मूँद ली हों।

19. अर्थात् ख़ुदा से झूठी बातें जोड़कर तुम अपने ही विनाश की सामाग्री जुटा रहे हो।

19. आसमानों और ज़मीन में जो कोई है सब उसी के हैं [20]और जो उस के पास हैं [21]। वे न उस की इबादत (बन्दगी) से मुँह फेरते हैं और न थकते हैं।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

20. रात दिन उस की तस्बीह (पाकी बयान) करते रहते हैं। दम नहीं लेते ।[22]

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾

21. क्या उन्हों ने ज़मीन के ऐसे ख़ुदा (इष्ट पुज्य) बना लिए हैं जो (मुर्दों को) ज़िन्दा खड़ा करते हों [23]।

أَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

22. अगर इन (आसमान और ज़मीन) में अल्लाह के सिवा और ख़ुदा भी होते तो ये छिन्न भिन्न हो कर रह जाते [24]।अतः पाक है अल्लाह, अर्श (सिंहासन) का रब, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं।

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ إِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ
الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾

23. वह जो कुछ भी करता है (किसी के समक्ष) उत्तरदायी नहीं [25] और सब उत्तरदायी हैं [26]।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾

24. क्या इन्हों ने उस को छोड़ कर और इष्ट पूज्य बना लिए हैं ? इन से कहो पेश करो अपनी दलील। यह शिक्षा मेरे साथियों के लिए है और यही शिक्षा मुझ से पहले लोगों के लिए भी थी [27]।मगर अधिकतर लोग वास्तविकता से बेख़बर हैं इस लिए मुँह फेरे हुए हैं।

أَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوْا
بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۗ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

25. हम ने तुम से पहले जो भी रसूल भेजा उस पर यही प्रकाशना (वह्य) की कि मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं, तो मेरी ही इबादत करो [28]।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا نُوْحِيْٓ إِلَيْهِ أَنَّهٗ
لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

26. ये कहते हैं रहमान ने (अपने लिए) संतान बना ली है पाक है वह, वास्तविकता यह है कि वे (उस के) प्रतिष्ठित बन्दे हैं [29]।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا
سُبْحٰنَهٗ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

27. उस के आगे बढ़कर बात नहीं करते [30]और उस की आज्ञा का पालन करते हैं।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

20. अर्थात् वह सब का स्वामी है सब उस के दास एवं गुलाम ।

21. तात्पर्य निकटस्थ फ़रिश्ते हैं।

22. जिस प्रकार इन्सान साँस लेने से नहीं थकता उसी प्रकार फ़रिश्ते तस्बीह अर्थात् ख़ुदा की पाकी बयान करने से नहीं थकते। वे सदैव अल्लाह की प्रशंसा एवं गुणगान करने में लीन रहते हैं।

इन आयतों में आसमान के फ़रिश्तों की एक झलक दिखाई गई है जिस से अन्दाज़ा होता है कि अल्लाह तआला का दरबार किस शान का होगा। इस से अल्लाह की महानता व उस की बड़ाई की सही धारणा भी उतपन्न हो जाती है तथा तस्बीह और उस की इबादत से गहरा लगाव भी ।

23. बहुदेववादी समझते हैं कि जो आकाश का स्वामी है वह पृथ्वी का अकेला स्वामी नहीं है। बल्कि बहुत से छोटे छोटे ख़ुदा (देवता) हैं जो ज़मीन की सारी व्यवस्था संभाले हुए हैं और वही है जो मनुष्य को लाभ और हानि पहुँचाते रहते हैं। इस बात के खंडन हेतु उन से यह प्रश्न किया गया है कि क्या तुम्हारे विचार में पृथ्वी के ख़ुदा और हैं?और क्या ये ख़ुदा तुम को मरने के बाद ज़मीन से दोबारा खड़ा कर देने वाले हैं कि तुम उन की पूजा पाठ करते रहे। इस के बदले में वे तुम्हें इनाम देंगे? अगर ऐसा नहीं है--- और तुम स्वयं यह दावा नहीं कर सकते कि वे तुम्हें मरने के बाद दोबारा उठा खड़ा कर देने वाले हैं--- तो फिर उन को पूजने का क्या लाभ? मरकर यदि दोबार तुम को उठना ही नहीं है तो तुम्हारे ये इष्ट पूज्य आख़िर तुम्हारे कब काम आने वाले हैं?

24. अर्थात् यदि आकाश और धरती में असंख्य ख़ुदा होते तो जगत की यह व्यवस्था चल नहीं सकती थी। प्रत्येक प्ररिस्थिति में वह व्यवस्था एवं अनुशासन बाक़ी नहीं रह सकता था जो इस ब्राह्माण्ड में व्याप्त है और न इस के विभिन्न अंग परस्पर एक दूसरे से ताल मेल बिठा सकते थे। और न किसी योजनाबद्ध तरीक़े से इस ब्राह्माण्ड में कोई काम अन्जाम पाता। उदाहरण के तौर पर, बारिश के लिए धरती, समुद्र और हवाऐं सब का ताल मेल आवश्यक है वरना मनुष्य के लिए धरती के कोनों में पानी पहुँचाने की यह योजना क्रियान्वित नहीं हो सकती । यदि ये चीज़ें भिन्न भिन्न ख़ुदाओं के वशीभूत होतीं तो बारिश का यह प्रबन्ध कैसे संभव था?

यह तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद का अतिस्पष्ट प्रमाण है और इस से शिर्क (बहुदेववाद) और इल्हाद (अनिश्वरवाद) दोनों का खंडन होता है । यदि यह कायनात बिना किसी रचयिता एवं व्यवस्थापक के होती तो यह कारख़ाना ऐसी निमयबद्धता के साथ किस प्रकार चल सकता था?

25. अल्लाह सर्वाधिकारी और सर्वाच्च शासक है इस लिए उस का किसी के समक्ष उत्तरदायी होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता और न किसी को यह अधिकार पहुँचता है कि उस के फैसलों और उस के कामों पर आपत्ति व्यक्त करे।

26. चूँकि सब अल्लाह की सृष्टि और उस के बन्दे हैं इस लिए हर व्यक्ति उस के समक्ष उत्तरदायी है। जो व्यक्ति अपने को उस के समक्ष उत्तरदायी नहीं समझता वह अपना स्थान ग़लत निर्धारित करता है जिस के फलस्वरूप उस का पूरा जीवन ग़लत हो कर रह जाता है।

27. अर्थात् अल्लाह के सिवा किसी और के इष्ट पूज्य होने का प्रमाण रब्बानी शिक्षा में मौजूद नहीं है। आज मेरे (अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के) साथियों को जो शिक्षा दी गई है वह सरासर एकेश्वरवाद ही की शिक्षा है। और जो शिक्षा इस से पहले नबियों तथा उन के अनुयायियों को दी गई थी वह भी एकेश्वरवाद ही की शिक्षा थी। स्पष्ट रहे कि बहुदेववादियों की विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में असंख्य पूज्यों एवं देवताओं की जो धारणा मिलती है तो यह इस बात का हरगिज़ प्रमाण नहीं है कि यह अल्लाह का आदेश है या यह किसी रसूल की शिक्षा है क्यों कि ये पुस्तकें अल्लाह की उतारी हुई नहीं है बल्कि धार्मिक पन्डितों द्वारा संकालित की गई हैं।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ
اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾

28. जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है सब से वह भिज्ञ है।वे सिफ़ारिश नहीं करेंगे मगर उस की जिस के लिए अल्लाह पसंद फ़रमाए [31] और वे उस के भय से डरते रहते हैं [32]।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّىْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ
كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾

29. और उन में से यदि कोई कह दे कि उस के सिवा मैं ख़ुदा हूँ तो उसे जहन्नम का दण्ड देंगे। हम ज़ालिमों को इसी प्रकार दंड देते हैं [33]।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ
كُلَّ شَىْءٍ حَىٍّ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۰﴾

30. क्या इन्कार करने वाले ने इस बात पर विचार नहीं किया कि आसमान और ज़मीन परस्पर मिले हुए थे, फिर हम ने उन्हें अलग कर दिया [34]।और पानी से तमाम जीवित चीज़ें पैदा कर दीं [35]। क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाएंगे [36]?

وَجَعَلْنَا فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا
فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۳۱﴾

31. और हम ने ज़मीन में पहाड़ो के लंगर डाल दिए कि इन को ले कर लुढक न जाए [37]। और इन पहाड़ों में दर्रे बनाए जो रास्ते का काम देते हैं [38] ताकि लोग राह पाऐं [39]।

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا وَّهُمْ عَنْ
اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۳۲﴾

32. और हम ने आकाश को सुरक्षित छत बनाया [40] मगर यह लोग उस की निशानियों से मुँह फेरे हुए हैं [41]।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ
فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. और वही है जिस ने रात और दिन और सूरज और चाँद बनाए। सब अपने अपने मदार (मण्डल) में तैर रहे हैं [42]।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ اَفَا۟ئِنْ مِّتَّ
فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿۳۴﴾

34. और हम ने तुम से पहले भी किसी इन्सान को नित्यता नहीं प्रदान की [43]।यदि तुम मर गए तो क्या वे लोग हमेशा ज़िन्दा रहने वाले हैं [44]?

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوْكُمْ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है [45]। और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डाल कर के तुम्हारी आज़माइश करते हैं [46]। और हमारी ही तरफ़ तुम्हें पलटना है [47]।

28. अत: विभिन्न धर्मों में एकेश्वरवाद के विरूद्ध जो शिक्षा भी पाई जाती है वह किसी भी नबी की शिक्षा नहीं है। ऐसी व्यर्थ की बातें यदि किसी नबी से संबद्ध बताई गई हैं तो वे ग़लत हैं और उस नबी पर बोहतान है।

29. बहुदेववादी फ़रिश्तों को अल्लाह की संतान बताते थे । यह उसी का खंडन है। कहा गया कि फ़रिश्ते अल्लाह की संतान नहीं बल्कि उस के प्रतिष्ठित दास हैं।

30. अर्थात् फ़रिश्तों की यह मजाल नहीं कि अल्लाह के समक्ष बात करने में पहल करें परन्तु तुम इस भुलावे में लिप्त हो कि वे अल्लाह के लाडले हैं जो चाहें उस से मनवाएं।

31. अर्थात् फ़रिश्ते उन ही के पक्ष में सिफ़ारिश करेंगे जिन के पक्ष में सिफ़ारिश करना अल्लाह तआला मन्जूर करे। इस से अभिप्रेत बहुदेववादियों की इस धारणा का खण्डन है कि यदि क़ियामत हो ही गई तो फ़रिश्ते जिन की हम पूजा, उपासना करते रहे हैं अल्लाह के दरबार में हमारी सिफ़ारिश कर के हमें यातना से बचा लेंगे।

सिफ़ारिश की अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ४१२ और सूरह मरयम नोट १११

32. फ़रिश्ते अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते इस के बावजूद उस के भय से वे डरते रहते हैं। मनुष्यों के स्वाभावानुकूल एवं प्रतिष्ठानुकूल भी यही है कि वे फ़रिश्तों के इन सद्गुणों को अपने अन्दर पैदा करें।

33. अर्थात् फ़रिश्तों को तुम ने ख़ुदा बना दिया है वरना वे ख़ुदा होने के दावेदार नहीं है। वे तो अल्लाह की बन्दगी में लगे रहते हैं। लेकिन चलो मान लो कि किसी ने ख़ुदा होने का दावा कर भी दिया तो उस को हम जहन्नम में झोंक देंगे। क्यों कि इस जघन्य अपराध का यही दण्ड है।

34. कायनात की दशा आरम्भ में क्या थी,यहाँ उसी दशा को बता कर के चिन्तन मनन का न्योता दिया गया है। कायनात के बारे में यह समझना सही नहीं कि उस को जिस रूप में हम देखते हैं उसी प्रकार से वह सदा से चली आ रही है। इस का न कोई आरंभ है, और न कोई अंत, बल्कि वास्तविकता यह है कि यह कायनात एक सृष्टा के सृजन करने से अस्तित्व में आई है और इस की शुरुआत यूँ हुई कि उस ने पहले एक पदार्थ (दुख़्ख़ान) की रचना की (देखिए सूरह हा-मीम सज्दा आयत ११) जो एक तोदे (Mass) के रूप में था। फिर उस पदार्थ से ज़मीन और आसमान (आकाश के सारे मण्डल एवं नक्षत्र) बनाए। गोया ज़मीन और आसमान शुरू में मिले हुए थे। बाद में अलग अलग हो गए।

जो व्यक्ति भी सोच विचार करेगा उस पर क़ुर्आन के इस बयान की सत्यता स्पष्ट हो जाएगी। क्यों कि यदि कायनात का मूल तत्व एक न होता तो उस के विभिन्न तत्वों के अन्दर परस्पर ताल मेल नहीं पाया जा सकता था परन्तु हम देखते हैं कि सूरज अपनी किरणें पृथ्वी पर डालता है और पृथ्वी उस का ताप एवं प्रकाश गृहण कर लेती है। और अब तो इन्सान ने चाँद पर पहुँच कर देख लिया कि वहाँ धरातल भी हमारे पृथ्वी के धरातल ही की भाँति मिट्टी और पत्थर से बना हुआ है। और जब वास्तविकता यह है कि ये सब एक बनाने वाले की कारीगरी है तो फिर उस के तक़ाज़ों से मुँह मोड़ने का क्या अर्थ?

35. अर्थात् पानी जीवन का मूल अंश है। जीवन जिस वस्तु को भी मिलता है पानी ही के द्वारा मिलता है। और उस का अस्तित्व पानी ही की बदौलत स्थिर है। आम तौर से भी यही देखने में आता है कि पानी की एक बूँद में जीवनदायक कीटाणु विद्यमान होते हैं और उसी से इन्सानों और जानवरों की संरचना होती है। जन्तु शास्त्र (Biology) के अनुसार भी एक जीवद्रव्य (Protoplasm) है जो हर जीवित सृष्टि में पाया जाता है। क्या जीवन की यह वास्तविकता एक ख़ुदा की सृजनशक्ति और उस की महिमा एवं महान क़ुदरत का पता नहीं देती?

36. अर्थात् इन वास्तविकताओं पर यदि मनुष्य विचार करे तो उस में ईमान और स्थिरता एवं विश्वास का भाव जागृत हो । परन्तु लोग इस पहलू से विचार करते ही नहीं।

37. इस की व्याख्या सूरह नह्ल नोट २६ में गुज़र चुकी।

38. पहाड़ो में दर्रे (रास्ते) बनाए। ये क़ुदरती रास्ते हैं जिन के द्वारा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाना मनुष्य के लिए संभव हुआ ।

39. राह पाने से तात्पर्य वह मार्ग भी है जिस पर चल कर मनुष्य अपनी मन्ज़िल पर पहुँच जाता है और वह राह भी जिस पर चल कर वह अल्लाह को पा लेता है। क़ुर्आन मनुष्य के मन को बाह्य से अन्तर्मन की ओर और कल्पना एवं अवास्तविकता से वास्तविकता की ओर मोड़ता है। यह उस का अति सूक्ष्म एवं प्रभाव शाली मार्गदर्शन है।

40. आकाश के सुरक्षित छत होने का अर्थ यह है कि उस को इस ख़ूबी के साथ बनाया गया है कि उस में कहीं कोई ख़राबी पैदा नहीं होती। वर्षो गुज़रने के बावजूद वह अपनी मूल दशा पर बना हुआ है। उस में बोसीदा (जीर्ण) होने के लक्षण कभी पैदा नहीं हुए कि धरती वासियों को उस के गिर जाने का भय हो।

41. वर्तमान युग के अन्तरिक्ष (Astronomers) ने अन्तरिक्षीय किरणों (Cosmic Rays) तक का पता चलाया है। मगर उन को कायनात के सृष्टा का पता न चल सका। यह इस लिए कि उन को ख़ुदा की तलाश नहीं है। सच पूछिए तो

ख़ुदा को वही लोग पाते हैं जिन को उस की तलाश होती है।

42. मूल भाषा (Text) में ''फ़लक'' فلک शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ अरबी में मदार अर्थात मण्डल के हैं। लिसानुल अरब में है الفلك अलफ़लक : मदारून्नुजूम अर्थात् सितारों का मदार (लिसानुल अरब जिल्द १० पृष्ट ४७८) आसमान के अर्थ में यह शब्द न क़ुर्आन में प्रयुक्त हुआ है और न प्राचीन अरबी में यह इस अर्थ में जाना जाता था। बाद में खगोल शास्त्र अथवा नक्षत्र विज्ञान की परिभाषा के रूप में यह शब्द आसमान के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। और फ़ारसी और उर्दू में तो यह आसमान के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। फिर आयत में यह शब्द नकर: इस्तेमाल हुआ है जिस से अपने आपने मदार (मण्डल) का भावार्थ पैदा हो गया है। और यस्बहून يَسْبَحُوْن बहुवचन है जो अरबी में दो से अधिक के लिए बोला जाता है। इस लिए इस शब्द का संकेत इस बात की तरफ़ है कि सूरज और चाँद ही नहीं बल्कि सारे नक्षत्र अपने अपने मदार (मण्डल) में तैर रहे हैं। नक्षत्रों को जब आदमी खुली आँखों से देखता है तो वे विशाल अन्तरिक्ष में तैरते नज़र आते हैं। इस लिए क़ुर्आन ने वस्तुस्थिति को सरल ढंग से बयान कर दिया। और इस लिए यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि सूरज चाँद सितारे सब गतिशील हैं और अपना सफ़र अपनी अपनी सीमा में जारी रखे हुए हैं। निर्धारित सिमा को वे लाँघते नहीं। इस नियम के साथ उन की यह प्रक्रिया इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि तमाम अन्तरीक्ष के नक्षत्रों की बागडोर एक मात्र सर्वशक्तिमान एवं सर्वोच्च शासन चलाने वाली हस्ती के हाथ में है।

जहाँ तक खगोल शास्त्र का सम्बन्ध है चाँद और अन्य नक्षत्रों की अपने अपने मण्डल में गर्दिश एक ज्ञात वास्तविकता है। रही बात सूरज और सितारों के गर्दिश की तो उन की अपनी धुरी पर गर्दिश से तो इन्कार नहीं है अलबत्ता उन की अपने मण्डल में गर्दिश (परिभ्रमण अथवा Orbital Rotation) के बारे में आधुनिक विज्ञान अभी अनुमान से आगे नहीं बढ़ सका है। इस लिए क़ुर्आन की बयान की हुई वास्तविकताओं को आधुनिक विज्ञान के सीमित क्षेत्र में बन्द नहीं किया जा सकता। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ८)

43. यह आयत पुष्टि करती है कि संसार में हमेशा हमेशा का जीवन किसी को भी प्रदान नहीं किया गया है। यहाँ तक कि नबी भी इस से अलग नहीं हैं। इस से जन साधारण के इस सोच अथवा इस धारणा का खण्डन होता है कि हज़रत ख़िज्र को दुनिया में अनंत जीवन प्रदान हुआ है तथा शीयों की इस धारणा का भी खण्डन होता है जो वे अपने बारहवें इमाम के ग़ायब हो जाने और उन के ज़िन्दा रहने का बारे में रखते हैं।

रही ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन की बात तो वे दुनिया में नित्याता का जीवन नहीं व्यतीत कर रहे हैं बल्कि आसमान पर उठा लिया गए हैं और क़ियामत के निकट जब उन का अवतरण होगा तो उन की भी शारीरिक मौत होगी।

44. विरोधी चाहते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तिकाल हो जाए ताकि इस कशमकश से उन्हें मुक्ति मिल जाए जो आप के और उन के मध्य उत्पन्न हो गई थी। फ़रमाया यदि पैग़म्बर की मौत हो जाती तो ये कहाँ बाक़ी रहने वाले हैं। एक न एक दिन इन को भी मरना है। इस लिए मरने के बाद जिस चीज़ से सामना होने वाला है उस की चिन्ता इन्हें होनी चाहिए। इस से बेपरवाह हो कर पैग़म्बर की मौत की प्रतीक्षा में रहना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं हो सकती।

45. इस की व्याख्या सूरह आले इमरान नोट २१५ में गुज़र चुकी।

46. अर्थात् संसार का जीवन एक परीक्षा का जीवन है। इस लिए मौत हर व्यक्ति के लिए सुनिश्चित है। इसी प्रकार किसी का ख़ुशहाल या बदहाल होना परीक्षा ही की दृष्टि से है। और एक नबी को भी मनुष्य होने के कारण इन हालात से गुज़रना पड़ता है।

47. ख़ुदा की तरफ़ पलटने का मतलब यह है कि उसी ने तुम को दुनिया में भेजा है और उसी की तरफ़ तुम्हें वापस जाना है। यह एक सीधी सादी वास्तविकता है जो आयत में कही गई है। इस के विपरीत भारत के बहुदेववादियों का बहुदेववादी दर्शन यह है कि मनुष्य की आत्मा उस के मरने के बाद ईश्वर में विलीन हो जाती है।

فتعالى اللّٰهُ عما يُشرِكُوْن .

''फ़ताअल्लाहु अम्मा युशरिकून''

और (ऐ पैग़म्बर !) ये काफ़िर जब तुम्हें देखते हैं तो मज़ाक़ बना लेते हैं। (कहते हैं) क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे इष्ट पूज्यों की (बुराई के साथ) चर्चा करता है? और उन का अपना हाल यह है कि रहमान के ज़िक्र (चर्चा) से इन्कार करते हैं। मनुष्य की प्रकृति (स्वभाव) में जल्दबाज़ी है। मैं अतिशीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा जल्दी न मचाओ। *(अल-क़ुर्आन)*

36. और (ऐ पैग़म्बर !) ये काफ़िर जब तुम्हें देखते हैं तो मज़ाक़ बना लेते हैं। (कहते हैं)क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे इष्ट पूज्यों की (बुराई के साथ) चर्चा करता है? और उन का अपना हाल यह है कि रहमान के ज़िक्र (चर्चा) से इन्कार करते हैं [48]।

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا
الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۶﴾

37. मनुष्य की प्रकृति (स्वभाव) में जल्दबाज़ी है [49]। मैं अतिशीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा [50] जल्दी न मचाओ [51]।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ
فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۳۷﴾

38. कहते हैं यह वादा पूरा कब होगा अगर तुम सच्चे हो [52]।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۸﴾

39. काश ! ये काफ़िर उस समय को जान लेते जब ये आग को न अपने मुँह से हटा सकेंगे और न अपनी पीठ से और न ही उन की कोई सहायता की जायेगी।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ
النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۳۹﴾

40. वह (घड़ी) तो अचानक आ जाएगी और उन को बदहवास कर देगी। फिर न तो वे उस को टाल सकेंगे और न उन्हें मोहलत मिलेगी [53]।

بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۴۰﴾

41. तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया था। परन्तु जो लोग उन का मज़ाक़ उड़ाते रहे उन को उसी चीज़ ने अपनी लपेट में ले लिया जिस का वे मज़ाक़ उड़ाते थे [54]।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا
مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۱﴾

42. इन से पूछो कौन है जो रात को और दिन को रहमान (की पकड़) से तुम्हारी रक्षा करता है?[55] मगर यह अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरे हुए हैं [56]।

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ
بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾

43. क्या हमारे सिवा उन के ऐसे इष्ट पूज्य हैं जो इन को बचा सकते हैं? वे स्वयं अपनी मदद कर नहीं सकते और न हमारा समर्थन उन को प्राप्त है [57]।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ
اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾

48. इस आयत में ज़िक्र का शब्द दो अलग अर्थों में प्रयुक्त हुआ है जिसे अरबी व्याकरण में ''तजनीस लफ़्ज़ी'' कहते हैं। ''क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे ख़ुदाओं का ज़िक्र करता है'' का मतलब ख़ुदाओं की बुराई के साथ चर्चा करना है। और ''इन का अपना हाल यह है कि रहमान के ज़िक्र का इन्कार करते हैं।'' का मतलब यह है कि वे रहमान का ज़िक्र अच्छाई के साथ करना पसंद नहीं करते।

यह बहुदेववादियों के दोग़ले पन पर व्यंग्य है कि वे अपने मन गढ़ंत ख़ुदाओं को इतना प्रिय रखते हैं कि उन के विरूद्ध कोई बात सुनना पसंद नहीं करते चाहे वे कितनी सार्थक एवं वास्तविकता से परिपूर्ण बाते क्यों न हो किन्तु दयावान ख़ुदा (रहमान) से जिस की उन पर अत्यंत कृपा रही है, ऐसे विमुख हैं कि उस के उदार अनुग्रह एवं महानता की चर्चा उन के लिए अप्रिय बन गया है।

49. जल्दबाज़ी मनुष्य की प्रकृति में समाविष्ट कर दी गई है ताकि उस में कुछ करने का जोश उत्पन्न हो और वह भलाई की ओर तेज़ी से बढ़े। परन्तु मनुष्य इस उत्प्रेरक शक्ति (Motive) का ग़लत इस्तेमाल कर के बुराई की ओर दौड़ता है। इन्सान के ग़लत फ़ैसले और उस की अटकल पच्चु बातें उस की जल्दबाज़ी ही का परिणाम होती हैं। जब कि मनुष्य चाहे तो अपनी इस उत्प्रेरक शक्ति को क़ाबू में रख सकता है और उस का सही इस्तेमाल कर सकता है।

50. इस से तात्पर्य अज़ाब की निशानियाँ हैं। क़ुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई अत: काफ़िरों के लिए अज़ाब की निशानियाँ उन जंगों में ज़ाहिर हुई जो उन्हों ने इस्लाम के पैग़म्बर के विरुद्ध लड़ी।

51. अर्थात् अज़ाब की जल्दी न करो ।

मालूम हुआ कि अगर जल्दबाज़ी मनुष्य की प्रकृति में व्याप्त है परन्तु इस के साथ उसे यह सामर्थ्य और क्षमता भी प्रदान की गई है कि वह उस पर नियंत्रण करे और बुराई के लिए जल्दी न मचाए।

52. अभिप्रेत क़ियामत का वादा है।

काफ़िरों का यह प्रश्न कि क़ियामत का वादा कब पूरा होगा उन की जल्दबाज़ी का दूसरा उदाहरण है।

53. अर्थात् इस समय तो ये काफ़िर क़ियामत के लिए जल्दी मचा रहे हैं किन्तु जब वह आयेगी तो इन काफ़िरों को अज़ाब की लपेट में ले लेगी। उस समय उन्हें तौबा (प्रायश्चित) करने और अपना सुधार करने का कोई अवसर न मिल सकेगा।

54. अर्थात् अज़ाब की चेतावनी सुनाने पर वे रसूल का मज़ाक़ उड़ाते थे परन्तु अंतत: उन पर अज़ाब मुसल्लत हो कर रहा ।

55. अर्थात् दिन हो या रात मानव जीवन हर क्षण खतरों एवं आपदाओं से घिरा रहता है। और यह करूणामय ईश्वर ही है जो उन की रक्षा करता है। यदि वह तुम्हारी रक्षा करने के बजाए तुम्हें अपनी पकड़ में लेना चाहे तो कौन है जो तुम पर कृपा दृष्टि डालेगा और उस के मुक़ाबले में तुम्हारी रक्षा करेगा?

56. अर्थात् इन लोगों का हाल यह है कि इन्हें ख़ुदा की मेहरबानियों का कोई एहसास ही नहीं और वे इस बात को पसन्द नहीं करते कि उस के उदार अनुग्रह एवं उस की दया की चर्चा हो।

बहुदेववाद मनुष्य को अपने प्रभु के प्रति कितना भ्रमित कर देता है।

57. अर्थात् यदि ख़ुदा का प्रकोप आ गया तो क्या इन के ये इष्ट पूज्य इन्हें बचा सकेंगे? वे क्या बचा सकेंगे जब कि वे स्वयं अपने को बचाने पर समर्थ नहीं हैं और न ख़ुदा का समर्थन ही उन्हें प्राप्त है। यहाँ संकेत बहुदेववादियों के उन पूज्य देवताओं की ओर है जिन के बारे में उन की धारणा यह थी कि वे आपदाओं से उन्हें बचा सकते हैं।

44. असल बात यह है कि हम ने इन को और इन के बाप दादों को संपन्न किया यहाँ तक कि इन पर एक लंबी अवधि गुज़ार गई [58]। परन्तु क्या ये देखते नहीं हैं कि हम इस धरती की ओर इस की सीमाओं को घटाते, हुए बढ़ रहे हैं [59]। फिर क्या यह ग़ालिब रहेंगे ?

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ
اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ
اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾

45. कहो मैं तुम्हें वह्य (प्रकाशना) के द्वारा ख़बरदार कर रहा हूँ। परन्तु बहरे पुकार को नहीं सुनते जब कि उन्हें सावधान किया जाए [60]।

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْىِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ
اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

46. और यदि तुम्हारे रब के अज़ाब की एक आँच इन्हें लग जाए तो पुकार उठेंगे हाय अफ़सोस ! हम ही दोषी थे [61]।

وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ
اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾

47. और क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ के तराज़ू क़ायम करेंगे [62]।फिर किसी व्यक्ति के साथ तनिक भी अन्याय न होगा। यदि किसी का कोई कर्म राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ला उपस्थित करेंगे और हम हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं [63]।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ
شَيْـًٔا ۗ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا
بِهَا ۗ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾

48. और हम ने [64] मूसा और हारून को फ़ुर्क़ान (कसौटी)[65] और रौशनी [66] और याददेहानी प्रदान की थी, मुत्तक़ियों (डर रखने वालों) के लिए [67]।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً
وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

49. जो बे देखे अपने रब से डरते हैं [68] और क़ियामत की घड़ी से कांपते रहते हैं।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ
مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

50. और यह एक बरकत वाला ज़िक्र [69] है जो हम ने उतारा है। तो क्या तुम इस के इन्कारी बनोगे ?

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۗ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

51. और हम ने इब्राहीम को उस की शान के अनुकूल हिदायत प्रदान की थी और हम उस को ख़ूब जानते थे [70]।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ
وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾

52. जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा था कि ये कैसी मूर्तियाँ हैं जिन की पूजा में तुम लगे हुए हो [71]।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ
الَّتِىْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾

58. क़ुरैश ख़ुशहाल भी थे और उन को सरदारी का प्रभावशाली पद भी प्राप्त था किन्तु चूँकि वे एक मुद्दत से ख़ुशहाल और प्रभावी पद पर बने चले आ रहे थे इस लिए वे ख़ुदा से बेपरवाह हो गए थे। धन और संप्रभुता का नशा मनुष्य को अपने सृष्टा से ग़ाफ़िल कर देता है।

59. अर्थात् मक्का के इर्द गिर्द इस्लाम के प्रभाव बढ़ते चले जा रहे हैं और उस के प्रभावी होने के आसार स्पष्ट हो रहे हैं।

आयत का इशारा विशेष रूप से मदीने की ओर है जहाँ के लोग इस्लाम स्वीकार करते ही जा रहे थे। गोया मक्का के बहुदेववादियों के लिए ज़मीन दिन पर दिन तंग होती जा रही थी। जहाँ तक कि इस सूरह के अवतरण के कुछ ही सालों बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीना में प्रभुत्व प्राप्त हुई और यह प्रभुत्व मक्का विजय की अग्रिम भूमिका सिद्ध हुई। दूसरे शब्दों में मक्का विजय इस आयत की बिलकुल ठीक व्याख्या थी।

60. स्पष्ट हुआ कि पैग़म्बर और वह्य की आवाज़ को वही लोग सुनते हैं जो अपने कान खुले रखते हैं।

61. अर्थात् अब तो अज़ाब की माँग कर रहे हैं किन्तु यदि अज़ाब का एक हिस्सा ही इन्हें छू लेगा तो वे अपने किये पर पछताएंगे और स्वयं दोषी होना स्वीकार करेंगे।

62. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़ारिया नोट ६

63. अर्थात् क़ियामत के दिन सब इन्सानों का विशाल समूह एक ठाठें मारते समुद्र की भाँति होगा तो एक एक कर के प्रत्येक व्यक्ति का हिसाब लेना अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल न होगा। और उस का हिसाब बिलकुल सही (Perfect) होगा।

64. यहाँ से कुछ बड़े नबियों का वर्णन शुरू होता है। क़ुर्आन मजीद में नबियों का बार बार वर्णन हुआ है ताकि उन की शिक्षा और उन के निखरे जीवन के विभिन्न पहलू सामने आऐं। नबियों के इतिहास के सुनहरे पन्ने हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाऐं और पढ़ने वाले इस से नसीहत लें। इन्कार करने वालों की शंकाऐं एवं संदेह दूर हों और वे यह महसूस करें की नबियों का अस्तित्व एक ऐतिहासिक वास्तविकता है और इन को अल्लाह तआला विभिन्न युगों और देशों में लोगों के मार्गदर्शन हेतु भेजता रहा है। और ख़ास बात यह कि ईमान वाले उन का वृत्तांत क़ुर्आन में पढ़ कर उन की संगत का लाभ एवं आनन्द उठाऐं। मतलब यह कि क़ुर्आन जहाँ कहीं किसी नबी का वर्णन करता है पाठक को थोड़ी देर के लिए इन आदर्श एवं अनुकरणीय व्यक्तियों के पास ले जाता है ताकि उन की संगत उन्हें आत्मा विभोर कर दे।

65. ''फ़ुर्क़ान (कसौटी)'' से अभिप्रेत वे निशानियाँ हैं जो सत्य को असत्य से अलग कर के उन का अन्तर स्पष्ट करती थी अतः सूरह मोमिनून में इर्शाद हुआ है:-

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَ اَخَاهُ هٰرُوْنَ

بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ـ (المؤمنين ـ ۴۵)

अर्थः- '' फिर हम ने मूसा और हारून को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा।'' (अलमोमिनून ४५)

66. ''ज़िया'' अर्थात् रोशनी से अभिप्रेत हिदायत की रोशनी है।

67. '' ज़िक्र'' (यादेदेहानी) से अभिप्रेत तौरात है जो हज़रत मूसा पर नाज़िल हुई थी और हज़रत हारून चूँकि हज़रत मूसा के अनुरोध पर नबी और उन के सहायक बनाए गए थे इस लिए इस सौभाग्य के वे भी अधिकारी ठहराए गए।

यह याददेहानी व्यवहारिक रूप से मुत्तक़ियों अर्थात् ख़ुदा का डर रखने वालों ही के लिए लाभदायक सिद्ध हुई। जो लोग ख़ुदा से डरना नहीं चाहते थे वे इस से कोई लाभ न उठा सके।

68. ख़ुदा से बिन देखे डरना यह मुत्तक़ियों और परहेज़गारों का बहुत बड़ा गुण है। जो लोग ख़ुदा को मानने तथा उस का भय रखने के लिए उसे देख लेने की शर्त रखते हैं वे न ख़ुदा की महिमा को समझे हैं और न अपनी इस हैसियत को कि वे परिक्षा स्थल में खड़े कर दिए गए हैं। आज़माइश इस बात की है कि वे बुद्धि एवं विवेक से काम ले कर और वाहय एवं अन्तरिक अर्थात् अपने और कायनात के अन्दर निहित निशानियों की सहायता तथा अल्लाह की प्रकाशना (वह्य) उस के मार्गदर्शन और अपने ज़मीर की आवाज़ पर उठते हुए अपने रब को पहचानते हैं या नहीं?

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि ख़ुदा को कठिन परिश्रमों के द्वारा देखने की चेष्टा बिलकुल व्यर्थ है तथा यह उस सरल विधि से विमुखता है जो इस आज़माइशी जीवन में मनुष्य के लिए निर्धारित कर दिया गया है।

69. अर्थात् क़ुर्आन।

70. मूल शब्द ''रुश्दा '' (अर्थात् उस का रुश्द) प्रयुक्त हुआ है। रुश्द का अर्थ समझ बूझ के भी हैं और दीनी हिदायतों अर्थात् दीनी मार्ग निर्देशों के भी। हज़रत इब्राहीम को एक महान व्यक्तित्व की हैसियत से उठाना था इस लिए अल्लाह तआला ने उन्हें उन के स्थान के लिहाज़ से उच्च कोटि की गंभीरता, विवेक, और सूझ बूझ प्रदान की थी और इन क्षमताओं एवं प्रतिभाओं के आधार पर उन्होंने नबी नियुक्त होने से बहुत पहले तौहीद (एकेश्वरवाद) को पा लिया था और वे एक सत्यमार्गी

व्यक्ति थे। फिर जब उन्हें नबी नियुक्त किया गया तो वे तौहीद के नायक और हिदायत के मीनार बन गए।

अल्लाह तआला का इब्राहीम पर जो उदार अनुग्रह एवं कृपा हुई वह ज्ञान के आधार पर हुई। उस की चुनाव दृष्टि बिलकुल सही थी और इब्राहीम इन अनुकंपाओं के सुयोग्य पात्र ठहराए गए।

71. नबी नियुक्त हो जाने के बाद इब्राहीम अलैहिसस्लाम ने अपने बाप और अपनी क़ौम को बुत परस्ती की गुमराही से निकालना चाहा । इसी लिए उन्होंने बुत परस्ती की खुली निन्दा की ।

आज कल सेकयूलर मानसिकता तो बुत परस्ती के मामले में भी उदारता की क़ायल है और इस पर किसी आलोचना एवं टिप्पणी को पसंद नहीं करती, परन्तु नबियों की नियुक्ति का ख़ास उद्देश्य ही लोगों को आज्ञानता के अंधकार से निकालना और उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचाना होता है इस लिए वे शिर्क (बहुदेववाद) पर जो कि अक्षम्य अपराध है करारी चोट लगाते हैं।

उस ने कहा नहीं बल्कि वास्तव में तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। उसी ने इन को पैदा किया है। और उस पर मैं तुम्हारे सामने गवाह हूँ ।और अल्लाह की क़सम मैं ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर करूँगा जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। *(अल-क़ुर्आन)*

53. उन्होंने उत्तर दिया हम ने अपने बाप दादा को इन की पूजा करते पाया है।

قالوا وجدنا آباءنا لها عابدين ۝٥٣

54. उस ने कहा तुम भी खुली गुमराही में पड़े हो और तुम्हारे बाप दादा भी पड़े थे।[72]

قال لقد كنتم أنتم وآباؤكم في ضلال مبين ۝٥٤

55. उन्हों ने कहा तुम वास्तव में सत्य ले कर आए हो या मज़ाक़ कर रहे हो?

قالوا أجئتنا بالحق أم أنت من اللاعبين ۝٥٥

56. उस ने कहा नहीं बल्कि वास्तव में तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है। उसी ने इन को पैदा किया है ।[73] और उस पर मैं तुम्हारे सामने गवाह हूँ [74]।

قال بل ربكم رب السماوات والأرض الذي
فطرهن وأنا على ذلكم من الشاهدين ۝٥٦

57. और अल्लाह की क़सम मैं ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर करूँगा जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे।[75]

وتالله لأكيدن أصنامكم بعد أن
تولوا مدبرين ۝٥٧

58. अतः उस ने उन को टुकड़े टुकड़े कर डाल सिवाय एक (बुत) के जो उन के नज़दीक बड़ा था ताकि वे उस की तरफ़ रुजूअ करें ।[76]

فجعلهم جذاذا إلا كبيرا لهم لعلهم إليه يرجعون ۝٥٨

59. कहने लगे हमारे माबूदों (उपास्यों) के साथ यह हरकत किस ने की है? (जिस ने भी यह हरकत की है) वह बड़ा ज़ालिम है ![77]

قالوا من فعل هذا بآلهتنا إنه لمن الظالمين ۝٥٩

60. कुछ लोगों ने कहा हम ने एक नवजवान को इन के बारे में कुछ कहते सुना था, जिस को इब्राहीम कहते हैं [78]।

قالوا سمعنا فتى يذكرهم يقال له إبراهيم ۝٦٠

61. उन्हों ने कहा उसे लोगों के सामने ले आओ ताकि वे देख लें [79]।

قالوا فأتوا به على أعين الناس لعلهم يشهدون ۝٦١

62. (जब इब्राहीम आए तो) उन्हों ने पूछा इब्राहीम ! क्या तुम ने हमारे माबूदों के साथ यह हरकत की है ?

قالوا أأنت فعلت هذا بآلهتنا يا إبراهيم ۝٦٢

63. उस ने जवाब दिया बल्कि उन के इस बड़े ने की है। इन ही से पूछ लो अगर ये बोलते हों [80]।

قال بل فعله كبيرهم هذا فاسألوهم
إن كانوا ينطقون ۝٦٣

72. यह भी एक दो टूक बात थी जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सुनाई। मूर्ति पूजा को अगर बाप दादा करते रहे हैं तो यह इस बात की दलील नहीं कि उन का रवैया सही था। अगर बाप दादा ने जिहालत बरती है तो यह कहाँ की बुद्धिमानी है कि संतान भी जिहालत दिखाए।

परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में भी कितनी ही जातियाँ इसी जिहालत और इसी अज्ञानता में लिप्त हैं। वे अपनी बहुदेववादी संस्कृति से इस लिए जुड़े हुए हैं कि यह उन को अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में मिला है।

73. अर्थात् ये बुत ख़ुदा नहीं है बल्कि ख़ुदा वह है जो ब्राह्मण्ड (कायनात) का सृष्टा और स्वामी है। इस में यह तर्क तो निहित है कि ये बुत और ये देवी देवता जब कायनात के न रचयिता हैं न स्वामी हैं तो वे ख़ुदा किस प्रकार हुए?

74. यहाँ गवाही एलान के अर्थ में है। अर्थात् मैं अपने इस एकेश्वरवादी धारणा का तुम्हारे सामने इज़्हार और एलान करता हूँ और मैं अल्लाह की ओर से इस की गवाही देने पर नियुक्त हूँ।

75. इब्राहीम अलैहिस्सलाम बुतों के विरुद्ध जो पहल करना चाहते थे उस की ओर उन्हों ने पूर्व संकेत कर दिया था कि लोग आगाह रहें। और यह उन के अत्याधिक साहस की बात थी।

76. हज़रत इब्राहीम ने एक दिन मौक़ा पा कर जब कि लोग किसी उत्सव आदि में भाग लेने हेतु बाहर गए हुए थे, मन्दिर में जा कर तमाम बुतों को तोड़ दिया। केवल बड़े बुत को (जो कि सरदार था) रहने दिया ताकि लोग इस "लाल बुझक्कड़ से पूछें कि ये कार्रवाई किस ने की है? और जब यह कोई उत्तर न दे सके तो लोगों पर यह बात खुल जाए कि ये बुत बेजान पत्थर हैं जो न लाभ पहुँचा सकते हैं न हानि ।

यह एक महान तत्वपूर्ण नीति थी जिस के लिए उन्हों ने बुत तोड़ने की यह कार्रवाई की थी। और यह कार्रवाई भी उन्हों ने उस समय की जब कि वे तौहीद की दअवत को पूरे तर्क से प्रस्तुत कर चुके थे जिस का विस्तृत ब्यौरा सूरह अन्आम की आयत ७४ से ८१ में गुज़र चुका । यदि उन के समक्ष उद्देश्य मात्र तोड़ फोड़ होता तो वे किसी बुत को न छोड़ते बल्कि बड़े बुत को सब से पहले तोड़ते ।

हो सकता है यहाँ यह प्रश्न उठाया जाए कि दूसरों के बुतों को तोड़ने का उन्हें क्या अधिकार था? तो यह प्रश्न एक नबी की हैसियत को न समझने के फलस्वरूप ही पैदा हो सकता है। नबी अल्लाह का भेजा हुआ होता है और उस को वह्य (प्रकाशना) द्वारा सीधे आदेश मिला करते हैं और उस का प्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन किया जाता है। इस लिए उसे ख़ुदा के आदेश का पालन करना होता है। चाहे वह किसी जाति या समाज के रीति रिवाजों अथवा नियमों के विरुद्ध ही क्यों न हो वह मानवधिकार पर अल्लाह के अधिकार को सर्वोपरि समझता है । और हर एक ग़लत प्रतीकों को मिटाने के लिए यदि प्रचलित रिवाजों एवं नियमों को तोड़ना पड़ता है तो वह इस की परवाह नहीं करता । और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो कुछ किया वह तो शिर्क (बहुदेववाद) जैसी बड़ी बुराई को मिटाने के लिए किया था । इस लिए उन का यह कार्य प्रशंसनीय है न कि आपत्तिजनक । अत: अल्लाह तआला ने उन के इस कार्य को रुश्द और हिदायत अर्थात् सही और सच्चे होने का परिणाम बताया ।

77. जब लोग मेले से लौटे तो मन्दिर में अपने बुतों की दुर्गत देख कर उन को आश्चर्य हुआ और बड़ा क्रोध प्रकट करने लगे ।

78. मालूम हुआ कि यह घटना उस समय की है जब कि हज़रत इब्राहीम जवान थे और जवानी ही में उन को नुबुव्वत प्रदान हुई थी ।

हज़रत इब्राहीम बुत परस्ती के विरुद्ध थे इस लिए बुतों को टूटा हुआ देख कर लोग समझ गए कि हो न हो यह इब्राहीम ही का काम है।

79. इस प्रकार इब्राहीम को आम और ख़ास सभी के सामने आने और अपनी निमंत्रण को रखने का अवसर मिला।

80. अर्थात् इन बुतों में जो सब से बड़ा है उस ने यह हरकत की है। और बुत बोलते हैं तो इन्ही से क्यों नहीं पूछ लेते?

यह बुतों की बेबसी पर भरपूर व्यंग्य था। जब वे स्वयं अपना बचाव नहीं कर सकते तो अपने पुजारियों एवं भक्तों का क्या बचाव कर सकते हैं? यदि इन में बोलने की शक्ति है तो इन से पूछ लो कि यह हरकत किस ने की है और यदि वे बोलने की शक्ति नहीं रखते तो सिद्ध हुआ कि वे बेजान पत्थर हैं। फिर वे इष्ट पूज्य कैसे हुए?

बुतों के निराधार होने का आभास कराने ही के उद्देश्य से इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतों को तोड़ने की कार्रवाई की थी और इसी उद्देश्य के चलते उन्होंने इस कार्रवाई को बड़े बुत का किया धरा बताया। यह शैली अरबी व्याकरण की परिभाषा में "तारीज़" अर्थात व्यंग्य कहलाता है जो किसी गुमराह पर चोट करने और ग़ाफ़िल इन्सान को चौंका देने का अत्यन्त प्रभावपूर्ण माध्यम है। परन्तु जिन लोगों में भाषा बोध नहीं होता वे शब्द को पकड़ लेते हैं और आपत्ति व्यक्त करने लगते हैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम के इस लाजवाब कर देने वाले जवाब को भी झूठ समझा गया। गोया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस बात से

इन्कार किया था कि उन्होंने बुत तोड़ा है। यदि उन का मन्शा इन्कार करना ही होता तो वे साफ़ साफ़ कह देते कि उन्हों ने बुतों को नहीं तोड़ा है और मुझ पर यह आरोप ग़लत है। परन्तु उन्हों ने इस प्रकार की कोई बात नहीं कही और जो कुछ कहा उस को भी विरोधियों ने झूठ नहीं समझा बल्कि वे समझ गए कि हज़रत इब्राहीम बिलकुल तार्किक बात कर रहे हैं। इस लिए उन्हों ने जवाब में इस बात को स्वीकार किया कि बुत बोलते नहीं । और जब उन्हों ने यह स्वीकार किया तो हज़रत इब्राहीम को बुतों की बेबसी स्पष्ट करने और बुत परस्ती (मूर्तिपूजा) के विरुद्ध तर्क सिद्ध करने का अवसर मिल गया।

रही वह हदीस जिस में इब्राहीम से तीन झूठ संबद्ध किये गये हैं जिन में एक झूठ इस बयान को बताया गया है।

بَل فَعَلَهٗ كَبِيۡرُهُمۡ هٰذَا

अर्थ :- "बल्कि इन के इस बड़े बुत ने इन को तोड़ा है।" तो यह हदीस बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी आदि में बयान हुई है और उलमा ने इस की अलग अलग व्याख्या की है। परन्तु इमाम राज़ी ने बड़े पते की बात कही है:-

" रही पहली रिवायत की हुई हदीस तो झूठ को उस के रावियों अर्थात् उल्लेख कर्ताओं की ओर मन्सूब करना बेहतर है बनिस्बत इस के कि उसे नबियों की तरफ़ मंसूब किया जाए।"

और मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने भी बिलकुल सही लिखा है:-

" आम तौर पर क़ुर्आन के टीकाकारों (मुफ़स्सिरों) ने यह बात स्वीकार कर ली है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तीन अवसर पर ऐसी बात कही जिस पर झूठ का संदेह हो सकता है। उस में से एक अवसर यह है, जब उन से पूछा गया

وَ اَنۡتَ فَعَلۡتَ هذا

"वा अन्ता फ़अलता हाज़ा" अर्थ:- क्या तूने बुतों को तोड़ा है? तो उन्हों ने कहा :- بَلۡ فَعَلَهٗ كبيرهم هٰذا

"बल फ़ाअलहु कबीरेहिम हाज़ा" अर्थ:- बल्कि इस बड़े बुत ने ऐसा किया है। हालाँकि काम वास्तव में उन्हीं का था।

इस बारे में सिहाह की एक रिवायत से यह तर्क किया जाता है। किन्तु सब से पहले हमें यहाँ रुक कर विचार करना चाहिए कि क्या वास्तव में यहाँ कोई ऐसी घटना बयान की गई है जिस से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का झूठ बोलना सिद्ध होता है? चाहे वह झूठ किसी श्रेणी और किसी भी तरह का हो, वास्तविकता यह है कि तफ़सीरे-क़ुर्आन की विचित्रताओं में इस से बढ़ कर और कोई औचित्यारहित विचित्रता नहीं। क़ुर्आन में कोई ऐसी बात नहीं जिस से सच्चों के सच्चे का झूठ बोलना निकलता हो। किन्तु पूरी निश्चिन्तिता से एक आयत को तोड़ मरोड़ कर ऐसा बनाया जा रहा है कि किसी न किसी तरह झूठ बोलने की बात बन जाए। और एक झूठ को सिद्ध करने की यह अप्रिय चेष्टा क्यों की जा रही है? केवल इस लिए कि एक अनुमानित हदीस मौजूद है। सो कहीं यह क़ियामत न टूट पड़े कि उस के ग़ैर मासूम रावियों की रिवायत न कमज़ोर मान लेनी पड़े। गोया असल बात ग़ैर मासूम रावियों का बचाव है न कि मासूम रसूलों का । और अगर क़ुर्आन में और किसी रिवायत में मतभेद हो जाए तो क़ुर्आन को रिवायत के अनुकूल बनना पड़ेगा रिवायत करने वाले (उल्लेखकर्ता) की शहादत अपनी जगह से कभी नहीं हिल सकती।" (तर्जुमानुल क़ुर्आन जिल्द २ पृष्ट ४९५)

रिवायतों को ही सब कुछ समझने पर मौलाना अबुलकलाम आज़ाद का यह व्यंग्य बिलकुल उचित है। आगे चल कर लिखते हैं :-

निस्संदेह रिवायत सहीहैन (बुख़ारी और मुस्लिम)की है, किन्तु इस तेरह सौ बरस के अन्दर किसी मुसलमान ने भी हदीस के रावियों के मासूम होने का दावा नहीं किया । न इमाम बुख़ारी और मुस्लिम को मासूम स्वीकार किया है..... अत: नबियों की सच्चाई और इस्मत दीन के मूल विश्वास मौलिक आधार और मान्य वास्तविकताओं में से है।

रिवायतों (उल्लेखों) की क़िस्मों में से कितनी ही बेहतर क़िस्म की कोई रिवायत हो बहर हाल एक ग़ैरमासूम रावी (उल्लेखकर्ता) की शहादत से अधिक नहीं, और ग़ैर मासूम की शहादत एक क्षण के लिए भी दीन की विश्वस्त आधारों के मामले में स्वीकार नहीं की जा सकती। हमें मान लेना पड़ेगा कि यह अल्लाह के रसूल का क़ौल (कथन) नहीं हो सकता। निश्चय ही रावियों ही से ग़लती हुई है।" (तर्जुमानुल क़ुर्आन जिल्द २ पृष्ट ४९९)

वास्तविकता यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का जवाब इल्ज़ामी तर्क का था । इस लिए इसे झूठ किसी भी तरह नहीं कहा जा सकता और जब हदीस चाहे वह बुख़ारी और मुस्लिम ही की क्यों न हो, क़ुर्आन के बयान से टकराती है और उस से एक नबी की इस्मत पर प्रश्नचिन्ह भी लगता है तो वह हदीसे रसूल हो ही नहीं सकती। इस लिए यह रिवायत अपने (Text) की दृष्टि से रद्द करने योग्य है। रह गई बात इस की प्रमाणिकता की तो इस में भी कलाम की गुन्जाइश है। इमाम बुख़ारी ने इस हदीस को मौक़ूफ़न और मरफ़ूअन बयान किया है। मौक़ूफ़न का मतलब यह है कि हज़रत अबू हुरैरह

रजि. ने इस को इर्शादे-रसूल के तौर पर पेश नहीं किया और मरफ़ूअन का मतलब यह है कि उन्हो ने इसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद बतलाया ।

(देखिए बुख़ारी किताब अहादीसुल अम्बिया)

फिर जो रिवायत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इर्शाद के तौर पर बयान हुई है । इस का एक उल्लेखकर्ता (रावि) जरीर बिन हाज़िम है और ज़रीर बिन हाज़िम के सिक: (विश्वासपात्र) होने में मुहद्दिसीन के बीच मतभेद है। अल्लामा इब्ने हजर ने तहज़ीबुत्तहज़ीब में जो अस्माऊर्रिजाल (हदीस के उल्लेख कर्ताओं) की प्रसिद्ध एवं प्रमाणित किताब है दोनों तरह के कथन नक़ल किये हैं। मिसाल के तौर पर इब्ने सअद कहते हैं कि वे सिक: हैं परन्तु अन्तिम दिनों में उन्हें दिमाग़ी बीमारी हो गई थी। नसई कहते हैं, इन से रिवायत करने में कोई हर्ज नहीं। इमाम अहमद कहते हैं जरीर बहुत ग़लतियाँ कर जाते हैं। मिस्र में तो उन की याद्दाश्त ठीक नहीं रही थी और वहम के आधार पर बयान करने लगे थे।

(देखिए तहज़ीबुत्तहज़ीब जिल्द २ पृष्ट ६९ से ७२)

और इमाम ज़हबी ने इमाम बुख़ारी का अपना यह कथन उद्धृत किया है कि जरीर बिन हाज़िम कभी कभी ग़लती कर जाते हैं ।

(देखिए मीज़ानुल एतिदाल जिल्द १ पृष्ट ३९३)

स्पष्ट हुआ कि इस हदीस के प्रमाणों में दोष है और इस की निस्बत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ सही नहीं। परन्तु जिन लोगों को इस के सही होने पर हठ् है वे इस पक्ष में बुख़ारी ही की शिफ़ाअत वाली हदीस प्रस्तुत करते हैं जिन में बयान किया गया है कि क़ियामत के दिन जब लोग परेशान हो कर इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाऐंगे और उन से सिफ़ारिश की विनती करेंगे तो वे अपनी यही बात सामने रखेंगे कि मुझ से तीन झूठ सम्बद्ध हैं। (देखिए बुखारी किताबुत्तौहीद) और झूठ का औचित्य ये लोग इस तरह बताते हैं कि यह तारीज़ (व्यंग्य) थी। परन्तु यह अर्थ अथवा यह औचित्य इस लिए उचित नहीं है कि यदि यह तारीज़ थी तो हज़रत इब्राहीम ने एक ख़ूबी की बात की थी। इस में उन का क्या क़ुसूर था जिस का हवाला दे कर वह क़ियामत के दिन सिफ़ारिश के लिए अपनी विवश्ता प्रकट करेंगे? एक तरफ़ हज़रत इब्राहीम के कथन को व्यंग्य समझना और दूसरी ओर उन को दोषी बताना परस्पर विपरीत बातें हैं। इस लिए इब्राहीम की तरफ़ झूठ की निस्बत किसी भी तरह सही नहीं ।

❖❖❖❖❖❖❖❖

64. यह सुन कर वे आपस में एक दूसरे की ओर आकृष्ट हुए और कहने लगे तुम ही लोग ग़लत हो [81]।

فَرَجَعُوٓا إِلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوٓا إِنَّكُمْ أَنتُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٦٤﴾

65. फिर वे अपने सरों के बल औंधे हो गए [82]। बोले तुम्हें मालूम है कि ये बोलते नहीं हैं।

ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ
مَا هَٰٓؤُلَآءِ يَنطِقُونَ ﴿٦٥﴾

66. उस ने कहा फिर क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो जो न तुम को लाभ पहुँचा सकती हैं न हानि? [83]

قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكُمْ شَيْـًٔا
وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

67. धिक्कार है तुम पर और उन पर जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो [84]।क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते [85]?

أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

68. उन्होंने कहा इस को जला डालो और फिर अपने माबूदों (पूज्यों) की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना है [86]।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَٱنصُرُوٓا ءَالِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ فَٰعِلِينَ ﴿٦٨﴾

69. हमारा आदेश हुआ ऐ आग ठन्डी हो जा और सलामती बन जा इब्राहीम के लिए [87]।

قُلْنَا يَٰنَارُ كُونِى بَرْدًا وَسَلَٰمًا عَلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٦٩﴾

70. उन्होंने चाहा कि इब्राहीम के साथ एक चाल चलें परन्तु हम ने उन्हें असफल कर दिया [88]।

وَأَرَادُوا بِهِۦ كَيْدًا فَجَعَلْنَٰهُمُ ٱلْأَخْسَرِينَ ﴿٧٠﴾

71. और हम उस को और [89] लूत को बचा कर उस सरज़मीन की ओर ले गए जिस में हम ने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं [90]।

وَنَجَّيْنَٰهُ وَلُوطًا إِلَى ٱلْأَرْضِ ٱلَّتِى بَٰرَكْنَا
فِيهَا لِلْعَٰلَمِينَ ﴿٧١﴾

72. और हम ने इस को इस्हाक़ प्रदान किया और याक़ूब भी [91] और प्रत्येक को हम ने स्वालेह (नेक) बनाया [92]।

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً
وَكُلًّا جَعَلْنَا صَٰلِحِينَ ﴿٧٢﴾

73. और हम ने उन को इमाम बनाया [93] जो हमारे आदेश से मार्गदर्शन करते थे। और हम ने उन्हें वह्य (प्रकाशना) के द्वारा भलाई के काम करने, नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने की हिदायत की थी [94] और वे हमारे ही उपासक थे।

وَجَعَلْنَٰهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ
ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ
وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ وَكَانُوا لَنَا عَٰبِدِينَ ﴿٧٣﴾

81. अर्थात् थोड़ी देर के लिए उन में यह एहसास पैदा हुआ कि हम ही ग़लती पर हैं और यह बात वे एक दूसरे से चुपके चुपके कहने लगे।

82. अर्थात् फिर उन में वैमनस्य लौट आया और उन की बुद्धि भ्रष्ट हो गई।

83. यह था बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) के विरुद्ध सब से बड़ा तर्क जिस को सिद्ध करने का अवसर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मिला ।

84. यह खरी बात इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस समय कही जब कि लोगों पर मूर्ति पूजा के विरुद्ध तर्क सिद्ध हो गया था। और यह बात भी उन के देखने में आ गई थी कि बुत न किसी को लाभ पहुँचा सकते हैं और न किसी का कुछ बिगाड़ सकते हैं। क्यों कि यदि उन में हानि पहुँचाने का तनिक भी सामर्थ्य होता तो वे हज़रत इब्राहीम को मूर्ति तोड़ने पर हानि पहुँचाते।

85. स्पष्ट हुआ कि मूर्ति पूजा सरासर मूर्खता है। बुद्धि से काम लेने वाला कभी मूर्तियों का उपासक नहीं हो सकता।

86. कहने वाले धार्मिक लीडर और मन्दिर के परोहित रहे होंगे ।

87. अर्थात् आख़िरकार बुतों के इन उपासकों ने इब्राहीम को आग में डाल दिया। किन्तु अल्लाह तआला ने आग को हुक्म दिया कि वह इब्राहीम के लिए ठंडी हो जा और सलामती का साधन बन जाए। यह एक चमत्कार था जो अल्लाह तआला ने अपने नबी के पक्ष में दिखा दिया। इस में कोई बात ऐसी नहीं जो बुद्धि में समाने वाली न हो। आग में जलाने का गुण उस के पैदा करने वाले ही ने पैदा किया है। यदि वह उस का यह गुण उस से छीन ले और कोई दूसरा गुण उस में पैदा करना चाहे तो क्या ऐसा करने में वह समर्थ्य नहीं? वस्तुओं और पदार्थो के प्राकृतिक गुण उन के अपने गुण नहीं हैं बल्कि ख़ुदा के प्रदान किये हुए हैं। और जब उस के प्रदान किये हुए हैं तो वह जिस चीज़ का गुण जब चाहे परिवर्तित कर सकता है। आश्चर्य उन लोगों को होता है जो या तो ख़ुदा को मानते नहीं हैं या मानते हैं तो उस के एक मात्र सामर्थ्यवान एवं सर्वशक्तिमान होने पर उन को विश्वास नहीं होता।

वैसे आज के आधुनिक युग में आग से सुरक्षित रखने वाली (Fire Proof) वस्तुएं भी बना ली गई हैं अब यदि मनुष्य यह सब कुछ कर सकता है तो इस में आश्चर्य की क्या बात है कि ख़ुदा ने अपने एक ख़ास बन्दे के लिए आग को ज्वलनहीन बना दिया था? यह वास्तव में अल्लाह तआला की सहायता थी जो हज़रत इब्राहीम के पक्ष में सामने आई जब की वे एकेश्वरवाद का प्रतिनिधित्व करते हुए काफ़िरों की दहकाई हुई आग में निर्भय हो कर कूद पड़े।

88. अर्थात् इब्राहीम का कुछ नहीं बिगड़ा। बल्कि उस के विरुद्ध षडयंत्र रचने वाले असफल एवं पराजित हुए।

89. मालूम होता है कि हज़रत इब्राहीम पर उन की क़ौम में से ईमान लाने वाले केवल हज़रत लूत थे। इस लिए उक्त घटना के बाद अल्लाह तआला ने उन को हिजरत का आदेश दिया । अत: वे हिजरत कर के फिलस्तीन पहुँचे।

90. अभिप्रेत फ़िलस्तीन की पावन धर्ती है जो दीनी और दुनियावी दोनों बरकतों से मालामाल है। दीनी बरकतों से इस तरह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक असंख्या नबियों का वास स्थल हुई और दुनियावी बरकतों से इस तरह कि यह भू भाग बड़ा उपजाऊ और हरा भरा है।

अधिक व्यख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १

91. अर्थात् न केवल इस्हाक जैसा बेटा प्रदान किया बल्कि याक़ूब जैसा पोता भी । ये इब्राहीमी परिवार के चश्मो-चराग़ थे ।

92. अर्थात् ये महानुभव लोग अपने आचरण की दृष्टि से अत्यंत पवित्र और नेक थे। इस से बाइबिल की उन बातों का खण्डन होता है जो उन के चरित्र एवं आचरण को दाग़दार बनाती हैं।

93. अर्थात् ये इन्सानों को वास्तव में सही दिशा में सही मार्गदर्शन करने वाले लोग थे दूसरे शब्दों में सच्चे रहनुमा। क्यों कि वे उन को ख़ुदा का मार्ग सुझाते और उस के आदेशनुसार रहनुमाई करते थे। जिन लोगों ने भी इन का अनुसरण किया वे सीधे मार्ग पर लग गए।

उन के नेतृत्व की प्रमुखता यह थी कि वे न स्वयं लीडर बने थे और न उन्हें लीडरी का शौक़ था। बल्कि अल्लाह तआला ने उन को क़ायद और इमाम बनाया था और उन्हीं के नेतृत्व में उम्मतें अस्तित्व में आई।

94. ख़ैर और भलाई का व्यापक आदेश देने के साथ नमाज़ का आयोजन और ज़कात देने का आदेश इस वास्तविकता की ओर इशारा करता है कि ये दोनो इबादतें ख़ैर और भलाई के स्रोत हैं। इन पर कार्यबद्ध रहने से भलाईयाँ पनपती हैं। इस आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि नमाज़ और ज़कात नबियों के संविधान के महत्वपूर्ण स्तंभ रहे हैं।

74. और लूत को हम ने हिकमत और इल्म प्रदान किया [95] और उस बस्ती से उसे मुक्ति दी जो गन्दे काम किया करती थी [96]। वे बहुत ही बुरे और फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग थे।

وَلُوطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ
كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

75. और उस को हम ने अपनी रहमत में दाख़िल किया।[97] निस्संदेह वह स्वालिहीन (नेक लोगों) में से था [98]।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

76. और इस से पहले नूह [99] को भी (हम ने अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा था)। जब उस ने हमें पुकारा तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल की [100] और उस के साथियों को महापीड़ा से मुक्ति दी।[101]

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ
مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

77. और हम ने उस की सहायता की उन लोगों के मुक़ाबले में जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था [102]। वे बहुत बुरे लोग थे अतः हम ने उन सब को डूबो दिया।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾

78. और दाऊद [103] और सुलैमान [104] को भी (हम ने अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा था) जब वह एक खेत के मुक़दमे का फ़ैसला कर रहे थे जिस में एक समूह की बकरीयाँ रात को घुस पड़ी थीं और हम उन के मामले को देख रहे थे।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ
فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾

79. उस समय हम ने सुलेमान को उस (मुक़दमे) की समझ प्रदान की और उन में से प्रत्येक को हम ने हिकमत और ज्ञान प्रदान किया था [105]। और दाऊद की हमनवाई के लिए हम ने पहाड़ो को वशीभूत कर दिया था तथा पक्षियों को भी। वे उस के साथ तस्बीह करते थे।[106] यह कार्य हमारा ही किया हुआ था।[107]

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ؗ وَّسَخَّرْنَا
مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾

80. और हम ने उस को तुम्हारे लिए कवच बनाने की कला सिखा दी कि तुम्हारे लिए युद्ध के अवसर पर रक्षा का सामान हो ।फिर क्या तुम कृतज्ञ हो [108]?

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ
مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

81. और हम ने सुलैमान के लिए तेज़ हवा को (उस के) वशीभूत कर दिया था जो उस की आज्ञा से उस भू-भाग की ओर चलती थी जिस में हम ने बड़ी बरकतें रखी हैं [109]हम हर चीज़ का ज्ञान रखने वाले हैं।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ
اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

95. ''हिकमत'' से अभिप्रेत बुद्धिमता एवं समझदारी है और इल्म से अभिप्रेत वह ज्ञान है जो वह्य (अल्लाह की प्रकाशना) द्वारा प्राप्त होता है।

96. इस से अभिप्रेत समलैंगिकता जैसे घृणित दुष्कर्म हैं। लूत की क़ौम का वृत्तांत सूरह आराफ़ आयत ८० से ८४, सूरह हूद आयत ७७ से ८३ और सूरह हिज्र आयत ६१ से ७७ में गुज़र चुका है।

97. यही बात है जिसे विशेष रूप से स्पष्ट करना अभिप्रेत है। अर्थात् अल्लाह तआला किस प्रकार अपने पैग़म्बरों की सहायता करता रहा है।

98. नबियों का पहला गुण उन का नेक और स्वालेह होना है। परन्तु उपलब्ध तौरात और बाइबिल में ग़लत और अनुचित बातें उन से जोड़ दी गई हैं जिस से उन का चरित्र दाग़दार दिखाई देता है।

क़ुर्आन उन के स्वालेह और नेक होने का एलान करता है जिस से उन आरोपों का आप से आप खण्डन हो जाता है।

हज़रत लूत पर एक अत्यंत घृणित एवं लज्जाजनक आरोप बाइबिल की पुस्तक उत्पत्ति (१९:३२ से ३८) में लगाया गया है। और यह इतना अश्लील है कि इस का उदाहरण करने को मन आमादा नहीं।

99. हज़रत नूह का वृत्तांत सूरह आराफ़ आयत ५९ से ६४, सूरह यूनुस आयत ७१ से ७३ सूरह हूद आयत २५ से ४९ में गुज़र चुकी ।

100. हज़रत नूह की दुआ सूरह क़मर आयत १० और सूरह नूह आयत २६ से २८ में है।

101. महापीड़ा से अभिप्रेत काफ़िराना, और विरोधपूर्ण माहौल की घुटन भी है और वह अज़ाब (प्रकोप) भी जो उस क़ौम पर आया ।

102. और यहाँ यही स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि अल्लाह तआला किस प्रकार अपने नबियों की मदद करता रहा ।

103. हज़रत दाऊद हज़रत याक़ूब के कुल से थे। उन का दौर दसवीं सदी ईसा पूर्व का है। वे नबी भी थे और ख़लीफ़ा भी। उन पर जो किताब अवतरीत हुई उस का नाम ज़बूर था।

104. हज़रत सुलैमान हज़रत दाऊद के सुपुत्र थे। नुबुव्वत के साथ उन्हें अतयन्त भव्य विराट एवं अनुपम सत्ता प्रदान हुई थी। देखिए सूरह बक़र: नोट १२०

105. इस मुक़दमे की कोई तफ़सील क़ुर्आन ने बयान नहीं की है। बल्कि एक घटना की ओर संकेत भर कर दिया है जो अपनी बात कहने के लिए काफ़ी था। आयत से जो बात संक्षिप्त रूप से मालूम पड़ती है वह यह है कि हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान ज्ञान और तत्वदर्शिता के आधार पर निर्णय किया करते थे। एक बार उन की अदालत में जिस में जज की हैसियत से दोनों मौजूद थे एक मुक़दमा आया। रात के समय एक पक्ष की बकरियों ने दूसरे पक्ष के खेत में घुस कर पैदवार को क्षति पहुँचाई थी। इस लिए उस ने प्रथम पक्ष के विरूद्ध हरजाने का दावा किया । अल्लाह तआला ने सुलैमान अलैहिस्सलाम को अत्यधिक सूझ बूझ प्रदान की थी इस लिए उन्हों ने बेहतरीन फैसला सुनाया । इस सम्बन्ध में क़ुर्आन ने न तो यह स्पष्ट किया है कि वह फ़ैसला क्या था और न यह कहा कि दाऊद का फैसला ग़लत था। किसी हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी इस बारे में कुछ उद्धरित नहीं हुआ है। फिर अटकल की बातें इन नबियों से क्यों जोड़ी जाऐं।

क़ुर्आन ने इस मामले का जो हवाला दिया तो इस से अभिप्रेत वास्तव में यह स्पष्ट करना है कि इन नबियों पर अल्लाह की यह अनुकम्पा हुई कि उस ने उन्हें सत्ता प्रदान की, और न्याय करने के पद पर बिठा कर उन के मुक़दमों की कार्रवाई की निगरानी अल्लाह तआला करता रहा। यहाँ तक कि जब एक मुक़दमें में हज़रत दाऊद कुछ दुविधा में पड़े तो सुलैमान को उस की समझ प्रदान की गई। स्पष्ट हुआ कि मामले को समझना फिर उस पर उचित निर्णय देना यह अल्लाह की तौफ़िक़ पर ही निर्भर है।

दाऊद और सुलैमान दोनों बाप बेटे थे। और दोनों को अल्लाह तआला ने ज्ञान एवं तत्वदर्शिता प्रदान की थी। किन्तु बेटा अल्लाह की तौफ़ीक़ से मामले को समझने में एक क़दम आगे ही था, और अपने पिता का सहायक बन गया था।

106. हज़रत दाऊद को अल्लाह तआला ने यह मोज्ज़ा (चमत्कार) प्रदान किया था कि जब वह तस्बीह (अर्थात अल्लाह की पाकी बयान) करते तो पहाड़ और पंक्षी भी उन के हमनवा बन जाते और अजीब समा बंध जाता ।

हज़रत दाऊद को ज़बूर के साथ एक लह्न (विशेष आवाज़) भी प्रदान हुआ था ।

पहाड़ जड़ पदार्थ में से है। और इन का तस्बीह (अर्थात् अल्लाह की पाकी बयान) करना यूँ तो बड़ा अजीब सा मालूम होता है परन्तु जो ख़ुदा विचित्र वस्तुओं का पैदा करने वाला है उस ने यदि पैग़म्बर के हाथों यह चम्तकार प्रकट कर दिया कि उस की पवित्रता का गुणगान पहाड़ भी करने लगें और उस की प्रशंसा के गीत पंक्षी भी गाने लगें तो इस में आश्चर्य की क्या बात है? यह घटना चमत्कार के रूप में हमारी अनुभूति में आया। वरना क़ुर्आन तो बार बार यह वास्तविकता बयान करता है कि ज़मीन और आसमान का कण कण उस की प्रशंसा एवं उस की पाकी का गुणगान कर रहा कर रहा है परन्तु इन्सान इस को समझ नहीं पाता । किसी ने ख़ूब कहा है कि:-

लहू ख़ुर्शीद का टपके अगर ज़र्रे का दिल, चीरें

परन्तु वास्तविकता यह है कि अगर ज़र्रे का दिल चीरें तो उस में से अल्लाह की पाकी की ही ध्वनि निकलेगी। इस वास्तविकता के चलते पहाड़ों और पंक्षियों का ख़ुदा की पवित्रता का गुणगान करने में एक सुर हो जाना ईमान और विश्वास में वृद्धि का कारण है। इस से बचकर कुछ दूसरे अर्थ वही लोग निकालते हैं जो मोज्ज़े (चमत्कार) को मोज्ज़ा के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते।

107. अर्थात् वह चमत्कार तो हज़रत दाऊद के हाथों घटित होता था किन्तु वास्तव में इसे सामने लाने वाला अल्लाह ही था । उसी की आज्ञा से पहाड़ और पंक्षी तस्बीह करने लग जाते थे।

108. लोहे के परिधान अर्थात कवच बनाने की कला अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद को सिखाई, तथा उन को यह मोज्ज़ा भी प्रदान किया कि लोहा उन के हाथ में नरम हो जाता था। (सूरह सबा आयत १०) उस समय कवच का बड़ा महत्व था। और यह चीज़ जिहाद में उन के लिए बड़ी कारामद सिद्ध हुई। गोया यह अल्लाह तआला की तरफ़ से उन के लिए अल्लाह की मदद थी।

बाद में कवच बनाने की कला अन्यत्र फैली और रक्षा के लिए इसे युद्ध में इस्तेमाल किया जाने लगा। मतलब यह कि हज़रत दाऊद के माध्यम से मानवता पर अल्लाह तआला का यह एहसान है। इस लिए यहाँ यह सवाल उठाया गया है कि क्या तुम इस पर अल्लाह के कृतज्ञ हो ?

109. बरकतों वाली सरज़मीन से अभिप्रेत फ़िलस्तीन और सीरिया का क्षेत्र है। हज़रत सुलैमान पर अल्लाह की एक विशेष अनुकम्पा यह हुई कि तेज़ हवा उन की सेवा में लगा दी गई ताकि उन का सफ़र बड़ी तेज़ी से तय हो। ऐसा किस प्रकार होता था हमें नहीं मालूम। हो सकता है वे अपनी कुर्सी के साथ हवा में उड़ते हों जैसा कि मुफ़स्सिरीन (क़ुर्आन के टीकाकारों) का ख़याल है। पर कुछ भी हो यह एक असाधारण बात थी और अल्लाह की तरफ़ से मोज्ज़ा था जो उस ने अपने नबी के लिए ज़ाहिर किया इस में बुद्धि से परे कोई बात नहीं। यदि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रातों रात मक्का से बैतुल्लमुक़द्दस का सफ़र कराया गया तो हज़रत सुलैमान का हवा पर सवार हो कर उड़ना क्यों बुद्धि से परे समझे? और आज का इन्सान विज्ञान और तकनीक की सहायता से हवाई जहाज़ में बैठ कर हज़ारों मील का सफ़र कुछ ही घन्टों में तय कर सकता है तो अल्लाह का एक नबी उस की कुदरत के करिश्में द्वारा हवाई सफ़र क्यों नहीं कर सकता?

और अय्यूब को (भी हम ने अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा था) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं रोग ग्रस्त हो गया हूँ और तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है। तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल की और उस के कष्ट को दूर कर दिया और उस को उस के बीवी बच्चे भी दिये तथा उन के साथ उन जैसे और भी दिये। अपनी ओर से रहमत के तौर पर और ताकि याददेहानी हो इबादत गुज़ारों (उपासकों) के लिए। *(अल-क़ुर्आन)*

82. और शैतानों में से ऐसे जो उस के लिए ग़ोते लगाते और इस के अलावा दूसरे काम भी करते [110]। उन की निगरानी करने वाले हम ही थे।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾

83. और अय्यूब को [111] (भी हम ने अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा था) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं रोग ग्रस्त हो गया हूँ और तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है [112]।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۸۳﴾

84. तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल की और उस के कष्ट को दूर कर दिया और उस को उस के बीवी बच्चे भी दिये तथा उन के साथ उन जैसे और भी दिये [113]। अपनी ओर से रहमत के तौर पर, और ताकि याददेहानी हो इबादत गुज़ारों (उपासकों) के लिए [114]।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾

85. और इस्माईल और इदरीस को [115]और ज़ुलकिफ़्ल [116] को भी (अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा) ये सब सब्र करने वाले थे।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

86. इन को हम ने अपनी रहमत (दयालुता) में दाख़िल किया। निस्संदेह वे नेक लोगों में से थे।

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۶﴾

87. और ज़ून्-नून [117] (मछली वाले) को भी (हम ने अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा था) जब वह बिफर कर चला गया था और समझा था कि हम इस पर पकड़ न करेंगे [118]। फिर अंधकार में से उस ने पुकारा [119] कि तेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं। तू पाक है बेशक मैं ही दोषी हूँ [120]।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۤ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۷﴾

88. उस समय हम ने उस की दुआ कुबूल की [121]। और घुटन से उस को मुक्ति दी [122]। इस प्रकार ईमान वालों को हम मुक्ति देते हैं ।[123]

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾

89. और ज़करिया (को भी हम ने अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि ऐ रब ! मुझे अकेला न छोड़ [124] और तू ही बेहतरीन वारिस है [125]।

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿۸۹﴾

110. शैतानों से अभिप्रेत उद्दंड जिन्न हैं। अल्लाह तआला ने कितने ही उद्दंड जिन्नों को हज़रत सुलैमान के अधीनस्थ कर दिया था ताकि वे उन से अपने काम लें जो कड़ी मेहनत के बग़ैर अन्जाम नहीं दिये जा सकते थे। जैसे समुद्रों से जवाहरात निकालना, क्रेन के बग़ैर बड़े बड़े पत्थर इधर से उधर करना और शानदार भवनों का निर्माण करना आदि।

ध्यान रहे कि इन असाधारण संसाधनों को हज़रत सुलैमान ने बैतुलमुक़द्दस का निर्माण,युद्ध की ज़रूरतों की पूर्ति और इस्लामी राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए इस्तेमाल किया था।

यह भी ध्यान रहे कि हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का ज़माना बनी इस्राईल के उत्थान का ज़माना था। हज़रत दाऊद के ज़माने में ख़ूब सफ़लताऐं एवं विजय हाथ आई और हज़रत सुलैमान के ज़माने में एक विशाल और शानदार इस्लामी राज्य की स्थापना हुई जो अपनी कुछ प्रमुख विशेषताओं की दृष्टि से बिलकुल अद्वितीय थी। इस प्रकार यह उस श्रेष्ठता की पूर्ति थी जो अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को विश्व की अन्य जातियों की तुलना में प्रदान की थी। और दूसरी ओर अल्लाह तआला ने मानवता को यह सम्मान भी प्रदान किया कि उस के एक व्यक्ति का शासन जिन्नों पर भी स्थापित हुआ । और अल्लाह की हिकमतों और मसलहतों को वही बेहतर जानता है।

111.अय्यूब अलैहिसस्सलाम नबी थे और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वंशज थे। उन से सम्बद्ध एक सहिफ़ा (अर्थात् एक पुस्तक) बाइबिल में है परन्तु उस में मूल घटना को कहानी के रंग में प्रस्तुत किया गया है और ऐसी बातें हज़रत अय्यूब से सम्बद्ध बताई हुई हैं जो नुबुव्वत की प्रतिष्ठा के अनुकूल न होने के कारण विश्वसनीय नहीं तथा उस की बातों में परस्पर विरोधाभास पाया जाता है। अलबत्ता उस के अध्ययन से प्रतीत होता है कि हज़रत अय्यूब का ज़माना हज़रत मूसा से पहले रहा होगा । ये ऊज़ के रहने वाले थे। जो फ़िलस्तीन के पूर्व की ओर एदोम के उत्तर पूर्व में स्थित था। (देखिए अय्यूब १:१ और विलाप गीत ४:२१)

112. हज़रत अय्यूब सख़्त बीमारी में पड़ गए थे। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से बहुत बड़ी परीक्षा थी। उन्हों ने अतयंत पीड़ा के बावजूद शिकायत का एक शब्द भी ज़बान से नहीं निकाला बल्कि धैर्य की प्रतिमा बन गए और अल्लाह से दया का अनुरोध किया तो वह इस अच्छे अन्दाज़ में कि तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है जो सरासर उस की हम्द एवं प्रशंसा थी।

अल्लाह तआला ने नबियों को विभिन्न आज़माइशों से ग़ुजारा है। किसी को विशाल सत्ता प्रदान कर के जैसा कि हज़रत सुलैमान के साथ मामला हुआ और किसी से सारे संसाधन छीन कर और उसे रोगग्रस्त कर के, जैसा कि हज़रत अय्यूब के साथ हुआ। ताकि नबियों के आदर्श एवं अनुकरणीय जीवन के विभिन्न उदाहरण लोगों के सामने रहें और वे नर्म और गर्म हर तरह के हालात में उन के पद्चिन्हों का अनुसरण करे। इस से यह भी स्पष्ट हुआ कि नबी हज़रात यद्यपि अल्लाह के प्रिय बन्दे होते हैं किन्तु वे अपने कष्ट दूर करने का सामर्थ्य नहीं रखते बल्कि अल्लाह ही से उस के लिए दुआ करते हैं और वही उन के कष्ट को दूर करता है और जब कोई नबी अपने कष्ट को दूर नहीं कर सकता तो वह दूसरों के कष्ट को क्या दूर कर सकता है। फिर ख़ुदा को छोड़ कर किसी नबी को फ़रियाद के लिए पुकारने का क्या औचित्य है?

113. मालूम होता है कि कोई ऐसी सूरत पेश आई थी कि हज़रत अय्यूब की बीवी बच्चे बिछड़ गए थे। अल्लाह तआला ने जब उन की दुआ क़ुबूल की और उन्हें स्वस्थ किया तो ऐसे साधन जुटा दिये कि उन के बीवी बच्चे भी उन के पास पहुँच गए। और अल्लाह तआला की अतिरिक्त अनुकम्पा यह हुई कि उन के बीवी बच्चों में उतनी ही कि वृद्धि हो गई। अर्थात् और बीवी बच्चे मिले।

114. अर्थात् जो लोग अल्लाह की इबादत करते और उस के बन्दे बनकर रहते हैं वे हज़रत अय्यूब के इस वृत्तांत से यह सीख लें कि नेक लोग कभी कभी ऐसी परीक्षा में डाले जाते हैं कि उन्हें अपने स्वास्थ से हाथ धोना पड़ता है और उन के बाल बच्चे भी बिछड़ जाते हैं ऐसे हालात में अय्यूब की धैर्य गाथा आशा की किरन बन सकता है।

115. देखिए सूरह मरयम नोट ७७।

116. ज़ुलकिफ़्ल का वर्णन क़ुर्आन ने सब्र करने वाले नबियों में किया है जिस से अन्दाज़ा होता है कि उन्हें कड़ी परीक्षा से गुज़रना पड़ा था। उन के बारे में कोई तफ़्सील न क़ुर्आन में बयान हुई है और न हदीस में। रही बात बाइबिल की तो उस में इस नाम से किसी नबी का उल्लेख नहीं मिलता अलबत्ता यहेज़केल नबी के नाम से एक सहीफ़ा (अर्थात् एक पुस्तक) मौजूद है जिन्हें बख़्त नसर के ज़माने में कड़ी परिक्षा से गुज़रना पड़ा था इस लिए कुछ मुफ़स्सिरीन (क़ुर्आन के टीकाकारों) का ख़्याल है कि ज़ुलकिफ़्ल यहेज़केल ही का उपनाम रहा होगा। इराक़ में अलहुलिया से निकट अल किफ़्ल के नाम से एक जगह है जहाँ हज़रत यहेज़कहल की क़ब्र बताई जाती है। परन्तु इस सम्बन्ध में हमें कोई उचित एवं ज्ञान पर आधारित सबूत नहीं मिले इस लिए ख़ामोशी ही बेहतर है।

117. जुन-नून का अर्थ है मछली वाले। यह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का उपनाम है और इस ख़ास लक़ब से वे

इस लिए अलंकृत किये गए हैं कि उन्हें मछली ने निगल लिया था और बाद में उन्हें ज़िन्दा उगल दिया । (अधिक विस्तार के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट १४७)

118. हज़रत यूनुस को नैनवा की जाति की ओर भेजा गया था वहाँ वे एक लम्बे समय तक अल्लाह की ओर लोगों को बुलाते रहे किन्तु जब लोग ईमान लाने के लिए आमादा नहीं हुए तो वे बिगड़ कर वहाँ से चल दिए कि ऐसी जाहिल क़ौम को कब तक समझाते रहेंगे। उन्हों ने समझा कि जो क़दम उन्हों ने उठाया है उस पर अल्लाह तआला की तरफ़ से पकड़ नहीं होगी । किन्तु अल्लाह तआला ने इस पर पकड़ की क्यों कि एक नबी के लिए यह उचित न था कि वह अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर उस क़ौम को छोड़ कर चला जाए जिस को निमंत्रण पहुँचाने पर उसे नियुक्त किया गया है। हज़रत यूनुस की दृष्टि से यह पहलू ओझल रह गया और उन से चुक हो गई । परन्तु चूँकि वह चूक एक नबी से उस की ज़िम्मेदारियों की अदायगी के मामले में हुई थी इस लिए अल्लाह तआला ने उन को कड़ी परीक्षा में डाल दिया और इस में हुआ यह कि जब नैनवा से समुद्र तट पर पहुँचे और याफ़ा जाने के लिए नाव में सवार हो गए ------------- उस ज़माने में यरूशलेम जाने के लिए निकटस्थ बन्दरगाह याफ़ा थी जो रोम सागर के तट पर थी----------------- तो नाव तूफ़ान की ज़द में आ गई और हज़रत यूनुस को एक बड़ी मछली ने अल्लाह के हुक्म से निगल लिया। (विस्तृत वर्णन सूरह साफ़्फ़ात में हुआ है)

119. अर्थात् मछली के पेट में से पुकारा जहाँ अंधेरा ही अंधेरा था। एक तो मछली के पेट का अंधेरा दूसरे समुद्र की तहों का अंधकार।

120. मछली के पेट में हज़रत यूनुस पर जो कुछ बीती होगी उस की कल्पना भी दुष्कर है। इस के बावजूद शिकायत का एक शब्द भी उन की ज़बान पर नहीं आया। इस अवसर पर उन्होंने अल्लाह से जो फ़रियाद की वह सरासर अल्लाह की प्रशंसा एवं गुणगान तथा अपने दोष को मान लेने पर आधारित है। मछली के पेट में भी उन्हों ने तौहीद ही की सदा बुलन्द की और उस की पाकी बयान करते हुए अपनी ग़लती को कड़े शब्दों में स्वीकार किया। उन की यह शुद्ध हृदयता और उन का विनीतभाव उन की महानता को दर्शाता है।

121. यह दुआ दिल से निकली थी और विनीतभाव से परिपूर्ण थी इस लिए अंधकार को चीरती हुई अल्लाह के सिंहासन तक पहुँच गई और उस के दरबार में स्वकृत ठहरी।

122. अतः मछली ने उन्हें तट पर ज़िन्दा उगल दिया।

123. अर्थात् यह उदाहरण है इस बात का कि अल्लाह तआला यद्यपि ईमान वालों को तरह तरह की परीक्षा में डालता है क्यों कि यह संसार का जीवन परीक्षा ही का जीवन है। किन्तु जब ईमान वाले इन परिक्षाओं में खरे उतरते हैं तो वह उन की मुक्ति का सामान कर देता है।

124. हज़रत ज़करिया की दुआ संतान के लिए थी। ऐसी संतान जो नुबुव्वत के ज्ञान एवं उस की प्रतिष्ठा की वारिस हो (व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट ८)

125. अर्थात् अन्ततः हर चीज़ का मालिक तू ही है और तू बेहतरीन मालिक है।

तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल की और उसे यह्या प्रदान किया और उस की पत्नी को उस के लिए अनुकूल बना दिया ।ये लोग नेकी के कामों में सक्रिय रहते और हमें लगाव और भय के साथ पुकारते थे। और हमारे सामने विनम्र रहने वाले थे। और वह जिस ने अपने सतीत्व की रक्षा की थी । हम ने उस के अन्दर अपनी रुह फूँक दी और उस को और उस के बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं ही तुम्हारा रब हूँ अतः मेरी इबादत करो । *(अल-क़ुर्आन)*

90. तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल की और उसे यह्या प्रदान किया, और उस की पत्नी को उस के लिए अनुकूल बना दिया।[126] ये लोग नेकी के कामों में सक्रिय रहते [127] और हमें लगाव और भय के साथ पुकारते थे [128]। और हमारे सामने विनम्र रहने वाले थे [129]।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡوَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا
رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿۹۰﴾

91. और वह जिस ने अपने सतीत्व की रक्षा की थी [130]। हम ने उस के अन्दर अपनी रुह फूँक दी [131] और उस को और उस के बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया [132]।

وَالَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا
وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۱﴾

92. यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है [133] और मैं ही तुम्हारा रब हूँ अत: मेरी इबादत करो [134]।

اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ
وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿۹۲﴾

93. परन्तु लोगों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर डाला [135]। सब को आख़िरकार हमारी ही तरफ़ पलटना है [136]।

وَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿۹۳﴾

94. तो जो नेक अमल करेगा और वह मोमिन भी होगा तो उस के प्रयासों की नाक़दरी न होगी [137] और इसे हम लिख रहे हैं [138]।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ
لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿۹۴﴾

95. और जिस बस्ती को हम ने विनष्ट कर दिया उस के लिए हराम है कि उस के रहने वाले पलट आऐं [139]।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۹۵﴾

96. यहाँ तक कि जब याजूज माजूज खोल दिए जाऐंगे और वे हर बुलन्दी से उमड़ पड़ेंगे [140]।

حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ
حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿۹۶﴾

97. और सच्चा वादा क़रीब आ लगेगा [141]तो अचानक उन लोगों की आँखे फटी की फटी रह जाएंगी जिन्हों ने कुफ्र (इन्कार) किया था [142]। वे पुकार उठेंगे अफ़सोस हम पर ! हम इस से ग़फ़लत में रहे, बल्कि हम ख़ताकार (दोषी) थे [143]।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِىَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ
كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۹۷﴾

98. तुम और वे चीज़े जिन की तुम अल्लाह को छोड़कर पूजा करते हो,जहन्नम का ईंधन हैं [144]। निश्चय ही तुम्हें वहाँ पहुँचना है ।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿۹۸﴾

126. हज़रत ज़करिया की पत्नी बाँझ थी किन्तु अल्लाह ने उस के बाँझपन को दूर कर के यह्या जैसा सुपुत्र प्रदान किया। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट ११ से १४)

127. अर्थात् जिन नबियों का वृत्तांत ऊपर बयान हुआ है वे सब नेकी के मामले में आगे निकल जाने वाले और पूरे लगन के साथ इस राह में आगे बढ़ने वाले थे। मालूम हुआ कि नेकी के कामों में सक्रियता दिखाना नबियों के गुणों में से है।

128. यह है बन्दे का अपने रब से सम्बन्ध के मामले में अभीष्ट मेयार, कि यह सम्बन्ध मात्र भय के आधार पर न हो बल्कि पूरे मन के लगाव और चाहत के साथ हो । वह अपने रब को पुकारे और उस की इबादत करे तो लगाव और भय के संयुक्त भाव के साथ ।

129. अर्थात् ये हस्तियाँ जिन का वर्णन ऊपर हुआ अत्यधिक ऊँची हस्तियाँ थी किन्तु उन में अहं एवं घमण्ड की तनिक झलक भी न थी। वे अल्लाह के समक्ष पूरे विनम्र भाव में लीन रहते हैं और इसी प्रकार अपना जीवन बसर करते।

130. मुराद हज़रत मरयम हैं जो एक पाकदामन महिला थीं।

131. रूह की निस्बत अल्लाह की ओर ऐसी ही है जैसे खान-ए-काबा की निस्बत अल्लाह की तरफ़। अर्थात् यह सम्बन्ध रूह के सम्मान एवं उस की प्रतिष्ठा को स्पष्ट करता है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट २७९)

132. निशानी अल्लाह तआला की क़ुदरत के करिश्मे की । असल चीज़ उस का आदेश है उस का आदेश हुआ इस लिए एक बाँझ ने बच्चे को जन्म दिया और उस का आदेश हुआ इस लिए बग़ैर बाप के एक बच्चा पैदा हुआ।

133. यह संबोधन समस्त नबियों से है। और समुदाय से तात्पर्य वे लोग हैं जिन्हों ने उन के अनुकरण का मार्ग अपनाया। मतलब यह है कि समस्त नबियों के अनुयायी चाहें वे भिन्न भिन्न समूहों एवं वर्गों के रूप में से हों, वास्तव में एक ही उम्मत है क्यों कि सब का दीन (जीवन प्रणाली) एक ही दीन (इस्लाम) रहा है।

134. अर्थात् तमाम नबियों को और उन के माध्यम से उन के अनुयायियों को तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद ही की शिक्षा दी गई थी ।

135. अर्थात् लोगों को जो दीन नबियों के माध्यम से मिला था वह एक मात्र दीन अर्थात् इस्लाम ही था । किन्तु लोगों ने उस दीन में अपनी ओर से घटाने बढ़ाने की कुप्रथा (बिदअत) निकाली । मनमानी व्याख्या की, हलाल को हराम और हराम को हलाल से बदल दिया । इस प्रकार धार्मिक रीतियों के जब अलग अलग संग्रह तैयार हो गए तो उन के नाम भी अलग अलग रखे और इसी के आधार पर भिन्न भिन्न गिरोह बन गए।

इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए भाँत भाँत के कई धर्मों को देख कर यह धोखा नहीं खाना चाहिए कि प्रत्येक धर्म ख़ुदा का भेजा हुआ धर्म है बल्कि ये लोगों के मनगढ़ंत धर्म हैं।

136. अर्थात् धर्मों के इन ढेरों मतभेदों के साथ इन सब को एक दिन ख़ुदा के समक्ष उपस्थित होना है। उस दिन पता चलेगा कि वास्तव में अल्लाह का दीन क्या था और लोग किस तरह लीपा पोती करते रहे।

137. अर्थात् धर्मों की इस कशमकश में अल्लाह के यहाँ जो चीज़ मनुष्य के कर्मों को स्वीकृत ठहराएगी वे अच्छे कर्म होंगे, जो उस ने ईमान रखते हुए अन्जाम दिये होंगे न कि किसी धर्म की छाप ।

ध्यान रहे कि नेक अमल (अच्छे कर्म) अल्लाह की शरीअत अर्थात् उस के दिये हुए संविधान से मुक्त हो कर नहीं किये जा सकते । मिसाल के तौर पर नमाज़ वही स्वीकार्य ठहरेगी जो शरीअत के मुताबिक अदा की गई होगी। इस के अलावा नमाज़ जिस तरह से भी पढ़ी जाएगी वास्तव में नमाज़ न होगी। और न उस की गिनती उच्छे कर्मों में होगी। बल्कि शरीअत के विरुद्ध तरीक़ा अपनाने पर ऐसा व्यक्ति गुनहगार होगा। फिर कर्मों के स्वीकार्य होने के लिए यह शर्त भी है कि वह व्यक्ति ईमान वाला हो और ईमान वाला होने का अर्थ यह है कि वह उन तमाम बातों को दिल से मानता हो और उन का इक़रार करता हो जिन पर ईमान लाने का निमंत्रण क़ुर्आन दे रहा है।

138. अर्थात् उस के कर्मों का रिकार्ड तैयार कर रहे हैं।

139. अर्थात् किसी विनष्ट की गई बस्ती के लोग दोबारा दुनिया में नहीं आ सकते कि फिर उन्हें अपना सुधार कर लेने का अवसर मिले । उन का लौटना क़ियामत तक संभव नहीं। और जब यथार्थ यह है तो लोगों को सचेत होना चाहिए और इस मौक़े को ग़नीमत जानना चाहिए जो उन्हें अपना सुधार कर लेने के लिए मिल रहा है।

140. याजूज और माजूज की व्याख्या सूरह कहफ़ नोट ११८ में गुज़र चुकी । वहाँ हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि यह क़ौक़ाज़ (काफ़ पर्वत या Caucasus) के उत्तर की ओर वहशी क़बीले थे जो दरयाल के दर्रे को पार कर के आते और लूट मार एवं तोड़ फोड़ करते थे। उन के हमलों को रोकने के लिए निकट ही बसने वाली एक जाति के अनुरोध पर ज़ुलक़रनैन ने फ़ौलादी दीवार का निर्माण किया था जिस से याजूज माजूज की राह बन्द हो गई थी।

ज़माने के बदलाव के फलस्वरूप यह दीवार रुकावट नहीं रही। क्यों कि दूसरी राहें खुल चुकी हैं और न ही याजूज माजूज

के नाम से कोई जाति पहचानी जाती है। इस लिए क़ुर्आन की भविष्यवाणी कि याजूज माजूज खोल दिए जाएंगे, यह जब सामने आएगी तो इस की असल वास्तविकता सब पर खुल जाएगी मात्र अनुमान एवं अटकल के आधार पर कुछ कहना सही नहीं होगा । और न उन उल्लेखों (रिवायतों) पर विश्वास करना सही होगा जो न प्रमाण की दृष्टि से कसौटी पर पूरी उतरती हैं और न उन का असल मज़मून अन्य दोषों से पाक है। मिसाल के तौर पर तिर्मिज़ी की यह हदीस कि याजूज माजूज रोज़ाना दीवार को खोदते रहते हैं। और जब उस में छेद कर देने के करीब होते हैं तो उन का सरदार कहता है कि वापस चलो कल इस में छेद कर देंगे। मगर अल्लाह तआला उस को सही कर देता है। इस प्रकार वे रोज़ाना खोदते रहते हैं यहाँ तक कि जब निर्धारित समय आ जाएगा तो उन का सरदार कहेगा वापस चलो इन्शाअल्लाह कल इस में छेद कर देंगे। दूसरे रोज़ वे दीवार को उस हालत में पायेंगे जिस हाल में फिर छोड़ कर गये होंगे। अत: वे उस में सूराख़ कर निकल आऐंगे।

इमाम तिर्मिज़ी ने इस रिवायत को अबवाबुत्तफ़्सीर में सूरह कहफ़ के अन्तर्गत नक़ल किया है और लिखा है कि यह हदीस हसन ग़रीब है। और हम इसी प्रमाण विधि से ऐसी बातें जाना करते हैं ! हालांकि यह हदीस न प्रमाण की दृष्टि से सही है और न अपने मतन (Text) की दृष्टि से। अत: मशहूर मुफ़स्सिर अल्लामा इब्ने कसीर अपनी तफ़सीर में लिखते हैं :-

इस हदीस के शब्दों को आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कथन बताने में नकारत हैं। क्यों कि आयत का ऊपरी भावार्थ इस बात पर तर्क करता है कि वह न तो उस दीवार पर उस के सुदृढ़ होने के कारण चढ़ सकते हैं और न उस में सेंध (नक़ब) लगा सकते हैं। किन्तु कअब इहबार से इसी प्रकार का उल्लेख उद्धृत है और मालूम होता है अबू हुरैरा ने उन से यह (इस्राईली) रिवायत ले ली क्यों कि वे उन के साथ अधिक बैठा करते थे। तो अबू हुरैरा ने यह क़िस्सा बयान किया होगा और कुछ रावियों (उल्लेख कर्ताओं को यह भ्रम हुआ होगा कि यह रिवायत मरफ़ूअ् है अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है। ''वल्लाहु अअलम'' (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ट १०५)

तिर्मिज़ी की इस हदीस के उल्लेखकर्ता अबू अवाना हैं जिन के बारे में मुहद्दिसीन ने पुष्टि की है कि जब वे अपनी याद्दाश्त से कोई चीज़ बयान करते हैं तो अधिकतर ग़लती कर जाते हैं। (तहजीबुत्तहज़ीब जिल्द ११ पृष्ट ११६ से १२०)

आश्चर्य है कि एक ऐसी रिवायत को जो क़ुर्आन के स्पष्ट भावार्थ के विरुद्ध है और जिस की नकारत (अर्थात् अबौद्धिक होना) बिलकुल स्पष्ट है, तिर्मिज़ी में जगह मिल गई। काश कि हदीस के ये प्रमाणित ग्रंथ इस प्रकार के बे सिर पैर के उल्लेखों से पाक होते।

क़ुर्आन की इस आयत पर इस के प्रसंग एवं संदर्भ पर तथा सूरह कहफ़ की उन आयतों पर जिन में याजूज माजूज का वर्णन हुआ है, चिन्तन करने से जो बात समझ में आती है वह यह है कि क़ौमों और जातियों के विनाश का क्रम उन के कुफ्र और अत्याचार के आधार पर दुनिया में जारी रहेगा। यहाँ तक कि दुनिया अपने विनाश के अन्तिम चरणों में पहुँच जाऐगी। उस वक्त दुनिया में दो बिगाड़ पैदा करने वाली महाशक्तियाँ उभरेंगी जो अपनी मूल वास्तविकता की दृष्टि से याजूज माजूज होगी। (चाहे वे दुनिया में किसी नाम से पुकारी जाती हों) ये धरती के ऊँचे भागों (उत्तर) की ओर से निकल पड़ेगी और पूरे विश्व में न कि ख़ास मुसलमानों में) फ़साद और बिगाड़ पैदा करेंगी । मालूम होता है उन की यह यलग़ार विश्व युद्ध के रुप में प्रकट होगी और उन के पास विश्व को विनष्ट कर देने की प्रयाप्त सामग्री होगी (हो सकता है आधुनिक न्यूक़्लियर मीज़ाइल हो क्यों कि कुछ हदीसों में उन के आसमानों पर तीर चलाने का वर्णन मिलता है) इस लिए वे बहुत बड़े पैमाने पर इन्सानी आबादियों को बरबाद करते हुए आगे पढ़ेंगी। इस प्रकार उन के हाथों दुनिया की काफ़िर क़ौमों का विनाश होगा और इस के बाद बस क़ियामत (महाप्रलय) ही होगी।

141. अभिप्रेत क़ियामत का वादा है अर्थात् याजूज माजूज के उमड पड़ने के बाद क़ियामत अतिशीघ्र बरपा हो जाएगी। मतलब यह कि उस समय मानवता मौत के कगार पर होगी।

142. अर्थात् फिर जब क़ियामत क़ायम होगी और सब को ज़िन्दा कर के उठाया जाएगा तो काफ़िरों के लिए यह घटना असंभावित होगी। इस लिए उन की आँखें दहशत और आश्चर्य से फटी की फटी रह जाऐंगी।

143. अर्थात् क़ियामत के दिन काफ़िर न केवल अपने ग़फ़लत में पड़े रहने को स्वीकार करेंगे बल्कि अपने दोषी होने का भी ।

मालूम हुआ कि आख़िरत पर ईमान लाने में सब से बड़ी रुकावट इन्सान की ग़फ़लत है और गफ़लत भी ऐसी जो अपराधिक प्रवृत्ति की है। अर्थात् आख़िरत के तर्क स्पष्ट हो जाने के बावजूद मनुष्य उस को स्वीकार करने से इस लिए दामन बचाता है कि उस को मानने की सूरत में वह अपने मन माने ढंग से जीवन नहीं बिता सकता। इस प्रकार उस की इच्छाऐं,उस का ध्यान आख़िरत की ओर से हटा कर उस को सांसारिक मोह माया में उलझाए रखती हैं।

144. संबोधन बहुदेववादियों से है कि तुम और तुम्हारे ये

बुत जिन की तुम पूजा करते हो जहन्नम का ईंधन बनने वाले हैं। बुत जहन्नम में इस लिए पहुँचा दिये जाएंगे ताकि उन के भक्तों को पता चले कि जिन्हें वे इष्ट पूज्य समझकर पूजते रहे हैं वे उन के कुछ काम आने से रहे बल्कि उन की यातना में वृद्धि का कारण बने हैं। कितना दुखदायी होगा वह दृश्य जहाँ झूठे इष्ट पूज्यों के भक्त अपने पूज्यों के साथ आग में जल रहे होंगे।

हम तो डूबे हैं सनम तुझ को भी ले डूबेंगे

बहुदेववादी लोग यदि जहन्नम की यह कल्पना ही कर लें तो बहुदेववाद से तौबा कर लें।

यहाँ यह प्रश्न व्यर्थ है कि यदि पूज्य भी जहन्नम का ईंधन बनने वालें हैं तो नबियों को भी लोगों ने इष्ट पूज्य बना लिया था। फिर उन का क्या होगा? क्यों कि पहली बात तो क़ुर्आन ने ''वमा ताबुदूना'' (और जिन चीज़ों की तुम पूजा करते हो) के शब्द इस्तेमाल किये हैं जिन में ''मा'' साधारणतया निष्प्राण चीज़ों के लिए बोला जाता है और यहाँ मूर्ति एवं जड़ पदार्थ वस्तुएं ही अभिप्रेत हैं जिन की बहुदेववादी पूजा करते रहे। दूसरे क़ुर्आन ने आगे आयत १०१ में यह पुष्टि कर दी है कि:-

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ

अर्थ :- ''जिन लोगों के लिए हमारी ओर से अच्छे अन्जाम का वादा पहले ही हो चुका वे उस से दूर रखे जाएंगे''।

और क़ुर्आन में दूसरी जगहों पर भी नबी और ईमान वालों के बारे में उन के आग से सुरक्षित रखे जाने और जन्नत में प्रविष्ट किये जाने की बात इतने अधिक बार बयान हुई है कि किसी ग़लतफ़हमी के लिए तनिक भी गुन्जाइश नहीं रहती।

99. यदि वास्तव में ये ख़ुदा होते तो वहाँ न पहुँचते। और सब को हमेशा उसी में रहना है [145]।

لَوْ كَانَ هَٰؤُلَاءِ آلِهَةً مَّا وَرَدُوهَا ۖ
وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ٩٩

100. वहाँ वे चीख़ते चिल्लाते रहेंगे और कुछ न सुनेंगे ।

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ١٠٠

101. अलबत्ता जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से अच्छे अन्जाम का वादा पहले ही हो चुका है [146] वे उस से दूर रखे जाएेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ
عَنْهَا مُبْعَدُونَ ١٠١

102. वे उस की भनक भी न सुनेंगे और अपनी मनभाती नेमतों में हमेशा रहेंगे।

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ
خَالِدُونَ ١٠٢

103. उन को (उस दिन की) बड़ी घबराहट परेशान न करेगी । और फ़रिश्ते उन का स्वागत करेंगे कि यह है तुम्हारा वह दिन जिस का तुम से वादा किया जा रहा था [147]।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ
الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ١٠٣

104. जिस दिन हम आसमान को इस प्रकार लपेट देंगे जिस प्रकार पन्नों को पंजी में लपेट दिया जाता है [148]। जिस प्रकार हम ने पहली पैदाइश की शुरूआत की थी उसी प्रकार हम उसे दोहराऐंगे। यह वादा है हमारे ज़िम्मे । हम इस काम को कर के रहेंगे।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ
خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ١٠٤

105. और ज़बूर में हम ने नसीहत के बाद लिख दिया था कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे [149]।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ١٠٥

106. इस में बड़ी ख़ुशख़बरी है उन लोगों के लिए जो इबादत करने वाले हैं [150]।

إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ عَابِدِينَ ١٠٦

107. और (ऐ पैग़म्बर) हम ने तुम को दुनिया वालों के लिए सरासर रहमत बना कर भेजा है [151]।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ١٠٧

108. कहो मेरी ओर यही प्रकाशना (वह्य) की जाती है कि तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है [152] तो क्या तुम मुस्लिम होते हो (उस के अनुपालक बनते हो)?

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم
مُّسْلِمُونَ ١٠٨

145. अर्थात् बुत भी और उन को पूजने वाले भी सदा जहन्नम में रहेंगे ।

यहाँ यह पहलू भी विचारणीय है कि क़ुर्आन मूर्ति पूजा का वह अन्जाम जो आख़िरत में होने वाला है मूर्ति पूजकों के सामने दो टूक अन्दाज़ में बयान करता है। अत: इस्लाम के एक दाओ (निमंत्रण देने वाले) को भी बहुदेववाद, परंपरावाद, एवं कुप्रथा के विरुद्ध दो टूक अन्दाज़ अपनाना चाहिए और बेलाग तरीक़ा पर उस को आख़िरत के अन्जाम के बारे में बयान करना चाहिए चाहे बहुदेववादियों को यह बात कितनी ही कड़वी क्यों न लगे। डाक्टर का काम सही तौर से इलाज करना है यद्यपि उसे कड़वी दवा देनी पड़े या इन्जकशन लगाना पड़े।

146. अर्थात् सच्चे ईमान वालों और परहेज़गारों के लिए जिन का जीवन उत्तमता, सुचरित्रता एवं सदाचार का दर्पण था।

147. ये आयतें इस बात की पुष्टि करती हैं कि जो लोग अल्लाह की ओर से किये गए वादे के योग्य पात्र तय पायेंगे उन को क़ियामत के दिन कोई परेशानी का भय न होगा और वे जहन्नम से इतनी दूर रखे जाएंगे कि उस की धीमी आवाज़ तक न सुन सकेंगे। इस से इस मत का खण्डन होता है कि सच्चे ईमान वालों को भी जहन्नम के पास से गुज़रना होगा। क़ुर्आन में दूसरी जगह पर फ़रमाया गया है:-

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ فَسَوْفَ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیْرًا. (سورۃ انشقاق ۷۔۸)

अर्थ:- ''तो जिस का कर्म पत्र उस के दाहिने हाथ में दिया गया उस से आसान हिसाब लिया जाएगा।'' (सूरह इन्शिक़ाक़ ७,८)

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट ९५

148. अर्थात् क़ियामत के दिन आसमान की बिसात लपेट दी जाएगी ताकि इस दुनिया की जगह एक नई दुनिया नई व्यवस्था के साथ अस्तित्व में लाई जाए। भौतिकवादी लोग कायनात (ब्रह्माण्ड) को आदिम अर्थात् हमेशा से बनी हुई समझते हैं किन्तु क़ुर्आन इस के आरंभ का भी पता देता है और इस के अन्त का भी।

यदि दुनिया में किसी निर्माण का आरंभ टूट फूट से होता है तो नये जगत के निर्माण के लिए वर्तमान जगत का सर्वनाश कदापि आश्चर्यजनक नहीं है और न यह बात आश्चर्यजनक है कि एक विकसित ब्रह्माण्ड उस की जगह ले ले।

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह इब्राहीम नोट ७१)

149. ज़मीन से तात्पर्य जन्नत की ज़मीन है जैसा कि सूरह ज़ुमर की आयत ७४ से स्पष्ट है।

وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَیْثُ نَشَآءُ ۔

अर्थ:- ''और हमे ज़मीन का वारिस बना दिया कि जन्नत में जहाँ चाहे रहें।'' और उस के वारिस होने का मतलब यह है कि यह ज़मीन जो अनंत होगी और अपने उत्तम गुणों के कारण बिलकुल अनुपम होगी अल्लाह के नेक बन्दों के हिस्से में आएगी। उन ही को उस पर बसाया जाएगा और उन ही को उस पर अधिकार प्राप्त होगा।

आयत में ज़बूर का हवाला दिया है जो हज़रत दाऊद पर अवतरित हुई थी। इस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जहाँ तक इस पृथ्वी लोक की ज़मीन के अधिकार एवं सत्ता का सम्बन्ध है वह एक आज़माइशी चीज़ है और यह उन को भी प्राप्त होता है जो ख़ुदा के विद्रोही अथवा उस से विमुख हैं और उस के नेक बन्दों को भी। अत: हज़रत दाऊद को जो पैग़म्बर थे ख़लीफ़ा बनाया गया था। रह गई बात उस सदा सर्वदा सफ़लता की तो जो किताब उन्हें प्रदान की गई थी उस में ख़ुदा और आख़िरत के बारे में नसीहत (याददेहानी) करते हुए अल्लाह तआला ने यह फ़रमान लिख दिया था कि आख़िरकार ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। उपलब्ध ज़बूर में जो कि बाइबिल (पुराने नियम) के संग्रह में ''भजन संहिता'' के नाम से शामिल है इस मूल विषय की एक झलक ही देखी जा सकती है। जहाँ तक ज़िक्र अर्थात् याददेहानी का सम्बन्ध है ज़बूर अर्थात् भजन संहता की निम्न लिखित पंक्तियाँ देखें:-

> ''यहोवा पर भरोसा रख और भला कर। देश में बसा रह और सच्चाई में मन लगाए रह। यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा''।(भजन संहिता ३७:३,४)

> ''वह तो दिन भर अनुग्रह कर के ऋण देता है और उस के वंश पर अशीष फलती रहती है। बुराई को छोड़ और तू सर्वदा बना रहेगा। (भजन संहिता ३७:२७,२८)

अब रहा ज़मीन के उत्तराधिकार का आदेश तो भजन संहिता (ज़बूर) के इसी अध्याय में है :-

> ''धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे और उस में सदा बसे रहेंगे।''(भजन संहिता ३७:२९)

> ''यहोवा की बाट जोहता रह और उस के मार्ग पर बना रह। और वह तुझे बढ़ा कर पृथ्वी का अधिकारी कर देगा।'' (भजन संहिता ३७:३४)

''सदा बसे रहेंगे'' के शब्द इसी बात पर तर्क प्रस्तुत करते हैं कि पृथ्वी से अभिप्रेत जन्नत ही की ज़मीन है। और इस आयत से पहले १०४ नं. की आयत में जो बात कही गई है वह आख़िरत ही से सम्बन्धित है। इस लिए यह प्रसंग ही तर्क है कि यहाँ अभिप्रेत जन्नत की ज़मीन है।

150. इबादत करने वाला होने का मतलब यह है कि

अल्लाह ही के भक्त और उस के वफ़ादार बन्दे बन कर रहेंगे। ऊपर स्वालेह अर्थात नेक लोगों से वादा था यहाँ इबादत गुज़ार अर्थात् उस के ध्यान में मग्न रहने वालों को ख़ुश्ख़बरी दी गई है। दूसरे शब्दों में एक गुण दूसरे की व्याख्या है।

151. अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति दुनिया वालों के लिए अत्यंत दया एवं रहमत की बात है। क्यों कि आप के द्वारा ही लोग अपने रब की सही पहचान प्राप्त कर लेंगे और आप की रहनुमाई तथा आप के अनुपालन में जीवन बसर कर के उस की दया के पात्र बन जाएंगे।

लिलआलमीन (दुनिया वालों के लिए) का मतलब यह है कि आप की नियुक्ति किसी एक जाति अथवा एक देश अथवा एक युग के लिए नहीं हुई है अत: पूरे इन्सानियत के लिए है इस लिए आप की रहमत सार्वजनिक है और आप सब के लिए नबी-ए-रहमत है। यदि लोग दया और रहमत के स्रोत से वंचित रहना चाहते हैं तो वे अपने अन्जाम के स्वयं ज़िम्मेदार होंगे। हवा पानी और रौशनी किसी जाति विशेष के लिए विशिष्ट नहीं बल्कि बिना किसी भेदभाव के सब के लिए हैं। किन्तु यदि कोई व्यक्ति अपने रब की इन नेमतों से ईर्ष्या करने लगे और अपनी नाक बंद कर ले तो उस का घुट कर मर जाना सुनिश्चित है। इसी प्रकार जो व्यक्ति पानी से दूर भागेगा वह प्यासा मर जाएगा । और रौशनी से आँखे बन्द करने वाला अंधेरे में भटकता ही रहेगा। यही कारण है कि नबी-ए-रहमत की नियुक्ति के बावजूद दुनिया की बड़ी आबादी इस रहमत के लाभों से वंचित है।

152. अर्थात् मेरी ओर जो वह्य नाज़िल हो रही है वह तौहीद और केवल तौहीद अर्थात् मात्र एकेश्वरवाद की शिक्षा देती है। ऐसा एकेश्वरवाद जिस से हर प्रकार के बहुदेववाद का खण्डन होता है।

यदि वे मुँह फेरते हैं तो कह दो, मैं ने तुम्हें खुल्लम खुल्ला सावधान कर दिया है। अब मैं नहीं जानता जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह निकट है या दूर । निस्संदेह वह जानता है उस बात को भी जो खुल कर कही जाती है और उस बात को भी जो तुम छिपाते हो।और मुझे नहीं मालूम। हो सकता है यह तुम्हारे लिए परीक्षा और एक समय तक के लिए सांसारिक लाभ की सामाग्री हो। *(अल-क़ुर्आन)*

109. यदि वे मुँह फेरते हैं तो कह दो, मैं ने तुम्हें खुल्लम खुल्ला सावधान कर दिया है। अब मैं नहीं जानता जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह निकट है या दूर ?[153]

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي
أَقَرِيبٌ أَمْ بَعِيدٌ مَا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

110. निस्संदेह वह जानता है उस बात को भी जो खुल कर कही जाती है और उस बात को भी जो तुम छिपाते हो [154]।

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾

111. और मुझे नहीं मालूम। हो सकता है यह तुम्हारे लिए परीक्षा और एक समय तक के लिए सांसारिक लाभ की सामाग्री हो [155]।

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾

112. (पैग़म्बर ने)दुआ की ऐ मेरे रब सत्य के साथ फ़ैसला कर दे [156]।और हमारा रब रहमान (दयावान) है जिस से मदद मांगी गई है उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम लोग बनाते हो [157]।

قُلْ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا
الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

153. यह पैग़म्बर को हिदायत की जा रही है यदि तुम्हारी क़ौम एकेश्वरवाद (तौहीद) की निमंत्रणा स्वीकार करने से इन्कार करती है तो उस पर यह स्पष्ट कर दो कि इन्कार की सूरत में अल्लाह के अज़ाब (प्रकोप) का वादा निश्चित रूप से पूरा होगा अलबत्ता मुझे यह नहीं मालूम कि वह शिघ्र ही पूरा होगा या कुछ अवधि के पश्चात।

इस आयत से साफ़ स्पष्ट है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात का ज्ञान नहीं था कि काफ़िरों पर अज़ाब कब आएगा । इस प्रकार की स्पष्ट आयतों के रहते इल्मे-ग़ैब (परोक्ष के ज्ञान) की उन बहसों का क्या औचित्य है जिन में मुसलमानों का एक समूह उलझ रहा है।

154. अर्थात् तुम्हारे अन्दर और बाहर को, तुम्हारे खुले और छिपे को अल्लाह ही बेहतर जानता है और वह अपने इल्म (ज्ञान) की बुनियाद पर फ़ैसला फ़रमाएगा।

155. यह बात पैग़म्बर की ज़बान से सुनाई जा रही है कि मुझे नहीं मालूम अल्लाह तआला किस लिए अज़ाब को लंबित कर रहा है। हो सकता है कि यह तुम्हारे लिए आज़माइश हो और तुम्हारे विनाश से पूर्व तुम को कुछ दिन और दुनिया में मज़े उड़ाने का मौक़ा मिल रहा हो।

156. इस से अन्दाज़ा होता है कि जब यह सूरह नाज़िल हुई है,दअवत (निमंत्रणा) अपने अन्तिम चरणों में पहुँच गई थी। अत: पैग़म्बर की ज़बान से ये शब्द क़ौम पर हुज्जत क़ायम हो जाने के बाद अर्थात् हर प्रकार के तर्क प्रस्तुत कर के क़ौम को बिलकुल निरूत्तर कर देने के बाद ही निकलते हैं, क्यों कि सत्य पूर्ण रूप से उन पर स्पष्ट हो गया है। परन्तु ये इन्कार पर अड़े हुए हैं। अब ख़ुदावन्दा तू ही फैसला फ़रमा दे कि सत्य की विजय हो।

157. अर्थात् जो सत्य तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया जा रहा है उस के विरुद्ध तुम तरह तरह की बातें कर रहे हो। तो जो बातें तुम बनाते हो उस के बारे में हम दयावान ख़ुदा से ही फ़रियाद कर रहे हैं। वह हमारी मदद करे और सत्य के मार्ग में हमारे पैरों को जमा दे ।

وما أرسلناك إلا رحمة للعالمين

२२.सूरह अल-हज्ज

नामः आयत २७ में हज्ज की सार्वजनिक घोषणा का उल्लेख है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-हज्ज है।

नाज़िल होने का समयः मदनी अर्थात् हिजरत के बाद नाज़िल होने वाली सूरतों में से है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सन १ हिजरी में हज्ज के निकटतम समय में अवतारित हुई होगी ।

केन्द्रीय विषयः ख़ाना-ए-काबा के निर्माण और हज्ज की संवैधानिकता जिस उद्देश्य के लिए हुई थी उस की पुनरावृत्ति करना और उस एकेश्वरवाद के केन्द्र को बहुदेववादियों के नियंत्रण से मुक्त कर के उम्मते-मुस्लिमा के हवाले करना है।

कलाम की तरतीबः आयत १ से ४ में प्रस्तावना है जिन में सार्वजनिक रुप से सभी मनुष्यों को संबोधित कर के क़ियामत के प्रचन्ड झटके से सावधान किया गया है और इस बात से आगाह किया गया है कि शैतान के इशारे पर कितने ही लोग ख़ुदा के बारे में बेबुनियाद बातों और गुमराह करने वाली बहसों में उलझे रहते हैं जिस के फलस्वरुप वे क़ियामत के दिन भड़कती आग में जा गिरेंगे।

आयत ५ से १० में दूसरे (मरणोपरान्त) जीवन पर तर्क प्रस्तुत किया गया है तथा इष्ट पूज्य के बारे में लोग गुमराही की जो बातें करते हैं उस का परिणाम ।

आयत ११ से २४ में ख़ुदा की स्वार्थपूर्ण एवं दिखावटी इबादत को व्यर्थ बताते हुए बहुदेववाद का खण्डन किया गया है और इन्कार करने वालों के दुखद अन्जाम को और सच्चे ईमान वालों के सुखद अन्जाम को अत्याधिक प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

आयत २५ से ३७ में इस बात के चलते कि बहुदेववादियों ने ईमान वालों के लिए काबा शरीफ़ और अल्लाह के घर का हज्ज करने की राह बन्द कर दी है इस एतिहासिक सत्य को उजागर किया गया है कि इस घर का निर्माण करने वाले ने एक मात्र ख़ुदा की इबादत के लिए उस का निर्माण किया था और इसी उद्देश्य के लिए हज्ज की सार्वजनिक घोषणा की थी। साथ ही हज्ज के कर्मों (मनासिक) और उन की रुह (Spirit) को उजागर किया गया है।

आयात ३८ से ४१ में मदीना के मुसलमानों को अनुमति दी गई है कि वे मस्जिदे-हराम (अर्थात् प्रतिष्ठित मस्जिद अर्थात काबा शरीफ़) को बहुदेववादियों के क़ब्ज़े से आज़ाद करने के लिए उन से जंग (जेहाद) करें और यह कि अल्लाह उन की सहायता करेगा और उन को प्रभुत्व प्रदान करेगा।

आयत ४२ से ४८ में अज़ाब के लिए जल्दी मचाने वालों का ध्यान ज़ालिम क़ौमों के विनाश के वृत्तांत की ओर आकर्षित किया गया है।

आयत ४९ से ५७ में स्पष्ट किया गया है कि रसूल का काम सावधान करना है। परन्तु उन के दअवती कार्यकलापों एवं कार्यक्रमों के विरुद्ध शैतान उसी प्रकार सक्रिय हो गया है जिस प्रकार वह रसूल की दअवत के विरुद्ध प्रोपैगेन्डे का अभियान छेड़ता रहा है। उस के इस प्रोपैगेन्डे से वही लोग प्रभावित होते हैं जिन के दिलों में रोग होता है। अल्लाह के प्रति विश्वास एवं आस्था व्यक्त करने वाले वफ़ादार बन्दों के ज्ञान और विश्वास में इस झूठे प्रोपैगेन्डे को देख कर वृद्धि हो जाती है।

आयत ५८ से ६२ में उन लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाई गई है जिन्हों ने अल्लाह की राह में हिजरत की थी ।

आयत ६३ से ६६में अल्लाह की संप्रभुत्व उस की पालनहारी और उस के उपकारों की ओर ध्यानाकर्षित किया गया है।

आयत ६७ से ७६ में एतिराज़ करने वालों के संदेहों को दूर करते हुए बहुदेववाद का असत्य होना स्पष्ट किया गया है और अल्लाह की महानता का आभास कराते हुए रसूलों को नियुक्त करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

आयत ७७ और ७८ अन्तिम आयतें हैं जिन में ईमान वालों को उन ज़िम्मेदारियों के अदा करने की भी ताकीद की गई है जो उन के व्यक्तित्व और उन के चरित्र से सम्बन्धित हैं और उन ज़िम्मेदारियों को अदा करने का भी जो अल्लाह की राह में संघर्ष और लोगों के सामने उस के दीन (जीवन प्रणाली) के साक्ष्य प्रस्तुत करने से सम्बन्धित हैं।

२२.सूरह हज्ज

سُورَةُ الحَجِّ

आयतें : 78

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. लोगो ![1] अपने रब से डरो [2]। क़ियामत का भूकम्प बड़ी भयंकर चीज़ है [3]।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُواْ رَبَّكُمْۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ ٱلسَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ١

2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, उस दिन हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर गर्भवती का गर्भ गिर जाएगा, और लोगों को तुम देखोगे कि वे मदहोश हैं हालांकि वे मदहोश न होंगे बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही बड़ा कठोर होगा [4]।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ أَرْضَعَتْ
وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى ٱلنَّاسَ سُكَٰرَىٰ
وَمَا هُم بِسُكَٰرَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ ٱللَّهِ شَدِيدٌ ٢

3. और ऐसे लोग भी हैं जो अल्लाह के बारे में ज्ञान के बग़ैर बहस करते हैं [5]। और हर उद्दंड शैतान के पीछे हो लेते हैं।

وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يُجَٰدِلُ فِي ٱللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَٰنٍ مَّرِيدٍ ٣

4. जिस के लिए यह बात मुक़द्दर (सुनिश्चित) है कि जो कोई उसे दोस्त बनाएगा उसे वह गुमराह कर के रहेगा और दहकते नरक की यातना की ओर ले जाएगा ।

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُۥ مَن تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُۥ يُضِلُّهُۥ
وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ ٱلسَّعِيرِ ٤

5. लोगो ! यदि तुम्हें (मरने के बाद) उठाये जाने के बारे में संदेह है तो (सोचो और विचार करो) हम ने तुम को मिट्टी से पैदा किया [7] फिर वीर्य से [8] फिर जमे हुए ख़ून से [9] फिर गोश्त के टुकड़े से [10] जो रुपयुक्त भी होता है और रुपहीन भी [11]। (यह इस लिए होता है) ताकि तुम पर (अपनी क़ुदरत की करिश्मासाज़ी) स्पष्ट करें [12]। और हम जिस को चाहते हैं गर्भाशय में निश्चित अवधि तक ठहराए रखते हैं फिर तुम को बच्चे के रुप में बाहर लाते हैं [13]। फिर (तुम्हारी परवरिश करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी (की आयु) को पहुँच जाओ। और तुम में से किसी का समय तो पहले ही पूरा हो जाता है और कोई बदतरीन आयु को पहुँचा दिया जाता है, ताकि जानने के बाद कुछ न जाने [14]। और तुम देखते हो कि धरती सूखी पड़ी है। फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरने और फूलने लगती है और हर प्रकार की सुन्दर वनस्पति उगाती है।[15]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ ٱلْبَعْثِ
فَإِنَّا خَلَقْنَٰكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ
ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْۚ
وَنُقِرُّ فِي ٱلْأَرْحَامِ مَا نَشَآءُ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓاْ أَشُدَّكُمْۖ وَمِنكُم مَّن
يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰٓ أَرْذَلِ ٱلْعُمُرِ لِكَيْلَا
يَعْلَمَ مِنۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔاۚ وَتَرَى ٱلْأَرْضَ
هَامِدَةً فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ
وَرَبَتْ وَأَنۢبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ٥

1. संबोधन समस्त सामान्य जनों से है और संबोधन की यह सार्वजनिकता प्रमाण है कि यह सूरह मदनी है तथा यह कि क़ियामत तक के लोग इस के संबोधी हैं।

2. इस सूरह का पहला सबक़ यही है कि मनुष्य अपने सृष्टा एवं स्वामी से डरे। एक मात्र इष्ट पूज्य का अस्तित्व खुली वास्तविकता है और उस की महानता का तक़ाज़ा यह है कि आदमी उस के सामने उद्दंडता का साहस न करे। इबादत (पूजा) का सम्बन्ध अपने सृष्टा से जोड़ने के बजाय सृष्टि से न जोड़े और उस की अवज्ञा करते हुए डरे कि इस की सज़ा उस के यहाँ अति कठोर है! और क़ियामत के दिन अपने समस्त कर्मों का उत्तर उस के समक्ष देना होगा।

3. अर्थात् क़ियामत का भूकंप ऐसा भयानक होगा कि पूरी पृथ्वी को अपनी लपेट में ले लेगा और मनुष्य को कहीं ठहराव और सुकून नहीं मिल सकेगा।

4. यह है उस भूकंप का भयावह दृष्ट कि ज़मीन ऐसी थरथराने लगेगी कि पृथ्वी पर उस समय जो लोग भी मौजूद होंगे वे हक्का बक्का रह जाऐंगे की यह क्या मामला है। हर व्यक्ति को जान के लाले पड़े होंगे यहाँ तक कि जिन माताओं की गोद में दूध पीते बच्चे होंगे वे अपने बच्चों को भूल जाएंगी और जो औरतें गर्भवती होंगी उन के गर्भ गिर जाऐंगे और लोग इस प्रकार से आतंकित होंगे कि जैसे वे नशे में मदहोश हैं। अर्थात् उन के होश ठिकाने नहीं रहेंगे। मतलब यह कि पृथ्वी पर यह अल्लाह का आखिरी अज़ाब होगा जो क़ियामत के रूप में प्रकट होगा। यह उस मौक़े की बात है जब कि पहला सूर फूँका जाएगा। और इस से यह भी स्पष्ट होता है कि उस समय ज़मीन पर बुरे लोग ही बस रहे होंगे। हदीस में भी आता है कि क़ियामत उपद्रवियों ही पर क़ायम होगी।

لَاتَقُوْمُ السَّاعَةُ اِلَّا عَلٰی شِرَارِ النَّاسِ ۔(مسلم کتاب الفتن)

अर्थ: ''क़ियामत बदतरीन लोगों पर ही क़ायम होगी।'' (मुस्लिम किताबुलफ़ितन)

5. अर्थात् मात्र गुमान और अनुमान एवं मनगढ़न्त सिद्धान्तों के आधार पर ख़ुदा के बारे में मत व्यक्त करने तथा बहसें खड़ी करने लगते हैं जब कि यह एक ऐसा नाज़ुक विषय है कि इस पर ज्ञानवर्धक जानकारी के बग़ैर ज़बान खोलना, ग़ैर ज़िम्मेदारी का सबूत देना है। और ज्ञान का मतलब ही यह है कि किसी चीज़ को, जैसी कि वह वास्तव में है,जान लेना । ख़ुदा के बारे में सही जानकारी का पहला माध्यम तो मनुष्य की अपनी प्रकृति एवं उस का स्वभाव है। फिर वे निशानियाँ हैं जो कायनात में फैली हुई हैं और इस के बाद बहुत ही स्पष्ट एवं अपने आप में बिलकुल पूर्ण वह ज्ञान है जो नबियों पर नाज़िल होता है।

6. मालूम हुआ कि ऊपर की आयात में ''समस्त उद्दंड शैतानों'' से अभिप्रेत इब्लीस और उस की फ़ौज है।

शैतानी गुणों से युक्त यद्यपि मनुष्य भी पाये जाते हैं परन्तु उन का गुरु इब्लीस ही है। इस लिए जो गुमराही का इमाम है उस के फ़ितने से ख़बरदार कर दिया गया ।

7. इन्सान के मरने के बाद उठाये जाने की जो सूचना क़ुर्आन दे रहा है उस में लोग इस लिए शक करते हैं कि मरने के बाद शरीर की समाप्ति हो जाती है। उसे दोबारा शरीर सहित उठा खड़ा करना भविष्य में सामने आने वाला एक ऐसी घटना की सूचना है जो कभी देखने ही में नहीं आई। इसी शक को दूर करने के लिए यहाँ कुछ ऐसी बातों पर विचार करने का न्योता दिया जा रहा है जो अपने आप में बिलकुल सत्य हैं। अत: आप देख लीजिए कि यह सत्य है कि मनुष्य को मिट्टी से पैदा किया गया है। आदम की रचना मिट्टी से ही हुई थी क़ुर्आन के इस बयान का अनुमोदन रोज़मर्रा के अनुभवों से भी होता है कि मिट्टी से खाने की वस्तुएं बनती हैं और इसी आहार से परवरिश पा कर मनुष्य जीवित रहता है। तथा यह भी कि हर चीज़ अपने मूल की ओर पलटती है और मनुष्य मर कर मिट्टी ही में मिल जाता है। अत: जिस हस्ती के लिए मिट्टी जैसे निष्प्राण वस्तु में प्राण फूंकना पहली बार संभव हुआ उस के लिए मिट्टी में मिले हुए इन्सान को दोबारा उठा खड़ा करना क्या मुश्किल है। अब यदि हमें विश्वस्नीय माध्यम से यह खबर मिल रही है कि मनुष्य के रचयिता ने उस को मरने के बाद क़ियामत के दिन उठा खड़ा करने का निर्णय किया है तो हम इसे क्यों सही न मानें?

8. मनुष्य को मिट्टी से पैदा करने के बाद उस का वंश क्रम जिस रीति एवं जिस निति से चलाया उस को एक महत्वपूर्ण दलील के रुप में प्रस्तुत किया जा है। यह बात कि मनुष्य की पैदाइश शुक्राणु धातु के तुच्छ भाग से होती है जिसे नुत्फ़ा (वीर्य अथवा पानी की बूँद) कहते हैं, एक सर्वज्ञात वास्तविकता है और क़ुर्आन इस साधारण एवं सर्वविदित वास्तविकता से तर्क प्रस्तुत करता है। अलबत्ता आज के नवीन दौर में भ्रूण विज्ञान (Embroyology) ने जिन वास्तविताओं को खोज निकाला है वह क़ुदरत के करिश्मे को उजागर कर के उस को सोच विचार करने पर उभारने वाली हैं। अत: एक ही समय में जो धात खारिज होती है उस में दो सौ मिलियन शुक्राणु (Spermatozoa) होते हैं। जब कि एक शुक्राणु गर्भाधान के लिए काफ़ी होता है। स्त्री के अण्डाशय (Ovary) से प्रत्येक माह केवल एक अण्डा खारिज होता है और गर्भाशय से बिलकुल लगी हुई नलिका (Fellopian tube) में अहिस्ता अहिस्ता सफ़र करता है। अगर शुक्राणु का मिलाप उस अण्डे से होता है तो

गर्भधारण हो जाता है। यह गर्भधारण का आरम्भ है।

9. गर्भधारण होने के बाद वह कुछ दिनों में जमे हुए ख़ून का रुप धार लेता है।

10. फिर ख़ून का थक्का कुछ दिनों में मांस का टुकड़ा बन जाता है। यह क्रिया गर्भ ठहरने के चौथे सप्ताह में होती है।

11. अर्थात् मांस का यह टुकड़ा जो बिना किसी रुप और आकार के था एक नये चरण में प्रवेश करता है जहाँ वह एक विशेष आकार (Shape) धार लेता है और कभी इस से पहले ही गिर जाता है।

डाक्टर मुहम्मद अली अल बार ने भ्रूण विज्ञान (Embroyology) के शोध एवं अनुसंधान की ख़ातिर क़ुर्आन और हदीस की प्रस्तुत की गई वास्तविकताओं को अपनी किताब "ख़लक़ल इन्सान बैनत्तिब्ब वल क़ुर्आन" में जो कि अरबी में है स्पष्ट रूप से बताते हुए क़ुर्आन के वैज्ञानिक चमत्कार को उजागर किया है।

डाक्टर साहब गर्भ गिर जाने (गर्भपात) के मसले पर लिखते हैं :-

"अब हम यह जानने लगे हैं कि गर्भपात अधिकांश शक्ल बनने से पहले होता है। और यह चरण भ्रूण विज्ञान की परिभाषा में अंग विकास (Organ Genesis) कहलाता है और इस की शुरुआत गर्भधारण के चौथे सप्ताह से होती है और आठवें सप्ताह तक रहती है"। (पृष्ट ४०७)

12. मतलब यह कि गर्भाशय (womb)एक क़ुदरती कारखाना (Natural Factory)है जिस में मनुष्य ढलता है और इस प्रकार ढलता है कि ढालने वाले का हाथ दिखाई नहीं देता । परन्तु पानी की एक बूंद (शुक्राणु) विकास के जिन चरणों से गुज़र कर मनुष्य का रुप धार लेने के चरण में पहुँचता है वह अतयंत विचित्र प्रक्रिया (Process) है जो सोच विचार करने का न्योता देता है और चिन्तन करने वालों में विश्वास पैदा करता है कि इस के पीछे एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं सामर्थ्यवान का हाथ है। और मनुष्य की पैदाइश उस की क़ुदरत के करिश्मे का स्पष्ट प्रमाण है।

13. अर्थात भ्रूण (Embroy) गर्भ के दिन पूरे हो जाने के बाद इस दुनिया में जन्म लेता है। और यह उस के बचपन का आरम्भ है। इस में इस बात की ओर स्पष्ट संकेत मौजूद है कि भ्रूण की दुनिया गर्भ की तंत्र एवं अंधकार से परिपूर्ण जगह थी जिस के बाद उस ने एक विज्ञान जगत में जन्म लिया। अब यदि उस का पैदा करने वाला उस को यह ख़बर दे रहा है कि इस जगत से गुज़र कर उसे उस विशाल जगत (आख़िरत) में प्रविष्ट होना है तो उस में संदेह व्यक्त करने का क्या कारण है? क्या मनुष्य अपने आप को इस दुनिया ही में क़ैद रखना चाहता है?

14. अर्थात् दुनिया में आने के बाद भी मनुष्य आयु के विभिन्न चरणों से गुज़रता है बचपन से जवानी की तरफ़ (उत्थान से पतन की ओर ज्ञान से अज्ञान (विस्मृति) की ओर) फिर यदि मौत के बाद के चरणों की सूचना दी जा रही है तो यह उस के लिए क्यों अस्वीकार्य है?

15. यह संदेह को दूर करने के लिए दूसरी दलील है। इस जगत में हर समय परिवर्तन होते रहते हैं। धरती अभी सूखी पड़ी थी परन्तु ज्यों ही पानी बरसा, हरी भरी हो गई और अपने ख़ज़ाने उगलने लगी। मतलब यह है कि मुर्दा ज़मीन में नया जीवन पैदा हो गया । क्या आँखों से यह सब कुछ देख लेना, मनुष्य के अन्दर एकमात्र सामार्थ्यवान हस्ती का विश्वास पैदा नहीं करता और यदि अल्लाह अपनी प्रकाशना द्वारा मनुष्य को उठाये जाने की ख़बर दे रहा है तो उस पर ईमान लाने में क्या चीज़ बाधक है? यदि धरती परिवर्तन का दृश्य प्रस्तुत करती है तो स्वयं मनुष्य में परिवर्तन क्यों संभव नहीं और यदि ज़मीन अपने ख़ज़ाने उगलती रहती है तो क़ियामत के दिन उस का मुर्दों को उगल देना क्यों असंभव है?

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

यह इस लिए कि अल्लाह ही सत्य है और वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है और उसे हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है।और यह कि क़ियामत की घड़ी आने वाली है। इस में कोई संदेह नहीं और अल्लाह उन को उठा खड़ा करेगा जो क़ब्रों में हैं । और लोगों में ऐसे भी हैं जो किसी ज्ञान, किसी मार्ग दर्शन और किसी रौशन किताब के बग़ैर अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं। *(अल-क़ुर्आन)*

6. यह इस लिए कि अल्लाह ही सत्य है [16] और वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है [17] और उसे हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है [18]।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى
وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

7. और यह कि क़ियामत की घड़ी आने वाली है। इस में कोई संदेह नहीं और अल्लाह उन को उठा खड़ा करेगा जो क़ब्रों में हैं [19]।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ
فِي الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾

8. और लोगों में ऐसे भी हैं जो किसी ज्ञान, किसी मार्ग दर्शन, और किसी रौशन किताब के बग़ैर अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं [20]।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ ﴿٨﴾

9. अकड़ते हुए ताकि (लोगों को) अल्लाह की राह से गुमराह करें [21]। ऐसे व्यक्ति के लिए दुनिया में रुस्वाई (अपयश) है [22] और क़ियामत के दिन हम उस को जलने की यातना का मज़ा चखाऐंगे।

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَهٗ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾

10. यह है वह जो तेरे हाथों ने पहले से तैयार किया था [23] और अल्लाह अपने बन्दों पर कदापि ज़ुल्म करने वाला नहीं है।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾

11. और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह की इबादत एक किनारे पर रह कर करते हैं। यदि लाभ पहुँचा तो उस से संतुष्ट हो गए और यदि आज़माइश सामने आ गई तो उलटे फिर गए। दुनिया भी खो दी और आख़िरत भी। यही है खुला घाटा [24]।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ
اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ
خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾

12. ये अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों को पुकारते हैं जो न उन्हें हानि पहुँचा सकती हैं और न लाभ। यह है परले दर्जे की गुमराही [25]।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ
الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾

13. वे उन को पुकारते हैं जिन का नुक़सान उन के फ़ायदे से अधिक निकट है [26]। बहुत बुरा है संरक्षण और बहुत बुरा है साथी [27]।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ
لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾

14. बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे अमल किए [28] ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिन के तले नहरें बह रही होंगी। निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है करता है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾

16. अर्थात् मिट्टी से मनुष्य जैसी उत्कृष्ट सृष्टि की संरचना और इस के बाद पानी की एक बूँद से उस का वंश क्रम चलाना, फिर उस का बचपन से जवानी को पहुँचना और इस उठान के बाद वृद्धावस्था की ओर गिर जाना। इसी प्रकार सूखी ज़मीन का हरी भरी हो कर सुदृश बन जाना सृष्टा की सृजन शक्ति के बिना नहीं हो सकता। यदि यह जगत आकस्मिक घटना का परिणाम होती तो मनुष्य की पैदाइश में यह क्रम, परिस्थितियों का यह परिवर्तन तथा एक नक़्शा और प्लानिंग के साथ मनुष्य का अस्तित्व इस धरती पर संभव न होता। अत: अल्लाह का अस्तित्व एक अखण्डनीय वास्तविकता है और उस के अस्तित्व या उस के एक मात्र ख़ुदा होने से इन्कार कटहुज्जती और हठ्धर्मी के सिवा कुछ नहीं।

17. ऊपर के उदाहरण से यह बात भी स्पष्ट है कि अल्लाह निष्प्राण पदार्थो में प्राण फूँकता रहता है।

18. रात दिन देखने में आने वाले ये घटनाक्रम जिन का वर्णन ऊपर हुआ है इस तथ्य को उजागर करते हैं कि अल्लाह की हस्ती एक महासामर्थ्यवान हस्ती है और उस के लिए कोई चीज़ भी असंभव नहीं ।

19. अर्थात् अल्लाह की इस सृजानात्मक क्रिया से जिस का वर्णन ऊपर की आयतों में हुआ है, इस बात का अनुमोदन होता है कि क़ियामत का घटित होना और मुर्दों का उठाया जाना बिलकुल सत्य है।

''क़ब्र में जो है'' से अभिप्रेत मुर्दे हैं चाहे उन की क़ब्र बनी हो या न बनी हो।

वास्तव में मानव जीवन की समस्या का निदान क़ियामत और दूसरे जीवन को सत्य मान लेने ही में निहित है। वरना किसी चिन्तक या किसी दार्शनिक के बस की बात नहीं कि वह इस गुत्थी को सुलझा सके। अत: आप देखें कि इस के बग़ैर जीवन का कोई संजीदा मक़सद सुनिश्चित नहीं किया जा सका और न उस प्लानिंग का कोई वैकल्पिक स्वरुप प्रस्तुत किया जा सका है जो मनुष्य की पैदाइश के पीछे है। उदाहरणस्वरुप आवागमन का सिद्धान्त इन मौलिक एवं प्राथमिक प्रश्नों का उत्तर देने में अक्षम है और इस से जीवन की कोई गुत्थी तो सुलझने से रही अलबत्ता गाँठे और पड़ जाती हैं और मास्तिष्क उलझ कर रह जाता है।

20. ज्ञान की व्याख्या नोट ५ में गुज़र चुकी। हिदायत (मार्ग दर्शन) से यहाँ अभिप्रेत वह तर्क है जिसे सीधी और सामान्य बुद्धि स्वीकार करे और प्रस्तुत करे तथा रौशन किताब से तात्पर्य आसमानी ग्रंथ है। ज्ञान में ये दोनों चीज़े शामिल हैं परन्तु इन के महत्व को देखते हुए इन का वर्णन यहाँ विशेष रुप से किया गया है।

21. यह उन नेताओं का हाल बयान हुआ है जो ख़ुदा के बारे में लोगों को गुमराह करते रहते हैं। उन का यह रवैया बड़ा ही अहंकारी होता है।

22. जो लोग ख़ुदा के बारे में अकड़फूँ का रवैया अपनाते है उन को इस दुनिया ही में अपमान एवं अपयश का मज़ा चखना पड़ता है। इस से अभिप्रेत वह रुस्वाई है जो नैतिक स्तर पर होती है और जिस को वह लोग महसूस करते हैं जिन की नैतिक दृष्टि तेज़ होती है, चाहे अपमानित होने वाला व्यक्ति दुनिया की दृष्टि में कितना ही सम्मानजनक हो।

23. मनुष्य का प्रत्येक कर्म भविष्य में एक परिणाम सामने लाने वाला है और मानव के ये कर्म ही होंगे जिस के कारण वह नरक का अधिकारी ठहरेगा ।

24. यह तस्वीर है उन लोगों की जो अल्लाह को न केवल मानने का दावा करते हैं बल्कि उस की इबादत भी करते रहते हैं किन्तु एकाग्रचित हो कर नहीं बल्कि सुरक्षा अधिकार की भावना (Reservations) के साथ यदि ख़ुशहाली हाथ आई तो ख़ुदा के गुण भी गाऐंगे और उस की पूजा भी करेंगे परन्तु यदि किसी कष्ट और मुसीबत में पड़ गए तो उस के विमुख हो कर उस के विरुद्ध शिकायतें करने लगेंगे। ऐसे लोग दुनिया में भी उस ख़ुशनसीबी से वंचित हो जाते हैं जो सच्ची ख़ुदा परस्ती के परिणाम स्वरुप प्राप्त हो जाती है और आख़िरत में भी वे बिलकुल नामुराद होंगे।

स्पष्ट हुआ कि ख़ुदा परस्ती वही विश्वस्नीय एवं स्वीकृत है जिस की तह में वफ़ादारी की भावना हो और जिस पर मनुष्य नरम गरम हर तरह के हालात में जमा रहे।

25. अर्थात् ख़ुदा परस्ती की जगह बुत परस्ती सरासर सत्य विरुद्ध और स्पष्ट रुप से असत्य है। अब यदि कोई व्यक्ति वास्तविकता (Reality) के विरुद्ध कोई काम करना चाहता है तो उस पर सीधे मार्ग का लुप्त हो जाना बिलकुल सुनिश्चित है।

26. बुतों की हक़ीक़त इस से अधिक कुछ नहीं कि वे ईंट और पत्थर हैं जो न लाभ पहुँचा सकते हैं न हानि किन्तु उन को पूजने वाले यह समझते हैं कि वे अपना ईश्वरीय अस्तित्व भी रखते हैं। उन के इसी ख़याल की नामाकूलियत तथा उस का अनुचित होना स्पष्ट किया जा रहा है कि उन से किसी लाभ की आशा तो दूर की बात है अलबत्ता उन की पूजा में लगने से जो तुरन्त एवं अनिवार्य हानि पहुँचती है वह यह है कि बन्दे का रिश्ता अल्लाह से टूट जाता है। क्यों कि किसी और को दाता एवं आवश्यक्ताओं की पूर्ति करने वाला मानने का मतलब ही यह

है कि ऐसा व्यक्ति अल्लाह को एक मात्र दाता और आवश्यकताओं को पूरा करने वाला (इष्ट पूज्य) नहीं मानता। दूसरे शब्दों में बुतों से वफ़ादारी अल्लाह से बेवफ़ाई की क़ीमत पर होती है। और यह बिलकुल स्पष्ट एवं बहुत ही बड़ा नुक़सान है।

27. अर्थात् बुतों के प्रति श्रद्धा एवं आस्था उत्पन्न कर के उन्होंने अपने लिए बहुत बुरे संरक्षक और साथी पैदा कर लिए हैं जो उन के लिए विनाश का कारण हैं।

28. प्रसंग से स्पष्ट है कि यहाँ ईमान लाने और अच्छे कर्म करने के भावार्थ में यह बात शामिल है कि ऐसे लोग अल्लाह ही को दाता और आवश्यकताओं का पूरा करने वाला मान कर उस की इबादत सच्चे मन से करते हैं और अच्छे बुरे हर हाल में उस से जुड़े रहते हैं।

क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं,तथा सूरज, चाँद, सितारे,पहाड़, वृक्ष, जानवर और बहुतेरे इन्सान।और बहुत से इन्सान ऐसे हैं जिन पर अज़ाब सुनिश्चित हो चुका है।और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे उसे इज़्ज़त देने वाला कोई नहीं । अल्लाह जो चाहता है करता है। *(अल-क़ुर्आन)*

15. जो व्यक्ति यह ख़्याल करता हो कि अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उस की मदद नहीं करेगा उसे चाहिए कि आसमान तक एक रस्सी तान ले फिर उसे काट डाले और देख ले कि क्या उस की इस तदबीर ने उस के ग़म और ग़ुस्से को दूर कर दिया ?[29]

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ
فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾

16. इस तरह हम ने इस (क़ुर्आन) को स्पष्ट दलीलों के रुप में उतारा है। और अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।[30]

وَكَذَٰلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ﴿١٦﴾

17. जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबिई और ईसाई और मजूसी और वे जो मुश्रिक हुए उन सब के बीच अल्लाह क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा।[31] अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ
وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

18. क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, तथा सूरज, चाँद, सितारे, पहाड़, वृक्ष,जानवर और बहुतेरे इन्सान। और बहुत से इन्सान ऐसे हैं जिन पर अज़ाब सुनिश्चित हो चुका है [32]।और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे उसे इज़्ज़त देने वाला कोई नहीं।अल्लाह जो चाहता है करता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ
وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُهِنِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ السجدة ﴿١٨﴾

19. ये दो फ़रीक़ हैं [33] जिन्हों ने अपने रब के बारे में झगड़ा किया तो जिन्होंने कुफ्र किया उन के लिए आग के वस्त्र काट दिए गए हैं। उन के सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ فَالَّذِينَ كَفَرُوا
قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ نَارٍ يُصَبُّ مِنْ
فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾

20. जिस से उन के पेट के अन्दर की चीज़े और उन की खालें गल जाऐंगी।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾

21. तथा उन (को सज़ा देने) के लिए लोहे की गदाऐं होंगी।

وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾

22. जब कभी वे इस घुटन से निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिए जाऐंगे, कि चखो अब जलने की यातना का मज़ा।[34]

كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا
فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾

29. यह उस व्यक्ति के लिए चेतावनी है जो कठिन हालात में अल्लाह की सहायता से निराश हो जाता है। वह समझता है कि जब अल्लाह दुनिया में मेरी सहायता नहीं कर रहा है तो आख़िरत में भी नहीं करेगा। इस प्रकार ख़ुदा से निराशा उस के अन्दर विद्रोह की भावना को उत्पन्न कर देती है। आजकल के ज़माने में तो ऐसे लोग अधिक संख्या में देखे जा सकते हैं जो हालात के उतार चढ़ाव का शिकार होने पर ख़ुदा को रहीम, दयावान मानने को तैयार नहीं होते और उस के विरुद्ध विद्रोह कर बैठते हैं। यह ख़ुदा की दया और उस की सहायता से निराशा ही है जिस ने ख़ुदा के बारे में उन के अन्दर झुंझलाहट पैदा कर दी है। ऐसे लोगों से कहा जा रहा है कि यदि वे अल्लाह की बनाई हुई योजना के विरुद्ध कोई नीति अपना सकते अथवा कोई उपाय कर सकते हैं तो कर देखें । यदि वे रस्सी तान कर आसमान पर चढ़ सकते हैं तो चढ़ें उस के बाद उस रस्सी को भी काट दें ताकि दुनिया से उन का सम्बन्ध बिलकुल टूट जाए। ऐसा कर के वे देखलें कि उन का ग़म और गुस्सा दूर होता है या नहीं । मतलब यह कि अल्लाह की सहायता के प्रकट होने में विलम्ब को देख कर मनुष्य यदि उस से निराश हो जाता है और उस के विरुद्ध रोष प्रकट करता है तो इस से क्या लाभ? वह कोई ऐसा उपाय तो नहीं कर सकता कि ईश्वरीय योजना से मुक्त हो जाए या इस परीक्षा जगत से निकल कर किसी और दुनिया में चला जाए। इस लिए सही कर्म मार्ग यही है कि वह अल्लाह से आशा बाँधे रखे । उस को अपना वास्तविक सहारा समझे और विषम परिस्थितियों में भी उस पर भरोसा करे कि वह उस की सहायता अवश्य करेगा।

स्पष्ट रहे कि इस आयत में जिस प्रकार आसमान तक रस्सी तान देने की बात कही गई है उसी प्रकार सूरह सॉद में आसमान पर चढ़ जाने की बात भी कही गई है:

اَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَافَلْيَرْتَقُوْا فِى الْاَسْبَابِ. (سورۂص:١٠)

अर्थ : ‘‘क्या ये आसमानों और ज़मीन और इन के बीच पाई जाने वाली चीजों के अधिकार के मालिक हैं? अगर ऐसा है तो ये आसमानों में चढ़ जाएं।’’ (सूरह सॉद-१०)

स्पष्ट है कि इस आयत में जो फ़रमाया गया कि आसमानों में चढ़ जाएं तो इस से अभिप्रेत काफ़िरों की बेबसी को बताना है। इसी प्रकार इस आयत में यह जो कहा गया कि ऐसा व्यक्ति आसमान में रस्सी तान ले तो इस से भी अभिप्रेत उस की विवशता को प्रकट करना है।

30. यहाँ क़ुर्आन की रहनुमाई बिलकुल स्पष्ट और तार्किक है किन्तु इस से रोशनी उसी को मिलती है जिस को अल्लाह तआला वह दृष्टि प्रदान करे।

31. यहाँ उन छ: धार्मिक समुदायों का वर्णन हुआ है जो उस समय अरब और उस के चारों ओर पाये जाते थे अर्थात् मुसलमान, यहूदी, साबिई, ईसाई, मजूसी और अल्लाह का साझी ठहराने वाले मुश्रिक ।

साबिई की व्याख्या सूरह बक़र: नोट ८६ में गुज़र चुकी है।

मजूसी से अभिप्रेत अग्नि भक्त लोग हैं जो अपने आप को ज़रतश्त का अनुयायी बताते हैं। उस समय ईरान का यही धर्म था। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट ३

मुशरिक से तात्पर्य असंख्या पूज्यों को मानने वाले और बुत परस्त हैं। अरब से बाहर दूसरे बहुदेववादी धर्म चाहे वे किसी नाम से पुकारे जाते हों इसी के अन्तर्गत आते हैं।

इन में से प्रत्येक समुदाय इस बात का दावेदार है कि इष्ट पूज्य और धर्म के बारे में सही धारणा वही है जिस को वह अपनाए हुए हैं। धार्मिक समुदायों के इन दावों और उलझावों को ग़लत और असत्य बताते हुए स्पष्ट किया कि सच्चाई की राह ईमानवालों की राह है । अर्थात् उन लोगों की जो क़ुर्आन की दअवत को स्वीकार करते हैं। दूसरे शब्दों में सच्चा मुसलमान जिन का दीन इस्लाम है। इस के बावजूद यदि लोग अपने अपने धर्म से ही चिमटे रहना चाहते हैं तो क़ियामत के दिन वे इस का नतीज़ा देख लेंगे जब कि अल्लाह तआला इस विवाद का निर्णय कर देगा !

32. व्याख्या के लिए देखिए सूरह रअद नोट ३८ और सूरह नह्ल नोट ७१

इस आयात में इस बात पर सोच विचार का निमंत्रण दिया गया है कि इस कायनात की सारी सृष्टियाँ चाहे वे जीवित प्राणी हों, पेड़ पौधे हों, या फिर निष्चल पदार्थ, सब की सब अपने सृष्टा के आगे झुकी हुई हैं और अपने अपने तरीक़े पर उसी को सज्दा कर रहे हैं । भाँत भाँत के हाव भाव से उन के सज्दा में रहने का पता चलता है। और जहाँ तक मनुष्य की बात है, अधिकांश लोग अल्लाह के आगे झुकते हैं किन्तु बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं जो अपनी इच्छा से उस के समक्ष झुकने को तैयार नहीं हैं। ऐसे लोगों पर अल्लाह की यातना की मार पड़नी सुनिश्चित है। उन के इस ग़लत रवैये के बावजूद यह हक़ीक़त अपनी जगह अटल है कि यह कायनात अल्लाह ही के आगे सर झुकाए हुए है और जब यह वास्तविकता है तो तुम अपना रवैया इसी के अनुसार क्यों नहीं बना लेते?

यह आयत सज्दा है इस लिए उस की तिलावत पर सज्दा करना ज़रूरी है।

33. अर्थात् एक ईमान वालों का समूह है जो क़ुर्आन पर ईमान लाता है और दूसरा काफ़िरों का गिरोह है जो क़ुर्आन पर ईमान नहीं लाता चाहे वह कितनी ही जातियों एवं सम्प्रदायों में बटा हुआ हो!

34. इस दुखदायी यातना की कल्पना मात्र से ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं। परन्तु जिन का दिल मुर्दा हो गया है वे इस से प्रभावित नहीं हो सकते हैं।

23. जो लोग ईमान लाए और जिन्हों ने अच्छे कर्म किए अल्लाह उन्हें ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। उन को वहाँ सोने के कंगन और मोती के ज़ेवर पहनाए जाएंगे और उन का पोशाक रेशम का होगा।[35]

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ
أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾

24. उन्हें पवित्र बातों का निर्देश दिया गया [36] और उन्हें उस हस्ती की राह दिखाई गई जिस के लिए प्रशंसा ही प्रशंसा है ।[37]

وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ
الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

25. जिन लोगों ने कुफ्र किया और जो अल्लाह की राह से रोक रहे हैं [38] तथा प्रतिष्ठित मस्जिद [39] से जिसे हम ने लोगों के लिए इस तरह बनाया है कि उस के रहने वाले और बाहर से आने वाले सब वहाँ बराबर हैं [40]। और जो कोई वहाँ ज़ुल्म के साथ विमुखता की राह अपनाना चाहेगा हम उसे दुखदायी यातना का मज़ा चखाएंगे [41]।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ
فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ
عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾

26. और जब हम ने इब्राहीम के लिए बैतुल्लाह की जगह निर्धारित कर दी थी [42] कि मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराओ और मेरे घर को पाक रखो तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, कियाम करने (खड़े होने) वालों और रुकू और सज्दा करने (झुकने) वालों के लिए [43]।

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَن لَّا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا
وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ
وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾

27. और लोगों में हज्ज का एलान कर दो [44]। वे तुम्हारे पास पैदल आएंगे और दुर्बल ऊँटनियों पर भी जो दूरवर्ती राहों से आएंगे [45]।

وَأَذِّن فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا
وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾

28. ताकि वे अपने लाभों को देख लें [46] और निर्धारित दिनों में [47] मवेशी चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उस ने उन्हें प्रदान किये हैं [48]। अतः उस में से खाओ और तंगदस्त मुहताज को भी खिलाओ [49]।

لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي أَيَّامٍ
مَّعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ
فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾

29. फिर अपना मैल कुचैल दूर करें [50],अपनी मन्नतें पूरी करें [51]और इस पुरातन घर की परिक्रमा (तवाफ़) करें [52]।

ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ
وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾

35. ऊपर की आयतों से स्पष्ट है कि यहाँ ईमान लाने के भावार्थ में दो बातें मुख्य रुप से शामिल हैं। एक तौहीद (एकेश्वरवाद) और दूसरे क़ियामत के दिन उठाया जाना। जो लोग इस प्रकार ईमान लाऐं और उन के जीवन से भी नेक चलनी टपके उन को क़ियामत के दिन जिस सम्मान से प्रतिष्ठित किया जाएगा उस का वर्णन इस आयत में हुआ है। यह तुलना भी विचारणीय है कि काफ़िरों के लिए जहाँ आग के कपड़े काटे जाऐंगे वहीं ईमान वालों को रेशमी वस्त्रों से आभूषित किया जाएगा। इस संसार का जीवन एक अंतरिम एवं परिक्षा का दौर है इस लिए यहाँ नेमतों के इस्तेमाल के लिससिले में कुछ शरअी (संवैधानिक) पाबन्दिया भी हैं। किन्तु जन्नत का जीवन इनाम स्वरुप होगा इस लिए वहाँ न केवल यह कि नेमतों के इस्तेमाल में कोई रोक टोक नहीं होगी बल्कि ऐश्वर्य के जीवन यापन के सारे संसाधन उपलब्ध कर दिए जाएंगे। और जन्नत वालों को ज़ेवरों तथा पोशाकों से इस प्रकार आभूषित किया जाएगा कि हर मोमिन एक दूल्हा है और हर मोमिना एक दुल्हन ।

36. अभिप्रेत कलिमा तौहिद अर्थात् एकेश्वरवादी प्रवचन है।

37. अर्थात् अल्लाह की राह जिस के लिए सारी प्रशंसा है और जो इस का एक मात्र अधिकारी है कि उस के गुण गाए जाऐं।

38. अर्थात् लोगों को रोकते हैं कि वे अल्लाह का दीन (इस्लाम) स्वीकार न करें।

39. संकेत है उन परिस्थियों की ओर कि जो मुसलामन हिजरत कर के मदीना आ गए थे उन पर मक्का के बहुदेववादियों ने हरम के दरवाज़े बन्द कर दिए थे। वे न हज्ज कर सकते थे और न उमरा ।

40. अर्थात् मस्जिदे हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद काबा) पर किसी का अधिकार जताना सही नहीं कि जिस को चाहें ज़ियारत करने दें और जिस को चाहें रोकें । यह तौहीद का केन्द्र है और एकेश्वर वादियों को चाहे वे दुनिया के किसी भी भू-भाग में रहते हों यह अधिकार है कि वह यहाँ आ कर एक मात्र ख़ुदा की उपासना करें। इस मस्जिद के दरवाज़े किसी पर भी बन्द नहीं हैं और इस मामले में मक्कावासी और ग़ैर मक्कावासी का कोई अन्तर नहीं है। अत: एकेश्वरवादियों में से किसी को हज्ज या उमरा करने से रोका नहीं जा सकता।

मस्जिदे-हराम की इस हैसियत को देखते हुए दुनिया की किसी हुकूमत को चाहे वह मुसलमानों की हो या ग़ैरमुस्लिमों की यह हक़ नहीं पहुँचता कि हज्ज और उमरा के सिलसिले में अनुचित रूप से क़ानूनी पाबन्दी की बाधाऐं खड़ी करें और न इस पावन धरती पर सत्ता प्राप्त लोगों को यह अधिकार पहुँचता है कि वह वीज़ा आदि की ऐसी पाबन्दिया लगाऐं कि तीर्थ यात्रियों के लिए व्यर्थ की कठिनाइयाँ उत्पन्न हों। इस का तक़ाज़ा यह भी है कि हरम में ठहरने और खाने पीने के सिलसिले में ऐसी रीतियों को प्रचलित न किया जाए जिन से बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वालों की परेशानियों में वृद्धि हो। और लूट खसोट, शोसण (Exploitation) तो यहाँ भयंकर अपराध है ।

41. अर्थात् जो व्यक्ति मक्का में रहते हुए ज़ुल्म और ज़्यादती के साथ उन उद्देश्यों से मुँह मोड़ेगा जिन के लिए यह मस्जिद तैयार की गयी है, वह अल्लाह की ओर से दु:खदायिनी यातना का भागीदार होगा।

ज़ुल्म से अभिप्रेत ख़ुले गुनाह के काम हैं जिस में शिर्क अर्थात् अल्लाह का साझीदार ठहराना प्रमुख है। और इल्हाद अर्थात् ख़ुदा का इन्कार तथा उस से विमुखता से तात्पर्य मस्जिदे-हराम को ग़लत उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करना भी है और अधर्म फैलाना भी । इस आयत का स्पष्ट संकेत मक्का के बहुदेववादियों की ओर है जो बैतुल्लाह के मूल उद्देश्य (तौहीद) से हट गए थे और बुत परस्ती को वहाँ प्रचलित किया था । किन्तु बात सार्वजनिक रुप से कही गई है। इस लिए यह हर उस व्यक्ति पर भी लागू होता है जो वहाँ शिर्क और बिद्अत को लागू करने की कोशिश करे। इस से यह बात भी निकलती है कि जो नाम मात्र के मुसलमान किसी उपद्रव के इरादे से या तोड़ फोड़ की कार्रवाई के उद्देश्य से मक्का आना चाहते हों उन के प्रवेश पर रोक लगाई जा सकती है।

42. अर्थात् ख़ाना-ए-काबा के निर्माण के लिए मक्का की पावन धरती का चुनाव अल्लाह तआला की ओर से हुआ था और इस के लिए जगह का ठीक ठीक निर्धारण भी उसी ने किया था । इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो कुछ भी किया वह अल्लाह के आदेशों का अनुपालन था ।

ध्यान रहे कि क़ुर्आन मजीद ख़ान-ए-काबा को बनाने वाला हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बताता है और इस बात की ओर कोई इशारा नहीं करता कि इस का निर्माण तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने किया था फिर यह नूह के तूफ़ान की चपेट में आ गया था और हज़रत इब्राहीम ने केवल इस का नवनिर्माण किया । किसी सही हदीस से यह बात साबित नहीं है इस लिए जिन रिवायतों के आधार पर मुफ़स्सिरीन इस प्रकार की बातें कहते हैं वे क़ुर्आन के स्पष्ट बयान से मेल न खाने के चलते इस योग्य नहीं कि किसी तफ़सीर में जगह पाऐं। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले इमरान नोट ११७)

43. यह निर्देश इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस लिए

दिया गया था ताकि पहले दिन से ही बैतुल्लाह के निर्माण का उद्देश्य स्पष्ट हो जाए। और उन के अनुयायी इस निर्देश को जीवन का अंग बना लें और प्राण से भी प्रिय रखें। घर को पाक रखने का मतलब बुतों से पाक रखना तथा हर प्रकार की गन्दगियों से भी ।

44. जब ख़ाना-ए-काबा का निर्माण हो गया तो अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आदेश दिया कि वे हज्ज की सार्वजनिक घोषणा कर दें । इस घोषणा का मतलब यह था कि:

प्रथम यह घर किसी विशेष क़बीला, जाति, या क्षेत्र के रहने वालों के लिए नहीं है बल्कि यह समस्त लोगों के लिए पूजा स्थल है।

द्वितीय इस घर की विशेषता यह है कि हज्ज की इबादत उसी से सम्बन्धित है । हज्ज का ख़ास पहलू यह है कि वह विशेष रुप से अल्लाह के समक्ष उपस्थिति है और तौहीद का नक्शा दिल में बिठा कर उस से गहरी मुहब्बत और लगाव उस के लिए त्याग एवं बलिदान की भावनाएं जागृत करने वाली इबादत है।

तृतीय हज्ज का सार्वजनिक आहवान वास्तव में एकेश्वरवाद को स्वीकार करने और एक मात्र ख़ुदा की इबादत करने का सार्वजनिक निमंत्रण था। यह गोया इस बात का एलान था कि लोग अपने रब की ओर लपकें और उस की इबादत के लिए इस घर को केन्द्र बनाऐं।

45. अर्थात् इतनी दूर से आएंगे कि सफ़र की वजह से ऊँट दुबले हो गए होंगे। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने में बियाबान का सफ़र तय करने का प्रमुख साधन ऊँट ही था इस लिए इस का उल्लेख हुआ। और आज़ तो कारों, बसों,स्टीमरों और हवाई जहाज़ों के द्वारा लोग दूर दूर से हज़ारों मील का सफ़र तय कर के हज्ज के लिए आते हैं और प्रत्येक वर्ष मस्जिदे-हराम में दो मिलियन (बीस लाख) से अधिक तौहीद के परवानों का जमावड़ा होता है।

46. इस का मतलब यह नहीं है कि लोग अपने आर्थिक एवं सांसारिक लाभ देख लें। क्यों कि हज्ज का आदेश इस प्रकार के लाभों के लिए नहीं दिया गया है बल्कि अभिप्रेत दीनी लाभ हैं क्यों कि हज्ज बहुत ही अफ़ज़ल इबादत है। प्रसिद्ध मुफ़स्सिर अल्लामा जसास लिखते हैं।

''लाभों से विशेष कर सांसारिक लाभ कदापि अभिप्रेत नहीं हो सकते क्यों कि इस सूरत में हज्ज की दअवत का मतलब यह होगा कि सांसारिक लाभ प्राप्त करने का आहवान किया गया है। हालांकि हज्ज का मतलब तवाफ़, सअी, अरफ़ा और मुज़्दल्फ़ा का ठहराव, क़ुर्बानी और अन्य मनासिक की अदायगी है। सांसारिक लाभ इस में स्वाभाविक रूप से शामिल हैं और केवल छूट के दर्जे में हैं हज्ज का उद्देश्य नहीं है।''

(अहकामुल क़ुर्आन जिल्द ३ पृष्ट २३७)

हज्ज के दीनी लाभों में से सब से बड़ा लाभ अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थिति है अत: हज्ज के दौरान लब्बैक (मैं उपस्थित हूँ) की सदा बुलन्द की जाती है। फिर बैतुल्लाह और शआइरुल्लाह अर्थात् अल्लाह के घर और ईश-भक्ति की निशानियों का अपनी आँखों से देखना: ईमान में वृद्धि, अल्लाह के लिए सब्र करने और उस की राह में जान लड़ाने, सर झुकाने, तथा अनुपालन और बलिदान की उच्च भावनाओं के पोषण का सामान होता है। इस्लामी इतिहास के चिन्ह उभर कर सामने आते हैं। हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिन के स्पष्ट करनामों से ख़ाना-ए-काबा का इतिहास प्रकाशमय है, श्रद्धा एवं आस्था में वृद्धि हो जाती है। बैतुल्लाह की छत्र छाया में मुसलमानों का विश्वाव्यापी एवं आत्मवर्द्धक सम्मेलन मुस्लिम समुदाय के मुख्य लक्ष्य को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत करता है। और सब से बड़ी बात यह है कि अल्लाह के समक्ष विनम्रता एवं दास्ता और उस से मुलाकात का एहसास ऐसा मनोभाव उत्पन्न करता है जो दुनिया में ईमान और परहेज़गारी का जीवन गुज़ारने के लिए बड़ी शक्ति और मूल्यवान वस्तु है । रहे भौतिक एवं सांसारिक लाभ तो वे हज्ज के अतिरिक्त लाभ हैं ।

47. तात्पर्य नह्र और तश्रीक़ के दिन हैं अर्थात् ज़िलहिज्जा की दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं तारीख़ । हदीस में आता है

كُلُّ اَيَّامِ التَّشْرِيقِ ذِبْحٌ

अर्थ: ''सब तश्रीक़ के दिन ज़ब्ह के दिन हैं।''

यह मुस्नद अहमद की हदीस है और इसे अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी ने ''मनासिकुलहज्ज वल उमर:'' में नक़ल कर के लिखा है कि यह हदीस मेरे नज़दीक प्रमाण की हर दृष्टि से सही है। (मनासिकुलहज्ज वल उमर: पृष्ट ३४)

48. अभिप्रेत वह क़ुर्बानी (हुदी) है जो हज्ज के मनासिक में से है। यह क़ुर्बानी उन जानवरों की जायज़ है जो मवेशी पालतू हों । ये चार हैं ऊँट, गाय, दुंबा और बकरी, चाहे वे नर हों या मादा। यह बात सूरह अनआम आयत १४३ से १४७ से भी स्पष्ट है और हदीस से भी । फ़िक़्हुस्सुन्न: के संकलनकर्ता सय्यद साबिक़ ने लिखा है कि इस पर इज्माअ (सहमति) है। (फ़िक्हुस्सुन्न: जिल्द १ पृष्ट ७३७)

49. यह इस बात की पुष्टि है कि क़ुर्बानी (हुदी) का गोश्त खाने और खिलाने में कोई शरअी रुकावट नहीं है। अर्थात् इस का हुक्म सोख़्ती (जिस का गोश्त आग खा ले) जैसा नहीं है

जो यहूदियों के लिए थी। जैसा कि बाइबिल में स्पष्ट है। बल्कि यह सादा और सरल शरीअत है जो इब्राहीम के तरीक़े के बिलकुल अनुकूल है।

क़ुर्बानी का गोश्त मुहताजों को खिलाने का विशेष रुप से प्रोत्साहन दिया गया है परन्तु इस को क़ुर्बानी का मूल उद्देश्य नहीं ठहराया गया है बल्कि मूल उद्देश्य जैसा कि ऊपर के वाक्य से स्पष्ट है, मवेशी चौपायों को अल्लाह के नाम से क़ुर्बान करना है। अर्थात् यह एक इबादत जैसी चीज़ है और इस से प्राप्त होने वाले अन्य लाभ दूसरे नम्बर पर हैं।

बहुदेववादी जानवरों कि क़ुर्बानी बुतों और देवी देवताओं के नाम पर करते रहते हैं। परन्तु इस्लाम ने इबादत के इस तरीक़े को अल्लाह के लिए ख़ास कर दिया है जिस को अपना कर के आदमी तौहीद पर क़ायम हो जाता है। इस लिए हालात की मजबूरी के तहत गोश्त को किसी उपयोग में न लाया जा सकता हो तब भी क़ुर्बानी करना आवश्यक होगा अल्लाह के नाम पर जानवर की क़ुरबानी पेश करने से क़ुर्बानी का असली मक़सद तो हासिल हो ही जाता है। और गोश्त का किसी उपयोग में आना अनिवार्य शर्त नहीं है। हदीस में ''अहराक़े दम'' अर्थात जानवर का ख़ून बहाने को श्रेष्ठ कर्म बताया गया है और इस कर्म का वास्तविक मूल्य तभी समझ में आ सकता है जब कि आदमी तौहीद के महत्व को समझता हो और अल्लाह की इबादत के मूल्य से परिचित हो।

अगर क़ुर्बानी का प्रमुख उद्देश्य गोश्त प्राप्त करने का होता तो पिछली शरीअत में क़ुर्बानी के गोश्त को जलाने का हुक्म न होता परन्तु जिन लोगों की निगाह क़ुर्बानी की हक़ीक़त पर नहीं बल्कि उस के गोश्त पर होती है वे कुछ ऐसी परिस्थितियों में जब कि क़ुर्बानी के गोश्त का माक़ूल बन्दोबस्त न होने के कारण कोई सदुपयोग नहीं होता, क़ुर्बानी को व्यर्थ समझ कर उस के बदले में सदक़ा करने की बात को उचित बताने लगते हैं । हालांकि किसी ऐसी चीज़ का जो इबादत से सम्बन्धित हो उस का बदल ठहराने का हमें कोई अधिकार नहीं। और अगर इबादत के मामले में हम ने अक़्ली घोड़े दोड़ाना शुरू किये तो दीन की पूरी व्यवस्था प्रभावित हुए बग़ैर न रहेगी।

50. अर्थात् एहराम की पाबन्दियों के चलते जो मैल कुचैल हो जाता है उसे दूर करें। एहराम की हालत एक ख़ास हालत होती है। जिस में बाल कटवाना, नाखुन तराशना और ख़ुश्बू लगाना मना है। इस लिए शरीर की सफ़ाई की वह देख रेख नहीं हो पाती जो साधारण परिस्थितियों में होती है। परन्तु क़ुर्बानी के बाद सर के बाल मुंडाए या कटवाए जाते हैं और एहराम उतारा जाता है।

51. नज्र (मन्नत) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ४५० यहाँ नज्र (मन्नत) का ज़िक्र विशेष रूप से इस लिए हुआ कि किसी ने क़ुर्बानी की नज्र (मन्नत) मानी है तो वह इस अवसर पर इसे पूरा कर दे।

52. क़ुर्आन के सम्बोधियों को ध्यान में रखते हुए ख़ाना-ए-काबा को पुरातन घर कहा गया है क्यों कि क़ुर्आन के नाज़िल होने से लगभग ढाई हज़ार साल पहले हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के कर कमलों द्वारा इस का निर्माण हुआ था, इस का पुरातन होना इस की ऐतिहासिक हैसियत को स्पष्ट करता है।

सर मुंडाने या बाल कतरवाने के बाद मिना से मक्का पहुँचना और बैतुल्लाह का तवाफ़ (परिक्रमा) करना आवश्यक है। इसे तवाफ़े-इफ़ाज़ा या तवाफ़े-जियारह कहा जाता है। और यह हज्ज का रुक्न (अंग) है।

30. ये (हैं हज्ज के मनासिक) और जो अल्लाह की ठहराई हुई हुर्मतों (अल्लाह की निर्धारित पाबन्दियों) का आदर करेगा तो यह उस के रब के यहाँ उस के लिए बेहतर है।[53] और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल ठहराए गए हैं, सिवाय उन के जिन का हुक्म तुम्हें सुना दिया गया है [54]। अतः बुतों की गन्दगी से बचो [55]। और झूठी बात से परहेज़ करो।[56]

ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ
وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا
الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ ﴿۳۰﴾

31. अल्लाह के वफ़ादार बन कर रहो । किसी को उस का साझीदार न ठहराओ ।[57] और जिस ने अल्लाह का साझीदार ठहराया वह गोया आसमान से गिर गया । फिर परिन्दे उसे उचक लें या हवा उसे ले जा कर किसी दूर दराज़ जगह फ़ेंक दे [58]।

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا
خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ
مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾

32. यह है (असल सच्चाई) और जो अल्लाह के निश्चित किये हुए (ईश-भक्ति के) निशानों का आदर करेगा तो यह बात हृदय की धर्मपरायणता से सम्बन्ध रखने वाली है ।[59]

ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ
تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾

33. तुम्हारे लिए इन (क़ुर्बानी के जानवरों) में एक निर्धारित समय तक लाभ हैं। फिर इन के क़ुर्बान करने की जगह उस पुरातन घर के पास है [60]।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ
مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿۳۳﴾

34. हम ने हर उम्मत के लिए क़ुर्बानी का एक तरीक़ा निर्धारित किया ताकि वह मवेशी चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उस ने उन्हें प्रदान किये हैं [61] तो तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है अतः अपने को उसी के हवाले कर दो।और (ऐ नबी !) विनम्रता अपनाने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो।[62]

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى
مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ ﴿۳۴﴾

35. जिन का हाल यह है कि जब उन के सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन के दिल दहल जाते हैं [63]।जो मुसीबत में सब्र करने वाले और नमाज़ क़ायम करने वाले हैं और जो रोज़ी हम ने उन्हें प्रदान की है उस में से वे ख़र्च करते रहते हैं।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى
مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ
وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

53. हुर्मतों में शआइर अर्थात् ईश-भक्ति की निशानियाँ भी शामिल हैं और मनासिक भी । ईश-भक्ति की निशानियों (शआइर) में काबा, मस्जिदे-हराम, सफ़ा मरवा, और क़ुर्बानी के जानवर जैसी निशानियाँ शामिल हैं और उन का आदर उसी प्रकार से अभीष्ट है जिस प्रकार से शरीअत में निर्धारित किया गया है। मिसाल के तौर पर सफ़ा और मरवा के आदर का तरीक़ा यह है कि उस के बीच सआी की जाए। इस सआी के दौरान आदमी सफ़ा और मरवा पर पाँव रखता है किन्तु उस पर पाव रखना उस का निरादर नहीं है। इसी प्रकार मस्जिदे-हराम से निकलते हुए आदमी की पीठ ख़ान-ए-काबा की तरफ़ होती है परन्तु यह उस के आदर और उस की प्रतिष्ठा के विरुद्ध नहीं। यदि कोई व्यक्ति इस को आदर के विरुद्ध समझ कर उलटे पाँव चलता है तो यह आदर नहीं बल्कि बिदअत (गुमराही) होगी। इसी प्रकार जो ग़िलाफ़ ख़ाना-ए-काबा पर चढ़ाया जाने वाला हो उस के लिए कोई जुलूस आदि का आयोजन करता है तो उस की गिनती भी बिदअत में ही होगी। क्यों कि आदर का यह तरीक़ा दीन में एक नये तरीक़े को निकालना है।

54. इशारा है सूरह नहल की आयत ११५ की ओर जिस में मुर्दार आदि को हराम ठहराया गया है। मवेशियों के हलाल होने का उल्लेख यहाँ ऊपर के बयान की मुनासिबत से किया गया है। अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि अल्लाह ने अपनी निर्धारित की हुई पाबन्दियों (हुर्मतों) का आदर करने का आदेश ज़रुर दिया है किन्तु भ्रम एवं अंधविश्वास के आधार पर लोगों ने स्वयं जो हलाल और हराम की सीमाऐं निर्धारित कर ली हैं उन के आदर का आदेश उस ने कदापि नहीं दिया है। मक्का के बहुदेववादियों ने बहीरा और साइबा आदि के नाम से जिन मवेशियों को हराम ठहराया था उस के ग़लत होने की ओर यह संकेत है। गाय की पावनता भी इसी हुक्म में है।

55. बुतों की गंदगी से तात्पर्य आस्था एवं आचरण की वह गन्दगी है जो मूर्ति पूजा के फ़लस्वरूप पैदा होती है। ऐसे लोग व्यर्थ के भ्रमों, अंधविश्वासों और मानसिक निकृष्टता में लिप्त रहते हैं।

मनुष्य के अन्तर्मन को पाक साफ़ करने वाली चीज़ एकेश्वरवाद की धारणा और ईमान ही है। बहुदेववाद तो मनुष्य के अन्तर्मन को गंदगियों से भर देता है।

56. बुत परस्ती और शिर्क अर्थात् सृष्टा का साझीदार ठहराने की धारणा के कारण मनुष्य ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहने लगता है जो बिलकुल झूठ और ग़लत होती हैं। ऐसे लोग मन गढ़ंत धार्मिक रीतियों को जन्म भी देते हैं और उसी के अनुसार आचरण भी करते हैं। और जब ऐसे लोगों के हाथों में सत्ता आ जाती है तो वे क़ानून बना बना कर अल्लाह के ठहराए हुए हलाल को हराम और उस के ठहराए हुए हराम को हलाल निर्धारित कर देते हैं।

हदीस में असत्य की गवाही (शहादते ज़ूर) को भयानक पाप बताया गया है

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اِلَّا اُنَبِّئُكُمْ بِاَ كْبَرِ الْكَبَائر ؟ قلنابلىٰ يا رَسُولَ اللّٰه ؟ قال : الاشراک باللّٰه ، وعُقُوقُ الوالدين، وَكَانَ مُتّكِئًافَجَلَسَ فَقَالَ : اَلَا وقولُ الزُّور و شهادةُ الزورِ۔ (بخاری کتاب الادب)

अर्थ : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि बड़े बड़े गुनाहों में से सर्वाधिक बड़े गुनाह कौन से हैं। हम ने अनुरोध किया ज़रुर ऐ अल्लाह के रसूल फ़रमाया: ''अल्लाह का साझीदार ठहराना और माता पिता से सम्बन्ध विच्छेद'' आप आराम से लेटे थे कि उठ बैठे और फ़रमाया सुनो झूठी बात और झूठी गवाही''।

57. अर्थात् तौहीद का रास्ता अपनाओ और उस पर जमे रहो, किसी भी प्रकार की बहुदेववादी आस्था के बग़ैर।

58. यह बहुदेववाद के अन्जाम का उदाहरण है। मनुष्य जब अल्लाह का साझी ठहराता है तो प्रकृति की ऊँचाईयों से गिरता है। बुलन्दी से गिरते ही उसे शैतान और उस के भाई बन्धु परिन्दों की भाँति उचक ले जाते हैं और उस की धज्जियाँ उड़ा देते हैं इस की दूसरी मिसाल यह है कि जब वह बुलन्दी से गिरा तो हवाओं ने उसे दूर ले जा कर किसी गढ़े में फेंक दिया। और सच्चाई यह है कि अल्लाह का साझीदार ठहराने की धारणा के फलस्वरुप मनुष्य अपनी असीमित एवं अनंत इच्छाओं का शिकार हो जाता है और इच्छाएं उसे नीचता की ओर ले जा कर विनाश के खड्डे में ढकेल देती हैं। अत: आप देखेंगे कि एक बहुदेववादी में कभी उच्च विचार अथवा उच्च धारणाएं उत्पन्न नहीं हो पातीं बल्कि यह मानसिक रुप से नीचता की ओर ही अग्रसर रहता है।

59. अर्थात् शआइर (ईश-भक्ति के चिन्हों) का आदर मात्र रस्मी बात नहीं है बल्कि इस का सम्बन्ध दिल की परहेज़गारी और हृदय की धर्मपरायणता से है ईश-भक्ति के चिन्हों को देख कर अल्लाह की महानता की धारणा मन में उत्पन्न होती है और अल्लाह की महानता की धारणा ईश-भय और परहेज़गारी पैदा करता है।

60. अर्थात् हुदी (हज्ज की क़ुर्बानी) के जानवर का दूध पिया जा सकता है और उन से सवारी का लाभ भी उठाया जा

सकता है। फिर उन को क़ुर्बान करने की जगह बैतुल्लाह के पास है। हदीस में कहा गया है कि क़ुर्बानी मिना में भी की जा सकती है और मक्का में भी !

وَكُلُّ مِنٰى مَنْحَرٌ وَكُلُّ فِجَاجِ مَكَّةَ مَنْحَرٌ۔

अर्थ: ''मिना पूरा क़ुर्बानगाह है और मक्का के तमाम रास्ते क़ुर्बान गाह हैं।'' (अबू दाऊद किताबुस्सियाम)

मतलब यह कि क़ुर्बान गाह बैतुल्लाह से लेकर मिना तक फैला हुआ है परन्तु चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्ज के अवसर पर मिना में क़ुर्बानी की थी इस लिए मिना में क़ुर्बानी करना मस्नून हैं और मस्जिदे हराम के ईर्द गिर्द प्रबन्ध की दृष्टि से यही उचित है।

61. अर्थात् इस से पहले दूसरी शरीअतों (ईश्वरीय संविधानों) में क़ुर्बानी के तरीक़े भिन्न भिन्न रहे हैं। जैसे अहले किताब में सोख़्ती क़ुर्बानी (हवन बली) की रीति प्रचलित थी (लैव्य व्यवस्था २२:१७ से ३३) किन्तु क़ुर्बानी का मूल उद्देश्य तमाम शरीअतों में यही था कि केवल अल्लाह के लिए क़ुर्बानी की जाए। उस के प्रदान किये हुए जानवरों को ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़बह करना या बलि चढ़ाना किसी शरीअत में भी वैध नहीं रहा। इस लिए जिन धर्मो में अल्लाह के सिवा किसी अन्य के लिए क़ुर्बानी की रीति प्रचलित है वह एक बहुदेववादी गुमराही है। अल्लाह के दीन और उस की शरीअत से उस का कोई सम्बन्ध नहीं।

62. यह है क़ुर्बानी की असल स्पिरिट कि आदमी तौहीद अर्थात् एक मात्र अल्लाह को माने और अपने आप को उस के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित कर दे और अपने अन्दर विनीत भाव के गुण पैदा करे। जानवर को ज़मीन पर गिरा देने का मतलब वास्तव में अपने आप को अल्लाह के आगे गिरा देना है।

63. यह ईमान वालों की महत्वपूर्ण विशेषता है कि जहाँ अल्लाह का ज़िक्र हुआ दिल कांप उठे। अल्लाह के मामले में वे बड़े भावुक होते हैं और उस के ज़िक्र से उन के दिल धड़कने लगते हैं।

ये लोग अपने घरों से नाहक निकाले गए मात्र इस कारण कि वे कहते हैं हमारा रब अल्लाह है और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के द्वारा हटाता न रहता तो ख़ानक़ाहें, गिरजे, उपासनागृह और मस्जिदें जिन में अल्लाह का ज़िक्र अधिक किया जाता है, ढा दी गई होतीं । अल्लाह ज़रुर उन की सहायता करेगा जो उस की सहायता करेंगे । निस्संदेह अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है। *(अल-क़ुर्आन)*

36. और क़ुर्बानी के ऊँटों को हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह की (भक्ति की) निशानियों में से ठहराया है [64]। तुम्हारे लिए इन में बेहतरी है तो इन्हें कतार में खड़ा कर के इन पर अल्लाह का नाम लो [65]। फिर जब वे अपने पहलुओं पर गिर पड़ें तो उन में से खाओ [66] और खिलाओ, कनाअत (संतोष) करने वालों और माँगने वालों को [67]। इस प्रकार हम ने इन को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है ताकि कृतज्ञ बनो।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ
فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا
فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾

37. अल्लाह को न इन का गोश्त पहुँचता है और न ख़ून बल्कि उस को तुम्हारा तक़वा पहुँचता है [68] इस प्रकार हम ने इन को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है ताकि तुम अल्लाह द्वारा हिदायत प्रदान करने पर उस की बड़ाई बयान करो [69]। और (ऐ नबी !) नेक लोगों को ख़ुशख़बरी दे दो।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا
وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا
لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

38. निस्संदेह [70] अल्लाह उन लोगों की प्रति रक्षा करेगा जो ईमान लाए हैं।अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो ख़ियानत (कपट) करने वाला और कृतघ्न हो।[71]

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾

39. उन लोगों को (जंग की)आज्ञा दी गई जिन के विरुद्ध जंग की जा रही है। क्यों कि वे मज़लूम हैं [72]। और अल्लाह उन की सहायता का पूरा सामर्थ्य रखता है

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿٣٩﴾

40. ये लोग अपने घरों से नाहक निकाले गए मात्र इस कारण कि वे कहते हैं हमारा रब अल्लाह है ।[73] और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के द्वारा हटाता न रहता तो ख़ानक़ाहें, गिरजे, उपासनागृह और मस्जिदें जिन में अल्लाह का ज़िक्र अधिक किया जाता है,ढा दी गई होतीं [74]। अल्लाह ज़रुर उन की सहायता करेगा जो उस की सहायता करेंगे [75]। निस्संदेह अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है।

الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ
اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ
فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾

64. यहूदी ऊँट के ज़बीहे को वैध नहीं समझते थे और बहुदेववादी ग़ैरुल्लाह के लिए ऊँट को सुनिश्चित किया करते थे। क़ुर्आन ने इस के विपरीत अल्लाह के नाम पर ऊँट का ज़ब्ह करना वैध ठहराया और इस की क़ुर्बानी को ईश-भक्ति की निशानियों में से ठहराया।

65. ऊँट के ज़ब्ह करने का तरीक़ा यह है कि उस को खड़ा कर के उस के हलक़ में बर्छी चुभो दी जाए। यह तरीक़ा नहर कहलाता है। इस तरह ख़ून बहने लगता है ऊँट आप ही आप अपने पहलू पर गिर जाता है। अगर ऊँट जैसे जानवर को लिटा कर ज़बह करने की आज्ञा होती तो उस में परेशानी होती। उन को पंक्तिबद्ध खड़ा करने में अल्लाह की इबादत की शान भी झलकती है।

66. अर्थात् ज़बह करने के बाद जब उन की जान निकल जाए तो उन का गोश्त खाने के काम में लाओ ।

67. हुदी (हज्ज) की क़ुर्बानी) का गोश्त ख़ुद भी खा सकते हैं और दूसरों को भी खिला सकते हैं। ज़रुरतमन्दों को चाहे वे अपनी आवश्यकता को प्रकट करने वाले हो या संतोष करने वाले हों, खिलाने के लिए खास तौर से कहा गया है।

68. यह है क़ुर्बानी का मूल उद्देश्य कि अल्लाह को उस का ख़ून और गोश्त नहीं चाहिए बल्कि तक़्वा (ईश-भय और परहेज़गारी) चाहिए है। और क़ुर्बानी की इबादत इसी लिए शरीअत में निर्धारित की गई है ताकि तक़्वा अर्थात् ईश-भय की भावना उत्पन्न हो।

क़ाबील की क़ुर्बानी क़ुबूल न होने का कारण यह था कि उस के पीछे ईश-भय और परहेज़गारी की भावना नहीं थी (देखिए सूरह माइदा २७).

69. इसी आज्ञा के पालन हेतु क़ुर्बानी के जानवर को ज़बह करते समय ''बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर'' (अर्थात् अल्लाह के नाम से अल्लाह सब से बड़ा है) कहा जाता है।

70. हज्ज का बयान ऊपर समाप्त हुआ। अब बात जिहाद की कही जा रही है जो अन्याय और अत्यचार को मिटाने के लिए भी आवश्यक है और मस्जिदे हराम को बहुदेववादियों के क़ब्ज़े से आज़ाद कराने के लिए भी।

71. जिहाद का हुक्म बयान करने से पहले अल्लाह तआला ने इस आयत में ईमान वालों को यह ख़ुशख़बरी सुनाई है कि वह उन की ओर से प्रति रक्षा करेगा। अर्थात् कुफ़्र और इस्लाम की जंग में अल्लाह तआला का समर्थन एवं सहायता ईमान वालों को प्राप्त होगी । और वह काफ़िरों की चालों को नाकाम कर देगा । ऐसा इस लिए करेगा कि वह पाखण्डियों, कपटियों और कृतघ्न लोगों को पसन्द नहीं करता । क़ुरैश और उन के साथी पाखण्डी एवं कृतघ्न हैं क्यों कि ख़ाना-ए-काबा की जो अमानत उन के सुपुर्द हुई थी उस में वे इस कपट और विश्वासघात के अपराधी हुए कि उस में बुत ला कर बिठा दिए। और अल्लाह तआला की नेमतों का आदर करने तथा उस का आभार मानने के बजाए उस का साझीदार ठहराने और उस के प्रति कृतघ्नता का मार्ग अपनाया ।

72. यह पहली आयत है जिस में जिहाद (अल्लाह की राह में जंग) करने की अनुमति दी गई है। यह सन १ हिजरी के अन्त की बात है। इस आयत में जंग की आज्ञा के दो कारण बयान किये गए हैं। एक यह कि मक्का के बहुदेववादियों ने ईमान वालों के विरुद्ध स्वयं जंग छेड़ दी है। अत: परिस्थिति यह थी कि जहाँ वे मौक़ा पाते मुसलमानों के एक न एक समूह पर हमला कर देते। अर्थात् मदीना में भी उन को शान्ति से बैठने नहीं दिया गया । बल्कि उन के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियों एवं आक्रमणों का आरम्भ कर दिया । (इस की तफ़्सील सीरत अर्थात् पवित्र जीवनी की किताबों में मिलती है) दूसरा कारण यह बयान हुआ है कि ईमान वाले मज़लूम हैं। उन का मज़लूम होना जग ज़ाहिर है। क्यों कि उन को नाहक अपना देश छोड़ने पर विवश कर दिया गया था । अब यदि वे अपने बचाव में तलवार उठाते हैं तो ऐसा करने में वे बिलकुल सही हैं ।

73. अर्थात् मक्का के बहुदेववादियों ने ईमान वालों को जो घर से बेघर किया उस का कारण केवल यह था कि वे तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद को मानते थे और अल्लाह का साझी ठहराने तथा मूर्तिपूजा से उन्हें अत्यंत घृणा थी । उन का यह गुण बहुदेववादियों की दृष्टि में न केवल ग़लत बल्कि अपराध था । मतलब यह कि अल्लाह के वफ़ादार बन्दों को अल्लाह की ज़मीन पर जीने का कोई अधिकार नहीं है।

74.यह अल्लाह तआला की उस सुन्नत (नियम) का एलान है जिस के अनुसार वह ज़ालिम और फ़सादी क़ौम का सर कुचलने के लिए किसी न किसी क़ौम को उठाता रहता है। और विश्व का इतिहास साक्षी है कि जब कोई जाति या समूह अन्याय करने पर उतर आता है तो उस को हटाने का समान किसी दुसरी जाति या समूह के द्वारा होता रहा है। इस की मसलहत यहाँ साफ़ साफ़ बता दी गई कि यदि ऐसा न होता तो वे इबादतगाह (उपासना गृह) जिन में अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है चाहे वह ईसाईयों की हों, यहूदियों की हो या मुसलमानों की हों, ज़ालिमों के हाथों कभी की विनष्ट हो चुकी होती ।

अल्लाह के इस नियम को बयान करने से अभिप्रेत यहाँ यह स्पष्ट करना है कि क़ुरैश ने मस्जिदे हराम की पवित्रता एवं प्रतिष्ठा को बाक़ी नहीं रखा और मदीना के मुसलमानों पर उस के दरवाज़े बन्द कर दिए हैं। उन के इस ज़ुल्म को मिटाने के

लिए अल्लाह तआला ईमान वालों के समूहों को मैदान में ला रहा है।

स्पष्ट रहे कि आयत में जिन इबादत गाहों का वर्णन हुआ है वे या तो ईसाईयों या यहूदियों से सम्बन्धित हैं या मुसलमानों से, क्यों कि इन में अल्लाह की चर्चा की जाती है। इस दृष्टि से वे आदर के योग्य हैं। रहे मूर्तिपूजकों के मन्दिर तो उन में अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया जाता बल्कि बुतों को पूजा जाता है इस लिए उन की दशा उक्त वर्णित उपासना गृहों से भिन्न है।

75. अल्लाह की सहायता करने का मतलब अल्लाह के दीन अर्थात् उस की प्रदान की हुई जीवन प्रणाली की सहायता करना और उस के कलिमे को बुलन्द करने के लिए जिहाद करना है। वरना अल्लाह किसी की मदद का मुहताज नहीं है बल्कि बन्दे उस की मदद के मुहताज हैं। आगे अल्लाह तआला के दो गुणों का वर्णन हुआ है। एक यह कि वह शक्तिशाली है और दूसरे यह कि वह प्रभुत्वशाली है। इस के बाद किसी ग़लत फ़हमी के लिए कोई गुन्जाईश बाक़ी नहीं रहती।

ये वे लोग हैं कि यदि हम इन्हें ज़मीन में सत्ता प्रदान करें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे; ज़कात देंगे; भली बात का हुक्म देंगे और बुराइयों से रोकेंगे। और तमाम मामलों का अन्जाम अल्लाह ही के इख़्तियार में है। और (ऐ नबी !) अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो इन से पहले नूह की क़ौम, आद और समूद की क़ौम ने भी झुठलाया था । और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम भी झुठला चुकी है। *(अल-क़ुर्आन)*

41. ये वे लोग हैं कि यदि हम इन्हें ज़मीन में सत्ता प्रदान करें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात देंगे, भली बात का हुक्म देंगे, और बुराइयों से रोकेंगे [76]। और तमाम मामलों का अन्जाम अल्लाह ही के इख़्तियार में है ।[77]

الَّذِينَ إِن مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَآتَوُا
الزَّكٰوةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ
الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

42. और (ऐ नबी !) अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो इन से पहले नूह की क़ौम, आद और समूद की क़ौम ने भी झुठलाया था [78]।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾

43. और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम भी झुठला चुकी है।

وَقَوْمُ إِبْرٰهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾

44. तथा मदयन वालों ने भी झुठलाया था ।[79] और मूसा भी झुठलाए गए थे [80]।तो मैं ने उन काफ़िरों को मुहलत दी फिर उन को पकड़ लिया। तो देखो कैसी रही मेरी सज़ा।

وَأَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۖ وَكُذِّبَ مُوسٰى فَأَمْلَيْتُ
لِلْكٰفِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾

45. और कितनी ही ज़ालिम बस्तियाँ हैं जिन को हम ने विनष्ट कर दिया तो वे अपनी छतों पर गिर गईं और कितने ही कुँऐं बेकार हो गए। और कितने ही पक्के महल (वीरान हो गए)![81]

فَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ﴿٤٥﴾

46. क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि उन के दिल समझने वाले और उन के कान सुनने वाले होते [82]। वास्तविकता यह है कि आँखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों के अन्दर हैं।[83]

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا
أَوْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصٰرُ
وَلٰكِن تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٤٦﴾

47. (ऐ पैग़म्बर !) ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं, हालांकि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है। और तुम्हारे रब के नज़दीक एक दिन तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष के बराबर है ।[84]

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَن يُخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا
عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾

48. और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन को मैं ने मोहलत दी और वे ज़ालिम थीं। फिर उन को पकड़ लिया । और मेरी ही तरफ़ सब की वापसी है।

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا
وَإِلَيَّ الْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾

76. यह इस बात का एलान था कि एक समूह ऐसा तैयार हो गया है जिस को यदि अल्लाह तआला सत्ता प्रदान करे तो वह नमाज़ और ज़कात जैसे दीन के मौलिक स्तंभों की स्थापना करने वाला होगा। वह बिगाड़ की जगह ज़मीन में सुधार का काम करेगा। भलाइयों को फैलाएगा और बुराइयों को मिटाएगा।

इस से यह बात पता चली की जो लोग इन गुणों से सुसज्जित हों वही सत्ता के उचित अधिकारी तथा शासन करने के पात्र हैं।

यह आयत पुष्टि करती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा दीक्षा के फलस्वरुप एक ऐसा समूह तैयार हो गया था जो ख़िलाफ़त का शासन चलाने के योग्य था। अत: जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अरब पर प्रभुत्व प्राप्त हुई तो आप के साथी इस पर खरे सिद्ध हुए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद जब ख़िलाफ़त का शासन चला तो वे इस का जीता जागता नमूना थे। परन्तु मुसलमानों का एक वर्ग हज़रत अली रजि. के बारे में अतिश्योक्ति कर के सहाबा की पूरी जमाअत को सिवाय चन्द सहाबियों के बुरा भला कहता है और तीनों ख़लीफ़ा को अपहारक ठहराता है। उन की यह धारणा इस बात से खुली विमुखता है जो इस आयत में बयान हुई है। और उन की गुमराही के लिए यह एक तर्क ही काफ़ी है।

77. अर्थात् किसी भी मामले का अन्तिम निर्णय अल्लाह ही के हाथ में है। इस लिए परिस्थितियाँ कैसी ही हों वह जो कुछ चाहता है सामने आ कर रहेगा यह संकेत था इस बात की तरफ़ कि ईमान वालों को अंतत: सत्ता प्राप्त होगी।

78. अर्थात् यह यदि आप को झुठला रहे हैं तो इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं। इस से पहले भी कितनी क़ौमें अपने समय के पैग़म्बरों को झुठला चुकी हैं। मिसाल के तौर पर नूह को उन की अपनी जाति के लोगों ने झुठलाया था। इसी प्रकार आद ने अपने पैग़म्बर हूद अलैहिस्सलाम को और समूद ने अपने पैग़म्बर स्वालेह अलैहिस्सलाम को झुठलाया था।

79. मदयन वालों ने अपने पैग़म्बर शुऐब अलैहिस्सलाम को झुठलाया था।

80. मूसा को उन की क़ौम बनी इस्राईल ने नहीं झुठलाया था बल्कि फ़िरऔन वालों ने झुठलाया था। इस लिए मजहूल का सीग़ा इस्तेमाल किया गया कि मूसा झुठलाए गए थे ।

81. उस ज़माने में जब कि क़ुर्आन नाज़िल हो रहा था विनष्ट क़ौमों के चिन्ह अरब के विभिन्न क्षेत्रों में मौजूद थे और यह इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण था कि नबियों को झुठलाने के नतीजे में ये क़ौमें और ये जातियाँ अल्लाह के प्रकोप की भागीदार हुईं। कुँऐं बियाबान में बड़ा महत्व रखते थे परन्तु जब बस्तियाँ तबाह हो गईं तो ये बेकार हो कर रह गए। इसी प्रकार शानदार महल वीरान हो गए।

82. अर्थात् ये लोग यात्रा करते रहते हैं और विनष्ट बस्तियों के चिन्हों को अपनी आँखों से देखते रहते हैं परन्तु कभी उन को इबरत की निगाह से नहीं देखते।

यही हाल आज कल के आधुनिक अनुसंधान करने वालों और पुरातत्वों का दर्शन एवं अवलोकन करने वालों का है कि वे इन चीज़ों को इस दृष्टि से देखते हैं कि इन गुज़रे लोगों ने कला के कैसे कैसे उदाहरण प्रस्तुत किये और उन की सभ्यता एवं संस्कृति क्या थी? रही यह बात कि उन्हों ने ज़मीन में बनाव का काम किया या बिगाड़ का? अपने प्रभु के प्रति कृतज्ञता का रवैया अपनाया या अकृतज्ञता का? उन्हों ने जो कला कृति प्रस्तुत की है वे आर्ट के हैं या ऐश्वर्य के। उन की संस्कृति, सांसारिक अथवा भौतिक़वादी थी या आख़िरत (परलोक) को अन्तिम लक्ष्य ठहराने वाली? तो इन मौलिक प्रश्नों से वे जूझते ही नहीं । क्यों कि उन को इन बातों में कोई रुचि ही नहीं होती । पुरिणाम यह कि वास्तविकता तक वे पहुँच ही नहीं पाते ।

83. दिल के अन्धा होने का मतलब बात को समझने की शक्ति से महरूम होना या समझने की शक्ति का उपयोग न करना अर्थात् हठ्धर्मी होना है। आदमी शरीर की आँखों से बाह्य चीज़ों को देखता हैं। परन्तु उन के अन्दर जो भेद निहित है उस को देखने के लिए दिल की आँखों की ज़रूरत होती है अर्थात् देखने की शक्ती के साथ बोध शक्ति की भी आवश्यकता होती है वरना सब कुछ देखने के बावजूद आदमी कुछ भी नहीं देखता । यही दिल का अंधापन है । आयत में जिस महत्वपूर्ण वास्तविकता की ओर संकेत किया गया है उस से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि मनुष्य की समस्त आन्तरिक शक्ति का केन्द्र हृदय है जो सीने के अन्दर होता है अर्थात् उस की अन्तरात्मा । हदीस में भी इस हक़ीक़त को खोल कर बयान किया गया है।

اَلَا وَاِنَّ فِی الْجَسَدِ مُضْغَةً اِذَا صَلُحَتْ صَلُحَ
الْجَسَدُ كُلُّهٗ وَاِذَافَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهٗ
اَلَا وَهِیَ الْقَلْبُ۔ (بخاری کتاب الایمان)

अर्थ: ''अच्छी तरह समझ लो कि शरीर में मांस का एक टुकड़ा है। यदि वह ठीक हो तो पूरा शरीर ठीक हालत में रहता है और यदि वह बिगड़ जाए तो पूरा शरीर बिगड़ जाता है। जान लो कि वह दिल है।'' (बुख़ारी किताबुलईमान)

और वास्तविकता भी यही है कि मनुष्य के समस्त सोच विचार, और भावनाओं का केन्द्र दिल ही है जब कि दिमाग़ की हैसियत एक सोचने वाले यंत्र और एक सहायक की है। प्रेम और घृणा, दोस्ती और दुश्मनी, सच्चा पन और कपटी पन, सौहार्द और कठोरता, पाठ सीखना और बेहिस होना जैसी बातें दिल से सम्बन्धित हैं। इस लिए यदि क़ुर्आन ने धारणा बनाने फिर उस के अनुसार कर्म करने के लिए मूल उत्प्रेरक दिल को बताया है तो उस ने वास्तव में एक बहुत बड़ी सच्चाई पर उंगली रखी है।

84. अर्थात् इस ग़लत फ़हमी में न रहो कि समय के जिस पैमाने से तुम अवगत हो और जिस के आधार पर शीघ्रता एवं विलम्ब का हुक्म लगाते हो, वही पैमाना अल्लाह के यहाँ भी है, नहीं बल्कि क़ौमों के साथ मामला करने में उस के नज़्दीक समय का पैमाना तुम्हारे पैमानों से बिलकुल भिन्न है। उस के नज़्दीक एक दिन तुम्हारे एक हज़ार वर्ष के बराबर है। मतलब यह कि क़ौम के लिए चन्द सालों की मोहलत कायनाती घड़ी के हिसाब से बस चन्द मिन्टों की मोहलत है।

अब तो यह बात मनुष्य की जानकारी में आ चुकी है कि विभिन्न गृहों में दिन की मात्रा ज़मीन के दिन की मात्रा से भिन्न होती हैं अत: यदि क़ुर्आन यह ख़बर देता है कि क़ौमों के साथ मामला करने के लिए समय का जो पैमाना अल्लाह तआला ने निर्धारित किया है उस के अनुसार एक दिन तुम्हारे एक हज़ार साल के बराबर हैं तो इस में आश्चर्य की क्या बात है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

(ऐ नबी !) कहो ऐ लोगो ! मैं इस के सिवा कुछ नहीं कि तुम्हें खुला सावधान करने वाला हूँ। तो जो लोग ईमान लाऐंगे और अच्छे कर्म करेंगे उन के लिए क्षमा है और इज़्ज़त की रोज़ी । और जिन लोगों की गतिविधियाँ हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए होंगी वे दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं । *(अल-क़ुर्आन)*

49. (ऐ नबी !) कहो ऐ लोगो ! मैं इस के सिवा कुछ नहीं कि तुम्हें खुला सावधान करने वाला हूँ।[85]

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾

50. तो जो लोग ईमान लाऐंगे और अच्छे कर्म करेंगे उन के लिए क्षमा है और इज़्ज़त की रोज़ी ।[86]

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾

51. और जिन लोगों की गतिविधियाँ हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए होंगी वे दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं [87]।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾

52. और (ऐ पैग़म्बर !) तुम से पहले हम ने जो रसूल और नबी भी भेजा है [88] (ज़रूर ऐसा हुआ है कि) जब उस ने तमन्ना की, शैतान ने उस की उमंग में विघ्न डाल दिया [89]। परन्तु अल्लाह शैतान के डाले हुए वस्वसों (शंकों) को मिटाता है, फिर अल्लाह अपनी आयतों को मज़बूत करता है [90]। और अल्लाह सर्वज्ञ एवं तत्वदर्शी है [91]।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى
اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ
ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾

53. (यह सूरत इस लिए सामने आती है) ताकि वह शैतान के डाले हुए वस्वसों को उन लोगों के लिए फ़िला (परिक्षा का साधन) बना दे जिन के दिलों में रोग है और जिन के दिल कठोर हैं [92]। निस्संदेह ये ज़ालिम विरोध में बहुत दूर निकल गए हैं।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ
لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾

54. और ताकि वे लोग जिन को ज्ञान प्रदान हुआ है, जान लें कि यह सत्य तुम्हारे रब की ओर से है और वे उस पर ईमान रखें, और उन के दिल उस के आगे झुक जाऐं [93]। निश्चय ही अल्लाह ईमान लाने वालों को सीधा मार्ग दिखाता है।

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ
فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

55. और कुफ़्र करने वाले तो उस की तरफ़ से संदेह में ही पड़े रहेंगे। यहाँ तक कि उन पर क़ियामत की घड़ी अचानक आ जाए या महरूमी के दिन का अज़ाब आ जाए [94]।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ
السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

56. उस दिन [95] बादशाही अल्लाह ही की होगी। वह उन के बीच फैसला करेगा। तो जो लोग ईमान रखते होंगे और अच्छे कर्म किये होंगे वे नेमत भरे बाग़ों में होंगे।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾

85. अर्थात् मेरा काम तो अल्लाह की अवज्ञा के कुपरिणाम से आगाह कर देना है उस के बाद मानना या न मानना तुम्हारा काम है।

86. अर्थात् आख़िरत में ईमान वालों को जो रोज़ी मिलेगी वह न केवल उत्तम एवं उत्कृष्ट होगी, बल्कि सम्मान के साथ मिलेगी ।

87. यह बात मूँल रुप से काफ़िरों के लिए कही गई थी परन्तु मौजूदा ज़माने में ऐसे मुसलमानों की कमी नहीं जो अपने राजनीतिक एवं सांसारिक लाभों के चलते क़ुर्आन के आदेशों और उस की शिक्षाओं को नीचा दिखाने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगाते हैं। यह समझना सही नहीं कि क़ुर्आन में जो बातें काफ़िरों के बारे में कही गई हैं वे मात्र पैदाइशी तौर पर काफ़िरों ही के लिए हैं बल्कि वे उसूली बातें हैं और एक मुसलमान का किसी काफ़िर जैसा तौर तरीक़ा अपनाना उतना ही अप्रिय एवं निन्दनीय हैं जितना कि एक ग़ैर मुस्लिम का उस को अपनाना।

88. रसूल और नबी में पद की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है अलबत्ता जिम्मेदारियों की दृष्टि से थोड़ा अन्तर है। हर रसूल नबी होता है। परन्तु उस की ज़िम्मेदारियां एक नबी से बढ़ कर होती हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी भी थे और रसूल भी। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह मरयम नोट ७१)

89. किसी भी रसूल और नबी की अभिलाषा यही होती हैं कि जिस सत्य को ले कर वह आया है उस को लोग स्वीकार कर लें। परन्तु जब वह अपनी दअवत लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है तो शैतान लोगों के दिलों में वस्वसा पैदा कर के पैग़म्बर और उस की दअवत के बारे में शंकाओं और संदेहों को उत्पन्न कर देता है और लोगों को उस सत्य के विरोध पर उकसाता है। इस प्रकार शैतान पैग़म्बर की उमंग में विघ्न डालता है और उन की राह में रुकावटें खड़ी कर देता है। आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ भी यही कुछ हुआ। एक ओर आप की हार्दिक अभिलाषा यह थी कि आप की पूरी क़ौम आप पर ईमान लाए और सच्ची दअवत को स्वीकार कर के अल्लाह की दया की पात्र बन जाए। और दूसरी ओर क़ौम का रवैय्या यह था कि आप की दअवत को सहन करने के लिए किसी भी तरह तैयार न थी। यहाँ तक कि आप को मक्का से हिजरत करने पर विवश कर दिया। इस अवसर पर आप को तसल्ली देते हुए स्पष्ट किया गया कि आप के साथ जो मामला पेश आ रहा है वह कोई नई बात नहीं है। पैग़म्बरों के साथ हमेशा यही मामला पेश आता रहा है।

90. अर्थात् अल्लाह तआला ऐसे हालात पैदा करता है कि शैतान के डाले हुए वस्वसे एवं भ्रम मिट जाते हैं और सत्य इस प्रकार निखर कर सामने आ जाता है जैसे बादलों के छट जाने से चाँद पूरी तरह सामने आ गया हो!

क़ुर्आन की यह बात अक्षरश: पूरी हुई। शैतान के वस्वसों के फलस्वरूप जो शंकाऐं और संदेह उत्पन्न हो गए थे वे दूर हो गए और सत्य धर्म इस प्रकार उजागर हो गया कि उस पर कोई धूल और कोई ग़ुबार न था ।

91. अल्लाह के इन दो गुणों को यहाँ बयान करने से अभिप्रेत इस बात की ओर संकेत करना है कि यह जो कुछ नबी के साथ पेश आता है वह मसलहत से खाली नहीं होता। अल्लाह तआला अपने नबी के साथ जो मामला करता है वह तत्व और ज्ञान पर आधारित होता है। अत: विश्वास रखो कि शैतान ने जो बुराई और फ़ितने का बीज बोया है उस के मुक़ाबले में अल्लाह ख़ैर और भलाई उभारेगा ।

आयत का जो भाव हम ने ऊपर बयान किया वह न केवल प्रसंग एवं संदर्भ के अनुकूल है बल्कि इस से मिलती जुलती जो बातें क़ुर्आन में दूसरी जगहों पर बयान हुई हैं उस से भी मेल खाता है। किन्तु कुछ मुफ़स्सिरीन ने एक मौज़ू (गढ़ी हुई) हदीस का सहारा ले कर इस का यह भावार्थ बताया है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुदेववादियों को सूरह ''वन्नज्म'' सुना रहे थे जिस में मूर्ति पूजा का खण्डन तथा उस की निन्दा की गई है तो शैतान ने आप की ज़बान पर बुतों के लिए प्रशंसा के शब्द जारी कर दिए। यही शैतान का दिल में उतरना था जिस को अल्लाह तआला ने बाद में निरस्त कर दिया जैसा कि बाद की आयत में बयान हुआ है।

यह रिवायत इब्न ज़रीर तबरी ने अपनी तफ़सीर ''जामिउल बयान'' में जो अरबी की प्रसिद्ध और प्राचीनतम तफ़्सीर है, बग़ैर जांचे परखे बयान कर दी। इस के बाद कुछ दूसरे मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने ''मक्खी पर मक्खी चिपकाने का काम किया किन्तु अधिकतर मुफ़स्सिरीन, मुहद्दिसीन और उलमा ने इस का सख़्त नोटिस लिया और इस रिवायत को गढ़ी हुई (मौज़ू) और ग़लत बताया । अत: इमाम राज़ी ने अपनी तफ़सीर में इस पर विस्तार से बहस करते हुए लिखा है कि वह क़िस्सा गढ़ा हुआ है। (तफ़्सीर कबीर जिल्द २३ पृष्ट ५१)

अल्लामा इब्ने कसीर लिखते हैं:-

''इस किस्म की सारी रिवायतें मुर्सल (असम्बद्ध) हैं और मेरे देखने में नहीं आया कि कहीं सही प्रमाण के साथ क्रम से बयान हुआ है।'' (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ट २२९)

और अल्लामा आलूसी अपनी तफ़्सीर रूहुल मआनी में लिखते हैं:-

''बहुत से शोधकर्ताओं ने इस क़िस्से को अस्वीकार्य बताया

है। बैहक़ी कहते हैं, यह क़िस्सा बुद्धि संगत नहीं सिद्ध होता और क़ाज़ी अयाज़ ''अश्शिफ़ा में फ़रमाते हैं इस हदीस को बेवज़न क़रार देने के लिए यह बात काफ़ी है कि इस को अहले-सेहत (असहाब सिहाह सित्ता) में से किसी ने बयान नहीं किया और न किसी सिक़्क़ा रावी (विश्वस्नीय उल्लेखकर्ता) ने इसे सही माना और न क्रम वार प्रमाण के साथ बयान किया है। बल्कि इस से केवल ऐसे मुफ़स्सिरीन और इतिहासकारों को दिलचस्पी रही है जिन्हें हर कमज़ोर रिवायत से दिलचस्पी होती है और जो किताबों से हर सही और ग़लत रिवायत को उद्धृत करते हैं और यह ''बहर'' में है। इस क़िस्से के बारे में इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ ''अस्सीरतुन्नब्विय:'' के संकलन कर्ता से पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया यह ज़िन्दीकों (अधर्मियों) का गढ़ा हुआ है।''(रूहुल मआनी जिल्द ६ पृष्ट १७७)

अल्लामा आलूसी ने इस क़िस्से के खण्डन में विस्तार से बहस करने के बाद लिखा है कि हमारे लिए यह मान लेना आसान है कि शैतान ने कुछ उल्लेख कर्ताओं की ज़बान पर यह बात चढ़ा दी थी, बनिस्बत इस के कि रसूलल्लाह कि ज़बान पर शैतान ने बुतों की प्रशंसा की बात चढ़ा दी थी। (देखिए रूहुलमआनी जिल्द २ पृष्ट १८२)

उर्दू में अल्लामा शिब्ली अपनी शोध कृति ''सीरतुन्नबी'' में इस क़िस्से को बेहूदा बताते हुए लिखते हैं :-

''यह क़िस्सा यद्यपि शुरू से अन्त तक बेहुदा और बयान करने योग्य नहीं। और अधिकांश बड़े मुहद्दिसीन (हदीस शास्त्रियों) बैहक़ी, क़ाज़ी अयाज़, अल्लामा ऐनी, हाफ़िज़ मुन्ज़री, अल्लामा नोवी ने इस को ग़लत और मनगढ़ंत बताया है किन्तु अफ़सोस यह है कि बहुत से मुहद्दिसीन ने इस रिवायत को सप्रमाण नक़ल किया है।'' (सीरतुन्नबी जिल्द १ पृष्ट २२४)

और मौलाना मौदूदी रह. ने अपनी बड़ी तफ़सीर तफ़्हीमुल क़ुर्आन में इस पर सविस्तार एवं तार्किक बहस करते हुए इस रिवायत की धज्जियाँ उड़ा दी हैं और अंत में लिखा है:

'' ख़ुदा की पनाह इस रिवयत परस्ती से जो मात्र प्रमाणों का क्रम या उल्लेख कर्ताओं की विश्वस्नीयता या तुरुक़ रिवायत की अधिकता को देख कर किसी मुसलमान को ख़ुदा की किताब और उस के रसूल के बारे में ऐसी सख़्त बातें मान लेने पर आमादा कर दे। (तफ़्हीमुल क़ुर्आन जिल्द ३ पृष्ट २४४)

वास्तव में यह रिवायत इतनी बेहूदा है कि इस को बयान करना भी तबीयत पर भारी गुज़रता है इस लिए हम ने इस को पूरी तरह नक़ल भी नहीं किया बल्कि उस का सार बयान करने पर संतोष किया। यह रिवायत क़ुर्आन के स्पष्टीकरण के बिलकुल विरुद्ध और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़ुला बुहतान है। इस लिए इस को रद् करने के लिए यह एक बात ही काफ़ी है। परन्तु जो लोग उल्लेखों को सही मानने और फिर उसे सही सिद्ध करने की मानसिकता वाले हैं वे किसी न किसी बहाने एक ऐसी बात को भी स्वीकार कर लेते हैं जो क़ुर्आन के विरूद्ध होती है। वे उल्लेखतकर्ताओं पर कोई आँच नहीं आने देना चाहते, चाहे उस उल्लेख से पैग़म्बर का ही व्यक्तित्व धूमिल क्यों न हो जाए। हदीस को स्वीकार करने का यह आदर्श सरासर ग़लत है चाहे हदीस का कोई विशेषज्ञ ही इस को सही सिद्ध करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर क्यों न लगाऐं। क़ुर्आन कसौटी है इस लिए जो रिवायत इस कसौटी पर खोटी सिद्ध हो वह रिवायत ग़लत है। ऐसी रिवायत को हदीस की बहसों में उलझा कर सही सिद्ध नहीं किया जा सकता।

और जहाँ तक इस आयत की बात है (जिस की व्याख्या चल रही है) उस में तो यह बात साधारण रूप से बयान हुई है कि शैतान किस प्रकार एक नबी की उमंग में विघ्न डालता है। यह ऐसी बात है जैसी सूरह अनआम आयत ११३, और ११४ में बयान हुई है। इस लिए कोई कारण नहीं कि इस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ख़ास बताया जाये और न इस संकोच की ज़रुरत है कि तमन्ना का अर्थ सामान्य रुप से प्रचलित अर्थ से हट कर पढ़ने के लिए जाऐं जैसा कि कई मुफ़स्सिरों ने लिये हैं। इस के अलावा जो क़िस्सा बयान किया जाता है वह मक्की दौर से सम्बन्ध रखता है और उस का ज़माना हब्शा की हिज़रत के कुछ मुद्दत बाद का बताया जाता है।

जब कि सूरह हज्ज मदीने का अवतरण है जैसा कि इस के मज़मून (हिजरत, जिहाद, आदि के अहकाम और हज्ज से मुसलमानों को रोक देने के बयान) से स्पष्ट है इस लिए इस सूरह का इस आयत के नाज़िल होने की उक्त पृष्टभूमि से कोई सम्बन्ध नहीं हैं जो इस क़िस्से में बयान हुई है।

92. अर्थात् अल्लाह तआला इन हालात से नबी को इस लिए गुज़ारता है कि शैतान के डाले हुए वस्वसे उन लोगों के लिए परीक्षा का कारण बन जाऐं जिन के दिलों में बीमारी है और जिन के दिल कठोर हो गए हैं। रोग से तात्पर्य वैमनस्यपूर्ण एवं अपराधिक मानसिकता है और दिलों के कठोर होने का मतलब यह है कि नसीहत उन पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ती। यह परिणाम है उसी अपराधिक मानसिकता का। ऐसे लोग जब शैतान के डाले हुए संदेहों के द्वारा आज़माईश में पड़ते हैं तो वे उस के फ़ितने का शिकार हो जाते हैं और उन के दिलों का खोट उभर कर सामने आ जाता है। और उन के विरोध में तेज़ी आ जाती है।

93. अर्थात् जो लोग जिहालत के अन्धकार में नहीं रहते

बल्कि ज्ञान के प्रकाश में चलते हैं वे जब देखते हैं कि वातावरण शंकाओं एवं संदेहों से प्रदूषित हो गया है तो समझते हैं कि यह सब शैतान द्वारा फैलाया गया फ़ितना है और नबी की दअवत सही है। सत्य और असत्य की यह कशमकश उन के लिए असंभावित नहीं होती। और इस कशमकश को देख कर उन के ईमान और अधिक मज़बूत हो जाते हैं कि इस आज़माइश के पीछे उस की बहुत बड़ी हिकमत छिपी हुई है।

94. अर्थात् जो लोग हठधर्मी में लिप्त हैं वे पैग़म्बर की बात किसी दलील से मानने वाले नहीं । वे अपने इन्कार पर जमे रहेंगे। और उन की आँखें उस समय खुलेंगी जब वे क़ियामत को देख लेंगे या उस अज़ाब (यातना) को जो कुफ्र पर चलते रहने के कारण उन पर आएगा।

महरूमी के दिन से अभिप्रेत भलाइयों से महरूमी के दिन अर्थात् विनाश का दिन है।

95. तात्पर्य क़ियामत का दिन है।

57. और जिन्हों ने कुफ्र किया होगा और हमारी आयतों को झुठलाया होगा उन के लिए अपमानित करने वाला अज़ाब होगा।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۵۷﴾

58. और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में हिजरत की।[96] फ़िर क़त्ल कर दिए गए या मर गए अल्लाह उन को ज़रूर अच्छी रोज़ी देगा [97] और निस्संदेह अल्लाह ही बेहतरीन रोज़ी देने वाला है।

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا
لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۵۸﴾

59. वह उन्हें ऐसी जगह दाख़िल करेगा जिस से वे ख़ुश हो जाऐंगे [98]।निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञ और सहनशील है [99]।

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ
حَلِيْمٌ ﴿۵۹﴾

60. यह है (उन लोगों का बदला) और जो कोई बदला ले, वैसा ही जैसा कि उस के साथ किया गया, फिर उस पर ज़्यादती की जाए तो अल्लाह ज़रुर उस की मदद करेगा [100] अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।[101]

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ
ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿۶۰﴾

61. यह इस लिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में।और अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है।[102]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ ۢ بَصِيْرٌ ﴿۶۱﴾

62. तथा इस लिए भी कि अल्लाह ही सत्य है और वे चीज़े असत्य हैं जिन को ये लोग अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हैं [103]।और अल्लाह ही उच्च और महान है।[104]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۶۲﴾

63. क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है तो ज़मीन हरी भरी हो जाती है। निश्चय ही अल्लाह सुक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।[105]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۡ فَتُصْبِحُ
الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿۶۳﴾

64. उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और निस्संदेह अल्लाह बेनियाज़ और ख़ूबियों वाला है, प्रशंसा के योग्य।[106]

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۶۴﴾

65. क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने ज़मीन की सारी चीज़े तुम्हारे लिए वशीभूत कर दी हैं [107]और नौका को,कि समुद्र में उस के हुक्म से चलती है।वह आसमान को थामे हुए है कि ज़मीन पर गिर न पड़े मगर उस के हुक्म से। निस्संदेह अल्लाह लोगों के लिए बड़ी दया रखने वाला और बड़ी रहमत वाला है।[108]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ
فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ
اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۶۵﴾

96. हिजरत इस्लाम में वही स्वीकार्य है जो अल्लाह की राह में हो अर्थात् जो ख़ालिस अल्लाह के लिए और उस के दीन के तक़ाज़ों को पूरा करने के उद्देश्य से की गई हो हदीस में आता है:-

اِنَّمَا الاَعْمَالُ بِالنِّيَةِ وَ اِنَّمَا لِاِمْرِئٍ مَّانَوىَ فَمَنْ كَانَتُ هجرتُهُ اِلٰى اللّٰهِ و رسُولِهِ فهجر تُهُ الى اللّٰهِ و رسولِهِ وَمَنْ كَانَتُ هِجرتُهُ الىٰ دُنيَا يُصِيبُهَا اَوْ اِمْرَاةٍ يتزوجها فهجرتُهُ الى مَاهَا جرَ اِلَيْهِ ۔ (بخاری کتاب الایمان والنذر)

अर्थ: ‘‘सारे कर्म नीयतों पर निर्भर हैं। आदमी के लिए वही है जिस की वह नीयत करे। तो जिस की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ हो । उस की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल ही की तरफ़ है। और जिस की हिजरत संसार या किसी स्त्री से विवाह की नीयत से हो तो उस की हिजरत उसी चीज़ की तरफ़ है जिस के लिए उस ने हिजरत की। (बुखारी किताबुल ईमान वन्नज़्र)

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट १७७)

97. मुराद आख़िरत की रोज़ी है।

98. मुराद जन्नत है।

99. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह जानता है कौन लोग उस के इनाम के पात्र हैं और वह उन के साथ बड़े ही बड़प्पन (आला ज़रफ़ी) का सुलूक करेगा।

100. आयत का मतलब यह है कि जिन लोगों ने अल्लाह की राह में हिजरत की उन के लिए आख़िरत में यह इनाम है। रही उन की मज़लूम ज़िन्दगी तो अल्लाह तआला दुनिया में भी उन मज़लूमों की सहायता करेगा।

हिजरत के बाद मक्का के बहुदेववादियों ने मदीना के मुसलमानों के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियाँ शुरु कर दी थीं जैसा कि आयत ३९ से स्पष्ट है। मदीना के बाहर सफ़र करने वाले मुसलमानों पर उन के हमलों का ख़तरा बढ़ता जा रहा था। इस मौक़े पर मुसलमानों को इस आयत के द्वारा हिदायत दी गई कि ज़्यादती के जवाब में वे वैसी ही ज़्यादती कर सकते हैं और अगर इस के बाद ज़्यादतियों का सिलसिला नहीं रुका तो अल्लाह तआला मज़लूमों का समर्थन अपनी विशेष सहायता द्वारा करेगा । अत: जब मक्का के बहुदेववादियों की आंतकवादी गति विधियों का क्रम नहीं रुका तो उन्हों ने मज़लूम ईमान वालों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया तो बद्र की जंग में ईमान वालों के लिए अल्लाह की मदद नाज़िल हुई।

101. यह मज़लूम ईमान वालों के लिए तसल्ली है कि अल्लाह उन के गुनाहों को माफ़ कर देगा और उन्हें बख़्श देगा।

102. अर्थात् जो हस्ती रात और दिन के हेर फेर पर सामर्थ्य रखती है वह निश्चय ही इस बात पर भी सामर्थ्य रखती है कि ज़ुल्म की घटाओं को समाप्त कर के इन्साफ़ की हवाऐं चलाए। फिर वह अपने मज़लूम वफ़ादार बन्दों की सहायता क्यों नहीं करेगा जब कि वह सब कुछ सुन भी रहा है और देख भी रहा है।

103. अर्थात् बहुदेववादी अपने जिन पूज्यों को पुकारते हैं वे ग़लत हैं, किसी की सहायता करने पर वे कदापि सामर्थ्य नहीं रखते। किन्तु अल्लाह वास्तविक पूज्य है और वह सहायता करने पर पूरी तरह समर्थ है फिर वह कुफ़्र और इस्लाम की इस कशमकश में ईमान वालों की सहायता क्यों नहीं करेगा।

104. यहाँ अल्लाह की दो विशेषताऐं अली, और कबीर बयान हुई हैं। अली की विशेषता उस की उच्चता को स्पष्ट करती है और कबीर की विशेषता उस के सामर्थ्य और उस की प्रभुत्व की महानता को।

अल्लाह का साझी ठहराने वाले अल्लाह से ऐसी ऐसी बातें जोड़ देते हैं जो उस की शान के भी विरुद्ध होती है और उस की संप्रभुत्व के विपरीत भी। दूसरे शब्दों में वे अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि उस के सर्वोच्च और महान होने को नकारते हुए । जब कि अल्लाह को उसी तरह से मानना सही एवं स्वीकार्य है जिस से उस के उन गुणों का खण्डन न होता हो जो क़ुर्आन में बयान हुए हैं।

105. अर्थात लोग बारिश और ज़मीन के हरित होने के दृश्य को देखते हैं परन्तु सोच विचार नहीं करते, यदि सोच विचार करते तो ख़ुदा की सही पहचान उन्हें हो जाती। सूखी ज़मीन का, बारिश के छींटे गिरते ही फल फूल जाना इस बात का प्रतीक है कि यह सब एक ऐसी हस्ती का किया धरा है जो अतिसूक्ष्म तदबीर करने वाली और हालात से अवगत रहने वाली है। अत: ख़ुदा के बारे में इस धारणा के लिए कोई गुन्जाइश नहीं कि उस ने दुनिया को तो पैदा किया किन्तु अब उस की दुनिया में क्या हो रहा है उस की न उसे ख़बर है और न उस से उसे कोई सरोकार।

106. जो हस्ती पूरी कायनात की मालिक हो वह कब किसी चीज़ की मोहताज़ हो सकती है। इस लिए अल्लाह का यह गुण कि वह हर प्रकार की ज़रुरतों से बेनियाज़ है एक स्पष्ट वास्तविकता है। और यह सत्य बिलकुल खुला हुआ है कि कमाल और गुणों से सुसज्जित तथा प्रशंसा के योग्य है।

107. अर्थात् तुम्हारी सेवा में लगा दी हैं।

108. आकाश के तारों एवं नक्षत्रों का विशाल आकाश में तैरते रहना और आसमान का छत के रुप में टिका रहना इस तरह से कि कभी उस का कोई टुकड़ा ज़मीन पर न गिरे क्या यह विश्वास मनुष्य में नहीं पैदा करता कि कायनात का रब मनुष्य के प्रति अतयंत कृपालु एवं दयावान है।

66. वही है जिस ने तुम को जीवन प्रदान किया फिर वही तुम को मौत देता है और वही तुम को फिर ज़िन्दा करेगा। वास्तव में इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा (अकृतज्ञ) है [109]।

وَهُوَ الَّذِيٓ اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾

67. हर उम्मत (समुदाय) के लिए हम ने इबादत का एक तरीक़ा निर्धारित किया था जिस पर वे चल रही हैं [110]। अतः इस मामले में वे तुम से न झगड़े [111]।तुम अपने रब की ओर बुलाओ [112]। निश्चय ही तुम सीधी राह पर हो [113]।

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي
الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ۗ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

68. और यदि वे तुम से झगड़ें तो कह दो अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

وَاِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

69. अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच इस बात का फ़ैसला कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

70. क्या तुम नहीं जानते कि आसमान और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह उस को जानता है।यह सब एक किताब में दर्ज है [114]। निस्संदेह यह अल्लाह के लिए बहुत ही आसान है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ ۗ
اِنَّ ذٰلِكَ فِي كِتٰبٍ ۗ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

71. ये लोग अल्लाह को छोड़ कर उन चीज़ों की पूजा करते हैं जिन के लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और न उन के बारे में उन को कोई ज्ञान ही है [115]। उन ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا
وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ نَّصِيرٍ ﴿٧١﴾

72. और जब उन को हमारी साफ़ साफ़ आयतें सुनाई जाती हैं तो तुम देखते हो कि उन के चेहरों से नागवारी झलक रही है [116]। जैसे कि वे उन लोगों पर हमला कर बैठेंगे जो हमारी आयतें उन को सुनाते हैं। कहो मैं तुम्हें बताऊँ कि इस से भी बदतर चीज़ क्या है? आग जिस का अल्लाह ने काफ़िरों से वादा कर रखा है [117]।वह बहुत बुरा ठिकाना है।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِي
وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۗ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ
يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۗ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۗ
اَلنَّارُ ۗ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

109. जीवन बहुत बड़ी नेमत है जिसे अल्लाह तआला ने मनुष्य को प्रदान किया है। और दूसरा जीवन वास्तव में पूरी तरह नेमत हैं बस शर्त यह है कि मनुष्य इस नेमत के मूल्य को पहचान ले और उस के अनुसार अपनी ज़िम्मेदारी को अदा करे। रही बात मौत की तो वह इस अस्थायी जीवन और उस अनन्त जीवन के बीच का एक चरण है। परन्तु इस वास्तविकता पर ध्यान न दे कर मनुष्य जीवन की अमूल्य नेमत को नष्ट कर देता है और अपने प्रभु का अवज्ञाकारी एवं अकृतज्ञ बनता है।

110. इस सूरह में हज्ज के जो मानसिक बयान किये गए हैं उस पर कुछ लोगों की ओर से और विशेष रुप से मदीना के यहूदियों की ओर से यह एतिराज़ किया गया होगा कि यदि इबादत का यह तरीक़ा अल्लाह की ओर से निर्धारित है तो दूसरे नबियों की उम्मतों में अल्लाह की इबादत के दूसरे तरीक़े किस प्रकार प्रचलित हो गए। जैसे यहूदियों की शरीअत में क़ुर्बानी का तरीक़ा तो है लेकिन ऊँट की क़ुर्बानी को ईश-भक्ति की निशानियों में से नहीं ठहराया गया। इसी प्रकार क़ुर्बानी के लिए हज्ज के दिन ख़ास नहीं किये गए। या यह कि यहूद के यहाँ सब्त मनाने का हुक्म है लेकिन क़ुर्आन की शरीअत में यह हुक्म नहीं दिया गया है। इसी संदेह को दूर करने के लिए यहाँ फ़रमाया गया कि हम ने हर उम्मत (समुदाय) के लिए इबादत का एक तरीक़ा निर्धारित किया था जिस पर वे चलती रहीं।

मतलब यह है कि अल्लाह की इबादत के तौर तरीक़े निर्धारित करने में हालात के हिसाब से अन्तर रहा है। अब यदि अल्लाह की हिकमत का यह तक़ाज़ा हुआ कि आख़िरी नबी की उम्मत के लिए एक ख़ास इबादत का तरीक़ा निर्धारित कर दिया जाए तो इस पर किसी को आपत्ति व्यक्त करने का क्या अधिकार है? क्या अल्लाह की इबादत का तरीक़ा निर्धारित करने में लोगों की इच्छाओं का हस्तक्षेप होना चाहिए या अल्लाह को यह हक़ है कि वह जो तरीक़ा चाहे निर्धारित कर दे।

111. अर्थात् यह उसूली वास्तविकता इन लोगों के सामने प्रस्तुत करना काफ़ी है। इस मसले पर अतिरिक्त बहस की आवश्यकता नहीं ।

112. अर्थात् अल्लाह की इबादत के तौर तरीक़ों में विभेद के मसले पर बहस को तूल देने के बजाय असल दअवत को प्रस्तुत करने का काम करते रहना चाहिए।

113. अर्थात् ऐ पैग़म्बर जिस इबादत के तरीक़े को तुम अपनाए हुए हो वह उस वह्य (प्रकाशना) के अनुकूल है जो तुम पर उतारी गई है इस लिए तुम हिदायत पर हो और हिदायत की यही राह है जो सीधी अल्लाह तक पहुँचती है।

114. यह बहुदेववाद के खण्डन के लिए जो आगे की जा रही है तमहीद है कि अल्लाह जिस को कायनात में पाये जाने वाले कण कण की जानकारी है और जिस ने कायनात की समस्त वस्तुओं एवं घटनाओं के रेकार्ड को सुरक्षित करने का सामान किया है उस के ज्ञान में तो यह बात नहीं है कि कहीं किसी अन्य ख़ुदा का अस्तित्व है। अगर कहीं और कोई ख़ुदा या देवी देवता होते तो उस को इस की ख़बर कैसे नहीं होती?

115. अर्थात् अल्लाह के सिवा किसी अन्य के पूज्य योग्य होने के बारे में न अल्लाह की प्रकाशना का कोई प्रमाण मौजूद है और न कोई बौद्धिक एवं स्वभाविक तर्क जिस को ज्ञान की श्रेणी में रखा जा सके।

116. चूँकि अल्लाह की आयतों में ख़ालिस तौहीद का ज़िक्र होता है और उन के पूज्यों को ग़लत बताया जाता है इस लिए आयतों को सुन कर उन के चेहरे बिगड़ने लगते हैं तथा उन से नागवारी झलकने लगती है।

117. अर्थात् इस नागवारी से भी बदतर चीज़ ! मतलब यह है कि नागवारी की बदतरीन हालत वह होगी जो तुम दोज़ख़ (नरक) में पाओगे।

73. लोगो ! एक मिसाल बयान की जाती है, ध्यान से सुनो ! अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब उस के लिए इकट्ठा ही क्यों न हो जाऐं [118]। और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वे उस से छुड़ा भी नहीं सकते [119]। (सहायता) चाहने वाला भी कमज़ोर और जिन से (सहायता) चाही वह भी कमज़ोर [120]।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَٱسْتَمِعُوا۟ لَهُۥٓ ۚ إِنَّ ٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ لَن يَخْلُقُوا۟ ذُبَابًا وَلَوِ ٱجْتَمَعُوا۟ لَهُۥ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ ٱلذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ ٱلطَّالِبُ وَٱلْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾

74. उन्हों ने अल्लाह की क़दर नहीं पहचानी जैसा कि उस के पहचानने का हक़ है। निस्संदेह वह शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली है। [121]

مَا قَدَرُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦٓ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَقَوِىٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾

75. अल्लाह फ़रिश्तों में से भी संदेशवाहक चुनता है और मनुष्यों में से भी [122]। वह सुनने वाला और देखने वाला है।[123]

ٱللَّهُ يَصْطَفِى مِنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ ٱلنَّاسِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌۢ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾

76. वह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है। और सारे मामले अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाते हैं।[124]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرْجَعُ ٱلْأُمُورُ ﴿٧٦﴾

77. ऐ ईमान वालो ![125] रूकू करो, सज्दा करो [126] अपने रब की इबादत करो [127] और भलाई के काम करो [128] ताकि तुम सफल हो !

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱرْكَعُوا۟ وَٱسْجُدُوا۟ وَٱعْبُدُوا۟ رَبَّكُمْ وَٱفْعَلُوا۟ ٱلْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۩ ﴿٧٧﴾ السجدة

78. और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा कि जिहाद करने का हक़ है।[129] उस ने तुम्हें चुन लिया है।[130]और तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी नहीं रखी [131] और तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन।[132] उस ने (अल्लाह ने) तुम्हारा नाम पहले भी मुस्लिम रखा और इस (क़ुर्आन) में भी [133] ताकि रसूल तुम पर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह हो ।[134] अतः नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और अल्लाह को मज़बूत पकड़ लो।[135] वही तुम्हारा मौला (स्वामी) है तो क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार।

وَجَٰهِدُوا۟ فِى ٱللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِۦ ۚ هُوَ ٱجْتَبَىٰكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى ٱلدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِّلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَٰهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّىٰكُمُ ٱلْمُسْلِمِينَ مِن قَبْلُ وَفِى هَٰذَا لِيَكُونَ ٱلرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا۟ شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱعْتَصِمُوا۟ بِٱللَّهِ هُوَ مَوْلَىٰكُمْ ۖ فَنِعْمَ ٱلْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ ٱلنَّصِيرُ ﴿٧٨﴾

118. मक्खी अत्यंत तुच्छ जीव है और जब बहुदेववादियों के ख़ुदा सब मिल कर भी इतनी तुच्छ चीज़ पैदा नहीं कर सकते तो क्या पैदा कर सकते हैं? और जब कुछ पैदा नहीं कर सकते तो ख़ुदा कैसे हो गए?

119. मक्का के बहुदेववादी अपने बुतों पर शहद और ज़ाफ़रान लेप देते थे। और भारत के बहुदेववादी उन को मिठाई का भोग अर्पित करते हैं जब कि अपने ख़ुदाओं के सामने खाना प्रस्तुत करना मूर्खता के सिवा कुछ नहीं। इन ख़ुदाओं की बेबसी का हाल यह है कि अगर मक्खी उन के ख़ानों में से कुछ उड़ा ले जाती हैं तो वे उस को वापस नहीं ले सकते।

120. अर्थात् भक्त भी कमज़ोर और पूज्य भी कमज़ोर। ऐसे पूज्यों की पूजा से उन के भक्तों को क्या लाभ पहुँचने वाला है?

इस साधारण मिसाल के द्वारा बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खण्डन इतने सरल और प्रभावपूर्ण ढंग से किया गया है कि इस के ग़लत होने में किसी शंका और संदेह की गुन्ज़ाइश बाक़ी नहीं रहती। किन्तु इन्सान की सब से बड़ी कमज़ोरी यह है कि वह अन्धी श्रद्धा में लिप्त हो जाता है, फिर वह अपनी बुद्धि और विवेक से काम लेने के लिए तैयार नहीं होता । यही कारण है कि आज के दौर में भी जब कि बुद्धि की उड़ान आकाश और नक्षत्रों तक हो चुकी है, मनुष्य अपने वास्तविक प्रभु को नहीं पा सका है। और कितनी ही जातियाँ हैं जिन्हों ने ईंट पत्थर को ख़ुदा बना लिया है।

121. अल्लाह अत्यन्त शक्तिशाली और सब पर अपनी प्रभुत्व रखता है। जिस व्यक्ति के मन में अल्लाह की महानता की यह धारणा और इसी के अनुकूल आस्था हो वह किसी अन्य के इष्ट पूज्य होने का क़ायल हो ही नहीं सकता। क्यों कि अल्लाह के सिवा न कोई शक्तिशाली है और न प्रभुत्वशाली। बहुदेववादी इस लिए असंख्य ख़ुदाओं (अर्थात् इष्ट पूज्यों) के क़ायल होते हैं कि उन की इष्ट पूज्य की धारणा सही नहीं होती, वे अल्लाह की महानता पर विश्वास नहीं रखते बल्कि उसे निम्न स्तर का समझते हैं।

122. बहुदेववादी रिसालत (ईशदूत्व) के क़ायल नहीं होते । अलबत्ता इस के क़ायल होते हैं कि ख़ुदा के बेटे, बेटियाँ हैं और उस के अवतार हैं। यह इस लिए होता है कि वे नहीं जानते कि अल्लाह अपने ख़ास बन्दों को जो ऊँचे से ऊँचा स्थान प्रदान करता है वह क्या है ? फ़रमाया वह स्थान रसूल (संदेशवाहक) होने का है जो अल्लाह का बन्दा ही होता है न कि ख़ुदा ।

अल्लाह का तरीक़ा यह है कि वह इन्सानों की हिदायत के लिए उन ही में से ऐसे व्यक्ति का चुनाव करता है जो उस का संदेश दूसरों तक पहुँचाने की भारी ज़िम्मेदारी को उठाने के योग्य होते हैं। और उन रसूलों तक अपना पैग़ाम पहुँचाने के लिए वह फ़रिश्तों में से संदेशवाहक चुनता है जो अल्लाह का पैग़ाम नबियों पर वह्य करते हैं। ठीक इस तरीक़े पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चुनाव हुआ है।

123. अर्थात् यह संदेशवाहक अपनी ज़िम्मेदारियों को जिस तरह अदा करते हैं उस से वह बेख़बर नहीं रहता । बल्कि वह उन की हर बात सुनता और उन के हर काम को देखता है।

124. अर्थात् रसूल (संदेशवाहक) होने के कारण किसी को भी ख़ुदा की पोज़ीशन प्राप्त नहीं होती कि लोग उस को हिसाब लेने वाला अन्तिम ध्येय समझ कर अपनी हाजतों के लिए उस को पुकारने लगें। हिसाब लेने वाला जिस के पास हम सब को पलट कर जाना है वह तो केवल अल्लाह ही है । उसी के समक्ष सारे मामले पेश होते हैं और वही निर्णय देता है।

125. ये आख़िर की आयतें हैं जिन में संबोधन की दिशा ईमान वालों की तरफ़ हो गई है।

126. रुकू और सज्दा से तात्पर्य नमाज़ है।

127. अर्थात् इबादत चाहे नमाज़ के रूप में हो, हज्ज और क़ुर्बानी के रुप में हो या किसी और रुप में, अल्लाह ही के लिए ख़ास होनी चाहिए जो तुम्हारा वास्तविक प्रभु है।

128. भलाई (ख़ैर) के कामों में वे सारे काम शामिल हैं जो अल्लाह के अनुपालन पर आधारित हों और जिनका लाभ ख़ुदा के बन्दों तक पहुँचता हो।

129. यहाँ जिहाद से तात्यपर्य वह जिहाद है जिस में शक्ति प्रयोग की जाए और विरोधी शक्ति का ज़ोर तोड़ा जाए । ''अल्लाह की राह में'' का मतलब यह है कि इस शक्ति प्रदर्शन का उद्देश्य अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करना हो। और उन लोगों से जिहाद किया जाए जिन्हों ने अपने शिर्क और कुफ्र के चलते अल्लाह की राह में रुकावटें खड़ी कर दी हों ताकि लोग उस के दीन को स्वीकार न करें या उस के महत्वपूर्ण तक़ाज़ों को पूरा न करें। इस सूरह में गुज़र चुका कि मक्का के बहुदेववादियों ने इस्लाम की राह में कैसी कैसी रुकावटें खड़ी कर दी थीं और मुसलमानों के विरुद्ध किस प्रकार बल प्रयोग कर रहे थे। यही वह पृष्ट भूमि है जिस के कारण ईमान वालों को न केवल जिहाद करने का बल्कि जिहाद का हक़ अदा करने अर्थात् पूरे तन मन धन की बाज़ी लगा देने का हुक्म दिया गया। और जिहाद की यह उसूली आज्ञा अपनी शर्तो के साथ क़ियामत तक के लिए है। हदीस में आता है:-

لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ اُمَّتِیْ يُقَاتِلُوْنَ عَلَى الْحَقِّ ظَاهِرِيْنَ
اِلٰى يَوْمَ الْقِيَامَة۔ (مسلم کتاب الایمان)

अर्थ: ''मेरी उम्मत का एक समूह सत्य पर रह कर क़ियामत तक लड़ता रहेगा और ग़ालिब होगा !'' (मुस्लिम किताबुल ईमान)

130. अर्थात् तुम्हें यह सौभाग्य प्रदान किया कि उस के दीन का परचम उठाने वाले बन जाओ और लोगों के लिए हिदायत स्तंभ बनो !

स्पष्ट हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों का समूह जो इन आयतों का प्रथम संबोधी था, वह अल्लाह तआला का प्रियतम समूह था । इस लिए मुसलमानों के जो वर्ग या जो समूह कुछ सहाबियों को छोड़ कर सहाबियों के पूरे समूह को बुरा भला कहते हैं वह अविश्वस्नीय एवं संदिग्ध रिवायतों और घटनाओं के असत्यपूर्ण तथ्यों के चलते जो इतिहास में अंकित हो गए हैं, क़ुर्आन के स्पष्टीकरण को नज़रंदाज़ करते हैं। ये लोग अगर साफ़ और खुले मन से क़ुर्आन का अध्ययन करें और रिवायतों के मुक़ाबले में क़ुर्आन को सर्वोपरि रखें तो उस समूह के सच्चे क़दरदान बन जाऐं जिस को अल्लाह तआला ने चुन लिया था।

131. अर्थात् इस शरीअत में वे कड़े आदेश नहीं हैं जो इस से पहले की शरीअतों में रहे हैं। जैसे सब्त मनाने का आदेश जो यहूदियों को दिया गया था बड़ा ही सख़्त था और ये कड़े आदेश उन्हें उन की उद्दंडता के कारण दिये गए थे। परन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो शरीअत प्रदान की गई है वह किसी ख़ास दौर या जाति विशेष के लिए नहीं है बल्कि पूरी मुस्लिम उम्मत के लिए है जो अपने आप में सर्वव्यापक है और क़ियामत तक के लिए है। इस लिए इस को आसान बना दिया गया है और इस में छूट भी बहुत रखी गई है। परन्तु इस का मतलब यह नहीं कि कोई ऐसा आदेश दिया ही नहीं गया है जिस पर अमल करना ईमान वालों के लिए मुश्किल हो। ऊपर जिहाद का हुक्म ग़ुज़र चुका, जो जान और माल की क़ुर्बानी चाहता है। इस लिए आयत का सही भावार्थ वही हो सकता है जो क़ुर्आन के दूसरे स्पष्टीकरण के अनुकूल हो ।

132. अर्थात् यह वही एकेश्वरवादी दीन है जो इब्राहीम का दीन था। तथा यह शरीअत भी मौलिक रुप से वही है जो इब्राहीम को दी गई थी। अर्थात् सादा और सरल शरीअत जिस में हज्ज और उस के मनासिक भी शामिल हैं।

133. अर्थात् अल्लाह ने तुम्हारा--- ईमान लाने वालों का--- नाम पिछली उम्मतों में भी मुस्लिम ही रखा था और इस किताब में भी तुम्हारा यही नाम है। यह बात सही नहीं कि यह नाम हज़रत इब्राहीम का रखा हुआ है और उन से पहले यह नाम नहीं रखा गया था। हज़रत नूह ने जो हज़रत इब्राहीम से बहुत पहले गुज़र चुके हैं अपने मुस्लिम होने का एलान किया था।

وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ المسلمين۔ (سورہ یونس ۷۲)

अर्थ: '' और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं मुस्लिम बन कर रहूँ'' (सूरह यूनुस -७२)

यह नाम उन गुणों को स्पष्ट करता है जो उस के अर्थ में निहित है अर्थात् वह जिस ने इस्लाम को स्वीकार कर के अपने आप को अल्लाह के हवाले किया हो और उस का फ़रमांबरदार हो।

इस के बाद मुसलमानों को यह हक़ नहीं पहुँचता कि वे अल्लाह के रखे हुए नाम की जगह अपना कोई और नाम रखें या उस पर किसी नाम का लेप चढ़ाऐं। परन्तु जब मुसलमानों में फ़िरक़े बन गए तो हर फ़िरक़े ने अपना एक अलग नाम रखा और आज तो मुसलामान आम तौर से अपने नाम के साथ कोई न कोई दुम छल्ला लगा देते हैं जो उन के मतों (मसलकों) को अभिव्यक्त करता है । इस का सुधार अति आवश्यक है । अपने को केवल मुस्लिम कहने पर संतोष करना चाहिए जो अल्लाह का रखा हुआ नाम है।

134. अर्थात् इन विशेषताओं की हामिल उम्मत बना कर तुम्हें इस लिए खड़ा किया गया है ताकि तुम इस दीन की लोगों के सामने गवाही दो जिस की गवाही तुम्हारे सामने देने के लिए रसूलों को भेजा गया है।

यह हुक्म मुस्लिम उम्मत (समुदाय) पर यह दायित्व डालता है कि वह दुनिया के सामने इस्लाम की दअवत पेश करे और इस के लिए अपने सारे संभावित संसाधनों को प्रयोग में लाए। इस्लाम का प्रचार एवं प्रसार तथा दीन को फैलाना वह महत्वपूर्ण अनिवार्य कर्तव्य है जिसे अन्जाम देने के लिए यह उम्मत खड़ी की गई है। परन्तु आज मुसलमानों में इस का एहसास बहुत कम पाया जाता है इस लिए वे मात्र एक जाति बन कर रह गये हैं । ऐसे लोग बहुत कम हैं जिन को दीन की गवाही प्रस्तुत कर देने की चिन्ता हो और जो ग़ैर मुस्लिमों के सामने दीन की दअवत पेश करते हों।

135. अल्लाह को मज़बूत पकड़ने का मतलब अल्लाह से सम्बन्ध को मज़बूत करना है। और अल्लाह से सम्बन्ध, उस के गुणों का बोध, उसकी बन्दगी और अनुपालन, उस से प्रेम और उस पर विश्वास करने से मज़बूत होता है।

२३.सूरह अल मोमिनून

नाम : सूरह की शुरुआत इस बात से हुई है कि ईमान वालों ने फ़लाह अर्थात् सफ़लता एवं मुक्ति पाई। इस मुनासिबत से इस का नाम अलमोमिनून है।

नाज़िल होने का समय :मक्की है और मज़मून से अंदाज़ा होता है कि मक्का के बीच के दौर में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषयः यह स्पष्ट करना है कि अल्लाह के नज़दीक सफ़ल होने वाले कौन लोग हैं और असफल होने वाले कौन । फिर जिन मौलिक धारणा के स्वीकार करने पर सफ़लता का दारोमदार है उन का सत्य पर आधारित होना तर्क के साथ सिद्ध किया गया है और उन की आशंकाओं एवं संदेहों का निदान प्रस्तुत किया गया है जो इस सिलसिले में प्रस्तुत किये जा रहे थे ।

कलाम की तरतीब : आयतें १ से ११ में ईमान वालों को सफलता की ख़ुशख़बरी सुनाई गई है और इस सफलता के लिए जिन सद्‌गुणों की आवश्यकता है उन को बयान किया गया है।

आयत १२ से २२ अल्लाह की रबूबियत पर तर्क प्रस्तुत करते हुए दूसरे जीवन और वहाँ मिलने वाले कर्मफल को अनिवार्य बताया गया है।

आयत २३ से ५० में रसूलों की दअवत झुठलाने वालों का अन्जाम बयान किया गया है।

आयत ५१ से ५६ में इस सच्चाई का ऐलान कि तमाम नबियों का दीन एक ही था किन्तु उन के अनुयायियों ने उन के टुकड़े टुकड़े कर दिए। अब वे अपनी इस अधर्मिकता के बावजूद मात्र इस कारण कि अल्लाह ने उन को दुनिया की दौलत दे रखी है इस भुलावे में लिप्त हैं कि अल्लाह उन से खुश है इसी लिए उन पर दौलत की बारिश कर रहा है।

आयत ५७ से ६१ में दुनिया परस्तों के मुक़ाबले में भालाई की ओर लपकने वालों के गुण बयान किये गए हैं।

आयत ६२ से ६७ में लोगों को चेतावनी है जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं कि एक दिन आएगा जब वे अपने किए पर पछताऐंगे।

आयत ६८ से ९२ में इन्कार करने वालों के कुछ संदेहों का उत्तर दिया गया है।

आयत ९३ से ९८ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुआ की तल्क़ीन कि ऐ रब ! इन क़ाफ़िरों पर यदि मेरी मौजूदगी में अज़ाब आ गया तो उस से मुझे बचाए रख!

आयत ९९ से ११७ में इन्कार करने वालों का मौत के समय और फिर क़ियामत के दिन जो हाल होगा उस का चित्रण प्रस्तुत किया गया है और इस बात पर समाप्ति की गई है कि काफ़िर कभी सफ़लता और मुक्ति पाने वाले नहीं हैं।

आयत ११८ अन्तिम आयत है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के माध्यम से हर उस व्यक्ति को जो ईमान लाए, यह निर्देश है कि वह अल्लाह से क्षमा याचना और दया की प्रार्थना करे।

२३.सूरह अल मोमिनून

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ

आयतें : 118

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. निश्चय ही सफ़ल हुए ईमान लाने वाले [1]।

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ١

2. जो अपनी नमाज़ में ख़ुशू (विनम्रता) अपनाते हैं [2]।

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ٢

3. जो व्यर्थ बातों से मुँह फेरते हैं [3]।

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ٣

4. जो ज़कात अदा करते हैं [4]।

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ٤

5. जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते रहते हैं [5]।

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ٥

6. सिवाय अपनी पत्नियों के या उन बांदियों के जो उन की मिल्कियत में आ गई हों, तो उन के बारे में उन पर कोई मलामत नहीं [6]।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ٦

7. और जो इस के अलावा कुछ और चाहें तो वही सीमोल्लंघन करने वाले हैं [7]।

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ٧

8. जो अपनी अमानतों [8] और अपनी प्रतिज्ञा [9] का ध्यान रखते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ٨

9. और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं।[10]

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ٩

10. यही लोग वारिस होने वाले हैं।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ١٠

11. जो फ़िरदौस (जन्नत) के वारिस होंगे।[11] उस में हमेशा रहने वाले हैं।

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ١١

12. हम ने इन्सान को मिट्टी के सत से पैदा किया [12]।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ١٢

13. फिर उसे नुत्फ़ा (बूँद) बना कर एक सुरक्षित जगह में रखा ।[13]

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ١٣

1. सफलता से अभिप्रेत आख़िरत की सफ़लता है जैसा कि आयत ११ से स्पष्ट है। और क़ुर्आन की नज़र में असली सफ़लता आख़िरत ही की सफ़लता है क्यों कि वह ईनाम के रुप में होगी और सदा के लिए होगी ।

इस सफलता के लिए पहली शर्त ईमान है फिर वे सद्गुण जो आगे बयान हुए हैं। स्पष्ट हुआ कि आख़िरत की सफ़लता सद्गुणों (Merit) के आधार पर होगी न कि इस्लाम से रस्मी सम्बन्ध के आधार पर।

2. ख़ुशू का अर्थ अत्यंत प्रतापी हस्ती की कल्पना से कांपने और उस के समक्ष झुकने एवं विनम्रता अपनाने के हैं। नमाज़ की रूह यही है कि बन्दे पर अल्लाह का भय छाया हो। वह दबी आवाज़ में उस से प्रार्थना करे और विनम्रता एवं दासता को प्रकट करे। सफ़लात की ज़मानत उन ही ईमान वालों को दी गई है जो ख़ुशू (विनम्रता) के साथ नमाज़ अदा करते हैं। ख़ुशू का सम्बन्ध सच पूछिए तो दिल से हैं :-

اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ آمَنُوْا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ۔(سورۂ حدید-١٦)

अर्थ:- ''क्या ईमान वालों के लिए वह समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह के ज़िक्र के आगे झुक जाऐं।'' (हदीद-१६)

और जब दिल में ख़ुशू हो तो शरीर पर भी उस का प्रभाव पड़ेगा अर्थात् निगाहें झुकी हुई होंगी, आवाज़ दबी हुई होगी। ध्यान अल्लाह ही की तरफ़ रहेगा। और सुकून और इत्मीनान के साथ सम्मानजनक रूप से नमाज़ अदा की जाएगी। क़ुर्आन में नमाज़ के जो प्रभाव एवं परिणाम बयान किये गए हैं वे ऐसी ही नमाज़ के प्रभाव एवं प्रमाण हैं।

3. व्यर्थ बातों से बचना नमाज़ के लाभों में से है। इस लिए इस का वर्णन नमाज़ के तुरन्त बाद हुआ । मूल अरबी में ''लग़ो'' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ निरूद्देश्य एवं व्यर्थ के हैं। यह शब्द केवल हराम बुरे कामों ही के लिए प्रयुक्त नहीं होता बल्कि उन कामों के लिए भी होता है जिन का कोई वास्तविक लाभ या मसलहत न हो । मौजूदा दौर में ''लग़ो'' के विकसित रूप में बेहूदा गाने, कल्पनालोकी कविताऐं, दूसरों की खिल्ली द्वारा हँसने के प्रोग्राम फ़ालतू क़िस्से कहानियाँ, शतरंज और कैरम के खेल और मैच और फुटबाल आदि के वह बड़े बड़े आयोजन हैं जो समय और रूपयों की बर्बादी के खुले सामान हैं तथा जो ऐसी मानसिकता पैदा करते हैं कि आदमी खेल कूद ही में लगा रहे। और आज कल टी.वी. पर एक से एक अशलील दृश्य दिखाए जाते हैं। मगर सच्चे मोमिन बड़े नेक तबियत के होते हैं। वे ऐसी चीज़ों में रूचि लेना तो दरकिनार उन पर एक निगाहे-ग़लत डालना भी पसंद नहीं करते।

4. मक्की दौर में भी ज़कात की अदायगी ज़रूरी थी। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २५८

कुछ मुफ़स्सिरीन ने للزكٰوة فاعلون ''लिज़्ज़काति फ़ाइलून'' का मतलब यह लिया है कि वे तज़्किया (पाक करने) का काम करते रहते हैं लेकिन यह सरासर संकोच है।

ज़क़ात अपने एक विशेष अर्थ में क़ुर्आन का परिभाषिक शब्द है इस लिए इस को तज़्किय: (पाक करने) के अर्थ में लेना सही नहीं और अगर ज़कात के साथ **फ़ाइलून** शब्द का इस्तेमाल हुआ है तो दूसरी जगह فعل الخيرات **''फ़िअलल़ख़ैरात''** (भलाई के काम सूरह अम्बिया ७३) की तरकीब भी इस्तेमाल हुई है इस लिए कोई कारण नहीं कि ज़कात को यहाँ तज़्किय: के अर्थ में लिया जाए।

5. अर्थात् काम इच्छा की आपूर्ति के लिए अवैध तरीक़ो से बचते हैं और सतर अर्थात् गुप्तांगों को छिपाने की सीमाओं का ख़याल रखते हैं।

6. इस आयत में शारीरिक सम्बन्ध की वैधता की दो सूरतें बताई गई हैं एक यह कि आदमी अपनी पत्नियों से शारिरिक सम्बन्ध स्थापित करे दूसरे यह कि उन लौंडियों से शरीरिक सम्बन्ध स्थापित करे जो उस की मिल्कियत में हों ।

आदमी की पत्नी वह है जो उस के निकाह में हो । रही लौंडी तो उस के लिए मालिक होना शर्त है। अर्थात् एक व्यक्ति उसी लौंडी से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर सकता है जिस का वह वास्तव में मालिक है। गुलामी की समस्या उस ज़माने में न केवल यह कि एक अन्तर्राष्ट्रिय समस्या बनी हुई थी बल्कि ख़ुद गुलामों और लौंडियों के कल्याण की समस्या भी विपरीत तक़ाज़े रखती थी। जो ग़ुलाम और लौंडीयां पहले से चली आ रही थीं उन को अगर ग़ुलाम और लौंडीयां स्वीकार (Recognize) ही नहीं किया जाता या क़ानून के द्वारा सब को एक साथ आज़ाद कर दिया जाता तो उस से ग़ुलामों और लौंडियों को शायद राहत हो सकती थी। किन्तु उस समय के हालात में उन के लिए रोज़ी की समस्या और लौंडियों के लिए विशेष रुप से उन के रहने तथा उन की ज़िम्मेदारी उठाने की समस्या विकराल रूप धार सकती थी जिस के फ़लस्वरूप वे बद्कारी का शिकार हो सकती थीं। इस लिए इस्लाम ने मक्की दौर में उन की वास्तविक हैसियत को स्वीकार करते हुए लौंडियों के मालिकों के लिए उन से शारीरिक सम्बन्ध बनाना वैध ठहराया। अलबत्ता ग़ुलामी से उन की गर्दनें छुड़ाने को बहुत बड़ी नेकी बताया तथा उस के लिए उचित तदबीरें व्यवहारिक रूप से सुझाईं।

लौंडियों से शारीरिक सम्बन्ध के मसले को इसी परिवेश में देखना चाहिए बहर हाल अल्लाह की ओर से साफ़ साफ़ एलान

है कि ईमान वाले अपनी मिल्कियत की लौंडियों से शारीरिक सम्बन्ध रखने के मामले में निन्दा के पात्र नहीं ठहरेंगे। फिर किसी को क्या हक़ है कि वह उस की निन्दा करे?

7. अर्थात् अपनी पत्नी या लौंडी ही से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना वैध है। यदि कोई व्यक्ति इस के अलावा किसी और से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहेगा तो ऐसा व्यक्ति प्राकृतिक एवं शरअी सीमाओं का उल्लंघन करने वाला होगा। शारीरिक सम्बन्ध अपनी पत्नी या मिल्कियत की बाँदी के अलावा जिस स्त्री से भी बनाया जाएगा, ज़िना (व्याभिचार) होगा। और यदि पुरुष परुष के साथ सम्बन्ध बनाता है तो यह लवातत (समलैंगिकता) है। और ये सारी सूरतें हराम हैं और सख़्ती के साथ हराम हैं।

इस आयत से ''मुतआ'' (निश्चित समय तक के लिए किसी औरत से उस की इच्छा के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना) भी हराम सिद्ध होता है। क्यों कि जिस से ''मुतआ'' किया जाता है वह न पत्नी होती है और न लौंडि। पत्नी इस लिए नहीं कि वह मुतआ करने वाले व्यक्ति के न निकाह में होती है और न उस पर नुफ़क़ा, तलाक़ और इद्दत आदि के आदेश लागू होते हैं और न ही वह (स्त्री) उस व्यक्ति की जायदाद में से हिस्सा पा सकती है। और लौंडि इस लिए नहीं कि वह उस का मालिक नहीं है। मतलब यह कि क़ुर्आन में मुतआ की वैधता के लिए न केवल यह कि कोई दलील मौजूद नहीं है बल्कि जो आदेश वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित दिए गए हैं उन से इस का हराम होना सिद्ध होता है। सूरह मोमिनून मक्की है जिस की उक्त आयत में दो सूरतों के अलावा शारीरिक सम्बन्ध की हर सूरत को हराम ठहराया गया है। मतलब यह कि मुतआ की अवैधता का आदेश मक्की दौर ही से चला आ रहा है।

मुतआ की मनाही हदीस से भी साबित है:-

عن علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ ان رسول اللہ ﷺ

نَهَىٰ عَنْ مُتْعَةِ النِّسَآءِ يَوْمَ خَيْبَرَ - (بخاری کتاب المغازی)

अर्थ:- ''हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रजि. फ़रमाते हैं , रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर के दिन ''मुतआ'' से मना फ़रमाया।'' (बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी) और उलमा और फ़ुक़हा का समूह इस के हराम होने पर सहमत है।

ख़त्ताबी कहते हैं ''मुतआ'' के हराम होने पर गोया सहमति (इज्माअ) है सिवाय कुछ शियों के।'' (फ़त्हुलबारी जिल्द ९ पृष्ट १४२)

''इस निकाह के हराम होने पर सभी मसलकों के इमामों का इत्तिफ़ाक़ है।'' (फ़िक़्हुस्सुन्न: अस्सयद साबिक़ जिल्द २ पृष्ट १४२)

रही वे हदीसें जिन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ यह बात मन्सूब की गई है कि आप ने कुछ जंगों के अवसर पर मुतआ की अनुमति दी थी और बाद में उस को निरस्त कर दिया तो उन हदीसों में विपरीत बातें बयान हुई हैं।

जब ख़ैबर की जंग (सन ६ हिजरी) के मौक़े पर इस की मनाही कर दी गई थी तो मक्का विजय (सन ८ हिजरी) के अवसर पर इस की अनुमति देने का क्या सवाल पैदा होता है? और मक्का विजय के ज़माने में तो दीन मुकम्मल होने को पहुँच गया था और मुसलमान एक शक्ति बन चुके थे इस लिए यह मौक़ा मुतआ की रिआयत का हरगिज़ नहीं था। फिर एक रिवायत के अनुसार यह अनुमति तीन दिन के लिए दी गई थी। इस के बाद उस की मनाही कर दी गई। और दूसरी रिवायत के अनुसार एक दिन ही इस की अनुमति दी गई और दूसरे दिन ही इसे हराम घोषित कर दिया गया। मुस्लिम की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के अवसर पर एलान फ़रमाया कि ''मैं ने तुम्हें ''मुतआ'' करने की अनुमती दी थी और अब अल्लाह तआला ने इसे क़ियामत तक के लिए हराम ठहराया है।''

और मुस्लिम ही की रिवायत है कि ओतास की जंग के अवसर पर जो मक्का विजय के बाद शव्वाल सन ८ हिजरी में हुई आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस की अनुमति दी फिर मनाही फ़रमा दी (देखिए सही मुस्लिम किताबुन्निकाह)

ओतास की जंग की घटना मक्का विजय के बाद की है। अत: लामुहाला दो में से कोई एक रिवायत ही सही हो सकती है। यह किस प्रकार संभव है कि मक्का विजय के अवसर पर आप एलान फ़रमाऐं कि मुतआ क़ियामत तक के लिए हराम कर दिया गया है और फिर जब ओतास में जंग हो तो आप इस की अनुमति भी दे दें। ऐसी रवायतें हरगिज़ रसूल की हदीस नहीं हो सकतीं जब कि वे क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों से टकराती हों। इन रिवायतों को सही मान लेने की स्थिति में यह सवाल भी पैदा होता है कि मक्का और ओतास में वे कौन सी औरतें थी जो तीन दिन के लिए और मात्र एक चादर के बदले निकाह करना पसन्द करती थीं ? और उन से संपर्क बनाने का क्या माध्यम था। क्या कोई मुसलमान किसी अजनबी मुसलमान महिला से जा कर पूछता था कि तू तीन दिन के लिए मुझ से निकाह करने को तैयार है? फिर यदि वह तैयार हो जाती तो उस से बग़ैर किसी इस्तिबरा (अर्थात् एक माहवारी गुज़र जाने) के किस प्रकार तुरन्त सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता था जब कि लौंडियों से शारीरिक सम्बन्ध के लिए इस्तिबरा अर्थात् एक माहवारी गुज़र जाने की क़ैद है। अगर यह कहा जाए कि मुतआ

के लिए एक माहवारी के गुज़र जाने की क़ैद नहीं तो गर्भ ठहर जाने की सूरत में यह कैसे पता चलता कि गर्भ किस का है। और गर्भ ठहरने की स्थिति में बच्चे की परवरिश की ज़िम्मेदारी अपनी माँ के अस्थाई पति पर आयद होती थी या नहीं? अगर होती थी तो स्थाई विवाह का क्या लाभ हुआ? ये तथ्यपूर्ण प्रश्न मुतआ की नामाक़ूलियत सिद्ध करने के लिए काफ़ी हैं परन्तु मुसलमानों को एक वर्ग (शीया) मुतआ के वैध होने का क़ायल है। वह क़ुर्आन को छोड़ कर रिवायतों का सहारा लेता है। वह रिवायतों को क़ुर्आन के परिप्रेक्ष्य में देखने के बजाय क़ुर्आन को रिवयतों के परिप्रेक्ष्य में देखता है। यही वह हिमालयाई ग़लती है जो क़ुर्आन की ग़लत व्याख्या करने और नामाक़ूल बातें मानने पर आमादा करती है।

जहाँ तक इन हदीसों की प्रमाणिकता की बात है बहुत सी हदीसें ऐसी हैं जिन के प्रमाण के बारे में काफ़ी कुछ कहा जा सकता है। बात लम्बी न हो जाए इस लिए हम केवल कुछ ही उदाहरणों पर संतोष करते हैं:-

मुतआ का छूट के सिलसिले में एक हदीस सही मुस्लिम में अब्दुल मलिक बिन अर्रबीअ् बिन सबर: से उल्लिखित है परन्तु प्रसिद्ध मुहद्दिस यहया बिन मुईन ने इसे कमज़ोर कहा है और अबुलहसन बिन अलक़तान कहते हैं कि उन का आदिल (न्यायी) होना साबित नहीं है। यद्यपि कि मुस्लिम ने उन की हदीस बयान की है किन्तु वे विश्वसनीय नहीं हैं। (तहज़ीबुत्तहज़ीब इब्ने हजर अस्कलानी जिल्द ६पृष्ट ३९३) बुख़ारी और मुस्लिम दोनों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद की तरफ़ यह बात मन्सूब की गई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंग के अवसर पर उन्हें मुतआ की अनुमति दी थी । यह रिवायत क़ैस बिन अबी हाज़िम से है और क़ैस बिन अबी हाज़िम के बारे में इब्नुल मदीनी कहते हैं कि मुझ से यहया बिन सईद ने कहा कि वह हदीस का इन्कारी है (तहज़ीबुत्तहज़ीब जिल्द ८ पृष्ट ३८८) बुख़ारी की एक हदीस हसन बिन मुहम्मद ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह और सलमा बिन अक़्अ के माध्यम से बयान की है कि उन दोनों ने कहा कि हम एक लश्कर में थे कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का संदेष्टा हमारे पास आया और कहा कि तुम्हें औरतों से लाभ उठाने की अनुमति दी गई है अत: उन से लाभ उठाओ।''

(बुख़ारी किताबुन्निकाह)

जब कि बुख़ारी ने हसन बिन मुहम्मद ही के वास्ते से हज़रत अली की यह रिवायत बयान की है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर के अवसर पर मुतआ की मनाही फ़रमा दी थी।'' (बुख़ारी किताबुलमग़ाज़ी)

एक रिवायत इब्ने जरीज से हैं कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि हम ने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर के ज़माने में मुतआ किया (मुस्लिम किताबुन्निकाह)

यह अब्दुल मलिक बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन जरीज हैं। इन के बारे में असरम ने इमाम अहमद का यह कथन उद्धृत किया है कि जब इब्ने जरीज कहते हैं कि फ़लाँ और फ़लाँ ने कहा या मुझे ख़बर दी गई तो वे ग़लत हदीसें बयान करते हैं और जब कहते हैं कि मुझे फ़लाँ व्यक्ति ने सूचना दी या मैं ने उस से सुना तो तुम्हारे (विश्वास के) लिए यह काफ़ी है। और अज़्हाक़ी ने इमाम मालिक का यह मत उद्धृत किया है कि इब्ने जरीज ''हातिबे लैल'' (अर्थात रात के अंधकार में लड़कियाँ चुनने वाले) हैं और दार कितनी कहते हैं कि इब्ने जरीज की तदलीस से बचो और यहया बिन सईद कहते हैं कि वे कमज़ोर हैं। (तहज़ीबुत्तहज़ीब जिल्द ६ पृष्ट ४०२ से ४०६)

इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुतआ की छूट के बारे में जब बुख़ारी मुस्लिम जैसी सही हदीसों की रिवायतों का यह हाल है तो शीयों की बयान की हुई रिवायतों का क्या हाल होगा ।

वास्तविकता यह है कि इन परस्पर टकराने वाली और उलझी हुई रिवायतों से जिन में अधिकतर रिवायतें प्रमाण की दृष्टि से ऐसी हैं कि उन पर प्रश्न उठे, यह बात हरगिज़ साबित नहीं होती कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुतआ की छूट दी थी । अलबत्ता अज्ञानता काल में चूँकि मुतआ की रीति प्रचलित थी इस लिए आपने बड़ी ताक़ीद के साथ इस की मनाही कर दी । यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि किसी रिवायत का सही बुख़ारी या सही मुस्लिम में होना उसे कदापि मान्य नहीं ठहराता जब कि वह क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश से टकराती हो।

इन तर्कों के बाद भी यदि किसी को इस बात पर हठ् हो कि मुतआ की अनुमति दी गई थी या दी गई है तो वह यह बतलाए कि मुतआ और ज़िना में क्या अन्तर है। तथा वह यह भी स्पष्ट करे कि मुतआ क़ुर्आन के बताए विवाहिक जीवन प्रणाली के विरुद्ध नहीं है। इस के बाद हम अपने इस लेख का पुनरावलोकन कर सकते हैं।

8. अमानतों से मुराद वे अमानतें भी हैं जो अल्लाह तआला ने प्रदान की हैं और वे अमानतें भी हैं जो लोग एक दूसरे के सुपुर्द करते हैं।

9. प्रतिज्ञा से तात्पर्य वह प्रतिज्ञा भी है जो अल्लाह से बाँधी गई हो और वह प्रतिज्ञा भी है जो लोगों के साथ बाँधी गई हो।

10. नमाज़ की रक्षा में पाबन्दि के साथ नमाज़ पढ़ना,

समय पर अदा करना, उस तरीक़े पर अदा करना जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतलाया है और उस की सारी शर्तों और अचार संहिता का ध्यान रखना शामिल है। आयत २ में नमाज़ की स्पिरिट (रूह) उजागर की गई थी और यहाँ नमाज़ के आयोजन की ताकीद की गई है।

इन आयतों में ईमान वालों के सद्गुणों का वर्णन नमाज़ ही से शुरू हुआ और नमाज़ ही पर समाप्त हो रहा है यह गोया इस बात की तरफ़ इशारा है कि ये सद्गुण उस नमाज़ के फल हैं जो पूरे ध्यान से भली भाँत अदा की जाए।

11. फिरदौस का वारिस होना ही वह असली कामयाबी है जो ईमान वालों के हिस्से में आएगी । हदीस में फिरदौस को उच्च कोटि की जन्नत कहा गया है। सहीहैन में है:- ''जब तुम अल्लाह से जन्नत माँगो तो फ़िरदौस माँगो क्यों कि वह उच्च और उत्तम कोटि की जन्नत है और उसी से जन्नत की नहरें निकलती हैं।'' (इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ट १०८) और फ़िरदौस के भी बहुत से बाग़ होंगे जैसा कि सूरह कहफ़ आयत १०७ से स्पष्ट है।

12. गोया यह मिट्टी का सत् था जिस से पहले मनुष्य की रचना हुई । इस लिए मनुष्य के स्वाभाव में वे सारी विशेषताऐं जमा हो गई जो विभिन्न भू-भागों में पायी जाती हैं। परन्तु कोई ज़मीन नर्म होती है तो कोई सख़्त । इसी प्रकार किसी व्यक्ति का स्वभाव नर्म होता है तो किसी का कठोर । मिट्टी के रंग भिन्न भिन्न होते हैं और इन्सानों के रंग भी भिन्न भिन्न होते हैं। मिट्टी में भाँत भाँत की चीज़ें पैदा करने की क्षमता होती है। मनुष्य भी भाँत भाँत की क्षमताऐं अपने अन्दर रखता है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट २४)

13. अर्थात पहले इन्सान को मिट्टी से पैदा करने के बाद उस के वंश का क्रम नुत्फ़े (वीर्य) से चलाया जो पानी की एक बूँद होता है। उस को गर्भ जैसी सुरक्षित जगह में ठहराने का उस ने सामान किया।

भ्रूण की अवस्था

EMBRYONIC AND FETAL STAGES

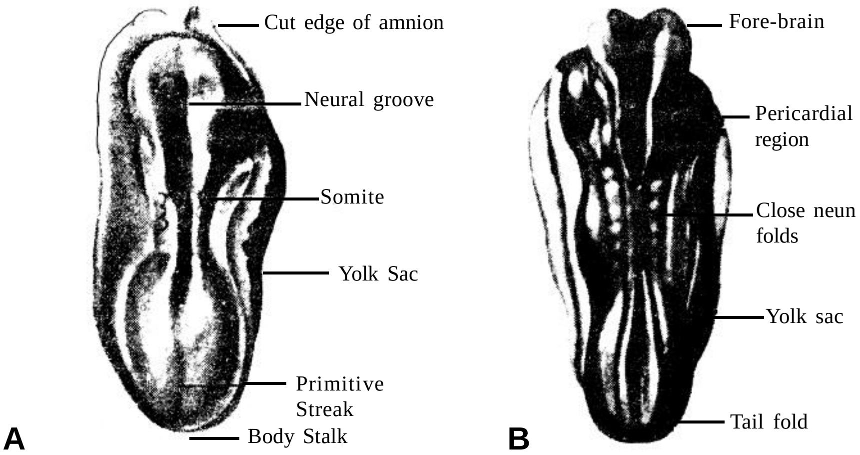

A. २० दिन के भ्रूण का चित्र जब कि जमा हुआ ख़ून गोश्त के लोथड़े में परिवर्तित हो रहा होता है।

B. भ्रूण जब कि गोश्त का एक लोथड़ा होता है । (चित्र बड़े कर के दिखाए गए हैं।)

14. फिर नुत्फ़ा (विर्य) को जमे हुए ख़ून की शक्ल दी, फिर जमे हुए ख़ून को गोश्त का टुकड़ा बनाया फिर गोश्त के टुकड़े को हड्डियों का रूप दिया फिर हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया [14] फिर उसे एक दूसरी ही मख़्लूक़ बना कर खड़ा किया [15]। तू बड़ा ही बा-बरकत है, अल्लाह बेहतरीन पैदा करने वाला ।[16]

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً
فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ
خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾

15. फिर इस के बाद तुम को निश्चित रूप से मरना है ।[17]

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾

16. फिर निश्चय ही तुम क़ियामत के दिन उठाए जाओगे।[18]

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

17. और हम ने तुम्हारे ऊपर सात तह दर तह आसमान बनाए [19]। और हम (अपनी) सृष्टि की ओर से ग़ाफ़िल नहीं हैं ।[20]

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾

18. और हम ने एक ख़ास अन्दाज़े के साथ आसमान से पानी बरसाया और उस को ज़मीन में ठहरा दिया और हम इस पर क़ादिर (समर्थ) हैं कि इसे ग़ायब कर दें।[21]

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى
ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾

19. फिर हम ने इस (पानी) के द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किए। तुम्हारे लिए इन में बहुत से फल हैं जिन को तुम खाते हो।

فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ
كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾

20. और वह वृक्ष भी जो तूर सीना में पैदा होता है। वह तेल लिए हुए उगता है और खाने वालों के लिए सालन ।[22]

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ
وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾

21. और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी बड़ा सबक़ है। और हम उन चीज़ो के अन्दर से जो उन के पेट में हैं तुम्हें (दूध) पिलाते हैं।[23] तुम्हारे लिए उन में बहुत से लाभ हैं और उन से तुम खाना भी प्राप्त करते हो।[24]

وَ اِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا
وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾

22. तुम उन पर और नौकाओं पर सवार भी किए जाते हो ।[25]

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

14. नुत्फ़ा जिन चरणों से गुज़र कर भ्रूण (Embroy) का रूप धारता है उस की व्याख्या सूरह हज्ज नोट ८ से ११ में गुज़र चुकी।

ध्यान रहे कि ख़ून का थक्का आदि सामान्य रूप से देखने में आने वाली चीज़ें थीं अर्थात् गर्भपात की स्थिति में लोग देख लेते थे कि एक भ्रूण आरंभ में क्या होता है और बाद में उस में क्या क्या परिवर्तन होते हैं। क़ुर्आन ने इसी सामान्य रुप से देखने में आने वाली चीज़ों के आधार पर तर्क प्रस्तुत किया है। रहा आधुनिक भ्रूण विज्ञान (Embroyology) जिस ने आश्चर्यजनक रहस्योदघाटन किये हैं । तो यह तो क़ुर्आन की बातों की तफ़सील है और इस से क़ुर्आन की यह दलील और अधिक स्पष्ट हो गई है कि यह खोज क़ुर्आन की उस ख़बर के बारे में यक़ीन पैदा करता कि मनुष्य को उस का रब दोबारा उठाएगा ।

15. अर्थात् फिर वह चरण आता है कि भ्रूण में जान फूँक दी जाती है और वह सुनने और देखने वाला इन्सान बन जाता है। कहाँ तो एक लोथड़ा था और कहाँ एक इन्सान बन गया।

लोथड़े को देख कर अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता कि यह एक ऐसा अस्तित्व सामने आने वाला है जो ज़मीन पर अल्लाह का प्रतिनिधि बनेगा । परन्तु बस कुछ ही महीनों में उस के अन्दर ऐसा ज़बरदस्त परिवर्तन हो जाता है कि वह एक नई मख़्लूक़ बन कर उभरता है।

16. इन्सान का इन विभिन्न चरणों से गुज़र कर इन्सान बनना एक पैदा करने वाले की सृजनशक्ति का स्पष्ट प्रमाण है तथा इस से उस की वह शान भी झलकती है कि वह बड़े बड़े चमत्कारों वाला है और उस के उदार अनुग्रह एवं अनुकंपा की कोई अति नहीं।

17. मौत के बाद यमलोक (आलमे-बर्ज़ख़) में रुहों के साथ जो मामला होता है उस का वर्णन यहाँ नहीं किया गया। क्यों कि यहाँ क़ियामत के दिन उठाये जाने पर तर्क प्रस्तुत करना अभिप्रेत है जो शरीर सहित होगा और उसी दिन वह अपने कर्मों का पूरा पूरा बदला पाएगा।

18. यदि मनुष्य पहली बार पैदा किया गया तो दूसरी बार क्यों नहीं पैदा किया जा सकता ? यदि इन्सान का वर्तमान जीवन विभिन्न चरणों से गुज़रने के बाद अस्तित्व में आया है और इस के बाद भी वह विभिन्न चरणों से गुज़रता रहता है तो यह बात कैसे कही जा सकती है कि मौत के बाद कोई और चरण नहीं? जीवन तो एक चल वस्तु हैं परन्तु लोग इस भुलावे में पड़े हुए हैं कि मृत्यु जीवन का सदा सर्वदा के लिए अन्त कर देती है। हालांकि मौत मात्र एक चरण से दूसरे चरण में प्रविष्ट होने का नाम है।

19. मूल अरबी (Text) में ‘‘तराइक’’ शब्द प्रयुक्त हुआ है जो तरीक़े का बहुबचन है जिस का अर्थ मार्ग के भी हैं और तह दर तह होने के भी। अरबी में बोलते हैं رِيشٌ طرائِقٌ ‘‘रिशुन तराइकुन’’ अर्थात् वह पर जो एक दूसरे के ऊपर रखे गए हों

ريش طرائق اذا كان بعضه فوق بعض

(अस्सिहाह लिल-जौहरी जिल्द ४ पृष्ट १५१६)

और क़ुर्आन मजीद में दूसरी जगह

سَبْعَ سمٰوٰتٍ طباقاً

अर्थ:- ‘‘तह दर तह सात आसमान’’ (सूरह मुल्क आयत ३) इस लिए यहाँ भी तह दर तह का अर्थ लेना ही उचित है।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने सात ग्रहों की धुरी बताए हैं परन्तु इस का अनुमोदन क़ुर्आन की किसी आयत से नहीं होता ।

20. अर्थात् सात आसमानों सहित पूरी कायनात में जो मख़्लूम भी है अल्लाह उस से पूरी तरह बाख़बर है।

21. पानी के बग़ैर जीवन संभव नहीं है। इस लिए अल्लाह तआला बारिश के द्वारा पानी के ख़ज़ाने उंडेलता रहता है जो ज़मीन में एकत्रित हो कर मनुष्य के काम आता है। अगर अल्लाह चाहे तो वह पानी को ग़ायब कर सकता है अत: इन्सान को चाहिए कि उस का शुक्र अदा करे और उस से डरे।

22. मुराद ज़ैतून का वृक्ष है जो अरब के पड़ोसी देश सीना में तूर पर्वत के पास पैदा होता है। उस का फल ज़ैतून के तेल के लिए मशहूर है। यह तेल अत्यंत उच्च कोटि का होता है और उस को सालन के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

23. अर्थात उन के पेट के अन्दर मल के बीच से दूध जैसी शुद्ध चीज़ हम तुम्हें पिलाते हैं।

24. अर्थात् उन मवेशियों का गोश्त तुम्हारे खाने के काम में आता है।

25. यह सब अल्लाह की नेमतें और उस के उपकार हैं और इन के उल्लेख से अभिप्रेत अल्लाह के प्रभु होने का आभास पैदा करना और मौत के बाद उठाए जाने पर तर्क प्रस्तुत करना है।

23. हम ने नूह को उस की जाति की ओर भेजा [26]। उस ने कहा ऐ मेरी जाति के लोगो ! अल्लालह की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा इष्ट पूज्य नहीं ।क्या तुम (उस से) डरते नहीं [27]।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦ فَقَالَ يَـٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم
مِّنْ إِلَـٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

24. उस की जाति के सरदारों ने जिन्हों ने कुफ्र किया था, कहने लगे, यह व्यक्ति तो तुम्हारे ही जैसा मनुष्य है।यह चाहता है कि तुम पर श्रेष्ठता प्राप्त करे। यदि अल्लाह रसूल (भेजना) चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता। ऐसी बात तो हम ने अपने अगले बाप दादा से सुनी ही नहीं।

فَقَالَ ٱلْمَلَؤُا۟ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ مَا هَـٰذَآ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
يُرِيدُ أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَـٰٓئِكَةً
مَّا سَمِعْنَا بِهَـٰذَا فِىٓ ءَابَآئِنَا ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

25. कुछ नहीं इस व्यक्ति को जुनून हो गया है। अतः कुछ दिन इस के बारे में इन्तिज़ार करो।[28]

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌۢ بِهِۦ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا۟ بِهِۦ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

26. नूह ने दुआ कि ऐ मेरे रब ! मेरी मदद कर इस बात पर कि इन्हों ने मुझे झुठलाया है [29]।

قَالَ رَبِّ ٱنصُرْنِى بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾

27. हम ने उस पर प्रकाशना की कि हमारी निगरानी में और हमारी प्रकाशना के अनुसार नाव बनाओ [30] । फिर जब हमारा आदेश आ जाए और तनूर उबल पड़े [31] तो हर प्रकार के नर और मादा का जोड़ा उस में रख लो और अपने घर वालों को साथ ले लो सिवाय उन के जिन के विरुद्ध पहले ही फैसला हो चुका है [32]।और ज़ालिमों के बारे में मुझ से कुछ न कहना। वे डूब कर रहेंगे।

فَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ أَنِ ٱصْنَعِ ٱلْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا
فَإِذَا جَآءَ أَمْرُنَا وَفَارَ ٱلتَّنُّورُ ۙ فَٱسْلُكْ فِيهَا مِن كُلٍّ
زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ ٱلْقَوْلُ
مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَـٰطِبْنِى فِى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓا۟ ۖ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾

28. फिर जब तुम अपने साथियों को ले कर नाव में सवार हो जाओ तो कहो शुक्र है अल्लाह का जिस ने हमें ज़ालिम क़ौम से मुक्ति दी [33]।

فَإِذَا ٱسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى ٱلْفُلْكِ فَقُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ
ٱلَّذِى نَجَّىٰنَا مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿٢٨﴾

29. और दुआ करो ऐ रब ! मुझे बरकत के साथ उतार [34] और तू बेहतरीन उतारने वाला है।[35]

وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِى مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْمُنزِلِينَ ﴿٢٩﴾

30. इस वृत्तांत में बड़ी निशानियाँ हैं [36] और ऐसा ज़रूर है कि हम (लोगों को) आज़माइश में डालें [37]।

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَـٰتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾

31. फिर उन के बाद हम ने दूसरे दौर के लोग पैदा कर दिए।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا ءَاخَرِينَ ﴿٣١﴾

26. हज़रत नूह का वृत्तांत सूरह आराफ़ और सूरह यूनुस के अलावा सूरह हूद में विस्तार से बयान हुआ है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ९४ से १०४ सूरह यूनुस नोट १०८ से ११३ और सूरह हूद नोट ३८ से ७३

27. अर्थात् क्या तुम इस बात से डरते नहीं कि यदि तुम ने अल्लाह को छोड़ कर किसी और की इबादत की तो वह तुम्हें कड़ी सज़ा देगा। क्यों कि पूजा, उपासना, अथवा इबादत अल्लाह का ही हक़ है और पूजा तथा अनुपालन के योग्य केवल अल्लाह की हस्ती है।

28. नूह की कौम दुनिया की पहली क़ौम है जिस की ओर पहला रसूल (संदेष्टा) भेजा गया था उस ने जिस प्रकार रसूल का इन्कार किया और उस इन्कार के लिए जिन ग़लत बातों का सहारा लिया उसी प्रकार बाद की क़ौमें भी वही राग अलापती रहीं। रिसालत का इन्कार करने वालों ने न पहले कोई बुद्धिसंगत बात कही और न अब कह रहे हैं।

29. अर्थात् उन पर जब हमारी बातें पूरी तरह स्पष्ट हो गई और हुज्जत क़ायम हो गई और वे अपने इन्कार करने के रवैये से बाज़ आने को तैयार नहीं है तो अब तू मेरी इस तरह से मदद कर कि सत्य स्थापित हो जाए और असत्य मिट जाए।

30. हज़रत नूह की दुआ क़ुबूल हुई और नूह की क़ौम के विनाश का निर्णय हो गया। हज़रत नूह को सुचित कर दिया गया कि उन की जाति पर प्रकोप तूफ़ान के रूप में आएगा और तुम्हारा और ईमान वालों का बचाव एक नाव के द्वारा होगा अत: तुम नाव तैयार करो।

31. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ५६

32. अर्थात् किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जो काफ़िर हो और इसी कारण उस के विनाश का निर्णय हो चुका हो चाहे वह तुम्हारे घर वालों ही में से क्यों न हो।

33. नूह की क़ौम बहुदेववादी, काफ़िर और फ़सादी क़ौम थी। इसी भावार्थ में उसे ज़ालिम क़ौम कहा गया है। ऐसी सोसाइटी और ऐसे माहौल से मुक्ति अल्लाह तआला की बहुत बड़ी दया एवं अनुकंपा थी क्यों कि अब वे एक पवित्र माहौल में और स्वच्छ हवा में जीवन बसर कर सकते थे। इस लिए दया और अनुकंपा पर अल्लाह का शुक्र अदा करने का हुक्म हुआ।

34. अर्थात् ज़मीन पर मेरा क़दम रखना शुभ हो। जो काम भी मेरी देख रेख में अन्जाम पाए वह भलाई का काम हो और मेरे अस्तित्व से ज़मीन में भलाई ही भलाई फैले।

35. यह उस आशा की अभिव्यक्ति है कि जब तू उतारेगा तो अपनी कृपा, उदार अनुग्रह और नवाज़िशों के साथ उतारेगा।

36. जातियों और समुदायों के इतिहास का यह प्रथम अध्याय अपने अन्दर बड़ी शिक्षा रखता है। जैसे यह कि एकेश्वरवाद सत्य है और बहुदेववाद असत्य। ख़ुदा की तरफ़ से हिदायत इन्सान को रसूल के माध्यम से मिलती है जो इन्सान ही होता है। रसूल का विरोध करने वालों को अल्लाह तआला दुनिया में बड़ी सज़ा देता है और अपने रसूल तथा ईमान वालों के बचाव और मुक्ति का सामान करता है। जब ख़ुदा का निर्णय लागू होता है तो सत्य बाक़ी रहता है और असत्य मिट जाता है।

37. अर्थात् यह दुनिया आज़माइश ही के लिए बनाई गई है। इस लिए यहाँ का जीवन परीक्षा और आज़माइश का जीवन है। वह्य (प्रकाशना) और रिसालत का सिलसिला भी आज़माइश ही के सिलसिले की एक कड़ी है ताकि अल्लाह तआला यह देखे कि कौन अपनी बुद्धि से काम ले कर और अपनी अन्तर्दृष्टि से उस को पहचानता है और उस के द्वारा दी जाने वाली हिदायत को स्वीकार करता है और कौन है जो अन्धा बना रहता है।

32. और उन ही में से एक रसूल उन की ओर [38] भेजा (इस दअवत के साथ) कि अल्लाह ही की इबादत करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई इष्ट पूज्य नहीं। तो क्या तुम डरते नहीं ?

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۲﴾

33. उस की क़ौम के सरदारों ने जिन्होंने कुफ़्र किया था और आख़िरत की पेशी को झुठलाया था और जिन्हें हम ने दुनिया के जीवन में संपन्नता प्रदान कर रखी थी, कहने लगे कि यह तो तुम्हारे ही जैसा एक मनुष्य है। वही खाता है जो तुम खाते हो और वही पीता हो जो तुम पीते हो।

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ
وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ
مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿۳۳﴾

34. अगर तुम अपने ही जैसे मनुष्य के पीछे चल पड़े तो तुम घाटे में रहोगे।

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۳۴﴾

35. यह तो तुम्हें आगाह करता है कि जब तुम मर कर मिट्टी हो जाओगे और हड्डियों के रुप में रह जाओगे तो तुम्हें निकाला जाएगा।

اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا
اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿۳۵﴾

36. असंभव है। अति असंभव है वह बात जिस का तुम से वादा किया जा रहा है [39]।

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۳۶﴾

37. ज़िन्दगी तो बस इस दुनिया ही की ज़िन्दगी है जिस में हम मरते और जीते हैं [40]।और हमें कदापि उठाया न जाएगा।

اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿۳۷﴾

38. यह तो एक ऐसा व्यक्ति है जिस ने अल्लाह के नाम से झूठ गढ़ा है और हम इस की बात हरगिज़ मानने वाले नहीं हैं।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۳۸﴾

39. उस ने दुआ की [41]ऐ रब ! इन्हों ने मुझे झुठलाया है तो तू मेरी सहायता कर।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿۳۹﴾

40. फ़रमाया निकट है वह समय जब वे पछताएंगे।

قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿۴۰﴾

41. अत: एक भयानक आवाज़ ने जो सत्य के साथ प्रकट हुई थी उन्हें पकड़ लिया [42]। और हम ने उन्हें कचरा बना कर रख दिया। फिटकार है अत्याचारी जाति के लिए !

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۱﴾

38. क़ुर्आन ने यह पुष्टि नहीं की कि यह कौन सी जाति थी । हो सकता है कि यह कोई ऐसी जाति हो जिस के नाम से लोग परिचित न हों परन्तु नसीहत के लिए उस का वृत्तांत बयान किया हो ।

39. वे मनुष्य के दोबारा उठाए जाने को बुद्धि से परे समझते थे और आधुनिक युग का पढ़ा लिखा इन्सान भी इसे एक अनहोनी बात समझता है। उस के नज़दीक यह कोई गंभीर बात ही नहीं है कि उस पर विचार एवं चिंतन करने की आवश्यकता हो हालांकि बहुत सी बातें जो पहले बुद्धि से परे समझी जाती थी अब बुद्धि संगत हो गई है परन्तु दूसरे जीवन का इन्कार करने वालों के मास्तिष्क और उन की सोच में कोई अन्तर सामने नहीं आया है।

40. आज का भौतिक युग भी उन गुमराह क़ौमों ही के पद्चिन्हों पर है। उन्हों ने सांसारिक वस्तुओं तथा यहाँ के ऐश्वर्य को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। उसी के उलझावों में वे लीन हैं और नहीं चाहते कि जो नक़द् लाभ उन्हें प्राप्त हो रहे हैं उस में कोई कमी हो ।

41. रसूल ने आख़िरकार दुआ की ।

42. यह प्रकोप जिस रूप में भी था एक भयानक आवाज़ के साथ उन पर टूट पड़ा था और साथ ही वह सत्य भी प्रकट हुआ था जिस का वादा रसूल ने किया था।

42. फिर हम ने उन के बाद दूसरी जातियाँ उठाई।

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾

43. कोई जाति न अपने समय से पहले समाप्त होती है और न उस के बाद ठहर सकती है।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾

44. फिर हम ने एक के बाद एक अपने रसूल भेजे [43]। जब भी किसी जाति के पास उस का संदेशवाहक (रसूल) आया, उस ने उसे झुठलाया। तो हम एक के बाद दूसरी जाति को विनष्ट करते रहे और उन को अफ़साना बना कर छोड़ा। फिटकार है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ
فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ
فَبُعْدًا لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

45. फिर हम ने मूसा और उस के भाई हारून को अपनी निशानियों और खुले प्रमाणों के साथ भेजा [44]।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا
وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٤٥﴾

46. फ़िरऔन और उस के राज्य के सरदारों की ओर परन्तु उन्हों ने अहं किया और वे उद्दंड लोग थे।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾

47. उन्हों ने कहा क्या हम अपने जैसे दो आदमियों पर ईमान ले आऐं जब कि उन की जाति हमारी ग़ुलामी कर रही है।[45]

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُونَ ﴿٤٧﴾

48. इस प्रकार उन्हों ने उन दोनों को झुठलाया और आख़िरकार विनष्ट हो कर रहे।

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾

49. और मूसा को हम ने किताब प्रदान की ताकि लोग हिदायत पाऐं [46]।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

50. और मरयम के पुत्र [47] और उस की माँ को हम ने एक निशानी बनाया [48]और उन्हें एक ऊँचे टीले पर जगह दी जो सुकून और स्त्रोत वाली थी ।[49]

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ
رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾

51. ऐ रसूलो ! पाक चीज़े खाओ और नेक अमल करो [50]। तुम जो कुछ करते हो मैं उस को अच्छी तरह जानता हूँ।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ
وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾

52. और यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है [51] और मैं तुम्हारा रब हूँ तो तुम मुझ ही से डरो [52]।

وَإِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾

43. अर्थात् दुनिया में जब जातियों की बहुतायत हो गई तो अल्लाह तआला ने भी एक के बाद एक रसूल भेजे। उस समय विश्व में अन्तर्राष्ट्रियता नहीं थी और न ऐसे संसाधन उपलब्ध थे कि एक जाति में रसूल की नियुक्ति दूसरी जातियों तक संदेश पहुँचाने का साधन बन सके। इस लिए अल्लाह तआला ने प्रत्येक जाति में रसूल भेजे। उन सब रसूलों के और उन की जातियों के नाम क़ुर्आन में बयान नहीं हुए हैं परन्तु अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि जिन रसूलों का वर्णन क़ुर्आन में हुआ है उन के अलावा भी बहुत से रसूल विभिन्न जातियों की ओर विभिन्न समयों में भेजे गए थे ।

44. हज़रत मूसा और हज़रत हारून का वृत्तांत पूरे विस्तार के साथ सूरह ''ताहा'' में गुज़र चुका ।

निशानियों से अभिप्रेत मोज्ज़े अर्थात् चमत्कार हैं जिन में लाठी के सांप बन जाने का चमत्कार सब से बड़ा चमत्कार था।

खुले प्रमाण से अभिप्रेत वे प्रमाण हैं जो हज़रत मूसा और हज़रत हारून की दअवत तथा उन की बातचीत और आचरण में बिलकुल स्पष्ट थी और उन के व्यक्तित्व इस बात के प्रतिक थे कि वे अल्लाह की ओर से नियुक्त हैं और उन्हें उस का समर्थन प्राप्त है। एक नबी का व्यक्तित्व ही प्रमाण होता है चाहे वह कोई चमत्कार दिखाए या ना दिखाए।

45. मूल अरबी (Text) में قَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُوْنَ ''क़ौमुहुमा लना आबिदून'' (अर्थ :- इन की जाति हमारी पूजा करने वाली है) के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ आबिदून का अर्थ पूजा करने वाले के नहीं बल्कि ग़ुलामी करने वाले के हैं। अत: हज़रत मूसा ने एक अवसर पर फ़िरऔन से कहा था

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدتَّ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ ۔(شعراء:٢٢)

अर्थ:- ''यही तेरा वह एहसान है जो तू जता रहा है इस बात पर कि तूने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना लिया।''(सूरह शुअरा २२)

इस आयत में ''अब्बदत्त عَبَّدتَّ'' का शब्द ग़ुलाम बना लेने के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है। और वास्तविकता भी यही है कि फ़िरऔन ने बनी इस्राईल को ग़ुलामी का जीवन बिताने पर विवश कर दिया था। उन की इस कमतर हैसियत का वर्णन कर के फ़िरऔन और उस के राज्य के सरदारों ने लोगों को उकसाया कि मूसा और हारून को अल्लाह का रसूल स्वीकार करने का अर्थ यह है कि हम पर ये श्रेष्ठ हो जाएं जब कि वे जिस जाति का नेतृत्व कर रहे हैं वह हमारी ग़ुलामी कर रही है। तो क्या अब हम अपने ग़ुलामों के धर्म को और उन की जीवन व्यवस्था को स्वीकार कर लें तथा उन के नायक को अपना नायक मान लें यही वह अहं था और यह वह जाहिली वैमनस्य थी जिस ने फ़िरऔन और उस की जाति को सत्य को स्वीकार करने से रोका।

मौजूदा दौर के एक प्रसिद्ध मुफ़स्सिर ने لَنَا عَابِدُوْنَ ''लना आबिदून'' के शब्द से यह निष्कर्ष निकाला है कि जो व्यक्ति किसी का अनुपालन करता है वह एक तरह से उस की पूजा करता है । किन्तु यह बात उसी रूप में सही हो सकती है जब कि आदमी यह समझते हुए किसी का अनुपालन करे कि उस को अकाट्य आदेश देने का पूर्ण अधिकार है। या उस के अनुपालन के ख़ुदा का अनुपालन के अधीनस्थ होना आवश्यक नहीं । इसी लिए शैतान के अंधानुसरण को उस की पूजा कहा गया है। परन्तु बनी इस्राईल फ़िरऔन का अनुपालन मजबूरन कर रहे थे। इस लिए भी कि उस की प्रभुत्व उन पर बनी थी और इस लिए भी कि फ़िरऔन ने उन को ग़ुलामी की ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर कर रखा था। ऐसी सूरत में बनी इस्राईल के बारे में यह कहना कैसे सही हो सकता है कि वे फ़िरऔन की इबादत कर रहे थे और फ़िरऔन ने इसी अर्थ में कहा कि यह क़ौम हमारी आबिद (पूजा करने वाली) है । और अगर मान लिजिए कि फ़िरऔन ने यह बात इसी अर्थ में कही थी तो इस से यह बात कहाँ सिद्ध होती है कि उस का यह कथन सही था। उस ने हज़रत मूसा को दिवाना भी कहा था तो क्या इस का यह मतलब है कि उस की यह बात भी सही थी। अगर नहीं तो फ़िरऔन के इस कथन को कि यह जाति हमारी आबिद (पूजा करने वाली) है इबादत की शरअी परिभाषा का भावार्थ निर्धारित करने के लिए कैसे दलील बनाया जा सकता है?

46. अभिप्रेत तौरात है जो हज़रत मूसा के बाद भी लम्बी अवधि तक लोगों के लिए अल्लाह की हिदायत मालूम करने का साधन बनी रही।

47. हज़रत ईसा का ज़िक्र उन का नाम लिए बग़ैर उन के बेटा होने से किया गया जिस से एक तो इस बात की ओर इशारा करना अभिप्रेत है कि वे बिना बाप के अपनी माँ के पेट से पैदा हुए थे और दूसरे यह कि वे ख़ुदा के नहीं बल्कि मरयम के बेटे थे ।

48. हज़रत ईसा और हज़रत मरयम दोनों मिल कर एक निशानी थे क्यों कि हज़रत मरयम बिना पति के गर्भवती हुई थीं और हज़रत ईसा बिना बाप के पैदा हुए थे।

49. हज़रत मरयम को जब प्रसव पीड़ा उठी तो उन्हों ने बैतुलमुक़द्दस से दूर ख़जूर के तने के पास पनाह ली थी ताकि वे छिपी रहें और लोगों के बुरा भला कहने से बचें। यह जगह बड़ी सुकून और शान्ति की थी और यह एक टीला था जिस के नीचे अल्लाह ने स्रोत जारी कर दिया था।(देखिए सूरह मरयम आयत २४) इस आयत का इशारा उसी जगह की तरफ़ है जो

इस विपदा की परिस्थितियों में अल्लाह के उदार अनुग्रह से उन के लिए सुकून और राहत का सामान बना। बाइबिल में हज़रत ईसा की पैदाइश का स्थान बेत लहम को बतलाया गया है।

50. यह आदेश प्रत्येक रसूल को दिया गया था इस लिए इस को इस शैली में बयान किया गया है कि जैसे तमाम रसूल एकत्र हैं और सब को समूहिक रूप से सम्बोधित कर के यह हिदायत दी जा रही है। यह तत्वपूर्ण शैली है।

पाक चीज़े खाने के भावर्थ में दो चीज़ें शामिल हैं एक यह कि वही चीज़ें खाई जाऐं जो शरअी तौर पर पाक हैं। दूसरे यह कि उन को जायज़ साधनों से प्राप्त किया गया हो।

यह आदेश जब रसूलों को दिया गया तो उन के मानने वालों पर आप से आप यह निश्चित दायित्व आता है कि उस का पूर्ण रूप से अनुपालन करें। हदीस में इस आयत की उत्तम व्याख्या बयान हुई है।

اَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ اللّٰهَ طَيِّبٌ لا يَقْبَلُ اِلَّا طَيِّباً وَ اَنَّ اللّٰهَ اَمَرَ الْمُؤمنينَ بِمَا اَمَرَبِهِ الْمُرسلين فقَالَ يَا اَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبَات واعْمَلُوْا صَالِحاً اِنِّى بِمَا تَعْمَلون عَلِيْمٌ وقال يَا اَيُّهَاالَّذِيْنَ آمَنُوْا كلوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ثُمَّ ذَكَرَ الرجُل يطيل السَّفَرَ اشعث اَغْبَرَ يَمُدّيَدَيْهِ الى السَّمَاءِ يا ربِّ يا ربِّ ومطعمهٗ حرام و مشربه حرامٌ وَعَلْبَسُهٗ حَرَامٌ وَ غذُیُ بِالحرام فَانٰى يُسْتَجَابُ لِذَلِكَ ۔ (مسلم كتاب الزكاة)

अर्थ:- हज़रत अबू हुरैरह रजि. का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ''अल्लाह तआला पाक है और पाक चीज़ों ही को क़ुबूल फ़रमाता है। उस ने ईमान वालों को इस बात का आदेश दिया है जिस का आदेश उस ने रसूलों को दिया है। उस का आदेश है

يَا يُّهَا الرُّسُلُ كُلوا مِنَ الطيِّبَاتِ وَاعْمَلُوْا صالحاً
اِنّى بِمَا تَعْمَلُوْنَ عليمٌ (المؤمنون:٥١)

''ऐ रसूलो ! पाक चीज़ें खाओ और नेक अमल करो तुम जो कुछ करते हो उस को मैं जानता हूँ।'' और फ़रमाया :-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْ ا كُلُوْا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنا كم ۔ (بقره-٢١)

''ऐ ईमान वालो ! खाओ पवित्र चीज़ें जो हम ने तुम्हें दी हैं। उल्लेखकर्ता का कथन है, कि फिर आप ने एक ऐसे व्यक्ति का ज़िक्र किया जो (हज्ज के लिए) लम्बा सफ़र करता है जिस के बाल (सफ़र के कारण) उजड़े और धूल से अटे हुए हैं। वह अपने हाथ आसमान की ओर उठा कर दुआ करता है '' ऐ मेरे रब ! ऐ मेरे रब! हालांकि उस का खाना, उस का पीना और उस का वस्त्र सब हराम का है और हराम खा कर वह पला है। फिर उस की दुआ कैसे स्वीकार्य ठहरेगी?''

(मुस्लिम किताबुज़्ज़कात)

आयत से यह बात भी निकलती है कि पाक चीज़ें खाने में और नेक अमल करने में गहरा सम्बन्ध है। इस लिए कि पवित्र आहार अच्छे कर्मों का पोषण करता है।

51. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट १३३

52. यही बात सूरह अम्बिया आयत ९२ में भी बयान हुई है। अलबत्ता वहाँ ''**फ़त्तक़ून**'' (तो मुझ से डरो) की जगह ''**फ़ाबुदून**'' (तो मेरी इबादत करो) कहा गया है। यह इस बात की ओर संकेत है कि ख़ुदा का डर और उस की इबादत उस का ध्यान एक दूसरे से ऐसे सम्बद्ध हैं कि उन का अलग होना असंभव है। समझिए कि एक दूसरे के पूरक हैं। जो इष्ट पूज्य से डरता होगा वह निश्चय ही उस की इबादत करेगा। एक मात्र इष्ट पूज्य की इबादत न करना उस से निर्भय हो जाना है।

जो लोग अपने रब के डर से काँपते रहते हैं। जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। जो अपने रब का साझीदार नहीं ठहराते। और जो देते हैं जो कुछ भी देते हैं, इस हाल में कि उन के दिल काँप रहे होते हैं कि उन्हें अपने रब की ओर पलटना है। यह हैं भलाइयों में सक्रिय रहने वाले और पहल कर के उन को पा लेने वाले। (अल-क़ुर्आन)

53. परन्तु लोगों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर डाला [53]। हर गिरोह जो उस के पास है उसी में मग्न है।[54]

فَتَقَطَّعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ
كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾

54. तो छोड़ दो इन्हें, अपनी ग़फ़लत में डूबे रहें एक ख़ास समय तक [55]।

فَذَرْهُمْ فِى غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥٤﴾

55. क्या ये समझते हैं कि हम जो माल और औलाद इन को दिए जा रहे हैं।

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾

56. तो क्या इन के लिए भलाई में वृद्धि कर रहे हैं। नहीं बल्कि इन को (असल वास्तविका का) बोध नहीं ।[56]

نُسَارِعُ لَهُمْ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾

57. जो लोग अपने रब के डर से काँपते रहते हैं।[57]

إِنَّ ٱلَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾

58. जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

59. जो अपने रब का साझीदार नहीं ठहराते।

وَٱلَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

60. और जो देते हैं जो कुछ भी देते हैं, इस हाल में कि उन के दिल काँप रहे होते हैं कि उन्हें अपने रब की ओर पलटना है।[58]

وَٱلَّذِينَ يُؤْتُونَ مَآ ءَاتَوا۟ وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ
إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَٰجِعُونَ ﴿٦٠﴾

61. यह हैं भलाइयों में सक्रिय रहने वाले और पहल कर के उन को पा लेने वाले [59]।

أُو۟لَٰٓئِكَ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَهُمْ لَهَا سَٰبِقُونَ ﴿٦١﴾

62. हम किसी व्यक्ति पर उस के सामर्थ्य से अधिक ज़िम्मेदारी नहीं डालते ।[60] और हमारे पास एक किताब है जो (हर एक का हाल) ठीक ठीक बता देती है।[61] और उन के साथ ना इन्साफ़ी न होगी ।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَلَدَيْنَا كِتَٰبٌ يَنطِقُ بِٱلْحَقِّ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

63. परन्तु उन के दिल उस की तरफ़ से ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और कुछ दूसरे काम हैं जिन में वे वयस्त हैं [62]।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِى غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَٰلٌ
مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَٰمِلُونَ ﴿٦٣﴾

64. (वे यही करते रहेंगे) यहाँ तक कि जब हम उन के ख़ुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ लेंगे तो ये चीख़ने लगेंगे।[63]

حَتَّىٰٓ إِذَآ أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِٱلْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْـَٔرُونَ ﴿٦٤﴾

53. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट १३५

54. अर्थात् हर समूह अपने अपने धर्म और धारणाओं को ले कर बैठा है और धर्म के प्रति अपनी आस्था में ऐसा लीन हैं कि सद्बुद्धि की बात सोचने, समझने और मानने को तैयार नहीं। प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय अपने धर्म के बारे में ऐसी साम्प्रदायिक कुमानसिकता का शिकार है कि वह अपने विचारों और अपनी धारणाओं पर पुनर्विचार की आवश्यकता ही महसूस नहीं करता। बड़े बड़े बुद्धिमान एवं विद्वानों का हाल यह है कि जब धर्म का मामला आता है तो उन की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। यही कारण है कि वे धार्मिक रीतियों के चक्कर में फंस कर खुले बेहूदा काम करने से भी नहीं हिचकिचाते। उन को जितना लगाव अपने धर्म से होता है उतना लगाव अपने इष्ट पूज्य से नहीं होता हालांकि धर्म की सारी हलचल इष्ट पूज्य ही के नाम पर है।

55. जो लोग अपनी ग़फ़लत ही में डूबे रहना चाहते हैं और सत्य की ओर बुलाने वाले की बात सुनना नहीं चाहते। उन को उन के हाल पर छोड़ देना ही उचित है। बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जायेगा कि जिस चीज़ को नौका समझ बैठे थे वह काग़ज़ की थी।

56. अर्थात् वे इस ख़ाम ख़याली में लिप्त हैं कि यदि हम किसी ग़लत धर्म का अनुसरण करने वाले होते तो धन सम्पत्ति और संतान की जो प्रतिष्ठाजनक बाहुल्यता हमें प्राप्त है वह न होती। हालांकि इन वस्तुओं का किसी को मिल जाना इस बात का प्रमाण नहीं कि वह सत्य पर है। क्यों कि इन वस्तुओं के द्वारा तो परीक्षा लेना अभिप्रेत होता है। परन्तु ये लोग इस का उल्टा मतलब ले लेते हैं।

57. यह है ईश-भय का वांछित आदर्श कि आदमी न केवल उस से डरे बल्कि उस का डर उस पर इस प्रकार छा जाए कि उस के तेज़ और प्रताप से वह कांप उठे तथा उस के प्रकोप एवं उस की यातना की कल्पना मात्र से वह हिल जाए। यह एक मोमिन का महत्वपूर्ण गुण है। और यह कोई नकारात्मक वस्तु नहीं, कोई हीन भावना नहीं बल्कि अत्याधिक आत्म शक्ति पैदा करने वाली चीज़ है। एसी आत्मशक्ति कि फिर संसार की कोई शक्ति उसे झुका नहीं सकती और फ़िरऔन जैसे निरंकुश शासकों को भी मुँह की खानी पड़ती है।

58. अर्थात् जो सदक़ा और ख़ैरात भी वे करते हैं उस पर तृप्त नहीं होते कि हम अपने कर्तव्य से बरी हो गए। बल्कि ये सब कुछ करते हुए भी वे अपने प्रभु के समक्ष उत्तर देने की कल्पना मात्र से भयभीत रहते हैं कि मालूम नहीं यह कर्म जो हम ने किया सच्चे भाव से किया गया कर्म मान कर स्वीकार्य होगा यह नहीं और वे अपने अपराधों की पकड़ से बच सकेंगे या नहीं। उन के दिलों में उत्पन्न होने वाले ये भाव सदक़ा और ख़ैरात ही के मामले में नहीं उठते बल्कि नेकी के अन्य कामों में भी उठते हैं। अत: हदीस में आता है कि हज़रत आइशा रजि. के इस सवाल के जवाब में कि क्या इस से तात्पर्य वे लोग है जो शराब पीते और चोरी करते हैं? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

لَايَابنتَ الصِّدِّيْقِ ولٰكِنَّهُمُ الَّذِيْنَ يَصُومُوْنَ ويُصَلّوْنَ وَ
يَتَصَدَّقُوْنَ وَهُمْ يَخافُوْنَ اَنْ لَا تقْبَلَ مِنْهُمْ ۔(ترمذی۔کتاب التفسیر)

अर्थ :- "नहीं ऐ सिद्दीक़ की बेटी, इस से तात्पर्य वे लोग हैं जो रोज़े रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं और सदक़ा करते हैं, इस के बावजूद डरते हैं कि ऐसा न हो कि यह स्वीकार न किया जाए।" (तिर्मिज़ी किताबुत्तफ़्सीर)

आयत में विशेष रूप से सदक़े के मामले में इस हृदय भाव का वर्णन हुआ क्यों कि सदक़ा करने वाला, दिखावा, गौरव, नुमाइश और गर्व के फ़ितने का सरलतापूर्वक शिकार हो जाता है।

59. अर्थात् ऐसे सद्गुणी लोग न केवल भलाई के कामों में सक्रिय रहते हैं बल्कि दूसरों के मुक़ाबले में तेज़ दौड़ कर उन को पा लेने की चेष्टा करते हैं। मतलब यह कि बाज़ी जीतने के लिए असल मैदान नेकी का है न कि भौतिक प्रगति एवं खेल कूद का।

60. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ४८२

61. किताब से तात्पर्य मनुष्य का कर्म पत्र (आमाल नामा) है और "वह बोलता है" का मतलब यह है कि वह बोलता रिकार्ड होगा।

62. इन को उन कामों में कोई रूचि नहीं जो नैतिक दृष्टि से अच्छे, मूल्यवान, ख़ुदा के यहाँ स्वीकरणीय, तथा परलोक के जीवन को निश्चित सफलता दिलाने वाले हैं। बल्कि उन को कुछ दूसरे कामों ही से लगाव है। यह तो काफ़िरों का हाल बयान हुआ है। परन्तु वर्तमान दौर में मुसलमानों का हाल भी साधारणतया विचित्र है। कितने ही लोगों को मैच देखने से बेपनाह लगाव है किन्तु नमाज़ से नहीं जब कि उन्हें नमाज़ क़ायम करने का आदेश दिया गया है न कि मैच देखने का। वाहियात फ़िल्में देखने में वे पूरी रात गुज़ार देते हैं यहाँ तक कि ठीक तहज्जुद (अरूणोदय के पूर्व) के समय जो दुआ और इबादत के स्वीकार किये जाने का समय है वीडियो देखने में व्यस्त रहते हैं। उन का दिल दरगाहों में अटका रहता है जब कि मोमिन का दिल मस्जिद में। यह दीन में नये नये प्रचलन (बिदअतें) करेंगे और इन का भव्य आयोजन करेंगे। जैसे मुहर्रम का शर्बत, खिचड़ा, नियाज़, ग्यारहवीं, मौलूद और मीलादुन्नबी का जुलूस आदि। किन्तु नबी के बताये तरीक़ों से

कोसों दूर रहेंगे । वे फ़ुज़ूल ख़र्ची करेंगे और नुमाइशी कामों में अपनी दौलत लुटाऐंगे परन्तु बन्दों के अधिकारों को अदा करने और अल्लाह की राह में ख़र्च करने से जी चुराऐंगे। दुनिया भर की किताबों को वह पढ़ेगे परन्तु अल्लाह की किताब का अध्ययन मनन के लिए उन के पास समय नहीं होगा। इन करतूतों के बावजूद वे समझते हैं कि आख़िरत की सफलता उन्हीं के लिए है।

63. ख़ुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ने का मतलब यह है कि काफ़िर जाति पर जो प्रकोप आएगा उस में ख़ुशहाल लोग निशाने पर होंगे क्यों कि सोसाइटी में बिगाड़ को फैलाने वाले यही लोग थे। वे वाह वाही करते रहे, शाबाशी देते रहे और अपनी दौलत को सत्य मार्ग से रोकने के लिए प्रयोग करते रहे। (देखिए सूरह बनी इस्राईल आयत १६ नोट २०)

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

और यदि हक़ (सत्य) इन की इच्छानुसार पीछे चलता तो आसमान और ज़मीन और जो इन में है सब (की व्यवस्था) छिन्न भिन्न हो जाती । वास्तविकता यह है कि हम इन के पास इन को यद्देहानी कराने वाली चीज़ लाए हैं। और वे अपनी इस याद्देहानी से मुँह फेरे हुए हैं। क्या तुम इन से माल चाह रहे हो? तुम्हारे लिए तो तुम्हारे रब का दिया माल ही बेहतर है और वह बेहतरीन रिज़्क़ देनेवाला है। और बेशक तुम इन्हें सीधी राह की ओर बुला रहे हो।और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे सीधी राह से भटके हुए हैं।*(अल-क़ुर्आन)*

65. अब चीख़ पुकार न करो ! हमारी ओर से तुम्हें कोई सहायता मिलने वाली नहीं ।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ ﴿٦٥﴾

66. जब मेरी आयतें तुम्हें सुनाई जाती थीं तो तुम उल्टे पाँव भाग निकलते थे।

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنكِصُونَ ﴿٦٦﴾

67. घमंड करते हुए इस को क़िस्सा कहानी के लिए खेल बना कर बकवास करते।[64]

مُسْتَكْبِرِينَ بِهِ سَامِرًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾

68. क्या उन्हों ने इस कलाम पर ग़ौर नहीं किया ।[65] या उन के पास ऐसी चीज़ आ गई है जो उन के अगले बाप दादाओं के पास नहीं आई थी [66]?

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُم مَّا لَمْ يَأْتِ
آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

69. या ये अपने रसूल को पहचान न सके इस लिए इस के इन्कारी हो गये [67]।

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٦٩﴾

70. या ये कहते हैं कि उसे जुनून हो गया है [68]। नहीं बल्कि वह उन के पास हक़ (सत्य) ले कर आया है और इन में से बहुत से लोगों को हक़ ही नागवार है [69]।

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ
وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٠﴾

71. और यदि हक़ (सत्य) इन की इच्छानुसार पीछे चलता तो आसमान व ज़मीन और जो इन में हैं सब (की व्यवस्था) छिन्न भिन्न हो जाती [70]। वास्तविकता यह है कि हम इन के पास इन को यद्देहानी कराने वाली चीज़ लाए हैं।और वे अपनी इस याद्देहानी से मुँह फेरे हुए हैं।[71]

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ
وَمَن فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَاهُم بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَن ذِكْرِهِم مُّعْرِضُونَ ﴿٧١﴾

72. क्या तुम इन से माल चाह रहे हो [72]? तुम्हारे लिए तो तुम्हारे रब का दिया माल ही बेहतर है और वह बेहतरीन रिज़्क़ देनेवाला है।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٧٢﴾

73. और बेशक तुम इन्हें सीधी राह की ओर बुला रहे हो।

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٣﴾

74. और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे सीधी राह से भटके हुए हैं।[73]

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ﴿٧٤﴾

75. अगर हम इन पर दया करें और इन का कष्ट दूर करें तो ये अपनी उद्दंडता में ढीट हो कर भटकते रहेंगे।[74]

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾

64. संकेत है मक्का के बहुदेववादियों की ओर कि वे रात में किस्सा कहानी की महफ़िल जमा कर पूरे अहंकार के साथ क़ुर्आन को झुठलाते हैं और उस के विरुद्ध बक़वास करते हैं।

65. यदि वे इस कलाम पर विचार करते तो उन पर यह तथ्य खुल जाता कि यह अल्लाह का कलाम है और फिर वे उस का मूल्य समझते तथा उस का आदर करते। परन्तु उन्होंने सोच विचार के बिना ही अपने मन से एक पक्षीय धारणा इस के बारे में बना ली।

यह आयत भी क़ुर्आन पर चिन्तन मनन करने की निमंत्रणा देती है और यह निमंत्रणा इन्कार करने वालों को दी गई है जिस से स्पष्ट होता है कि क़ुर्आन आम और ख़ास सभी के समझने के लिए आया है और वह सब को सोच विचार करने की दअवत देता है। अत: यह समझना सही नहीं कि यह किताब केवल उलमा के समझने के लिए है। अब तो अनुवादों की सहायता से क़ुर्आन को समझने की आसानियाँ पैदा हो गई हैं अत: कोई कारण नहीं कि आदमी इस का अध्ययन न करे। जो लोग यह कह कर कि क़ुर्आन को समझना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं, साधारण मुसलमानों तथा ग़ैर मुस्लिमों को इस से दूर रखना चाहते हैं वे अपनी जिहालत का परिचय देते हैं। और नहीं चाहते कि क़ुर्आन से उन का सीधा सम्पर्क बन जाए ।

66. अर्थात उन की ओर रसूल का भेजा जाना कोई ऐसी घटना नहीं जो इतिहास में पहली बार घटी हो और इन से पहले के लोग इस से अपरिचित रहे हों। इब्राहीम और इस्माईल रसूल ही थे जो इन (अरबों) के महापूर्वज हैं और अल्लाह की प्रकाशना के अनुसार ही उन्हों ने ख़ाना-ए-काबा का निर्माण किया था और हज्ज के मनासिक (कर्म) निर्धारित किए थे। फिर वह्य (प्रकाशना) और रिसालत को अनोखी बात समझने का कारण?

67. अर्थात् यह बात भी नहीं है कि इन को अपने रसूल के पहचानने में कोई कठिनाई हो रही है क्यों कि रसूल के व्यक्तित्व का उन को भली भाँति अनुभव हो चुका है। और उन की सत्यता इन पर पूर्ण रूप से स्पष्ट है और उस के व्यक्तित्व में रिसालत के चिन्ह इस प्रकार झलके पड़ रहे हैं कि किसी प्रकार भी संदेह की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती।

68. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट ८

69. उन के इनकार का मूल कारण यही है कि सत्य उन्हें पसन्द नहीं । क्यों कि वह उन की इच्छा के अनुकूल नहीं ।

70. कायनात की व्यवस्था हक़ (सत्य) की बुनियाद पर चल रही है। यदि वह लोगों की इच्छाओं की बुनियाद पर चलने लगे तो छिन्न भिन्न हो कर रह जाए। क्यों कि लोगों की इच्छाएं अनेक होती हैं ग़लत भी होती हैं, विपरीत भी होती हैं और न्याय विरुद्ध भी होती हैं। इस दुनिया में भी हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति या कोई समूह जो सत्ता में आता है सफलतापूर्वक शासन नहीं चला पाता क्यों कि विभिन्न इच्छएं और परस्पर विपरीत मत सत्य और न्याय का स्थान ग्रहण कर लेती हैं नतीजा यह कि सोसाइटी और शासन व्यवस्था में बिगाड़ ही बिगाड़ पैदा हो जाता है। इस लिए मनुष्य को सत्यप्रिय बनना चाहिए। और सत्य प्रिय होने का तक़ाज़ा यह है कि अपनी इच्छाओं को सत्य के पीछे चलाए न कि अपनी इच्छाओं के पीछे सत्य को चलाने की कुचेष्टा करने लगे। बहुदेववादी एक मात्र सत्य को अनेकेश्वरवाद के रूप में देखना चाहते हैं जब कि बहुदेववाद ग़लत और व्यर्थ की इच्छाओं के सिवा कुछ भी नहीं जब कि तौहीद (एकेश्वरवाद) बिलकुल सत्य और कायनात की सब से बड़ी सच्चाई है।

71. अर्थात् क़ुर्आन इन के लिए शुरू से अंत तक याद्देहानी और नसीहत है जो इन ही के भले के लिए है। परन्तु जो चीज़ उन की अपनी भलाई के लिए आयी है उसी से वे मुँह मोड़ रहे हैं।

72. अर्थात् (ऐ पैग़म्बर) तुम इन से कोई माल दौलत तो माँग नहीं रहे हो कि वे यह संदेह करने लगें कि यह व्यक्ति ज्योतिषियों की भाँति माल बटोरने के लिए यह सब कुछ कर रहा है।

73. जो व्यक्ति भी आख़िरत पर ईमान नहीं रखता वह गुमराह है। आदमी को सीधी राह पा लेने के लिए ज़रूरी है कि वह आख़िरत अर्थात् मरने के बाद मिलने वाले जीवन पर ईमान ले आए। और आख़िरत के दिन ईमान लाने में क़ियामत के दिन उठाया जाना, अल्लाह के दरबार में पेशी, और कर्मों के अनुसार मिलने वाले फल, सब पर ईमान लाना शामिल है।

74. अर्थात् इन के कष्ट को यदि हम दूर करें तो बजाए इस के कि वे हमारे कृतज्ञ हों उद्दंडता में और अधिक बढ़ते चले जाएंगे।

इस में इशारा है इस बात की तरफ़ कि उस समय मक्का के काफ़िर किसी तकलीफ़ में मुब्तिला कर दिए गए थे। उल्लेखों से मालूम होता है कि यह तकलीफ़ भुखमरी की थी।

76. हम ने इन को अज़ाब में पकड़ा परन्तु वे न अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने विनम्रता अपनाई [75]।

وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ
وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾

77. यहाँ तक कि जब हम कड़ी यातना का दरवाज़ा इन पर खोल देंगे तो इस (हालत) में वे बिलकुल निराश हो कर रह जाएंगे [76]।

حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ
اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾

78. वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान आँख और दिल बनाए । मगर तुम कम ही कृतज्ञ होते हो।[77]

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

79. और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फ़ैलाया और उसी की ओर तुम एकत्र किये जाओगे।

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾

80. और वही है जो जिलाता है और मारता है। रात और दिन का उलट फेर उसी के अधिकार में है। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते [78]?

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾

81. परन्तु उन्हों ने भी वही बात कही जो अगले लोग कह चुके हैं।

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

82. कहते हैं क्या जब हम मर जाऐंगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाऐंगे तो हम को फिर उठाया जाएगा?

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾

83. यह वादा हम से किया जा रहा है, और इस से पहले हमारे बाप दादा से भी किया गया था।[79] यह मात्र अगलों के अफ़साने हैं।

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾

84. इन से पूछो यदि तुम जानते हो तो बतलाओ ज़मीन और उस में बसने वाले किस की संपत्ति हैं?

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾

85. वे कहेंगे, अल्लाह की। कहो फिर क्या तुम याद्‌देहानी हासिल नहीं करते।

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾

86. इन से पूछो सातों आसमानों और महान सिंहासन का स्वामी कौन है।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾

87. वे कहेंगे, अल्लाह ।[80] कहो फिर तुम (उस से) डरते नहीं ?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾

75. इस से अभिप्रेत वे कष्ट और मुसीबतें हैं जिस में एक नबी की नियुक्तित के बाद उस की काफ़िर जाति को इस लिए मुब्तिला किया जाता है कि वह होश में आ जाए। क़ुर्आन में अल्लाह के इस नियम का कई जगहों पर वर्णन हुआ है।

जैसे:

وَمَا اَرْسَلْنَا فِىْ قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ اِلَّا اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ۔(سورہ اعراف۔۹۴)

अर्थ:- ''और हम ने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा उस के निवासियों को तंगी और तकलीफ़ में मुब्तिला किया ताकि वे विनम्रता अपनाएं!'' (आराफ़ -९४)

और एक जगह इस प्रकार सावधान भी किया गया है कि इन्हें बड़ी यातना से पहले सांसारिक यातना की चपेट में ले लेंगे ताकि वे अल्लाह की ओर पलटें। सूरह ''हा मीम सज्दा'' में है:- وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۔(حٰم سجدہ : ۲۱۰)

अर्थ:- ''हम इन्हें बड़े अज़ाब से पहले छोटे अज़ाब का मज़ा चखाएंगे, ताकि वे पलटें।''

मक्का के काफ़िर भी अल्लाह के इस नियम की ज़द में आ गए थे रिवायतों से मालूम होता है कि उन्हें अकाल और भूख के बड़े कष्ट से गुज़रना पड़ा।

76. छोटा अज़ाब अर्थात् सांसारिक यातनाऐं तो इन के संभलने के लिए हैं। किन्तु यदि इन्हों ने इस से कोई सबक़ नहीं लिया तो फिर वे विनाशकारी की चपेट में आ जाएंगे जो उन के लिए सदा सर्वदा की महरूमी और निराशा का कारण होगा।

77. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नह्ल नोट ११५

78. अर्थात् यदि तुम अपनी बुद्धि का सही उपयोग करो तो एकेश्वरवाद तथा मरने के बाद मिलने वाले जीवन एवं न्याय दिवस (अर्थात् परलोक) पर ईमान ले आओ जिस की निमंत्रणा क़ुर्आन तुम्हें दे रहा है।

79. इस में यह स्वीकृति पाई जाती है कि दोबारा उठाये जाने की बात ऐसी नहीं जिस से हम परिचित न हों और अब पहली बार हमारे सामने आई हुई हो। बल्कि हमें मालूम है कि यह बात पहले से चली आ रही है। और यह वादा हमारे पूर्वजों से भी किया गया था। स्पष्ट है यह वादा हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल से पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तित होता रहा है।

80. मक्का के बहुदेववादियों के इस उत्तर से स्पष्ट होता है कि सात आसमानों और महान सिंहासन के अस्तित्व के वे न केवल क़ायल थे बल्कि रब अल्लाह ही को अपना मानते थे। और यह हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ही की शिक्षा का असर हो सकता है। इस मौलिक वास्तविकता को मानने के बावजूद वे बहुत से देवी देवताओं अर्थात् शिर्क के क़ायल थे। यह उन की धारणा का स्पष्ट दोष था परन्तु वे इस पर विचार करने को कदापि तैयार नहीं थे। और आम तौर से यही होता है कि धर्म के मामले में मनुष्य परस्पर विरोधी एवं दोषयुक्त बातों का क़ायल हो जाता है। हालांकि सद्बुद्धि ऐसी बातों को स्वीकार करने से इन्कार करती है।

88. इन से पूछो, यदि तुम जानते हो तो बतलाओ वह कौन है जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है और जो पनाह देता है, और उस के मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता ?

قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ
عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾

89. वे कहेंगे, ये बातें अल्लाह ही के लिए हैं। कहो फिर तुम्हारी मति कहाँ मारी जाती है !

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

90. वास्तविकता यह है कि हम इन के सामने सत्य लाए हैं और ये बिलकुल झूठे हैं।[81]

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾

91. अल्लाह ने किसी को अपना बेटा नहीं बनाया।[82] और न उस के साथ कोई और ख़ुदा है यदि ऐसा होता तो प्रत्येक ख़ुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता। और वे एक दूसरे पर चढ़ दौड़ते।[83] पाक है अल्लाह इन बातों से जो ये बयान करते हैं।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ
كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾

92. छिपे और ख़ुले का जानने वाला। उच्चतर है वह इन की मुश्रिकाना बातों से।

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾

93. दुआ करो ऐ मेरे रब ! यदि तू मुझे अज़ाब दिखा दे जिस का इन से वादा किया जा रहा है।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾

94. तो ऐ मेरे रब ! मुझे इस ज़ालिम गिरोह में शामिल न कर।[84]

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

95. और निस्संदेह हम इस बात पर पुर्ण सामर्थ्य रखते हैं कि जिस अज़ाब का इन से वादा किया जा रहा है वह तुम्हें दिखा दें।

وَاِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

96. बुराई को इस तरीक़े से दूर करो जो बेहतर हो। वे जो बातें बनाते हैं उन को हम ख़ूब जानते हैं।[85]

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ
اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

97. और दुआ करो ऐ रब ! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूँ।[86]

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾

98. और ऐ मेरे रब ! मैं इस बात से भी तेरी पनाह मांगता हूँ कि वे मेरे पास आ मौजूद हों[87]।

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

81. ये वास्तविकताऐं जिन का ये इन्कार नहीं कर सकते एकेश्वरवाद अर्थात् एक मात्र इष्ट पूज्य का स्पष्ट सबूत हैं तथा मनुष्य के पुन: उठाये जाने का प्रमाण भी । पता चला कि क़ुर्आन की दअवत बिलकुल सत्य है और उस का इन्कार करने वाले बिलकुल झूठे हैं।

82. इस से बहुदेववादियों की इस धारणा का खण्डन होता है कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं। ख़ुदा ने जब किसी को बेटा नहीं बनाया तो बेटियाँ बनाने का प्रश्न कैसे उठ सकता है। तथा इस से ईसाईयों की धारणा का भी खण्डन होता है कि हज़रत मसीह अल्लाह के बेटे हैं।

83. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट ५७

84. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह दुआ इस लिए सिखाई गई ताकि आप अल्लाह के अज़ाब का डर रखते रहें। कि यही बन्दगी की शान है।

85. अर्थात् ये लोग तुम्हारा जो मज़ाक़ उड़ाते हैं उस से बिलकुल प्रभावित न हों । इन की बुराई इन की विकृतता तथा इन के कुप्रभावों का तोड़ करने का बेहतर से बेहतर तरीक़ा अपनाओ । खुली हुई बात है कि यह तरीक़ा रचनात्मक और सुधारात्मक ही हो सकता है।

86. संकेत है इस बात की तरफ़ कि सत्य के विरोध का यह जो तूफ़ान उठ खड़ा हुआ है वह शैतान की फैलाई हुई विकृतता एवं कुप्रभावों का परिणाम है। वह सत्य का भी शत्रु है और मनुष्य का भी शत्रु । इस लिए यह मनुष्य को सत्य के विरूद्ध उकसाता है और जो लोग उस से प्रभावित होते हैं वे (His Master's Voice) बन जाते हैं अर्थात् अपने गुरु की बोली बोलने लगते हैं। इन की वे आपत्तियां जो क़ुर्आन, पैग़म्बर और दूसरे जीवन के बारे में व्यक्त की गई हैं शैतान ही के इशारों पर की गई हैं जब कि अल्लाह की वह्य ने मनुष्य को इस बात से ख़बरदार कर दिया है कि शैतान उस का अनादिकालिक शत्रु है। अत: जो व्यक्ति शैतानी स्वभावों एवं उस के कुप्रभावों से सुरक्षित रहना चाहता है उसे चाहिए कि वह शैतान से सतर्क रहे तथा उस की बुराई एवं विकृतता से अल्लाह की पनाह माँगे।

87. यह इस बात की दुआ है कि शैतान मेरे क़रीब भी न भटकें। शैतानों से अत्याधिक घृणा ही उन के शर,उन की विकृतता और उन के वस्वसों से बचने का कारण बनती है।

رَبِّ اَعُوْذُبِکَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّیَاطِیْنِ
وَ اَعُوْذُبِکَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنَ ۔

अर्थ:- ''ऐ मेरे रब ! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूँ और ऐ मेरे रब मैं इस बात से भी तेरी पनाह मांगता हूँ कि वे मेरे पास आ मौजूद हों।''

यदि एक ईमान वाला पूरे आत्मबोध के साथ इन प्रवचनों को कहता है, स्वीकारता है तो यह ऐसा ही है जैसे वह पूरी तरह से अपने आप को अल्लाह की सुरक्षा में दे देता है। और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह की सुरक्षा में दे दे कोई कारण नहीं कि अल्लाह उस को अपनी सुरक्षा में न ले ।

इस हिदायत से वे लोग लाभ नहीं उठा सकते जो शैतान के अस्तित्व को ही नकारते हैं। इन भौतिकवादियों पर शैतान का ऐसा जादू चल गया है कि उन का अपना अस्तित्व ही सब कुछ है। अब इन को क्या ज़रूरत कि शैतान के अस्तित्व को स्वीकार करें।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿۹۹﴾

99. (इन का यही हाल रहेगा) यहाँ तक कि जब किसी की मौत आ खड़ी होगी तो वह कहेगा कि ऐ मेरे रब ! मुझे वापस भेज दीजिए।

لَعَلِّیْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِیْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ
وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

100. ताकि जो कुछ मैं ने छोड़ा है उस में नेक काम करूँ। हरगिज़ नहीं। यह तो बस एक बात है जो यह कह रहा है।[88] और इन के आगे एक बर्ज़ख़ (यमलोक) होगी ।[89] उस दिन तक के लिए जब वे उठाए जाएंगे।

فَاِذَا نُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَلَاۤ اَنْسَابَ بَیْنَهُمْ یَوْمَئِذٍ
وَّلَا یَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

101. फिर जब सूर फूँका जाएगा तो उस दिन उन के बीच न रिश्तेदारियाँ रहेंगी और न वे एक दूसरे को पूछेंगे [90]।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

102. उस समय जिन के पड़ले भारी होंगे वही सफल होंगे [91]।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
فِیْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

103. और जिन के पलड़े हल्के होंगे वे वही हैं जिन्हों ने अपने को घाटे में डाला [92]। जहन्नम में हमेशा रहने वाले।

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِیْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

104. आग उन के चेहरों को झुलस देगी और उन के मुँह बिगड़े हुए होंगे।[93]

اَلَمْ تَكُنْ اٰیٰتِیْ تُتْلٰى عَلَیْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

105. क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनाई नहीं जाती थीं और तुम उन को झुठलाते न थे?

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَیْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّیْنَ ﴿۱۰۶﴾

106. वे कहेंगे ऐ हमारे रब ! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया और हम गुमराह लोग थे ।[94]

رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۰۷﴾

107. ऐ हमारे रब ! हमें यहाँ से निकाल दे। अगर हम फिर ऐसा करें तो ज़ालिम होंगे।

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِیْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿۱۰۸﴾

108. फ़रमाएगा पड़े रहो इसी में धुत्कारे हुए, और मुझ से बात न करो।[95]

اِنَّهٗ كَانَ فَرِیْقٌ مِّنْ عِبَادِیْ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۱۰۹﴾

109. हमारे बन्दों में से एक समूह ऐसा था जो कहता था कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए हैं हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर। और तू सब दया करने वालों से अच्छा दया करने वाला है।[96]

88. आर्थात् यह एक ख़ाली ख़ोली बात है वरना अगर उस को दुनिया में वापस भेज दिया जाए तो वहाँ वह फिर वही काम करेगा जो पहले करता रहा है।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट ४८

89. बर्ज़ख़ का अर्थ रोक और आड़ के हैं। मौत के बाद आत्माऐं (रुहें) जहाँ ठहराई जाती हैं वह लोक और परलोक के बीच का लोक है जो एक रोक और परदा है। इस लिए इसे बरज़ख़ (यमलोक) कहते हैं। और हदीस में उन दशाओं को जो मौत के बाद रुह पर गुज़रते हैं क़ब्र के हालात कह कर संबोधित किया गया है जो मनुष्य की समझ शक्ति की दृष्टि से एक प्रभावी संबोधन है वरना इस का यह मतलब नहीं कि जो क़ब्र में दफ़न हुआ वह तो इन दशाओं एवं ऐसी अवस्थाओं से गुज़रेगा और जो क़ब्र में दफ़न ही नहीं हुआ बल्कि जिस की लाश जला दी गई या किसी और विधि से नष्ट कर दी गई। या ममी (Mumy) अर्थात् मसाला लगाई लाश बन कर दुनिया में स्मृति हेतु सजा ली गई उस पर ऐसी दशाएं वा ऐसी अवस्थाएं नहीं गुज़रतीं । मरने के बाद मनुष्य को क़ियामत के दिन तक यमलोक (बर्ज़ख) में रहना है। क़ियामत के दिन उसे शरीर सहित उठाया जाएगा। जहाँ उसे हमेशा रहना है।

यमलोक में आत्माओं का बसाया जाना इस बात का स्पष्ट खण्डन है कि मरने के बाद मनुष्य किसी न किसी रूप में दुनिया में ही चक्कर काटता रहता है। अर्थात् आवागमन का सिद्धान्त जो एक बेबुनियाद, अबौद्धिक एवं दोषयुक्त सिद्धान्त है।

90. मतलब यह है कि क़ियामत के दिन रिश्तेदारी नहीं काम आएगी कि बाप बेटे के काम आए या बेटा बाप के और न कोई किसी का हाल पूछने वाला होगा कि हमदर्दी और सहानुभूति व्यक्त करे और न ही कोई किसी से मदद माँग सकेगा । प्रत्येक व्यक्ति को अपने बचाव की चिन्ता लगी होगी और किसी के लिए भी यह अवसर नहीं होगा कि वह दूसरे के लिए कुछ कर सके । मतलब यह कि क़ियामत के दिन कुल और वंश के सारे रिश्ते समाप्त हो गए होंगे। बच निकलने अर्थात् मुक्ति पा जाने का एक मात्र साधन ईमान और अच्छे कर्म ही होंगे जैसा कि बाद की आयत से स्पष्ट है।

91. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़ारिअ: नोट ६

92. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़ारिअ: नोट ७

93. कितना दुखदायी, हृदयविदारक एवं अपमानित कर देने वाली यातना होगी। मनुष्य सोचे तो अल्लाह के अज़ाब से पनाह माँगे।

94. अर्थात् जहन्नम में पहुँच कर ये काफ़िर अपनी गुमराही स्वीकार करेंगे और अपनी क़िस्मत को रोऐंगे।

95. अर्थात् अब तुम्हारी कोई सुनवाई होने वाली नहीं। जो मौक़ा अमल का था वह तुम ने खो दिया। अब तो अपने किये की सज़ा तुम को भुगतना है।

96. यह बड़ी दर्दभरी दुआ है जो ईमान वालों की ज़बान से उस समय अदा हुई जब कि काफ़िर उन्हें कष्ट पर कष्ट पहुँचा रहे थे । उन्हों ने उन मज़ाक़ उड़ाने वालों से कुछ नहीं कहा बल्कि अपने रब से ही दया की प्रार्थना की।

❖❖❖❖❖❖❖❖

110. तो तुम ने उन को मज़ाक़ बना लिया था। यहाँ तक कि इस खेल ने मेरी याद से भी तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया और तुम उन की हँसी उड़ाते रहे।

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰۤى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾

111. आज उन के सब्र [97] का बदला मैं ने यह दिया है कि वही कामयाब हो गए।

اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْۤا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾

112. फ़िर वह पूछेगा [98] तुम ज़मीन में कितने वर्ष रहे ? [99]

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

113. वे कहेंगे एक दिन या एक दिन का कुछ भाग। गणना करने वालों से पूछ लीजिए।[100]

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾

114. फ़रमायेगा तुम थोड़ी ही मुद्दत ठहरे रहे, काश तुम ने यह बात जान ली होती ![101]

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

115. क्या तुम ने यह समझ रखा है कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया है और तुम हमारी ओर लौटाए न जाओगे ?[102]

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

116. तो (ऐसी बातों से) बहुत बुलन्द है अल्लाह, वास्तविक सम्राट [103] उस के सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं। महिमाशाली सिंहासन का मालिक [104]।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾

117. और जो कोई अल्लाह के साथ किसी और ख़ुदा को पुकारे जिस के लिए उस के पास कोई दलील नहीं तो उस का हिसाब उस के रब के पास है। निस्संदेह काफ़िर कभी सफलता नहीं पा सकते ।[105]

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

118. दुआ करो मेरे रब क्षमा कर दे, दया कर और तू सब दया करने वालों से अच्छा दया करने वाला है ।[106]

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾ ع

97. यहाँ सब्र के भावार्थ में सत्य पर जमे रहना, कष्ट पर कष्ट सहन करना और दुख़ पहुँचाने वाली बातों पर धैर्य और संयम से काम लेना।

98. अर्थात् अल्लाह तआला उन से पूछेगा जैसा कि संदर्भ से स्पष्ट है।

99. अर्थात् दुनिया में तुम ने कितनी अवधि गुज़ारी ।

100. क़ियामत के दिन वे जिस दुनिया में क़दम रखेंगे उस के हालात इस दुनिया से बिलकुल भिन्न होंगे । उस समय उन्हें महसूस होगा जो अवधि उन्हों ने दुनिया में गुज़ारी वह बहुत ही छोटी थी । अधिक से अधिक एक दिन बल्कि उस से भी कुछ कम । उस का ठीक ठीक अनुमान लगाना उन के लिए अति दुष्कर होगा। इस लिए वे कहेंगे कि इस का सही जवाब तो वही दे सकते हैं जो गणना करने में दक्ष हैं।

101. अर्थात् यदि दुनिया में तुम ने यह बात जान ली होती कि दुनिया में अपनी आयु की जो अवधि तुम गुज़ारोगे वह आख़िरत के मुक़ाबले में अत्याधिक अल्प है,तो तुम्हारी दुनिया बदल गई होती और तुम अपना मूल्यवान समय नष्ट न करते।

102. क़ुर्आन का यह प्रश्न रहती दुनिया तक उन तमाम लोगों से है जो आख़िरत के क़ायल नहीं। मतलब यह कि मरने के बाद जीवन के कर्मों का हिसाब किताब होगा और फिर कर्मानुसार नर्क या स्वर्ग का जीवन मिलेगा, वे इस सत्य को नहीं मानते । ऐसे लोग बताऐं कि आख़िरत और कर्मानुसार दण्ड अथवा इनाम भविष्य की सच्चाइयाँ नहीं तो एक नैतिक अस्तित्व रखने तथा कर्तव्यों का बोध रखने वाली सृष्टि को पैदा करने का क्या अर्थ है? यदि मनुष्य की सृष्टि करने का कोई उद्देश्य नहीं है तो उस की ये सारी चलत फिरत बेकार है। यदि मर कर सदा के लिए मिट्टी होना है तो जीने का लाभ क्या? दुनिया में मनुष्य भाँत भाँत के कष्ट उठाया है। यदि सब्र का कोई फल मिलने वाला नहीं है तो कष्टदायक जीवन बिताने का क्या हासिल? क्यों न वह अपने ही हाथों अपने जीवन की समाप्ति कर दे? आज दुनिया के बड़े बड़े चिंतक और बुद्धजीवी जीवन की समस्याओं को बहस का मुद्दा बनाए हुए हैं। किन्तु जीवन की जो सर्वधिक मौलिक समस्या है अर्थात् उस का असल मक़सद मालूम करना तो इस से वे बिलकुल बेपरवाह हैं। और बुद्धि एवं समझ से काम नहीं लेते।

103. अर्थात् अल्लाह की हस्ती इस से बहुत उच्च है कि वह कोई निरुद्देश्य कार्य करे। यह समझना की मनुष्य जैसी उच्च एवं श्रेष्ट श्रेष्टि को निरुद्देश्य एवं अकारण पैदा किया है, उस की उच्चता से उस को नीचे घसीट लाना है।

अल्लाह तो वास्तविक सम्राट है फिर वह अपनी इस सृष्टि से जिस पर ज़िम्मेदारियों का भार डाला गया है जवाब तलब करने के लिए अपने समक्ष एकत्र क्यों नहीं करेगा?

104. अर्थात् उस का सिंहासन अत्यंत भव्य एवं शानदार है। और वह अपनी पूरी शान के साथ कायनात पर शासन कर रहा है। अत: उस की हुकूमत में अन्धेर नगरी नहीं हो सकती।

105. सूरह की शुरूआत इस बात से हुई थी कि ईमान वालों ने सफलता पाई और ख़ात्मा इस बात पर हो रहा है कि काफ़िर कभी सफलता नहीं पा सकते। इस से इस सूरह का केन्द्रीय विषय खुद ही निर्धारित हो जाता है।

106. अन्त में दुआ के प्रवचनों का उपदेश संकेत है इस बात की तरफ़ कि यह दुआ

(رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ)

सफलता और सौभाग्य का मार्ग प्रशस्त करने वाली है।

सूरह
अन्-नूर

२४.सूरह अन्-नूर

नाम : आयत ३५ में बयान हुआ है कि अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम "अन्-नूर" है।

नाज़िल होने का समय : मदनी है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सन ६ हिज़री में नाज़िल हुई होगी । सूरह अहज़ाब में जो ख़न्दक की जंग (शव्वाल सन ५ हिजरी) के बाद नाज़िल हुई थी घर के बाहर के परदे के सिलसिले में अहकाम बयान हुए हैं और इस में घर के अन्दर ग़ैर महरमों (अर्थात् वे लोग जिन से विवाह हो सकता है उन) के सामने ज़ीनत और बनाओ श्रृंगार दिखाने से मना किया गया है। यह क्रमागत आदेश है जो इस बात पर तर्क प्रस्तुत करता है कि यह सूरह उस समय नाज़िल हुई जब कि इस से पहले घर के बाहर के परदे का हुक्म आ चुका था अर्थात् सूरह अहज़ाब नाज़िल हो चुकी थी।

इस सूरह में जो दण्ड संहिताऐं (हुदूद) बयान हुई हैं वे भी ऐसे अवसर पर ही लागू की जा सकती हैं जब कि लागू करने का बल प्राप्त हो गया हो मदीना में मुसलमानों को यह बल, यह शक्ति बनी कुरैज़ा की जंग के बाद ही प्राप्त हो गई थी जो ख़न्दक की जंग के तुरन्त बाद हुई थी और जिस के बाद यहूदी समर्थक मुनाफ़िक़ (विश्वासघाती) कमज़ोर पड़ गए थे और बौखलाहट के कारण ओछी बातों पर उतर आए थे। अर्थात् शरीफ़ औरतों पर लांछन लगाना आदि ।

केन्द्रीय विषय : सतीत्व, पवित्रता, शर्म और लाज की सुरक्षा के लिए जिन चीज़ों का करना ज़रूरी है उन का निर्देश, व्यभिचार करने वालों और झूठे आरोप लगा कर बेहयाई फैलाने वालों के विरुद्ध कठोर दण्डों की घोषणा, और उस वास्तविकता का स्पष्टीकरण कि ईमान से मोमिन का पूरा जीवन उज्जवल हो जाता है। लाज और पवित्रता इस की चमकती किरणें हैं। फिर इस सूरह का क्षेत्र नैतिक उपदेशों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इस बारे में समाज पर उस की ज़िम्मेदारियाँ भी स्पष्ट कर दी गई हैं और इस्लामी राज्य पर उस के दायित्व भी।

कलाम की तरतीब : आयत १ में प्रस्तावना के रुप में इस सूरह का यह महत्व स्पष्ट किया गया है कि इस में जो आदेश दिए जा रहे हैं उन का अनुपालन अनिवार्य है।

आयत २ से १० में व्यभिचार और व्यभिचार का आरोप लगाने के दण्ड बताए गए है।

आयत ११ से २६ में मुनाफ़िक़ों (पाखण्डियों) को चेतावनी जो शरीफ़ मोमिन मर्दों और शरीफ़ मोमिन औरतों की पवित्रता पर लांछन लगाने के लिए झूठे क़िस्से गढ़ कर सोसाइटी में फैलाते थे और उन के इस फ़ित्ने का शिकार कमज़ोर और भोले भाले मुसलमान भी हो जाया करते थे।

आयत २७ से ३४ में उन कामों के करने के निर्देश हैं जो इज़्ज़त और पवित्रता की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं।

आयत ३५ से ४० में इस वास्तविकता को उजागर किया गया है कि जो लोग अल्लाह की रौशनी में चलते हैं उन के जीवन अल्लाह के प्रकाश से चमक उठते हैं और जो लोग इन्कार करते हैं वे गहरे अंधकार में डूब जाते हैं।

आयत ४१ से ५४ में उन तर्कों को प्रस्तुत करते हुए जिन से शुद्ध ईमान उतपन्न होता है, मुनाफ़िक़ों को निमंत्रण कि वे सच्चे मन से ईमान लाऐं और अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन को स्वीकार करें।

आयत ५५ से ५७ में ईमान वालों को ख़ुशख़बरी कि वह उन को इस प्रकार ख़िलाफ़त का शासन प्रदान करेगा कि मौजूदा भय और आतंक का वातावरण शान्ति के वातावरण में परिवर्तित हो जाएगा।

आयत ५८ से ६१में उन आदेशों का परिशिष्ट जो आयत २७ से ३४ में घर के आदाब के बारे में दिये गए हैं।

आयत ६२ से ६४ आख़िर की आयतें हैं जिन में रसूल की पुकार को असाधरण महत्व देने और इस की ओर पूरा ध्यान देने की हिदायत की गई है।

२४.सूरह अन-नूर

سُوْرَةُ النُّوْرِ

आयतें : 64

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. यह एक सूरह है जो हम ने अवतरित की है [1]। और इसे हम ने फ़र्ज़ किया है [2] और इस में हम ने स्पष्ट आदेश उतारे हैं [3] ताकि तुम सबक़ लो [4]।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ
لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ①

2. व्यभिचारणी औरत और व्यभिचारी पुरुष दोनों में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो।[5] और अल्लाह के दीन के मामले में तुम को उन पर तरस न आए।[6] अगर तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो । और उन को सज़ा देते समय ईमान वालों का एक समूह मौजूद रहे।[7]

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ
وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ
مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ②

3. व्यभिचारी विवाह नहीं करता, मगर व्यभिचारिणी या बहुदेववादी (नारी) से, और व्यभिचारिणी से विवाह नहीं करता मगर व्यभिचारी या बहुदेववादी। और यह हराम कर दिया गया है ईमान वालों पर।[8]

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۡ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ
اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ③

4. और जो लोग पाक दामन औरतों पर आरोप लगाऐं फिर चार गवाह पेश न करें उन को अस्सी कोड़े मारो [9] और उन की गवाही कभी स्वीकार न करो। वे फ़ासिक़ (पापी) हैं ।[11]

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ
فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ④

5. परन्तु जो लोग इस के बाद तौबा करें और इस्लाह कर लें तो अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।[12]

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤

6. और जो लोग अपनी पत्नियों पर आरोप लगाऐं और उन के पास गवाह न हों सिवाय स्वयं उन के तो (इस स्थिति में) उन में से एक की (अर्थात् पति की) गवाही यह है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि वह सच्चा है।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ
اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ
لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥

1. स्पष्ट हुआ कि क़ुर्आन की आयतें जिन सूरतों (Chapters) के रुप में उपलब्ध हैं उन का यह स्वरुप अल्लाह ही की ओर से है। यहाँ ''एक सूरह'' कहने का मतलब इस सूरह के महत्व को स्पष्ट करना है।

2. चूँकि इस सूरह में व्यभिचार और व्यभिचार का अरोप लगाने के कठोर दण्ड निर्धारित किये गए हैं जिन को लागू करना मन पर भारी गुज़रता है तथा अशलीलता एवं स्वतंत्र यौन सम्बन्धों की समाप्ति के लिए भी कड़े आदेश दिये गए हैं इस लिए आरम्भ ही में स्पष्ट कर दिया गया हैं कि जो आदेश इस में दिए गए हैं वे फ़र्ज़ हैं अत: अनिवार्य रुप से इन का अनुपालन किया जाना चाहिए।

दण्ड संहिताओं के लिए लागू करने की शक्ति का होना आवश्यक है और इस का सम्बन्ध सामाजिक व्यवस्था और राज्य से है। इस से इस्लाम की यह हैसियत बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि वह व्यापक अर्थ में दीन (संपूर्ण जीवन प्रणाली) है जो सामाजिक जीवन से सम्बन्धित हिदायतें भी देता है और उस की अपनी एक दंड संहिता भी है जिस का लागू न करना जब कि लागू करने की शक्ति मौजूद हो फ़र्ज़ की अदायगी से विमुखता है और इन की जगह अपने गढ़े हुए क़ानून को लागू करना अल्लाह के आदेशों का खुला उल्लंघन है बल्कि ख़ुदा से उद्दंडता है। परन्तु अफ़सोस है कि वर्तमान युग में मुसलमानों के अधिकांश राज्य बड़ी निर्लज्जता के साथ इस्लाम की दंड संहिताओं की जगह अपने बनाए हुए क़ानून लागू कर रही हैं और जहाँ मुसलमान किसी सेक्यूलर स्टेट के अन्तर्गत रह रहे हैं वहाँ उन्हें इस्लाम की दंड संहिताओ की तार्किकता और वर्चस्वता सिद्ध करने में भी संकोच होता है ताकि उन का सेक्यूलरिज़्म चकना चूर न हो जाए।

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि क़ुर्आन का ज्ञान प्राप्त करना फ़र्ज़ है क्यों कि कर्म के लिए उस का जानना ज़रुरी है। और याददेहानी, नसीहत और तरबियत के पहलू से क़ुर्आन का अध्यन अति आवश्यक है। अल्लाह के आदेशों के जो प्रभाव मन मस्तिष्क पर अंकित होते हैं वह किसी अन्य पुस्तक से नहीं हो सकते चाहे वे कितनी ही लाभदायक क्यों न हों।

3. स्पष्ट आदेश का मतलब यह है कि उन का भावर्थ बिलकुल स्पष्ट है। क़ुर्आन के इस स्पष्टीकरण के बाद इस के किसी आदेश का कोई और मतलब लेना सही नहीं हो सकता जो स्पष्ट भावार्थ के विपरीत हो। इस से उन तमाम बहसों की समाप्ति हो जाती है जो क़ुर्आन के किसी स्पष्ट आदेश को स्पष्ट समझ कर की जाती है।

4. इशारा है इस बात की तरफ़ कि जो दंड संहिता से सम्बन्धित आदेश दिए जा रहे हैं वे इबरत दिलाने के लिए हैं अर्थात् इस लिए हैं कि कोई व्यक्ति अपराध करने का साहस न करे तथा इस बात की याददेहानी हो कि अल्लाह का न्याय विधान जब अपराधियों के लिए दुनिया में दण्ड का निर्धारण करता है तो उस ने जो इन्साफ़ का दिन सुनिश्चित किया है उस दिन वह अपराधियों को उन के दुष्कर्म फल तक क्यों नहीं पहुँचाएगा?

5. इस आयत के अन्तर्गत कुछ बातों का स्पष्टीकरण आवश्यक मालूम होता है.।

(A) व्यभिचार अर्थात् ज़िना एक भयंकर पाप और दण्डनीय अपराध है। पुरुष और स्त्री का स्वेच्छापूर्वक ऐसे अपराध में लिप्त होना उन को निर्दोश नहीं सिद्ध करता और न अपराध से मुक्त ठहराता है। इस मामले में पुरुष और स्त्री दोनों अपने अपराध में समान हैं और एक ही जैसे दंड के भागीदार। अलबत्ता यदि पुरुष ने स्त्री से बल पूर्वक व्यभिचार किया अर्थात् बलात्कार किया तो औरत निर्दोश है और उसे व्यभिचारिणी नहीं कहा जा सकता। ऐसी परिस्थिति में केवल पुरुष दण्ड का अधिकारी होगी ।

(B) मूल अरबी (Text) में 'जल्द शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ किसी ऐसी चीज़ से मारने के हैं जिस का प्रभाव जिल्द अर्थात् चमड़ी पर हो इस से आगे न हो । यह उद्देश्य कोड़े या बेद के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है बशर्ते कि चोट इतनी करारी न लगाई जाए कि चमड़ी उधड़ जाए और शरीर लहुलुहान हो जाए। मारते समय शरीर पर जो मामूली कपड़े हों वह रहने दिए जाएंगे और मुंह तथा कोमल अंगों पर चोट न की जाएगी। पुरुष को खड़ा कर के और स्त्री को बिठा कर मार लगाई जाएगी।

(C) साधारण अपराध के लिए दो गवाह काफ़ी होते हैं किन्तु व्यभिचार के साक्ष्य के लिए क़ुर्आन ने चार गवाहों का होना अनिवार्य ठहराया है। यह कड़ी शर्त इस लिए लागू की गई है ताकि किसी की पवित्रता और उस की प्रतिष्ठा को सरलतापूर्वक निशाना न बनाया जा सके।

(D) आयत के शब्द इस बात पर तर्क प्रस्तुत करते हैं कि यह आदेश सब के लिए समान हैं अर्थात् व्यभिचारी और व्यभिचारिणी कुँवारे हों या शादीशुदा दोनों को सौ सौ कोड़े मारे जाऐं। किन्तु बहुत सी हदीसों से यह सिद्ध है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़िना के विभिन्न मुक़दमों में शादीशुदा पुरुष और शादीशुदा स्त्री को व्यभिचार का अपराधी होने पर रज्म अर्थात् संगसार करने का आदेश दिया या जिस का सहाबा किराम ने अनुपालन किया। ये हदीसें बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद और मुअता आदि में देखी जा सकती हैं। फिर चारों ख़लीफ़ाओं के ख़िलाफ़तकाल में भी इस पर अमलदरामद होता

रहा और उम्मत के उलमा और फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्री) इस बात पर सहमत हैं। इस के अलावा एक हदीस में जो प्रमाण की दृष्टि से बिलकुल सही है यह उसूली बात भी बयान हुई है कि:

لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مسلم يَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَنِّی رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَّا بِاِحْدٰی ثَلَاثٍ: اَلنَّفْسُ بِالنَّفْسِ وَالثَّیِّبُ الزَّانِی وَالْمَارِقُ مِنَ الدِّیْنِ اَلتَّارِکُ الجماعۃ۔(بخاری کتاب الدیات)

अर्थ: किसी मुसलमान का जो यह गवाही देता हो कि अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं और यह कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, ख़ून जायज़ नहीं सिवाय इस के कि इन तीन परिस्थितियों में से कोई एक स्थिति सामने आ जाए उसने किसी का ख़ून किया हो, या शादीशुदा हो कर व्यभिचार किया हो, या दीन से निकल गया हो और मिल्लत को छोड़ दिया हो (अर्थात् मुर्तद हो गया हो।) (बुख़ारी किताबुद्दियात)

इस लिए शादी शुदा हो कर व्यभिचार के अपराधी पुरुष तथा स्त्री के लिए संगसार का दंड (अर्थात् पत्थरों से मार देने का दंड) एक अखण्डनीय वास्तविकता है। अलबत्ता यहाँ यह प्रश्न अवश्य पैदा होता है कि क़ुर्आन आम तौर पर कोड़ो की सज़ा बयान करता है जब कि हदीस शादी शुदा व्यभिचारी तथा व्यभिचारिणी के लिए पत्थरों से मार देने का दण्ड सुनिश्चित करती है, तो दोनों में ताल मेल की क्या सूरत है? इस का उत्तर कुछ विस्तृत है।

व्यभिचार (ज़िना) आज्ञानता काल में बुरी तरह फैला हुआ था यदि परस्पर सहमति से किया गया हो तो उस के लिए किसी दण्ड की कोई कल्पना नहीं थी जैसा कि वर्तमान ''सुसभ्य अज्ञानता युग'' में नहीं है। ऐसे समाज़ में व्यभिचार के अन्तिम कठोर दण्ड के लिए क्रमानुसार आगे बढ़ने की ज़रुरत थी । बिलकुल उस प्रकार जिस प्रकार कि शराब के मतवालों को पहले शराब से नफ़रत दिलाई गई फिर स्पष्टत: हराम सुनिश्चित कर दिया गया और फिर शराब पीने वालों के लिए दण्ड सुनिश्चित हुआ। और इस दण्ड में भी एक हद तक यही क्रम रहा । अर्थात् पहले केवल हाथ से मारने का दण्ड था बाद में कोड़ों का दण्ड निर्धारित किया गया जिस की तफ़सील हदीसों में मिलती है। इस सामाजिक एवं संवैधानिक नीति को ध्यान में रखते हुए पहले चरण में व्यभिचारिणी स्त्रियों को चाहे वह कुँवारी हो यह शादी शुदा घरों में नज़रबन्द करने का आदेश हुआ और व्यभिचारी पुरुष और स्त्री दोनों को चाहे वे कुँवारे हों या शादीशुदा, चेतावनी और व्यवस्था की दृष्टि से दण्ड देने का संक्षिप्त एवं मूल आदेश दिया गया। यह आदेश सूरह निसा आयत १५ और १६ में आया है। इस के बाद दूसरे चरण में सूरह नूर की यह आयत नाज़िल हुई जिस में हर तरह के व्यभिचारियों चाहे वह पुरुष हों या स्त्री और चाहे वे विवाहित हों या अविवाहित सौ कोड़ों के दण्ड का आदेश सुनाया गया । इस आदेश से नज़रबन्द औरतों की रिहाई का मार्ग पशस्त हुआ जिस का वादा सूरह निसा में इन शब्दों में किया गया था।

فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِی الْبُیُوْتِ حَتّٰی یَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ یَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِیْلًا ۔ (نساء۔۱۵)

अर्थ ''(उन्हें घरों में रोके रखो यहाँ तक कि उन्हें मौत आ जाए) या अल्लाह उन के लिए कोई राह निकाले'' (अन्-निसा-१५)

''सबील'' क़ैद और बन्द से रिहाई के अर्थ में है और कोड़ों का दण्ड उन को क़ैद और बन्द से रिहाई दिलाने वाला था। संगसार करने का आदेश उस समय तक नहीं दिया गया था और न संगसार करने को मार्ग प्रशस्त करने के अर्थ में लिया जा सकता है । इस चरण में कोड़ों के दण्ड का आदेश सार्वजनिक रुप से दिया गया जो बिलकुल उचित था क्यों कि उस समय तक विवाहित व्यभिचारी के लिए संगसार का आदेश दिया ही नहीं गया था।

बाद में अर्थात् सूरह नूर के उतरने के कम से कम एक वर्ष बाद लगभग ७ हिजरी में जो व्यभिचार के दण्ड के लिए तीसरे चरण की हैसिहयत रखता है आख़िरी दर्जे की सज़ा सुनिश्चित की गई । अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष व्यभिचार के जो मुक़दमे आए उन में आप ने विवाहित व्यभिचारी पुरुष और विवाहित व्यभिचारिणी स्त्री को संगसारी की सज़ा दी यहाँ तक कि यहूदियों के ज़िना (व्यभिचार) के मुक़दमें में भी आप ने यही फैसला सुनाया और तौरात में संगसारी का जो आदेश मौजूद है उस से उन को तर्क स्थापित कर लाजवाब किया ।

''यदि कोई पुरुष दूसरे पुरुष की ब्याही हुई स्त्री के संग सोता हुआ पकड़ा जाए तो जो पुरुष उस स्त्री के संग सोया हो वह और स्त्री दोनों मार डाले जाएं। इस प्रकार तू ऐसी बुराई को इस्राएल में से दूर करना ।''

''यदि किसी कुँवारी कन्या के ब्याह की बात लगी हो और कोई दूसरा पुरुष उसे नगर में पा कर उस से कुकर्म करे तो तुम उन दोनों को नगर के फ़ाटक के बाहर ले जा कर उन को पत्थरवाह कर के मार डालना।'' (व्यवस्था विवरण २२:२२,२३)

(इन घटनाओं के लिए देखिए बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी अबूदाऊद और अन्य हदीस की किताबों के अध्याय अल हुदूद)

इस प्रकार क्रमानुगत अन्तिम चरणों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सुन्नत के द्वारा जो अल्लाह की प्रकाशना द्वारा प्रमाणित होती है विवाहित व्यभिचारी पुरुष एवं स्त्री के लिए संगसार (पत्थरवाह) करने का दण्ड सुनिश्चित किया । इस से कोड़ों का दण्ड जो सूरह नूर की इस आयत में दिया गया है अविवाहित पुरुष एवं स्त्री के लिए विशिष्ट हो गया है। और अब इस में वह सर्वजानिकता शेष न रही जो इस के शब्दों से स्पष्ट होता है। सुन्नत या सही हदीस के द्वारा क़ुर्आन के आदेशों के विशेष निर्धारणों के बहुत से उदाहरण दिये जा सकते हैं। जैसे सूरह ''जुमुअः'' यह आदेश कि जुमा के दिन जब नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की ओर दौड़ो, यूँ तो सब के लिए है अर्थात् पुरुष और स्त्री सब के लिए है लेकिन सुन्नत ने औरतों को इस से अलग कर के पुरुषों के लिए इस को ख़ास कर दिया है। क़ुर्आन ने वसीयत के पालन किये जाने का आदेश दिया और कोई हदबन्दी नहीं की परन्तु सुन्नत ने १/३ हिस्से के लिए इस की सीमा निर्धारित कर दी । अतः यदि सुन्नत ने क़ुर्आन द्वारा पारित कोड़ो के दण्ड को अविवाहित व्यभिचारी पुरुषों एवं स्त्रीयों के लिए ख़ास कर दिया और विवाहित व्यभिचारी पुरुषों एवं स्त्रीयों के लिए उन से अधिक कठोर दण्ड निर्धारित किया तो इस में आश्चर्य की क्या बात है? अविवाहित की तुलना में विवाहित व्यक्ति से व्यभिचार का हो जाना अपराध को संगीन बनाता है। इस लिए इस का दण्ड भी इसी तुलना में कठोर होना चाहिए। अतः सुन्नत ने जो हद (दण्ड) निर्धारित किया वह बिलकुल न्यायोचित है।

संगसार कर देने का दण्य यद्यपि क़ुर्आन में बयान नहीं हुआ है किन्तु सूरह नूर ही की आयत

اِنَّ الَّـذِيۡـنَ يُـحِبُّوۡنَ اَنۡ تَشِيۡعَ الفَاحِشَةُ فِى الَّذِيۡنَ
اٰمَنُوۡالَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ فِى الدنيا وَالۡاٰخِرةِ۔

अर्थ : ''जो लोग ईमान वालों में बेहयाई फैलाना चाहते हैं उन के लिए दुनिया में भी दुखदायी यातना है और आख़िरत में भी!'' (आयत १९)

इस बात का तक़ाज़ा करती है कि व्यभिचारियों को इबरतनाक सज़ा दी जाए । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवाहित व्यभिचारियों के लिए संगसार (पत्थरवाह) कर देने का दण्ड का नियम जारी कर के इस आयत के मंशा को पूरा किया हैं अतः यह कहना सही न होगा की संगसार की सज़ा के लिए कोई वैचारिक स्त्रोत माजूद नहीं है। अलबत्ता संगसार (रजम) के पक्ष में इस रिवायत से तर्क प्रस्तुत करना सही नहीं है जिस में हज़रत उमर की तरफ़ यह बात जोड़ी गई है कि उन्हों ने फ़रमाया था कि क़ुर्आन में रजम (संगसार) कर देने की आयत मौजूद थी परन्तु बाद में उस की तिलावत उठा ली गई और हुक्म बाक़ी रहा । यह एक बेहूदा बात है जो रिवायतों में आ गई है और इस को हज़रत उमर से जोड़ना हरगिज़ सही नहीं। कुर्आन तो एक पूर्ण एवं अन्तिम चीज़ है जिस में संदेह की कोई गुन्जाइश ही नहीं। वह किसी उल्लेखकर्ता के उल्लेख करने से नहीं बल्कि उम्मत के तवातुर (क्रमागत) से साबित है और इस की रक्षा की ज़िम्मेदारी स्वयं अल्लाह तआला ने ले रखी है। फिर यदि कोई रिवायत अथवा कोई उल्लेख क़ुर्आन में किसी संशोधन का दावेदार है तो उस का दावा सरासर ग़लत बल्कि असत्य क़रार पायेगा । इस लिए यह रिवायत इस लायक़ नहीं कि इस को तनिक भी महत्व दिया जाए। फिर इस रिवायत में आयत जिन शब्दों और जिस शैली में बयान हुई है वे इस क़दर लचर हैं कि उस को क़ुर्आन से जोड़ना ऐसा ही है जैसे ताज महल में मिट्टी की दीवार का जोड़ लगाना। और अगर यह आयत थी तो इस का निरस्त होना और हुक्म का बाक़ी रहना भी एक ऐसी ही बात है जो रिवायत परस्तों ही की समझ में आ सकती है। अफ़सोस कि लोगों ने हदीसें गढ़ने ही पर संतोष नहीं किया बल्कि आयतें गढ़ने का भी दुस्साहस किया। और रिवायत परस्त क़ुर्आन के विरुद्ध तथा बेहूदा रिवायतों को भी सही सिद्ध करने की कुचेष्टा करते रहे।

(E) आयत में सम्बोधन ईमान वालों से है इस लिए मुस्लिम समाज इस बात का ज़िम्मेदार है कि इस दण्ड संहिता (हद) को जारी करे और उस के लागू करने का व्यवहारिक तरीक़ा यह है कि मुसलमानों की हुकूमतें जो इन का प्रतिनिधत्व करती हैं इस को (और इसी प्रकार इस्लाम की दूसरी दंड संहिताओं को) जारी और लागू करें।

6. मतलब यह है कि अल्लाह का दीन जहाँ सख़्ती की माँग करता है वहाँ नरमी न बरतो अल्लामा राज़ी लिखते है:

''फ़ी दीनिल्लाह'' فِى دِيۡنِ اللهِ फ़रमा कर इस बात पर सावधान किया है कि दीन ने जब एक काम को ज़रूरी बता दिया तो उस के विरूद्ध नर्मी का इस्तेमाल सही नहीं।'' (तफ़सीर कबीर जिल्द २३ पृष्ट १४८)

नर्मी के विभिन्न तरीक़े हो सकते हैं। जैसे एक तरीक़ा यह कि शरीअत की दण्ड संहिता को किसी नर्म क़ानून से बदल दिया जाए जो कुफ़्र है। दूसरा तरीक़ा यह है कि व्यवहारिक रूप से उसे लागू करने में रिआयत बरती जाए और तीसरा तरीक़ा यह है कि मार इतनी हल्की हो कि सज़ा का मक़सद ही समाप्त हो जाए। नर्मी के इन तमाम तरीक़ों से परहेज़ ज़रूरी है।

शरीअत की दंड संहिता निश्चय ही सख़्त हैं किन्तु अपराध

को रोकने और अपराधियों को सीख देने के लिए यह आवश्यक है अत: आज मक्का और मदीना की पावन धर्ती में अपराध की जो चकित कर देन वाली कमी है वे इन संहिताओं के लागू रहने की बरकतें हैं।

वर्तमान युग में तो अपराधियों के लिए बहुत हल्की फ़ुलकी सज़ाए सुनिश्चित की जाती हैं। लोगों को ज़ालिमों पर दया आती है किन्तु मज़लूमों पर दया नहीं आती जो अपहरण और बलात्कार का शिकार हो जाते हैं। उन्हें वह सख़्ती भी दिखाई नहीं देती जो किसी अपराध को क़ुबूल कराने के लिए पुलिस बरतती है। और ऐसी ऐसी यातनाऐं देती है कि दौरे वहशत की याद ताज़ा हो जाती है। और कभी कभी तो मुल्ज़िम दम तोड़ देता है हालांकि अभी उस का जुर्म साबित नहीं हुआ।

7. अर्थात् मुसलामानों की एक संख्या दण्ड के समय मौजूद रहे ताकि वे इबरत हासिल करें और किसी व्यक्ति को अपराध करने का हौसला पैदा ही न हो।

8. इस आयत में व्यभिचारियों का आम रवैया बयान हुआ है। एक व्यभिचारी पुरुष,व्यभिचारिणी स्त्री से या बहुदेववादी स्त्री से निकाह करने में कोई आपत्ति कोई ख़राबी महसूस नहीं करता और न एक व्यभिचारिणी स्त्री व्यभिचारी पुरुष से विवाह करने में संकोच करती है किन्तु ईमान वालों के लिए ऐसे रिश्ते हराम हैं। मोमिन औरत के लिए किसी व्यभिचारी या बहुदेववादी से विवाह हरगिज़ जायज़ नहीं। और न मोमिन मर्दों के लिए व्याभिचारिणी, या बहुदेववादी स्त्री से विवाह वैध है। कुकर्म और कुधारणा के चलते ऐसे रिश्ते ईमान वालों के लिए उचित नहीं इस लिए ज़रुर इस से बचना चाहिए। जहाँ तक बलात्कार की बात है वह तो एक व्यभिचारी किसी पाक दामन महिला के साथ भी करता है परन्तु उस को व्यभिचारिणी नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार मुसलमान स्त्री अनजाने में एक ऐसे मुसलमान के विवाह में आ जाती है जो व्यभिचारी है। इस कारण वह व्यभिचारिणी नहीं हो जाती। इस लिए आयत का वही भाव सही मालूम होता है जो ऊपर बयान हुआ।

9. आरोप से अभिप्रेत व्यभिचार का आरोप है और पाकदामन औरतों पर चाहे वे कुँवारी हों या विवाहित, व्यभिचार का आरोप लगाना उन की मान मर्यादा को बट्टा लगाना है जो उन के लिए लज्जा एवं बदनामी की बात है। इस लिए शरीअत ने इस आरोप को सिद्ध न करने वाले के लिए कठोर दण्ड निर्धारित किया है अर्थात् अस्सी कोड़े लगाना।

यह दण्ड हर प्रकार के आरोप के लिए नहीं है बल्कि व्यभिचार के आरोप के लिए ख़ास है जिस को शरीअत की परिभाषा में ''क़ज़्फ़'' कहा जाता है। दण्ड देना इस्लामी अदालत का काम है जिस के सामने यह मुक़दमा पेश किया गया हो और आरोप लगाने वाला अपनी बात के पक्ष में चार गवाह पेश न कर सके।

10. अर्थात् आरोप लगाने वालों की गवाही हमेशा के लिए अमान्य है।

11. अर्थात् उन्हों ने बहुत बड़ा झूठ बोला और पाकदामन औरतों की मान मर्यादा को कलंकित करना चाहा इस लिए वे बहुत बड़े गुनाह (दुराचार) के अपराधी हुए।

इस से यह उसूली बात भी स्पष्ट हुई कि एक मुसलमान फ़ासिक़ अर्थात् दुराचारी भी हो सकता है अगर वह बड़े गुनाह कर बैठे। और जब वह दुनिया में कठोर दण्ड का हक़दार हो जाता है तो आख़िरत में फ़ासिक़ मुसलमान को दण्ड क्यों न भुगतना पड़ेगा। परन्तु आज मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या, दुष्कर्म एवं उल्लंघन का जीवन गुज़ारते हुए इस ख़ाम ख़याली में लिप्त हैं कि कलिमा के मानने वाले होने के कारण कियामत के दिन उन को किसी सज़ा से वास्ता पड़ने वाला ही नहीं है।

12. अर्थात् यदि ऐसा व्यक्ति तौबा कर के अपना सुधार कर लेता है तो फिर वह फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) नहीं रहेगा। अल्लाह तआला उस के गुनाहों को क्षमा कर देगा और उस पर दया करेगा। मुसलमानों की सोसाइटी में भी उसे फ़ासिक़ नहीं कहा जा सकेगा।

जो लोग बोहतान गढ़ लाए हैं वे तुम्हारे ही अन्दर का एक गिरोह है। तुम इस चीज़ को अपने लिए बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए अच्छा है। इन में से जिस ने जितना गुनाह कमाया उतना ही वबाल उस पर है।और जिस व्यक्ति ने उस में बड़ा हिस्सा लिया उस के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है। *(अल-क़ुर्आन)*

7. और पाँचवीं बार यह कहे कि अल्लाह की लानत हो उस पर अगर वह झूठा है।

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٧﴾

8. और औरत से सज़ा इस प्रकार टल सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि यह व्यक्ति (उस का पति) झूठा है।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ
لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٨﴾

9. और पाँचवीं बार कहे कि उस पर अल्लाह का प्रकोप टूटे यदि पुरुष सच्चा है।[13]

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٩﴾

10. अगर तुम पर अल्लाह की उदार कृपा और उस की दया न होती (तो तुम मुश्किल में पड़ जाते । अतः जान लो कि अल्लाह उदार अनुग्रह करने वाला,रहमत वाला है) और यह कि अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला और हिकमत वाला है।[14]

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

11. जो लोग बोहतान गढ़ लाए हैं वे तुम्हारे ही अन्दर का एक गिरोह है।[15] तुम इस चीज़ को अपने लिए बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए अच्छा है।[16] इन में से जिस ने जितना गुनाह कमाया उतना ही वबाल उस पर है। और जिस व्यक्ति ने उस में बड़ा हिस्सा लिया उस के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।[17]

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ
بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي
تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١﴾

12. जब तुम लोगों ने यह बात सुनी तो मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने एक दूसरे के बारे में नेक गुमान क्यों नहीं किया और क्यों नहीं कहा कि यह खुला बोहतान है।[18]

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا
وَقَالُوا هَٰذَا إِفْكٌ مُبِينٌ ﴿١٢﴾

13. वे लोग इस (आरोप) के पक्ष में चार गवाह क्यों न लाए ? और जब वे गवाह नहीं लाए हैं तो अल्लाह के नज़दीक वही झूठे हैं [19]।

لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ
فَأُولَٰئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٣﴾

14. और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की उदार कृपा और उस की दया न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे उस की वजह से बड़ा अज़ाब तुम्हें आ लेता।[20]

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي
مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾

13. इन आयतों में ''लिआन'' का हुक्म बयान हुआ है। ''लिआन'' का मतलब यह है कि पति और पत्नि यह हलफ़िया बयान दें कि यदि वे अपने बयान में झूठे हैं तो उन पर अल्लाह की लानत हो। इस की सूरत यह है कि यदि पति, पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाता है किन्तु उस के पास स्वयं अपने अलावा अन्य कोई गवाह नहीं है। जब कि व्यभिचार को सिद्ध करने के लिए चार गवाह आवश्यक हैं तो वह इस्लामी अदालत के सामने चार बार हलफ़िया बयान दे कि वह अपने आरोप में बिलकुल सच्चा है और पाँचवी बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि अल्लाह की लानत हो उस पर यदि वह झूठा है। इस के बाद औरत को मौक़ा दिया जाएगा कि वह अपने पति के आरोप को झूठा समझती है तो उस का खण्डन करे। और इस खण्डन के लिए उसे चार बार हलफ़िया बयान देना होगा कि पति उस पर आरोप लगाने में झूठा है। और पाँचवी बार अल्लाह की क़सम खाकर कहना होगा कि अल्लाह का प्रकोप हो उस (अर्थात् औरत पर) यदि पति अपने आरोप में सच्चा है । इस के बाद अदालत इन दोनों के बीच सम्बन्ध विच्छेद करा देगी और किसी को कोई दण्ड नहीं दिया जाएगा। किन्तु यदि पति के हलफ़िया बयान के बाद पत्नी व्यभिचार के आरोप का खण्डन नहीं करती तो वह दण्ड की भागीदार है। यह दण्ड वही होगा जो ऊपर आयत नं.२ में बताया जा चुका है अर्थात् सौ कोड़ों की सज़ा क्यों कि يَدْرَا عُنْهَا الْعَذَابُ (अर्थ: ''उस से सज़ा इस सूरत में टल जाएगी कि जब कि-------) में अलअज़ाब से वही सज़ा मुराद ली जा सकती है जो इस संदर्भ में बयान हुई है।

यह सही है कि विवाहित व्यभिचारिणी का दण्ड सुन्नत ने पत्थरों से मार कर संगसार कर देना निर्धारित किया है परन्तु वह उस सूरत में है जब कि चार गवाहों के द्वारा अपराध सिद्ध हो गया हो या मुल्ज़िम ने स्वयं अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो । यहाँ दोनों में से कोई भी सूरत नहीं है। इस लिए पति के हलफ़िया बयान का खण्डन न करने पर औरत की व्यभिचार की आख़िरी सज़ा देने के लिए कोई शरअी दलील मौजूद नहीं है। अत: औरत को व्यभिचार की कम से कम सज़ा ही दी जा सकती है। अर्थात् सौ कोड़े।

हन्फ़ी मसलक ऐसी सूरत में औरत के लिए حَبس हब्स (क़ैद) की सज़ा बताता है अर्थात् जब तक औरत अपने पति के बयान की हलफ़िया खण्डन नहीं करती उसे क़ैद में रखा जाएगा । परन्तु يَدْرَاءُ عَنْهَا الْعَذَابُ (अर्थ :-''सज़ा औरत पर से टल जाएगी----'') में सज़ा से हब्स (क़ैद) मुराद लेने का कोई औचित्य नहीं है। करीब ही में (आयत २ में) व्यभिचार की सज़ा बयान हुई है और उसी क्रम में

يَدْرَاءُ عَنْهَا الْعَذَابَ

(औरत से सज़ा उसी सूरत में टल सकती है जब कि वह....) फ़रमाया गया है इस लिए यहाँ सज़ा से मस्तिष्क उसी सज़ा की ओर जाता जो आयत नं. २ में बयान हुई है। अर्थात् सौ कोड़े की सज़ा ।

लिआन की सूरत में निकाह का रिश्ता टूट जाता है। अत: हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सार के एक मर्द और औरत के बीच लिआन कराया और उन दोनों को जुदा कर दिया। (बुख़ारी किताबुत्तलाक़) लिआन का हुक्म तौरात में भी मौजूद है परन्तु इस विस्तार के साथ नहीं जो क़ुर्आन ने बयान की है। (देखिए गिनती अध्याय ५ आयत ११ से ३१)

14. अर्थात् यह अल्लाह की कृपा है कि उस ने घरेलू उलझी समस्याओं में तुम्हारी रहनुमाई की और यह उस की रहमत है कि उस ने तुम्हारे लिए कठिनाइयों से निकलने की सूरतें पैदा कर दीं। अगर ऐसा न होता तो तुम मुश्किल में पड़ जाते। वह तौबा क़ुबूल करने वाला है इस लिए उस ने गुनहगारों के लिए तौबा एवं प्रायश्चित का द्वार खुला रखा है । वे तौबा कर के अपनी सुधार कर सकते हैं और उस की रहमत के भागीदार बन सकते हैं। वह तत्वदर्शी और हिकमत वाला है इस लिए उस के ये आदेश और क़ानून नीति एवं हिकमत पर आधारित हैं। इन को अनीतिपूर्ण, अनुचित, एवं हिकमत से ख़ाली वही लोग समझते हैं जो अल्लाह के तत्वदर्शी एवं हिकमत वाला होने का विश्वास नहीं रखते।

स्पष्ट रहे कि आयत में ''लौला'' (अर्थात् यदि ऐसा न होता) का जवाब अरबी के सारगर्भित नियमानुसार लुप्त है अर्थात् शब्दों में बयान नहीं हुआ है परन्तु पूर प्रसंग से जो भावार्थ स्पष्ट होता है उसे हम ने कोष्ठक में बयान किया है।

15. इशारा है झूठ के इस तूफ़ान की तरफ़ जो पाखण्डियों (मुनाफ़िक़ों) ने किसी पाकदामन मोमिना के विरुद्ध उठाया था यह गिरोह शामिल तो था मुसलमानों में किन्तु न केवल यह कि उस ने दिल से इस्लाम स्वीकार नहीं किया बल्कि उस का विरोधी था और मुसलमानों को सताने पर तुला हुआ था। उस ने मात्र अपने क़बीले के मुसलमान हो जाने या इस प्रकार की दूसरी मसलहतों के चलते इस्लाम स्वीकार किया था। वास्तविक रुप से उसे इस्लाम से कोई लगाव नहीं था बल्कि उस के प्रति उस ने अपने मन में वैमनस्य पाल रखा था। और अपने इसी वैमनस्य के चलते इस्लाम और मुसलामानों के विरुद्ध भाँत भाँत के षडयंत्र रचता रहता था। अहज़ाब की जंग (सन ५ हिजरी) के बाद उस ने मुस्लिम समाज की साख को तोड़ने

तथा उस की छवि को बिगाड़ने के लिए, शरीफ़ मुसलमान औरतों को बदनाम करने, बेहयाई की चर्चा करने और झूठी अफ़वाहें फैलाने का काम शुरू किया इस अवसर पर वे एक शरीफ़ एवं पवित्र मोमिन ख़ातून के ख़िलाफ़ एक घिनावना क़िस्सा गढ़ लाए और इस बोहतान को इस प्रकार प्रचरित करना शुरू किया कि कुछ असावधान मुसलमान भी इस की चर्चा में भाग लेने लगे। मुनाफ़िक़ों के इसी नये फ़ितने की तरफ़ इन आयतों में इशारा किया गया है और उन मुसलमानों को कड़ी चेतावनी दी गई है जिन्होंने झूठी अफ़वाहों से प्रभावित हो कर बुराई के प्रचार में भाग लिया था।

क़ुर्आन ने स्पष्ट रुप से नहीं कहा कि वह कौन ख़ातून थीं जिन के विरुद्ध तूफ़ान खड़ा किया गया था इस लिए इस को सुनिश्चित करना आवश्यक नहीं और चूँकि इस की चर्चा करने से रोका गया है जैसा कि आगे की आयतों से स्पष्ट है इस लिए सहाबा किराम ने इस आयत की तफ़्सीर में तूफ़ान की वह घटना उद्धृत नहीं की जो उस समय घटी थी। इस लिए बात की खोज लगाने की कोशिश बिलकुल अनावश्यक और अनुचित है कि यह आरोप किस ख़ातून पर लगाया गया था और क्या कहानी गढ़ी गई थी। बेहयाई के झूठे क़िस्से बयान करने से चाहे वह खण्डन ही के साथ क्यों न हो बुरे प्रभाव पड़ते हैं इस लिए इस को नक़ल न करना ही उचीत है और सलामती की राह यही है कि क़ुर्आन के संक्षिप्त बयान पर संतोष कर के सम्बन्धित आदेशों पर दृष्टि और ध्यान को केन्द्रित किया जाए।

रह गई वे रिवायतें अथवा उल्लेख जिन में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि. पर दोषारोपण का क़िस्सा बयान हुआ है तो क़ुर्आन से इस का अनुमोदन नहीं होता। क्यों कि क़ुर्आन का बयान साधारण पवित्र ईमान वाली औरतों से सम्बन्धित है जैसा कि आयत १२ और २२ से स्पष्ट है। इस में कोई इशारा भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी भी पवित्र पत्नियों की ओर नहीं है। यदि घटना हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. पर दोषरोपण की होती तो दोषारोपण करने वालों का अपराध और संगीन हो जाता कि ये लोग मोमिनों की माँ (उम्मुलमोमिन) की शान में गुस्ताख़ी के अपराधी हुए हैं। तथा उन्हों ने अपनी इस हरकत से स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कष्ट पहुँचाया है और नबी के परिवार का कलंकित करने का कारण बने हैं। किन्तु इस प्रकार की कोई बात इन आयतों में संकेतिक रुप से भी वर्णित नहीं है। फिर इन रिवायतों पर प्रमाणिकता की दृष्टि से भी कलाम की गुन्जाइश है और मज़मून (Text) की दृष्टि से तो बहुत सी बातें अस्वीकारणीय हैं। यह रिवायत बुख़ारी, मुस्लिम और अन्य हदीस की किताबों में विस्तार से बयान हुई हैं तथा सीरत इब्ने हिशाम में भी यह इब्ने इस्हाक़ से उद्धृत हुई है। उस रिवायत को नक़ल करने से बात लंबी होगी तथा यह बात मुनासिब भी नहीं मालूम होती कि एक ऐसी रिवायत को क़ुर्आन की तफ़्सीर में जगह दी जाए जिस को बयान करने में कुढ़न महसूस हो। इस लिए हम संक्षेप में यह बयान करने पर संतोष करेंगे कि किन कारणों से यह रिवायत स्वीकारणीय नहीं है।

(A) सब से पहली बात जो इस रिवायत में खटकती है वह यह है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक इस बोहतान की सुचना पहुँच गई तो आप की प्रेम दृष्टि हज़रत आइशा की तरफ़ नहीं रही जब कि हज़रत आइशा उन दिनों बिमार रहीं। आप बस ख़ैरियत मालूम कर के चले जाते इस लिए हज़रत आइशा ने महसूस किया कि अवश्य ही कोई बात है। फिर जब उम्मे मिस्तह ने हज़रत आइशा को बताया कि उन पर दोषारोपण किया गया है तो उन को बहुत सदमा हुआ और वे रोती रहीं। इस से स्पष्ट होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म ने इस अफ़वाह को सुन कर इस का तुरन्त खण्डन नहीं किया और हज़रत आइशा से कुछ पूछे बग़ैर और मामले की छानबीन किये बग़ैर उन से बदगुमान हो गए। हालाँ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँची शान से यह असंभव है कि आप ऐसा रवैया अपनी नेक पत्नियों के प्रति अपनाऐं जिन की पवित्रता और शराफ़त किसी भी प्रकार के शक से परे हो। क़ुर्आन तो ईमान वालों से कहता है कि तुम ने जब बोहतान का क़िस्सा सुना तो एक दूसरे के बारे में नेक गुमान क्यों न किया और यह क्यों नहीं कहा कि यह तो खुला बोहतान है!(आयत-१२) क़ुर्आन की इस सख़्ती का रुख़ उन मुसलमानों की तरफ़ है जिन्होंने एक पाकदामन ख़ातून पर लगाए गए मिथ्यारोप का तुरन्त खण्डन नहीं किया! परन्तु ऊपर की रिवायत को स्वीकार करने की सूरत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रवैये का कोई औचित्य बताना मुश्किल है। और कोई ऐसी रिवायत जिस से कि नबी की पदवी पर उंगली उठती हो अस्वीकार्य एवं अमान्य है।

(B) इस रिवायत में दूसरी बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह जोड़ी गई है कि जब आप ने देखा कि हज़रत आइशा रो रही हैं तो हज़रत अली और हज़रत उसामा को बुलाया और उन से अपनी पत्नी को छोड़ देने के बारे में परामर्श चाहा। उसामा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हम आप के घर वालों के बारे में ख़ैर और भलाई के सिवा कुछ नहीं जानते और हज़रत अली ने कहा अल्लाह ने आप पर तंगी नहीं फ़रमाई है। आइशा के अलावा और भी औरतें मौजूद हैं (अर्थात् आप दूसरी औरतों से निकाह कर सकते हैं) आप दासी से पूछ लिजिए वे आप को सच सच बताऐंगी। आप ने बुरैरह को बुला कर पूछा तो बुरैरह ने कहा मैं ने इन में कोई बात

ऐसी नहीं देखी जो शक पैदा करने वाली हो।

यह बात भी मानने योग्य नहीं है कि एक ऐसे मामले में जो विवाहिक जीवन से सम्बन्धित था उसामा जैसे अल्प आयु के बालक से परामर्श किया होगा । और फिर यह बात कितनी अजीब है कि आप एक दासी से तो पूछें किन्तु अपनी दूसरी पत्नियों से न पूँछें सिवाय ज़ैनब के। हज़रत अली से तो आप परामर्श करें किन्तु हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर जैसे महानुभावों को बिलकुल नज़रंदाज़ कर दें । हज़रत अबू बकर से रिवायत में इस बात का कोई वर्णन नहीं कि आप ने हज़रत अबू बक्र रज़ि. को इस ओर ध्यान दिलाया हो कि उन की बेटी के बारे में क्या क्या बातें हो रही हैं। फिर हज़रत अली रज़ि. का जवाब भी कुछ वाजिबी वाजिबी सा था। बजाय इस के कि उन की ज़बान से वे बातें निकलतीं जिन की आशा एक मोमिन से की जा सकती है अर्थात् क़ुर्आन के अनुसार

سُبۡحَانَكَ هَٰذَا بُهۡتَانٌ عَظِيمٌ

(ख़ुदाया ! तू पाक है । यह तो बहुत बड़ा बोहतान है।) उन्हों ने कहा कि आइशा के अतिरिक्त आप को बहुत सी दूसरी स्त्रीयाँ मिल सकती हैं एक ऐसे मामले में जिस की, कि जानकारी की जा रही हो यह क्या जवाब हुआ? हज़रत अली रज़ि. के बारे में हमें यह बद्गुमानी नहीं है कि उन्हों ने ऐसा जवाब दिया होगा, बल्कि यह रिवायत करने वाले की अपनी मन की उपज है जो वह प्रभाव छोड़ती है कि हज़रत अली पहले ही से हज़रत आइशा को आदर की दृष्टि से देखते ही नहीं थे। इस से रिवायत करने वाले (ज़ुहरी) के बारे में शीआ मानसिकता का संदेह अवश्य होता है।

(C) उक्त वर्णित रिवायत में है कि हज़रत अली से परामर्श करने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और मुसलमानों से संबोधन कर के फ़रमाया कि कौन मेरा साथ देगा उस व्यक्ति के प्रति जिस ने मेरे घर वालों के बारे में मुझे कष्ट पहुँचाया है और अल्लाह की क़सम मैं ने अपने घर वालों में अच्छाई ही देखी है और जिस व्यक्ति पर यह आरोप लगा रहे हैं उस में भी अच्छाई ही देखी है। इस पर सअद बिन मुआज़ ने कहा कि यदि वह आरोप लगाने वाला व्यक्ति औस क़बीले से है तो मैं उस की गर्दन उड़ा दूँगा और यदि ख़ज़रज क़बीले से है तो आप जो आदेश देंगे उस का पालन करेंगे । यह सुनते ही सअद् बिन उबादा खड़े हो गए और सअद बिन मुआज़ से कहा, आप झूठ बोल रहे हैं। आप कदापि इसे क़त्ल नहीं कर सकते। सअद् बिन मुआज़ ने कहा, हम उसे ज़रुर क़त्ल करेंगे, तुम तो मुनाफ़िक़ हो और मुनाफ़िकों की तरफ़ से बोल रहे हो । क़रीब था कि औस और ख़ज़रज क़बीले के लोग लड़ पड़ें परन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन को ठंडा कर दिया ।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति में अंसार के दो क़बीलों का इस प्रकार झगड़ना अविश्वस्नीय है। सअद् बिन मुआज़ और सअद बिन उबादा दोनों बहुत बड़े सहाबी हैं। उन के बारे में कदापि यह सोचा नहीं जा सकता कि उन्हों ने एक दूसरे पर व्यक्तिगत आक्रमण किये होंगे। यह रिवायत उन के चरित्र को धूमिल बनाती है। और यह बात भी अत्याधिक विचित्र है कि यदि यह घटना घटी तो हज़रत अबू बक्र हज़रत उमर हज़रत उस्मान और हज़रत अली किस प्रकार ख़ामोश रहे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिमायत में क्यों न उठ खड़े हुए। ये बातें इस रिवायत को संदिग्ध बनाती हैं।

(D) रिवायत में आगे बयान हुआ है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत आइशा के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया ऐ आइशा मुझे तुम्हारे बारे में वह ख़बरें पहुँची हैं। अगर तुम निर्दोष हो तो अल्लाह तुम्हें बरी घोषित कर देगा और यदि वास्तव में तुम से कोई गुनाह हो गया है तो अल्लाह से क्षमा माँगो और तौबा करो, क्यों कि जब बन्दा अपने पापों को स्वीकार करता है और प्रायश्चित करता है तो वह उस के प्रायश्चित को स्वीकार करता है। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं, यह सुन कर मेरे आँसू सूख गए। इस के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्य आई और आप ने फ़रमाया ऐ आइशा अल्लाह ने तुम्हें बरी घोषित कर दिया।

इस रिवायत से ऐसा प्रतीत होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत आइशा से बदगुमान हो गए थे जो आयत १२ की रौशनी में जिस में ईमान वालों को परस्पर नेक गुमान रखने का निर्देश दिया गया है किसी तरह भी स्वीकार करने योग्य नहीं है। फिर आप का हज़रत आइशा से यह कहना कि यदि तुम से गुनाह हुआ है तो प्रायश्चित करो का मतलब यह हुआ कि यदि हज़रत आइशा रज़ि. से इतना बड़ा गुनाह हुआ था तो इस के लिए उन का प्रायश्चित करना काफ़ी था हालाँकि इस अवस्था में तो उन पर इस्लाम की दंड संहिता लागू होती और नबी सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम उन्हें अपने विवाह में कभी न रखते। क्यों कि यह बात प्रतिष्ठित नबी के पूरे व्यक्तित्व को धूमिल करने वाली होती। इस से पता चलता है कि यह क़िस्सा कहानी मात्र है।

(E) सूरह नूर से पहले सूरह अहज़ाब उतर चुकी थी जिस में नबी की पत्नीयों को मोमिनों की माऐं बताया गया था तथा रसूल को कष्ट पहुँचाने वालों को लानत का पात्र ठहराया गया था। इस के बाद कौन ऐसा मुसलमान हो सकता था जो अपने ईमान में सच्चा भी होता और मोमिनों की माओं में से किसी

दोषारोपण का दुस्साहस भी करता?

(F) इस फ़ित्ने का असल सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई था किन्तु इस रिवायत में इस बात का कोई ज़िक्र नहीं है कि हज़रत आइशा को बरी घोषित करने वाली आयतों के अवतरण के बाद उस पर कज़्फ़ का क़ानून लागू किया गया। अलबत्ता दूसरी रिवायतों में हज़रत मिस्तह जो एक बदरी सहाबी हैं, हज़रत हस्सान बिन साबित पर जो दरबारे नबवी के शायर हैं और हज़रत हमना बिन्त हजश पर क़ज़्फ़ का क़ानून लागू करने का वर्णन मिलता है। यह अजीब मामला है कि जिस ने इस तूफ़ान को उठाया था उस को तो कोई दण्ड दिया ही नहीं गया अलबत्ता जो लोग इस से प्रभावित हो गए थे उन्हें दण्ड दे दिया गया । जब कि क़ुर्आन कहता है कि जिस व्यक्ति ने इस बोहतान में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया उस के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

हज़रत मिस्तह बदरी सहाबी हैं इस लिए इतने ग़ैर ज़िम्मेदार नहीं हो सकते कि उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा पर आरोप लगाऐं। हज़रत हस्सान अपनी शायरी के द्वारा काफ़िरों को मुँह तोड़ जवाब दिया करते थे और वे इस मैदान के मुजाहिद थे। क्या ऐसे महापुरुषों के बारे में सोचा जा सकता है कि वे हज़रत आइशा के विरुद्ध दोषारोपण में भाग लेंगे? यदि मान भी लें कि उन्हें कोई संदेह हो गया था तो वे उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जानकारी में भी ला सकते थे। आप की जानकारी में लाए बग़ैर आप के घर वालों को बदनाम करने की कोशिश किसी ईमान वाले का काम नहीं हो सकता ना कि किसी बड़े सहाबी के बारे में यह मत बनाया जाए। फिर सीरत इब्ने हिशाम की रिवायत के अनुसार हज़रत हस्सान को तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनाम प्रदान किये। क्यों कि हज़रत सफ़वान ने क्रोधित हो कर उन पर तलवार से हमला कर दिया था। यदि वे क़ज़्फ़ के अपराधी हो कर गवाही देने योग्य न रहे होते तो आप उन को इनामों से अलंकृत कैसे करते । हम्ना हज़रत ज़ैनब की बहन थीं और रिवायत के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूछने पर हज़रत ज़ैनब ने हज़रत आइशा के बारे में अच्छी राय ज़ाहिर की थी इस लिए कोई कारण नहीं कि हज़रत हम्ना ने उन सारी वास्तविकताओं को नज़रंदाज़ कर के हज़रत आइशा पर आरोप लगाने में हिस्सा लिया हो। सच्चाई यह है कि यह रिवायत कई बड़े सहाबियों के चरित्र को दूषित और धूमिल करती है।

(G) प्रमाणिकता की दृष्टि से भी ''इफ़्क़'' अर्थात् इस घटना की रिवायतों में बहस की काफ़ी गुन्जाइश है। यह लम्बी रिवायत तो इब्ने शहाब ज़ुहरी से उल्लिखित हुई है और ज़ुहरी की गिनती सिक़ा रावियों (अर्थात् प्रमाणिक उल्लेखकर्ताओं) में होती है परन्तु जैसा कि हाफ़िज़ ज़हबी ने अस्मा-उर-रिजाल की किताब मीज़ानुल-एतिदाल में पुष्टि की है कि वे कभी घपला भी किया करते हैं।

كان يدلس في النادر۔ (میزان الاعتدال ج۴ ص۴۰)

अर्थः ''वे दुर्लभ रिवायतों में तदलीस किया करते थे।'' (मीज़ानुलएतिदान जिल्द ४ पृष्ट ४०) तदलीस का मतलब यह है कि रिवायत वास्तव में जिस उल्लेखकर्ता से उल्लिखित है उस की ओर उस को मन्सूब न करते हुए किसी और उल्लेखकर्ता की तरफ़ मन्सूब की जाए ताकि प्रमाण की मूल वास्तविकता पर परदा पड़ा रहे और लोगों के लिए रिवायत स्वीकारणीय हो जाए। और इब्ने हजर लिखते हैं :

لا يثبت له السماع من عروة

अर्थः-''उर्वा से उन का सुनना साबित नहीं है।'' (तहज़ीबुत्तहज़ीब जिल्द ९ पृष्ट ४५०)

ज़ुहरी के बारे में एक बात यह भी महसूस होती है कि ये ऐसी रिवायतों के उल्लेखकर्ता हैं जो हज़रत आइशा और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन को बहसों में लाते हैं जिस से उन के बारे में शीआी मानसिकता का संदेह होता है। परन्तु चूँकि उन का सम्बन्ध ख़लीफ़ा अब्दुल मालिक के दरबार से था इस लिए उन्होंने बीच का रास्ता अपना रखा था।

कुल बातों का सार यह कि जुहरी की रिवायत किसी पहलू से भी संतोषप्रद नहीं कि उस को उस आयत की जिस में कि ''इफ़्क़'' की किसी घटना की ओर इशारा किया गया है,तफ़्सीर क़रार दिए जाए।

रही अन्य रिवायतें जिस में हज़रत आइशा पर आरोप का वर्णन संक्षेप में हुआ है तो उन पर भी कलाम की काफ़ी गुन्जाइश मौजूद है। इस मसले पर शोध के लिए देखिए हकीम नियाज़ अहमद साहब की किताब ''रिवायते इफ़्क़'' (प्रकाशक मश्कूर एकेडमी : 86/F/2 ख़ालिद बिन वलीद रोड। कराची -२९)

16. ख़ैर इस कारण मुसलमानों की सोसाइटी में जो मुनाफ़िक़ शामिल हो गए हैं उन की असलियत सामने आ जाएगी। इसी प्रकार सीधे सादे मुसलमानों को जो उन की बातों से प्रभावित हो गए थे सबक़ मिलेगा और सावधान रहने वाले सच्चे मुसलमानों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और वे अपने सचेत एवं परहेज़गाराना रवैये के आधार पर इनाम के हक़दार होंगे।

17. अर्थात् इस शर्मनाक झूठ को फैलाने में जिस ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया है वह अल्लाह के यहाँ बहुत बड़े दण्ड का भागीदार है।

18. यह बात यद्यपि एक ख़ास घटना के बारे में कही गई है परन्तु इस से जो उसूली हिदायत मिलती है वह यह है कि जब किसी पवित्र मुस्लिम महिला पर व्यभिचार का आरोप लगाया जाए तो मुसलमान पुरुषों और स्त्रियों को चाहिए कि वे किसी बदगुमानी में लिप्त न हों और न केवल यह कि अच्छे गुमान से काम लें बल्कि उस आरोप का खण्डन भी करें और इस खण्डन के लिए यह बात बिलकुल काफ़ी है कि वह खुला बोहतान है। आयत में बात यद्यपि औरतों के बारे में कही गई हैं क्यों कि किसी शरीफ़ ख़ातून पर आरोप का मामला बड़े गम्भीर परिणामों का प्रतीक होता है किन्तु अन्दाज़े बयान से यह बात भी स्पष्ट है कि पाकबाज़ मुसलमान पुरुष पर आरोप लगाना भी बहुत बड़ा गुनाह है।

19. व्यभिचार के आरोप को सिद्ध करने के लिए क़ुर्आन ने चार गवाहों की क़ैद लगाई है। यदि कोई व्यक्ति आरोप लगाने के बाद चार गवाह प्रस्तुत नहीं करता तो अल्लाह के क़ानून में वह झूठा है। यदि मान लें कि उस ने गवाहों की ग़ैर मौजूदगी में व्यभिचार की किसी घटना को देखा था तो उसे चाहिए कि उस का चर्चा न करे। क्यों कि अपर्याप्त सबूत के कारण मुल्ज़िम को सज़ा तो नहीं दी जा सकती और चर्चा करने का नुक़सान यह होगा कि सोसाइटी में बेहयाई की बातें फैलने लगेंगी । गवाहों का न्याय प्रिय होना आवश्यक है। क्यों कि क़ुर्आन ने दूसरी जगह पुष्टि की है कि

وَاَشۡهِدُوۡا ذَوَىۡ عَدۡلٍ مِّنۡكُمۡ (طلاق:٢)

अर्थ: ''अपने में से दो न्याय प्रिय व्यक्तियों को गवाह कर लो।''

फ़ासिकों की गवाही पर दण्ड संहिता लागू नहीं की जा सकती । रहा यह प्रश्न कि क्या औरतों की गवाही इस मामले में स्वीकार करने योग्य है तो धर्मशास्त्रियों (फ़क़ीहों) का बहुमत दंड संहिता और क़सास (हत्या दण्ड) के मामले में औरतों की गवाही को अमान्य मानने में एकमत हैं किन्तु क़ुर्आन ने उस की पुष्टि नहीं की है। और न किसी सही हदीस में यह बात बयान हुई है। क़ुर्आन के आदेश मर्दों और औरतों सब के लिए समान हैं यह और बात है कि कोई युक्ति कोई दलील किसी आदेश को मर्दों के लिए ख़ास कर रही हो। सूरह बक़र: में क़र्ज़ के मामले में एक मर्द और दो औरतों की गवाही को मान्य ठहराया गया है। इस लिए कोई कारण नहीं कि व्यभिचार और हत्या जैसे आँखों देखे मामले में औरतों की गवाही को अस्वीकार्य माना जाए। अत: अता और हम्माद ने व्यभिचार के एक मुक़दमे में तीन मर्दों और दो औरतों की गवाही स्वीकार की थी। और इब्ने हज़्म के नज़्दीक एक पुरुष की जगह दो न्याय प्रिय मुसलमान औरतों की गवाही क़ुबूल करना जायज़ है। (अत्तशरीउल जनाई जिल्द २ पृष्ट ४११)

बलात्कार के मुक़दमों में औरतों की गवाही एक ज़रूरत बन कर सामने आ सकती है।

20. मुनाफ़िक़ों (पाखण्डीओं) के उठाए हुए फ़ित्नो में कुछ नासमझ मुसलामान भी शामिल हो गए थे इस पर यहाँ पकड़ की गई है कि इस प्रकार के फ़ित्नों के परिणाम बड़े भयावह होते हैं वह तो अल्लाह की बड़ी कृपा हुई कि इस ने समय पर तुम्हें इस से सावधान कर के एक बड़े प्रकोप से बचा लिया अत: तुम्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए। इस आयत में तंबीह का जो पहलू है वह यद्यपि व्यभिचार के आरोप से सम्बन्धित है किन्तु इस में यह सामान्य चेतावनी भी निहीत है कि यदि मुसलमान मनुफ़िक़ों के फ़ित्नों का शिकार हो गए तो उन्हें बदतरीन परिणामों का सामना करना पड़ेगा । और इतिहास गवाह है कि मुसलमान जब सबाई फ़ित्ने का शिकार हुए तो उन के अन्दर तलवार चली और ख़िलाफ़त जैसे आदर्श शासन से वे वन्चीत हो गए।

15. जब तुम उस (झूठ) को अपनी ज़बानों पर ला रहे थे और अपने मुँह से वह बात कह रहे थे जिस के बारे में तुम्हें कोई ज्ञान न था। तुम इसे मामूली बात समझ रहे थे हालांकि अल्लाह के नज़दीक वह बड़ी बात थी।[21]

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ
عِلْمٌ وَّتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

16. जब तुम ने यह बात सुनी तो क्यों न कह दिया कि हमें ऐसी बात ज़बान पर लाना शोभा नहीं देती । अल्लाह पाक है, यह तो बहुत बड़ा बोहतान है [22]।

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُونُ
لَنَا أَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

17. अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसी हरकत न करना अगर तुम मोमिन हो।

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾

18. अल्लाह तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ आदेश बयान करता है, वह ज्ञान वाला और तत्वदर्शी है।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾

19. जो लोग चाहते हैं कि ईमान वालों में बेहयाई फैले उन के लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा है [23]।अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।[24]

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ اٰمَنُوا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

20. अगर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दयालुता तुम पर न होती (तो तुम को बुरे परिणामों का सामना करना पड़ता परन्तु उस ने तुम्हें बचाया) और यह कि अल्लाह मेहरबान और दयावान है।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ
وَأَنَّ اللّٰهَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾

21. ऐ ईमान वालो ! शैतान के पद्चिन्हों पर न चलो।और जो कोई शैतान के पद्चिन्हों पर चलेगा तो वह उसे बुराई और बेहयाई का हुक्म देगा।अगर अल्लाह की कृपा और उस की दयालुता तुम पर न होती तो तुम में से कोई व्यक्ति भी पवित्र न हो सकता [25]। परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र करता है और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है [26]।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهُ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّي مَنْ يَّشَاءُ
وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾

21. कुछ बातें ऐसी होती हैं कि लोग उन को मामूली समझ कर ज़बान पर लाते हैं और उन को नक़ल करने लगते हैं। किन्तु वे नैतिक रुप से ग़ैरज़िम्मेदाराना, शरअी दृष्टि से बहुत बड़े गुनाह का कारण और परिणाम की दृष्टि से अत्यंत भयावह होती हैं। इस लिए आदमी किसी के विरुद्ध मात्र सुनी सुनाई बातों पर विश्वास न करे और ग़ैर ज़िम्मेदाराना बातें करने से परहेज़ करे।

22. इस से यह उसूली रहनुमाई मिलती है कि आदमी को सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए बल्कि अपनी सूझ बूझ से काम लेना चाहिए। हदीस में आता है:

كَفَى بِالْمَرْءِ كَذِباً اَنْ يُّحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ (مسلم)

अर्थ: ''आदमी के झूठा होने के लिए यह बात काफ़ी है कि वह हर सुनी सुनाई बात बयान करे।'' (मुस्लिम)

इसी प्रकार रिवायतों के बारे में भी इस से यही सीख मिलती है कि जो रिवायतें अल्लाह और उस के रसूल तथा रसूल के सच्चे साथियों पर बोहतान की हैसियत रखती हों उन को तुरन्त रद्द कर देना चाहिए, इस प्रयास में जूझे बग़ैर कि इस की प्रमाणिकता क्या है और इस के उल्लेखकर्ता कौन हैं क्यों कि जो बात अपने आप में स्पष्ट रुप से ग़लत हो वह हर हाल में रद्द कर देने के योग्य है। इस का स्पष्ट उदाहरण बुतों की तारीफ़ वाली वह रिवायत है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ मन्सूब की गई है और जिस का खण्डन हम सूरह हज्ज नोट ९१ में कर चुके हैं।

23. बेहयाई (अश्लीलता) का प्रचार एवं प्रसार एक व्यापक बात है जिस में व्यभिचार दोषारोपण, अश्लीलता की बातें करना और लोगों को व्यभिचार की ओर प्रोत्साहित करने वाली बातें करना या फिर वैसी हरकतें करना सब शामिल हैं। आज कल के आधुनिक युग में अश्लीलता के प्रकाशन तथा उस के प्रचार एवं प्रसार के आधुनिक तरीक़े गढ़ लिए गए हैं, जैसे नाइट कलब, स्त्री पुरुष के संयुक्त स्विमिंग प्रतियोगिताएं, इश्क़बाज़ी का जुनून पैदा करने वाली फ़िल्में, यौन इच्छा को विकृत करने वाले गाने, मन पर औरत का भूत सवार करने वाले पोस्टर, सौंदर्य प्रतियोगिता, टी.वी. पर औरतों का बेढंगा प्रदर्शन, भावनाओं को उबाल देने वाली नाविलें और कहानियाँ, समाचार पत्रों में औरतों की नग्न, अर्धनग्न तस्वीरें और डांस के प्रोग्राम आदि।

चूँकि बेहयाई मनुष्य की प्रतिष्ठा को खो देती है, उस के सम्मान को ख़ाक में मिलाती और उस को नैतिक दृष्टि से नष्ट करती है, इस लिए मुस्लिम सोसाइटी में बेहयाई फैलाने वालों को सावधान किया गया है कि उन के लिए न केवल आख़िरत में बल्कि दुनिया में भी दर्दनाक सज़ा है और यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि इस्लामी हुकूमत ऐसे लोगों के लिए कड़ी सज़ाऐं सुनिश्चित करे। अपराध की गंभीरता को देखते हुए दण्ड का निर्धारण करना और उन को लागू करना इस आयत के मंशा को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं।

24. अर्थात् तुम नहीं जानते कि अशलीलता को फैलाने के परिणाम कितने दूरगामी और संगीन होते हैं।

25. अर्थात् पाक साफ़ मन के लोगों को शैतान के बहकावे में आ कर अहं में लिप्त नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें यह समझना चाहिए कि जो पाकिज़गी एवं स्वच्छ स्वभाव उन्हें मिला है वह अल्लाह की कृपा भी है और उस की दयालुता का पात्र बनाने वाली चीज़ भी।

26. अर्थात् आत्मा का शुद्धिकरण और चरित्र एवं आचरण को संवारने का काम अल्लाह की तौफ़ीक़ ही पर निर्भर है। वह जिसे चाहता है शुद्ध बना देता है। परन्तु उस के अनुग्रह की यह बाँट गलत नहीं हो सकती क्यों कि वह बन्दों के हालात से अच्छी तरह परिचित है। वह जानता है कि कौन पवित्रता को मन से चाहने वाला है और अपनी इस चाह में वह कितना सच्चा है। इस अवसर पर वह दुआ भी सामने रहे जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिखाई है:

اَللّٰهُمَّ آتِ نَفْسِى تَقْوَاهَا وَ زَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُمَنْ زَكَّاهَا
اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلٰهَا۔ (مشکوٰۃ کتاب الدعوات بحوالہ مسلم)

अर्थ : '' ऐ अल्लाह मेरे नफ़्स (अन्तरात्मा) को परहेज़गारी प्रदान कर और उस को पाक कर दे तू बेहतर पाक करने वाला है। तू उस का साथी और सहयोगी है।''

(मिश्कात, किताबुद्दावात, मुस्लिम के हवाले से)

22. तुम में जो लोग वैभववान और सामर्थ्यवान हैं वे इस बात की क़सम न खा बैठें कि रिश्तेदारों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों की सहायता नहीं करेंगे।उन्हें चाहिए कि क्षमा करें और दरगुज़र से काम लें ? क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे। अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है [27]।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ
وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا
أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾

23. जो लोग पाकदामन, बेख़बर [28] मोमिन औरतों पर तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की गई और उन के लिए बड़ा अज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

24. जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ पाँव उन के विरुद्ध उन के कर्मों की गवाही देंगे।

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

25. उस दिन अल्लाह उन्हें पूरा पूरा बदला देगा। ऐसा बदला जो हक़ है।और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही है हक़।हक़ीक़त को स्पष्ट कर दिखाने वाला ।[29]

يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ
الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

26. ख़बीस औरतें ख़बीस मर्दों के लिए हैं और ख़बीस मर्द ख़बीस औरतों के लिए। और पाकीज़ा औरतें पाकीज़ा मर्दों के लिए हैं और पाकिज़ा मर्द पाकीज़ा औरतों के लिए।[30] ये लोग बरी हैं उन बातों से जो ये लोग बनाते हैं [31]। उन के लिए क्षमा है और इज़्ज़त की रोज़ी।

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ
وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ
لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾

27. ऐ ईमान वालो !अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हुआ करो जब तक कि परिचित हो कर स्वीकृति न प्राप्त कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो।[32] यह तरीक़ा तुम्हारे लिए बेहतर है ताकि तुम सूझ बूझ से काम लो।[33]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا
وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

28. अगर वहाँ किसी को न पाओ तो अन्दर न जाओ जब तक कि तुम को अनुमति न मिल जाए।और अगर तुम से वापस होने के लिए कहा जाए तो वापस हो जाओ।[34] यह तरीक़ा तुम्हारे लिए बहुत पाक़ीज़ा है।[35] और जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِن قِيلَ
لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾

27. मुसलमानों में कुछ लोग अपनी कम समझी के चलते मुनाफ़िक़ो के उस प्रोपैगेन्डे का शिकार हो गए थे जो उन्हों ने कुछ पाकदामन मोमिन औरतों के विरुद्ध शुरु किया था। ख़ास तौर से वे औरतें जो हिजरत कर के मदीना आईं उन को बदनाम करने की कोशिश की जाती । जब अल्लाह तआला ने इस बारे में कड़ी चेतावनियाँ दीं तो कुछ लोगों ने जो उन दोषी मुसलमानों की मदद करते थे क़सम खा बैठे कि वे अब उन की सहायता नहीं करेंगे । इस आयत में उन्हें हिदायत की गई है कि वे ऐसी क़समें न खाएं और ज़रुरतमन्दों की मदद से हाथ न रोकें । उन्हें चाहिए कि दर गुज़र से काम लें। अगर वे अल्लाह से अपने लिए माफ़ी की चाह रखते हैं तो उन्हें अपने जैसे दूसरे इन्सानों की ग़लतियों और क़ुसूरों को माफ़ कर देना चाहिए !

क़ुर्आन ने यह बात किसी ख़ास व्यक्ति के बारे में नहीं कही हैं। बल्कि आम संबन्धियों, मिस्कीनों और मुहाजिरीन के बारे में कही है। अर्थात् इन में से जिन लोगों से भी ग़लती हुई है उन के ऋण सहयोग से वे हाथ न खींच लें।

इस आयत से यह शरअी मसला भी मालूम हुआ कि यदि कोई व्यक्ति किसी नेक काम को न करने की क़सम खा बैठे तो उसे ऐसी क़सम तोड़ देनी चाहिए।

28. बेख़बर से अभिप्रेत वे सीधी सादी औरतें हैं जिन की कल्पना में बल्कि सपने में भी यह बात नहीं होती कि वे कभी व्यभिचार की दोषी हो सकती हैं। या उन पर आरोप लगाया जा सकता है। उन को न बेहयाई की बातों से दिलचस्पी होती है और न उन के रंग ढंग बुरे होते हैं।

29. अर्थात् दुनिया में तो बहुत सी बातों पर पर्दा पड़ा रहता है किन्तु क़ियामत के दिन तो प्रत्येक बात की सत्यता बिलकुल खुल कर सामने आ जाएगी । जो झूठ दुनिया में बोले गये थे उन की क़लई खुल जाएगी और बेगुनाहों पर जो आरोप मढ़े गए थे उन की वास्तविकता भी सामने आ जाएगी। उस रोज़ लोगों को इस बात का भली भाँति आभास होगा कि अल्लाह हक़ (सत्य) है इस लिए वह न्याय करता है और न्याय के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए उन परदों को उठाता है जिन में सच्चाइयाँ छिप कर रह गई थीं।

30. यहाँ ख़बीस से मुराद नापाक अर्थात् दुषकर्मी हैं। मतलब यह है कि ख़बीस औरतों के लिए ख़बीस मर्द ही उचित हैं और ख़बीस मर्दों के लिए ख़बीस औरतें। इसी प्रकार पवित्र औरतों के लिए पवित्र मर्द और पवित्र मर्दों के लिए पवित्र औरतें।

इस ताल मेल का तक़ाज़ा है कि पाक़ीज़ा औरतों का रिश्ता पाकीज़ा मर्दों ही से किया जाए और पाकीज़ा मर्द पाकीज़ा औरतों से ही ब्याह करें।

31. अर्थात् पाकीज़ा औरतों और पाकीज़ा मर्दों के विरुद्ध आरोपों का जो फ़ित्ना खड़ा किया गया है उस का झूठ होना बिलकुल खुली बात है। चरित्रवान नारियों और चरित्रवान पुरुषों पर दुष्कर्म का आरोप लगाने से उन का दामन कलंकित नहीं होता। वे उन झूठे आरोपों से बिलकुल बरी हैं।

आरोपों से बरी होने की बात यहाँ सार्वजनिक रुप से कही गई हैं। अर्थात् तमाम पाकीज़ा औरतों और मर्दों के बारे में यह एक उसूली बात है। किसी घटना से ख़ास सम्बन्धित नहीं है।

32. अब वे आदेश दिये जा रहे हैं जो घरेलू जीवन में शालीनता बढ़ाने और बहुत से फ़ित्नों की राह बन्द करने वाले हैं। इस सिलसिले में पहले आदेश यह है कि कोई व्यक्ति किसी के घर में बिना आज्ञा के अन्दर न जाए। मूल अरबी में शब्द ''तस्तानिसू'' प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ जान पहचान के साथ स्वीकृति प्राप्त करने के हैं। और यहाँ इस का मतलब यह है कि अपने आप को घर के ज़िम्मेदार से परिचित करा के उस रज़ामन्दी के साथ घर में जाने की अनुज्ञा प्राप्त कर ली जाए। मतलब यह है कि वही व्यक्ति घर में दाख़िल हो जिस का जाना घर वाला पसन्द करे और स्वीकृति दे दे।

जब स्वीकृति दे दे तो अन्दर जाते समय घर वालों को सलाम करना चाहिए कि यह घर में दाखिल होने के शिष्टाचार में से है और इस बात का परिचायक भी कि वह घर वालों के लिए सलामती की दुआऐं लिए हुए दाख़िल हो रहा है इस लिए उस से भले ही की आशा की जा सकती है।

स्वीकृति चाहने का जो सामान्य प्रचलन है वह अपनाना चाहिए। दरवाज़े पर दस्तक देना या घंटी बजाना आधुनिक युग की सामान्य रीति है। इस के बाद यदि घर वाला बाहर आए तो पहले उसे सलाम करना चाहिए और जब वह अन्दर आने के लिए कहे तो अन्दर आते हुए उसे सलाम करना चाहिए।

33. अर्थात् नैतिक एवं दीनी पहलू से यह अत्यंत शालीनता का तरीक़ा है। और इस शालीनता की शिक्षा तुम्हें इस लिए दी जा रही है ताकि तुम सूझ बूझ से काम लो। दूसरे शब्दों में इस शिक्षा के अन्तर्गत तुम्हें समस्त घरेलू मामलों और मसलों में होशमन्दी का परिचय देना चाहिए। इस आदेश हे इस उसूली बात की तरफ़ भी रहनुमाई होती है कि गोपनीयता का अधिकार (Right of Privacy) हर व्यक्ति का निजी अधिकार है।

34. अर्थात् रिहाइशी मकानों में बिना इजाज़त किसी हाल में दाख़िल नहीं होना चाहिए। घर में किसी के मौजूद न

होने की सूरत में भी और उस सूरत में भी जब कि घर वाला किसी कारणवश अन्दर न बुलाए। ऐसी सूरत में आदमी को खामोशी के साथ वापस जाना चाहिए और इस बहस में नहीं पड़ना चाहिए कि उस ने क्यों इजाज़त न दी। हो सकता है कोई मसलहत हो या कोई मजबूरी आड़े आई हो।

35. अर्थात् नैतिक दृष्टि से यह तरीक़ा पाकीज़ा है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

और मोमिन औरतों से कहो वे भी अपनी निगाहें निची रखें। और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें सिवाय उस के जो ज़ाहिर हो जाए। और अपने गिरेबानों पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डालें। और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें मगर अपने पति के सामने या पिता या अपने पति के पिता या अपने बेटों या अपने पति के बेटों या अपने भाईयों या अपने भाईयों के बेटों या अपनी बहनों के बेटों या अपनी औरतों या अपने दासों या उन पुरुषों के सामने जो अधीन हों और (औरतों से) ग़रज़ न रखते हों, या उन बच्चों के सामने जो औरतों की पोशीदा बातों से अभी परिचित न हुए हों। और अपने पाँव ज़मीन पर मारती हुई न चलें कि अपना जो बनाव सिंगार उन्हों ने छिपा रखी है, वह मालूम हो जाए। और ऐ ईमान वालो तुम सब अल्लाह के समक्ष तौबा करो ताकि सफलता पाओ। *(अल-क़ुर्आन)*

29. और तुम्हारे लिए इस बात में कोई हर्ज नहीं कि उन ग़ैर रिहाइशी मकान में दाख़िल हो जाओ जिन में तुम्हारे लाभ का सामान है।[36] तुम जो कुछ ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो अल्लाह सब जानता है।[37]

ليس عليكم جناح ان تدخلوا بيوتا غير مسكونة فيها متاع لكم
والله يعلم ما تبدون وما تكتمون ﴿٢٩﴾

30. मोमिन मर्दों से कहो कि वे अपनी निगाहें निची रखें।[38] और अपने गुप्तंगों की रक्षा करें।[39] यह तरीक़ा उन के लिए अधिक पाकिज़ा है । जो कुछ वे करते हैं उस से अल्लाह भिज्ञ है।

قل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم ويحفظوا فروجهم ذلك
ازكى لهم ان الله خبير بما يصنعون ﴿٣٠﴾

31. और मोमिन औरतों से कहो वे भी अपनी निगाहें निची रखें।[40] और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें [41] और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें सिवाय उस के जो ज़ाहिर हो जाए।[42] और अपने गिरेबानों पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डालें [43]। और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें मगर अपने पति के सामने या अपने पिता, या अपने पति के पिता, या अपने बेटों, या अपने पति के बेटों, या अपने भाईयों, या अपने भाईयों के बेटों, या अपनी बहनों के बेटों या अपनी औरतों या अपने दासों या उन पुरुषों के सामने जो अधीन हों और (औरतों से) ग़रज़ न रखते हों, या उन बच्चों के सामने जो औरतों की पोशीदा बातों से अभी परिचित न हुए हों [44]। और अपने पाँव (ज़मीन पर)मारती हुई न चलें कि अपना जो बनाव सिंगार उन्हों ने छिपा रखी है, वह मालूम हो जाए।[45] और ऐ ईमान वालो तुम सब अल्लाह के समक्ष तौबा करो [46] ताकि सफलता पाओ ।[47]

وقل للمؤمنت يغضضن من ابصارهن ويحفظن فروجهن
ولا يبدين زينتهن الا ما ظهر منها وليضربن بخمرهن على
جيوبهن ولا يبدين زينتهن الا لبعولتهن او ابآئهن او ابآء
بعولتهن او ابنآئهن او ابنآء بعولتهن او اخوانهن او بني
اخوانهن او بني اخوتهن او نسآئهن او ما ملكت ايمانهن
او التبعين غير اولي الاربة من الرجال او الطفل الذين
لم يظهروا على عورت النسآء ولا يضربن بارجلهن
ليعلم ما يخفين من زينتهن وتوبوا الى الله جميعا ايه
المؤمنون لعلكم تفلحون ﴿٣١﴾

32. और तुम में से जो लोग मुजर्रद (बिना पति या बिना पत्नी के) हों और तुम्हारे गुलामों और लौंडियों में से जो नेक हों उन के निकाह कर दो।[48] अगर उन के हाथ तंग हों तो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से सम्पन्न कर देगा।[49]अल्लाह बड़ी समाई वाला और सर्वज्ञ है।[50]

وانكحوا الايامى منكم والصلحين من عبادكم وامآئكم ان
يكونوا فقرآء يغنهم الله من فضله والله واسع عليم ﴿٣٢﴾

36. वे मकानात तात्पर्य हैं जो आम फ़ायदे के होते हैं। इस लिए उस में दाख़िले की आम इजाज़त होती है। जैसे मुसाफ़िर ख़ाने, साये के लिए बनी हुई जगहें, दुकानें होटलें, खुले कार्यालय, आदि।

37. अर्थात् तुम किस नीयत से कहीं दाखिल होते हो अल्लाह उसे अच्छी तरह जानता है इस लिए उस से डरो और अपनी नीयतें दुरुस्त रखो।

38. ''ग़ज़्ज़े बसर'' (अर्थात् निगाहें नीची रखने) का मतलब यह है कि जिस चीज़ को देखना जायज़ नहीं है उस से निगाहों को बचा लिया जाए। अगर अचानक निगाह पड़े तो उस को फेर लिया जाए। यहाँ विशेष रुप से जैसा कि संदर्भ से स्पष्ट है औरतों को देखने से (अपनी पत्नी और महरम औरतों के सिवा) निगाहों को बचाना है। निगाहें चूँकि इच्छा को उत्तेजित करती हैं और उत्तेजित इच्छा बेहयाई पर आमादा करती है इस लिए क़ुर्आन ने निगाहों पर पहरे बिठाने का आदेश दिया है। नीची निगाहें शर्म और लाज का प्रतीक हैं तथा आत्मा और चरित्र की पवित्रता का साधन। इस्लाम शर्म और हया के मामले में ईमान वालों को इतना संवेदनशील देखना चाहता है कि वे औरतों पर धोखे से भी निगाह न डालें। ताक झाँक करना, नज़रें ज़माना और घूर कर देखना बड़ी बुरी बात है और इस से हमेशा यह ख़तरा बना रहता है कि कहीं कोई फ़ित्ना न उठ खड़ा हो। क़ुर्आन करीम में एक जगह फ़रमाया गया है।

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ۔ (المؤمن:١٩)

अर्थ : ''वह आँखों की ख़ियानत को जानता है'' (अलमोमिन -१९)

यह गोया ताक झाँक करने वालों के लिए आगाही है। निगाहें नीची रखने का हुक्म घर और बाहर दोनों से सम्बन्धित है। एक मुसलमान जब किसी के घर में प्रवेश करे तो वह अपनी निगाहें नीची रखे और ताक झाँक न करें और जब राह चल रहा हो तो अजनबी औरतों को देखने से परहेज़ करे। यद्यपि यह काम मुश्किल है परन्तु जन्नत की राह कठिनाइयों से ही हो कर गुज़रती है। फिर यह मुश्किल ऐसी नहीं है कि आदमी के बस से बाहर हो क्यों कि क़ुर्आन ने निगाहें नीची रखने का आदेश दिया है न कि आँखें बन्द कर लेने का! जिस प्रकार

وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِک۔ (لقمان:١٩)

अर्थ:''अपनी आवाज़ को नीची रखो'' (लुक़मान -१९) में ''ग़ुज़्ज़े सौत'' का मतलब आवाज़ को बन्द करना नहीं बल्कि नीची रखना है। उसी प्रकार निगाहें नीची रखने का मतलब आँखों को बन्द करना नहीं बल्कि निगाहों को नीची रखना है। अत: बिना कारण औरत के शरीर पर नज़र डालना नाजायज़ है और कामइच्छा की दृष्टि डालना आँखों का व्यभिचार है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है:

زِنَا الْعَيْنِ النَّظْرُ۔ (بخاری کتاب الاستیذان)

अर्थ : ''आँख का व्यभिचार नज़र से है'' (बुख़ारी किताबुल इस्तीजान) इन्जील में भी इस को व्यभिचार ही कहा गया है :-

''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।'' (मत्ती ५:२७,२८)

अगर अचानक नज़र पड़े तो उस को फेर लेना चाहिए। हदीस में आता है कि जरीर बिन अब्दुल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निगाह के अचानक पड़ जाने के बारे में पूछा:

فَاَمَرَنِیْ اَنْ اَصْرِفَ بَصَرِیْ ۔ (بخاری کتاب الآداب)

अर्थ: ''तो आप ने फ़रमाया कि अपनी निगाहें फेर लो।'' (मुस्लिम किताबुल आदाब)

39. गुप्तांगों की रक्षा के भावार्थ में उन को छिपाये रखना भी शामिल है और दुष्कर्मों में बचना भी।

शरीर का वह अंग जिस को दूसरों के सामने खोलने में मनुष्य स्वभावत: शर्म महसूस करता है, सतर (और अरबी में और:) कहलाता है। पुरुषों का सतर अर्थात् शरीर का वह भाग जिस का दूसरों से छिपाना अनिवार्य है नाभि से घुटने तक का हिस्सा है। मगर क़ुर्आन का अन्दाज़ फ़िक़ही नाप तोल का नहीं है। बल्कि यह मानव स्वभाव को जागृत कर और नैतिकता को जगा कर के कहता है:

ولباسُ التقویٰ ذٰلک خَیْرٌ۔ (سورہ اعراف:٢٦)

अर्थ : ''और तक़वा का लिबास बेहतरीन लिबास है।''

ज़ाहिर है जो व्यक्ति भी तक़वा का लिबास अपनाएगा वह अधिक से अधिक सातिर लिबास इस्तेमाल करेगा। क़ुर्आन ने नंगेपन को शैतान का फ़ित्ना बताया है।

अर्थ : '' ऐ आदम की संतान ! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे जिस प्रकार उस ने तुम्हारे माता पिता को (बहका कर) जन्नत से निकलवाया था और उन के लिबास उतरवा दिए थे ताकि उन के सतर उन्हें दिखा दे।'' (आराफ़ -२७)

40. निगाहें नीची रखने का आदेश जिस प्रकार पुरुषों को दिया गया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी दिया गया है। जब कोई व्यक्ति स्वीकृति ले कर घर में अन्दर आए तो घर की औरतों को

चाहिए कि वह उस व्यक्ति पर निगाहें न जमाएं। उसी प्रकार जब औरतें बाहर निकलें तो अपनी निगाहें नीची रखें। बिना किसी ज़रुरत के अजनबी पुरुषों को देखने से परहेज़ करना चाहिए।

इस आदेश के मंशा को समझ कर अगर नेक नीयती के साथ इस का अनुपालन किया जाता है तो जो वास्तविक ज़रुरतें रोज़मर्रा के जीवन में औरत के मर्द को देखने और मर्द के औरत को देखने से सम्बन्धित सामने आती हैं उन को पूरा करने से इस्लाम नहीं रोकता जैसे पहचान या गवाही आदि के उद्देश्य से औरत का मर्द को देखना या भरी सभा पर निगाह डालना आदि।

41. गुप्तांगों की रक्षा में सतर को छिपाये रखना भी शामिल है ।

42. ज़ीनत से अभिप्रेत लिबास भी है और बनाव श्रंगार की चीज़ें भी । लिबास को क़ुर्आन में ज़ीनत कहा गया है:

خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ ـ (سورہ اعراف:۳۱)

अर्थ: ''हर मस्जिद के पास (इबादत के अवसर पर) अपनी ज़ीनत लिये रहो !'' (आराफ़-३१)

قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِىْ سَوْاٰتِكُمْ وَ رِيْشًا ـ
(سورہ اعراف:۲۶)

अर्थ: ''हम ने तुम पर लिबास उतारा है कि तुम्हारे सतर भी छिपाऐं और ज़ीनत का साधन भी हो'' (आराफ़-२६)

और लिसानुल अरब में हैं:

وَالزِّيْنَةُ مَا يَتَزَيَّنُ بِه ـ (لسان العرب ج ۱۳ ص ۲۰۲)

अर्थ :''ज़ीनत अर्थात् वह चीज़ जिस के द्वारा श्रंगार किया जाए।'' (लिसानुल अरब जिल्द १३ पृष्ट २०२)

श्रंगार की मिसाल सुर्मा मेंहदी, अंगूठी आदि हैं।

आयत में औरतों को आदेश दिया गया है कि वे अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें सिवाय उस ज़ीनत के जो ज़ाहिर हो जाए। इस छूट का साफ़ मतलब यह है कि जो जीनत काम काज और चलने फिरने में खुली रहती है उस के खुले रहने में कोई आपत्ति नहीं है क्यों कि उस का उद्देश्य दूसरों के सामने अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर करना नहीं है बल्कि ज़रूरत के चलते ज़ीनत को खुला रहने देना है। यह रिआयत यद्यपि ज़ीनत के दिख जाने से सम्बन्धित है किन्तु स्वभावत: इस में वे भाग शामिल हो जाते हैं जो इस ज़ीनत का केन्द्र बिन्दु हैं अर्थात् हाथ और चेहरा । क्यों कि ज़ाहिर होने वाली ज़ीनत मेहंदी और अंगूठी है जिस का केन्द्र हाथ हैं और सुर्मा और काजल है जिस का केन्द्र आँखें हैं जो चेहरे का एक भाग है। इस लिए यदि हाथ और चेहरा अपने श्रंगार के साथ दिख जाता है तो औरत को इस की छूट है। और इस छूट ने परदे के आदेश में संतुलन पैदा कर दिया है और औरत के लिए काम काज में जो रोड़े पैदा हो सकते थे उन को दूर कर दिया। हदीसों से साबित होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में औरतें चेहरे का परदा करती थीं और नहीं भी करती थीं। मिसाल के तौर पर सही मुस्लिम की हदीस है:-

''अब्दुल्लाह बिन अब्बास फ़रमाते हैं कि फ़ज़्ल (बिन अब्बास) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे सवार थे। बनी ख़शअम की एक औरत आई तो फ़ज़्ल उस की तरफ़ देखने लगे और वह उन की तरफ़ देखने लगी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ज़्ल का चेहरा दूसरी तरफ़ फेर दिया। उस औरत ने निवेदन किया ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने अपने बन्दों पर हज्ज फ़र्ज़ किया है और मेरे पिता पर फ़र्ज़ है। किन्तु वे बहुत बूढ़े हैं इस लिए सवारी पर बैठ नहीं सकते तो क्या मैं उन की तरफ़ से हज्ज करुँ? आप ने फ़रमाया जी हाँ। यह घटना अन्तिम हज्ज के अवसर की है।'' (मुस्लिम-मनासिक)

मालूम हुआ कि औरत का चेहरा खुला था इस लिए उस पर नज़र पड़ गई । सही मुस्लिम ही की दूसरी हदीस है।

''जाबिर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि ईद के दिन मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ में शरीक था। आप ने ख़ुतबे से पहले नमाज़ पढ़ाई बग़ैर अज़ान और इक़ामत के । फिर बिलाल रजि. के सहारे खड़े हो गए और अल्लाह का डर रखने की हिदायत और उस का अनुपालन करने पर उकसाया। लोगों को नसीहत की और समझाया। आप ने फ़रमाया सदक़ा करो क्यों कि तुम में से अधिकांश जहन्नम का ईंधन बनने वाली हैं। यह सुन कर औरतों के बीच से एक औरत जो पिचके हुए काले चेहरों वाली थी खड़ी हो गई और उस ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल ऐसा क्यों होगा? फ़रमाया इस लिए कि तुम शिकायत बहुत करती हो। उल्लेखकर्ता का कहना है, कि यह सुन कर औरतें अपने ज़ेवर सदक़ा करने लगीं । वे अपनी बालियाँ और अंगूठियाँ बिलाल रज़ि. के कपड़े में डालती जाती थीं।'' (मुस्लिम किताब सलातुल ईदैन)

ज़ाहिर है सवाल करने वाली औरत का चेहरा ख़ुला था इस लिए उल्लेखकर्ता को उस का पिचका हुआ चेहरा दिखाई दिया।

हदीस से यह साबित है कि औरत का चेहरा और हथेलियाँ सतर में दाखिल नहीं हैं अत: एहराम की हालत में औरत को निक़ाब डालने और दस्ताने पहनने से मना किया गया है। बुख़ारी की हदीस है:-

''औरत एहराम की हालत में निक़ाब न डाले और न दस्ताने पहने''(किताबुल मनासिक)

और नमाज़ के बारे में हदीस में आता है:-

لَا تَقْبَلُ صَلَاةُ الْحَائِضِ اِلَّا بِخِمَار ۔ (ترمذی ابواب الصلاۃ)

अर्थ:- ''बालिग़ औरत की नमाज़ बग़ैर ओढ़नी के स्वीकार नहीं होती'' (तिर्मिज़ी अब्वाबुस्सलात) और ओढ़नी से सर, कान, गर्दन और सीना ढांक लिया जाता है। मुँह नहीं ढांका जाता यह इस बात के लिए दलील है कि औरत के लिए चेहरा छिपाना आवश्यक नहीं। अत: फ़ुक़्हा अर्थात् इस्लामी धर्म शास्त्रियों ने इस का स्पष्टीकरण किया है। मुग़न्नी में है:-

''इस मसलक (हंबली) में इस बारे में कोई मतभेद नहीं है कि औरत के लिए नमाज़ में अपना चेहरा खोलना जायज़ है। और यह कि चेहरा और हथेलियों के सिवा शरीर का कोई अंग खोलना जायज़ नहीं------ और इस बात पर भी सारे विद्वान सहमत हैं कि आज़ाद औरत को नमाज़ में अपना सर ढांकना चाहिए।'' (मुग़न्नी जिल्द १ पृष्ट ६०१)

हिदाय: में है : ''आज़ाद औरत का पूरा शरीर सतर है सिवाय चेहरा और हथेलियों के।'' (हिदाय: जिल्द १ पृष्ट ३९)

इब्ने रूश्द लिखते हैं: ''अधिकांश उलमा इस बात पर सहमत हैं कि औरत का पूरा शरीर सतर है सिवाय चेहरा और हथेलियों के।'' (हिदायतुलमुज्तहिद जिल्द १ पृष्ट ३)

रहा पैरों (क़दमों) का सवाल तो उम्मे सलमा की हदीस से मालूम होता है कि लिबास अगर इतना लम्बा हो कि क़दमों के निचले हिस्से को एक हद तक ढांक दे तो काफ़ी है।

قالت اذا تنكشف اقدامهن قال فيرخين ذراعاً
لا يزدن عليه۔(مشکوٰۃ کتاب اللباس بحوالہ ترمذی)

(मिश्कात- किताबुल्लिबास तिर्मिज़ी के हवाले से)

इन तरकों से स्पष्ट हुआ कि औरत का चेहरा और हथेलियाँ सतर में से नहीं हैं कि उन का छिपाना अनिवार्य हो। लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि ग़ैर महरम मर्दों के लिए बिना ज़रुरत उन को देखना जायज़ है। नज़रों को नीचा रखने का हुक्म, अकारण औरतों को देखने के लिए कोई औचित्य नहीं पैदा करता और न ही इस का मतलब है कि औरतें अनिवार्य रुप से अपना चेहरा खुला रखें । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियाँ चेहरे का परदा किया करती थीं और बेहतर यही है कि जहाँ तक हो सके औरतें निक़ाब डाले रहें। हम ने क़ुर्आन की दी हुई रिआयत को अधिक स्पष्ट रूप से इस लिए प्रस्तुत कर दिया ताकि लोग इस भ्रम में न रहें कि इस्लाम औरतों के लिए परदे की ऐसी पाबन्दियाँ लागू करता है जो आजकल के दौर में व्यवहार में लेने योग्य नहीं हैं। इस भ्रम में लिप्त हो कर औरतें परदा ही को त्याग देती हैं। इस लिए आवश्यक है कि रिआयतों को भी सामने लाया जाए। ताकि इस्लाम ने परदे की जो कम से कम हद बन्दी क़ायम की है उन की औरतें पाबन्द रहें।

सच्ची बात यह है कि मौजूदा ज़माने में ट्रेफिक की बढ़ती हुई घटनाओं को देखते हुए औरत अपना चेहरा खुला रखने पर मजबूर है । बस, रेल आदि का घंटों और दिनों का सफ़र निक़ाब की सूरत में घुटन पैदा कर देता है इस लिए निक़ाब उठाए बग़ैर कोई चारा नहीं। ख़रीद फ़रोख़्त और लेन देन करते समय भी हथेलियों का खुल जाना एक सामान्य सी बात है। इस लिए परदे के आदेश में ऐसी कड़ाई पैदा करना कि शरीअत की दी हुई रिआयतें समाप्त हो जाएं न सही है न लाभदायक !

हम यहाँ कुछ और उलमा के मत प्रस्तुत करते हैं। अल्लामा मक़्दिसी मुगन्नी में लिखते हैं:

''ज़रुरत कहती है कि औरत ख़रीद फ़रोख़्त के लिए अपना चेहरा खोले और लेन देन के लिए अपनी हथेलियाँ खोले।'' (मुग़न्नी जिल्द १ पृष्ट ६०१)

अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी ने परदे के मसले पर एक शोध पुस्तक ''हिजाबुल मिर्अतुलमुस्लिम:'' लिखी है जो अलमक्तबुलइस्लामी बैरुत से प्राकाशित हुई है । अल्लामा फ़रमाते हैं ।

हदीस आइशा जो अबू दाऊद में है इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि औरत के लिए चेहरा और हथेलियों को खुला रखना जायज़ है। अगर इस हदीस के प्रमाणों में वह बात न होती जो हम ने अपने नोट में बयान की है (इशारा है हदीस के मुर्सल होने की तरफ़। इस हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ यह इर्शाद मंसूब है कि आप ने हज़रत असमा को ऐसे कपड़ों में देख कर जिस से उन का बदन झलकता था फ़रमाया जब औरत बालिग़ हो जाए तो जायज़ नहीं कि उस के शरीर का कोई भाग सिवाय चेहरा और हथेलियों के ज़ाहिर हो जाए।) यह और बात है कि यह कहा जाए कि यह रिवायत कई तरीक़ों से उल्लिखित होने के कारण मज़बूत है और बैहक़ी ने इसे मज़बूत क़रार दिया है अत: ऐसी सूरत में उक्त बात की दलील बन सकती है, ख़ास तौर से इस लिए भी कि इस पर नबी के ज़माने में औरतें अमल करती रही हैं। अत: वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में अपने चेहरों और हथेलियों को ख़ुला रखती थीं और आप मना नहीं फ़रमाते थे। यह बात कई हदीसों से साबित है।'' (हिजाबुल मिर्अतुलमुस्लिम : पृष्ट २४)

आगे चल कर लिखते हैं:-

'' हम ने जो कुछ बयान किया उस से यह नतीजा निकाला जा सकता है कि औरत का अपने चेहरे को बुर्क़ा आदि से जो

मौजूदा ज़माने में प्रचलित है ढांकना पाकदामन औरतों के नज़दीक एक संवैधानिक, लाभदायक और पसन्दीदा बात है। यद्यपि कि ऐसा करना उस पर वाजिब नहीं, बल्कि जिस ने किया अच्छा किया और जिस ने नहीं किया तो कोई आपत्ति भी नहीं। (हिजाबुलमिर्अतुलमुस्लिम: पृष्ट ५३)

शैख़ अली तंतावी लिखते हैं:

''सार यह कि औरत का चेहरा असल में सतर नहीं है। और अधिकांश फ़ुक़्हा (चारों मस्लकों के अस्हाब) इस के सतर न होने के क़ायल हैं लेकिन चेहरा न खोलना पूर्णता और बेहतरी की बात है।'' (फ़तावा अली तन्तानवी पृष्ट १५५)

सैयद क़ुत्ब लिखते हैं:

''रही चेहरा और हाथों के दिख जाने वाली ज़ीनत तो उस का खोलना जायज़ है क्यों कि चेहरा और हाथ खोलना मुबाह है।'' (फ़ी ज़िलालिल क़ुर्आन जिल्द ४ पृष्ट २५१२)

डा. यूसुफ़ क़रज़ावी लिखते हैं :

''चेहरा और हथेलियों के बारे में यह रिआयत इस लिए कर दी गई है कि इन को छिपाना औरत के लिए रोड़े पैदा कर देता है। ख़ास तौर से तब जब कि जायज़ ज़रुरत से बाहर निकलना पड़े। जैसे विधवाओं को अपने बच्चों की ज़रुरतों के लिए और ग़रीब औरतों को अपने पति की सहायता के लिए बाहर निकलना पड़े। ऐसी सूरत में निक़ाब डालने और हथेलियाँ छिपाने की पाबन्दी उन के लिए कठिनाइयों एवं परेशानियों का कारण होगा! (इस्लाम में हलाल और हराम पृष्ट २०८)

और मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी फ़रमाते हैं:-

हदीस और आसार से साबित होता है कि चेहरा और كَفَّين हथेलियाँ इस आदेश में कि إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ''सिवाय उस के जो आप ही दिख जाए'' में दाखिल हैं। क्यों कि दुनियावी और दीनी बहुत सी आवश्यकताएं उन के खुला रखने पर मजबूर करती हैं। अगर इन को छिपाने का कोई आख़िरी हुक्म दिया जाए तो औरतों के लिए कारोबार में बहुत तंगी और कठिनाई सामने आऐगी। आगे फ़ुक़्हा ने क़दमों को भी इन ही शारीरिक भागों जैसा समझा है। और जब ये अंग रिआयत में आ गए तो इन से सम्बन्धित चीज़ें जैसे अंगूठी या मेहंदी, काजल, आदि को भी रिआयत में दाख़िल मानना पड़ेगा।'' (तफ़्सीर मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी पृष्ट ४५८)

कुछ उलमा ने إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا (मगर जो ज़ीनत आप ही ज़ाहीर हो जाए) से मुराद चादर ली है जो ऊपर से ओढ़ी जाती है और जिस का छिपाना संभव नहीं यह हवा के झोंके से चादर का उड़ जाना मुराद लिया है। परन्तु यह सरासर तकल्लुफ़ है और जैसा कि अल्लामा जस्सास ने लिखा है कि यह एक बे मतलब की बात है। क्यों कि यदि यही अभिप्रेत होता तो इस को क़ुर्आन इतनी तैयारी के साथ न बयान करता (अहकामुल क़ुर्आन जिल्द ३ पृष्ट ३८९-३९०)

43. ओढ़नी उस कपड़े को कहते हैं जो सर को ढाँक दे और गिरेबानों से मुराद लिबास का वह हिस्सा है जो गर्दन और सीने के पास है। ओढ़नियों के आंचल गिरेबानों पर डाले रखने का मतलब यह है कि औरत सर पर ओढ़नी डाल कर उस के आँचल अपने गिरेबानों पर इस प्रकार डाले कि सर, कान, गर्दन और सीना पूरी तरह ढक जाए। न सर की ज़ीनत ज़ाहिर हो, न कान की और न गर्दन की और न ही सीने का उभार झलके।

ओढ़नी का यह हुक्म घर के लिए भी है और बाहर के लिए भी। बल्कि बाहर के लिए एक अतिरिक्त आदेश चादर का भी है। मगर चूँकि चादर खुल जाया करती है जिस से गर्दन और सीना के खुल जाने का अंदेशा होता है इस लिए ओढ़नी भी ज़रुरी है। मौजूदा दौर में बुर्क़े का प्रचलन है। अगर बुर्क़ा ओढ़नी के मक़सद को भी पूरा करता हो। अर्थात् गर्दन आदि के खुल जाने और उस से सम्बन्धित सिंगार के ज़ाहिर होने की आशंका न हो तो केवल बुर्क़ा भी काफ़ी हो सकता है।(वल्लाहु आलम)

घर में घर के ज़िम्मेदार की अनुमति से जब कोई ग़ैर महरम दाख़िल हो जाए तो उस से परदा की कम से कम सीमा यह है कि औरत सातिर लिबास में हो और डूपट्टे से अपना सर, कान, गर्दन और सीना छिपा ले और चेहरा और हाथ और उन की ज़ीनत के अलावा कोई और ज़ीनत या शरीर का कोई भाग ज़ाहिर न होने दे। किन्तु यदि बीच में परदा लटका दिया जाता है या मर्दों के लिए अलग कमरे का प्रबन्ध है तो यह अच्छी सूरत होगी। नबी की पत्नियों के लिए कुछ ख़ास पाबन्दियाँ थीं जिन में से एक पाबन्दी यह थी कि उन के और ग़ैर महरमों के बीच परदा रहे। अगर कोई चीज़ मांगी जाए तो परदे की आड़ से माँगी जाए (सूरह अहज़ाब आयत ५३) लेकिन साधारण मुस्लिम महिलाओं के लिए घर के परदे के मामले में किसी हद तक नर्मी बरती गई है।

इस नर्मी का बड़ा लाभ यह है कि ग़ैर महरम रिश्तेदारों के साथ सम्बन्ध को निभाना आसान हो जाता है। उन के आने पर अगर परदा कर दिया जाता है तो बेहतर है किन्तु यदि इस से हर्ज होता है तो परदा की जो कम से कम सीमा अभी बताई गई है उन की पाबन्दी कर लेना काफ़ी है। परन्तु इस का यह अर्थ नहीं कि ग़ैर महरम के लिए चाहे वह रिश्तेदार ही क्यों न हों एकान्त में मिलने की अनुमति है। नहीं बल्कि पति या किसी महरम (सगे) की मौजूदगी में औरत ग़ैर महरम रिश्तेदारों के सामने इन पाबन्दियों के साथ आ सकती है।

यह भी ध्यान रहे कि डुपट्टा इतना बारीक नहीं होना चाहिए कि बदन झलके, क्यों कि डुपट्टा तो शरीर के भागों को

छिपाने के लिए है न कि गले में डालने या फ़ैशन का प्रदर्शन करने के लिए। अत: डूपट्टे के लिए ऐसा कपड़ा इस्तेमाल करना चाहिए जिस से उस का मक़सद पूरा होता हो!

44. इस वाक्य में अपने बनाव सिंगार को ज़ाहिर करने की जो अनुमति दी गई है उस से तात्पर्य औरत का बनाव श्रंगार के साथ सामने आना है। और बनाव श्रंगार के साथ औरत जिन के सामने आ सकती है उन की तफ़सील ये है। ये ही उस औरत के महरम हैं।

1) पति

2) पिता, ससुर, बेटे, पति के बेटे (अर्थात सौतेले बेटे) भाई भतीजे और भांजे । ये सब औरत के लिए महरम हैं (अर्थात् इन से निकाह हराम है) इस लिए इन के सामने औरत अपने बनाव श्रंगार (अर्थात् कपड़े ज़ेवर आदि) के साथ नि:संकोच आ सकती । इन के अलावा कुछ और भी महरम हैं । जैसे चचा, मामू, दामाद, दूधशरीक भाई आदि जिन का ज़िक्र यहाँ नहीं हुआ । इन का वर्णन न करने से क़ुर्आन का इशारा इस बात की तरफ़ मालूम होता है कि औरत उन के सामने तो आ सकती है परन्तु बनाव श्रंगार इन के सामने आवश्यकतानुसार ही होना चाहिए।

3) अपनी औरतों से तात्पर्य अपने मेल जोल की, और ख़िदमत करने वाली औरतें। पूरे श्रंगार के साथ ऐसी ही औरतों के सामने आने की अनुमति दी गई है। रहीं दूसरी औरतें तो क़ुर्आन का इशारा इस बात की तरफ़ मालूम होता है कि उन के सामने उसी हद तक ज़ीनत को ज़ाहिर किया जाए जिस हद तक ज़ाहिर होने में फ़ित्ने की कोई बात न हो ।

4) दासों में लौंडी और ग़ुलाम दोनों शामिल हैं। ग़ुलाम को इस्लाम ने घर के एक सदस्य की हैसियत दी है और उस को जो ख़िदमत अंजाम देना पड़ती है उस को देखते हुए ज़रूरत तक़ाज़ा करती है कि घर की औरतों पर ग़ुलाम के मामले में परदे की पाबन्दी न रहे। अब ग़ुलामी का सिलसिला समाप्त हो चुका है इस लिए ग़ुलामों का मसला भी नहीं रहा ।

5) उन पुरुषों के साथ जो अधीनस्थ हों और कोई ग़रज़ न रखते हों । इस से तात्पर्य वे सेवक या नौकर हैं जो बुढ़ापे के कारण या अपनी मंद बुद्धि के कारण अपनी कोई काम इच्छा न रखते हों । जवान नौकरों के लिए यह रिआयत नहीं है।

6) ''वे बच्चे जो अभी औरतों की पोशीदा बातों से परिचित न हुए हों ''अर्थात् वे नाबालिग़ बच्चे जिन पर न स्त्री के भेद खुल गए हों और न उन में कामसम्बन्धी भावनाएं जागृत हुई हों ।

45. अर्थात् औरतों को इस प्रकार पाँव मारते हुए नहीं चलना चाहिए कि ज़ेवर की झंकार सुनाई दे। यह इशारा है ख़ास तौर से पायल की ओर। उन में घुंघरु या बजने वाली कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए और न चलने का कोई ऐसा तरीक़ा अपनाना चाहिए कि पायल से कोई चीज़ टकरा कर अवाज़ पैदा करे।

आयत के शब्द مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ अर्थ:''जो ज़ीनत उन्हों ने छिपा रखी है'' इस बात पर तर्क प्रस्तुत करते हैं कि पायल को पाँव में छिपा होना चाहिए। अजनबी पुरुषों पर उन को ज़ाहिर नहीं होने देना चाहिए।

पाँव मारते हुए न चलने की यह हिदायत घर के लिए भी है और बाहर के लिए भी । घर में जब कोई ग़ैर महरम अनुमति ले कर दाख़िल हो तो औरतों को चाहिए कि घर में चलते हुए ऐसी सावधानी बरतें और जब बाहर निकलना हो तो इस का पूरा पूरा ख़्याल रखें।

इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि जो दीन ज़ेवरों के मामले में सावधानी बरतने की शिक्षा देता हो और पावों को ज़मीन पर मारते हुए चलने को मना करता हो वह औरतों की नाज़ और अदा की चाल और उन के नाच गाने को कैसे गवारा कर सकता है।

46. तौबा का मतलब पलटने के भी हैं और अपने गुनाह का पश्चाताप करने के भी । इस अवसर पर समस्त ईमान वालों को अल्लाह की ओर पलटने और अपने पिछले गुनाहों से तौबा करने का आदेश दिया गया है। मतलब यह है कि घरेलू ज़िन्दगी के सिलसिले में जो हिदायतें दी गई हैं उन की पाबन्दी करो और नैतिक पवित्रता से सम्बन्धित जो अपराध और जो ग़लतियाँ इस से पहले तुम से हो चुकी हैं उन के बारे में अल्लाह से माफ़ी मांगो और आगे के लिए अपना सुधार कर लो ।

47. स्पष्ट हुआ कि सफ़लता क़ुर्आन के आदेशों एवं निर्देशों के अनुसार जीवन ढालने में है न कि उन को एक किनारे रख कर माडर्न और ''फ़ैशनपरस्त'' बनने में ।

48. मूल अरबी (Taxt) में शब्द ''अयामा'' प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ मात्र विधवाएं नहीं हैं बल्कि उन पुरुषों और स्त्रियों के हैं जो मुजर्रद हों अर्थात् वे पुरुष जिन की पत्नियाँ न हों और वे स्त्रियाँ जिन के पति न हों उन के विवाह करा देने का अर्थ यह है कि उन के सम्बन्धी उन्हें विवाह करने पर उकसाएं और इस मामले में उन का सहयोग करें । इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि विधवाओं के विवाह को बुरा समझना सही नहीं । इस्लाम विधवाओं के निकाह को न केवल जायज़ क़रार देता है बल्कि इस की प्रेरणा भी देता है ।

ग़ुलामों और लौंडियों के बारे में भी इस्लाम ने सुधारात्मक क़दम उठाया और इस बात का निर्देश दिया कि इन में जो अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं उन के विवाह कर दिए जाएं। यह दायित्व विशेष रुप से उन के मालिकों पर आयद हुआ।

यह उस निर्देश क्रम की एक कड़ी है जो व्यभिचार की समाप्ति के लिए दिए जा रहे हैं।

49. अर्थात् विवाह के मामले में निर्धनता आड़े नहीं आना चाहिए । बल्कि अल्लाह पर भरोसा कर के इस शुभ कार्य को सम्पन्न कर देना चाहिए । जो व्यक्ति अल्लाह के आदेशों का अनुपालन करेगा अल्लाह उसे ज़रुर अपनी कृपा एवं उदार अनुग्रह से सुशोभित करेगा । और यह देखने में आता है कि शादी के बाद कितने ही ग़रीबों की आमदनी में वृद्धि हुई है और कितने ही लोग ख़ुशहाल हो गए हैं। परन्तु आधुनिक पीढ़ी के नवयुवकों का हाल भी अजीब है जो नई सभ्यता और नये चाल चलन से प्रभावित हो कर बल्कि नई सभ्यता की दौड़ में लग कर पत्नी के दायित्वों का निर्वाह करने से कतराते रहते हैं। पचीस वर्ष की आयु तक तो वह शिक्षा प्राप्त करने में व्यस्त रहते हैं। इस के बाद पाँच साल वित्तीय संघर्ष में इस प्रकार खपाते हैं कि उन का एक जीवन स्तर बन जाए और इतनी बचत हो जाए कि वे ठाट् बाट से शादी कर सकें। इस प्रकार उन की जवानी अकेले (तजर्रुद) में गुज़रती है। और आधी उम्र के बाद वे रिशता तलाश करते हैं। आधुनिक बदलाव ने एक तरफ़ नाबालिगों को बालिग़ बना देने वाला उत्तेजक माहौल प्रदान किया है और दूसरी तरफ़ शादी की ज़िम्मेदारियों से कतराने का रुझान पैदा कर दिया है। परिणाम यह कि अधिकतर नवयुवक बुरी तरह यौन पीड़ा का शिकार हो रहे हैं। और दूसरी ओर लड़कीयों को रिशता न मिलने की वजह से उन की शादी की आयु निकली जा रही है। यह परिस्थिति सुधारनी चाहिए परन्तु क़ुर्आन की हिदायत पर अमल किये बग़ैर यह संभव नहीं ।

50. अल्लाह बड़ी समाई वाला बड़ा ही विशाल है इस लिए उम्मीद रखो कि वह तुम्हारी रोज़ी में वृद्धि पैदा करेगा और तुम्हें सम्पन्न करेगा । वह सर्वज्ञ है इस लिए वह जानता है कि कौन स्वच्छ एवं पवित्र जीवन की मनोकामना लिए हुए है और निर्धन होने के बावजूद पत्नी की ज़िम्मेदारियों को क़ुबूल करने के लिए तैयार हो गया है।

अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर (प्रकाश) है।उस के नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक जिस में चिराग़ हो। चिराग़ शीशा के अन्दर हो। शीशा ऐसा हो जैसे चमकता हुआ तारा।उस चिराग़ को ज़ैतून के ऐसे मुबारक पेड़ से जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, रौशन किया जाता हो। उस का तेल भड़क उठने को हो, चाहे आग ने उस को छुआ न हो, नूर पर नूर। अल्लाह अपने नूर की जिस को चाहता है हिदायत प्रदान करता है।और लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है। अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।(यह चिराग़ रौशन है) ऐसे घरों में जिन को अल्लाह ने बुलन्द करने और जिन में उस के नाम का ज़िक्र करने का हुक्म दिया है। उन में उस की तस्बीह करते हैं, सुबह, शाम। *(अल-क़ुर्आन)*

33. और जो लोग विवाह का सामर्थ्य न रखते हों वे पवित्रता अपनाएं यहाँ तक कि अल्लाह उन को अपने उदार अनुग्रह से सम्पन्न कर दे [51]।और तुम्हारे मम्लूकों (दासों) में से जो (अपने आज़ाद होने के लिए) लिखित समझौता करना चाहते हों उन के साथ लिखित समझौता कर लो। अगर तुम जानते हो कि उन के अन्दर भलाई है [52]। और उन को अल्लाह के उस माल में से दो जो उस ने तुम्हें दिया है [53]। और अपनी लौंडियों को कुकर्म पर मजबूर न करो जब कि वे ख़ुद पाकदामन रहना चाहती हों, मात्र इस लिए कि तुम्हें सांसारिक जीवन के लाभ प्राप्त हो जाएं [54]। और जो उन को मजबूर करेगा तो उन के मजबूर किए जाने के बाद अल्लाह (उन के लिए) क्षमा करने वाला रहम फ़रमाने वाला है।[55]

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن
فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ
إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا
تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ
مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾

34. हम ने तुम्हारी तरफ़ स्पष्ट आदेश उतार दिए हैं और उन लोगों की मिसालें भी जो तुम से पहले हो गुज़रे हैं [56]। और परहेज़गारों के लिए नसीहत भी।

وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ
خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

35. अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर (प्रकाश) है [57]। उस के नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक जिस में चिराग़ हो [58]। चिराग़ शीशा के अन्दर हो। शीशा ऐसा हो जैसे चमकता हुआ तारा। उस चिराग़ को ज़ैतून के ऐसे मुबारक पेड़ से जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, रौशन किया जाता हो। उस का तेल भड़क उठने को हो, चाहे आग ने उस को छुआ न हो, नूर पर नूर [59]। अल्लाह अपने नूर की जिस को चाहता है हिदायत प्रदान करता है [60]। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है। अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।[61]

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا
مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ
دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ
وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ ۗ
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

36. (यह चिराग़ रौशन है) ऐसे घरों में जिन को अल्लाह ने बुलन्द करने और जिन में उस के नाम का ज़िक्र करने का हुक्म दिया है।[62] उन में उस की तस्बीह करते हैं, सुबह और शाम।

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا
بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ﴿٣٦﴾

51. अर्थात् जो लोग वास्तविक मजबूरियों के चलते विवाह न कर सकते हों, जैसे रिशता न मिलने, या रिहाइश का प्रबन्ध न होने के कारण विवाह में देरी हो रही हो तो उन्हें चाहिए कि पवित्रता का दामन हाथ से न जाने दें और जब अल्लाह उन की मुश्किलों को दूर कर दे तो वे विवाहिक जीवन से न कतराएं, उसे स्वीकार करें।

52. ''मकातिबत'' से तात्पर्य वह लिखित समझौता है जो एक ग़ुलाम अपने स्वामी के साथ अपनी आज़ादी के लिए करता है जिस में सुनिश्चित अवधि में रकम को अदा करना निर्धारित होता है और ग़ुलाम को यह मौक़ा मिलता है कि वह किसी अन्य जगह मेहनत और मज़दूरी कर के रक़म लाए और क़िस्तवार अदा कर के ग़ुलामी से रिहाई हासिल करे।

रही यह बात कि ''अगर तुम जानते हो कि उन में भलाई है'' तो इस का मतलब यह है कि जिन ग़ुलामों को आज़ाद करने से समाज के लिए किसी बिगाड़ और बवन्डल का भय न हो बल्कि भलाई की आशा हो उन के साथ समझौता कर लिया जाए। इस सावधानी की आवश्यकता विशेष रुप से इस लिए भी थी कि उस समय ग़ुलामों की बड़ी संख्या जंगी क़ैदियों पर आधारित थी।

ग़ुलामों को आज़ाद कराने के लिए इस्लाम ने जिन तरीक़ों को प्रचलित किया उन में मकातिबत (लिखित समझौता) भी एक महत्वपूर्ण माध्यम था ।

53. यह प्रोत्साहन है ग़ुलामों की सहायता के लिए ताकि वे समझौते के अनुसार मुआवज़ा अदा कर के आज़ादी प्राप्त कर सकें । जिन लोगों को अल्लाह तआला ने दौलत प्रदान की है उन को चाहिए कि गर्दनें छुड़ाने में माल ख़र्च करें।

54. वाक्य ''जब कि वे ख़ुद पाकदामन रहना चाहती हों'' परिस्थिति को स्पष्ट कर रहा है। अर्थात् यह बड़ी ही ज़ालिमाना एवं निर्लज्जतापूर्ण हरकत है कि लौंडियों को उन की मर्ज़ी के विरुद्ध पेशे के लिए बाध्य किया जाए। उस समय उन के मालिक उन को पेशे के लिए मज़बूर करते थे ताकि उन के द्वारा जो कमाई हो वह उन्हें प्राप्त हो जाए। यहाँ इसी बुराई से रोका गया है।

55. अर्थात लौंडियों को ज़िना (व्यभिचार) के लिए बाध्य किया जाता है तो अल्लाह उन की मजबूरी को देखते हुए उन्हें क्षमा करेगा और उन पर दया करेगा। इस से यह उसूली बात मालूम हुई कि जिस पाकदामन औरत पर व्यभिचार के लिए ज़बरदस्ती की जाए चाहे वह लौंडी हो या आज़ाद उस को न व्यभिचारिणी कहा जा सकता है और न वह किसी दण्ड की भागीदार है। उस के लिए तो अल्लाह की तरफ़ से क्षमा और दया का वादा है बशर्ते कि उस ने दुष्कर्म से बचने की पूरी कोशिश की हो!

रहे क़ुकर्म एवं व्यभिचार पर बाध्य करने वाले लोग तो क़ुर्आन उन को आख़िरत ही में नहीं दुनिया में भी दुखदायिनी यातना का भागीदार ठहराता है जैसा कि इस सूरह की आयात १९ से स्पष्ट है। तथा सूरह माइदा आयत ३३ में जो दण्ड सोसाइटी में बिगाड़ फैलाने वालों के लिए निर्धारित किये गये हैं उन के तहत हुकूमत को यह अधिकार प्राप्त है कि वे औरतों का अपहरण करने वालों, उन को व्यभिचार के लिए बाध्य करने वालों और वैश्यावृत्ति के अड्डे स्थापित करने तथा चलाने वालों को कड़ी और इबरतनाक सज़ा दे जो मौत तक की सज़ा हो सकती है।

56. संकेत है उन फ़सादी एवं बिगाड़ पैदा करने वाली जातियों के अंजाम की तरफ़ जिन्होंने अल्लाह के आदेशों की परवाह नहीं की और अपनी इच्छाओं के ग़ुलाम बन कर बुराइयाँ समेटते रहे।

57.नूर (प्रकाश) एक अतयंत सूक्ष्म, कोमल, सुन्दर और पवित्र चीज़ है। वह ख़ुद भी ज़ाहिर होता है और अपने प्रकाश से दूसरी चीज़ों को भी ज़ाहिर करता है। अल्लाह के आसमानों और ज़मीन का नूर होने का मतलब यह है कि वह इस कायनात में पूरी तरह प्रकाशमान है। वह अतयंत सूक्ष्म है, सौन्दर्य से परिपूर्ण और पवित्र है तथा उस का अस्तित्व अपने आप स्पष्ट है। वरना अल्लाह न भौतिक अर्थे में नूर है और इस भौतिक प्रकाश पर उस की कल्पना करना सही है क्यों कि

لَيۡسَ كَمِثۡلِهٖ شَیۡءٌ ۔(شوریٰ:١١)

अर्थ: ''उस जैसी कोई चीज़ नहीं'' (शूरा-११) अत: किसी उलझावी बहस या व्याख्याओं के चक्कर में पड़े बग़ैर अल्लाह के आसमानों और ज़मीन का नूर होने का जो सीधा सादा भावार्थ मन में आता है उस पर संतोष करना चाहिए। अल्लाह के गुणों के बारे में अच्छे पूर्वजों का यही तरीक़ा था और यही सलामती की राह है।

58. यहाँ जो मिसाल बयान हुई है उस से अभिप्रेत अल्लाह के गुण ''नूर'' (प्रकाश) की वस्तुस्थिति बयान करना नहीं है क्यों कि उस की वस्तुस्थिति मानव बुद्धि की सीमा से बाहर है। बल्कि इस से अभिप्रेत उस के उस नूर की ओर पथप्रदर्शन करना है जो इस कायनात में चारों ओर दृष्टिगोचर हो रही हैं। और जिस से उस की पहचान प्राप्त होती है। इस पहचान करने वाले प्रकाश की पूर्णता और उस के जलवों को एक मिसाल के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

59. जो चिराग़ ताक़ में रखा हुआ हो वह अधिक प्रकाशमान होता है। फिर यदि वह शीशे के अन्दर हो तो उस की रौशनी

साफ़ होगी और शीशा यदि चमकते हुए तारे की भाँति साफ़ और स्वच्छ हो तो उस का प्रकाश बहुत ही चमकीला होगा। फिर यदि उस चिराग़ को जैतून के तेल से जलाया गया हो, ख़ास तौर से ज़ैतून के उस वृक्ष के तेल से जिस पर ख़ुली जगह में होने की वजह से सुबह शाम सूरज की किरणें पड़ती हों, कि ऐसे वृक्ष का तेल बहुत ही चमकीला होता है, तो ऐसी परिस्थिति में उस चिराग़ की रौशनी अत्याधिक तेजवान होगी और वह रौशनी पर रौशनी दे रहा होगा । इस मिसाल से अभिप्रेत नूर अथवा प्रकाश के तेज की अति को स्पष्ट करना है।

यह तेजवान प्रकाश अल्लाह की पहचान का प्रकाश है जो इस कायनात में चारोंओर दृष्टिगोचर है परन्तु उस को देखने के लिए अन्तर्दृष्टि की आवश्यकता है।

उदाहरण में जैतून के वृक्ष को मुबारक इस लिए कहा गया है कि उस के लाभ बहुत हैं और उस का तेल बड़ा ही फ़ायदेमंद होता है। यह वृक्ष यदि पहाड़ पर या मैदान में इस प्रकार खड़ा हो कि उस के पूर्वी यह पश्चिमी ओर कोई आड़ न हो तो सूरज की किरणें उस पर सुबह, शाम और पड़ेंगी । जैतून के ऐसे वृक्ष का तेल बड़ा ही साफ़ और ऐसा चमकिला होता है कि गोया भड़क उठने को है।

ज़ैतून की मिसाल यहाँ अल्लाह की पहचान कराने वाले प्रकाश के क्रम में बयान हुई है किन्तु एक दूसरे पहलू से देखिए तो यह मिसाल इस्लाम पर भी बिलकुल फिट बैठती है। कि इस्लाम एक मुबारक दीन है और न वह पूर्वी है न पश्चिमी बल्कि एक यूनिवर्सल दीन है। इसी प्रकार ज़ैतून के तेल की मिसाल सच्चे स्वभाव के मनुष्य पर फिट बैठती है जिस के दिल में एक अल्लाह की धुनें हिलोरें लेती रहती हैं और जब अल्लाह की प्रकाशना उसे एकेश्वरवाद का संदेश सुनाती है तो उस का सुरताल बिलकुल एक हो जाता है। प्रकृति के पथप्रदर्शन के साथ क़ुर्आन का पथप्रदर्शन रौशनी पर रौशनी का यथार्थ बन जाता है।

60. मालूम हुआ कि ऊपर जिस नूर की मिसाल दी गई है उस का सम्बन्ध हिदायत से है इस लिए इस से तात्पर्य अल्लाह की पहचान कराने की रौशनी ही है और अल्लाह की पहचान कराने की रौशनी ही ऐसी है जो अपनी पूरी आन बान के साथ प्रस्फुटित होने तथा चारों ओर फैली होने के बावजूद उन लोगों ही को दिखाई देती है जो अन्दृष्टि से देखते हैं। अल्लाह ऐसे ही लोगों की रहनुमाई फ़रमाता है और ऐसे ही लोगों को उस की पहचान प्राप्त होती है।

आयत ''नूर'' का इस सूरह में बल्कि पूरे क़ुर्आन में जो स्थान है वह ऐसा है जैसे एक आलीशान महल में चमकता लअल जड़ा हुआ हो । अल्लाह की पहचान कराने वाले प्रकाश से जब दिल में ईमान की रौशनी पैदा हो जाती है तो मोमिन का पूर्ण जीवन उज्जवल हो जाता है, घरेलू या विवाहिक जीवन हो अथवा बाह्य या सामाजिक जीवन। ईमान के नूर से जीवन का हर भाग रौशन हो जाता है।

61. अर्थात् अल्लाह ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया है वह ज्ञान के आधार पर है इस लिए वह बिलकुल उचित है और जो बात इस उदाहरण के माध्यम से कही गई है वह सरासर हक़ीक़त है ।

62. तात्पर्य मस्जिदें हैं और उन को बुलन्द करने का मतलब निर्माण करना भी है और उन का सम्मान करना भी तथा मस्जिद की इमारत का मुनासिब हद तक ऊँचा उठाना भी। ताकि मस्जिदों के आदर एवं उस की प्रतिष्ठा का भाव लोगों में उत्पन्न हो । मस्जिदों के निर्माण को हदीस में जन्नत का पात्र बनाने वाला कर्म बताया गया है।

مَنْ بَنٰى لِلّٰهِ مَسْجِدًا بَنَى اللّٰهُ لَهٗ بَيْتًافِى الْجَنَّةِ ۔

(مشکٰوۃ کتاب الصلوٰۃ بحوالہ صحیحین)

अर्थः '' जिस ने अल्लाह के लिए मस्जिद बनाई अल्लाह उस के लिए जन्नत में घर बनाएगा।'' (सहीहैन)

और मस्जिद का आदर करने में जहाँ उस को पाक साफ़ रखना और उस में पाकी की हालत में प्रवेश करना, वहाँ लेन देन, क्रय-विक्रय न करना और कोई ऐसी बात न करना जो मस्जिद के आदाब तथा उस के प्रति शिष्टाचार के ख़िलाफ़ हो शामिल है, वहीं यह बात भी शामिल है कि न मस्जिद के अन्दर किसी की क़ब्र बनाई जाए और न किसी क़ब्र के ऊपर कोई मस्जिद बनाई जाए क्यों कि यह बात मस्जिद की प्रतिष्ठा के सरासर विरुद्ध है। हदीस में आता हैः

لَعَنَ اللّٰهُ الْيَهُوْدَ وَ النَّصَارٰى اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ

اَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ ۔ (مشکٰوۃ کتاب الصلوٰۃ بحوالہ صحیحین)

अर्थः ''अल्लाह यहूदियों और ईसाईयों पर लानत करे। उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।'' (सहीहैन)

और मस्जिदों के निर्माण का उद्देश्य यह है कि उन में अल्लाह के नाम का ज़िक्र हो अर्थात् वहाँ अल्लाह ही के नाम की चर्चा और उसी के नाम की आवाज़ें बुलन्द हों,क्यों कि मस्जिदें अल्लाह की इबादत के लिए ही ख़ास हैं। कुछ जाहिल मुसलमान अपने पीर दस्तगीर को भी मस्जिद में पुकारने से नहीं चूकते। उन की ये मुश्रिकाना दुआएं मस्जिद की प्रतिष्ठा को बुरी तरह चोट पहुँचाती हैं।

क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ही कि तस्बीह (पाकी बयान) करते हैं वे जो आसमानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे भी पर फैलाए हुए। प्रत्येक को अपनी नमाज़ और तस्बीह मालूम है और वे जो कुछ करते हैं उस से अल्लाह बाख़बर है। और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही ।और अल्लाह ही कि तरफ़ सब को लौटना है। *(अल-क़ुर्आन)*

37. ऐसे लोग जिन्हें व्यापार और क्रय विक्रय, अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ायम करने से और ज़कात देने से ग़ाफ़िल नहीं करती,[63] वे उस दिन से डरते हैं जब दिल और आँखें उलट जाऐंगी।[64]

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ
وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ۙ يَخَافُونَ يَوْمًا
تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

38. ताकि अल्लाह उन को उन के उत्तम कर्मों का बदला दे और अपने उदार अनुग्रह से अतिरिक्त प्रदान करे।[65] अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ (रोज़ी) देता है।[66]

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ
مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

39. जिन लोगों ने कुफ्र किया [67] उन के कर्मों की मिसाल ऐसी है जैसे वीराने में मृगतृष्णा,कि प्यासा उसे पानी समझे यहाँ तक कि जब वह उस के पास पहुँचा तो कुछ न पाया अलबत्ता अल्लाह को वहाँ मौजूद पाया और उस ने उस का हिसाब पूरा पूरा चुका दिया [68]और अल्लाह हिसाब चुकाने में बड़ा तेज़ है ।[69]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ
مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِندَهُ
فَوَفَّاهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾

40. या उस की मिसाल ऐसी है जैसे गहरे समुद्र में अंधकार जिस को मौज पर मौज ढाँक रही हो और उस के ऊपर बादल।अंधकार पर अंधकार हों। अगर अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख सके [70]। जिस को अल्लाह नूर न प्रदान करे उस के लिए कोई नूर (प्रकाश) नहीं ।[71]

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ
سَحَابٌ ۚ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكَدْ
يَرَاهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾

41. क्या तुम [72] देखते नहीं कि अल्लाह ही कि तस्बीह (पाकी बयान) करते हैं वे जो आसमानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे भी पर फैलाए हुए। प्रत्येक को अपनी नमाज़ और तस्बीह मालूम है [73] और वे जो कुछ करते हैं उस से अल्लाह बाख़बर है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ
صَافَّاتٍ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾

42. और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही [74]। और अल्लाह ही कि तरफ़ सब को लौटना है।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾

63. ऊपर की आयतों में घरों के अन्दर जाने के आदाब और घरेलू जीवन से सम्बन्धित आदेश बयान हुए थे। और इस आयत में अल्लाह के घरों के आदाब बयान हुए हैं। अर्थात् जब घरों की चर्चा हुई तो रुख़ अल्लाह के घरों की तरफ़ फेर दिया गया। और क़ुर्आन कि तरबियत का तरीक़ा यही है कि वह मन को नीचाई से ऊँचाई की तरफ़ और शाख़ से जड़ की ओर मोड़ देता है। अत: जब लिबास का वर्णन हुआ तो ज़ेहनों को तक़्वा के लिबास की ओर मोड़ दिया गया। (आराफ़ : २६)

ऊपर की आयत में अल्लाह की इबादतगाहों का वर्णन हुआ जहाँ से उस का नूर फूट रहा है और इस आयत में उन लोगों का वर्णन हो रहा है जो इस नूर कि ज़ियापाशी (प्रकाश फ़ैलाना) का लाभ उठाते रहते हैं। उन का ख़ास गुण यह है कि उन को आजीविका सम्बन्धि दौड़ धूप अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती । वे अपनी कारोबारी व्यस्तताओं और लेन देन के मामले तय करते हुए भी अल्लाह को याद रखते हैं। नमाज़ समय पर अदा करते हैं और ज़कात की अदायगी में कोताही नहीं बरतते।

यहाँ यह बात आप से आप स्पष्ट हो रही है कि जो व्यक्ति अपनी व्यवसायिक व्यस्ततओं के दौरान अल्लाह को याद रखेगा वह हलाल कमाई के लिए ही कोशिशें करेगा।

आज मुसलमानों की दशा अत्यंत दुखादायी है। कितने ही लोग अपनी व्यवसायिक व्यस्तताओं के दौरान नमाज़ समय पर अदा नहीं करते और कितने ही ऐसे हैं जिन को नमाज़ पढ़ने की फुर्सत ही नहीं है। गोया नमाज़ भी फुर्सत का कोई काम है और कारोबार उस पर मुख्य है। सोचने का यह ढब ही सरासर सांसारिक एवं पदार्थवादी है। ऐसे फ़ासिक़ों को नमाज़ क़ायम करने का सौभाग्य किस प्रकार नसीब होगा।

64. अर्थात् क़ियामत के दिन की भीषणता एवं भयानकता से न दिल ठिकाने पर रहेंगे और न आँखें। ईमान वाले उस दिन की कल्पना कर भय से कांपते रहते हैं। और यह चीज़ उन को गंभीर बनाती है और उन के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा करती है। और जब बन्दे में ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा होता है तो वह अल्लाह की अनुज्ञा तथा उस के न अनुपालन का तरीक़ा अपनाता है।

65. अर्थात् अल्लाह के ये बन्दे अपने अन्दर ये गुण जो पैदा करते हैं तो इस का फल उन्हें यह मिलेगा कि उन के जो बेहतरीन आमाल होंगे उन को मेयार बना कर उन का बदला प्रदान किया जाएगा। और अतिरिक्त रुप से अल्लाह अपने उदार अनुग्रह द्वारा प्रदान करेगा।

66. अर्थात् इतना देता है कि उस का अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता। वह देने में अत्याधिक दानशील है और जिन इनामों से वह अपने सच्चे बन्दों को अलंकृत करेगा उस की कल्पना वे इस जगत में नहीं कर सकतें।

67. क़ुर्आन की परिभाषा में कुफ़्र केवल यही नहीं है कि आदमी ख़ुदा के अस्तित्व का इन्कार कर दे बल्कि ख़ुदा को मानते हुए उस की विशेषताओं तथा उस के गुणों का इन्कार करना, उस के रसूलों और किताबों में से किसी को न मानना,उस की हिदायत क़ुबूल न करना, उस के आदेशों एवं निर्देशों का उल्लंघन करना और आख़िरत पर विश्वास न रखना भी कुफ़्र है। इस लिए इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि जो व्यक्ति अल्लाह के अस्तित्व को नकारता हो वही काफ़िर है बल्कि वह व्यक्ति भी काफ़िर है जो ख़ुदा को स्वीकारते हुए उस प्रकार से ख़ुदा को नहीं मानता जिस प्रकार से मानने का हुक्म अल्लाह ने क़ुर्आन में दिया है।

68. काफ़िरों के कर्मों में वे सारे कर्म शामिल हैं जो ख़ुदा और धर्म के आधार पर वे करते हैं जैसे बहुदेववादियों का दान करना, मुफ़्त कल्याण की संस्थाऐं जमाना, जनता की भलाई के काम आदि और अरब के बहुदेववादी तो हज्ज भी करते थे। और जहाँ तक यहूदियों और ईसाईयों का सम्बन्ध है वे अपने तरीक़े पर अल्लाह की इबादत भी करते हैं। इसी प्रकार जो मुसलमान मुनाफ़िक़ हैं वे कभी कभी नमाज़ भी पढ़ लेते हैं और दूसरे दीनी कामों में भी सम्मिलित हो जाते हैं। ये सारे काम नेकी होने के बावजूद चूँकि वे कुफ़्र की गन्दगी से अटे होते हैं इस लिए उन के ये सारे काम बेहक़ीक़त हैं और इन का कोई फल अल्लाह के यहाँ मिलने वाला नहीं और न उन के इन कारनामों का कोई सिला उन्हें मिलेगा जो क़ौम और वतन की ख़ातिर उन्हों ने अन्जाम दिए होंगे।

उन के कर्मों के निष्फल होने को यहाँ वीराने रेगिस्तान की मृगतृष्णा (सराब) के उदाहरण से स्पष्ट किया गया है। जिस प्रकार एक प्यासा रेगिस्तान में मृगतृष्णा को देख कर उसे पानी गुमान कर ले और इस आशा पर वहाँ जाए कि वह अपनी प्यास बुझा सकेगा परन्तु वहाँ पहुँच कर उस को मालूम हो जाए कि उस ने धोखा खाया उसी प्रकार ये काफ़िर यदि यह समझते हैं कि मरने के बाद अगर ईनाम और दण्ड मिलने की बात आ ही गई तो उन के कर्मों का फल उन को अल्लाह के यहाँ मिलेगा, यह मात्र उन की ख़ुशफ़हमी है। क़ियामत के दिन उन्हें मालूम हो जाएगा कि उन्होंने अपने आमाल के बारे में जो उम्मीदें बाँध रखी थीं उन की वास्तविकता वीराने की मृगतृष्णा मात्र है उस से अधिक कुछ नहीं। वे बदले के दिन अल्लाह को मौजूद पायेंगे और वह उन के कर्मों का हिसाब पूरे

न्याय के साथ चुका देगा।

69. क़ियामत के दिन अरबों और ख़रबों इन्सानों का हिसाब चुकाने में अल्लाह को कुछ देर न लगेगी।

70.यह दूसरा उदाहरण काफ़िरों की गाढ़ी जिहालत का है कि वे जिहालत की तह दर तह अंधकार में इस प्रकार घिर गए हैं कि उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता ।

71. स्पष्ट हुआ कि जिस को अल्लाह की ओर से रौशनी नहीं मिलती उस को फिर कहीं से रौशनी नहीं मिल सकती । इस लिए यह बात पक्की हो चुकी कि वह अंधकार में भटकता रहे।

72. अब वे निशानियाँ बयान की जा रही हैं जिन पर ग़ौर करने से अल्लाह की पहचान प्राप्त होती है।

73. ''देखते नहीं'' इस अर्थ में है कि ''यहाँ ग़ौर नहीं करते''। यह कह कर इस वास्तविकता पर विचार करने की निमंत्रणा दी जा रही है कि आसमानों की सृष्टि हो या ज़मीन की सब अल्लाह ही की पाकी बयान करते हैं तथा उस का ही गुणगान करते हैं। फ़रिश्ते हों या कोई और जानदार सृष्टि, सब अपने अपने तरीक़े पर नमाज़ भी पढ़ते हैं और तस्बीह भी करते हैं यहाँ तक कि परिन्दे जो हवा में पर फ़ैलाते हैं वह भी अल्लाह के आगे बिछ जाने ही के द्योतक हैं। कोयल की कू कू बुल बुल का चहकना, इन सब में अल्लाह की पाकी की गूँज सुनाई देती हैं। बशर्ते कि आदमी सच सुनने वाले कानों से सुने। प्रात: काल जब चिड़ियाँ वृक्षों पर एकत्रित हो कर चहचहाने लगती हैं तो ऐसा महसूस होता है कि ये अपने प्रभु के गुणगान में मग्न हैं और सुबह की नमाज़ में व्यस्त हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट ५८ और सूरह हज्ज नोट ३२

74. यह बात कि अल्लाह बिना किसी साझे के पूरी कायनात का अकेला बादशाह है एक सत्य है। परन्तु बहुदेववादी उस के अधिकारों में दूसरों को साझीदार ठहराते हैं और आश्चर्य की बात यह है कि वे मुसलमान जिन की घुट्टी में बिदअतें पड़ी हैं अल्लाह को अगर बादशाह क़रार देते हैं तो रसूल को वज़ीर आज़म (अर्थात् प्रधान मंत्री) (देखिए मुख़्तसर तफ़्सीर नईमी पृष्ट ५२७) में है ''हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सल्तनते-इलाहिय्या के गोया वज़ीर आज़म हैं'' अल्लाह की पनाह ऐसी व्याख्या से।

और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया, उन में से कोई अपने पेट के बल चलता है तो कोई दो पाँव पर और कोई चार पाँव पर। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। हम ने स्पष्ट कर देने वाली आयतें नाज़िल की हैं और अल्लाह जिस को चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है। *(अल-क़ुर्आन)*

43. क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह बादलों को हंकाते हुए ले जाता है फिर उन को परस्पर मिला देता है, फिर उन को तह दर तह कर देता है। फिर तुम देखते हो कि उन के बीच से बारिश की बूँदे निकलती हैं।[75] और वह आसमान से ओले बरसाता है, उन पहाड़ों से जो उस के अन्दर हैं [76] फिर जिस पर चाहता है आफ़त नाज़िल करता है [77]और जिस को चाहता है उस से बचाता है।उस की बिजली की चमक ऐसी होती है कि निगाहों को उचक ले।[78]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ يُزْجِى سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُۥ ثُمَّ يَجْعَلُهُۥ رُكَامًا فَتَرَى
ٱلْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَٰلِهِۦ وَيُنَزِّلُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مِن جِبَالٍ فِيهَا مِنۢ
بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ وَيَصْرِفُهُۥ عَن مَّن يَشَآءُ ۖ يَكَادُ
سَنَا بَرْقِهِۦ يَذْهَبُ بِٱلْأَبْصَٰرِ ﴿٤٣﴾

44. अल्लाह ही रात और दिन का उलट फेर करता है ।[79] इस में सबक़ है उन लोगों के लिए जो देखने वाली आँख रखते हैं।

يُقَلِّبُ ٱللَّهُ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُو۟لِى ٱلْأَبْصَٰرِ ﴿٤٤﴾

45. और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया,[80] उन में से कोई अपने पेट के बल चलता है [81] तो कोई दो पाँव पर [82] और कोई चार पाँव पर।[83] अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है।[84] निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

وَٱللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّن مَّآءٍ ۖ فَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰ بَطْنِهِۦ وَمِنْهُم
مَّن يَمْشِى عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰٓ أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ ٱللَّهُ مَا
يَشَآءُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾

46. हम ने स्पष्ट कर देने वाली आयतें नाज़िल की हैं और अल्लाह जिस को चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है।[85]

لَّقَدْ أَنزَلْنَآ ءَايَٰتٍ مُّبَيِّنَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ يَهْدِى مَن يَشَآءُ إِلَىٰ
صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾

47. ये कहते हैं हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम ने आज्ञापालन स्वीकार किया। इस के बाद उन में एक समूह मुँह मोड़ता है।ये लोग हरगिज़ मोमिन नहीं हैं ।[86]

وَيَقُولُونَ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَبِٱلرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ
مِّنْهُم مِّنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَآ أُو۟لَٰٓئِكَ بِٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

48. जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि रसूल उन के बीच फ़ैसला करे तो उन में से एक समूह गुरेज़ करता है।[87]

وَإِذَا دُعُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ
مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾

49. किन्तु यदि सत्य उन के पक्ष में हो तो रसूल के पास बड़े फ़रमांबरदार बन कर आते हैं।[88]

وَإِن يَكُن لَّهُمُ ٱلْحَقُّ يَأْتُوٓا۟ إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٤٩﴾

50. क्या इन के दिलों में रोग है।या ये शक में पड़े हुए हैं। या उन को यह भय है कि अल्लाह और उस का रसूल उन के साथ नाइन्साफ़ी करेंगे? असल बात ये है कि ये लोग ख़ुद ही ज़ालिम हैं।[89]

أَفِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ٱرْتَابُوٓا۟ أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ ٱللَّهُ
عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُۥ ۚ بَلْ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٥٠﴾

75. बारिश के बादलों की यह व्यवस्था सामान्य रूप से देखने में आने वाली चीज़ है। लेकिन अगर आदमी हवाई जहाज़ में सफ़र कर रहा हो तो वह इस की अनुभूति अच्छी तरह कर लेता है। उसे ऐसा मालूम होता कि बादलों का एक समुद्र है जो ज़मीन पर छा गया है। वह यह भी देखता है कि बादल इधर उधर से आ कर बड़ी तेज़ी से एक दूसरे से मिलते हैं तो फिर उन के तह दर तह होने का सिलसिला तो कई मील की बुलंदी तक रहता है। और अजीब बात तो यह है कि बादल नीचे पानी बरसा रहे होते हैं और हवाई जहाज़ उन के ऊपर से गुज़रता है। यह आँखों देखा अनुभव सोचने और विचार करने की दअवत देता है। और आदमी यदि ग़ौर करे तो यह बात आसानी से समझ में आ सकती है कि ये सारे काम एक योजना के तहत हो रहे हैं और यह उसी हस्ती का किया कराया है जो पूरी कायनात का व्यवस्थापक है।

76. यहाँ आसमान से तात्पर्य बुलन्दी है। बुलन्दी पर ठंडी हवा की अधिकता से बादल बर्फ (Snow) से भर जाते हैं और उन के बड़े बड़े तोदे ऐसे होते हैं जैसे पहाड़। फिर उन पहाड़ जैसे तोदों से बर्फ़बारी होने लगती है।

77. कभी कभी बर्फ़बारी तूफ़ान का रुप धार लेती है और इस से बड़ा भारी नुक़सान पहुँचता है। इन पंक्तियों के संकलनकर्ता को स्वयं कुछ साल पहले दुबई में बर्फ़बारी को देखने का मौक़ा मिला। बर्फ़ के गोले ऊपर से इस प्रकार बरस रहे थे कि मालूम होता था कि मशीनगन से गोलियाँ चलाई जा रही हैं और गोलों को देख कर लगता था कि किसी कारख़ाने में ढले हुए हैं। हम ने राह चलते हुए एक दूकान में पनाह ली थी। वहीं से यह दृश्य देख रहा था और अल्लाह से सलामती के लिए दुआ कर रहा था। बाद में मालूम हुआ इस बर्फ़बारी से भयंकर तबाही हुई और कितने ही राह चलते लोग उस की ज़द में आ गए। ऐसी घटनाऐं इन्सान की आँखें खोल देने के लिए काफ़ी है।

78. अर्थात् बिजली की चमक निगाहों को चकाचौंध कर देने वाली होती हैं।

79. नक्षत्र विज्ञान के अनुसार रात और दिन का उलट फेर पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमने के फ़लस्वरुप है परन्तु प्रश्न यह है कि वह कौन है जो पृथ्वी को इस प्रकार घुमा रहा है कि लम्बी अवधि गुज़रने के बावजूद न उस की रफ़्तार में कोई अन्तर आया और न रात और दिन की नियमितता में कोई गड़बड़ी हुई ?

80. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अंबिया नोट ३५

81. पेट के बल चलने वाले जानवरों की मिसाल सांप है और पानी में तैरने वाली मछली भी।

82. दो पाँव वाले जीवों में इन्सान और परिन्दे शामिल हैं।

83. चार पाँव वाले जानवरों में चरने वाले मवेशी भी हैं और वहशी जानवर भी।

84. अर्थात् सृष्टि सृजन की इस भिन्नता में अल्लाह ही का इरादा काम करता है।

85. अर्थात् ये आयतें तौहीद को बिलकुल स्पष्ट कर देने वाली है परन्तु इन से हिदायत वही लोग पायेंगे जो अल्लाह की मर्ज़ी के तहत हिदायत के पात्र होंगे। और अल्लाह की मर्ज़ी तत्वपूर्ण फैसले ही करती है।

86. यह उन लोगों का हाल बयान हो रहा है जो ईमान का दावा तो करते थे परन्तु अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञापालन से मुँह फेरते थे। यह बात ईमान के तक़ाज़े के बिलकुल विरुद्ध थी इस लिए उन के बारे में फ़रमाया गया कि वास्तव में वे मोमिन नहीं हैं। बल्कि ऐसे लोग तो मुनाफ़िक़ हैं।

मालूम हुआ है कि अल्लाह और रसूल को मान लेने के बाद उन के अनुपालन से इन्कार परस्पर विपरीत बातें हैं। जिस दिल में ईमान होगा तो वह उस के व्यवहार और उस के आचारण से स्पष्ट हुए बग़ैर नहीं रहेगा। क्षणिक रूप से किसी गुनाह का हो जाना और बात है और सिरे से अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञा पालन ही को आवश्यक न समझना और बात है। पहली चीज़ ग़लती है, गुनाह है, दूसरी चीज़ कुफ्र है।

आज मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जो एक तरफ़ इस्लाम में अपनी आस्था एवं श्रद्धा व्यक्त करती है और दूसरी ओर किताब और सुन्नत के अनुपालन से बिलकुल आज़ाद है। जिहालत के कारण ये लोग ख़ुशफ़हमी में मग्न हैं। यदि वे इन आयतों को ग़ौर से पढ़ लें तो वे ईमान की हक़ीक़त को समझ लें और उन्हें अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन की तौफ़ीक़ और सौभाग्य नसीब हो।

87. अपना मुक़दमा रसूल के पास ले जाने से इन्कार करना या आपसी झगड़ों के मामलों को क़ुर्आन और सुन्नत के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए आमादा न होना एक मुनाफ़िक़ाना हरकत, तथा एक पाखण्डी रवैया है जिस की विस्तृत व्याख्या सूरह निसा नोट १२९ और १३४ में की जा चुकी है।

88. अर्थात् जब उन्हें अन्दाज़ा होता है कि फ़ैसला उन के पक्ष में होगा तो पूरे स्वीकृत भाव से सर झुकाते हुए रसूल के पास दौड़े चले आते हैं।

यही हाल मौजूदा दौर के मुनाफ़िक़ों का है। वे शरीअत के केवल उन्हीं आदेशों को ले लेते हैं जिन से उन के हित जुड़े हुए हैं। यह स्वार्थपरता अथवा अवसरवादिता है न कि शरीअत का अनुपालन।

89. अर्थात् उन का यह विश्वासघाती एवं पाखंडी रवैया या तो इस कारण से है कि इन के दिलों में निफ़ाक़ (कपट, एवं

पाखण्ड) की बीमारी है इस लिए ये अन्दर से कुछ हैं और बाहर से कुछ । या ये शक में पड़े हुए हैं कि वास्तव में ये आदेश अल्लाह के हैं भी या नहीं ? या फिर वे अल्लाह और उस के रसूल से अपने लिए इन्साफ़ की आशा ही नहीं रखते इस लिए भय और शंकाओं में लिप्त हैं कि उन के अधिकारों का हनन होगा । इन में से जो बात भी हो वह ईमान के विरुद्ध है। और असल बात यह है कि ये अपने ही हक़ में ज़ालिम बन गए हैं अर्थात् अपनी इच्छाओं की ग़ुलामी ने इन्हें बिलकुल ग़लत और अपने ही ऊपर ज़ुल्म ढाने वाला बना दिया।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

ईमान वालों को तो जब अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाय जाता है ताकि रसूल उन के बीच फ़ैसला करे तो कहते हैं, हम ने सुना और आज्ञा का पालन किया। यही लोग हैं कामयाब होने वाले। और जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे और अल्लाह से डरेंगे और परहेज़गारी अपनाऐंगे वही हैं मुराद को पहुँचने वाले। *(अल-क़ुर्आन)*

51. ईमान वालों को तो जब अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाय जाता है ताकि रसूल उन के बीच फ़ैसला करे तो कहते हैं, हम ने सुना और आज्ञा का पालन किया।[90] यही लोग हैं कामयाब होने वाले।

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾

52. और जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे, और अल्लाह से डरेंगे और परहेज़गारी अपनाऐंगे वही हैं मुराद को पहुँचने वाले।[91]

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٥٢﴾

53. ये अल्लाह के नाम से कड़ी क़समें खाते हैं कि अगर तुम इन को हुक्म दो तो निकल खड़े होंगे।[92] इन से कहो क़समें न खाओ। सामान्य तरीक़े से आज्ञा पालन करना चाहिए।[93] तुम जो कुछ करते हो अल्लाह को उस की ख़बर है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا
تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

54. कहो आज्ञापालन करो अल्लाह की और आज्ञापालन करो रसूल की।[94] किन्तु यदि तुम मुँह फेरते हो तो (याद रखो) रसूल पर वह ज़िम्मेदारी है जिस का भार उस पर डाला गया है और तुम पर वह ज़िम्मेदारी है जिस का भार तुम पर डाला गया है। यदि उस की आज्ञापालन करोगे तो हिदायत पाओगे। और रसूल पर इस के सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं कि साफ़ साफ़ (आदेश) पहुँचा दे।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ
مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى
الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

55. तुम में से जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन से अल्लाह ने वादा किया है कि वह उन को ज़मीन में ख़िलाफ़त (सत्ता) प्रदान करेगा जिस प्रकार उन लोगों को प्रदान किया था, जो इन से पहले गुज़र चुके। और उन के लिए उन के दीन (धर्म)को जिसे उस ने उन के लिए पसन्द फ़रमाया है सुदृढ़ता प्रदान करेगा। और उन की भय की दशा को अमन से बदल देगा।वे मेरी ही इबादत करेंगे। किसी को मेरा साझीदार नहीं ठहराऐंगे। और जो इस के बाद कुफ़्र करेंगे तो ऐसे ही लोग फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) हैं।[95]

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ
خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَن كَفَرَ
بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

90. यह तो है सच्चे ईमान वालों का रवैया, किन्तु मौजूदा मुसलमानों का रवैया यह है कि वे न तो अल्लाह और उस के रसूल की बात सुनने के लिए तैयार हैं और न उन की आज्ञापालन करने के लिए। बहुत कम लोग हैं जो सही रवैया अपनाए हुए हैं।

स्पष्ट रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जो फ़ैसले सही हदीसों से साबित हैं वे हम सब के लिए सम्बन्धित मामलों में अनिवार्य रूप से अनुकरणीय हैं और उसूली रहनुमाई का सामान भी ।

91. अर्थात् अपनी मुराद पाने अथवा सफल होने के लिए अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन इस तौर से आवश्यक है कि दिल में अल्लाह का भय और उस की अवज्ञा से बचने की भावना हो।

92. अर्थात् ये मुनाफ़िक़ क़समें खा कर विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि ऐ पैग़म्बर यदि तुम इन्हें जिहाद का हुक्म दो तो वे अवश्य निकलेंगे।

93. क़समें वही लोग अधिक खाते हैं जिन का चरित्र विश्वस्नीय नहीं होता । यहाँ मुनाफ़िक़ीन से कहा जा रहा है कि झूठी क़समें खा कर अनुपालन करने का विश्वास दिलाने के बजाय, अनुपालन करने की जो सामान्य रीति है वह अपनाओ, कि सच्चे मोमिनों का यही तरीक़ा है ।

94. इन आयतों में अल्लाह के अनुपालन के साथ रसूल के अनुपालन की भी बड़ी ताकीद की गई है और इसे ईमान का तक़ाज़ा बताया गया है। अल्लाह के अनुपालन के लिए आवश्यक है कि उस की किताब अर्थात् क़ुर्आन को मज़बूती के साथ थाम लिया जाए और रसूल के अनुपालन के लिए आवश्यक है कि उस के तरीक़े को जिस को उस ने इस उम्मत में प्रचालित किया और जो सही हदीसों से साबित हैं, मज़बूती के साथ थाम लिया जाए।

95. इस आयत में ईमान वालों के लिए ख़ुशख़बरी है और मुनाफ़िक़ों के लिए चेतावनी । मुनाफ़िक़ इस इन्तिज़ार में थे कि हालात का क्या रूख़ होता है। उन्हें सावधान किया गया कि वे किसी ख़ाम ख़याली में न रहें । ख़ौफ़ और जंग की यह हालत जिस से इस समय ईमान वाले गुज़र रहे हैं,यह सदा बाक़ी रहने वाली नहीं है। बहुत जल्द इन को शक्ति और प्रभुत्व की प्रतीक सत्ता प्रदान की जाने वाली हैं और इस सरज़मीन पर इस्लाम का पूर्ण अधिपत्य होने वाला है।

''इस्तिख़्लाफ़''का मतलब ख़लीफ़ा बनाने के हैं और ख़लीफ़ा का अर्थ अधिकार, शक्ती और सत्ता वाले के हैं। लिसानुल अरब में है।

وَالْخِلَافَةُ الْإِمَارَةُ

अर्थ:- ''ख़िलाफ़त का मतलब इमारत (शासन) के हैं।'' (लिसानुल अरब जिल्द ९ पृष्ट ८३) और क़ुर्आन की परिभाषा में ख़लीफ़ा बनाने का मतलब अल्लाह तआला की ओर से सत्ता प्रदान किये जाने के हैं। और इस सत्ता से जो कुछ वांछनीय है वह यह कि अधिकार और शक्ति को उस के नियम (शरीअत) के अनुसार इस्तेमाल करना । दूसरे शब्दों में ख़लीफ़ा निरंकुश शासक (Absolute Monarch) नहीं होता बल्कि उस की हैसियत, अधिकारों को अल्लाह की अमानत समझ कर इस्तेमाल करने वाले की होती है। इस इर्थ में एक नबी भी सत्ता पाने के बाद ख़लीफ़ा होता है अत: क़ुर्आन में हज़रत दाऊद को ख़लीफ़ा कहा गया है।

(देखिए सूरह सॉद आयत २६)

अल्लाह तआला का यह वादा कि वह ईमान वालों और अच्छे काम करने वालों को सत्ता और शासन से सुशोभित करेगा, बहुत जल्द पूरा हुआ और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन ही में पूरे अरब पर इस्लाम का प्रभुत्व और उस की सत्ता स्थापित हो गई। फिर ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के शासन काल में समय की दो महाशक्तियाँ फ़ारस और रोम इस्लाम की उभरती हुई ताक़त से टकरा कर बिखर गईं और ख़िलाफ़त की सीमाऐं ईरान, इराक़, सीरिया, और मिस्र तक फैल गईं। मदीना पर बहुदेववादियों और काफ़िरों के हमले का जो ख़तरा लगा रहता था वह इस प्रकार समाप्त हो गया कि अब कोई शक्ति भी इस की जुर्अत नहीं कर सकती थी, और दीन को ऐसा बल मिल गया था कि राज्य की व्यवस्था तथा उस के प्रबन्ध को इस्लाम के अनुसार चलाने में और उस के क़ानून को लागू करने में कोई रुकावट नहीं रह गई थी। पूरे अरब में तौहीद का डंका बजा और बहुदेववाद से अरब की ज़मीन बिलकुल पाक हो गई। इस प्रकार ख़ुलफ़ाए-राशिदीन (रज़ि.) का शासन काल क़ुर्आन के इस वादे का प्रतीक सिद्ध हुआ । मगर आश्चर्य है कि इस खुली हक़ीक़त के बावजूद मुसलमानों का एक वर्ग हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, और हज़रत उस्मान (रज़ि.) को अपहर्ता कह कर उन की निन्दा करता है। अगर इस वर्ग के लोग इस आयत की रौशनी में ख़िलाफ़त के मामले पर ग़ौर करें तो जिस फ़िर्क़ा बन्दी में वे लगे हुए हैं उस की वास्तविकता उन पर स्पष्ट हो जाए।

आयत में यह जो फ़रमाया गया है कि जिस प्रकार उन को प्रदान किया गया था जो इन से पहले गुज़र चुके तो यह इशारा है अल्लाह के उस नियम की तरफ़ कि जब किसी रसूल को उस की जाति वालों ने झुठलाया तो उस को विनष्ट कर दिया गया और रसूल और उस के ईमान वाले साथियों को अधिकार और सत्तावान बनाया गया। इस के उदाहरण हज़रत नूह,

हज़रत हूद, और हज़रत स्वालेह तथा उन के ईमान वाले साथी हैं। इसी प्रकार बनी इस्राईल को पवित्र धरती प्रदान की गई थी और हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान के द्वारा हुकूमत को विस्तृत एवं सुदृढ़ किया गया।

'' इस के बाद जो कुफ्र करेंगे तो ऐसे लोग फ़ासिक़ है'' का मतलब यह है कि ईमान वालों को जो ख़िलाफ़त की सत्ता से सुशोभित किया जायेगा तो यह अल्लाह तआला के वादे की पूर्ति और उस का असाधारण उदार अनुग्रह होगा। यह सब कुछ देख लेने के बाद भी जो लोग इस नेमत का निरादर करेंगे और फ़ितने खड़े कर के अमन को बदअमनी से बदलने की कोशिश करेंगे वे ख़ुले उल्लंघनकारी (फ़ासिक़) होंगे, यह गोया इशारा था सबाई फ़ितने की तरफ़ जो हज़रत उस्मान की ख़िलाफ़त के शासन काल में उठा और जिस ने हज़रत अली की ख़िलाफ़त को पूरी तरह लपेट में ले लिया।

रहा यह प्रश्न कि सत्ता का यह वादा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए था या बाद के मुसलमानों के लिए भी है तो इस का उत्तर अल्लामा इब्ने तीमिया ने यह दिया कि:-

''यह वादा उन सब के लिए है जो ये गुण रखते हों। जब अगलों ने अपने अन्दर ये गुण पैदा कर लिए तो अल्लाह ने अपने वादे के अनुसार उन्हें ख़िलाफ़त (की सत्ता) से सुशोभित किया और उन के बाद एक समूह अपने ईमान और अच्छे कर्मों की दृष्टि से ऐसा गुणवत्ता हुआ। तो जो अपने ईमान में निष्ठ और अच्छे कर्मों वाले थे उन को यह ख़िलाफ़त पूर्ण रूप से मिली और जिन के अन्दर इस दृष्टि से कोई कमी या ख़राबी रह गई थी उन की सत्ता में भी कमी या त्रुटि थी। यह इस कर्म का फल है। तो जो लोग ये कर्म करेंगे वे इस के फल के भागीदार होंगे।''

(संग्रह फ़तावा इब्ने तीमिया जिल्द १८ पृष्ट ३०२)

नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और रसूल का अनुपालन करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। काफ़िरों के बारे में यह ख़याल न करो कि वे हमारे क़ाबू से निकल जाएंगे। उन का ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। *(अल- क़ुर्आन)*

56. नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और रसूल का अनुपालन करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

57. काफ़िरों के बारे में यह ख़याल न करो कि वे हमारे क़ाबू से निकल जाऐंगे। उन का ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ
النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾

58. ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे मम्लूक (लौंडी, ग़ुलाम) और तुम लोगों के वे बच्चे जो अभी युवावस्था को नहीं पहुँचे, तीन समयों में तुम से इजाज़त लिया करें। फ़ज्र की नमाज़ से पहले। दोपहर को जब कि तुम कपड़े उतार कर रखते हो और इशा की नमाज़ के बाद। ये तीन समय तुम्हारे लिए परदे के हैं। इन के अलावा अन्य समयों में (इजाज़त लिए बग़ैर उन के आने में) न तुम पर कोई पकड़ है और न उन पर। तुम्हारा एक दूसरे के पास बार बार आना जाना होता है। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें स्पष्ट करता है।[96] और अल्लाह सवर्ज्ञ एवं तत्वदर्शी (इल्म और हिकमत वाला) है।[97]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ
صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ
وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ؕ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَ
لَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى
بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

59. और जब तुम लोगों के बच्चे युवावस्था को पहुँच जाऐं तो चाहिए कि वे भी उसी तरह इज़ाजत लिया करें, जिस तरह इन से पहले (युवावस्था को पहुँचने) वाले इजाज़त लेते हैं [98]। इस प्रकार अल्लाह अपने आदेश तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है और अल्लाह इल्म वाला और हिकमत वाला है।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا
اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ
اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾

60. और वे बूढ़ी औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखती अगर अपने (उपरी) कपड़े उतार कर रख दें तो उन पर कोई पकड़ नहीं ।[99] बशर्ते कि अपनी ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न हों [100]। मगर उन के हक़ में बेहतर यही है कि इस से बचें। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِىْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ
عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ
بِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

96. मालूम हुआ कि यह आयत स्पष्टीकरण की आयत है। आयत २७ में घरों में स्वीकृति ले कर अन्दर आने का जो हुक्म दिया गया था उस के बारे में यहाँ स्पष्ट कर दिया गया कि जहाँ तक तुम्हारे लौंडी ग़ुलामों और नाबालिग़ बच्चों की बात है उन का चूँकि बार बार तुम्हारे पास आना जाना होता है इस लिए हर समय इजाज़त लेना उन के लिए आवश्यक नहीं किन्तु तीन समय ऐसे हैं जिन में इजाज़त लेने की पाबन्दी इन को भी करना चाहिए और वे तीनों समय तुम्हारे परदे के हैं। एक तो इशा के बाद का समय जब आदमी बिस्तर पर जाता है दूसरा फ़ज्र की नमाज़ से पहले का समय और तीसरा दोपहर का समय जो क़ैलूले का समय है। विशेष रूप से गर्म देशों के लिए। इन समयों में आदमी चूँकि अपनी पत्नी के पास एकान्त में होता है या शरीर पर अपर्याप्त कपड़े होते हैं इस लिए नाबालिग़ बच्चों को भी इस बात का पाबन्द बनाना आवश्यक है। यदि वे इन समयों में अन्दर आना चाहें तो इजाज़त ले कर ही अन्दर आऐं। इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि बच्चों के सही प्रशिक्षण का ख़याल रखना चाहिए और उन के सामने कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिस का असर उन के चरित्र और आचरण पर बुरा पड़ता हो।

आधुनिक युग में बढ़ती आबादी ने बड़े शहरों में रिहाइश के मसले को बड़ा मुश्किल बना दिया है। लोग तंग कमरों में अपने बच्चों के साथ रहते हैं। एक तरफ़ रहने की यह मज़बूरी है दूसरी तरफ़ हयादारी के तक़ाज़े हैं जिन को हरगिज़ नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। ऐसी सूरत में जो सावधानी का रवैया अपनाया जा सकता हो वह ज़रूर अपनाना चाहिए और दूसरी जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं पर रिहाइश के मसले को सर्वोपरि रखना चाहिए। अर्थात् रिहाइश का ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए कि एकान्त भी उपलब्ध हो और रहने सहने से सम्बन्धित शरीअत की बाँधी सीमाओं की पाबन्दी भी की जा सके । जो लोग नैतिक बोध रखते हैं और इस्लामी जीवन ग़ुज़ारना चाहते हैं उन के लिए बेहद ज़रूरी है कि वे रिहाइश के मसले को मुनासिब तरीक़े से हल करने के लिए कुछ अधिक आर्थिक बोझ सहन करें।

97. संकेत है इस बात की तरफ़ कि उस के ये आदेश ज्ञान और तत्वदर्शिता पर आधारित हैं।

98. अर्थात् बच्चे जब बालिग़ हो जाऐं तो उन को दूसरे समयों में भी इजाज़त ले कर अन्दर आना चाहिए। यह पाबन्दी उन के लिए उसी तरह है जिस तरह पहले से उन के बड़ों के लिए है।

99. आयत ३१ में औरतों को डुपट्टे का आदेश दिया गया था कि यदि कोई ग़ैर महरम घर में आए तो अपने गिरेबानों पर उस के आंचल डाले रहें। इस आयत में उन बूढ़ी औरतों को जो कि निकाह की उम्मीद न रखती हों यह छूट दे दी गई है कि वे यदि अपने डूपट्टे उतार दें तो कोई हर्ज नहीं बशर्ते की ज़ीनत की नुमाइश लक्ष्य न हो। और बेहतर यही है कि वे डूपट्टे न उतारें कि इस में ज्यादा हयादारी है। अधिकांश टीकाकारों (मुफ़स्सिरीन) ने कपड़ो से चादरें तात्पर्य ली हैं। अर्थात् उन के नज़दीक बूढ़ी औरतें यदि बाहर निकलते समय अपने ऊपर चादरें न डाले तो कोई हर्ज नहीं। लेकिन चादर का आदेश सूरह अहज़ाब में हुआ है। इस सूरह (नूर) में तो घर से सम्बन्धित आदेश बयान हुए हैं जिन में ओढ़नी का हुक्म भी दिया गया है। और यह आयत कि जिस की व्याख्या चल रही है एक स्पष्टीकरण की आयत है इस लिए इस का सम्बन्ध ओढ़नी के आदेश से उच्च है।

100. ज़ीनत के इज़्हार की तीन सूरतें इस सूरह में बयान हुई हैं। एक यह कि जो ज़ीनत ज़रूरत के हिसाब से ज़ाहिर होती रहती है। उस के ग़ैर महरम के सामने दिख जाने में कोई हर्ज नहीं है। इस का हुक्म आयत ३१ में ''इल्ला मा ज़हरा मिन्हा'' के वाक्य में बयान हुआ है। दूसरी सूरत यह है कि औरत ज़ीनत अर्थात बनाव सिंगार के साथ अपने पति के अलावा अपने महरम रिश्तेदारों के सामने भी आ सकती है। इस का हुक्म आयत ३१ में बयान हुआ है। और तीसरी सूरत यह है कि औरत ग़ैर महरम मर्दों के सामने ज़ीनत की नुमाइश करे अर्थात् जिस ज़ीनत हो छिपाना ग़ैरमहरमों से आवश्यक है उस को वह दिखाती फिरे। ज़ीनत की यह नुमाइश हराम है और क़ुर्आन की परिभाषा में इस का नाम ''तबर्रुज'' है। इस आयत में इसी तबर्रुज की मनाही की गई है ।

61. न अन्धे पर कोई हर्ज है,न लंगड़े पर कोई हर्ज है और न मरीज़ पर कोई हर्ज है और न ख़ुद तुम पर कोई हर्ज है कि अपने घरों से खाना खाओ, या अपने बाप दादा के घरों से,या अपनी माओं के घरों से, या अपने भाईयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने चाचाओं के घरों से,या अपनी फूफियों के घरो से,या अपने मामाओं के घरों से,या अपनी ख़ालाओं के घरों से,या उन घरों से जिन की कुंजियाँ तुम्हारे क़ब्ज़े में हों या अपने दोस्तों के घरों से खाओ।[101] इस बात में भी तुम पर कोई गुनाह नहीं कि मिल कर खाओ या अलग अलग [102]।अलबत्ता जब घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो।[103]यह अल्लाह की तरफ़ से मुबारक और पाकीज़ा दुआ का कलिमा है।[104] इस प्रकार अल्लाह अपनी आयतें तुम पर खोलता है ताकि तुम अक़्ल से काम लो।[105]

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ
وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا
مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ
أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ
أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُم مَّفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ
فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ
عِندِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ
الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

62. मोमिन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं [106]।और जब किसी सामूहिक कार्य के लिए रसूल के साथ होते हैं तो उस समय तक चले नहीं जाते जब तक कि उस की अनुमति न ले लें।[107] जो लोग तुम से अनुमति की याचना करते हैं, वही हैं अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखने वाले। अतः जब वे अपनी किसी आवश्यकता से अनुमति की याचना करें तो जिसे तुम चाहो अनुमति दे दिया करो।[108] निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا
مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ
الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾

63. रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक दूसरे का बुलाना न समझो।[109]अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ ले कर खिसक जाते हैं।[110] तो जो लोग रसूल के आदेश को मानने से मुँह फेरते हैं उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि वे किसी फ़ितने का शिकार न हो जाऐं या दुखदायिनी यातना उन को पकड़ न ले ।[111]

لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ
يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ
يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ
أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

64. सुनो ! आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है। तुम जिस हाल पर हो अल्लाह उसे जानता है और जिस दिन उस की तरफ़ लौटाए जाऐंगे, वह उन्हें बता देगा कि वह क्या कर के आए हैं। अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنتُمْ
عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

101. इस सूरह में घर से सम्बन्धित जो आदेश दिए गए हैं उन की पुष्टि तथा उन के स्पष्टीकरण हेतु ये आयतें नाज़िल हुई हैं। इस से अभिप्राय इस ग़लतफ़मी को दूर करना है कि उक्त वणित पाबन्दियों के चलते न अपाहिजों के लिए यह गुन्जाइश बाक़ी रहती है कि वे निरन्तर उन घरों में जा कर खाते रहें जहाँ उन के लिए कुछ कल्याण कार्य करने वालों ने प्रबन्ध कर रखा था और न क़रीबी रिश्तेदार और दोस्त अहबाब एक दूसरे के घरों में जा कर खाना खा सकते हैं। इस आयत में स्पष्ट कर दिया गया है कि अपाहिज व्यक्तियों के खाने का प्रबन्ध जिन लोगों ने अपने घरों में किया हो वे वहाँ जा कर खाना खा सकते हैं। घर के अन्दर जाने की अनुमति और परदे की हद बन्दी का यह मतलब नहीं है कि अपाहिजों के साथ सहानुभूति का व्यवहार समाप्त कर दिया जाए। रहे निकट सम्बन्धी, जैसे बाप, माँ, भाई, बहन, चाचा, फूफी,मामा और ख़ाला (मौसी) तो यदि तुम्हारे खाने का प्रबन्ध इन सम्बन्धियों में से किसी के घर में है तो वहाँ जा कर तुम्हारे खाने में कोई हर्ज नहीं है। इसी प्रकार उन घरों से भी जो तुम्हारी निगरानी में हों। जैसे कोई व्यक्ति यात्रा पर चला गया और अपना बन्द घर तुम पर छोड़ दिया तो उस के घर में जो खाने पीने का सामान है उस से तुम्हारे खा लेने में कोई दोष, कोई हर्ज नहीं है। तथा अपने दोस्तों के घरों में भी जा सकते हो और नि:संकोच खा सकते हो आपसी सम्बन्ध को बेहतर और सुन्दर बनाने में एक दूसरे के यहाँ खाना पीना सहायक सिद्ध होता है। इस लिए घर से सम्बन्धित जो आदेश दिए गए हैं उन की पाबन्दि करते हुए इन घरों में जाने और खाने पीने में कोई आपत्ति, कोई दोष अथवा कोई हर्ज नहीं है।

रही यह बात कि न ख़ुद तुम पर कोई हर्ज है कि अपने घरों से खाना खाओ तो यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि मूलत: तुम्हारे अपने घर ही हैं जहाँ तुम किसी रोक टोक के बग़ैर खाना खा सकते हो। किन्तु यदि किसी कारण वश तुम्हारे खाने का प्रबन्ध तुम्हारे निकट सम्बन्धियों के यहाँ है या तुम्हारे किसी दोस्त के घर पर है तो इस में भी कोई हर्ज नहीं है।

आयत में बेटों के घर से खाने का वर्णन नहीं हुआ क्यों कि जहाँ तक खाने की बात है माँ बाप के लिए अपने बेटे का घर अपने ही घर के हुक्म में है ।

102. खाना अलग अलग खाऐं या मिल कर खाऐं यह हालात और ज़रूरत को देखते हुए तय करने की बात है। शरअी दृष्टिकोण से इस सिलसिले में कोई पाबन्दी नहीं है और सुविधा की दृष्टि से दोनों तरीक़ों को जायज़ बताया गया है।

103. अर्थात् यह न भूलो कि तुम्हारा अपना घर हो या तुम्हारे सम्बन्धियों आदि का, घर के अन्दर प्रवेश करते समय तुम्हें सलाम करना चाहिए। आदमी के अपने बीवी बच्चे हों या घर के अन्य सदस्य, अपनी मिल्लत के लोग होने की हैसियत से इस बात का हक़ रख़ते हैं कि उन को आदमी सलामती की दुआ की भेंट अर्पित करे।

104. अर्थात् यह दुआ का कलिमा है जिस की शिक्षा अल्लाह ने तुम्हें दी है और जो अत्यंत मंगलमय एवं कल्याणकारी प्रवचन है।

105. अर्थात् इन आदेशों पर जो बहुत ही विस्तार के साथ प्रस्तुत किये गए हैं अमल दरामद के लिए आवश्यक है कि सूझ बूझ से काम लो । आदेशों का पालन खाना पुरी की हद तक पूरा करने से वांछित लक्ष्य पूरे नहीं होते। और न फ़िक़्ही उलझावों में लगने से शरीअत के तक़ाज़े पूरे होते हैं। अमल की सही सूरत यह है कि जो आदेश दिया गया है उस के सार को आदमी अच्छी तरह समझ ले और उस पर अमलदरामद के लिए होशमन्दी का परिचय दे। अगर समस्याऐं पैदा हो रही हों तो उन्हें अपनी कूटनीति से हल करने की कोशिश करे। अल्लाह तआला ने बुद्धि इसलिए नहीं प्रदान की है कि उसे निलंबित कर के रखा जाए। बल्कि इस लिए प्रदान की है कि उसे सही तौर से इस्तेमाल किए जाए। और शरीअत के आदेशों को लागू करने में बुद्धि का सहयोग लिया जाए।

106. यहाँ ईमान से तात्पर्य सच्चा ईमान है जो पूरे आत्म बोध और विवेक के साथ होता है। मुनाफ़िक़ों का ईमान नहीं जो न विवेक के साथ होता है और न उस ईमान में वे पूर्ण रूप से निष्ठ होते हैं बल्कि मात्र दिखावे की आस्था एवं श्रद्धा की अभिव्यक्ति है जो वे करते रहते हैं।

107. समष्टिगत अथवा सामूहिक काम से तात्पर्य परामर्श समिति भी हो सकती है और वह बैठक भी जो जिहाद आदि के बारे में निर्देश देने के लिए बुलाई गई हो। ऐसी बैठकें अपने आप में स्वयं बड़ी महत्वपूर्ण होती हैं और उन में उपस्थिति भी ज़रूरी है। किन्तु जब ऐसी बैठक अल्लाह के रसूल की उपस्थिति में आयोजित हो रही हो तो उस का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। और उस में अकारण अनुपस्थिति या रसूल की अनुमति के बग़ैर इस बैठक को छोड़ कर चला जाना एक ऐसी संगीन बात है जो ईमान से मेल नहीं खाती।

108. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अधिकार दिया गया कि जो लोग अपनी किसी आवश्यकता हेतु अनुमति की याचना करें उन में जिन को आप उचित समझें

अनुमति दे दें। साथ ही उन के पक्ष में क्षमा की याचना करने का भी निर्देश दिया गया है। अगर उन्होंने उचित एवं आवश्यक कारण के बिना अनुमति की याचना की थी तो अल्लाह उन की ग़लती को माफ़ कर दे।

109. रसूल जब तुम्हें किसी काम के लिऐ बुलाऐं तो तुम पर अनिवार्य हो जाता है कि सारे काम छोड़ कर उस की सेवा में हाज़िर हो जाओ। इस बुलावे को उस स्तर पर नहीं रखा जा सकता जिस स्तर पर तुम आपस में एक दूसरे के बुलावे को रखते हो। रसूल का बुलावा, उस की पुकार और उस का निमंत्रण एक ख़ास हैसियत रखती है क्यों कि रसूल का जो स्थान है वह तुम में से किसी का भी नहीं है।

स्पष्ट हुआ कि इन दो आयतों में जो हिदायतें दी गई हैं वह रसूल के साथ ख़ास हैं। इन को साधारण शासकों, अध्यक्षों आदि पर लागू करना सही नहीं। इन के अनुपालन की सामान्य सीमाऐं, हैं जब कि रसूल के अनुपालन और उस के आदाब का मामला इस से बहुत ही अलग है।

110. इशारा है मुनाफ़िक़ों की तरफ़ जो रसूल की मजलिस से अपनी अरूचि के कारण किसी की आड़ ले कर खिसक जाते ताकि उन के जाने का किसी को पता न चले।

111. यह कड़ी चेतावनी है उन लोगों के लिए जो रसूल के आदेश को मानने के बजाय उस से मुँह फेरने लगते तथा उल्लंघन पर आमादा होने लगते हैं। मगर इस का परिणाम ऐसे लोगों के हक़ में बहुत ही भयंकर हो सकता है, या तो वे किसी फ़ित्ने का शिकार हो कर रह जाऐं या दुखदायिनी यातना की चपेट में आ जाऐं।

आज मुसलमान तरह तरह के फ़ित्ने में घिरे हुए हैं। और नये नये फ़ित्नों की बढ़ोतरी ही होती जा रही है। यह परिस्थिति सच पूछिए तो परिणाम है इसी हिदायत को नज़रंदाज़ कर देने का। अर्थात् रसूल के अनुपालन से मुँह फेरने और उस के आदेशों का उल्लंघन करने का । काश वे इन आयतों की रौशनी में अपना विश्लेषण तथा अपनी समीक्षा करते।

२५.सूरह अल-फ़ुर्क़ान

नाम : सूरह की शुरूआत में फ़ुर्क़ान (सत्य और असत्य) में अन्तर करने वाली चीज़) के अवतरण से आगाह किया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अलफ़ुर्क़ान है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के आख़िरी दौर में नाज़िल हुई होगी । अत: पहली ही आयत में यह एलान किया गया है कि पैग़म्बर पर क़ुर्आन इस लिए नाज़िल किया गया है ताकि वह विश्व की समस्त जातियों को सावधान कर दें। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति के विश्वव्यापी होने का एलान है और प्रबल संभावना है कि यह एलान मक्का के आख़िरी दौर में ही किया गया होगा।

केन्द्रीय विषय : क़ुर्आन और पैग़म्बर के बारे में उठाए गए संदेहों एवं आपत्तियों को दूर करना और उन की सत्यता को इस प्रकार उजागर करना है कि उस का विश्वास दिलों में बैठ जाए।

कलाम की तरतीब : आयत १ और २में फ़ुर्क़ान नाज़िल करने वाली हस्ती की पहचान (मारिफ़त) कराई गई है।

आयत ३से ३४ में बहुदेववाद का खण्डन करते हुए वह्य और रिसालत पर उठाये जाने वाले संदेहों एवं प्रशनों का उत्तर दिया गया है और यह उत्तर डराने के अन्दाज़ में है ताकि एतिराज़ करने वाले होश में आऐं।

आयत ३५ से ४४ में उन क़ौमों अथवा जातियों के अन्जाम की इबरतनाक मिसालें दी गई हैं जिन को ख़बरदार करने के लिए नबियों को भेजा गया था किन्तु उन्हों ने उन को झुठलाया ।

आयत ४५ से ६२ में उन निशानियों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है जिन पर सोच विचार करने से अल्लाह के एक होने का विश्वास पैदा हो जाता है। साथ ही उन संदेहों की भी समाप्ति हो जाती है जो रसूल के सम्बन्ध में प्रस्तुत की जा रही थी ।

आयत ६३ से ७६ में उन लोगों के गुण बयान किए गए हैं जिन्हों ने अपने को दयावान ख़ुदा की बन्दगी में समर्पित कर दिया है। इस से यह बात खुल कर सामने आ जाती है कि क़ुर्आन की शिक्षा के अन्तर्गत मनुष्य के अन्दर कैसे सद्‌गुण परवरिश पाने लगते हैं और किस पाये के लोग तैयार हो जाते हैं ।

आयत ७७ ख़ात्मे की आयत है जिस में उन लोगों से आख़िरी बात कही गई है जो क़ुर्आन और पैग़म्बर के ख़बरदार करने के बावजूद इस का कोई असर क़ुबूल नहीं कर रहे थे और उन को झुठलाने में लगे हुए थे ।

२५. सूरह अल-फ़ुर्क़ान

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ

आयतें : 77

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. बड़ा ही बरकत वाला है [1] वह जिस ने अपने बन्दे [2]पर फ़ुर्क़ान उतारा [3] ताकि वह संसार वालों के लिए ख़बरदार करने वाला हो।[4]

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ ١

2. वह हस्ती जिस के क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है।[5] जिस ने अपने लिए औलाद नहीं बनाई और न उस की बादशाही में कोई उस का साझीदार है।[6] उस ने हर चीज़ पैदा की फिर उस की मंसूबा बन्दी की।[7]

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ
لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ٢

3. लोगों ने उस को छोड़ कर दूसरे पुज्य बना लिए हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते, बल्कि ख़ुद पैदा किये गए हैं। जो अपने लिए न किसी लाभ का अधिकार रखते हैं और न हानि का। जिन्हें न मौत पर क़ाबू है, न ज़िन्दगी पर और न मुर्दों को उठा खड़ा करने पर।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ
وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا
وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ٣

4. काफ़िर कहते है, यह झूठ है जो इस व्यक्ति ने गढ़ा है और इस काम में कुछ दूसरे लोगों ने इस की मदद की है। बड़ी ही नाइन्साफ़ी की बात है और झूठ है जिस के वे अपराधी हुए हैं।[8]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨ افْتَرٰىهُ
وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛ فَقَدْ جَاۤءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۛ ٤

5. कहते हैं ये गुज़रे हुए लोगों के क़िस्से हैं जो इस व्यक्ति ने लिखवाए हैं और वह उस के सामने सुबह और शाम पढ़े जाते हैं।[9]

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ
بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ٥

6. कहो इसे उतारा है उस ने जो आसमानों और ज़मीन के भेद जानता है [10]। निस्संदेह वह बड़ा क्षमा करने वाला है, रहम फ़रमाने वाला है ।[11]

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ
كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ٦

7. कहते हैं यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है ! इस की तरफ़ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया कि उस के साथ रह कर ख़बरदार करता ?

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي
الْاَسْوَاقِ ۗ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ
نَذِيْرًا ۙ ٧

1. अल्लाह के बरकत वाला होने का अर्थ यह है कि वह भलाई और कल्याण का स्रोत है और उस से जो लाभ और बरकतें लोगों को पहुँच रही हैं वे अनन्त हैं। इस किताब का अवतरण उस की ओर से हुआ है इस लिए यह कल्याण ही कल्याण और बरकतों से मालामाल कर देने वाली है।

2. अर्थात् अपने ख़ास बन्दे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ।

3. फ़ुर्क़ान का शाब्दिक अर्थ है अलग और अन्तर करने वाली चीज़ । और क़ुर्आन के फ़ुर्क़ान होने का अर्थ यह है कि यह किताब सत्य को असत्य से बिलकुल अलग करती है और गुमराहियों के मुक़ाबले में हिदायत अर्थात् सीधी राह को उजागर करती है। यह वह कसौटी है जिस पर परख कर खरे और खोटे में तमीज़ की जा सकती है और जीवन के समस्त मामलों में यह किताब फैसले का मेयार है।

दुनिया में धर्मों की बाहुल्यता को देख कर उन के विपरीत दावों से आदमी बड़ी उलझन में पड़ जाता है। उस की इस उलझन को दूर करने ही के लिए फ़ुर्क़ान का अवतरण हुआ है। इस कसौटी (Criterion) पर हर मज़हब के दावे को परखा जा सकता है और यह मालूम किया जा सकता है कि यह शुद्ध है भी या नहीं । लोग उस कसौटी से तो परिचित हैं जो सोने को परखने के लिए इस्तेमाल की जाती है। किन्तु अफ़सोस कि अधिकतर लोग ख़ुदा की इस कसौटी से अनभिज्ञ हैं जिसे फ़ुर्क़ान कहा गया है। इस लिए वे धर्मों के बारे में ग़लत धारणा बनाए हुए हैं और नाना प्रकार की उलझनों के शिकार हैं।

4. यह आयत पुष्टि करती है कि आप केवल अरबवासियों को ख़बरदार करने के लिए नहीं बल्कि पूरी दुनिया वालों को ख़बरदार करने के लिए भेजे गए थे और इस मक़सद के लिए आप पर क़ुर्आन नाज़िल किया गया । दूसरे शब्दों में आप की रिसालत संपूर्ण विश्व की जातियों के लिए है और उन को ख़बरदार करने का काम इस किताब के द्वारा क़ियामत तक अन्जाम पाता रहेगा।

इस इर्शाद से यह बात भी स्पष्ट हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मिशन ख़ुदा से ग़ाफ़िल इन्सानियत को आख़िरत के बुरे अन्जाम से ख़बरदार करना था और इस से यह उसूली रहनुमाई मिलती है कि इस्लाम की ओर बुलाने वालों को इसी रंग में दअवत पेश करना चाहिए। आज कल के ज़माने में इस्लाम की दअवत के लिए कुछ नए तरीक़े प्रचलित हो गए हैं। अत: दअवत को कुछ इस तरीक़े से प्रस्तुत किया जाता है कि सामाजिक जीवन की समस्याओं का समाधान का पक्ष तो पूरी तरह उभर कर सामने आ जाता है किन्तु क़ियामत के दिन की भयावहता और वहाँ के अन्जाम का पक्ष उस तरह सामने नहीं आता कि लोग सचेत हो जाऐं और उन को आख़िरत की चिन्ता लग जाए।

5. अर्थात् इस किताब का नाज़िल करने वाला कायनात का शासक है इस लिए उस के महत्व और महानता को ख़ूब समझ लो ।

6. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १४९

7. अर्थात् अल्लाह तआला ने चीज़ों को पैदा कर के यूँ ही छोड़ नहीं दिया है कि जो कुछ उन से प्रकट हो जाता है आकस्मिक परिणाम है बल्कि उस ने एक एक चीज़ के बारे में तय कर रखा है, कि उसे क्या काम अन्जाम देना है, उस के काम करने की अवधि और उद्देश्य क्या होगा। मिसाल के तौर पर सूरज को किस तापमान पर रहना है, अपनी किरनें कहाँ कहाँ डालना है, कैसा तापमान पैदा करना है, किस गति से चलना है और यह कि कब उस की बिसात लपेट कर रख दी जाएगी, इस प्रकार एक एक चीज़ की मन्सूबा बन्दी और पलानिंग की गई है। और पूरी कायनात अपने सृष्टा की बनाई गई योजना को कार्यान्वित करने में जुटी हुई है। क़ुर्आन की परिभाषा की इस मन्सूबा बन्दी का नाम "तक़दीर" है जिस का शाब्दिक अर्थ अन्दाज़ा मुक़र्रर करने के हैं।

8. अर्थात् इन्कार करने वालों का कहना है कि क़ुर्आन को अल्लाह से जोड़ना अर्थात् यह कहना कि क़ुर्आन अल्लाह ने उतारा है बिलकुल झूठ है। यह अल्लाह का प्रवचन नहीं है बल्कि इस व्यक्ति की अपनी बातें हैं जो नुबुव्वत का दावेदार है और इस को गढ़ने में कुछ लोगों ने इस की मदद की है। अहले-किताब में से जो लोग ईमान लाए थे उन में से कुछ की तरफ़ उन का इशारा रहा होगा। मगर चूँकि यह इल्ज़ाम बिलकुल बेबुनियाद था और उस का निराधार होना भी लोगों पर स्पष्ट ही था इस लिए इस के खण्डन के लिए यह कहने पर संतोष किया गया कि यह बड़ी ही नाइन्साफ़ी की बात है और झूठ है जिस के ये लोग अपराधी हुए हैं।

बाद में इतिहास ने भी सिद्ध कर दिखाया कि ये आरोप झूठा था और क़ुर्आन अपने दावे में बिलकुल सच्चा है क्यों कि अगर क़ुर्आन का रचयिता अल्लाह के सिवा कोई और होता तो यह बात छिपी नहीं रह सकती थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो इस के दावेदार हैं नहीं। यदि अन्य व्यक्तियों ने इस की तैयारी में हाथ बटाया होता तो वे इसे अपना कारनामा ज़रूर बतलाते परन्तु कोई व्यक्ति भी यह दावा नहीं कर सका कि क़ुर्आन मेरी रचना है या इस

को संकलित करने में मैं भी शरीक रहा हूँ।

9. यह दुसरा आरोप था जो कुछ दूसरे लोग लगा रहे थे। क़ुर्आन में ग़ुज़री हुई जातियों के वृत्तांत बयान हुए हैं, उन को प्राचीन क़िस्से और अफ़साने बता कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाया करते थे कि आप ने ये क़िस्से कहानियाँ अहले-किताब में से किसी से लिखवा लिए हैं और अब आप के साथी आप को सुबह और शाम वही क़िस्से पढ़ कर सुनाते हैं। क़ुर्आन की सुबह शाम जो तिलावत की जाती थी उस के बारे में वे यह बात बताते थे।

10. अर्थात् क़ुर्आन के मज़मून स्वयं साक्ष्य हैं कि यह उस हस्ती का प्रवचन है जिस पर कायनात में निहित एवं प्रचलित समस्त भेद खुले हुए हैं क्यों कि यह किताब कायनात में निहित भेदों पर से परदा उठाती है।

11. यह प्रयश्चित के लिए प्रेरणा है कि उस की तरफ़ पलटो और ईमान ले आओ तो जो गुनाह तुम से हो चुके हैं उन को वह क्षमा कर देगा और तुम पर दया करेगा।

इन से पूछो यह बेहतर है या हमेशा हमेशा की जन्नत जिस का वादा परहेज़गारों से किया गया है। वह उन के लिए जज़ा (अच्छा बदला) और ठिकाना होगी। उस में उन के लिए वह सब कुछ होगा जो वह चाहेंगे और वहाँ वे हमेशा रहेंगे। यह वादा तुम्हारे रब के ज़िम्मे ऐसा है जिस को पूरा करने की माँग उस से की जा सकती है ।*(अल-क़ुर्आन)*

8. या इस के लिए कोई ख़ज़ाना उतारा जाता। या इस के लिए कोई बाग़ होता जिस से वह खाया करता। और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे हो जिस पर जादू का असर हुआ है।[12]

أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ
الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٨﴾

9. देखो ये तुम पर कैसे कैसे वाक्य कस रहे हैं। ये भटक गए हैं। कोई राह नहीं पा सकते ।[13]

انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
سَبِيلًا ﴿٩﴾

10. बड़ा बरकत वाला है वह जो अगर चाहे तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे लिए इस से कहीं बेहतर चीज़ें बना दे। ऐसे बाग़ जिन के नीचे नहरें जारी हों और तुम्हारे लिए महल बना दे।[14]

تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل
لَّكَ قُصُورًا ﴿١٠﴾

11. वास्तविकता यह है कि इन लोगों ने क़ियामत की घड़ी को झुठलाया है [15] और जो इस घड़ी को झुठलाए उस के लिए हम ने भड़कती आग तैयार कर रखी है [16]।

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾

12. वह जब दूर से उन को देख लेगी तो ये उस के प्रकोप के जोश और उस के दहाड़ने की आवाज़ों को सुनेंगे।[17]

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾

13. और जब वे जकड़े हुए उस की किसी तंग जगह में डाल दिए जाऐंगे तो अपनी मौत को पुकारेंगे।

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا
هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾

14. आज एक मौत को नहीं बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो।

لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾

15. इन से पूछो यह बेहतर है या हमेशा हमेशा की जन्नत जिस का वादा परहेज़गारों से किया गया है।[18] वह उन के लिए जज़ा (अच्छा बदला) और ठिकाना होगी।[19]

قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ
كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾

16. उस में उन के लिए वह सब कुछ होगा जो वह चाहेंगे और वहाँ वे हमेशा रहेंगे। यह वादा तुम्हारे रब के ज़िम्मे ऐसा है जिस को पूरा करने की माँग उस से की जा सकती है ।[20]

لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ
وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿١٦﴾

12. उन का ख़्याल था कि जादू के असर से आदमी की बुद्धि गड़बड़ा जाती है। जब वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहते थे कि इन पर जादू चल गया है तो इस का मतलब यह था कि आप वह्य के उतरने,और आख़िरत आदि की जो बातें कर रहे हैं वह वास्तव में बुद्धि के बिगड़ जाने का परिणाम है और यह बिगाड़ किसी के जादू कर देने के फलस्वरूप पैदा हुआ है। जहाँ तक इस आरोप का सम्बन्ध है वह तो सरासर झूठा था। रहा यह प्रश्न कि क्या जादू के प्रभाव से किसी की बुद्धि में गड़बड़ी आ जाती है तो यह ख़याल भी ग़लत है। क़ुर्आन से इस विचार का कदापि अनुमोदन नहीं होता। जादू का प्रभाव क्षणिक रूप से नज़र के धोखे की हद तक रहता है जैसा कि आयत

سَحَرُوٓا اَعْيُنَ النَّاسِ

अर्थ:- ''उन्हों ने जादू से लोगों की नज़रें मार दी'' (सूरह आराफ़ ११६) से स्पष्ट है। परन्तु बहुत से लोग जादू के बारे में ग़लत फ़हमी में मुब्तिला हैं जिस के कारण वे अंधविश्वास का शिकार हो जाते हैं।

13. जब आदमी रसूल के बारे में सत्यप्रियता का परिचय नहीं देता और उस के रसूल होने के दावे का ग़लत मतलब लगाने लगता है तो वह ग़लत राह पर पड़ जाता है और फिर उस से निकलने नहीं पाता ।

14. अर्थात् अल्लाह के ख़ज़ाने में किसी चीज़ की कमी नहीं । वह यदि चाहे तो अपने पैग़म्बर के लिए एक नहीं बहुत से बाग़ और एक नहीं कई महल बना दे। परन्तु चूँकि यह दुनिया ईनाम पाने की जगह नहीं है बल्कि परीक्षा स्थल है इस लिए वह रसूल को भी आज़माइश भरे जीवन से गुज़ारता है।

15. अर्थात् ये उन के नाम मात्र के आरोप और एतिराज़ हैं। असल बात यह है कि ये क़ियामत को मानना नहीं चाहते क्यों कि उस को मानने की सूरत में दायित्वपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है और रिसालत को स्वीकार करने से क़ियामत को स्वीकार करना अनिवार्य हो जाता है। इस लिए वे अपनी रक्षा इस में समझते हैं कि रिसालत को स्वीकार न किया जाए।

16. स्पष्ट हुआ कि क़ियामत का इन्कार करने वाला, काफ़िर और जहन्नम का भागीदार है चाहे वह ख़ुदा को मानने का दावेदार ही क्यों न हो । क्यों कि क़ियामत का इन्कार ख़ुदा के न्यायी होने का इन्कार है। इस के बाद उस को मानने का दावा बेमतलब हो कर रह जाता है।

17. दोज़ख के दूर से काफ़िरों को देखने की स्थिति क्या होगी वह क़ियामत के दिन ही मालूम हो सकेगी अलबत्ता जब वह देख लेगी तो उस के क्रोध का यह हाल होगा कि काफ़िरों को दूर ही से उस की दहाड़ें सुनाई देंगी।

18. मालूम हुआ कि जन्नत का वादा अल्लाह का डर रखने वालों परहेज़गारों से किया गया है अर्थात् उन लोगों से जो अल्लाह से डरें और उस की अवज्ञा और पापों से बचते हुए जीवन गुज़ारें। नाम मात्र के मुसलमानों से जन्नत का वादा नहीं किया गया है। इस लिए कोई व्यक्ति इस भुलावे में न रहे कि चूँकि हम फ़लाँ पीर के भक्त और फ़लाँ बुज़ुर्ग के मुरीद हैं इस लिए जन्नत हमारे लिए सुनिश्चित है, और न कोई व्यक्ति इस ख़ाम ख़्याली में लिप्त रहे कि चूँकि हम बुज़ुर्गो के भक्त और उन के मुरीद हैं और उन के नाम की नियाज़ करते हैं इस लिए हम जन्नत के हक़दार हैं।

19. अर्थात् जन्नत उन की आख़िरी मन्ज़िल होगी।

20. अर्थात् यह ऐसा वादा है जो अल्लाह ने अपने ज़िम्मे ले रखा है और बन्दों को यह हक़ दे दिया है कि वे उस से प्राप्त करें ।

17. और वह दिन जब कि वह लोगों को भी इकट्ठा करेगा और उन के उन पूज्यों को भी जिन की ये अल्लाह को छोड़ कर पूजा करते हैं, फिर उन से पूछेगा कि तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था या ये ख़ुद सीधे रास्ते से भटक गए थे ?[21]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ
ءَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾

18. वे निवेदन करेंगे, पाक है तू ! हमारी यह मजाल न थी कि हम तेरे सिवा और कारसाज़ बनाऐं।[22] मगर तूने इन को और उन के पूर्वजों को सम्पन्नता प्रदान की यहाँ तक कि ये तेरी याद भुला बैठे और विनष्ट हो कर रह गए।[23]

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن
دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ
نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾

19. लो जो बात तुम कहते थे उस में इन्हों ने तुम को झूठा ठहराया [24]। अब न तुम अज़ाब को टाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो। और जो व्यक्ति भी तुम में से ज़ुल्म करेगा [25] हम उसे बड़ी यातना का मज़ा चखाऐंगे।

فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا
وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

20. (ऐ पैग़म्बर !) तुम से पहले हम ने जो रसूल भी भेजे वे सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते भी थे ।[26] हम ने तुम लोगों को एक दूसरे की परीक्षा का साधन बनाया है। क्या तुम सब्र करते हो ?[27] और तुम्हारा रब (सब कुछ) देख रहा है।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ
الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ
لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

21. और जो लोग हम से मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते, वे कहते हैं, क्यों न हम पर फ़रिश्ते उतारे गए, या ऐसा क्यों नहीं हुआ कि हम अपने रब को देख लेते? उन्हों ने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा और बड़ी उद्दंडता दिखाई।[28]

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا
الْمَلَائِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ
وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

22. जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे उस दिन मुजरिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी और पुकार उठेंगे पनाह पनाह।[29]

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَ
يَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٢٢﴾

23. और जो अमल भी उन्हों ने किया होगा उस की तरफ़ हम बढ़ेंगे और उस को धूल बनाकर उड़ा देंगे।[30]

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنثُورًا ﴿٢٣﴾

21. यहाँ पूज्यों से तात्पर्य मूर्ति नहीं क्यों कि प्रश्न मूर्ति से नहीं किया जाता। बल्कि यहाँ पूज्यों से तात्पर्य नबी और बुज़ुर्ग हैं जिन के साथ उन के भक्त लोग वह व्यवहार करते हैं जो ख़ुदा के साथ किया जाना चाहिए। इस की मिसाल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं जिन को ईसाईयों ने ख़ुदा बना लिया है। इस सिलसिले में हज़रत ईसा जो इन बातों का खण्डन करने के लिए अपना बयान ख़ुदा की अदालत में देंगे वह सूरह माइदा आयत ११६ में बयान हुआ है। मक्का के बहुदेववादियों ने भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बुत ख़ाना-ए-काबा में रखा था।

22. अर्थात् हम ने तो अपना कारसाज़ अल्लाह को ही बनाया था फिर यह कैसे हो सकता था कि हम लोगों से यह कहते कि वे अल्लाह को छोड़ कर हमें कारसाज़ बनाएं और हमें आवश्यकताओं को पूरी करने वाला समझ कर हमारी पूजा परस्तिश करें।

यह आयत बहुदेववादियों ही की नहीं उन मुसलमानों की भी आँख खोल देने के लिए काफ़ी है जो बुज़ुर्गों से लगाव के चलते शिर्क करते हैं और समझते हैं कि उन की मन्नतें मानने से और इन की क़ब्रों पर चढ़ावे चढ़ाने से वे ख़ुश हो जाते हैं। हालाँकि वे बुज़ुर्ग क़ियामत के दिन अपने चाहने वाले भक्तों की मुश्रिकाना हरकतों से विमुखता एवं बेज़ारी प्रकट करेंगे और यह उन के लिए बुज़ुर्गों की तरफ़ से ज़बरदस्त तमाचा होगा।

23. अर्थात् इन को दुनिया में जो धन साधन मिला उस में ऐसे मस्त हो गए कि वे ख़ुदा को भुला बैठे और ख़ुदा को भुलाने का परिणाम यह हुआ कि वे शिर्क में लिप्त हो गए और विनाश के गढ़े में जा गिरे।

मालूम हुआ कि शिर्क में आदमी तब लिप्त होता है जब कि वह ख़ुदा को भुला देता है। ख़ुदा को सच्चे अर्थों में याद रखने वाला शिर्क में लिप्त नहीं हो सकता।

24. अर्थात् तुम्हारा दावा इन व्यक्तियों के बारे में था और जो अतिश्योक्तिपूर्ण धारणा तुम ने बना ली थी वह ग़लत सिद्ध हुई और ज़ाहिर हो गया कि वे कारसाज़ी का कोई अधिकार नहीं रखते थे और न उन्हों ने इस का कोई दावा किया था बल्कि वे स्वयं अपना कारसाज़ अल्लाह को ही मानते थे।

25. यहाँ ज़ुल्म से तात्पर्य शिर्क है।

26. यह उन के उस एतिराज़ अथवा आरोप का जवाब है जो आयत ७ में नक़ल हुआ है।

27. अर्थात् रसूल का खाना पीना और बाज़ारों में चलना फिरना दोनों समूहों के लिए परीक्षा का कारण बन गया। काफ़िरों को तो यह मौक़ा मिल गया है कि वे रसूल पर वाक्य कसें और ईमान वालों के लिए यह आज़माइश कि वे इन अप्रिय एवं दुखदायी बातों को सुनकर सब्र करते हैं या नहीं।

इस से यह रहनुमाई मिलती है कि काफ़िरों की तरफ़ से रसूल के व्यक्तित्व पर जो आरोप और एतिराज़ मढ़े जा रहे हैं उन पर ईमान वालों को सब्र करना चाहिए। परन्तु इस ज़माने में मुसलमानों का हाल बड़ा अज़ीब है। किसी भी दृष्टिकोण से रसूल पर कोई आलोचना होती है तो वे आपे से बाहर हो जाते हैं और उस को विरोध प्रदर्शन का मुद्दा बना लेते हैं। और काफ़िर यही चाहते हैं कि मुसलमान उत्तेजित हो कर टकराव के लिए आमादा हो जाऐं। यदि वे उत्तेजित हुए बिना सकारात्मक रूप से रसूल के उच्च स्थान को स्पष्ट करें तो कितने ही लोग रसूल के महत्व और उस की प्रतिष्ठा को पहचानने लगें।

28. रिसालत का इन्कार करने वाले बजाय इस के कि ख़ुदा की उस हिकमत को समझने की कोशिश करते जिस के चलते इन्सानों की हिदायत के लिए रसूल को भेजा जाता है उल्टे सीधे एतिराज करते। उन का कहना था कि अगर रसूल पर फ़रिश्ते उतारे जाते हैं तो हम पर क्यों नहीं उतारे जाते और इसी बहाव में वे यहाँ तक कह गुज़रे कि ऐसे क्यों नहीं हुआ कि ग़ैब के परदे उठा दिए जाते और हम अपने रब को खुली आँखों से देख लेते। अर्थात् वे चाहते थे कि वास्तविकता को अर्न्तदृष्टि से नहीं बल्कि शरीर की दृष्टि से देखें हालांकि मनुष्य की सारी परीक्षा इस बात में निहित है कि वह वास्तविकता का बोध अर्न्तदृष्टि से करता है या नहीं । परन्तु जो लोग इस घमंड में लिप्त होते हैं कि उन का स्थान बन्दा होने का नहीं बल्कि आज़ाद और ख़ुदमुख़्तार इन्सान होने का है वे ख़ुदा और उस के रसूल के बारे में ऊँट पटांग बातें करने लगते हैं और अपनी उद्दंडता में बढ़ते ही चले जाते हैं।

29. अर्थात् आज ये फ़रिशतों को देखने की मांग कर रहे हैं मगर वह दिन दूर नहीं जब फ़रिश्ते उन के सामने आ प्रकट होंगे और जब वे उन को देख लेंगे तो समझेंगे कि हमारी शामत आ गई है इस लिए पनाह पनाह पुकार उठेंगे।

30. अर्थात् जब ये लोग आख़िरत ही का इन्कार करते रहे हैं तो इन का कोई कृत्य चाहे वह धार्मिक प्रवृत्ति का हो या सांसारिक कारनामें की हैसियत रखता हो, क़ियामत के दिन उन का कोई आदर न होगा। उन के सारे कृत्य राख का ढेर सिद्ध होंगे और अल्लाह तआला उन को धूल की भाँति उड़ा देगा।

आज आख़िरत से विमुख लोग अपने सांसारिक एवं राष्ट्रीय कारनामों पर बड़ा गर्व करते हैं और इन कारनामों ही की बदौलत वे अपने राष्ट्र व अपनी जाति के नायक बन जाते हैं किन्तु क़ियामत के दिन उन्हें पता चलेगा कि उन के ये कारनामें उतने ही बेवज़न हैं जैसे कि धूल।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह इब्राहीम नोट २६ और सूरह कहफ़ नोट १३०

उस दिन जन्नत वाले अच्छी जगह और बेहतरीन आरामगाह में होंगे। आसमान उस दिन एक बादल के साथ फट जाएगा और फ़रिश्तों के परे के परे उतार दिए जाएंगे। उस दिन हक़ीक़ी बादशाही रहमान ही की होगी और वह दिन काफ़िरों के लिए बड़ा कठिन होगा। ज़ालिम उस रोज़ अपने हाथ काट खाएगा और कहेगा, काश मैं ने रसूल के साथ राह पकड़ी होती। अफ़सोस मेरे दुर्भाग्य पर। काश मैं ने फ़लाँ व्यक्ति को दोस्त न बनाया होता। *(अल-क़ुर्आन)*

24. उस दिन जन्नत वाले अच्छी जगह और बेहतरीन आरामगाह में होंगे।

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ﴿٢٤﴾

25. आसमान उस दिन एक बादल [31] के साथ फट जाएगा और फ़रिश्तों के परे के परे उतार दिए जाऐंगे।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنزِيلًا ﴿٢٥﴾

26. उस दिन हक़ीक़ी बादशाही [32] रहमान ही की होगी और वह दिन काफ़िरों के लिए बड़ा कठिन होगा।

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى
الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ﴿٢٦﴾

27. ज़ालिम उस रोज़ अपने हाथ काट खाएगा [33] और कहेगा, काश मैं ने रसूल के साथ राह पकड़ी होती।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ
مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾

28. अफ़सोस मेरे दुर्भाग्य पर। काश मैं ने फ़लाँ व्यक्ति को दोस्त न बनाया होता ! [34]

يَا وَيْلَتَىٰ لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ﴿٢٨﴾

29. उस ने मुझे गुमराह कर के नसीहत [35] से दूर रखा जब कि वह मेरे पास आ चुकी थी।और शैतान तो है हि इन्सान को बेसहारा छोड़ने वाला।[36]

لَّقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۗ وَكَانَ الشَّيْطَانُ
لِلْإِنسَانِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾

30. और रसूल कहेगा ऐ मेरे रब ! मेरी क़ौम ने इस क़ुर्आन को छोड़ दिया था।[37]

وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ
مَهْجُورًا ﴿٣٠﴾

31. और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक नबी के लिए मुजरिमों में से दुश्मन खड़े किए ।[38] और तुम्हारा रब (तुम्हारी) रहनुमाई और मदद के लिए काफ़ी है।[39]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِينَ ۗ وَكَفَىٰ
بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ﴿٣١﴾

32. काफ़िर कहते हैं कि इस पर पूरा क़ुर्आन एक ही समय में क्यों न उतारा गया [40]?हम ने (कर्म के साथ उतारा और) ऐसा इस लिए किया ताकि इस के द्वारा (ऐ पैग़म्बर !)तुम्हारे दिल को मज़बूत करें [41]।और हम ने इस कलाम को अच्छे क्रम के साथ पेश किया है।[42]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً
وَاحِدَةً ۚ كَذَٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ ۖ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ﴿٣٢﴾

33. और ये जो एतिराज़ भी तुम्हारे सामने लाते हैं, हम हक़ बात तुम्हारे सामने पेश कर देते हैं, बेहतरीन स्पष्टीकरण के साथ ।[43]

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾

31. शब्द ''ग़माम'' प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है सफ़ेद बादल। क़ियामत के दिन आसमान फटेगा और उस में से बादल प्रकट होगा। हो सकता है यह बादल (ग़माम) वही हो जिस का ज़िक्र सूरह बक़र: में इस प्रकार हुआ है:-

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَ قُضِيَ الْأَمْرُ. (سورہ بقرہ آیت ۲۱۰)

अर्थ :- ''क्या ये लोग इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि अल्लाह फ़रिश्तों को लिए हुए बादलों के साइबानों में उन के सामने आ प्रकट हो, और फ़ैसला ही कर डाला जाए।''

(सूरह बक़रा आयत २१०)

32. अर्थात् क़ियामत के दिन सारी बादशाहतें, सारे आधिपत्य समाप्त हो चुके होंगे और लोग देख लेंगे कि सत्ता, संप्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है जो वास्तविक सम्राट है।

33. हाथ काटना मुहावरा है हसरत और अफ़सोस के लिए और क़ियामत के दिन जो जुनूनी दशा काफ़िरों की होगी उस के चलते वे अपने हाथ यदि चबा डालें तो यह असंभव नहीं।

34. यह एक और आगाही है कि आदमी को सोच समझ कर मित्रों का चुनाव करना चाहिए क्यों कि आदमी अपने मित्रों की बातें आसानी से मान लेता है और उस के सुझाए रास्तों पर चल पड़ता है। अगर दोस्त गुमराह हो तो उस का साथी भी गुमराह हो जाता है। दुनिया में कितने लोग इस लिए काफ़िर फ़ासिक और फ़ाज़िर बने हुए हैं कि वे बुरे मित्रों की संगत में तथा उन के प्रभाव तले हैं। उन को अपनी इस ग़लती का एहसास क़ियामत के दिन होगा। उस समय वे अपनी महरूमी पर पछताऐंगे।

इस के विपरीत यदि आदमी अपनी दोस्ती के लिए अल्लाह के मोमिन और सच्चे बन्दों का चुनाव करता है जो अल्लाह से डरते हुए पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारते हैं तो उस की संगत का लाभ उस व्यक्ति को भी मिलता है। इतर बेचने वाले के पास बैठने वाला इतर की ख़ुशबू से महरूम नहीं रह सकता।

35. तात्पर्य यह नसीहत है जो अल्लाह ने बन्दों की इस्लाह और सुधार के लिए उतारी है।

36. अर्थात् शैतान दुनिया में तो इन्सान की ग़लत रहनुमाई कर के सुनहरे स्वप्न दिखाता रहा किन्तु जब परिणाम सामने आने का समय आया तो साथ छोड़ कर भाग गया। शैतान का ग़द्दार होना क़ियामत के दिन बिलकुल खुल कर सामने आ जाएगा।

37. यह अल्लाह की अदालत में रसूल की फ़रियाद होगी कि मैं ने अपनी क़ौम को इस क़ुर्आन के माध्यम से सही राह दिखाने की कोशिश की थी लेकिन ये लोग क़ुर्आन को छोड़ कर अपनी मनमानी करते रहे।

अरबवासी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रथम संबोधी थे जिन पर हर प्रकार से और हर प्रकार की युक्ति सिद्ध हो चुकी थी। इस लिए ख़ुदा की अदालत में सब से पहले उन्हीं की पकड़ होगी। रही दूसरी जातियाँ तो जिन जिन तक रसूल या उस के अनुयायियों के द्वारा क़ुर्आन का पैग़ाम पहुँचा और उन्हों ने उसे स्वीकार नहीं किया वे भी पकड़ से नहीं बच सकेंगे क्यों कि जैसा कि आयत १ में बयान हुआ है कि रसूल को दुनिया की समस्त जातियों को सचेत करने के लिए भेजा गया है और क़ुर्आन का अवतरण इसी उद्देश्य से हुआ है।

आज मुसलमानों की बड़ी संख्या का हाल यह है कि वह क़ुर्आन को मानने का जो दावा करती है परन्तु बस रस्मी हद तक। ये लोग न तो इस को समझने की कोशिश करते हैं और न अपनी धारणाओं और आचरणों में इस को पथप्रदर्शक बनाते हैं। हर दृष्टि से क़ुर्आन को इन्हों ने छोड़ रखा है और वे इस ख़ाम ख़याली में लिप्त हैं कि आख़िरत की अदालत में उन पर मुक़दमा नहीं चलेगा।

38. इशारा है उन लीडरों की तरफ़ जो मुजरिमों में से उभरते हैं और नबी के दुश्मन बन कर उस की दअवत के विरोध में अपना ज़ोर लगाते हैं। यह सब कुछ अल्लाह के निर्धारित किए हुए गुमराही के नियमानुसार होता है इस लिए इस को इस प्रकार से कहा गया है कि ''हम ने प्रत्येक नबी के लिए मुजरिमों में से दुश्मन खड़े किए।''

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट २१०

39. अर्थात् दुश्मनों की तमाम कार्रवाइयों के बावजूद तुम पर हिदायत की राह खुलती चली जाएगी। इस राह को तय करते हुए हर हर मोड़ पर तुम्हारी रहनुमाई का सामान होगा और कठिन चरणों में अल्लाह तुम्हारी सहायता करेगा।

40. इन्कार करने वालों का एक बड़ा एतिराज़ यह था कि अगर क़ुर्आन वास्तव में अल्लाह की किताब है तो पूरी किताब एक ही साथ क्यों नहीं उतारी गई। थोड़े अन्तराल से थोड़ी थोड़ी क्यों नाज़िल हो रही है।

41. अर्थात् क़ुर्आन को थोड़ा थोड़ा कर के नाज़िल करने का एक बड़ा लाभ तो यह है कि प्रत्येक अवसर पर समय रहते ही मार्गनिर्देश मिल जाने से मन मस्तिष्क को बड़ा सहारा मिलता है।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १४०

42. यहाँ शब्द ''तरतील'' प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ

हैं सुन्दर तरतीब, सुन्दर संकलन और सुन्दर कलाम, (सुन्दर साहित्य) के हैं। देखिए अलक़ामूस जिल्द ३ पृष्ट २९२)

मतलब यह है कि हम ने क़ुर्आन को यद्यपि थोड़ा थोड़ा कर के नाज़िल किया है मगर इस से कलाम का क्रम नहीं टूटा है बल्कि इस की तरतीब में कमाल दर्जे का हुस्न (अत्याधिक सौन्दर्य) रखा गया है अत: जो लोग क़ुर्आन में चिन्तन मनन करते हैं वे इस की सुन्दर तरतीब (Well Arranged) को देख कर इस के चमत्कारिक वाणी पर विश्वास करने लगते हैं।

43. अर्थात् एतिराज़ करने वालों की तरफ़ से जिस समय जिस संदेह एवं शंका की अभिव्यक्ति होती है उस का सही जवाब अति स्पष्ट रूप में क़ुर्आन में आ जाता है। यह क़ुर्आन को थोड़ा थोड़ा कर के मौक़े मौक़े से नाज़िल करने की एक और मसलहत है जिसे अल्लाह तआला ने इस आयत में बयान फ़रमाय है।

जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ़ घसीटे जाऐंगे उन का ठिकाना बहुत बुरा और उन की राह बिलकुल ग़लत है। हम ने मूसा को किताब प्रदान की और उस के भाई हारून को उस का वज़ीर (बनाया)। हम ने कहा तुम दोनों जाओ उस जाति के पास जिस ने हमारी निशानियों को झुठलाया है । आख़िरकार हम ने उस को तबाह कर के रख दिया । *(अल-क़ुर्आन)*

34. जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ़ घसीटे जाऐंगे उन का ठिकाना बहुत बुरा और उन की राह बिलकुल ग़लत है।

الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا
وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٤﴾

35. हम ने मूसा को किताब प्रदान की [44] और उस के भाई हारून को उस का वज़ीर (बनाया)[45]।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ﴿٣٥﴾

36. हम ने कहा तुम दोनों जाओ उस जाति के पास जिस ने हमारी निशानियों को झुठलाया है [46]। आख़िरकार हम ने उस को तबाह कर के रख दिया ।[47]

فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمَّرْنَاهُمْ
تَدْمِيرًا ﴿٣٦﴾

37. और नूह की जाति को हम ने डुबो दिया जब कि उस ने रसूलों को झुठलाया [48] और लोगों के लिए उस को इबरत का निशान बना दिया। और ज़ालिमों के लिए हम ने दुखदायिनी यातना तैयार कर रखी है।

وَقَوْمَ نُوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ
آيَةً ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾

38. और आद,[49] समूद,[50]अस्हाबर्रस [51] और इन के बीच की बहुत सी जातियों को हम ने विनष्ट कर दिया।[52]

وَعَادًا وَثَمُودَ وَأَصْحَابَ الرَّسِّ
وَقُرُونًا بَيْنَ ذَٰلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾

39. हम ने प्रत्येक के सामने उदाहरण प्रस्तुत किए थे [53] और हर एक को तबाह कर के रख दिया।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ ۖ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ﴿٣٩﴾

40. और उस बस्ती पर से तो इन का गुज़र हुआ है जिस पर बदतरीन बारिश बरसाई गई थी [54]। क्या ये उसे देखते नहीं हैं ? मगर ये लोग मरने के बाद उठाए जाने की आशा ही नहीं रखते ।[55]

وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۚ أَفَلَمْ يَكُونُوا
يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿٤٠﴾

41. और जब ये तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाते हैं। क्या यही वह व्यक्ति है जिसे अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है।

وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ
اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾

42. इस ने हमें अपने पूज्यों से विमुख कर ही दिया होता यदि हम इन पर जमे न रहते। बहुत जल्द जब ये अज़ाब (यातना) को देख लेंगे तो इन्हें मालूम हो जाएगा कि कौन है राह से बिलकुल भटका हुआ।[56]

إِن كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

44. तात्पर्य तौरात है जो नुबुव्वत के आरम्भ से ही नाज़िल होनी शरू हो गई थी । इस का कुछ भाग फ़िरऔन के डूबने से पहले नाज़िल हुआ और कुछ भाग उस के बाद। यह समझना सही नहीं कि तौरात पूरी की पूरी एक ही समय में अवतरित हुई थी क्यों कि यह बात न क़ुर्आन में बयान हुई है और न मौजूदा तौरात में ही इस का कहीं वर्णन है। इस लिए सही बात यह है कि आसमानी किताबों का अवतरण मौक़े के लिहाज़ से थोड़ा थोड़ा कर के होता रहा है।

45. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट २९,३०

46. फ़िरऔन की जाति तात्पर्य है और आयतों को झुठलाने से तात्पर्य ख़ुदा के एक होने पर तर्क प्रस्तुत करने वाली वह निशानियाँ हैं जो कायनात में फैली हुई और मनुष्य के स्वाभाव में रची हुई हैं। फ़िरऔन इन आयतों को झुठलाने का पहले ही से अपराधी था तथा उस ने नबियों के चिन्हों और हज़रत यूसुफ़ के चिन्हों को जो उन्हों ने उस मुल्क में छोड़े थे बिलकुल नज़रंदाज़ कर दिया था और यही हाल उस की जाति का भी था। इस लिए हज़रत मूसा द्वारा युक्ति सिद्ध करने से पूर्व भी फ़िरऔन और उस की क़ौम अपराधी थी और उन के युक्ति सिद्ध करने अर्थात् हुज्जत क़ायम करने के बाद तो उस का अपराध और संगीन हो गया और उस की सत्य से शत्रुता खुल कर सामने आ गई ।

मालूम हुआ कि जिस जाति पर किसी नबी द्वारा हुज्जत न भी क़ायम हुई हो लेकिन उस ने ख़ुदा की उन निशानियों को जो कायनात में फैली हुई हैं और मनुष्य के स्वभाव में भी रची हुई है, झुठला कर गुमराही अपना रखी हो, उद्दंड और काफ़िर ही कहलाएगी।

47. फ़िरऔन और उस के लश्कर को तो डुबो दिया गया और मिस्र में उस की जाति भी तबाह कर दी गई।

48. नूह की जाति ने हज़रत नूह को झुठलाया था किन्तु इस बात को तमाम रसूलों को झुठलाना कहा गया। क्यों कि एक रसूल को झुठलाना समस्त रसूलों को झुठलाना है।

49. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ७४ और सूरह फ़ज्र नोट ८ से ११

50. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ८६ और सूरह फ़ज्र नोट १२ से १४

51. अस्हाबुर्रस का अर्थ कुएं वाले हैं । यह एक जाति थी जिस की ओर किसी नबी को नियुक्त किया गया था और जब उस ने झुठलाया तो वह विनष्ट कर दी गई । वह जाति कहाँ आबाद थी और उस की ओर किस नबी को भेजा गया था इस की पुष्टि क़ुर्आन ने नहीं की बल्कि शिक्षा और नसीहत लेने के लिए उस के सर्वनाश का वर्णन किया। किसी सही हदीस में भी इस जाति के हालात बयान नहीं हुए हैं। इस लिए हमें क़ुर्आन के संक्षिप्त बयान पर संतोष करना पड़ेगा। मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने जो विभिन्न मत उद्धृत किये हैं वे मात्र अन्दाज़े और अनुमान की बातें हैं।

52. मालूम हुआ कि दूसरी बहुत सी जातियाँ हैं जिन की ओर रसूल भेजे गए थे और उन को झुठलाने पर उन को विनष्ट कर दिया गया किन्तु इस समस्त जातियों का वर्णन क़ुर्आन ने नाम ले कर नहीं किया है। ये जातियाँ विभिन्न देशों में रही होंगी और यह भी संभव है कि भारत वर्ष की भी कोई जाति विनष्ट कर दी गई हो।

53. अर्थात् उदाहरण दे दे कर समझाया था और विनष्ट की गई जातियों के उदाहरण दिए थे।

54. तात्पर्य लूत की जाति की बस्तियाँ हैं। व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११९

55. आदमी जब आख़िरत (अर्थात् परलोक) के मामले में गंभीर न हो तो शिक्षाप्रद घटनाओं से कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करता । जो लोग नहीं चाहते कि उन को पुन: जीनव मिले और उन को उन का रब उन के अच्छे कर्मों का बदला दे वे नबियों के इतिहास का ग़लत अर्थ बता कर के अपनी संसार भक्ति में लीन रहते हैं।

56. अर्थात् आज तो नबी के एकेश्वरवाद के आहवान को अपने धर्म के लिए ख़तरा समझ रहे हैं और इसे गुमराही क़रार दे रहे हैं किन्तु जब वे अपनी बुत परस्ती और बहुदेववाद का भयानक अन्जाम देख लेंगे तो उस समय उन्हें इस बात का आभास होगा कि उन की अपने बुतों और इष्ट पूज्यों के प्रति आस्था एवं श्रद्धा सरासर गुमराही थी। और वे इस गुमराही में बहुत दूर निकल गए। हिदायत की राह अर्थात सीधी राह वही थी जिस की ओर अल्लाह का रसूल उन्हें बुला रहा था।

43. तुम ने उस व्यक्ति को देखा जिस ने अपनी इच्छा को अपना इष्टपूज्य बना लिया है।[57] क्या तुम उस (को सीधी राह पर लाने) के ज़िम्मेदार बन सकते हो ?[58]

أَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُۥ هَوٰىهُ ۚ أَفَأَنتَ تَكُونُ
عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾

44. क्या तुम समझते हो कि उन में से अधिकतर सुनते या समझते हैं ? ये तो जानवरों की तरह हैं बल्कि उन से भी अधिक राह से भटके हुए।[59]

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا
كَالْأَنْعٰمِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

45. क्य तुम देखते नहीं कि तुम्हारा रब किस प्रकार साये को फैला देता है? अगर वह चाहता तो उसे स्थिर बना देता। फिर हम ने सूरज को इस पर दलील बनाया ।[60]

أَلَمْ تَرَ إِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهُۥ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ
جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾

46. फिर हम उस को आहिस्ता आहिस्ता अपनी ओर समेट लेते हैं ।[61]

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾

47. और वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को लिबास,[62] नींद [63] को सुकून और दिन को उठ खड़े होने का समय बनाया।[64]

وَهُوَ الَّذِى جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ
النَّهَارَ نُشُورًا ﴿٤٧﴾

48. और वही है जो अपनी रहमत [65] के आगे आगे हवाओं को शुभ सूचना बनाकर भेजता है।और हम आसमान से अत्याधिक पवित्र पानी उतारते हैं।[66]

وَهُوَ الَّذِىٓ أَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَىْ
رَحْمَتِهِۦ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُورًا ﴿٤٨﴾

49. ताकि इस के द्वारा (ज़मीन के) मुर्दा भागों को ज़िन्दा करें और अपनी सृष्टियों में से बहुतेरे चौपायों और मनुष्यों को तृप्त करें।

لِّنُحْۦِىَ بِهِۦ بَلْدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيَهُۥ مِمَّا خَلَقْنَآ أَنْعٰمًا
وَأَنَاسِىَّ كَثِيرًا ﴿٤٩﴾

50. और हम ने इस को उन के बीच तरह तरह से बयान कर दिया है [67] ताकि वे नसीहत हासिल करें परन्तु अधिकतर लोगों ने स्वीकार नहीं किया। और अगर स्वीकार किया भी तो नाशुक्री (कृतघ्नता)।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا۟ فَأَبٰىٓ
أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٥٠﴾

51. अगर हम चाहते तो प्रत्येक बस्ती में एक ख़बरदार करने वाला भेज देते।[68]

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِى كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ﴿٥١﴾

52. तो इन काफ़िरों की बात तुम न मानो और इस के द्वारा [69] उन के साथ ज़बरदस्त जिहाद करो।[70]

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِينَ وَجٰهِدْهُم بِهِۦ جِهَادًا كَبِيرًا ﴿٥٢﴾

57. इच्छाओं को पूज्य बना लेने का अर्थ यह है कि आदमी इच्छाओं का ग़ुलाम बन जाए। प्रकृति की पुकार पर कान धरने और सद्बुद्धि से काम लेने के बजाए अपने आप को इच्छाओं के हवाले कर दे। ऐसा व्यक्ति अल्लाह की वह्य अर्थात् अल्लाह की प्राकाशना का विरोध इस लिए करता है कि इच्छाऐं उस का साथ नहीं देतीं। और यह इच्छा की दासता ही है जो मनुष्य को उस की प्रतिष्ठा से गिरा कर पशुता के स्तर पर ले आती है। आज कल के दौर में इस का स्पष्ट उदाहरण वह वर्ग है जो समझता है कि मनुष्य के अन्दर पापों से बचने और पुण्य कमाने का सामर्थ्य ही नहीं है। अर्थात् इच्छाओं को बिना रोक टोक पूरा करने के लिए आज़ाद छोड़ देना । ऐसे व्यक्ति का बुत उस के दिल में होता है और वह उस का भक्त बन जाता है।

58. अर्थात् उसी व्यक्ति को समझाया बुझाया जा सकता है जो अपने विवेक से काम लेने के लिए आमादा हो । जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं के पीछे अन्धा हो गया हो उस को समझाना एक नबी के बस की बात भी नहीं है।

59. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २७६

60. यहाँ मनुष्य को ख़ुदा की उस निशानी की ओर ध्यान दिलाया गया है कि जिसे साया,(छाया) कहते हैं। साया मकानों, वृक्षों आदि का भी पड़ता है और मनुष्य का अपना साया भी जो उस के साथ साथ चलता है और उस को चिंतन का निमंत्रण देता रहता है। साया फैलता भी है और सिकुड़ता भी है। उस का फ़ैलना व सिकुड़ना सूरज के निकलने तथा डूबने के कारणवश होता है। मतलब यह कि सूरज साया के लिए दलील है।

अगर फैले हुए साये को अल्लाह स्थिर बना देता तो वृक्षों आदि के साये एक ही दिशा में पड़ते और दूसरी दिशा सूरज की तपिश में ही रहती । किन्तु साये के गतिशील होने और बढ़ने घटने से तापमान और ठंडक में बड़ा संतुलन पैदा हो गया है। क्या यह एक महान संकल्प रखने वाली और तदबीर करने वाली हस्ती का कारनामा नहीं है ?

61. साया प्रात: काल फैला होता है, फिर जैसे जैसे सूरज चढ़ता जाता है साया घटता जाता है और अपरान्ह के बाद फिर बढ़ने लगता है। यहाँ तक कि सूर्यास्त होने पर ग़ायब हो जाता है।

62. रात परदा पोशी करती है इस लिए उसे लिबास की उपमा दी गई है ।

63. नींद थकान को दूर करती है और आराम पहुँचाती है। यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी और विचित्र नेमत है जिस से हर व्यक्ति लाभान्वित होता है परन्तु इस बात पर विचार करने के लिए तैयार नहीं होता कि यह किस का उपकार है और वह परोपकारी कैसा है जिस की दयालुता की कोई सीमा नहीं है?

64. रात सोने के लिए थी तो दिन उठ खड़े होने के लिए है ताकि जीवन की ताज़गी प्राप्त करे। और यह उठ खड़े होना क़ियामत के दिन उठ खड़े होने की दलील है और याददेहानी भी । दलील इस प्रकार से कि जो हस्ती नींद में अचेत करने के बाद जागृत करती है वह मौत में अचेत कर देने के बाद जीवन भी प्रदान कर सकती है। और याददेहानी अर्थात् नसीहत इस पहलू से कि सुबह का उठना क़ियामत के दिन उठने की याद दिलाता है। इस लिए हदीस में सुबह उठते ही ये प्रवचन पढ़ने की हिदायत आई है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ۔ (مشکوٰۃ کتاب الدعوات بحوالہ بخاری)

अर्थ:- ''तारीफ़ और शुक्र अल्लाह के लिए है जिस ने मौत के बाद जीवन प्रदान किया और उसी की तरफ़ उठ खड़े होना है।'' (बुख़ारी के हवाले से)

65. बारिश तात्पर्य है।

66. बारिश का पानी जो ऊपर से उतरता है अत्याधिक साफ़ सुथरा होता है तथा वह ऐसा गुणकारी भी होता है कि गंदगी को दूर करे और पाक साफ़ बनाए।

67. तात्पर्य क़ुर्आन है जिस के मज़मून विभिन्न शैलियों में बयान हुए हैं। यहाँ ''हू'' (उस को) का सम्बोधन उसी प्रकार क़ुर्आन की ओर पलटता है जिस प्रकार आगे की आयत ५२ में है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट १०९

68. अर्थात् अल्लाह के लिए यह बहुत ही आसान था कि हर बस्ती से एक पैग़म्बर उठाता, किन्तु उस की हिकमत का तक़ाज़ा यह हुआ कि एक पैग़म्बर ऐसी शान का नियुक्त किया जाए कि पूरी दुनिया को ख़बरदार करने के लिए काफ़ी हो जाए। अत: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक इतिहास बनाने वाला पुरुष बनाकर, क़ुर्आन जैसे जीवित चमत्कार के साथ, ऐसे केन्द्रय स्थल पर भेजा गया कि सारी दुनिया के लिए आप की रिसालत काफ़ी हो गई।

69. अर्थात् क़ुर्आन के द्वारा ।

70. इस आयत में क़ुर्आन के द्वारा काफ़िरों के साथ बड़े जिहाद का आदेश दिया गया है। जिहाद का मतलब है

وَالْجِهَادُ وَالْمُجَاهَدَةُ اِسْتِفْرَاغُ الْوَسْعِ فِی مُدَافَعَةِ الْعَدُوِّ۔ (مفردات راغب ص ١٠٠)

अर्थ:- जिहाद और मुजाहदा यह है कि शत्रु के मुक़ाबले में पूरी शक्ति लगा दी जाए। (मुफ़र्रदात राग़िब पृष्ट १००)

यह सूरह मक्की दौर की है और मक्की दौर में तलवार से जिहाद करने का आदेश नहीं दिया गया था इस लिए इस आयत में जिहाद से तात्पर्य हक़ की दअवत को फ़ैलाने में अत्यंत सक्रियता दिखाना विरोधों एवं अवरोधों की परवाह न करते हुए असत्य से जूझना है। फिर यह जिहाद क़ुर्आन के द्वारा बड़े पैमाने पर करने का आदेश दिया गया है जिस का मतलब यह है कि इस दअवती संघर्ष में क़ुर्आन तुम्हारा हथियार हो, कुफ्र और शिर्क के खण्डन में क़ुर्आनी आयतों को पेश किया जाए। काफ़िरों के संदेहों और व्यर्थ के प्रश्नों का जो उत्तर क़ुर्आन ने दिया है वह उन को सुनाया जाए, क़ुर्आन की चेतावनी उन्हें सुनाकर उन को ख़बरदार किया जाए और उन की काफ़िराना बातों का तोड़ क़ुर्आन के द्वारा किया जाए ।

आज भी इस्लाम की दअवत देने के क्षेत्र में जिहाद करने (संघर्ष करने) की अत्यधिक आवश्यकता है। अर्थात् अरबी न जानने वालों के सामने क़ुर्आन को उस के अनुवाद के साथ प्रस्तुत करना और विरोधियों के हथियारों के मुक़ाबले में क़ुर्आन को ढाल बनाना बहुत बड़ा जिहाद है जो समय का अति महत्वपूर्ण तक़ाज़ा है और इस राह के मुजाहिद वही लोग बन सकते हैं जिन पर क़ुर्आन की धुन सवार हो और वे उस के नायक बन कर मैदान में आऐं ।

वही है जिस ने दो दरयाओं को मिलाया। एक मीठा स्वादिष्ट और दूसरा खारी कड़ुआ। और दोनों के बिच एक परदा आड़ कर दिया और एक रुकावट खड़ी कर दी । और वही है जिस ने पानी से एक मनुष्य पैदा किया। फिर उस के लिए वंश और ससुराल के रिश्ते बनाए। तुम्हारा रब बड़े सामर्थ्य वाला है ।*(अल-क़ुर्आन)*

53. वही है जिस ने दो दरयाओं को मिलाया ।एक मीठा स्वादिष्ट और दूसरा खारी कड़ुआ । और दोनों के बिच एक परदा आड़ कर दिया और एक रुकावट खड़ी कर दी ।[71]

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَٰذَا مِلْحٌ
أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٥٣﴾

54. और वही है जिस ने पानी [72] से एक मनुष्य पैदा किया। फिर उस के लिए वंश और ससुराल के रिश्ते बनाए।[73] तुम्हारा रब बड़ी सामर्थ्य वाला है ।[74]

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا
وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿٥٤﴾

55. और ये अल्लाह को छोड़ कर उन की पूजा करते हैं जो न उन को लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि ।[75] और काफ़िर अपने रब का विरोधी बन गया है।[76]

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ
وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾

56. और (ऐ पैग़म्बर !) हम ने तुम को बस ख़ुशख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है।[77]

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾

57. कहो मैं तुम से इस पर कोई मुआवज़ा नहीं माँग रहा हूँ , मगर यह कि जो चाहे अपने रब की राह अपना ले [78]।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَن شَاءَ
أَن يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

58. और उस पर भरोसा रखो जो ज़िन्दा है और कभी मरने वाला नहीं।[79] और उस की प्रशंसा के साथ पाकी बयान करो।[80] अपने बन्दों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए वह काफ़ी है ।[81]

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ
بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾

59. जिस ने आसमानों और ज़मीन को और उन तमाम चीज़ों को जो उन के बीच हैं छ: दिनों में पैदा किया [82] फिर सिंहासन पर बुलन्द हुआ [83]। वह रहमान है । इस की शान (उस) बाख़बर से पूछो।[84]

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾

60. उन लोगों से जब कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं रहमान क्या है?[85] क्या हम उस को सज्दा करें जिस का तुम हमें हुक्म दो। इस से उन की घृणा में और वृद्धि हो जाती है ।[86]

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩ ﴿٦٠﴾

71. मूल अरबी (Text) में "बहरैन" शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का मतलब है दो बहर । अरबी में बहर समुद्र को भी कहते हैं और दरया को भी । अत: दरया-ए-नील को अलबहरुल अज़रक़ (Blue nile) और बहरुल अबयज़ के (White nile) कहा जाते है। आयत में दो बहर से तात्पर्य दरया का समुद्र से मिल जाना है। दरया का पानी मीठा होता है और समुद्र का खारी। मगर जहाँ दरया समुद्र में जा कर गिरता है वहाँ दोनों का पानी अपनी अपनी सीमा में अपनी अपनी विशेषताऐं लिए रहता है। समुद्र की ज़बरदस्त मौज़ें दरया से टकराती हैं किन्तु उस के पानी को खारी नहीं बना देंती । गोया दोनों के बीच एक परदा है जो दिखाई नहीं देता और एक सीमा रेखा है जो दोनों को अपनी जगह बनाए रखे हुए हैं और इन्साइक्लोपीडिया आफ़ ब्रिटानिका में इस ख़ोज का वर्णन है कि उत्तरी साइबेरिया (रुस) के तट पर जहाँ बड़े बड़े दरया सागर के उत्तरी भाग में गिरते हैं उन का ताज़ा पानी कड़ुआहट में कम होने के कारण सतह पर ही रहता है जब कि उत्तरी सागर की गहराइयों में खारी पानी नित्यानुसार मौजूद रहता है।

"Because this fresh water is less dense, it remains on the surface, the salinity at greater depth in the Arctic Ocean is normal for sea water." -(Encyclopedia Britannica, Vol.13. p. 487).

क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि यहाँ एक कन्ट्रोल करने वाली हस्ती है जिस के नियम यहाँ इस प्रकार चल रहे हैं कि प्रत्येक वस्तु अपनी सीमा में है और कोई चीज़ भी रत्ती भर सीमोल्लंघन नहीं कर सकती । लोग इस बात को प्राकृतिक नियम कह कर गुज़र जाते हैं किन्तु कोई भी नियम बिना उसे संचालन करने वाली शक्ति के व्यवहार में नहीं आता । फिर ये प्राकृतिक नियम (Physical Laws) एक संचालक करने वाली शक्ति के बग़ैर कैसे अस्तित्व में आ गए?

72. अर्थात् पानी की एक बूँद से जिसे वीर्य कहा जाता है।

73. अर्थात् एक ओर ख़ून के रिश्ते चलाए और दूसरी ओर पत्नी के सम्बन्ध से ससुराली रिश्ते । इस प्रकार मनुष्य के जीवन में परिवार और समाजिकता का क्रम चला।

74. जो हस्ती पानी की एक बूँद से एक महान समाज को अस्तित्व प्रदान कर सकती है उस की सामर्थ्य शक्ति से क्या चीज़ असंभव है?

75. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट ११८

76. अर्थात् होना तो यह चाहिए था कि ये लोग अल्लाह से जो इन का वास्तविक प्रभु है, बन्दगी और दासता का सम्बन्ध बनाते परन्तु वे अपने कुफ्र के चलते उस के विरोधी बन कर खड़े हो गए हैं। अत: उन को अल्लाह की पाकीज़गी और उस के प्रशंसनीय गुणों की चर्चा करने में कोई अभिरूचि नहीं। अलबत्ता ऐसी बातें बयान करने में ख़ूब रूचि है जो उस की महिमानुकूल नहीं और जिन से एक दोषयुक्त एवं त्रुटियुक्त ख़ुदा की कल्पना मन में उभरती है। वे उस से वफ़ादारी का सम्बन्ध स्थापित करने के बजाय उद्दंडता और बगावत पर उतर आए हैं। वे उस के रसूल का अनुपालन करने के बजाय उस के विरोध में सक्रिय हो गए हैं। और इस से बढ़ कर मुर्खता क्या हो सकती है कि मनुष्य अपने प्रभु का ही विरोधी बन कर खड़ा हो जाए।

77. अर्थात् पैग़म्बर का काम ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी देना और कुफ्र करने वालों को उन के निश्चित कुपरिणाम से आगाह करना है। ईमान लाने पर लोगों को विवश करना पैग़म्बर की ज़िम्मेदारी नहीं ।

78. अर्थात् मैं अल्लाह का पैग़ाम तुम्हारे अपने ही लाभ के लिए पहुँचा रहा हूँ। इस सेवा पर मैं ने तुम से किसी मुआवज़े की माँग नहीं की है कि तुम शक में पड़ो कि ये सब कुछ अपने स्वार्थ के लिए किया जा रहा है। मेरे प्रचार का एक मात्र उद्देश्य यही है कि लोगों पर अल्लाह की राह स्पष्ट हो जाए। फिर जो चाहे स्वेच्छा पूर्वक इस राह को अपना ले।

79. अर्थात् अल्लाह बहुदेववादियों के मुर्दा ख़ुदाओं की भाँति नहीं है। वह हमेशा से ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहेगा। उस को कभी मृत्यु आने वाली नहीं।

80. अर्थात् उस की प्रशंसा के साथ गुणगान करते हुए पाकी बयान करो कि इस से उस पर आस्था और विश्वास का गुण परवरिश पाता है।

81. अर्थात् विरोध करने वालों का मामला अल्लाह के हवाले कर दो। वह अपने बन्दों के अपराधों से बाख़बर है। इस लिए वह उन के किए का पूरा पूरा दण्ड देगा ।

82. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ८२

83. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ८३

84. अर्थात् ख़ुदा कैसा है और उस की ख़ूबियाँ (गुण Attributes) क्या हैं इस के बारे में अनुमान और अन्दाज़े से कोई बात कहना या धार्मिक लोगों की फ़लसफ़ियाना बातों पर विश्वास करना सही नहीं बल्कि यह बात अल्लाह से ही पूछी जानी चाहिए क्यों कि वही अपने गुणों से भली भाँति परिचित है । अत: उस ने अपने गुण, अपनी विशेषताऐं अपनी किताब क़ुर्आन में बयान कर दिए हैं। अत: उस के गुणों एवं विशेषताओं को मालूम करने के लिए इस किताब की ओर पलटो ।

85. व्याख्या के लिए देखिए बनी इस्राईल नोट १४५

यह आयत सज्दा है इस लिए इस की तिलावत करने या सुनने पर तुरन्त सज्दा करना चाहिए।

86. अर्थात् अपने दयावान ख़ुदा (रहमान) के आगे सज्दा करने में तो इन्सान को अपना सौभाग्य समझना चाहिए परन्तु बहुदेववादियों को यह हुक्म भी अप्रिय है। और इस के परिणाम स्वरूप वे अपने प्रभु से और अधिक दूर होते चले जाते हैं।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

जो अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को नहीं पुकारते किसी जान को जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है क़त्ल नहीं करते मगर हक़ की बिना पर । और न व्यभिचार के अपराधी होते हैं। जो कोई इन बातों का अपराधी होगा उसे गुनाह का परिणाम भुगतना होगा। *(अल-क़ुर्आन)*

61. बड़ा बरकत वाला है वह जिस ने आसमान में [87] बुर्ज बनाए और उस में एक चिराग़।[88] और रौशन चाँद बनाया।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا
سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾

62. और वही है जिस ने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया हर उस व्यक्ति के लिए जो याददेहानी (शिक्षा) लेना चाहे या कृतज्ञ बनना चाहे।[89]

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ
اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾

63. और रहमान के बन्दे [90] वे हैं जो ज़मीन पर विनम्रता के साथ चलते हैं [91] और जब जाहिल उन के मुँह आते हैं तो वे कहते हैं सलाम ।[92]

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ
هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾

64. जो अपने रब के आगे सज्दे में और खड़े में रातें गुज़ारते हैं ।[93]

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾

65. जो दुआ करते हैं कि ऐ हमारे रब ! जहन्नम के अज़ाब को हम से दूर रख। उस का अज़ाब बिलकुल चिमट कर रहने वाला है।[94]

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ
اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

66. वह बहुत बुरा ठिकाना और बुरी रहने की जगह है।[95]

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾

67. जो ख़र्च करते हैं तो न अपव्यय करते हैं और न कंजूसी बल्कि उन का ख़र्च दोनों के बीच संतुलित रहता है।[96]

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ
يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

68. जो अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को नहीं पुकारते [97] किसी जान को जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है क़त्ल नहीं करते मगर हक़ की बिना पर ।[98] और न व्यभिचार के अपराधी होते हैं।[99] जो कोई इन बातों का अपराधी होगा उसे गुनाह का परिणाम भुगतना होगा।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ
الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾

69. क़ियामत के दिन उस के अज़ाब को दोहरा कर दिया जाएगा ।[100] और वह उस में अपमान के साथ पड़ा रहेगा।

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

87. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट १४

88. अर्थात् सूरज ।

89. अर्थात् दिन और रात के एक दूसरे के पीछे पाबन्दी के साथ आने का यह क्रम चिन्तन का निमंत्रण देता है। जो व्यक्ति भी उस की ओर ध्यानाकर्षित करेगा वह अपने रब के असीम सामर्थ्य और दया के लक्षणों को देखेगा और अनुभव भी करेगा । यह अनुभव उस में एकेश्वरवाद की ज्योति भी जलाएगी और उस के अन्दर कृतज्ञता की भावना भी बढ़ाएगी। उस का रब बड़ा मेहरबान है जिस ने लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने और उस को आराम और सुकून पहुँचाने का कैसा प्रबन्ध कर रखा है।

90. तात्पर्य ख़ुदा-ए-रहमान के निष्ठ और सच्चे बन्दे हैं उन्हें अपने उन सदगुणों के चलते जो आगे बयान हुए हैं यह गौरव प्राप्त हुआ कि वे रहमान के बन्दे कहलाऐं और इस बात के पात्र ठहरे कि ख़ुदा-ए-रहमान की रहमत एवं दयालुता से मालामाल हों।

91. मनुष्य की चाल उस के चरित्र एवं आचार का द्योतक होती है। जो लोग पूरे आत्मबोध एवं विवेक के साथ अपने आप को अल्लाह की बन्दगी में दे देते हैं उन की चाल से विनम्रता एवं तुच्छता की अभिव्यक्ति होती है। इस के विपरीत ख़ुदा से फिरे हुए लोगों की चाल उस के अहंकार और घमंड को जाहिर करती है।

विनम्रता के साथ चलने का मतलब दिखावटी तौर पर धीरे धीरे चलना नहीं है बल्कि बन्दगी के एहसास के साथ क़दम उठाना और सुकून और सम्मान के साथ क़दम रखना है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रफ़्तार हदीस में इस तरह बयान हुई है।

اذا زَال زَال قَـلْعًا، يَخْطُوُ تَكَفِّياً وَيَمْشِى هَوْناً ، ذريعَ الْمَشْيَةِ اِذَامَشىَ كَانَّمَا يَنْحطُّ مِنْ صَبَبٍ۔ (شمائل ترمذی)

अर्थ:- ''चलते तो सुदृढ़ क़दम उठाते, झुककर क़दम रखते, विनम्रता के साथ चलते और इस तेज़ी से कि जैसे बुलन्दी से ढलान की ओर जा रहे हैं।'' (शमाइल तिर्मिज़ी)

92. जाहिल से तात्पर्य नादान, ग़ैर संजीदा और जज़्बाती लोग हैं। ऐसे लोग जब उलझने लगें तो उन के मुँह लगने से कोई लाभ नहीं । सलामती की बात कह कर उन से अलग होना ही बेहतर है। ''वे कहते हैं सलाम'' इस का मतलब सलामती की बात कहना भी है और विदाई वाक्य भी।

93. अर्थात् रहमान के बन्दे अपनी रातें ख़ुदा से ग़ाफ़िल लोगों की भाँति नहीं गुज़ारते । वे रात के क्षणों में भी इबादत में लग जाते हैं। मग़्रिब और इशा की फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा तहज्जुद की नफ़्ल नमाज़ों का भी आयोजन करते हैं। वे चैन की नींद नहीं सोते बल्कि उठ उठ कर अल्लाह के समक्ष खड़े होते हैं और सज्दा करते हैं। इस से अन्दाज़ा होता है कि उन्हें नमाज़ से कितना लगाव होता है मगर आज आम तौर से मुसलमानों का हाल यह है कि वे अपनी रातें फ़ालतू फ़िल्मे देखने में गुज़ारते हैं। तहज्जुद के समय जो कि दुआ क़ुबूल होने का समय होता है मुसलमानों के घरों से वीडियो पर गाने बजाने की आवाज़े सुनाई देती हैं।

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ۔

94. अर्थात जहन्नम की यातना ऐसी नहीं कि आदमी कोई तदबीर कर के छुटकारा पाए बल्कि ऐसी है कि जो उस की लपेट में आ गया उस से यह चिमट कर रह गया।

जहन्नम की यातना की इस धारणा से रहमान के बन्दे काँप उठते हैं और ख़ुदा के समक्ष प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें इस से बचा ले ।

इस आयत में अल्लाह के मिसाली (आदर्श) बन्दों का यह स्वभाव प्रस्तुत किया गया है कि उन्हें असली चिन्ता जो घेरे होती है वह आख़िरत की मुक्ति तथा वहाँ की सफ़लता की चिन्ता है।

95. अर्थात् जहन्नम दोनों दृष्टि से बुरी है, मन्जिल होने की दृष्टि से भी कि वह भड़कती हुई आग होगी, और हमेशा हमेशा के रहने की जगह की दृष्टि से भी उस में रहने वाले हमेशा यातना ही भुगतते रहेंगे।

96. अपव्यय यह है कि आदमी ख़र्च करने में आवश्यकता की सीमा पार कर जाए। अर्थात् जिन चीज़ों में ख़र्च करना जायज़ है उस में बेपनाह ख़र्च करे और इस बात की कोई परवाह न करे कि किस हद तक ख़र्च करना ठीक और उचित है। आज कल जीवन स्तर को ऊँचा करने की ऐसी दौड़ देखने को मिलती है कि लोग खुले तौर पर अपव्यय करने लगे हैं। रही बात फ़ुज़ूल ख़र्ची अर्थात् माल को बेजा ख़र्च करना या अवैध कामों में ख़र्च करना तो वह बदतरीन तरह का अपव्यय है और उस को क़ुर्आन ने ''तब्ज़ीर'' (फ़ुज़ूल ख़र्च) कह कर सम्बोधित किया है और तब्ज़ीर (अपव्यय) करने वालों के बारे में कहा है कि वे शैतान के भाई हैं। (सूरह बनी इस्राईल आयत २७)

और कन्जूसी यह है कि आदमी जायज़ ज़रूरतों को पूरा करने में अकारण तंगी बरते या दूसरों के अधिकारों को देने से बेपरवाह हो जाए।

अपव्यय और कन्जूसी के बीच सन्तुलित राह यह है कि

आदमी दोनों अति से बचते हुए अपनी जायज़ ज़रूरतों को पूरा करे और उचित सीमा तक ख़र्च करे तथा दूसरों के हक़ भी अदा करे।

स्पष्ट रहे कि खाने पीने की अच्छी वस्तुओं के मौजूद होते हुए मात्र मन को मारने के लिए उन से परहेज़ करना उन लोगों का तरीक़ा है जिन्हों ने वैराग्य, एवं सन्यास के नाम पर कठिन परिश्रमों को करना इबादत में शामिल किया है। इस्लाम की सीधी सादी जीवन व्यवस्था और उस की आसान शरीअत से इस का कोई सम्बन्ध नहीं है।

97. पुकारने का मतलब हाजतों को पूरी करने के लिए भी पुकारना है और पूजा एवं परस्तिश भी। क़ुर्आन में दुआ (पुकारना) का शब्द इबादत के अर्थ में कई जगह प्रयुक्त हुआ है और हदीस में आता है

''الدعاء هو العباده''

(दुआ इबादत है)

(मिश्कात किताबुद्दावत, अहमद, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, नसई, इब्नेमाजा के हवाले से)

इस आयत में रहमान के बन्दों की विशेषता यह बयान हुई है कि वे अल्लाह ही को पुकारते हैं और उसी की परस्तिश करते हैं । उन का तरीक़ा उन लोगों जैसा नहीं होता जो ख़ुदा के साथ दूसरों को भी हाजतों को पूरा करने के लिए पुकारते हैं और ख़ुदा की पूजा के साथ औरों की भी पूजा करते हैं। यह सरासर शिर्क अर्थात् एक मात्र पूज्य का साझीदार ठहराना है। और रहमान के बन्दों का दामन शिर्क से पाक होता है।

98. क़ुर्आन की मौलिक शिक्षा यह है कि प्रत्येक मानव प्राण आदरणीय है यहाँ तक कि एक नवजात शिशु की जान भी

(واذا لمو ؤدة سُئِلَتُ بِاَىّ ذَنُبٍ قُتِلَتُ۔ سورہ تکویر آیت ۸،۹)

और मानव प्राण का आदर सम्मान इतना अधिक है कि उस पर हाथ उठाने वाला संगीन अपराधी होता है। क़त्ल करना उस सूरत में जायज़ है जब कि ''हक़'' की बुनियाद पर हो। इस हक़ को शरीअत ने स्वयं स्पष्ट कर दिया है इस लिए इस सीमा से बाहर निकल कर किसी का वध करने के लिए कोई औचित्य नहीं है। मनुष्य के अपने गढ़े क़ानून या किसी ग़ैर इस्लमी शासन के आदेश अगर किसी ऐसे क़त्ल को वैध ठहराते हैं जिस पर शरीअत के बताए हुए हक़ का क्रियान्वयन नहीं होता तो ऐसा करना ज़ुल्म है और बहुत बड़े गुनाह का कारण । शरीअत ने जिन सूरतों में क़त्ल को हक़ का तक़ाज़ा (न्यायोचित) बताया है वे ये हैं।

A . क़िसास में क़त्ल करना (مائدہ:٤٥) اَنَّ النَّفُسَ بِالنَّفُسِ (जान के बदले जान) (माइदा-४५)

B. ज़मीन में फ़साद और बिगाड़ पैदा करने की सूरत में क़त्ल करना ।

اَوُ فَسَادٍ فِى الْاَرُضِ (مائدہ:٣٢)

जैसे :- रहज़नी, और जन शान्ति को भंग करने वाले उग्रवादी अभियान । इस उसूल के तहत अगर कोई ज़ालिम गिरोह मुसलमानों के किसी समूह पर हमलावर होता है तो वह अपनी रक्षा (Self Defence) के लिए हत्या भी कर सकता है।

C. काफ़िरों और बहुदेववादियों से अल्लाह की राह में जिहाद उस की शर्तों के साथ

فَاِنُ قَاتَلُوكُمُ فَاقُتُلُوهُمُ كَذٰلِكَ جَزَاءُ الْكٰفِرِيُنَ ۔ (بقرہ۔١٩١)

अर्थ :- ''अगर वे तुम से लड़े तो उन्हें क़त्ल कर दो कि काफ़िरों का यह बदला है'' (बक़र: १९१)

D. मुसलमानों का एक समूह यदि दूसरे समूह पर ज़बरदस्ती हमला करे तो उस से लड़ना यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए

فَقَاتِلُوا الَّتِى تَبُغِى حَتّىٰ تَفِىٓءَ اِلىٰٓ اَمُرِ اللّٰهِ ۔ (حجرات۔٩)

अर्थ:- ''तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए।'' (हुजुरात-९)

E. ज़बरदस्ती हमले की सूरत में अपनी रक्षा (Self Defence) करना । चाहे हमलावर को अपनी जान से हाथ धोना पड़े।

وَالَّذِيُنَ اِذَا اَصَابَهُمُ الْبَغُىُ هُمُ يَنُتَصِرُوُنَ وَ جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثُلُهَا۔ (شوریٰ۔٣٩،٤٠)

अर्थ:- और जब उन पर ज़्यादती की जाती है तो वह उस का बदला लेते हैं और बुराई का बदला उस जैसी बुराई ही है।'' (शूअरा-३९,४०)

और हदीस में है :-

جاءَ رجلٌ اِلىٰ رسولِ اللّٰه صلى الله عليه وسلم فقال يا رسولَ اللّٰه ارأيت اِنُ جاءَ رجلٌ يُرِيُدُ اَخُذَ مالى فقال فلا تعطهٖ مالك قالَ اَرَاَيُتُ اَنُ قَاتَلنِى قال قاتِلُهُ قالَ اَرَاَيُتَ اِنُ قتلنى قال فَاَنُتَ شَهِيُدٌ قال اَرَاَيُتَ ان قَتَلُتُهُ قالَ فهُوَ فِى النَّارِ۔ (مسلم کتاب الایمان)

अर्थ :- ''एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और पूछा ऐ अल्लाह के रसूल, आप उस व्यक्ति के बारे में क्या फ़रमाते हैं जो मेरा माल

छीन लेने के इरादे से आए? फ़रमाया अपना माल उसे न दो। उस व्यक्ति ने निवेदन किया अगर वह मुझ से लड़े तो? फ़रमाया तुम भी उस से लड़ो । उस ने कहा अगर वह मुझे क़त्ल कर दे, फ़रमाया तुम शहीद हो जाओगे । उस ने कहा अगर मैं उसे क़त्ल कर दूँ , फ़रमाया वह जहन्नम में जाएगा ।''

(मुस्लिम किताबुल ईमान)

और माल की रक्षा से अधिक जान की रक्षा और एक औरत के लिए अपनी अस्मिता की रक्षा महत्व रखती है इस लिए जान माल, आबरू पर हमला होने की सूरत में ज़ालिम को क़त्ल करना अगर आवश्यक हो जाए तो मज़लूम को बचाव के लिए क़त्ल का अधिकार है।

F. अल्लाह और उस के रसूल के विरुद्ध सैन्य बग़ावत करने वालों को क़त्ल की सज़ा देना । यह उस सैन्य बग़ावत पर लागू होता है जो इस्लामी राज्य की व्यवस्था उलटने और उस की जगह ग़ैर इस्लामी शासन व्यवस्था स्थापित करने के लिए की जाए।

اِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ
فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُقَتَّلُوْا............(مائدہ ۳۳)

अर्थ:- ''जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और ज़मीन में फ़साद बरपा करने के लिए दौड़ धूप करते हैं उन की सज़ा यही है कि क़त्ल कर दिए जाऐं।'' (माइदा -३३)

G. शादी शुदा व्यभिचारी एवं व्याभिचारिणी को संगसार करना । यह हुक्म सुन्नत (सही हदीसों) से साबित है:-

لَايَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مسلم يَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَنِّى
رسولُ اللّٰه اِلَّا باحْدىٰ ثَلَاثٍ اَلنَّفْسُ بِالنَّفْسِ والثَّيِّبُ الزَّانى
وَالمَارِقُ مِنَ الدِّيْنِ التارک الجماعة۔(بخاری کتاب الدیات)

अर्थ:- '' किसी मुसलमान का जो यह गवाही देता हो कि अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं और यह कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, ख़ून जायज़ नहीं सिवाय इस के कि इन तीन सूरतों में से कोई सूरत सामने आ जाए, उस ने किसी का वध किया हो। या शादी शुदा होते हुए व्यभिचार का अपराधी हुआ हो या दीन से निकल गया हो और मिल्लत को छोड़ दिया हो। (अर्थात् मुर्तद हो गया हो)''

H. मुर्तद अर्थात् इस्लाम से फिर जाने वालों को क़त्ल करना जैसा कि ऊपर की हदीस में बयान हुआ है।

ध्यान रहे कि इन में से कई सूरतें ऐसी हैं जिन का सम्बन्ध इमाम अर्थात् इस्लामी राज्य से है क्यों कि इन सूरतों में मुल्ज़िम को सफ़ाई का मौक़ा देना और गवाहियों की बुनियाद पर फ़ैसला करना ज़रुरी है।

फ़ुक़हा इस बात पर सहमत हैं कि हाकिम या उस का प्रतिनिधि ही हद अर्थात् क़ानून को लागू कर सकता है और व्यक्तिगत रूप से किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने तौर पर इस काम को अन्जाम दे । फ़िक़्हुस्सुन्नः अस्सैयद साबिक़ जिल्द २ पृष्ट ३६२)

99. व्यभिचार के हराम होने पर पुष्टि नोट के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट ४१

100. अर्थात् एक अज़ाब तो कुफ्र और शिर्क का और दूसरा अज़ाब क़त्ल और व्यभिचार जैसे अपराधों का । स्पष्ट हुआ कि काफ़िरों और बहुदेववादियों को बग़ावत की सज़ा तो मिलेगी ही जो अत्यंत दुखदायिनी और अंनत होगी । उस सज़ा में अतिरिक्त रूप से वृद्धि उन के अपराधों के आधार पर होगी जो उन्होंने किया था । और जिस स्तर का अपराध होगा उसी के अनुकूल दण्ड सुनिश्चित होगा।

70. मगर जो तौबा करे, ईमान लाए और नेक अमल करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा।[101] अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।[102]

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ
اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٠﴾

71. और जो तौबा कर के नेक अमल करता है वह वास्तव में अल्लाह की तरफ़ पलटता है।[103]

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

72. और जो असत्य के गवाह नहीं बनते [104] और अगर किसी बेहूदा चीज़ पर से उन का गुज़र होता है तो पूरी प्रतिष्ठा के साथ गुज़र जाते हैं।[105]

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

73. जिन्हें उन के रब की आयतों के द्वारा नसीहत की जाती है तो वह उन पर बहरे और अन्धे हो कर नहीं गिरते।[106]

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ
يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾

74. जो प्रार्थना करते रहते हैं कि ऐ हमारे रब ! हमारी पत्नियों और हमारी सन्तान की ओर से हमें आँखों की ठंडक प्रदान कर [107] और हम को परहेज़गारों का इमाम बना ।[108]

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ
أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾

75. ये लोग हैं जिन को उन के सब्र (धैर्य) के बदले में उच्च भवन प्रदान किए जाऐंगे [109] और वहाँ उन का स्वागत दुआ और सलाम से होगा।

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ
فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾

76. वे वहाँ हमेशा रहेंगे, बहुत अच्छा ठिकाना और बहुत अच्छी रहने की जगह है वह !

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾

77. कहो मेरे रब को तुम्हारी क्या परवाह अगर तुम उसे न पुकारो ।[110] तुम ने झुठला दिया है अतः अज़ाब तुम्हें ज़रूर पकड़ लेगा।

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ
يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

101. इस में उन लोगों के लिए बड़े संतोष की सामाग्री है जिन के जीवन बहुदेववाद में लिप्त रहे हैं और जो हत्या, व्यभिचार जैसे बड़े बड़े पाप करते रहे हैं किन्तु सत्य के स्पष्ट हो जाने पर वे अल्लाह की ओर पलटे और पिछले गुनाहों पर लज्जित हुए, ईमान लाए, नेक रवैया अपनाया ऐसे लोगों से अल्लाह का वादा है कि वह उन की बुराइयों को नेकियों से बदल देगा अर्थात् उन्हें यह तौफ़ीक़ होगी कि वे बुराइयों की जगह अच्छे और नेक काम करें। अत: अज्ञानता काल में जिन के जीवन पापों से भरे हुए थे इस्लाम स्वीकार करने के बाद उन का जीवन बिलकुल पाक साफ़ हो गया । असल चीज़ पाप का बोध है। जब यह बोध बन्दे के दिल में पैदा हो जाता है तो उस के आचार विचार में बड़े ही सुखद परिवर्तन होने लगते हैं।

102. अर्थात् तौबा करने वाले ये बन्दे अल्लाह से आशा रखें कि वह उन के पिछले पापों को क्षमा कर देगा और उन पर दया करेगा कि वह क्षमा करने वाला दयावान है।

103. इस आयत में तौबा की वास्तविकता को स्पष्ट कर दिया गया है। तौबा यह नहीं है कि आदमी कुकर्म में लिप्त रहे और मात्र ज़बान से तौबा तौबा करता रहे। बल्कि तौबा यह है कि आदमी बुराई से बाज़ आए और नेक रवैया अपनाए । जो व्यक्ति इस अनिवार्य तक़ाज़े के साथ अल्लाह के समक्ष प्रायश्चित करता है वह वास्तव में पाप को छोड़ कर अल्लाह की ओर पलटता है और जो अल्लाह की ओर पलटता है उसे वह क्यों न अपनी दया की छत्र छाया में रखेगा ।

104. ''ज़ूर '' का मतलब झूठ और असत्य के हैं और ''ला यशहदून'' لَا يَشْهَدُوْنَ का मतलब गवाही न देने के भी हैं और साक्ष्य न बनने के भी। यद्यपि ये शब्द इन दोनों अर्थों को अपने अन्दर समोये हुए हैं किन्तु बाद का वाक्य इस बात पर तर्क प्रस्तुत करता है कि यहाँ ख़ास तौर से असत्य का तमाशाई न बनना अभिप्रेत है। मतलब यह है कि रहमान के बन्दों को असत्य से ऐसी घृणा होती है कि जहाँ उस का अस्तित्व होता है वहाँ वे उपस्थित नहीं होते कि इस से असत्य को बल मिलता है, और न उस के तमाशाई बन कर अपनी बेग़ैरती का परिचय देते हैं। बल्कि ऐसी चीज़ों से किनारा कश रहते हैं।

इस उसूली मार्ग निर्देश के रहते मुसलमानों के लिए वैध नहीं कि वे शिर्क के अड्डों और मन्दिरों की सैर करें,बहुदेववादी प्रचलनों और पूजा पाठ के अवसर पर मौजूद रहें भूमि पूजा के प्रोग्रामों में शामिल हों और बहुदेववादी त्योहारों में शामिल हो कर उन की शोभा बढ़ाऐं। अल्लामा इब्ने तीमिया लिखते हैं :-

''हज़रत उमर रजि. ने फ़रमाया है कि अल्लाह के दुश्मनों से उन के त्योहार के मौक़े पर परहेज़ करो। और इमाम अहमद फ़रमाते हैं कि यहूदियों और ईसाईयों के त्योहारों में शिर्कत जायज़ नहीं है। उन का यह तर्क अल्लाह के इर्शाद इसी आयत وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْر से से है।

(मज़मुआ फ़तावा इब्ने तीमिया जिल्द २५ पृष्ट ३२६)

105. अर्थात् इत्तिफ़ाक़ से उन का गुज़र किसी बेहुदा बात पर से हुआ तो न वे उस में रूचि लेते हैं और न उस के तमाशाई बनते हैं बल्कि सज्जन पुरुष की भाँति अपनी प्रतिष्ठा के साथ गुज़र जाते हैं। जिस प्रकार किसी उत्कृष्ट आदमी का गुज़र निकृष्टता के ढेर की तरफ़ से होता है तो वह उस पर एक ग़लत निगाह डालना भी पसन्द नहीं करता और तेज़ी से आगे निकल जाता है।

आज कल तो बेहूदा बातें संस्कृति, सभ्यता एवं आधुनिकता का चोला ओढ़ कर सामने आ रही हैं और इस अधिकता से सामने आ रही है कि आदमी का सलामती के साथ रास्तों से गुज़रना भी मुश्किल हो कर रह गया है। परन्तु जिन लोगों की नैतिक भावनाऐं जागृत होती हैं वे अपनी मान मर्यादा तथा अपनी सन्जीदगी एवं प्रतिष्ठा का दामन किसी हाल में नहीं छोड़ते।

106. अर्थात् उन का हाल उन लोगों जैसा नहीं जो ऐसे बेहिस होते हैं कि अगर उन्हें अल्लाह की आयतों, उस की किताब के तर्कों एवं प्रमाणों तथा उस की शिक्षाओं के द्वारा नसीहत की जाती है तो वे टस से मस नहीं होते । सत्य को सुनने के लिए उन के कान बहरे हो जाते हैं और सत्य को देखने के लिए उन की आँखें अन्धी हो जाती हैं। इस के विपरीत जब रहमान के बन्दों को अल्लाह की आयतों की ओर आकर्षित किया जाता है तो वे खुले कान से नसीहत को सुनते हैं और खुली आँखों से अल्लाह की निशानियों को देखते हैं।

107. रहमान के बन्दे अपनी पत्नी और बच्चों की ओर से बेपरवाह नहीं होते कि चाहे वे जन्नत की राह अपनाऐं या जहन्नम की, बल्कि उन की हिदायत अर्थात् सीधे मार्ग पर लगे रहने के बारे में चिन्तित रहते हैं और इस बात के अभिलाषी होते हैं कि वे ईमान और अच्छे कर्मों पर आधारित जीवन बिताऐं। उन के लिए आँखों की ठण्डक उन के बीवी बच्चों को नेक होना है न कि सांसारिक वैभव से माला माल होना, मतलब यह कि ख़ुदा के इन बन्दों की पसंद का स्तर बिलकुल सही होता है। अत: अगर उन के बीवी बच्चे अच्छे आचरण वाले बन जाते हैं तो वे उन की आँखो की ठंडक और दिल का सुकून बन जाते हैं । इसी लिए वे अल्लाह से इस की तौफ़ीक़ के लिए प्रार्थी होते हैं ।

108. अर्थात् नायक का जो स्थान हमें अपने घर वालों पर प्राप्त है उस के प्रभाव में उन की सही दीनी तरबियत हो और परहेज़गारी तथा ईश भय के गुण उन के अन्दर पैदा हों। दूसरे

शब्दों में हमारा नेतृत्व परहेज़गारी से भरा हुआ हो और हमारे पीछे चलने वाले परहेज़गार बन जाऐं ।

इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि अल्लाह के सच्चे बन्दों के दिल में यह विचार किस तरह अंगड़ाइयाँ लेते रहता है कि उन के बाल बच्चे अल्लाह का डर रखने वाले और परहेज़गार बन जाऐं । मगर आजकल के मुसलमानों का सार्वजनिक रूप से यह हाल है कि उन का जीवन भी ईश-भय एवं परहेज़गारी से ख़ाली है और उन्हें इस बात से भी कोई दिलचस्पी नहीं कि उन के बाल बच्चे परहेज़गार बन जाऐं। वे उन को कुछ और ही बनाना चाहते हैं ताकि दुनिया में उन का ख़ूब ख़ूब आदर हो। रह गई बात आख़िरत की तो कलिमा पढ़ने वालों को इस की कुछ अधिक चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं ।

109. जन्नत के उच्च भवनों की वास्तविकता तो वहाँ पहुँच कर ही मालूम होगी । किन्तु क़ुर्आन के इन शब्दों से ऐसी कल्पना ज़रूर बंधती है कि जन्नत में ऊँचे महल होंगे।

जन्नत के यह उच्च भवन रहमान के बन्दों को उन के सब्र और धैर्य के बदले में मिलेंगे । इस से सब्र के महत्व का पता चलता है कि वह उन तमाम गुणों के लिए जो ऊपर बयान हुए हैं, आधार की हैसियत रखता है। अर्थात् ये गुण उसी स्थिति में पैदा हो सकते हैं जब कि आदमी भावुक होने के बजाए गंभीर बन जाए और दृष्टि सत्य के लक्ष्य पर जमाए रखे।

110. यह उपसंहार है जिस में सम्बोधन की दिशा इन्कार करने वालों की ओर फिर गई है। उन से कहा जा रहा है कि यदि तुम केवल अल्लाह को हाजतों का पूरी करने वाला मानकर। उस को पुकारने और उस की इबादत तथा अनुपालन करने को तैयार नहीं हो तो ख़ूब समझ लो कि इस से न उस का कुछ बिगड़ने वाला है और न उस को तुम्हारी परवाह है । उस ने तुम्हारे सामने वास्तविकता रख दी है इस के बाद यदि तुम बुरे अन्जाम को पहुँचना चाहते हो तो इस के ज़िम्मेदार तुम स्वयं हो ।

❒ ❒ ❒ ❒ ❒ ❒

२६.सूरह अश-शूअरा

नाम : आयत २२४ से २२६ में मक्का के बहुदेववादियों के इस आरोप का खण्डन, कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शायर हैं। शायरों का बेकिरदार (चरित्र हीन) होना स्पष्ट किया गया है ताकि लोग एक नबी और एक शायर के अन्तर को पहचान सकें। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अश-शूअरा है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और सूरह की तरकीब और उस के मज़मून पर ग़ौर करने से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के आरम्भिक दौर के अंत में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय : हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की सत्यता को स्पष्ट करना और इस सिलसिले में प्रेषित किये जाने वाले संदेहों को दूर करना है।

कलाम की तरतीब : आयतें १ से ९ प्रस्तावना हैं जिन में स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह का रसूल किस दर्द और कोमलता के साथ लोगों को सत्य स्वीकार कर लेने का न्योता दे रहा है और लोग किस प्रकार उस से विमुखता बरत रहे हैं और मज़ाक में इसे टाल रहे हैं। वे यदि गंभीर होते और सोचते तो उन्हें उस सत्य के पक्ष में जो कि रसूल प्रस्तुत कर रहा है, क़दम क़दम पर निशानियाँ दिखाई देतीं।

आयत १० से ६८ में हज़रत मूसा का वृत्तांत बयान हुआ है जिस से न केवल उन के रसूल होने की सत्यता सिद्ध होती है बल्कि यह भी सिद्ध होता है कि हठ् धर्म लोग किसी भी निशानी को देख कर यहाँ तक प्रत्यक्ष एवं अनुभूत चमत्कार को देखकर भी ईमान नहीं लाते।

आयत ६९ से १०४ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तौहीद की दअवत को पेश किया गया है जो उन्होंने अपनी क़ौम को दी थी।

आयत १०५ से १९१ में कई नबियों की सच्ची दअवत को पेश किया गया है और साथ ही विरोधियों के अन्जाम को भी । इतिहास के विभिन्न कालों में नबियों की नियुक्ति, उन की दअवत की समानता और उन के विरोधियों का बुरे अन्जाम को पहुँचना अल्लाह तआला की ओर से रसूलों को भेजे जाने का स्पष्ट प्रमाण है और यह प्रमाण नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में भी मौजूद है।

आयत १९२ से २२७ में क़ुर्आन और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बन्धि संदेहों को दूर किया गया है।

२६.सूरह अश-शूअरा

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ

आयतें : 227

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

1. ता-सीन-मीम [1]।

طسٓمٓ ①

2. ये आयतें हैं रौशन किताब की ।[2]

تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱلْكِتَٰبِ ٱلْمُبِينِ ②

3. (ऐ पैग़म्बर !) शायद तुम अपने को हलाक कर दोगे इस (दुख) में कि ये लोग ईमान नहीं लाते।[3]

لَعَلَّكَ بَٰخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا۟ مُؤْمِنِينَ ③

4. अगर हम चाहें तो आसमान से इन पर ऐसी निशानी उतार दें कि इन की गर्दनें उस के आगे झुकी रह जाऐं।[4]

إِن نَّشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ ءَايَةً فَظَلَّتْ
أَعْنَٰقُهُمْ لَهَا خَٰضِعِينَ ④

5. उन के पास रहमान की तरफ़ से जो ताज़ा नसीहत (याददेहानी) भी आती है ये उस से मुँह फेरते हैं ।[5]

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّنَ ٱلرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا۟ عَنْهُ
مُعْرِضِينَ ⑤

6. अतः उन्होंने झुठला दिया, तो जिस चीज़ का ये मज़ाक उड़ाते हैं उस की हक़ीक़त बहुत जल्द इन के सामने आएगी।[6]

فَقَدْ كَذَّبُوا۟ فَسَيَأْتِيهِمْ أَنۢبَٰٓؤُا۟ مَا كَانُوا۟ بِهِۦ
يَسْتَهْزِءُونَ ⑥

7. क्या इन्होंने ज़मीन पर निगाह नहीं डाली की हम ने उस में कितनी अधिकता के साथ हर प्रकार की उत्तम चीज़ें उगाई हैं ?

أَوَلَمْ يَرَوْا۟ إِلَى ٱلْأَرْضِ كَمْ أَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ
زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑦

8. निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है [7] मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।[8]

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ⑧

9. और निस्संदेह तुम्हारा रब ग़ालिब (प्रभावशाली) भी है और दयावान भी।[9]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ⑨

10. और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा [10] कि ज़ालिम क़ौम [11] के पास जाओ।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱئْتِ ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ⑩

11. फ़िरऔन की क़ौम के पास । क्या वे डरते नहीं ? [12]

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ⑪

1. ये विभक्त अक्षर हैं और जैसा कि हम स्पष्ट करते आए हैं कि ये अक्षर सूरह के ख़ास मज़मून की ओर संकेत करते हैं। ''ता'' का इशारा ''ताअत'' अर्थात् अनुपालन की ओर है। इसी लिए हर पैग़म्बर ने लोगों से ''अतीऊन'' अर्थात् मेरा अनुपालन करो'' का मुतालबा किया था । जैसा कि आयत १०८,१२६, १४४, १५० और १६३ में बयान हुआ है। सीन का इशारा सेहर (जादू) के आरोप की तरफ़ है जो पैग़म्बर पर लगाया जाता रहा है और जिस का ज़िक्र आयत ३४, ३५, ४९, १५३ और १८५ में हुआ है जो विभिन्न क़ौमों की ओर भेजे गए थे । यह शब्द आयत १०५, १४१, १६० और १७६ में आया है ।

मतलब यह कि ता-सीन-मीम सूरह के इस मज़मून को अपने अन्दर समेटे हुए है कि अल्लाह ने विभिन्न क़ौमों की ओर अपने पैग़म्बर भेजे थे और उन सब ने रसूल होने की हैसियत से अपने अनुपालन का मुतालबा किया था । किन्तु लोगों ने उन पर जादू का आरोप लगाया । किसी को जादूगर कहा किसी को जादू ग्रस्त। इस से यह ऐतिहासिक सत्य और स्पष्ट हो जाता है कि पैग़म्बरों के विरोधियों की मानसिकता सदैव एक जैसी रही है और आज भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधी इसी मानसिकता का परिचय दे रहे हैं। (विभक्त अक्षरों की अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट १ और सूरह यूनुस नोट १)

2. इस की व्याख्या सूरह यूसुफ़ नोट २ में गुज़र चुकी।

3. व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ७

4. काफ़िर लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महसूस कर लेने वाले चमत्कार की माँग कर रहे थे। उस के उत्तर में यहाँ फ़रमाया गया है कि अगर अल्लाह चाहे तो उन का माँगा हुआ चमत्कार ही नहीं ऐसा प्रत्यक्ष एवं अनुभूत कर लेने वाला चमत्कार भी उतार सकता है। जिस के बाद इन्कार की गुन्जाइश बाक़ी ही न रहे । और ये लोग उसे स्वीकार करने पर विवश हो जाऐं।

निस्संदेह अल्लाह ऐसे चमत्कार दिखाने का सामर्थ्य रखता है किन्तु अल्लाह का मंशा यह नहीं है। क्यों कि इस जीवन में बुद्धि की परीक्षा ही तो अभिप्रेत है न कि किसी बात को मानने पर बुद्धि को विवश कर देना।

5. लगभग वही बात सूरह अम्बिया आयत २ में बयान हुई है। व्याख्या के लिए देखिए सूरह अम्बिया नोट २

6. अर्थात् वह परिणाम और वह अन्जाम उन के सामने आएगा जिस से उन को सावधान किया गया है और जिस का मज़ाक़ उड़ाने में वे लगे हुए हैं।

7. अर्थात् ज़मीन से उगने वाली बहुतेरी अच्छी वनस्पतियों में इस सत्य की स्पष्ट निशानियाँ मौजूद हैं जिस को पैग़म्बर पेश कर रहा है अर्थात् तौहीद की भी और मरने के बाद उठाए जाने की भी । ज़मीन पर जो दस्तरख़्वान बिछा दिया गया है उस से लोग अपनी अभिरुचि की सामग्री तो एकत्र कर लेते हैं किन्तु इस बात पर विचार करने के लिए तैयार नहीं होते कि यह उत्कृष्ट दस्तरख़्वान बिछाया किस ने है? वह कैसी हस्ती है जिस ने ये भाँत भाँत के खाने इस विशाल दस्तरख़्वान पर चुने हैं? मनुष्य पर नेमतों की बारिश कर के यह उसे क्या बनाना चाहता है? और आदमी का अपने सच्चे परोपकारी के साथ क्या रवैया होना चाहिए?

8. अर्थात् इन में से अधिकतर लोगों का हाल यह है कि वे इन क़ुदरती निशानियों को देख कर जो उन के आसपास फैली हुई हैं ईमान लाना नहीं चाहते ।

स्पष्ट रहे कि यह उस परिस्थिति का वर्णन है जो उस समय मक्का की सोसाइटी में पायी जाती थी। अत: हिज़रत तक लोग बहुत कम ही ईमान लाए।

9. इस अवसर पर इन दो गुणों के वर्णन से अभिप्रेत यह स्पष्ट करना है कि ईमान न लाने वाले अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं हैं वह अविलंब उन पर अपना प्रकोप उतार सकता हैं किन्तु उस की रहमत इस बात का तक़ाज़ा करती है कि इन को संभलने का और मौक़ा दिया जाए तथा इस बात की ओर संकेत भी है कि यद्यपि ये लोग ईमान नहीं ला रहे हैं किन्तु अल्लाह की प्रभुता और उस की दया के करिश्मे प्रकट हो कर रहेंगे।

10. यहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वृत्तांत प्रस्तुत किया गया है। इस की व्याख्या के सिलसिले में सूरह ताहा नोट ९ से ९४ सामने रहें ।

11. फ़िरऔन की जाति का उल्लेख ज़ालिम जाति से किया गया क्यों कि उस के अत्याचार और उस की उद्दंडता अति को पहुँच चुकी थी और वह बर्बरता पर उतर आई थी जिस के स्पष्ट उदाहरण उस का अपने देश की मुस्लिम अल्पसंख्यक वर्ग (बनी इस्राईल) के नवजात शिशुओं का वध करना था।

12. अर्थात् अन्यायपूर्ण हरकतें करते हुए अपने रब से डरते नहीं कि उस का प्रकोप उन पर नाज़िल हो सकता है और वे उस के प्रकोप का निशाना बना सकते हैं।

12. उस ने कहा ऐ मेरे रब ! मुझे भय है कि वे मुझे झुठला देंगे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ١٢

13. मेरा सीना तंग होता है [13] और मेरी ज़बान नहीं चलती।[14] तू हारून की ओर रिसालत भेज।[15]

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ١٣

14. और मुझ पर उन के नज़दीक एक अपराध का बोझ भी है । इस लिए मुझे भय है कि वे मुझे वध कर देंगे।[16]

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ١٤

15. फ़रमाया हरगिज़ नहीं,[17] तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ। हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे ।[18]

قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ١٥

16. फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि हम सारे जगत के रब [१९] के रसूल हैं।

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٦

17. (और इस आदेश के साथ भेजे गए हैं) कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे।[20]

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ١٧

18. उस ने कहा क्या हम ने तुम को अपने यहाँ बचपन में पाला नहीं था ? और तुम ने अपनी उम्र के कई साल हमारे यहाँ नहीं गुज़ारे?[21]

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ
عُمُرِكَ سِنِينَ ١٨

19. इस के बाद तुम ने वह हरकत की जो की, और तुम नाशुक्रे (कृतघ्न) हो ![22]

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ١٩

20. मूसा ने उत्तर दिया, मैं ने यह उस समय किया जब कि मैं अनभिज्ञ था।[23]

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ٢٠

21. फिर मैं तुम लोगों के भय [24] से भाग गया। फिर मेरे रब ने मुझे हुक्म प्रदान किया [25] और रसूलों में शामिल कर लिया।

فَفَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي
مِنَ الْمُرْسَلِينَ ٢١

22. और यह तेरा एहसान है जो तू मुझ पर जता रहा है कि तूने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रखा है।[26]

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ ٢٢

23. फ़िरऔन ने कहा सारे जगत का रब क्या है ?[27]

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ٢٣

13. यह मनोभाव रिसालत की भारी एवं दायित्पूर्ण ज़िम्मेदारी के एहसास के कारण पैदा हो गया था।

14. अर्थात् प्रवाह के साथ नहीं चलती । व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट २८

15. यह हज़रत मूसा की रिसालत को क़ुबूल करने से इन्कार नहीं था जैसा कि बाइबिल (निर्गमन अध्याय 4: 13,14) का बयान है बल्कि रिसालत की भारी ज़िम्मेदारियों को क़ुबूल करते हुए अपनी अक्षमता, तथा कठिनाइयों एवं अवरोधों का व्यक्तिकरण था ताकि अल्लाह तआला उन की सहायता करे। इस से अन्दाज़ा होता है कि रिसालत का दायित्व कितना महान दायित्व है जिस को स्वीकार करते हुए हज़रत मूसा जैसे महापुरुष भी काँप उठे।

16. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ४२, यह वृत्तांत विस्तार से सूरह क़सस में आ रहा है।

17. अर्थात् फ़िरऔन की जाति तुम्हें मार नहीं सकेगी और न तुम्हारे रिसालत के दायित्व को निभाने में कोई चीज़ रोड़ा हो सकेगी ।

18. अर्थात् हम तुम्हारे साथ सुनने के लिए मौजूद होंगे और फ़िरऔन जो जवाब भी देगा उस से हम भिज्ञ होंगे इस लिए तुम्हें चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। तुम्हें जिस सहयोग की भी आवश्यकता होगी हम करेंगे।

19. फ़िरऔन के रब होने का दावा अपने राज्य अर्थात् मिस्र देश की सीमा तक ही था और वह भी ख़ास मायनों में। इस लिए मूसा अलैहिस्सलाम को यह निर्देश हुआ कि वे स्वयं को सारे जहान के रब के रसूल होने की हैसियत से पेश करें, ताकि फ़िरऔन पर शुरू में ही स्पष्ट हो जाए कि अल्लाह मिस्र सहित समस्त जगत का वास्तविक रब है।

20. बनी इस्राईल को भेज देने की माँग कोई जातीय माँग नहीं थी बल्कि अल्लाह का आदेश था जिस को फ़िरऔन तक पहुँचाने की हिदायत हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को दी गई थी। गोया यह कि इन पैग़म्बरों को अल्लाह की ओर बुलाने के साथ इस अभियान पर रवाना किया गया था कि वे बनी इस्राईल को मिस्र देश से निकाल लाऐं। इस लिए उन्हों ने शुरू ही में फ़िरऔन के सामने जहाँ दअवत प्रस्तुत की वहीं मुतालबा भी रख दिया कि बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दिया जाए। पूरे प्रसंग से यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि यह मुतालबा शुरू ही में रख दिया गया था। इस से इस धारणा का खण्डन होता है, कि दअवत देते हुए किसी ज़ालिम या ग़ैर इस्लामी शासन के समक्ष कोई मिल्ली मुतालबा नहीं रखा जा सकता, यदि दीनी मस्लहतें इस का तक़ाज़ा करे तो ऐसे मुतालबे किये जा सकते हैं।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १६१

21. यह भी अल्लाह का चमत्कार ही था कि हज़रत मूसा की परवरिश फ़िरऔन के घर में हुई जिस की तफ़सील सूरह ताहा नोट ३६ से ४१ में गुज़र चुकी ।

22. संकेत है वध कर देने की उस घटना की ओर जो हज़रत मूसा द्वारा घटी थी ।

व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ४२

23. यह हज़रत मूसा की अपने प्रति किसी रिआयत के बग़ैर स्वीकृति थी कि मुझ से यह ग़लती हो चुकी है। किन्तु यह उस समय की बात है जब कि मुझ पर हिदायत की राह अर्थात् सीधी राह नहीं खुली थी जो अब खुली है अर्थात अब मैं रिसालत के दायित्व पर नियुक्त किया गया हूँ और पूरी रौशनी में चल रहा हूँ। इस लिए पिछली ग़लतियों को बहस में लाने से क्या लाभ?

स्पष्ट रहे कि आयत में ''ज़लालत '' (गुमराही) का शब्द आस्था और आचरण की गुमराही के अर्थ में नहीं प्रयुक्त हुआ है। बल्कि ज्ञान की उस रौशनी की तुलना में प्रयुक्त हुआ है जो उन्हें सबूत के बाद प्राप्त हो गई थी। क़िब्ती की उन्हों ने जान बूझ कर हत्या नहीं की थी बल्कि घूँसा मारने से वह मर गया था। इस लिए यह घटना अनजाने में हुई हत्या का था। और हज़रत मूसा ने इस अवसर पर अल्लाह तआला से अपनी क्षमा के लिए जिन शब्दों में दुआ की थी उस के एक एक शब्द से स्पष्ट है कि वे उस समय भी हिदायत अर्थात् सीधे मार्ग पर थे। (देखिए सूरह क़सस आयत १५ से १७)

24. अर्थात् तुम लोगों की सज़ा के डर से।

25. हुक्म से तात्पर्य बुद्धिमता, तत्वदर्शिता, और निर्णय शक्ति है।

26. यह हज़रत मूसा का फ़िरऔन को मुँह तोड़ और सत्य को उजागर कर देने वाला जवाब था। इस जवाब का मतलब यह है कि तुझे यह एहसान तो याद है जो तूने मुझ पर मेरी परवरिश के रूप में किया किन्तु मेरी जाति बनी इस्राईल को गुलामी की जंजीर में जकड़ कर जो अन्याय तू उन पर तोड़ रहा है उस को तू भूल गया, क्या तू यह चाहता है कि मैं तेरे एहसान का यह बदला चुकाऊँ कि बनी इस्राईल पर तेरी तरफ़ से जो ज़ुल्म हो रहा है उस के विरूद्ध आवाज़ न उठाऊँ और तुझे अपनी मन मानी करने दूँ? क्या तेरी यह मंशा है कि मैं तेरे एहसान तले जो तूने मुझ पर बचपन में किया था इस प्रकार दबा रहूँ कि एक मज़लूम जाति की मुक्ति के लिए कुछ न कहूँ?

27. फ़िरऔन के इस सवाल से स्पष्ट होता है कि वह इस बात का क़ायल नहीं था कि कायनात का कोई रब है जो व्यवस्था चलाता है। रहा उस का यह दावा कि मैं सब से बड़ा

रब हूँ तो वह मिस्र की सीमा तक और उस राज्य के शासक होने के कारण था। मिस्र के फ़राइना (शासक) अपना रिश्ता सूर्य देवता से जोड़ते थे जैसा कि हम सूरह आराफ़ नोट १८० में स्पष्ट कर चुके हैं। इस के अनुसार जो राज्य का स्वामी है वह प्रजा के लिए सर्वोच्च शासक भी है और पूज्य भी। उस को अधिकार है कि जो चाहे हुक्म दे और उस से ऊपर कोई हस्ती ऐसी नहीं जो उस को हुक्म देने का अधिकार रखती हो। इस प्रकार वह अपनी राजनीतिक एवं धार्मिक संप्रभुता का दावेदार था, अत: अपने मन माने आदेश भी पारित करता रहता था और लोगों से यह मुतालबा भी करता था कि वे उस को पूजें। इस लिए उस के दावे को मात्र राजनीतिक संप्रभुता के अर्थ में लेना सही न होगा।

❐ ❐ ❐ ❐ ❐ ❐

मूसा ने कहा तब भी जब कि मैं तुम्हारे पास एक स्पष्ट चीज़ ले कर आया हूँ ? फ़िरऔन ने कहा, तो पेश करो अगर तुम सच्चे हो। मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया और यकायक वह प्रत्यक्ष अज़दहा बन गया। और उस ने अपना हाथ खींचा तो वह देखने वालों के लिए रौशन हो गया। फ़िरऔन ने अपने सरदारों से जो उस के इर्द गिर्द थे, कहा, यह व्यक्ति निश्चय ही एक कुशल जादूगर है। *(अल-क़ुर्आन)*

24. उस ने जवाब दिया आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की समस्त वस्तुओं का रब, अगर तुम विश्वास करने वाले हो।[28]

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

25. उस ने अपने इर्द गिर्द के लोगों से कहा सुनते नहीं हो [29]?

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾

26. मूसा ने कहा तुम्हारा भी रब और तुम्हारे गुज़रे हुए पूर्वजों का भी रब।[30]

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

27. फ़िरऔन ने कहा तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, दीवाना है।[31]

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

28. मूसा ने कहा पूरब और पश्चिम और इन के बीच की समस्त वस्तुओं का रब, अगर तुम बुद्धि रखते हो।[32]

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

29. फ़िरऔन ने कहा अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को पूज्य (इलाह) बनाया [33] तो मैं तुम्हें क़ैद कर के रहूँगा।

قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

30. मूसा ने कहा तब भी जब कि मैं तुम्हारे पास एक स्पष्ट चीज़ ले कर आया हूँ ?

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

31. फ़िरऔन ने कहा, तो पेश करो अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

32. मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया और यकायक वह प्रत्यक्ष अज़दहा बन गया।[34]

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾

33. और उस ने अपना हाथ खींचा तो वह देखने वालों के लिए रौशन हो गया।[35]

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَاۗءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

34. फ़िरऔन ने अपने सरदारों से जो उस के इर्द गिर्द थे, कहा, यह व्यक्ति निश्चय ही एक कुशल जादूगर है।

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

35. यह चाहता है कि जादू के ज़ोर से तुम को तुम्हारे देश से बाहर निकाल दे।[36] तो तुम लोग क्या सुझाव देते हो?

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ڰ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

28. विश्वास ज्ञान से प्राप्त होता है और ज्ञान की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम तर्क, प्रमाण और निशानियाँ हैं। हज़रत मूसा के कहने का मतलब यह था कि यह विशाल कायनात जिस में आसमान, ज़मीन, सूरज, चाँद और सितारे सब शामिल हैं इस बात पर स्पष्ट रूप से तर्क प्रस्तुत करते हैं कि यहाँ एक सर्वोच्च हस्ती है जो पूरी कायनात की रचयिता भी है और स्वामी भी। और जिस का शासन सब पर छाया हुआ है। अत: मनुष्य का सच्चा और वास्तविक प्रभु भी वही है। इस सच्चाई का विश्वास तुम्हें हो सकता है बशर्ते कि तुम दलील की रौशनी में इस कायनात पर विचार करो।

29. यह हज़रत मूसा के जवाब पर व्यंग्य था तथा आश्चर्य की अभिव्यक्ति थी ।

30. यह अतिरिक्त स्पष्टीकरण था इस बात का कि सारे जहान का रब कौन है तथा इस बात की तरफ़ इशारा था कि अगर फ़िरऔन तुम्हारा रब है तो तुम्हारे पूर्वजों का रब कौन था? यह फ़िरऔन तो बाद में पैदा हुआ है। इस लिए उन का रब होने का तो यह दावेदार नहीं हो सकता । मगर कायनात के सृष्टा की संप्रभुत्व अति व्यापक है। वह गुज़रे हुए लोगों समेत समस्त लोगों का प्रभु है।

31. जब फ़िरऔन से हज़रत मूसा की दलील का जवाब न बन पड़ा तो उन पर दीवाना होने का आरोप लगाया । वह जानता था कि मूसा दीवाने नहीं हैं। अगर वह उन को दीवाना समझता तो न बहस को आगे बढ़ाता और न उन से अपने राज्य के प्रति ख़तरा महसूस करता क्यों कि किसी दीवाने से किसी राज्य को ख़तरा नहीं होता ।

32. अर्थात् पूरब पश्चिम पर किस का शासन है? सूरज किस के आदेश से डूबता और निकलता है? और कौन है जिस का हुक्म पूरब और पश्चिम के बीच की समस्त वस्तुओं पर चल रहा है? अगर आदमी बुद्धि से काम ले तो इस का जवाब इस के सिवा कुछ नहीं हो सकता कि अल्लाह ही सारे जहान का रब है। पूरब और पश्चिम का वर्णन करने में इस बात की तरफ़ भी इशारा था कि फ़िरऔन तो ज़मीन के एक सीमित क्षेत्र का मात्र दिखावटी शासक है। वह रब कैसे हो सकता है जब कि उस को न पूरब पर अधिकार है और न पश्चिम पर ।

33. स्पष्ट हुआ कि फ़िरऔन का दावा मात्र राजनैतिक संप्रभुत्व का ही नहीं था बल्कि अपने पूज्य होने का भी था। वह चाहता था कि लोग उस को पूजते भी रहें । ताकि उस को अपनी प्रजा में प्रतिष्ठा का एवं पूज्यनीय स्थान प्राप्त हो और उस के शासन की जड़ें मज़बूत हों ।

34. लाठी का साँप बन जाना अल्लाह तआला की तरफ़ से मोज्ज़ा था जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किया गया। आप की लाठी वास्तव में साँप बन जाती थी और उस की शक्ल अज़दहे की सी होती थी। यह स्पष्ट निशानी थी इस बात की कि हज़रत मूसा उस हस्ती की तरफ़ से भेजे गए हैं जो कायनात का रब है और तमाम चीज़ों पर पूरा सामर्थ्य रखता है।

35. यह दूसरा मोज्ज़ा था जो मूसा अलैहिस्सलाम को मिला था (देखिए सूरह ताहा नोट २३)

36. यह झूठा आरोप था जो फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर लगाया ताकि लोगों को उन के विरुद्ध भड़काया जा सके।

36. उन्होंने कहा इस को और इस के भाई को अभी
मोहलत दीजिए और शहरों में हरकारे भेज दीजिए।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾

कि तमाम माहिर जादूगरों को आप के पास ले
37. आएें ।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾

अतः जादूगर एक निश्चित दिन निश्चित समय
38. पर जमा कर दिए गए।[37]

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾

और लोगों से कहा गया तुम एकत्रित होगे ?[38]
39.

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾

ताकि हम जादूगरों के पीछे चलें यदि हम विजयी
40. हुए।[39]

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾

जब जादूगर आए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा
41. हमें इनाम तो मिलेगा ना अगर हम विजयी हुए।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا
نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾

उस ने कहा, हाँ, ज़रूर और तुम हमारे क़रीबी
42. लोगों में शामिल हो जाओगे।

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾

मूसा हे कहा डाल दो जो कुछ तुम्हें डालना है।
43.

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾

उन्होंने अपनी रस्सियाँ और ताठियाँ डाल दीं
44. और बोले फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम [40] हम
ही विजयी रहेंगे।

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ
اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾

फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो यकायक
45. वह उन के जादू को हड़प करने लगा ।[41]

فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾

इस पर जादूगर बेक़ाबू हो कर सज्दे में गिर
46. पड़े।[42]

فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

और बोल उठे हम ईमान लाए सारे जहान के
47. रब पर।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

मूसा और हारून के रब पर।[43]
48.

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾

37. यह जश्न का दिन था और दिन चढ़े का समय भी था जैसा कि दूसरी जगह पर स्पष्ट रूप से वर्णन हुआ है।

38. प्रश्नवाचक शैली में लोगों को जमा होने पर उकसाया गया है।

39. कहने वाले फ़िरऔन के समर्थक थे। उन्होंने यह नहीं कहा था कि जो विजयी होगा या जो सत्य प्रकट होगा उस का हम अनुपालन करेंगे बल्कि कहा कि हम जादूगरों के पीछे चलेंगे अगर वे विजयी हुए। इस से स्पष्ट होता है कि वे पक्षपाती मन के साथ आए थे और जादूगरों के पीछे चलने का मतलब फ़िरऔन का अनुपालन था । चूँकि उस समय दो पक्षों में मुक़ाबला हो रहा था । एक जादूगर और दूसरे मूसा व हारून इस लिए उन्हों ने एक पक्ष की हैसियत से जादूगरों का ज़िक्र किया वरना अभिप्रेत यही था कहने का कि हम फ़िरऔन का अनुपालन करेंगे।

40. अरबी में इज़्ज़त का अर्थ शक्ति और वर्चस्व के भी हैं और आदर गौरव एवं प्रतिष्ठा के भी, जादूगरों ने फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम खाई जिस से उन की बहुदेववादी मानसिकता का पता चलता है।

41. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १६८

42. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १७१

43. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १७२,१७३

जादूगरों के ईमान लाने से यह बात सिद्ध हो गई कि हज़रत मूसा जो कुछ पेश कर रहे हैं वह जादू नहीं बल्कि अल्लाह तआला की ओर से मोज्ज़ा है। जादू और मोज्ज़े के अन्तर को जादूगर अच्छी तरह जानता है और उन की यह गवाही कि हज़रत मूसा की लाठी का साँप बन जाना जादू के ज़ोर से नहीं बल्कि अल्लाह के बल और शक्ति के आधार पर है, सत्य और असत्य के अन्तर को उजागर करने वाली बात थी ।

49. फ़िरऔन ने कहा तुम ने इस को मान लिया इस से पहले कि मैं तुम को इस की इजाज़त देता।[44] यह तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम को जादू सिखाया है।[45] तो अभी तुम्हें मालूम हुआ जाता है।मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशा से काट दूँगा और तुम सब को सूली पर चढ़ाऊँगा।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ
السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ
مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۚ ﴿۴۹﴾

50. उन्होंने जवाब दिया कोई हर्ज नहीं। हम अपने रब ही की तरफ़ लौटने वाले हैं।[46]

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۡ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ ﴿۵۰﴾

51. हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा प्रभु हमारे दोषों को क्षमा कर देगा कि हम सब से पहले ईमान लाए।[47]

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَاۤ اَنْ كُنَّاۤ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ ﴿۵۱﴾

52. और हम ने [48] मूसा पर प्रकाशना की कि मेरे बन्दों को ले कर रात में निकल जाओ तुम्हारा पीछा किया जाएगा।[49]

وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْۤ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۵۲﴾

53. इस पर फिरऔन ने शहरों में हरकारे भेजे।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۚ ﴿۵۳﴾

54. कि ये मुट्ठी भर लोग हैं।[50]

اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿۵۴﴾

55. और हमें गुस्सा दिला रहे हैं।

وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿۵۵﴾

56. और हम एक चौकन्ना रहने वाले समूह हैं।[51]

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ؕ ﴿۵۶﴾

57. आख़िरकार हम ने उन्हें बागों और चश्मों (स्त्रोतों) से निकाला ।

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۵۷﴾

58. और ख़ज़ानों और बेहतरीन स्थान से।[52]

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۵۸﴾

59. (उन के साथ) उसी तरह किया।और बनी इस्राईल को हम ने उन (नेमतों)का वारिस बना दिया।[53]

كَذٰلِكَ ؕ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ ﴿۵۹﴾

60. उन्होंने सुबह होते ही उन का (बनी इस्राईल का) पीछा किया।[54]

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿۶۰﴾

61. जब दोनों समूह आमने सामने हो गए तो मूसा के साथी पुकार उठे कि हम तो पकड़े गए !

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰۤى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۚ ﴿۶۱﴾

62. मूसा ने कहा हरगिज़ नहीं, मेरे साथ मेरा रब है, वह मुझे राह दिखाएगा।[55]

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿۶۲﴾

44. कैसी अन्यायपूर्ण शासन व्यवस्था होगी वह जहाँ अल्लाह पर ईमान लाने के लिए भी हुकूमत से इजाज़त लेने की आवश्यकता हो ।

45. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ८१

46. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ८३

47. अर्थात् इस नाज़ुक अवसर पर फ़िरऔन की जाति में से हम सब से पहले ईमान लाने वाले बने ।

48. हज़रत मूसा और फ़िरऔन के बीच एक लम्बे समय तक जो दअवती कशमकश होती रही उस का वर्णन सूरह आराफ़ में हुआ है। यहाँ आरम्भिक घटनाऐं बयान करने के बाद फ़िरऔन के अन्जाम को बयान किया गया है। क्यों कि मौके के लिहाज़ से यहाँ बात स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि हठ्धर्म लोग मोज्ज़ों को देख कर ईमान नहीं लाते। उन की आँखें उस समय खुलती हैं जब वे अन्जाम को पहुँच जाते हैं।

49. बनी इस्राईल मिस्र के जुश्न के इलाक़े में रहते थे और बाईबिल से मालूम होता है कि फ़िरऔन ने एक के बाद एक नाज़िल होने वाली आफ़तों से तंग आ कर उन्हें पहले तो जाने की अनुमती दे दी किन्तु उस को बाद में अपनी ग़लती का एहसास हुआ इस लिए अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया ।

इधर हज़रत मूसा के कहने पर बनी इस्राईल ने हिजरत की तैयारी की होगी और जब अल्लाह तआला ने एक ख़ास समय में निकलने का आदेश दे दिया तो बनी इस्राईल का काफ़िला हज़रत मूसा के नेतृत्व में निकल पड़ा ।

रात का समय तय करने की एक मसलहत यह भी हो सकती है कि बियाबान में सफ़र के लिए रात का समय सुकून का होने के कारण उचित होता है।

हज़रत मूसा को अल्लाह तआला ने पहले ही सचेत कर दिया था कि तुम्हारा पीछा किया जाएगा। अर्थात् बनी इस्राईल फ़िरऔन वालों को पीछा करते देख कर परेशान न हों। अल्लाह तआला उन की मुक्ति का साधन करेगा।

50. अर्थात् बनी इस्राईल एक अल्पसंख्यक समूह हैं।

51. फ़िरऔन का यह ऐलान फौज और सरदारों को हर तरफ़ से एकत्रित करने के लिए था ताकि बनी इस्राईल के खतरे का आख़िरी तौर से मुक़ाबला किया जा सके। परन्तु अल्लाह तआला ने उस की तदबीर को उन ही के विरुद्ध उलट दिया और इस की सूरत वह हुई जो आगे बयान हुई है।

52. अर्थात् अल्लाह की तदबीर ऐसी हुई कि फ़िरऔन और उस के राज्य सहयोगी और उस का लश्कर अपने उत्कृष्ट विश्रामालयों एवं भव्य भवनों को छोड़ कर मात्र बनी इस्राईल की दुश्मनी में उस का पीछा करने के उद्देश्य से बाहर निकल गये और ऐसे निकल गए कि फिर उन को लौटना नसीब न हुआ ।

53. इस का मतलब यह नहीं है कि बनी इस्राईल को मिस्र की उन चीज़ों का वारिस बना दिया क्यों कि मिस्र से हिज़रत करने के बाद ''त्या'' की घाटी होते हुए उन्हों ने फ़िलस्तीन का रुख किया जो उन की असल मन्ज़िल थी बल्कि मतलब यह है कि जो नेमतें फ़िरऔन की क़ौम को प्रदान हुई थीं वह उन से छीन ली गई और ये नेमतें (अर्थात् ऐसी ही नेमतें बनी इस्राईल को प्रदान की गई। अत: सूरह आराफ़ में बयान हुआ है :-

وَاَوۡرَثۡنَا الۡقَوۡمَ الَّذِيۡنَ كَانُوۡا يُسۡتَضۡعَفُوۡنَ مَشَارِقَ
الۡاَرۡضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىۡ بٰرَكۡنَا فِيۡهَا۔(اعراف ۱۳۷)

अर्थ :- ''और जिस क़ौम को कमज़ोर बना कर रखा गया था हम ने उस को उस सरज़मीन के पूरब और पश्चिम का वारिस बना दिया जिस में हम ने बरकतें रखी थीं ।'' (आराफ़१३७)

स्पष्ट है यहाँ बरकतों वाली सरज़मीन से तात्पर्य फ़िलस्तीन की सरज़मीन है। और क़ुर्आन यह भी पुष्टि करता है कि अगर एक तरफ़ फ़िरऔन और उस के लश्कर को डूबो दिया गया तो दूसरी तरफ़ देश पर ऐसी तबाही लाई गई कि ऊँची ऊँची इमारतें ढह गई और उस की सारी सांस्कृतिक प्रगति ख़ाक में मिल गई।

وَدَمَّرۡنَا مَا كَانَ يَصۡنَعُ فِرۡعَوۡنُ وَقَوۡمُهٗ
وَمَا كَانُوۡا يَعۡرِشُوۡنَ .(اعراف ـ ۱۳۷)

अर्थ:- ''और फ़िरऔन और उस की क़ौम ने जो कुछ बनाया था और जो भवन खड़े किये थे वे सब हम ने मलियामेट कर दीं ''। (आराफ़ १३७)

मिस्र में संभवत: यह तबाही पुरवा हवा के चलने से आई थी। (वल्लाह आलम)

54. अर्थात् जब बनी इस्राईल मिस्र से निकले तो फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया।

55. इस नाज़ुक मौक़े पर वास्तव में विश्वास की परिक्षा थी । हज़रत मूसा ने बनी इस्राईल की घबराहट को दूर करने के लिए जो शब्द कहे उस में उन के अल्लाह के प्रति गहरे विश्वास एवं आस्था का पता चलता है।

63. उस समय हम ने मूसा पर प्रकाशना की कि अपना असा (लाठी) समुद्र पर मारो। अतः समुद्र फट गया और हर भाग विशाल पहाड़ की तरह बन गया।[56]

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ
فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

64. वहाँ हम दूसरे गिरोह को भी क़रीब लाए।[57]

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿٦٤﴾

65. और मूसा और उन सब को जो उन के साथ थे, हम ने बचा लिया।[58]

وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾

66. फिर दूसरों को ग़र्क़ कर (डुबो) दिया।[59]

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٦﴾

67. निस्संदेह इस में बहुत बड़ी निशानी है।[60] मगर इन लोगों में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।[61]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

68. और निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी।[62]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

69. और इन को इब्राहीम का वृत्तांत सुनाओ।[63]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾

70. जब उस ने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा कि ये तुम किन चीज़ों की पूजा करते हो ![64]

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾

71. उन्होंने कहा हम बुतों की पूजा करते हैं और इन्हीं की पूजा पर हम जमे रहेंगे।

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ﴿٧١﴾

72. उस ने पूछा क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो?

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾

73. या तुम्हें लाभ अथवा हानि पहुँचाते हैं?

أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾

74. उन्होंने उत्तर दिया नहीं हम ने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते पाया है।[65]

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾

75. उस ने कहा तुम ने उन (बुतों) को देखा जिन को तुम पूजते रहे हो।[66]

قَالَ أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾

76. तुम और तुम्हारे पिछले बाप दादा।

أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾

56. पानी का इस प्रकार से फ़टना कि पानी के दो भाग हो कर पहाड़ की तरह खड़े हो जाऐं और बीच में थल मार्ग बन जाए जैसा कि सूरह ताहा आयत ७७ में बयान हुआ है स्पष्ट चमत्कार (ख़ुदा की तरफ़ से प्रकट होने वाली असाधारण निशानी) था। यह चमत्कार क़ुर्आन के अनुसार हज़रत मूसा के समुद्र पर लाठी मारने के फलस्वरूप प्रकट हुआ था। अत: इस में कुछ कहने सुनने की गुन्जाइश नहीं है और न यह समझना सही है कि तूफ़ानी हवाओं के नतीजे में समुद्र का पनी हट गया था। क्यों कि ऐसा कभी नहीं होता कि तूफ़ानी हवाऐं समुद्र के पानी को हटा कर बीच में थल मार्ग बना दें। फिर यह सवाल भी पैदा होता है कि यदि तूफ़ानी हवाऐं या पुरवा हवा इतनी तेज़ चल रही थी कि उस ने समुद्र के पानी को ढकेल कर दीवार खड़ी कर दी थी तो बनी इस्राईल के लिए इन तूफ़ानी हवाओं से सही सलामत गुज़र जाना कैसे संभव हुआ । ऐसा भयावह तूफ़ान तो उन की लाशें गिरा सकता था। मगर क्या कारण है कि उन में से कोई भी उस तूफ़ान की ज़द में नहीं आया। यह संभव है कि उस समय पुरवा हवा भी चतली हो जैसा कि बाइबिल का बयान है किन्तु समुद्र के फटने का कारण पुरवा हवा थी यह कहना सही नहीं। क़ुर्आन इस घटना को एक मोज्ज़े की हैसियत से प्रस्तुत करता है न कि आकस्मिक घटना या किसी नित्यक्रम के अनुसार घटित होने वाली किसी घटना की हैसियत से ।

57. अर्थात् फ़िरऔन वालों को वहाँ पहुँचा दिया।

58. अर्थात् मूसा के नेतृत्व में जो काफ़िला चल रहा था वह सकुशल समुद्र को पार कर गया न उन को कोई क्षति पहुँची और न फ़िरऔन तथा उस का लश्कर उन्हें पकड़ने में सफल हुए।

59. किन्तु दूसरे गिरोह अर्थात् फ़िरऔन और उस के लश्कर के साथ अल्लाह तआला का मामला यह हुआ कि जब वे रास्ता खुला पा कर समुद्र के बीच पहुँच गए तो अल्लाह के आदेशानुसार समुद्र के दोनों भाग एक दूसरे से मिल गए और फ़िरऔन भी डूब मरा तथा उस का पूरा लश्कर भी जिस में उस के राज्य के प्रमुख सदस्य (मंत्री आदि) भी थे। यह अन्त हुआ उस व्यक्ति का जो सर्वोच्च रब होने का दावेदार था और यह अन्त हुआ उन लोगों का जो उस के आदेशों पर चलते थे।

60. अर्थात् नबियों के इतिहास की इस घटना में इस बात की खुली निशानी मौजूद है कि अल्लाह लोगों को सत्य मार्ग दिखाने के लिए रसूल भेजता है जब उस की क़ौम उस पर ईमान लाने से इन्कार कर देती है और उस के विरूद्ध हिंसा पर उतर आती है तथा दमनात्क कार्रवाई करने लगती है तो उस क़ौम को अल्लाह तआला इबरतनाक सज़ा देता है।

फ़िरऔन और उस के लश्कर का डूबना और हज़रत मूसा, हज़रत हारून और बनी इस्राईल की ज़ालिम क़ौम से मुक्ति और उन का असाधारण तरीक़े पर समुद्र को पार कर जाना एक अखण्डनीय ऐतिहासिक घटना है जो तौरात और क़ुर्आन दोनों से साबित है। मतलब यह कि संसार के बहुसंख्यक (यहूदी, ईसाई और मुसलमान) इस पर सहमत हैं। फिर क्या ईमान लाने के लिए इतना बड़ा साक्ष्य भी काफ़ी नहीं?

61. व्याख्या के लिए देखिए नोट ८

62. व्याख्या के लिए देखिए नोट ९

ऊपर की आयत में और इस आयत में जो मज़मून बयान हुआ है उस को आगे भी प्रत्येक घटना की समाप्ति पर दोहराया गया है ताकि ग़ाफ़िल इन्सान चौंक जाए।

63. यहाँ इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वह वृत्तांत प्रस्तुत किया जा रहा है जो उन की दअवत से सम्बन्धित है और यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि बुत परस्ती और अल्लाह का साझी ठहराना (अर्थात् शिर्क) वह बड़ी गुमराही है जिस से ख़ुदा के बन्दों को मुक्त करने के लिए इब्राहीम जैसे प्रतापी नबी उठ खड़े हुए थे। अत: यदि आज क़ुर्आन का पैग़म्बर इसी उद्देश्य के लिए उठ खड़ा हुआ है तो यह कोई अनोखी बात नहीं है। बल्कि यह नबियों की दअवत की बुनियाद है। नबी सब से पहले गुमराही का नोटिस लेते हैं और प्रबल रूप से इस का खण्डन करते हुए तौहीद (एकेश्वरवाद) को पेश करते हैं।

64. दअवत की एक तत्वपूर्ण शैली यह है कि इस प्रकार के प्रश्न उभारे जाऐं ।

दूसरी बात यह भी स्पष्ट हुई कि अगर बेटा अल्लाह को मानने वाला और बाप अल्लाह का साझी ठहराने वाला है तो बेटे को चाहिए कि अपने बाप के सामने एक अल्लाह के होने का तर्क प्रस्तुत करे। यह इब्राहीमी तरीक़ा है।

65. बुत परस्तों का यह स्वीकार करना कि बुत न सुनते हैं और न लाभ या हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखते हैं, बुत परस्ती के आधार रहित असत्य एवं बुद्धि से परे होने का स्पष्ट प्रमाण है। परन्तु इस बुद्धि में न समाने वाले असत्य को उन्होंने मात्र इस कारण जायज़ बताया कि बाप दादा से इन की पूजा होती चली आ रही है। अर्थात् हम अपने पूर्वजों के धर्म को और अपनी जातीय सभ्यता को किस प्रकार त्याग सकते हैं।

66. अर्थात् बाप दादा के अंधानुसरण का मतलब तो चिन्तन मनन एवं सोच विचार की क्षमता पर ताला लगा देना है। इस परिस्थिति में यह प्रश्न उठता है कि फिर सोच विचार की क्षमता मनुष्य को किस लिए प्रदान की गई है। अगर इस लिए प्रदान की गई है कि इन को काम में ला कर मनुष्य सही और ग़लत जायज़ और नाजायज़ में पहचान कर सके तो

परस्तिश और इबादत जैसे महत्वपूर्ण मामलों में मनुष्य अन्धा क्यों बन जाता है? वह इस बात पर क्यों नहीं सोचता कि जो मामला ख़ुदावन्देआलम के साथ किया जा सकता है वह ईंट पत्थर के साथ करने का क्या अर्थ ।

ध्यान रहे कि बुत परस्त अपने देवी देवताओं के बारे में तो भ्रम एवं अंधविश्वास के कारण ऐसी धारणा रखते हैं कि वे उन को लाभ या हानि पहुँचा सकते हैं किन्तु बुतों के बारे में वे ये झूठा दावा करने का भी साहस नहीं कर सकते क्यों कि बुतों की बेबसी को हर व्यक्ति अपनी आँखों से देखता है जब कि देवी देवताओं का अस्तित्व मात्र काल्पनिक है इस लिए उन में ख़ुदा के गुणों, के पाये जाने का दावा करना, उन लोगों के लिए आसान हुआ जो बेबुनियाद बातों पर धर्म का निर्माण करना चाहते हैं।

❒ ❒ ❒ ❒ ❒ ❒

और बाद वालों में मेरे लिए सच्चाई का बोल रख दे। और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में शामिल कर। और मेरे बाप को क्षमा कर दे कि वह गुमराहों में से है। और मुझे उस दिन रुस्वा न कर जिस दिन लोग उठाए जाऐंगे। जिस दिन न धन लाभ देगा और न सन्तान। *(अल-क़ुर्आन)*

77. मेरे तो ये सब शत्रु हैं [67] सिवाय रब्बुल आलमीन (सारे जहान के रब) के।

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾

78. जिस ने मुझे पैदा किया और वह मेरी रहनुमाई फ़रमाता है।[68]

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾

79. जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾

80. और जब मैं बिमार हो जाता हूँ [69] तो वह अच्छा करता है।[70]

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾

81. जो मुझे मौत देगा और फिर मुझे ज़िन्दा करेगा।[71]

وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾

82. और जिस से मैं आशा रखता हूँ कि बदले के दिन वह मेरी ख़ताऐं माफ़ कर देगा।[72]

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾

83. ऐ मेरे रब ![73] मुझे हिकमत (तत्वदर्शिता) प्रदान कर [74] और मुझे अच्छे लोगों में शामिल कर।[75]

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾

84. और बाद वालों में मेरे लिए सच्चाई का बोल रख दे।[76]

وَاجْعَل لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾

85. और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में शामिल कर।[77]

وَاجْعَلْنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾

86. और मेरे बाप को क्षमा कर दे कि वह गुमराहों में से है।[78]

وَاغْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾

87. और मुझे उस दिन रुस्वा न कर जिस दिन लोग उठाए जाऐंगे।

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾

88. जिस दिन [79] न धन लाभ देगा और न सन्तान।

يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾

89. केवल वही लोग (सफल होंगे) जो सलामती वाला दिल [80] ले कर अल्लाह के समक्ष उपस्थित होंगे।

إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾

90. और जन्नत परहेज़गारों के लिए क़रीब लाई जाएगी।[81]

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾

67. अर्थात् बुतों को मैं अपना दुश्मन समझता हूँ मतलब यह है कि बुतों को पूज्य बनाने का परिणाम जहन्नम है इस लिए उन को अपना दुश्मन समझकर उन से दूर रहने में ही भलाई है।

68. अर्थात् जो मेरा पैदा करने वाला है वही मुझे सीधा रास्ता सुझाने वाला भी है इस लिए यह कैसे हो सकता है कि ख़ुदा और मज़हब के मामले में उस स्पष्ट मार्ग को स्वीकार न करूँ जो वह दिखा रहा है और अंधविश्वास की घाटियों में भटकता फिरूँ?

69. यह बात इस तरह भी कही जा सकती थी ''वही मुझे बीमार करता है'' किन्तु इस में अल्लाह तआला के प्रति निरादर का भार उत्पन्न होता था इस लिए हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया ''जब मैं बीमार होता हूँ''। इस से उन के आदर भाव की अभिव्यक्ति होती है और सारे ही नबी अल्लाह तआला के प्रति अत्याधिक आदर और अदब का लिहाज़ रखते हैं और उन के मुख से जो शब्द और जो भी प्रवचन निकलते हैं वे अमूल्य होते हैं।

70. बीमार को अच्छा करना अल्लाह ही का काम है। यह बात बहुदेववादियों को समझाने की थी परन्तु मौजूदा दौर के मुसलमानों को भी समझाना पड़ रही है क्यों कि वे रोगों से छुटकारा पाने के लिए दरगाहों के चक्कर काटते रहते हैं। केवल वही मुसलमान इस से बचे हुए हैं जो अल्लाह की तौफ़ीक़ से सही धारणा रखते हैं।

71. यह तौहीद के साथ क़ियामत का वर्णन और उस पर ईमान लाने का बयान है।

हज़रत इब्राहीम की दअवत जो उन्होंने अपने बाप और अपनी जाति वालों के समक्ष रखी थी क़ुर्आन में कई जगहों पर बयान हुई है जिस से स्पष्ट होता है कि उन्हों ने कई मौक़ों पर कई कई तरह से दअवत पेश की । यहाँ उन्होंने अपने अक़ीदा और ईमान का इज़्हार किया कि मैं किस को रब मानता हूँ और उस की कैसी शान और वह कैसा गुणवान है। दअवत देने का यह तरीक़ा मानोवैज्ञानिक प्रभाव डालता था और हर व्यक्ति को यह सोचने पर आमादा करने वाला था कि वह अपनी धारणाओं मान्यताओं तथा आस्थाओं का जायज़ा ले।

72. यहाँ यह बहस कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कौन कौन सी ख़ताऐं हुई थीं, व्यर्थ है। हो सकता है नुबुव्वत से पहले की ख़ताऐं मुराद हों । बहरहाल बन्दे का काम अपने को ख़ताकार समझ कर ख़ुदा से क्षमा माँगना है क्यों कि बहुत सी ख़ताऐं अनजाने में हो जाती हैं। और नबियों में तो यह एहसास अत्यधिक तीव्र होता है इस लिए वे अल्लाह तआला से क्षमा याचना करते रहते हैं। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दिन में सत्तर बार से अधिक क्षमा याचना (इस्तिग़फ़ार) किया करते थे । और इसी एहसास की अभिव्यक्ति हज़रत इब्राहीम के इस बयान से होती है।

73. ऊपर की आयत में हज़रत इब्राहीम का वह इर्शाद समाप्त हुआ जो उन्होंने अपने बाप और क़ौम से संबोधन कर के कहा था । यहाँ उन की वह दुआ पेश की जा रही है जो उसी माहौल में उन्होंने की थी ।

74. अर्थात् सही समझ प्रदान कर ताकि हालात को समझ कर सही दिशा अपना सकूँ और लोगों के सामने हिकमत भरी बातें पेश कर सकूँ ।

75. अच्छा बनना अल्लाह ही की तौफ़ीक़ पर निर्भर है इस लिए एक नबी भी इस के लिए अल्लाह से तौफ़ीक़ चाहता है और अच्छे लोगों में शामिल किये जाने की दुआ करता है।

76. इस से तात्पर्य सांसारिक प्रसिद्धि और शोहरत नहीं बल्कि वह ज़िक्र-ख़ैर (भली चर्चा) है जो सच्ची मुहब्बत और बेपनाह लगाव के चलते ज़बान पर आ जाए। ''सच्चाई का बोल'' के शब्द कई भाव अपने अन्दर समेटे हुए हैं और विशेष रूप से इस भावार्थ पर तर्क प्रस्तुत करते हैं कि मेरे नुबुव्वत के फ़ैज़ से बाद वाले भी लाभान्वित हों और मेरे लिए हर तरफ़ से सच्चाई की सदाऐं बुलन्द हों आप की दुआ को अल्लाह तआला ने इस तरह से मान दिया कि हर ज़माने में ईमान वाले आप को श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते रहे। यहाँ तक कि आख़िरी उम्मत की नमाज़ों में आप के ज़िक्रे-जमील ने जगह पाई। अत: जहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजा जाता है वहाँ

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ

अर्थ :- ''जिस तरह तूने इब्राहीम पर और उन की सन्तान पर दरूद भेजा'' के दुआ के प्रवचन भी पढ़े जाते हैं। और हज्ज और क़ुर्बानी के अवसर पर कौन है जो इस सच्चाई और वफ़ादारी की मूरत को अपनी श्रद्धा अर्पित न करता हो

سَلٰمٌ عَلٰى اِبْرَاهِيْم

''सलाम हो इब्राहीम पर।''

77. मालूम हुआ कि जन्नत के नसीब होने की दुआ करना नबियों का तरीक़ा है और जन्नत से बेनियाज़ हो कर नेक काम करने की धारणा मात्र सन्यासी कल्पना है।

78. हज़रत इब्राहीम की अपने बहुदेववादी बाप के लिए क्षमा की प्रार्थना उस समय की बात है जब कि उस की मनाही नहीं आई थी। तफ़सील के लिए देखिए सूरह तौबा नोट २१०

79. हज़रत इब्राहीम की दुआ ऊपर की आयत पर समाप्त हो गई। अब अल्लाह तआला की तरफ़ से बदले के दिन के बारे

में अतिरिक्त स्पष्टीकरण है ताकि मौक़े के हिसाब से नसीहत हो।

80. सलामती वाला दिल से मुराद जैसा कि संदर्भ (Context) से स्पष्ट है वह दिल है जो शिर्क से पाक हो और तौहीद का अक़ीदा उस में ऐसा बैठ गया हो कि ईमान का भाव पैदा हो जाए और आचार में नेकी आ जाए। दूसरे शब्दों में वह दिल जो हर प्रकार अन्दरूनी रोग और पाप की गंदगी से पाक हो और जिस का तक़वा, जिस की परहेज़गारी उस के स्वास्थ का कारण बने और व्यवहारिक जीवन को सँवारे ।

81. अर्थात् क़ियामत के दिन जन्नत परहेज़गारों के स्वागत के लिए मौजूद होगी । हश्र के मैदान से जन्नत में पहुँचने के लिए कुछ देर न लगेगी । इधर फ़ैसला हुआ उधर जन्नत में पहुँच गए।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी । नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया । *(अल-क़ुर्आन)*

91. और जहन्नम गुमराहों के लिए बेनिक़ाब कर दी जाएगी ।[82]

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ﴿٩١﴾

92. और उन से कहा जाएगा कि कहाँ हैं वे जिन की तुम परस्तिश करते थे।

وَقِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾

93. अल्लाह को छोड़ कर, क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या अपना बचाव करेंगे।[83]

مِن دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنصُرُونَكُمْ أَوْ يَنتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾

94. फिर वे और तमाम गुमराह लोग उस में औंधें झोंक दिए जाऐंगे।

فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾

95. और इब्लीस के सारे लश्कर भी ।[84]

وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾

96. वे वहाँ आपस में झगड़ते हुए कहेंगे।

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾

97. अल्लाह की क़सम !हम ख़ुली गुमराही में थे।[85]

تَاللَّهِ إِن كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾

98. जब की तुम को रब्बुल आलिमीन के बराबरी का ठहराते थे।

إِذْ نُسَوِّيكُم بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٨﴾

99. और मुजरिमों [86] ही ने हम को गुमराह किया था।

وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾

100. अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं।

فَمَا لَنَا مِن شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾

101. और न कोई जिगरी दोस्त है ।[87]

وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾

102. अगर हमें एक बार और लौटने का मौक़ा मिल जाए तो हम मोमिन होंगे।[88]

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾

103. निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है [89] मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।[90]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

104. और बेशक तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी।[91]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

105. नूह [92] की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया।[93]

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾

82. जहन्नम आज नज़रों से ओझल है किन्तु क़ियामत के दिन गुमराह लोग हश्र के मैदान में उस को अपने सामने बिलकुल खुला पाऐंगे ।

83. बुत परस्तों के साथ उन के बुत भी जहन्नम में झोंक दिए जाऐंगे । उस समय बुतों की बेबसी उन के भक्तों एवं पुजारियों पर बिलकुल ज़ाहिर होगी कि ये अपने भक्तों की मदद क्या कर सकते हैं स्वयं अपने को भी नहीं बचा सकते। और यही अन्जाम फ़िरऔन जैसे उद्दंड लीडरों का भी होगा जो दुनिया में पूज्य बन बैठे थे कि वे अपने अनुयायियों एवं भक्तों की सहायता क्या करेंगे स्वयं अपने को जहन्नम से बचा नहीं सकेंगे ।

84. मुराद शैतान हैं जो लोगों को गुमराह करते रहे ।

85. वे ख़ुदा की क़सम खा कर अपनी गुमराही को मानेंगे। गोया उन्हें अपनी गुमराही का विश्वास उस समय हो गया जब वे अपने अन्जाम को पहुँच गए।

86. तात्पर्य है गुराह पेशवा, गुमराह हाकिम और लीडर।

87. गुमराहों के जो जिगरी दोस्त दुनिया में रहे होंगे उन से कोई रिश्ता आख़िरत में बाक़ी नहीं रहेगा और कोई न होगा जो उन के साथ हमदर्दी करे या उन के प्रति सहानुभूति व्यक्त करे ।

88. दुनिया में लौटने की वे इच्छा प्रकट करेंगे ताकि मोमिन बन जाऐं किन्तु उन की यह इच्छा पूरी न हो सकेगी । अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनआम नोट ४६ से ४८

89. अर्थात् हज़रत इब्राहीम का जो वृत्तांत ऊपर बयान हुआ उस में इस बात की स्पष्ट निशानी मौजूद है कि बुत परस्ती और शिर्क सरासर ग़लत और स्पष्ट असत्य है और तौहीद (एकेश्वरवाद) ही सही और सत्य है अतः क़ुर्आन का पैग़म्बर जो दअवत पेश कर रहा है सरासर सत्य की दअवत है और इब्राहीमी दअवत से कुछ भी अलग नहीं।

90. व्याख्या के लिए देखिए नोट ८

91. व्याख्या के लिए देखिए नोट ९

92. हज़रत नूह का वृत्तांत विस्तार के साथ सूरह आराफ़, सूरह हूद, और सूरह मोमिनून में ग़ुज़र चुका ।

93. हज़रत नूह को झुठलाना तमाम रसूलों को झुठलाने के समानार्थ था क्यों कि सब का दीन एक ही रहा है और सब की दअवत भी एक ।

106. जब कि उन के भाई [94] नूह ने उन से कहा डरते नहीं हो ?[95]

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾

107. मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।[96]

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾

108. तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।[97]

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾

109. मैं इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक रब्बुलआलमीन (सारे जहान के रब) के ज़िम्मे है।[98]

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

110. तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।[99]

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾

111. उन्होंने कहा क्या हम तुम्हें मान लें जब कि तुम्हारी पैरवी नीच लोगों ने स्वीकार की है।[100]

قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾

112. उस ने कहा मुझे क्या मालूम वे क्या करते रहे हैं।[101]

قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

113. उन का हिसाब तो मेरे रब के जिम्मे है काश कि तुम समझो ।

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

114. और मैं उन लोगों को धुतकारने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं।[102]

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

115. मैं तो बस खुला ख़बरदार करने वाला हूँ ।

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾

116. उन्होंने कहा ऐ नूह अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार किये जाओगे।[103]

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

117. उस ने दुआ की [104] ऐ मेरे रब ! मेरे जाति ने मुझे झुठला दिया।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

118. अब तू मेरे और इन के बीच साफ़ फ़ैसला कर दे [105] और मुझे और जो ईमान वाले मेरे साथ हैं उन को मुक्ति दे।

فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي
وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

119. आख़िरकार हम ने उस को और उन को जो उस के साथ थे भरी हुई नाव में निजात दी।[106]

فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾

94. हज़रत नूह को उन की क़ौम का भाई इस लिए कहा गया है कि वह उस सोसाइटी के सदस्य थे इस लिए न ज़बान की कोई अजनबियत थी और न लोगों के लिए उन को पहचानना मुश्किल था ।

95. मुराद अल्लाह से डरना है।

96. अर्थात् अल्लाह ने पैग़ाम पहुँचाने की जो अमानत मेरे सुपुर्द की है उस को मैं पूरी ज़िम्मेदारी के साथ अदा करने वाला हूँ। अपनी ओर से न मैं उस में कोई कमी करूँगा और न बेशी । इस लिए जो कुछ मैं ख़ुदा की तरफ़ से पेश कर रहा हूँ उस को अमानत समझकर स्वीकार करो ।

97. यही बात जैसा कि आगे बयान हुआ है, हर रसूल ने अपनी जाति वालों से कही थी। इस लिए यह वाक्य नबियों की संयुक्त दअवत का प्रतिनिधित्व करने वाला वाक्य है। इस से दअवत के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर रौशनी पड़ती है।

प्रथम:- अल्लाह का डर जो उस की महानता की कल्पना से उत्पन्न होता है, दीन के लिए आधारशिला की हैसियत रखता है। इस लिए खुले शब्दों में अल्लाह से डरने और उस का तक़वा अपनाने की दअवत देना चाहिए । और यह सच्ची बात है कि जब तक आदमी को उस के ग़लत रवैये पर सचेत नहीं किया जाता और सामने आने वाले ख़तरों से आगाह नहीं किया जाता वह सुधार के लिए आमादा नहीं होता । यही कारण है कि एक रसूल जब दअवत को ले कर उठता है तो वह ख़ुदा से गाफ़िल लोगों को चौंकाता है, उस के प्रकोप और उस की यातना से डराता है और उन तमाम ख़तरों से आगाह करता है जो आख़िरत में पेश आने वाले हैं। डराने का यह रंग उस की दअवत पर हावी रहता है।

द्वितीय :-''अल्लाह का तक़वा अपनाओ'' की दअवत में अल्लाह की इबादत (उपासना) और उस का अनुपालन दोनों का मुतालबा शामिल है क्यों कि तक़वा का मतलब अल्लाह से डर कर उस के गुनाह से बचने और परहेज़गारी अपनाने के हैं। जो व्यक्ति अल्लाह की इबादत एकाग्रचित हो कर नहीं करता वह ख़ुदा से बेख़ौफ़ अर्थात तक़वा की विशेषता से बिलकुल कोरा है। और जो व्यक्ति उस का अनुपालन नहीं करता वह गुनाह पर गुनाह किये चला जाता है इस लिए वह तक़वा से महरूम है। उस की गिनती मुत्तक़ियों में नहीं हो सकती ।

आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि नबियों की दअवत अल्लाह की उपासना और अनुपालन दोनों के लिए होती है। क़ुर्आन में अगर उन की दअवत को

اُعْبُدُو اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ

अर्थ:- ''अल्लाह की इबादत करो तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई इष्ट पूज्य नहीं ''। के शब्दों में प्रस्तुत कर दिया गया है तो दूसरी जगह पर इन की दअवत के इस पहलू को भी उजागर किया गया है اِتَّقُوْاللّٰهَ (अल्लाह से डरो) सूरह नूह में तो हज़रत नूह की दअवत के दोनों पहलू तथा रसूल के अनुपालन का पहलू भी सब एक साथ प्रस्तुत कर दिए गए हैं

اَنِ اعْبُدُو اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ

अर्थ:- ''अल्लाह की इबादत करो, उस से डरो और मेरा अनुपालन करो ।''

तृतीय :- अल्लाह की उपासना और अनुपालन के साथ समय का रसूल अपने अनुपालन का भी मुतालबा करता रहा है। यह इस लिए भी कि रसूल इसी लिए भेजा जाता है कि अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार उस का अनुपालन किया जाए। और इस लिए भी कि रसूल का अनुपालन अल्लाह के अनुपालन का व्यवहारिक स्वरूप है। अल्लाह का हुक्म यदि प्रमाणिक वह्य के रूप में हो तब भी उस को व्यवहारिक स्वरूप देने के लिए जिन तफ़सीलात की ज़रूरत होती है उन को एक रसूल ही अपने मतों और अपने आचारों से स्पष्ट कर देता है इस लिए यह समझना सही नहीं कि रसूल की हैसियत मात्र पैग़ाम पहुँचा देने वाले की है बल्कि वह व्यवहारिक मार्गदर्शन का ज़िम्मेदार भी है और लोगों पर उस की पैरवी तथा अनुपालन करना अनिवार्य है।

ये है नबियों की दअवत की विशेषताऐं । मगर मौजूदा ज़माने में जो इस्लामी अन्दोलन चले हैं वे ख़ुदा का डर पैदा करने की सामाग्री उतना नहीं जुटाते जितना कि इस्लाम की राजनैतिक तथा समाजिक व्यवस्था की व्याख्या तथा स्पष्टीकरण की सामाग्री जुटाते हैं। वे लोगों में परलोक की मुक्ति की भावना जगाने से अधिक संसार में अच्छे समाज की स्थापना की भावना पैदा करते हैं । वे गैरुल्लाह की परस्तिश पर जहन्नम कि चेतावनी सुनाने का आयोजन तो बहुत कम करते हैं अलबत्ता इन्सान को गुलामी से मुक्ति दिलाने का नारा पूरे ज़ोर से लगाते हैं। नतीजा यह कि दअवत दूसरे रूख पर जा पड़ती है और उस की स्पिरिट भी प्रभावित हो जाती है।

98. एक नबी का जीवन उस के सच्चे और नि:स्वार्थ होने का स्पष्ट प्रमाण होता है इस लिए उस का यह दावा कि मेरे समक्ष तुम्हारी भलाई के सिवा और कुछ नहीं है और मैं केवल अल्लाह से ही इस का बदला चाहता हूँ, अपनी दलील आप होता है।

99. हज़रत नूह ने अपनी यह दअवत फ़िर दोहराई यह स्पष्ट करने के लिए कि मेरा मुतालबा तुम से माल का नहीं बल्कि दअवत के क़ुबूल करने का है और मैं यह सेवा बिलकुल

नि:स्वार्थ हो कर सच्चे मन से अन्जाम दे रहा हूँ जिस में तुम्हारे लिए शक की कोई गुन्जाइश नहीं है।

100. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ४१

101. अर्थात् मैं इन के ज़ाहिरी अमल को जानता हूँ और इस दृष्टि से कि वे अल्लाह के मोमिन बन्दे हैं। रहे इन के गुप्त कर्म तो अल्लाह ही को उस का ज्ञान है, ग़ैब की बातें मुझे क्या मालूम । फिर मैं किस बुनियाद पर उन्हें नीच कहूँ जब कि मेरी जानकारी में ऐसी कोई बात नहीं है जो उन्हें नीच ठहराने वाली हो ।

हज़रत नूह के जवाब से स्पष्ट हुआ कि उन के साथियों पर निकृष्ट और नीच होने का आरोप सरासर झूठ था ।

102. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ४४

103. पूरी जाति का दुस्साहस देखिए कि जो व्यक्तित्व उन के बीच सर्वाधिक मूल्यवान था और जिस ने उन की सहानुभूति का सामान करने में कोई कसर न उठा रखी थी उस का सत्कार वे पत्थर से करना चाहते थे। जिन लोगों की बुद्धि में गोबर भर जाए वे ऐसी ही बातें करते हैं।

104. यह दुआ हज़रत नूह ने उस समय की जब कि दअवती संघर्ष के लम्बे अंतराल के बाद उन को अपनी जाति के ईमान लाने की कोई आशा शेष न रही ।

105. मुराद दो टूक फ़ैसला है जो काफ़िरों के लिए अज़ाब और मोमिनों के लिए निजात (मुक्ति) के रूप में ज़ाहिर होता है।

106. अर्थात् ऐसी नाव जो ईमान लाने वालों से और काम आने वाले जानवरों से भरी हुई थी।

मैं इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है। यह क्या बात है कि तुम हर ऊँचे स्थान पर व्यर्थ के स्मारक बनाते हो? और बड़े बड़े महल बनाते हो जैसे कि तुम्हें हमेशा (यहीं) रहना है। और जब तुम (किसी को) गिरफ़्त में लेते हो तो जाबिर बन कर गिरफ़्त में लेते हो? तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो। *(अल-क़ुर्आन)*

120. इस के बाद बाक़ी लोगों को डुबो दिया।[107]

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾

121. निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है [108] मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

122. और तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

123. आद [109] ने रसूलों को झुठलाया।

كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

124. जब कि उन के भाई हूद ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं ?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

125. मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

126. तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।[110]

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾

127. मैं इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

128. यह क्या बात है कि तुम हर ऊँचे स्थान पर व्यर्थ के स्मारक बनाते हो?[111]

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

129. और बड़े बड़े महल बनाते हो जैसे कि तुम्हें हमेशा (यहीं) रहना है।[112]

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾

130. और जब तुम (किसी को) गिरफ़्त में लेते हो तो जब्बार बन कर गिरफ़्त में लेते हो?[113]

وَإِذَا بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

131. तो अल्लाह से डरो [114] और मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٣١﴾

132. डरो उस से जिस ने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से जिन को तुम (अच्छी तरह) जानते हो।

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُم بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾

133. उस ने तुम्हारी मदद की चौपायों और औलाद से।

أَمَدَّكُم بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿١٣٣﴾

134. और बाग़ों और स्रोतों से।[115]

وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾

107. नूह की क़ौम के डूबने का क़िस्सा सूरह हूद आयत ३७ से ४४ में विस्तार से बयान हुआ है।

108. निशानी इस बात की कि रसूल का विरोध करने वाली जाति पर अल्लाह का प्रकोप उतरता है। और वह जाति इस तरह तबाह कर दी जाती है कि उस का एक सदस्य भी विनाश से नहीं बचता । जब कि रसूल और उस के वे तमाम साथी जो उस पर ईमान ला चुके होते हैं इस प्रकार बचा लिए जाते हैं कि उन में से एक व्यक्ति भी अज़ाब की जद में नहीं आता । अल्लाह तआला की ओर से इस करिश्मे का घटित होना इतिहास का एक जीवित एवं स्पष्ट साक्ष्य है।

परन्तु आश्चर्य है कि इतिहास के इन जीवित एवं स्पष्ट साक्ष्यों को जिन की निशानदेही क़ुर्आन करता है इतिहास की मौजूदा किताबों में ढूँढना पड़ता है। क्यों कि इतिहासकारों ने अपनी ख़ास मानसिकता के चलते इन से विमुखता बरती है और हमारे देश में विश्व का जो इतिहास कालेजों में पढ़ाया जाता है उस में जातियों के उत्थान और पतन का यह महत्वपूर्ण पहलू सिरे से बहस में लाया ही नहीं गया है। कैसे विचित्र हैं ये इतिहासकार और कैसी विचित्र हैं उन की ये किताबें ।

109. आद का क़िस्सा सूरह आराफ़ आयत ६५ से ७२ सूरह हूद आयत ४८ से ६० में तफ़सील से बयान हुआ है उस के नोट तथा सूरह फ़ज्र के नोट ८ से ११ सामने रहें ।

110. इस की व्याख्या ऊपर नोट ९७ में गुज़र चुकी ।

111. वे टीलों और पहाड़ों पर ऐसी इमारतें बनाते थे जो किसी जायज़ सामाजिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए नहीं होती थी बल्कि उन का मक़सद राष्ट्रीय स्मारकों को स्थापित करना था ताकि उन पर गर्व किया जा सके । परन्तु इस्लाम की दृष्टि में ये सब व्यर्थ के काम हैं क्यों कि अपनी शक्ति एवं संसाधनों को नुमाइशी कामों में लगाने से आदमी अपने जीवन लक्ष्य से गाफ़िल हो जाता है आख़िरत के बजाए दुनिया ही को अन्तिम लक्ष्य समझने लगता है।

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि इस्लाम सामाजिक जीवन के लिए भी हिदायत देता है और लोगों को मनमानी करने की आज़ादी नहीं देता। क़ुर्आन की इस गिरफ़्त के बावजूद जो उस ने व्यर्थ के स्मारक स्थापित करने पर की है मुस्लिम शासक अपने स्मारक बनाने का शौक़ पूरा करते रहे जिस के उदाहरण दिल्ली का क़ुतुबमीनार और आगरे का ताजमहल है। मुसलमान इन स्मारकों पर अपना क़ौमी अधिपत्य जताते हैं और इन पर गर्व करते हैं जब कि इस्लाम के दृष्टिकोण से यह एक व्यर्थ का, तथा बेजा ख़र्च का काम था जो गर्व की बात नहीं बल्कि अफ़सोस की बात है। और इस से भी अधिक आपत्तिजनक वे भव्य दरगाहें और रौज़े हैं जो बुजुर्गों की श्रद्धा में निर्माण किये गए हैं और शिर्क एवं गुमराही का साधन बने हुए हैं।

112. जो लोग संसार को परीक्षा स्थल नहीं बल्कि क्रीड़ा स्थल समझते हैं उन के हाथ जब दौलत आ जाती है तो वे भव्य भवन निर्माण कर के वाहवाही में मस्त होते हैं जिस का एक नमूना प्राचीन समय में आद की क़ौम थी। क़ुर्आन की इस कड़ी चेतावनी के बावजूद मुसलमान शासकों ने भी अपनी शानो-शौकत को दिखाने के लिए बड़े बड़े और शानदार महल बनाए। ग़रनाता, स्पेन का अल हम्रा और जन्नतुल अरीफ़ और दिल्ली के लाल क़िला का दीवाने ख़ास इस की इबरतनाक मिसालें हैं। जवाहरात से सुसज्जित दीवाने ख़ास पर तो उस को जन्नत का नमूना बनाने का दावा भी अंकित है।

अगर फ़िरदौस बर रूए-ज़मीं अस्त
हमीं अस्त व हमीं अस्त व हमीं अस्त

मगर अब मकाँ रह गया, उस में रहने वाले न रहे।

113. अर्थात् तुम्हारी पकड़ बड़ी ज़ालिमाना होती है। सोसाइटी का धनवान वर्ग ग़रीब वर्ग को बुरी तरह ज़ुल्म के शिकंजे में ले लेता है। आयत का संकेत संभवता: इसी तरफ़ है।

114. अर्थात् अल्लाह से डरो और यह ग़लत काम न करो।

115. अर्थात जो क़ुदरती नेमतें तुम को प्रदान की गई हैं उन से लाभ उठाओ और ऐश्वर्य में न पड़ो। जिस ने ये नेमतें तुम को प्रदान की हैं वह इन को छीन भी सकता है। अत: उस से डरो ।

إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ ١٣٥

135. मुझे भय है तुम पर एक ऐसे दिन के अज़ाब का जो बड़ा सख़्त होगा ।[116]

قَالُواْ سَوَآءٌ عَلَيۡنَآ أَوَعَظۡتَ أَمۡ لَمۡ تَكُن مِّنَ ٱلۡوَٰعِظِينَ ١٣٦

136. उन्होंने कहा हमारे लिए एक जैसा है, तुम नसीहत करो या न करो [117]।

إِنۡ هَٰذَآ إِلَّا خُلُقُ ٱلۡأَوَّلِينَ ١٣٧

137. यह बात तो अगलों से चली आ रही है।[118]

وَمَا نَحۡنُ بِمُعَذَّبِينَ ١٣٨

138. और हम को अज़ाब नहीं दिया जाएगा।

فَكَذَّبُوهُ فَأَهۡلَكۡنَٰهُمۡۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَةٗۖ وَ
مَا كَانَ أَكۡثَرُهُم مُّؤۡمِنِينَ ١٣٩

139. अन्ततः उन्हों ने उस को झुठलाया तो हम ने उन को विनष्ट कर दिया।[119] निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है [120]।मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ١٤٠

140. और निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी।

كَذَّبَتۡ ثَمُودُ ٱلۡمُرۡسَلِينَ ١٤١

141. समूद [121] ने रसूलों को झुठलाया।

إِذۡ قَالَ لَهُمۡ أَخُوهُمۡ صَٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ١٤٢

142. जब उन के भाई स्वालेह ने उन से कहा क्य तुम डरते नहीं?

إِنِّي لَكُمۡ رَسُولٌ أَمِينٞ ١٤٣

143. मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

فَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ١٤٤

144. तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।[122]

وَمَآ أَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ أَجۡرٍۖ إِنۡ أَجۡرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ١٤٥

145. मैं इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता मेरा पारिश्रमिक तो रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है।

أَتُتۡرَكُونَ فِي مَا هَٰهُنَآ ءَامِنِينَ ١٤٦

146. क्या तुम इन (नेमतों) में यहाँ चैन की हालत में छोड़ दिए जाओगे?[123]

فِي جَنَّٰتٖ وَعُيُونٖ ١٤٧

147. बाग़ों और स्रोतों में।

وَزُرُوعٖ وَنَخۡلٖ طَلۡعُهَا هَضِيمٞ ١٤٨

148. खेतों और खजूर के बाग़ों में जिन के गुच्छे बड़े मज़ेदार होते हैं।[124]

116. सख़्त दिन एक तो वह होगा जब उन पर दुनिया ही में अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होगा और दूसरा क़ियामत का दिन । दिन के सख़्त होने का मतलब अज़ाब का सख़्त होना है।

117. उन के इस जवाब से स्पष्ट है कि वे नसीहत की कोई बात समझने के लिए तैयार नहीं थे ।

118. अर्थात् नसीहत करना और चेतावनी सुनाना गुज़रे हुए लोगों का भी तरीक़ा रहा है मगर इस की हक़ीक़त कुछ भी नहीं और न किसी पर अज़ाब आता है।

119. आद के विनाश की तफ़सील सूरह ज़ारियात आयत ४१ और सूरह हाक़्क़: आयत ६ में बयान हुई है।

120. व्याख्या के लिए देखिए नोट १०८

121. समूद का वृत्तांत सूरह आराफ़ आयत ७३ से ७९, सूरह हूद आयत ६१ से ६८ और सूरह हिज्र नोट ८० से ८४ में गुज़र चुका। उन के नोट सामने रहें तथा सूरह फज्र नोट १२ से १४ और सूरह शम्स नोट ११ से १७ भी ।

122. इस की व्याख्या इस सूरह के नोट ९७ में गुज़र चुकी ।

123. क्यों तुम ने यह समझ रखा है कि जो नेमतें तुम्हें दी गई हैं वे हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगी । न ये नेमतें कभी तुम से छीनी जाऐंगी और न इन के बारे में कभी तुम से पूछ ताछ होगी कि तुम ने इन को किस तरह इस्तेमाल किया और इन नेमतों को पा कर अपने वास्तविक परोपकारी का शुक्रिया अदा करते रहे या नाशुक्री की?

124. मालूम हुआ कि जिस इलाक़े में समूद आबाद थे वहाँ अल्लाह तआला ने हरे भरे बाग़ खेतियाँ और खजूर के बाग़ पैदा कर दिये थे। और अरब के रेगिस्तानी इलाक़े में हरे भरे खेतों का होना और बाग़ों का होना बहुत बड़ी नेमत थी।

149. और पहाड़ों को तराश कर तुम इमारतें बनाते रहोगे ताकि अपनी कला कौशल पर गर्व करो।[125]

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فٰرِهِينَ ﴿١٤٩﴾

150. तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾

151. और हद से गुज़रने वालों [126] का अनुपालन न करो।

وَلَا تُطِيعُوٓا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾

152. जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं और इस्लाह नहीं करते।[127]

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾

153. उन्होंने कहा तुम पर जादू का असर हुआ है।[128]

قَالُوٓا إِنَّمَآ أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾

154. और तुम हमारे ही जैसे मनुष्य हो [129]। अगर (अपने रसूल होने के दावे में) सच्चे हो तो लाओ कोई निशानी।

مَآ أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَأْتِ بِـَٔايَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٥٤﴾

155. उस ने कहा यह ऊँटनी है।[130]एक दिन पानी पीने की बारी इस की है और एक निर्धारित दिन पानी की बारी तुम्हारे लिए है।[131]

قَالَ هٰذِهِۦ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾

156. इस को कष्ट न पहुँचाओ वरना एक सख़्त दिन का अज़ाब तुम को आ लेगा।

وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾

157. मगर उन्होंने उस की कूँचें काट दीं [132]। और फिर पछताते रह गए।[133]

فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نٰدِمِينَ ﴿١٥٧﴾

158. आख़िरकार उन्हें अज़ाब ने आ लिया।[134] निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है।[135] मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۗ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَـَٔايَةً ۖ وَمَا كَانَ
أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾

159. और निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾

160. लूत [136] की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾

161. जब उन के भाई लूत ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं ?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾

125. मूल अरबी में शब्द ''फ़ारिहीन'' इस्तेमाल हुआ है। पहाड़ो को काट काट (तराश) कर मकान बना लेना अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नहीं बल्कि अपने निर्माण सम्बन्धी कला कौशल को दिखाने के लिए था और इस लिए था कि वे अपने पीछे अपने राष्ट्रीय स्मारक छोड़ें ताकि आने वाली नस्लें उन के कला कौशल की प्रशंसा करें एलोरा और अजन्ता की तराशी हुई गुफ़ाऐं जो भारतीय बहुदेववादियों के लिए गर्व की पूँजी है समूदी सभ्यता का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इन की कला बुत परस्ती और बेहयाई दोनों को बढ़ावा देने वाली है।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १२०, और सूरह हिज्र नोट ८२

126. हद से गुज़रने वाले से तात्पर्य वे लोग हैं जो बन्दगी, नैतिकता तथा मानवता की सीमाओं से आगे बढ़ जाते हैं। वे अपने को इन सब बन्धनों से मुक्त और ख़ुदमुख़्तार समझते हैं।

127. ऐसे लोग सोसाइटी के लिए नासूर होते हैं इस लिए वे इस्लाह और सुधार का काम क्या करेंगे हर प्रकार की ख़राबी और फ़साद ही का कारण बनते हैं। परन्तु लोग हैं कि इन के इस्लाही दावों से प्रभावित हो कर इन के पीछे चल पड़ते हैं।

128. वे ये समझते थे कि जादू पूरे मास्तिष्क को प्रभावित कर के उसे पागल और ख़ब्ती बना देता है। हज़रत स्वालेह की बात का कोई उचित जवाब उन के पास नहीं था। इस लिए उन पर यह उलटा आरोप लगाया कि मालूम होता है कि किसी ने तुम पर जादू किया है और तुम उस से प्रभावित हो कर ये बहकी बहकी बातें कर रहे हो।

स्पष्ट रहे कि जादू और टोने टोटके में हरगिज़ यह असर नहीं है कि वह किसी को पागल बना दे। यह मात्र भ्रम तथा अंधविश्वास है जो आज भी लोगों में पाया जाता है। अगर उस में यह असर होता तो जादूगर शासकों को पागल बना कर उन के राज्य की समाप्ति कर सकते थे। मगर ऐसा कभी नहीं हुआ। हिटलर के अत्याचार से दुनिया परेशान आ गई थी लेकिन दुनिया का कोई जादूगर ऐसा नहीं हुआ जो उसे जादू से प्रभावित कर के पागल बना देता और दुनिया को उस से मुक्ति मिल जाती ।

129. अर्थात् न तुम पर आसमान से वह्य आती है और न ही तुम रसूल नियुक्त हुए हो।

130. यह ऊँटनी कोई साधारण ऊँटनी नहीं थी बल्कि एक असाधारण ऊँटनी थी जो मोज्ज़े के तौर पर पैदा की गई थी। क़ुर्आन कहता है कि समूद ने अपने पैग़म्बर से निशानी अर्थात महसूस होने वाले मोज्ज़े की माँग की थी। और अल्लाह तआला ने उन की यह माँग ऊँटनी के रूप में पूरी की थी ताकि हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम के रसूल होने का स्पष्ट प्रमाण हो। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ११९)

131. ऊँटनी के पानी के लिए एक दिन की बारी निर्धारित करना ऊँटनी के असाधारण होने का स्पष्ट प्रमाण है। अगर साधारण ऊँटनी होती तो उस के लिए पानी की आवश्यकता इतनी अधिक मात्रा में न होती कि उस के पानी पीने के लिए पूरा एक दिन विशेष रूप से सुनिश्चित कर दिया जाता।

समूद की माँग पर जब अल्लाह तआला ने मोज़्ज़ा (चमत्कार) प्रकट कर दिया तो उस में उन की आज़माइश का सामान रख दिया और वह यह कि कुओं और स्त्रोतों से पानी लेने के लिए बारी निर्धारित कर दी। एक दिन सारे कुऐं और सारे स्त्रोत अल्लाह की ऊँटनी के पानी पीने के लिए ख़ास होगा और दूसरे दिन लोग अपने लिए पानी ले सकेंगे और अपने जानवर को भी पिला सकेंगे। यह परीक्षा थी और अल्लाह जिस तरह चाहता है अपने बन्दों की परिक्षा लेता है।

132. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ११९

133. यह ग्लानि पाप के बोध के परिणाम स्वरूप नहीं थी । वरना वे अल्लाह के समक्ष तौबा करते, बल्कि अज़ाब के भय से थी । यद्यपि वे अज़ाब का इन्कार कर रहे थे। परन्तु ऊँटनी की हत्या करने के बाद उन के दिल में यह भय उत्पन्न हुआ होगा कि अगर हज़रत स्वालेह की बात सही हुई तो हम पर आफ़त आ सकती है। इस भय के चलते वे अपने किए पर पछताने लगे।

134. समूद की जाति पर जिस प्रकार का अज़ाब आया उस की तफ़सील सूरह आराफ़ आयत ७८ में बयान हुई है।

135. व्याख्या के लिए देखिए इसी सूरह का नोट १०८

136. हज़रत लूत का वृत्तांत सूरह आराफ़ आयत ८० से ८४, सूरह हूद आयत ७७ से ८३ और सूरह हिज्र आयत ५८ से ७७ में गुज़र चुका । व्याख्या के लिए इन के नोट देख लिए जाऐं।

वह जगह जहाँ अल्लाह की ऊँटनी चलती फिरती थी।

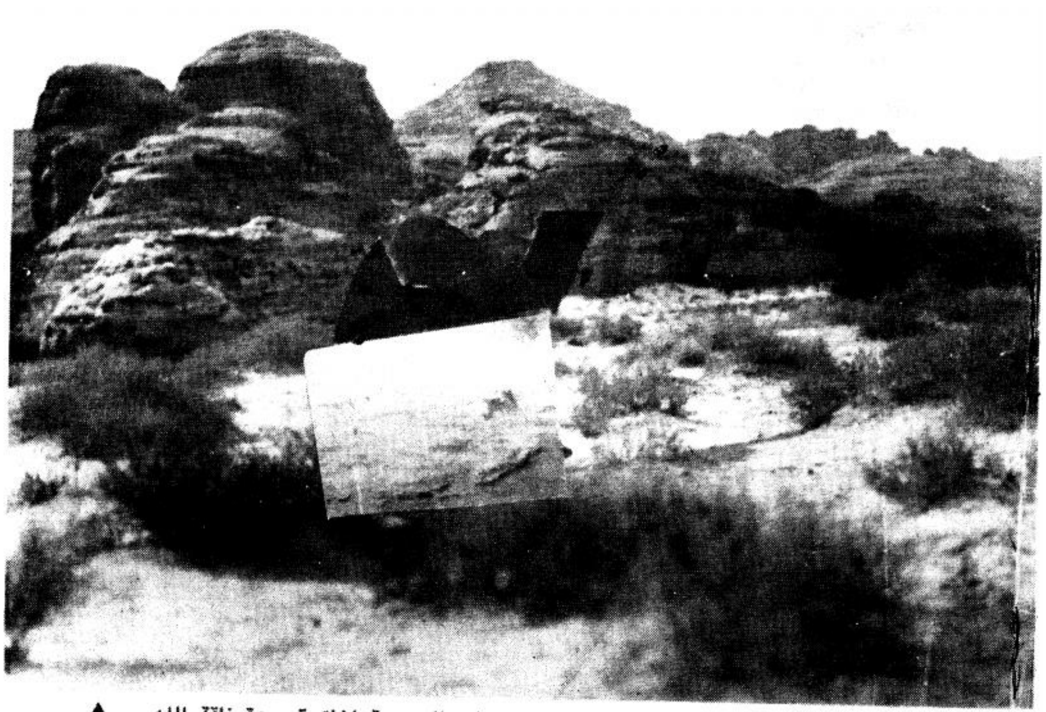

الوادى المشئوم موضع ارتكاب الجريمة المنكرة ، عقرناقة الله ، ▲

समूद की पत्थर कटाई का एक नमूना

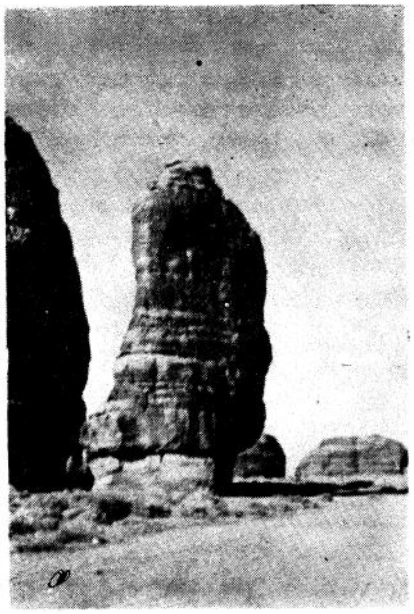

مدائن صالح

पहाड़ों में तराशी हुई समूदी इमारतें।

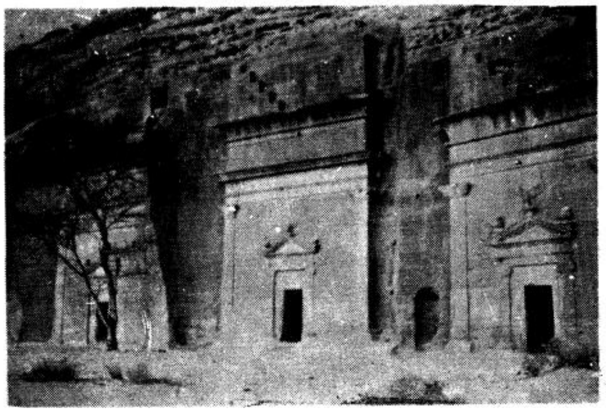

162. मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

163. तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾

164. मैं इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक तो (अल्लाह) रब्बुल आलमीन (सारे जहान के रब) के ज़िम्मे है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾

165. क्या दुनिया के लोगों में तुम ऐसे हो कि काम इच्छा पूरी करने के लिए लड़कों के पास जाते हो ?[137]

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

166. और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियाँ पैदा की हैं उन को छोड़ देते हो? हक़ीक़त यह है कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो।[138]

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَلْ
أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

167. उन्होंने कहा ऐ लूत !अगर तुम बाज़ [139] न आए तो ज़रूर तुम्हें यहाँ से निकाल दिया जाएगा।[140]

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾

168. उस ने कहा मैं तुम्हारे कर्मों से बहुत ही बेज़ार हूँ।[141]

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

169. ऐ रब ! मुझे और मेरे घर वालों को उन की करतूतों से मुक्ति दे।[142]

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾

170. तो हम ने उस को और उस के सारे घर वालों को निजात दी।[143]

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾

171. सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में थी।[144]

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾

172. फिर हम ने दूसरों को विनष्ट कर दिया।[145]

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾

173. और उन पर एक विशेष प्रकार की बारिश [146] बरसाई। तो क्या ही बुरी बारिश थी जो सचेत किए जाने वालों पर बरसाई गई।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٣﴾

174. निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है [147] मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾

137. हज़रत लूत की दअवत वही थी जो सारे रसूलों की रही है अर्थात् अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो'' किन्तु विशेष रूप से उन्होंने एक ऐसी बुराई पर उन्हें चेतावनी दी जो नैतिक दृष्टि से बड़ी घिनावनी थी और जिस में सोसाइटी बुरी तरह लिप्त थी। अर्थात् मर्द परस्ती अथवा समलैंगिकता।

इस से दअवत और सुधार के सिलसिले में यह उसूली बात भी उजागर होती है कि नबी हज़रात जहाँ तौहीद और आख़िरत की दअवत को हर प्रकार के आचार विचार के सुधार के लिए अधार शिला के रूप में प्रस्तुत करते हैं वहाँ उन बड़ी बुराइयों पर भी सख़्ती से पकड़ करते हैं जिन का बुराई होना अप्राकृतिक होने के कारण प्रमाण का मोहताज नहीं होता है। और जो एक महामारी के रूप में पूरी सोसाइटी में फ़ैला हुआ होता है। पुरुषों का नवयुवकों से यौन सम्बन्ध स्थापित करना एक खूली बुराई थी इस लिए हज़रत लूत ने अपनी बुनियादी दअवत के साथ इस के सुधार के लिए आवाज़ उठाई और इस पर क़ौम को बहुत झंझोड़ा ।

138.अल्लाह तआला ने औरतें इस लिए पैदा की हैं ताकि वे मर्दों के लिए ज़ौज (जोड़ा) हों परन्तु अन्धी इच्छाऐं मनुष्य को अन्धा बना देती हैं फिर वह अप्राकृतिक कुकृत्य करने में कोई झिजक नहीं महसूस करता। पत्नियों को छोड़कर समलैंगिकता जैसे घिनावने कुकृत्य में वही लोग लिप्त होते हैं जो प्राकृतिक, स्वाभाविक तथा नैतिक पाबन्दियों से मुक्त होते हैं।

139. अर्थात् जो नसीहत हमें कर रहे हो उस से अगर बाज़ न आए। मतलब यह कि बस करो अपनी यह नसीहत और हमें हमारे हाल पर छोड़ दो।

140. अर्थात् तुम को जबरदस्ती इस देश से बाहर निकाल दिया जाएगा । यह मुजरिमों की तरफ़ से चैलेन्ज था जो हज़रत लूत को दिया गया ।

141. हज़रत लूत ने मुजरिमों के चैलेन्ज का जवाब यह दिया कि जिस कुकर्म में तुम लिप्त हो वह अत्याधिक घृणित कुकृत्य है इस लिए यह कैसे हो सकता है कि मैं इस पर घृणा प्रकट न करूँ। अच्छी तरह सुन लो कि मैं इस से कुढ़ा हुआ और बिलकुल बेज़ार हूँ।

142. यह दुआ हज़रत लूत ने उस समय की जब कि उन की दअवती और इस्लाही कोशिशों को क़ौम किसी भी तरह सहन करने के लिए तैयार नहीं हुई और उन्होंने हज़रत लूत के विरूद्ध क़दम उठाने की ठान ली ।

गंदे काम करने वालों की अधिकता पूरे माहौल को गन्दा बना देती है । ऐसे माहौल में कोई स्वच्छ मानसिकता का आदमी साँस लेना भी पसन्द नहीं करता इस लिए जब इस्लाह और सुधार की आशाऐं क्षीण हो गई तो हज़रत लूत ने इसी गंदे माहौल से मुक्ति के लिए अल्लाह से दुआ की ।

143. मालूम होता है हज़रत लूत पर ईमान लाने वाले उन के परिवार के ही लोग थे ।

144. यह हज़रत लूत की पत्नी थी जो ईमान नहीं लाई थी ।

ध्यान रहे कि उस ज़माने में मुस्लिम समाज का कहीं वजूद नहीं था सिवाय कुछ लोगों के। इस लिए निकाह के सिलसिले में शरीअत के आदेश भी नरम थे। एक नबी जिस क़ौम से सम्बन्ध रखता था शादी ब्याह भी उसी में कर सकता था। इस लिए कुछ नबियों को ऐसी पत्नियों से वास्ता पड़ा जो उन की कोशिशों के बावजूद ईमान नहीं लाई।

145. अर्थात् कुफ्र करने वालों को।

146. मुराद पत्थरों की बारिश है। तफ़्सील के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११९

147. इस की व्याख्या ऊपर नोट १०८ में गुज़र चुकी।

175. और निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾

176. ऐका वालों ने रसूलों को झुठलाया।[148]

كَذَّبَ أَصْحَٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾

177. जब शुऐब ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं?

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

178. मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾

179. तो अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾

180. मैं इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता। मेरा पारिश्रमिक तो (अल्लाह) रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٨٠﴾

181. नाप पूरा पूरा भरो और घाटा न दो।[149]

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾

182. सही तराज़ू से तौलो।[150]

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾

183. और लोगों को उन की चीज़ें कम न दो। और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।[151]

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾

184. डरो उस से जिस ने तुम्हें भी पैदा किया और गुज़री हुई नस्लों को भी।

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾

185. उन्हों ने कहा तुम पर जादू का असर हुआ है।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾

186. और तुम बस हमारे ही जैसे मनुष्य हो और हम तो तुम्हें बिलकुल झुठा समझते हैं।

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَٰذِبِينَ ﴿١٨٦﴾

187. अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो।[152]

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿١٨٧﴾

188. उस ने कहा मेरा रब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।[153]

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾

189. मगर उन्हों ने उसे झुठलाया आख़िरकार उन को साइबान वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया [154] और वह एक हौलनाक दिन का अज़ाब था।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾

148. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हिज्र नोट ७७

149. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १३७ और सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन नोट १

150. ज्ञात हुआ कि तराज़ू को ठीक रखना और कारोबार में ईमानदारी बरतना नैतिकता का तक़ाज़ा भी है और नबियों की शरीअत का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग भी।

मौजूदा ज़माने में वज़न करने के लिए कई तरह के तराज़ू ईजाद हो गए हैं जिन में सर्वाधिक नवीन और विकसित रूप इलैक्ट्रानिक तराज़ू (Electronic scale) का है। परन्तु हर तराज़ू का सही होना अनिवार्य है ताकि कम न तौला जाए।

151. अर्थात् दुनिया में बिगाड़ पैदा न करो । फ़साद के भावार्थ में हर प्रकार का अन्याय व अत्याचार शामिल हैं।

152. अर्थात् यदि तुम अपने रसूल होने के दावे में सच्चे हो तो यह चमत्कार दिखाओ कि आसमान का टुकड़ा हम पर आ गिरे।

153. अर्थात् तुम पर अगर अज़ाब अभी नहीं आ रहा है तो यह न समझो कि अल्लाह तुम्हारी इन करतूतों से बेख़बर है। वह सब कुछ जानता है और उन का नोटिस लेगा।

154. उन्होंने आसमान का टुकड़ा गिरा देने की माँग की थी। इस लिए उन पर अज़ाब साइबान (बादल) के रूप में आया। सूरह हूद में शुऐब की क़ौम के अज़ाब को हौलनाक आवाज़ (सैहा) और सूरह आराफ़ में लर्ज़ा देने वाली आफ़त (रज़्फ़ा) कहा गया है। मालूम होता है कि पहले बादलों ने उन को ढाँक लिया और वे समझे कि वह कड़ी गर्मी में हमारे लिए छतरी (साइबान) बन गया है। लेकिन उन में से बिजली ज़ोरदार कड़ाके के साथ उन पर गिर गई जिस ने उन को ऐसा लर्ज़ा दिया कि औंधे मुँह ज़मीन पर गिरे और विनष्ट हो कर रह गए।

❖❖❖❖❖❖❖❖

190. निस्संदेह इस में बड़ी निशानी है [155] मगर इन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾

191. और निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

192. और यह (क़ुर्आन) निस्संदेह रब्बुल आलमीन (सारे जगत के प्रभु) का नाज़िल किया हुआ है।[156]

وَإِنَّهُ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾

193. इस को लेकर रूहुलअमीन [157] नाज़िल हुआ है।

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾

194. तुम्हारे हृदय [158] पर ताकि तुम (लोगों को) ख़बरदार करने वाले बनो।[159]

عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾

195. स्पष्ट अरबी भाषा में।[160]

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾

196. और यह गुज़रे हुए लोगों के ग्रंथों (सहीफ़ों) में भी मौजूद है।[161]

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾

197. क्या इन लोगों के लिए यह निशानी नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं।[162]

أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾

198. और यदि हम इसे किसी अजमी [163] पर नाज़िल करते।

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

199. और वह उन को पढ़ कर सुनाता तो ये उस पर ईमान लाने वाले न थे।[164]

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾

200. इस प्रकार हम ने यह बात मुजरिमों के दिलों में दाखिल कर दी है।[165]

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾

201. वे इस पर ईमान नहीं लाएंगे जब तक दर्दनाक अज़ाब न देख लें।[166]

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾

202. वह उन पर अचानक आएगा और उस से वे बेख़बर होंगे।

فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾

155. व्याख्या के लिए देखिए ऊपर नोट १०८

156. नबियों के वृत्तांत सुनाने के बाद अब फिर बातों का सिलसिला क़ुर्आन और उस के पैग़म्बर की तरफ़ लौट आया है।

157. ''रूहुलअमीन'' का अर्थ है अमानतदार रूह। इस से मुराद हज़रत जिब्रील हैं जैसा कि दूसरी जगह कहा गया :-

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيْلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ
عَلٰى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللّٰهِ .(بقرہ۔۹۷)

अर्थ: ''कहो जो जिब्रील का दुश्मन हुआ तो उसे मालूम होना चाहिए कि जिब्रील ने अल्लाह की मर्ज़ी से यह क़ुर्आन तुम्हारे दिल पर उतारा है।'' (बक़र: ९७)

और यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि वह्य नाज़िल करने का माध्यम भौतिक नहीं आध्यात्मिक है। पैग़ाम लाने वाला एक फ़रिश्ता है जिस की हक़ीक़त रूह है जो अत्याधिक सूक्ष्म वस्तु होती है और दिखाई नहीं देती। फिर वह फ़रिश्ता बेहद अमानतदार है। जो संदेश अल्लाह तआला उस के सुपूर्द करता है वह उसे ज्यों का त्यों उस के संदेष्टा के पास पहुँचा देता है।

158. ह्रदय मनुष्य के अन्दर वह केन्द्रीय वस्तु और श्रेष्ठ स्थान है जो मूल एवं अप्रत्यक्ष सत्य को स्वीकार करने और उन को सुरक्षित रखने की योग्यता रखता है। इसी लिए कहा जाता है कि ''तुम्हारी याद मेरे दिल में है'' और कोई भी यह नहीं कहता कि ''तुम्हारी याद मेरे दिमाग़ में है।'' क्यों कि दिमाग़ मात्र एक शारीरिक यंत्र है जब कि दिल सुरक्षित रखने की जगह। और ह्रदय से तात्पर्य गोश्त का वह लोथड़ा नहीं है जो शरीर में ख़ून फ़ैलाता है बल्कि वह आन्तरिक शक्ति है जो उस जगह होती है। जिस प्रकार हम विद्युतीय प्रकाश को देख नहीं सकते उसी प्रकार दिल का आपरेशन करने पर भी हम न आन्तरिक शक्तियों को देख सकते हैं और न रूह को । पैग़म्बर के स्वच्छ ह्रदय पर प्रकाशना (वह्य) के उतरने का मतलब यह है कि हज़रत जिब्रील वह्य को सीधे आप के दिल पर उतारते थे। इस तरह से आप के ह्रदय केन्द्र पर उस का एक एक शब्द बैठ जाता था इस लिए उस में भूल चूक की सिरे से कोई संभावना ही नहीं है।

159. अर्थात कुविचार,गंदी अवधारणा, बुरे कर्मों के कुपरिणाम से ।

160. अर्थात् यह क़ुर्आन अरबी भाषा में उतारा गया और ऐसी अरबी में जो अपने भावार्थ और अपने ध्येय और सार को भली भाँत स्पष्ट करने वाली है।

क़ुर्आन के इस बयान से स्पष्ट हुआ कि क़ुर्आन वही है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से अदा हुआ है और जो अरबी भाषा में मुस्हफ़ के रूप में सुरक्षित है। रहे उस के अनुवाद तो वे उस के अर्थ और भावार्थ को व्यक्त करने के मानव प्रयास हैं। इस लिए किसी भी अनुवाद को चाहे वह अरबी ही में क्यों ने किया गया हो न क़ुर्आन कहा जा सकता है और न अल्लाह का कलाम बल्कि क़ुर्आन का अनुवाद और मतलब ही कहा जा सकता है। अत: तिलावत और नमाज़ में क़ुर्आन के अनुवाद से काम नहीं चल सकता बल्कि शब्द शब्द वही क़ुर्आन पढ़ना अनिवार्य है जो अल्लाह तआला ने अरबी में उतारा है।

161. यह मतलब नहीं है कि क़ुर्आन इन ही शब्दों में लिखा हुआ अगले सहीफ़ों में मौजूद था बल्कि मतलब यह है कि क़ुर्आन की शिक्षा और हिदायत वही है जो पिछली आसमानी किताबों की रही है। इस लिए वह (क़ुर्आन) अपनी असल के लिहाज़ से उन किताबों में मौजूद रहा है तथा उन में ऐसी भविष्यवाणियाँ भी मौजूद हैं जो इस पैग़म्बर की नियुक्ति और उस पर अल्लाह के कलाम के उतरने पर साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं ।

162. अर्थात् बनी इस्राईल के उलमा इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि क़ुर्आन तौहीद की जो दअवत पेश कर रहा है वही दअवत तौरात और अन्य आसमानी किताबों की थी। बुत परस्ती, जिस को क़ुरैश ने जायज़ ठहरा लिया है तमाम पिछली किताबें उस के मुश्रिक (बहुदेववादी) और असत्य होने पर एकमत हैं। क़ुर्आन कहता है कि इन्सान को क़ियामत के दिन दोबारा उठाया जाएगा ताकि हर व्यक्ति अपने कर्मों का बदला पाए। मक्का के बहुदेववादी इस को असंभव समझते हैं किन्तु बनी इस्राईल के उलमा जानते हैं कि उन के ग्रंथों में आख़िरत की यही धारणा प्रस्तुत की गई है। इसी प्रकार वे इस बात से भी इन्कार नहीं कर सकते कि अल्लाह तआला इन्सानों की हिदायत के लिए इन्सानों ही में से रसूल भेजता रहा है और उन पर अपनी प्रकाशना और किताबें नाज़िल करता रहा है। अगर बनी इस्राईल के उलमा जो तौरात को समझते हैं इन में से किसी बात से भी इन्कार नहीं कर सकते तो क्या यह इस बात की दलील नहीं है कि क़ुर्आन कोई नई दअवत नहीं प्रस्तुत कर रहा है बल्कि यह नबियों की दअवत की पुनरावृत्ति है।

163. अर्थात् ग़ैर अरब पर ।

164. मतलब यह कि यदि किसी ग़ैर अरब पर क़ुर्आन नाज़िल किया जाता तो इन्कार के लिए उन को यह बहाना मिल जाता कि अरब क़ौम के लिए क़ुर्आन ग़ैर अरब व्यक्ति पर क्यों नाज़िल किया गया । अत: बनी इस्राईल के नबियों पर

जो किताबें नाज़िल हुई थीं उन को अरब के बहुदेववादियों ने स्वीकार नहीं किया। मगर अब जब कि अरब एक व्यक्ति पर ही अरबी में क़ुर्आन नाज़िल किया गया तो उन के लिए किसी आपत्ति को व्यक्त करने का मौक़ा बाक़ी नहीं रहा। मतलब यह है कि अरब जाति में रसूले-अरबी की नियुक्ति और अरबी क़ुर्आन के अवतरण ने उन पर अल्लाह की युक्ति पूर्ण रूप से सिद्ध कर दी ।

स्पष्ट रहे कि इस का यह मतलब लेना हरगिज़ सही नहीं है कि क़ुर्आन ग़ैर अरबों के लिए हुज्जत (तर्कपूर्ण युक्ति) नहीं है। इस का संदेश और इस की शिक्षा जिन जिन लोगों तक पहुँच जाए उन सब के लिए हुज्जत है। चाहे वे अरबी जानते हो या न जानते हों। उम्मते-मुस्लिमा के द्वारा जो क़ुर्आन की गवाही के लिए ही बरपा की गई है क़ुर्आन के संदेश का पहुँचना हुज्जत का क़ायम हो जाना है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कैसर और किसरा (ईरान और रोम के शासकों) को दअवत दीं, जो ग़ैर अरब थे । अत: क़ैसर ने आप के संदेश पत्र को जिस में क़ुर्आन की आयत भी लिखी थी एक अनुवादक से पढ़वाया। और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन ने ग़ैर अरब फ़ौजों के विरूद्ध फ़ौजी कार्रवाई करने से पहले उन्हें इस्लाम स्वीकार कर लेने की दअवत दी ।

165. अर्थात् कोई बहाना कर के अल्लाह की किताब को मानने से इनकार किया जाए मतलब यह है कि अल्लाह का गुमराह कर देने वाला नियम इन पर लागू हो गया है और अल्लाह का वह नियम यह है कि जो व्यक्ति आँखे बन्द किये रहता है उसे चमकता सूरज भी नहीं दिखाई देता। उस के लिए अंधकार में भटकना मुक़द्दर है।

मुजरिम से तात्पर्य हठ्धर्म लोग हैं जो अपने कुफ्र और शिर्क पर जमे रहना चाहते हैं।

166. अर्थात् वे लोग दलील से बात मानने वाले नहीं हैं। मानेंगे तो उस समय जब अज़ाब (अल्लाह का प्रकोप) सामने आ प्रकट होगा । उस समय ईमान लाने का कोई लाभ नहीं।

❖❖❖❖❖❖❖❖

वे तो इस के सुनने से भी दूर रखे गए हैं। तो अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को न पुकारो वरना तुम भी सज़ा पाने वालों में शामिल हो जाओगे। और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ। और जो ईमान लाने वाले तुम्हारी पैरवी करें उन के लिए अपने बाज़ू झुका दो। *(अल-क़ुर्आन)*

203. उस समय वे कहेंगे क्या हमें कुछ मोहलत मिलेगी !

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

204. फिर क्या ये लोग हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾

205. तुम ने सोचा यदि हम इन्हें कुछ साल और जीवन सामाग्री दे दें।

أَفَرَءَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾

206. फिर इन पर वह (अज़ाब) आ जाए जिस से इन को डराया जा रहा है।

ثُمَّ جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾

207. तो वह जीवन सामाग्री जिन से वे लाभ उठाते रहे उन के किस काम आएगा।[167]

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾

208. और हम ने किसी आबादी को भी विनष्ट नहीं किया मगर यह कि उस के लिए सचेत करने वाले रहे हैं।[168]

وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾

209. याददेहानी [169] के लिए, और हम ज़ालिम नहीं हैं।[170]

ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٠٩﴾

210. इस (क़ुर्आन) को शैतान ले कर नहीं उतरे हैं।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٠﴾

211. न यह उन से कोई मुनासिबत रखता है, और न वे ऐसा कर ही सकते हैं।[171]

وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾

212. वे तो इस के सुनने से भी दूर रखे गए हैं।[172]

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾

213. तो अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को न पुकारो वरना तुम भी सज़ा पाने वालों में शामिल हो जाओगे।[173]

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾

214. और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ।[174]

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾

215. और जो ईमान लाने वाले तुम्हारी पैरवी करें उन के लिए अपने बाजू झुका दो।[175]

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

167. अर्थात् यदि हम ने इन की मोहलत में वृद्धि की और इन्हें दुनिया में मौज मस्ती का कुछ और मौक़ा मिल गया तो इस से इन को क्या लाभ, जब कि उन को एक न एक दिन अपने बुरे अन्जाम से दो चार होना ही है।

168. अर्थात् ऐसी तमाम बस्तियों की ओर रसूल भेजे गए थे जिन्होंने अल्लाह से न डरने के अन्जाम से सावधान कर दिया था ।

169. ये रसूल चेतावनी के साथ याद्देहानी और नसीहत भी करते रहे ताकि बात एक तरीक़े से नहीं तो दूसरे तरीक़े से समझ में आए ।

170. अगर कोई व्यक्ति अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दे तो वह जल कर रहेगा । वह अपनी इस हरकत के बाद अपने विनाश की ज़िम्मेदारी ख़ुदा पर नहीं डाल सकता । इसी तरह जो लोग अपने को अक़ीदा और अमल, आचार एवं विचार की उस राह पर डाल देते हैं जिस पर ज्वालामुखी का लावा उबलता है तो वे निश्चय ही तबाह हो कर रहेंगे और वे अपनी इस तबाही की ज़िम्मेदारी अल्लाह पर नहीं डाल सकते जब कि उस ने अपने रसूलों के द्वारा उस को इस राह के विनाशकारी होने से आगाह कर दिया था ।

171. मक्का के बहुदेववादियों ने जब देखा कि क़ुर्आन एक असाधारण कलाम है जो ग़ैब अर्थात् परोक्ष की ख़बरें दे रहा है तो वे यह कुप्रचार करने लगे कि यह शैतानी अवतरण है ।अर्थात् शैतानों ने (अल्लाह की पनाह ऐसी बातों से) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में यह बातें डाल दी हैं। इसी का खण्डन करते हुए फ़रमाया कि न यह काम शैतानों के लायक है और न उन के बस की बात है। शैतानों को बुराई,फ़ितना और फ़साद से दिलचस्पी होती है। वे एक ऐसा कलाम क्यों नाज़िल करने लगे जो शुरू से अंत तक भलाई ही भलाई हो? क़ुर्आन की शिक्षा तो आचार विचार, धारणा एवं आस्था और शिष्टाचार की पवित्रता की शिक्षा है। शैतानों को ऐसी शिक्षा से क्या सरोकार? और उन के बस में यह कहाँ हो सकता है कि वे क़ुर्आन जैसे उच्च कोटि का कलाम नाज़िल करें जिस का एक एक शब्द सत्य की साक्ष्य प्रस्तुत करता है। उस की निमंत्रणा मानव प्रकृति की पुकार और मानव बुद्धि के लिए प्रकाश है। उस के शब्द अत्यंत जंचे तुले और अर्थो का भण्डार अपने अन्दर समोये हुए हैं। और शब्दों की लड़ियाँ ऐसी पिरोई गई हैं कि एक शब्द भी इधर से उधर नहीं किया जा सकता है और वाक्य तथ्यपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण हैं कि बात सीधे दिल में उतर जाती हैं।

इन सारी वास्तविकताओं को नज़रंदाज़ कर के क़ुर्आन को शैतानी अवतरण बताना ऐसे ही लोगों का काम हो सकता है जो बुद्धि और विवेक से काम न लेना चाहते हों। मौजूदा ज़माने में रुशदी ने क़ुर्आनी आयतों को शैतानी आयतें बताकर उसी मानसिकता का परिचय दिया है जिस मानसिकता का परिचय क़ुर्आन नाज़िल होने के समय इन्कार करने वाले दे रहे थे। और उस को शाबाशी भी शैतानों की ही तरफ़ से मिल रही है।

172. अर्थात् वह्य को नाज़िल करने के लिए यह तैयारियाँ की गई हैं कि जब फ़रिश्ता वह्य ले कर पैग़म्बर पर नाज़िल हो तो उस को शैतान सुन न सकें इस लिए वे इस में कोई हस्तक्षेप भी नहीं कर सकते।

क़ुर्आन की इस पुष्टि के बाद उस रिवायत के झूठ होने में क्या संदेह रह जाता है जिस में बुतों की प्रशंसा वाला क़िस्सा बयान हुआ है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह बात मंसूब की गई है कि आप की ज़बान पर शैतान ने बुतों की प्रशंसा के शब्द जारी किये थे जो बाद में निरस्त हो गए।

इस झूठी रिवायत का खण्डन हम सूरह हज्ज के नोट ९१ में कर चुके हैं। रुशदी ने ''शैतानी आयतें'' में इस झूठी रिवायत का सहारा लिया है।

173. जब पैग़म्बर को इतनी सख़्त बात सुनाई गई कि उस ने अल्लाह के सिवा किसी और को हाजतों को पूरा करने के लिए किसी अन्य को पुकारा या उस की परस्तिश की, तो उसे भी सज़ा भुगतना होगी, तो दूसरे लोग शिर्क कर के कैसे बच सकते हैं । यद्यपि कि पैग़म्बर के शिर्क में लिप्त होने की कोई संभावना नहीं थी, किन्तु यह उसूली बात स्पष्ट करना थी कि अल्लाह का साझी ठहराना (शिर्क) एक अक्षम्य अपराध है और उस की सज़ा के सिलसिले में किसी की रिआयत नहीं की जाएगी इस लिए सम्बोधन पैग़म्बर से किया गया।

174. अपने निकटतम सम्बन्धियों को सावधान करने का आदेश ज़ाहिर है कि दअवती संघर्ष के शुरूआत में ही दिया गया होगा । इस लिए अन्दाज़ा है कि यह सूरह मक्का के शुरू के दौर में ही नाज़िल हुई होगी। हदीस में आता है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो आप ने क़ुरैश के एक एक ख़ानदान को नाम ले ले कर पुकारा और जब वे सफ़ा पर्वत पर जमा हो गए तो आप ने फ़रमाया :-

فَانّی نذیرٌ لکُمْ بَیْنَ یَدَیْ عذاب شدیدٍ . (بخاری کتاب التفسیر)

अर्थ :- '' मैं तुम्हें आने वाले सख़्त अज़ाब से ख़बरदार

करता हूँ।'' (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर) इस मौक़े पर आपने जो बात कही वह दो टूक अन्दाज़ में क़ियामत के अज़ाब से डराने की बात थी और यह ठीक ठीक उस आदेश का पालन था कि

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ .

अर्थ:- ''अपने निकटतम सम्बन्धियों को डराओ'' नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह तरीक़ा दअवत का काम करने वालों को विचार की दअवत देता है।

175. अर्थात् जो ईमान वाले तुम्हारी पैरवी करेंगे वही अपने ईमान में सच्चे होंगे। और ऐसे सच्चे ईमान वालों के साथ तुम नरमी और आदर के साथ पेश आओ तथा दया एवं स्नेह का बर्ताव करो।

❖❖❖❖❖❖❖❖

और ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं। सिवाय उन के जो ईमान लाए, जिन्होंने नेक अमल किए। अल्लाह को कसरत से याद किया और इस सूरत में बदला लिया जब कि उन पर ज़ुल्म हुआ था। और जो ज़ुल्म कर रहे हैं वह बहुत जल्द जान लेंगे कि किस अन्जाम को वे पहुँचते हैं। *(अल-क़ुर्आन)*

216. और यदि वे तुम्हारी अवज्ञा करें तो उन से कहो जो कुछ तुम कर रहे हो मैं उस से बरी हूँ।[176]

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ٢١٦

217. और भरोसा करो उस पर जो प्रभुत्वशाली और दयावान है।[177]

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ٢١٧

218. जो तुम्हें देख रहा होता है जब तुम नमाज़ में खड़े होते हो।

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ٢١٨

219. और सज्दे में झुकने वालों के बीच तुम्हारी आमदो-रफ़्त को भी।[178]

وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ٢١٩

220. निस्संदेह वह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ٢٢٠

221. क्या मैं तुम लोगों को बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।[179]

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ٢٢١

222. वे हर झूठी बात बनाने वाले दुष्कर्मी पर उतरते हैं।[180]

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ٢٢٢

223. जो (शैतानों की तरफ़) कान लगाते हैं।[181] और उन में से अधिकतर झूठे होते हैं।[182]

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ٢٢٣

224. और शायरों की पैरवी तो गुमराह लोग करते हैं।[183]

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ٢٢٤

225. क्या तुम देखते नहीं कि वे हर वादी में भटकते फिरते हैं।[184]

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ٢٢٥

226. और ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं ।[185]

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ٢٢٦

227. सिवाय उन के जो ईमान लाए, जिन्होंने नेक अमल किए। अल्लाह को कसरत से याद किया और इस सूरत में बदला लिया जब कि उन पर ज़ुल्म हुआ था।[186] और जो ज़ुल्म कर रहे हैं वह बहुत जल्द जान लेंगे कि किस अन्जाम को वे पहुँचते हैं।[187]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا
وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا
أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ٢٢٧

176. अर्थात् ख़बर करने के बाद भी यदि वे ईमान लाने और तुम्हारी पैरवी स्वीकार करने पर आमादा नहीं होते तो साफ़ कह दो कि तुम्हारी बहुदेववादी गतिविधियों से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। मैं अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर चुका। अब अपने कर्मों के ज़िम्मेदार तुम स्वयं हो।

177. ''तवक्कुल'' और भरोसे की हिदायत के साथ यहाँ अल्लाह तआला के दो गुणों का वर्णन हुआ है। एक यह कि वह प्रभुत्वशाली है अर्थात् उस का फ़ैसला लागू हो कर रहेगा और दूसरे यह कि वह दयावान है इस लिए विश्वास रखो कि वह अपने निष्ठावान बन्दों पर अपनी दयालुता ज़रूर उंडेलेगा।

178. यह अल्लाह तआला की पसंदीदगी का इज़्हार है कि जिस समय तुम नमाज़ के लिए खड़े होते हो उस की कृपा दृष्टि तुम पर होती है और उस समय भी जब तुम इबादतगुज़ार साथियों के बीच होते हो। यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने रब के इबादत गुज़ार हैं और आप की पैरवी तथा अनुसरण करने वाले भी इबादत में लगे रहने वाले लोग हैं। आप अपने इन साथियों का प्रशिक्षण इस प्रकार कर रहे हैं कि अल्लाह के समक्ष सज्दे में झुकना उन का विशेष गुण समझ लिया जाए। इस लिए आप की मजलिस अल्लाह वालों की मजालिस है जिस की ओर अनुकंपा एवं उदार अनुग्रह होने पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता, मगर लोग सच्ची वास्तविकता से आँखें बन्द कर के पैग़म्बर को कभी ज्योतिषी बताते हैं तो कभी शायर और कभी कुछ और ।

179. अर्थात् शैतान किन लोगों के दिलों में गंदे विचारों और असत्य की धारणाओं को डाल कर उन को अपना हथियार बनाते हैं।

180. मूल अरबी में ''अफ़्फ़ाक'' इस्तेमाल हुआ जिस का अर्थ मात्र झूठ बोलने वाले के नहीं है बल्कि झूठे क़िस्से, और झूठी रिवायतें गढ़ने वाले, झूठी ख़बरें देने वाले और मिथ्यारोप करने वाले के हैं। यहाँ ख़ास तौर से मुराद काहिन अथवा ज्योतिष (Soothsayers) हैं जिन का पेशा ही लोगों को ग़ैब की ख़बरें देना और भविष्यवाणी करना था। इस के लिए वे शैतानी आमाल (सिफ़्ली अमल) करते और शैतानों से मदद लेते । कहानत का बड़ा माध्यम नक्षत्रों का ज्ञान रहा है जिसे ज्योतिष विद्या (Astrology) कहा जाता। मगर आज के आधुनिक युग में नक्षत्र विज्ञान (Astronomy) की तरक़्क़ी ने नक्षत्रों एवं उपग्रहों के बारे में वैज्ञानिक जानकारियों का ढेर लगा दिया । परिणाम यह कि पुरानी ज्योतिष विद्या शगुन, अपशगुन, शुभ, अशुभ, मंगल और शनी से बहस करती थी मिटती चली गई और इस के साथ ज्योतिषियों का भी अस्तित्व नहीं रहा । मौजूदा ज्योतिष विद्या उसी का बचा खुचा हिस्सा है।

ज्योतिषियों या भविष्य वक्ताओं की दूसरी विशेषता यह है कि वे दुष्कर्मी होते हैं। जब आदमी झूठ को पेशा बना ले तो उस के चरित्र में पवित्रता किस तरह से आ सकती है। वे दुराचारी तथा दुष्कर्मी ही हो सकते हैं। और शैतान अपना नाता बुरों से ही जोड़ता है।

181. अर्थात् जो शैतान के दिलों में डाली जाने वाली बातों को इस प्रकार स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं जैसे वे उन्हीं की तरफ़ कान लगाए हुए हों। चिंतन ध्यान (Meditation) में बैठ कर जिन्नों या शैतानों के इल्हाम की प्रतिक्षा करना शैतानों की ओर कान लगाने की बहुत ही स्पष्ट सूरत है।

182. इस का यह मतलब नहीं कि उस में कुछ लोग सच्चे भी होते हैं। बल्कि मतलब यह कि वे जो ख़बरें देते हैं और जो भविष्यवाणी करते हैं उन में वे अधिकांश झूठे सिद्ध होते हैं। बहुत कम ऐसा होता है कि उन की कोई बात सही सिद्ध हो।

ध्यान रहे कि हस्त रेखाओं का ज्ञान जो भविष्य का हाल बताता है ज्योतिष ही का एक रूप है इसी प्रकार जिन्नों को उपस्थित कर के उन से बातें उगलवाने का दावा तथा फालगीरी सब ढकोसला और लोगों को उल्लू बनाने वाली बातें हैं। मगर अंधविश्वासी और कमज़ोर तथा ग़लत धारणाओं के लोग जब उन के यहाँ चोरी अदि हो जाती हैं तो ''बावाओ'' से इस का समाधान चाहतें हैं जो उन्हें चोर के झूठे चिन्ह और झूठे लक्षण बता देते हैं। अंधविश्वासियों की समझ में इतनी बात भी नहीं आती कि यदि फ़ाल के द्वारा अपराधियों का पता लगाना संभव होता तो हज़ारों अपराधियों की तफ़तीश की लंबी कार्रवाई पुलिस को न करना पड़ती। वह कुछ फ़ालगीरी करने वालों की सेवाऐं प्राप्त कर के अपराधियों का पता लगा लेती । परन्तु अंध विश्वासियों और ग़लत धारणा में लिप्त लोगों की बुद्धि मारी जाती है।

183. यह उस शंका का खण्डन है कि क़ुर्आन शायरी है। क़ुर्आन की तथ्यपूर्णता, उस के वाक्यों को चकित कर देने वाली तरतीब और उस के प्रभाव को देख कर इन्कार करने वालों से जब कोई जवाब न बन पड़ता तो वे यह कहते कि यह शेरो-शायरी के सिवा कुछ नहीं। उन के इसी ग़लत मतलब निकालने का खण्डन करते हुए उन्हें सोच विचार की दअवत दी गई कि क्या तुम एक शायर और एक नबी का अन्तर महसूस नहीं करते? या शायरी और अल्लाह

के कलाम में अन्तर करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो रहा है? देखते नहीं कि शायरों की तरफ़ कौन कौन से लोग खिंचते हैं। गुमराह लोग ही हैं जो उन की वाही तबाही की बातों की प्रशंसा करते और उन से प्रभावित होते हैं। इस के विपरीत जिन लोगों ने रसूल की पैरवी स्वीकार की है वे सत्य के चाहने वाले हैं और पैग़म्बर से उन्हों ने नेकी की सीधी राह की रौशनी पाई है। इस के सीधे और सच्चे रवैये को देख कर हरगिज़ यह राय नहीं बनाई जा सकती कि ये किसी शायर के पीछे चलने वाले लोग हैं।

ध्यान रहे कि उस ज़माने के शायर गुमराही फैलाने में आगे आगे थे । उमरा-उल-कैस तो अरब शायरों का इमाम समझा जाता था और सबअ् मुअल्लक़ात (शायरी के सात संग्रह) ख़ाना-ए-काबा में लटकाए गए थे, उन में इस का कलाम एक प्रमुख स्थान रखता था । मगर उस की शायरी बेहूदा बातों, इश्क बाज़ी, और अशलीलता की बदतरीन मिसाल है। कहाँ यह आचरण को बिगाड़ने वाले शायर और कहाँ आचरणों को संवारने वाला नबी ।

184. शायरी सच पूछिए तो कल्पना की उड़ान है। इस लिए शायर कभी ज़मीन पर होते हैं तो कभी आसमान पर। कभी मधुशाला में होते हैं तो कभी बुत खाने में । कभी महबूब की बेवफ़ाई का गिला करेंगे तो कभी उस की जुदाई पर आँसू बहाऐंगे । कभी इश्क के ग़म में मरेंगे और कभी वाह वाही करेंगे । जब किसी से नाराज़ हुए तो हजो (निन्दा) की और ख़ुश हुए तो क़सीदा पढ़ा अर्थात् प्रशंसा की । एक ओर परहेज़गारी का पाठ पढ़ाऐंगे तो दूसरी तरफ़ ऐय्याशी पर उभारेंगे। कल्पना लोक में उड़ना और अतिश्योक्ति से काम लेना इन की कला (फन) का कमाल है। वे

रगे-गुल से बुलबुल के पर बाँधते हैं

इस लिए शायरों के बारे में क़ुर्आन का यह बयान कि वे हर वादी में भटकते रहते हैं। एक सच्ची बात है और इस के अनुसार शायर और रसूल का अन्तर बिलकुल स्पष्ट है। रसूल सत्य की ओर बुलाने वाला होता है और वह रास्तों की पुष्टि करते हुए एक निश्चित मन्ज़िल की ओर रहनुमाई करता है, वह ठोस बातें करता है और ठोस परिणामों से सचेत करता है। वह सच्चाई का नमूना होता है और उस की हर बात जँची तुली होती है।

ध्यान रहे कि क़ुर्आन ने शायरों के बारे में जो बात कही है वह उस ज़माने के शायरों तक सीमित नहीं है बल्कि सार्वजनिक आदेश की हैसियत रखती है। और अभिप्रेत उन की सामान्य मनोवृत्ति और उन में पायी जाने वाली सामान्य कमज़ोरियों को बयान करना है। और हम देखते हैं कि बाद के दौर में भी शायरों का यही कुछ हाल रहा है और आज भी यही हाल है।

अरबी में फ़िरज़ौक़ और उस के सहकक्ष शायरों ने हज़ो गोई (निन्दा की शायरी) और अशलील शायरी की तो फ़ारसी में खैय्याम और उस के सहकक्ष शायरों ने शराब और ऐय्याशी का शौक़ पैदा किया । रही बात उर्दू की तो क्या मीर और क्या ग़ालिब सब का मूल विषय ग़मे-इश्क रहा और अब जब कि भौतिक एवं आर्थिक आन्दोलन चल रहे हैं शायरी का मूल विषय ग़मे-रोज़गार है। हदीस में ऐसी शायरी को घृणित बताया गया है जो मन मस्तिष्क, आचार विचार, और नैतिकता पर बुरा प्रभाव डालती हों।

لَاَنْ يَـمْتَلِئَ جَوْفُ رَجُلٍ قَيْحاً خَيْرٌ لَّهٗ مِنْ
اَنْ يَمْتَلِئَ شِعْرًا. (بخاری کتاب الادب)

अर्थ:- ''किसी व्यक्ति के पेट का पीप से भर जाना बेहतर है इस से कि वह शेर से भरा हुआ हो ।'' (बुख़ारी किताबुलअदब)

185. यह शायरों की सब से बड़ी कमज़ोरी है, जिस की ओर ध्यानाकर्षित किया गया है। वे बातों के धनी होते हैं, काम और आचार के धनी नहीं होते। क्यों कि उन का असल काम तुक बन्दी और बातें बनाना होता है ताकि लोगों से प्रचार और प्रशंसा प्राप्त कर लें वे चरित्रहीन होते हैं चरित्रवान नहीं। इस के विपरीत रसूल जो कहता है वह करता है। जो शिक्षा देता है उस पर खुद अमल कर के दिखाता यहाँ तक कि उस का जीवन अच्छे आचार और अच्छे गुणों का बेहतरीन नमूना होता है।

186. ऊपर जिन गुमराह शायरों का ज़िक्र हुआ उन से अलग वे शायर हैं जिन में ये चार गुण पाये जाऐं। एक यह कि वे ईमान वालें हों । दूसरे यह कि वे अपने कर्मो और आचरणों की दृष्टि से नेक हों । तीसरे यह कि वे अल्लाह को कसरत से (अर्थात् अधिकता के साथ) याद करने वाले हों और अल्लाह की चर्चा उन के कलाम में इस तरह से रच बस जाए कि जो व्यक्ति भी उन की शायरी सुने उस को ख़ुदा याद आ जाए और चौथे यह कि वे किसी को बुरा भला कहें तो हजो गोई के तौर पर नहीं बल्कि अपने बचाव के तौर पर कि मज़लूम को ज़ालिम के ख़िलाफ़ कहने का हक़ है।

आगे जा कर दरबारे-रसूल के जो शायर हुए उन में ये सब गुण पाये जाते थे और उन में सर्वाधिक प्रमुख हज़रत हस्सान रज़ि. थे ।

क़ुर्आन के बयान से साफ़ ज़ाहिर है कि वह शेरो-शायरी की हौसला अफ़ज़ाई नहीं करता और न शायरी को प्रोत्साहन देता है बल्कि कड़ी शर्तों के साथ इस को केवल छूट के दर्जे

में रखता है। अलबत्ता अगर कोई शायर इन सीमाओं में रहते हुए दीन की रक्षा के लिए, सही दीनी स्पिरिट पैदा करने के लिए शायरी करता है तो जैसा कि हदीस में आता है, अल्लाह की ओर से उस के समर्थन तथा अनुमोदन का सामान भी होता है।

187.तात्पर्य वे लोग हैं जो खुद गुमराह हैं और नहीं चाहते कि दूसरे लोग भी हिदायत की राह अपनाऐं । इस लिए वे पैग़म्बर और उस के साथियों के ख़िलाफ़ अन्याय और अत्याचार पर उतर आए हैं। कुछ ही मुद्दत बाद इन ज़ालिमों का जो अंत इस दुनिया में हुआ उस से आज कौन परिचित नहीं है?

❖❖❖❖❖❖❖❖

सूरह अन्-नमल

२७.सूरह अन्-नमल

नाम : आयत १८ में सुलैमान के नम्ल अर्थात् चींटियों की घाटी से गुज़रने का वर्णन हुआ है। इस मुनासिबत से सूरह का नाम अन्-नमल है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह अश्-शुअरा के बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय : क़ुर्आन को अल्लाह की किताब मान लेने और अल्लाह का साझी ठहराने जैसी गुमराही से बाज़ आने में सब से बड़ी रुकावट सत्य एवं वास्तविकताओं का इन्कार है। जो लोग सांसारिक वैभव एवं ऐश्वर्य में मग्न रहना चाहते हैं उन पर न क़ुर्आन की सच्चाई का कोई असर होता है और न नबियों के वृत्तांत से ही वे कोई सबक़ लेते हैं।

कलाम की तरतीब : आयत १ से ६ में हिदायत के सूरज (क़ुर्आन) का वर्णन है जो क्षितिज से उभर कर ईमान वालों को हमेशा हमेशा की कामयाबी की ख़ुशख़बरी दे रहा है। परन्तु वे लोग इस से लाभ उठाने से वंचित हैं जो इस संसार की मोहमाया में बन्द हैं और नहीं चाहते कि एक ऐसे जगत की बात सुनें जहाँ कर्मानुसार परिणाम सामने आने वाला है।

आयत ७ से १४ में हज़रत मूसा के वृत्तांत का कुछ हिस्सा बयान हुआ है जिस से स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला ने फ़िरऔन और उस की जाति की ओर किस शान का रसूल भेजा था और उन्हों ने अपने शासन के घमण्ड में उस रसूल के साथ क्या व्यवहार किया और अन्तत: किस अन्जाम को पहुँच गए।

आयत १५ से ४४ में हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान के भव्य राज्य का वर्णन कर के उन की जीवनी के इस पहलू को उजागर किया गया है कि इतनी बड़ी नेमत पा कर किस प्रकार अल्लाह के कृतज्ञ बन्दे बने रहे और हज़रत सुलैमान ने किस प्रकार अपनी सत्ता को इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार का साधन बनाया । और इस के परिणाम स्वरुप किस तरह मलिका सबा ने इस्लाम स्वीकार किया।

आयत ४५ से ५८ में हज़रत स्वालेह और हज़रत लूत के वृत्तांत का एक भाग प्रस्तुत किया गया है जिस से स्पष्ट होता है कि उन की जाति के लागों ने उन की दअवत को ठुकरा कर के ज़मीन में बिगाड़ पैदा करने का जो काम किया उस की कैसी इबरतनाक सज़ा उन को मिल गई।

आयत ५९ से ७५ में तौहीद के तर्क और आख़िरत का विश्वास पैदा करने वाली बातें प्रस्तुत की गई हैं।

आयत ७६ हे ९३ में एलान किया गया है कि क़ुर्आन ने हिदायत की राह खोली है और उस की सत्याता के चिन्ह भविष्य में भी ज़ाहिर होते रहेंगे।

२७.सूरह अन्-नम्ल

आयतें : 93

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. ता-सीन [1] यह आयतें है क़ुर्आन और रौशन किताब की।[2]

2. यह हिदायत और ख़ुशख़बरी है ईमान वालों के लिए।

3. जो नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और यही हैं जो आख़िरत पर विश्वास रखते हैं।[3]

4. जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते, हम ने उन के काम उन के लिए ख़ुशनुमा बना दिए हैं।[4] अतः वे भटकते फिरते हैं।[5]

5. ऐसे लोगों के लिए दुनिया में भी बुरा अज़ाब है [6] और आख़िरत में भी वे बुरी तरह तबाह होंगे।

6. और निस्संदेह यह क़ुर्आन तुम सर्वज्ञ एवं तत्वदर्शी (इष्ट पूज्य) की ओर से पा रहे हो।[7]

7. जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा, मैं ने एक आग देखी है। मैं वहाँ से कोई ख़बर ले कर आता हूँ या आग का शोला लाता हूँ ताकि तुम लोग गर्मी हासिल कर सको।[8]

8. जब वह उस के पास पहूँचा तो आवाज़ आई मुबारक है वह जो इस आग में है और वह जो इस के इर्द गिर्द हैं। और पाक है अल्लाह सारे जहान का रब।[9]

9. ऐ मूसा मैं हूँ अल्लाह, प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी।

10. और तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। जब उस ने देखा कि वह साँप की तरह हरकत कर रहा है तो वह पीठ फेर कर भागा और पलट कर भी न देखा [10] ऐ मूसा ! डरो नहीं। मेरे समक्ष पैग़म्बर डरा नहीं करते।[11]

سُوْرَةُ النَّمْلِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ ﴿۱﴾

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ ﴿۲﴾

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۳﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ
فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ؕ ﴿۴﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ
هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۵﴾

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿۶﴾

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ
بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۷﴾

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَ
مَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸﴾

يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۙ ﴿۹﴾

وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا
وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۫ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ
الْمُرْسَلُوْنَ ۖ ﴿۱۰﴾

1. ये विभक्त अक्षर (अलग अलग पढ़े जाने वाले अक्षर) हैं और इन का संकेत जैसा कि हम इस से पहले स्पष्ट कर चुके हैं सूरह के ख़ास विषयों की ओर होता है।

''ता'' का इशारा तैर (परिन्दे) की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत १६ में इस तौर से हुआ है कि उन की बोली हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को सिखाई गई थी।

''सीन'' का इशारा सुलैमान की ओर है और सबा की ओर भी जिन का वर्णन आयत १६ और २२ में हुआ है।

2. अर्थात् क़ुर्आन क्या है एक रौशन किताब और ये उसी की आयतें हैं। क़ुर्आन की दअवत और उस की शिक्षा इतनी स्पष्ट है कि हर वह व्यक्ति जो इसे खुले मन से पढ़ेगा या सुनेगा इस के सार तथा इस के भावार्थ को पा सकता है।

जो लोग अरबी नहीं जानते हैं वे क़ुर्आन के अनुवाद की सहायता से भी यह लाभ प्राप्त कर सकते हैं। बस शर्त यह है कि अनुवाद सही हो । रही बात तफ़्सीरों की तो इन के महत्व तथा इन के लाभ से इन्कार नहीं किया जा सकता किन्तु यह समझना सही नहीं कि तफ़्सीर के बग़ैर क़ुर्आन को समझा ही नहीं जा सकता । कितने ग़ैर मुस्लिम हैं जिन्होंने क़ुर्आन के अनुवाद को पढ़ा और उन्हें ईमान की दौलत नसीब हुई।

3. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ७ और १०

4. आदमी जब आख़िरत का इन्कार करता है तो दुनिया ही उस का अन्तिम ध्येय बन जाती है और इस का परिणाम यह सामने आता है कि उस की पूरी कार्यवृद्धति और पूरा रवैया ग़लत हो कर रह जाता है। परन्तु चूँकि ध्येय संसार होता है इस लिए बुरे काम भी उस की निगाहों में भले लगने लगते हैं। यही कारण है कि आज फ़ैशन, आधुनिकता, और प्रगति के नाम पर अत्यन्त घृणित आचरणों तथा बदतरीन कर्मों का प्रदर्शन हो रहा है। जब सोच का आधार ग़लत है, सोच का रवैया ग़लत है तो इस सोच के अनुसार अपनाई गई कार्यपद्धति भी ग़लत होगी और पसन्द और नापसन्द का मेयार भी ग़लत हो कर रह जाता है। यह मानसिकता अल्लाह के बनाये हुए गुमराही में लिप्त होने वाले नियम के अनुकूल बन जाती है। इस लिए इस को इस प्रकार कहा गया कि ''हम ने उन के काम उन के लिए ख़ुशनुमा बना दिये हैं।''

5. आख़िरत के इन्कार के फल्सवरूप आदमी सीधे मार्ग से भी वंचित हो जाता है और विश्वास की पूँजी से भी। फिर उस के लिए इधर उधर भटकना ही लिखा है। आज मानवता को देखिए किस तरह भटक रही है। कोई साम्यवाद (कम्यूनिज़्म) की ओर भाग रहा है तो कोई राष्ट्रवाद (Nationalism) को अपनी मन्ज़िल बना रहा है। कोई भेद भाव मिटाने के लिए सर्वधर्म संभाव का राग अलाप रहा है तो कोई अपनी संस्कृति को एकता का अधार बना रहा है कोई साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देना चाहता है तो कोई राजनीति को धर्म और ख़ुदा से मुक्त देखना चाहता है। किसी को विध्वंस की कार्रवाईयों से फ़ुर्सत नहीं तो कोई आतंकवाद का बदतरीन नमूना पेश कर रहा है। मतलब यह कि आख़िरत का इन्कार करने के बाद इन्सान की कोशिशों का कोई एक केन्द्र नहीं रहा कोई एक धुरी नहीं रही।

6. जिस क़ौम को रसूल अल्लाह का संदेश सीधे सीधे पहुँचा देता है और फिर वह इन्कार करती है तो उस पर ऐसा अज़ाब आता है कि पूरी की पूरी जाति का एक झटके में अस्तित्व समाप्त कर दिया जाता है। किन्तु जिन को किसी माध्यम से (Indirect) संदेश पहुँच जाता है और वे इस को स्वीकार नहीं करते और आख़िरत के इन्कार पर जमे रहते हैं उन को उन के अनुकूल दुनिया में सज़ा मिलती रहती है। आज दुनिया के विभिन्न भागों में इतनी अधिकता के साथ आफ़तें नाज़िल हो रही हैं कि इस से पहले शायद कभी न हुई होगी।

7. क़ुर्आन के मज़मून इस बात की साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं कि यह मानव रचना नहीं है बल्कि उस इष्ट पूज्य का कलाम है जो सर्वज्ञ एवं तत्वदर्शी है। क्यों कि इस में ज्ञान, अल्लाह की पहचान, तथा समझदारी और हिकमत के अमूल्य ख़ज़ाने छिपे हुए हैं ।

8. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ९

9. हज़रत मूसा को जो आग दिखाई दी थी वह जलने वाली आग नहीं थी वरना वे उस से अंगारे प्राप्त कर लेते, बल्कि वह एक असाधारण आग थी जिस के परदे में अल्लाह की महान हस्ती उन से हमकलाम हो रही थी और उस आग के इर्द गिर्द फ़रिश्ते मौजूद रहे होंगे, जैसा कि प्रसंग से स्पष्ट होता है और जिनकी मौजूदगी का अर्थ ख़ैर और बरकत ही था।

हज़रत मुसा सफ़र में थे। जाड़े की रात, उस पर अंध:कार, रास्ते तक का पता नहीं चल रहा था। ऐसी परिस्थिति में एक अदृश्य आवाज़ का आ जाना ऐसा था कि जिस में साहस को बाक़ी रखना और मन मास्तिष्क को एकाग्र कर नियंत्रित रखना आसान न था । इस लिए उस अदृश्य आवाज़ ने सर्वप्रथम उन्हें ढारस बँधाई कि यह आवाज़ उस महान कृपाशील हस्ती की है जो पूरी कायनात का रब (प्रभु) है और इस पावन स्थल में फ़रिश्तों का अवतरण हुआ है जो ख़ैर ही ख़ैर है। शैतान और उस के फ़ितनों तथा हथकण्डों से इस पूरे माहौल को सुरक्षित कर दिया गया है।

इस से यह वास्तविकता भी स्पष्ट हुई कि नुबुव्वत ऐसी चीज़ नहीं है कि आदमी अपने प्रयासों से प्राप्त कर ले बल्कि वह दायित्व है जिसे अल्लाह जिस को चाहता है और जिस

समय चाहता है सौंपता है। जिस प्रकार हज़रत मूसा को कुछ ख़बर न थी और उन्हें नुबुव्वत प्रदान कर दी गई थी उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गारे-हिरा में बिलकुल बेख़बरी की हालत में नुबुव्वत प्रदान हुई। नुबुव्वत का अचानक प्रदान किया जाना नबियों की सत्यता का प्रमाण है। वरना जो आदमी झूठा दावा करता है वह पहले ही से इस के लिए कुछ ज्ञान प्राप्त करता है, कुछ मन बनाता है और फिर कुछ आडंबर रचता है।

रहा यह सवाल कि हज़रत मूसा ने अल्लाह तआला की आवाज़ को किस प्रकार पहचाना तो पहली बात तो यह कि सृष्टि अपने सृष्टा की आवाज़ से अपरिचित नहीं हो सकती। उस का रब जब उस को पुकारेगा वह अवश्य उस की आवाज़ को पहचान लेगी। दूसरे यह कि एक नबी की अन्त: प्रवृत्ति जो एक पवित्र मन की अन्त: प्रवृत्ति होती है, दिल में यह विश्वास पैदा करती है कि यह मेरे रब की आवाज़ है या यह उस की प्रकाशना है जो अवतरित हो रही है। तीसरे यह कि प्रकाशना अवतरण (वह्य नाज़िल होने) के अवसर पर माहौल ऐसा बना दिया जाता है कि शैतानी बहकावे मन में नहीं आते और हृदय संतोष का आभास करता है। और चौथे जो वह्य उतरती है वह अपने मज़मून और भावार्थ की दृष्टि से अल्लाह की वह्य होने का खुला सबूत होती है।

और यह जो फ़रमाया ''पाक है अल्लाह सारे जहान का रब'' तो वह इस बात की तरफ़ इशारा है कि अल्लाह की आवाज़ यद्यपि आग के अन्दर से आ रही है किन्तु अल्लाह का अस्तित्व इस बात से पाक है कि वह किसी चीज़ के अन्दर सीमित हो कर रह जाए। या किसी चीज़ में समावेश करे। वह सिंहासन (अर्श) पर विराजमान है और हर बन्दे की शह रग से भी अधिक निकट है। फिर वह आसमानों और ज़मीन में भी है। जैसा कि क़ुर्आन में दूसरी जगह इर्शाद हुआ है।

وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ۔(انعام-٣)

अर्थ: ''और अल्लाह आसमानों में भी है और ज़मीन में भी।'' (अनआम ३)

और जिस प्रकार उस के आसमान और ज़मीन में होने का मतलब यह नहीं है कि वह (अल्लाह क्षमा करे) सिंहासन को छोड़ कर आसमान और ज़मीन में समावेश कर गया है उसी प्रकार हज़रत मूसा से उस का यह इरशाद कि

لَيۡسَ كَمِثۡلِهٖ شَىۡءٌ

''मुबारक है वह जो आग में है'' का मतलब यह नहीं है कि उस का कोई शारिरिक अस्तित्व है जो आग के अन्दर है। उस की विशेषता ही यह है कि उस के जैसी कोई चीज़ नहीं इस लिए उस की कल्पना सृष्टि में रख कर करना सही नहीं बल्कि खुली गुमराही है। भौतिक जगत में तो हम देखते ही हैं कि आईने में आदमी की तसवीर दिखाई देती है जब कि वह उस के अन्दर मौजूद नहीं होता । और आज टी.वी. के स्क्रीन पर बोलने वाला भी दिखाई देता है और उस की आवाज़ भी सुनाई देती है जब कि वह टी.वी. के अन्दर मौजूद नहीं होता। जब भौतिक जगत का यह हाल है तो ख़ुदा के बेमिसाल और ला मकान होने से कैसे इन्कार किया जा सकता है।

10. यह उन के मनुष्य होने की पहचान थी। साँप को लहराता हुआ देख कर वे भयभीत हो गए।

11. अर्थात् जब अल्लाह किसी को रिसालत के लिए चुन कर के अपने समक्ष बुलाता है तो उस के लिए भय की कोई बात नहीं होती । वह हर प्रकार के फ़ितनों और आफ़तों से उस के पास सुरक्षित एवं शान्ति से होता है। अत: ये साँप जो तुम देख रहे हो वे तुम्हें कदापि कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते।

उन्होंने ज़ुल्म और घमण्ड के कारण इन का इन्कार किया हालाँकि उन को अपने दिल में विश्वास हो चुका था, तो देखो बिगाड़ पैदा करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ। हम ने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान प्रदान किया। और उन्होंने कहा शुक्र है अल्लाह का जिस ने हमें अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर श्रेष्ठता प्रदान की। और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ। उस ने कहा लोगों ! हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है और हमें सब कुछ प्रदान किया गया है। निस्संदेह यह स्पष्ट अनुग्रह है।और सुलैमान के लिए उस के लशकर जो जिन्नों, इन्सानों और परिन्दों में से थे जमा किये गए थे और उन को पंक्तिबद्ध किया जाता था। *(अल-क़ुर्आन)*

11. मगर जिस ने गुनाह किया हो, फिर (यदि उस ने) बुराई को नेकी से बदल दिया हो तो मैं क्षमा करने वाला, दया करने वाला हूँ।[12]

إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوٓءٍ فَإِنِّي
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾

12. और तुम अपना हाथ अपने गरेबान में डालों वह किसी ऐब के बग़ैर रौशन हो कर निकलेगा।[13] यह नौ निशानियों में से है [14] जिन के साथ तुम फ़िरऔन और उस की क़ौम के पास जाओ। वे बड़े फ़ासिक़ (दुराचारी) लोग हैं।[15]

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ
فِي تِسْعِ ءَايَٰتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِۦٓ إِنَّهُمْ كَانُوا۟
قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿١٢﴾

13. परन्तु जब उन के सामने हमारी खुली निशानियाँ आईं तो उन्होंने कहा यह तो खुला जादू है।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ ءَايَٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا۟ هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾

14. उन्होंने ज़ुल्म और घमण्ड के कारण इन का इन्कार किया हालाँकि उन को अपने दिल में विश्वास हो चुका था,[16] तो देखो बिगाड़ पैदा करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ।[17]

وَجَحَدُوا۟ بِهَا وَٱسْتَيْقَنَتْهَآ أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا
فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾

15. हम ने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान प्रदान किया।[18] और उन्होंने कहा शुक्र है अल्लाह का [19] जिस ने हमें अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर श्रेष्ठता प्रदान की।[20]

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ عِلْمًا ۖ وَقَالَا ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي
فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾

16. और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ।[21] उस ने कहा लोगों ! हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है [22] और हमें सब कुछ प्रदान किया गया है।[23] निस्संदेह यह स्पष्ट अनुग्रह है।[24]

وَوَرِثَ سُلَيْمَٰنُ دَاوُۥدَ ۖ وَقَالَ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ عُلِّمْنَا مَنطِقَ
ٱلطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِن كُلِّ شَيْءٍ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ ٱلْفَضْلُ ٱلْمُبِينُ ﴿١٦﴾

17. और सुलैमान के लिए उस के लशकर जो जिन्नों, इन्सानों और परिन्दों में से थे [25] जमा किये गए थे और उन को पंक्तिबद्ध किया जाता था।[26]

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَٰنَ جُنُودُهُۥ مِنَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ
وَٱلْإِنسِ وَٱلطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾

18. यहाँ तक कि जब वे चीटियों की घाटी में पहुँचे [27] तो एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों अपने बिलों में घुस जाओ। कहीं ऐसा न हो कि सुलैमान और उस का लश्कर तुम्हें कुचल डाले और उन्हें ख़बर भी न हो।[28]

حَتَّىٰٓ إِذَآ أَتَوْا۟ عَلَىٰ وَادِ ٱلنَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّمْلُ ٱدْخُلُوا۟
مَسَٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَٰنُ وَجُنُودُهُۥ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

12. रहा वह भय जो अपने किसी क़ुसूर के कारण हो तो उस के बारे में भी यह ढारस बँधाई गई कि इस से पहले अतीत में तुम से जो क़ुसूर हुआ है उस पर अल्लाह पकड़ करने वाला नहीं जब कि उस के बाद तुम ने नेकी का रवैया अपना लिया है। यह इशारा था भूल से हुई हत्या के अपराध की क्षमा की ओर जो हज़रत मूसा से हो गया था और जिस की तफ़सील सूरह क़सस में बयान हुई है।

13. यह दूसरा मोज्ज़ा (चमत्कार) था जो हज़रत मूसा को प्रदान किया गया था (व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट २३)

14. नौ निशानियों की तफ़सील के लिए देखिए सूरह बनी इस्राईल नोट १३२

15. फ़िरऔन और उस की क़ौम को फ़ासिक़ (दुराचारी) कहा गया हालाँकि अभी हज़रत मूसा ने उन्हें दअवत पहुँचाई नहीं थी। इस का कारण यह है कि ये लोग नबियों की शिक्षाओं से बिलकुल अपरिचित न थे । क्यों कि मिस्र में हज़रत यूसुफ़ ने अपने गहरे प्रभाव एवं अमिट चिन्ह छोड़े थे और बनी इस्राईल चाहे कितने ही बिगड़े हुए हों, बहर हाल मुसलमान थे इस लिए उन के द्वारा ख़ुदा और आख़िरत की बातें किसी न किसी मात्रा में और किसी न किसी तरह से ज़रूर पहुँचती रही होंगी और बुनियादि बात यह है कि मानव स्वभाव खुली बुराइयों और पापों से परिचित है जैसे ज़ुल्म और ज़्यादती, दुराचार, अहं और घमण्ड और अपने रब के ख़िलाफ़ उद्दण्डता आदि ! मगर फ़िरऔन और उस की क़ौम ने अपनी स्वभाविक आवाज़ को दबा कर ज़ुल्म और पाप का रवैया अपनाया था इस लिए वे फ़ासिक़ कहलाने ही के पात्र थे।

इस से यह उसूली बात भी स्पष्ट होती है कि जिन लोगों ने अपने को व्यवहारिक रुप से पाप और दुराचार की राह पर डाल दिया हो उन को फ़ासिक़ ही कहा जाएगा चाहे दअवते-दीन का काम उन पर हुआ हो, या न हुआ हो।

16. अर्थात् उन को इस बात का विश्वास हो गया था कि हज़रत मूसा जो निशानियाँ दिखा रहे थे वो जादू नहीं बल्कि मोज्ज़ा है और वे वास्तव में अल्लाह के पैग़म्बर हैं। इस विश्वास के बावजूद उन के ईमान लाने में जो चीज़ रुकावट बनी वो उन का ज़ुल्म और घमण्ड था। ज़ुल्म इन्सान को हक़ पसंदी से दूर रखता है और घमण्ड उस को इस बात पर आमादा नहीं होने देता कि वह अपनी जगह से नीचे उतर कर सत्य को स्वीकार कर ले।

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि असल चीज़ दिल का मानना है। और ईमान दिल के मान लेने के बग़ैर मान्य नहीं।

17. इस अन्जाम की तफ़सील सूरह यूनुस, सूरह ताहा, और सूरह शुअरा में बयान हुई हैं।

18. मुराद ख़ास ज्ञान है जो एक महाविराट और बेमिसाल सल्तनत को न्याय, समानता और इस्लामी सिद्धान्त के अनुसार चलाने के लिए आवश्यक था । बाइबिल में है:

"और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी और उस की समझ बहुत ही बढ़ाई और उस के हृदय में समुद्र तट की बालू के किनकों के तुल्य हृदय की चौड़ाई दी, और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियों और मिस्रियों की भी बुद्धि से बढ़ कर बुद्धि थी (१ राजा ४:२९,३०)

19. ऊपर फ़िरऔन की मिसाल गुज़र चुकी, जिस को सत्ता मिली तो घमण्ड करने लगा और ज़ुल्म पर उतर आया। दूसरी तरफ़ हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की मिसालें हैं जिन्हें सत्ता मिली तो उन्हों ने अल्लाह की देन समझ कर उस का सही इस्तेमाल किया। और उस के कृतज्ञ बन्दे बन कर रहे।

20. श्रेष्ठता इस दृष्टि से कि नबी बनाया और इस दृष्टि से कि ज्ञान बुद्धि और हिकमत से नवाज़ा और इस दृष्टि से भी कि ख़िलाफ़त का शासन भी प्रदान किया और अपने उदार अनुग्रह से ऐसी चीज़ें प्रदान कीं जो उन की ख़ास पहचान बनी।

21. वारिस का मतलब माल दौलत का वारिस होना नहीं है बल्कि नुबुव्वत के ज्ञान और ख़िलाफ़त के दायित्व का वारिस होना है। अगर धन दौलत की विरासत अभिप्रेत होती तो केवल हज़रत सुलैमान का ज़िक्र न किया जाता क्यों कि हज़रत दाऊद की और भी सन्तान थी। इस के अलावा जैसा कि हदीस में आता है कि नबियों की जायदाद बँटती नहीं (देखिए सूरह मरयम नोट ८) और प्रसंग से भी स्पष्ट है कि यहाँ धन की संपत्ति पर चर्चा नहीं है। बाइबिल में हैं:-

"तब सुलैमान अपने पिता दाऊद की गद्दी पर विराजमान हुआ और उस का राज्य बहुत दृढ़ हुआ"(१ राजा २:१२)

22. जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध है कि परिन्दे किसी न किसी श्रेणी में बुद्धि रखते हैं और अपनी आवश्यकताओं तथा विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति विभिन्न आवाज़ों की सूरत में करते हैं,यह चीज़ आम तौर से देखने में आती है और अनुभव यह भी बताता है कि तोते को जो शब्द सिखाए जाएं वह उस को सीख कर वही शब्द दोहराता है। इसी प्रकार शिकारी परिन्दों को सधाया जाता है। फिर परिन्दों के गीत हरगिज़ बेमतलब के नहीं कहे जा सकते फिर भी उन की बोली को समझना हमारे लिए ऐसा ही मुश्किल है जैसे टेलिग्राफ़ की भाषा न जानने वाले व्यक्ति के लिए खट खट की आवज़ सुन कर उस का मतलब बताना । मगर हज़रत सुलैमान को अल्लाह तआला ने परिन्दों की बोली की जानकारी प्रदान की थी जो

बिलकुल चमत्कारिक थी इस लिए वे अपने शासन से सम्बन्धित उन से भी ख़िदमत लेते थे ।

स्पष्ट रहे कि परिन्दों की बोली हज़रत सुलैमान को सिखाई गई थी किन्तु उन्हों ने यह जो फ़रमाया कि लोगों ! हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है तो यह शाही अन्दाज़े-बयान है जिस में बोलने वाला बहुवचन का वाक्य इस्तेमाल करता है।

23. अर्थात् तमाम आवश्यक संसाधन जो एक सुदृढ़ शासन चलाने के लिए आवश्यक है।

24. अर्थात् यह बेमिसाल सलतनत अल्लाह का ऐसा उदार अनुग्रह है जिस को कोई व्यक्ति महसूस किये बग़ैर नहीं रह सकता । इस लिए हमें उस की इस देन को स्वीकार करना चाहिए इस से अन्दाज़ा होता है कि हज़रत सुलैमान का चरित्र कितना उच्च था। मगर यहूदियों की मक्कारी देखिए कि उन्होंने बाद में हज़रत सुलैमान पर यह आरोप लगाया कि उन्हों ने यह बड़ी सलतनत जादू के बल पर हासिल की थी और वे कुफ्र के अपराधी हुए थे ।

देखिए सूरह बक़र: आयत १०२ और नोट १२०

25. हज़रत सुलैमान के शासन की शान ही बिलकुल अलग थी । उन के लिए इन्सानों के साथ जिन्नों और परिन्दों के लश्कर भी उपलब्ध कर दिए गए थे । वे जिन्नों और परिन्दों से जो सेवा लेते थे उस का वर्णन आगे हुआ है। और इस सिलसिले की कुछ बातें सूरह अंबिया में गुज़र चुकीं (देखिए सूरह अंबिया नोट ११०) हर नबी की एक शान होती है। हज़रत सुलैमान को अल्लाह तआला ने शासन, धन दौलत और शानो-शौकत वाला नबी बनाया था । क्यों कि दुनिया वालों पर इस्लाम की सच्चाई और महानता का यह पहलू भी रौशन हो कि एक नबी अपने मान सम्मान के साथ जब सिंहासन पर बैठता है तो अल्लाह को याद करता है और महल में रह कर भी जब नेकी का जीवन व्यतीत करता है, अत: जिन लोगों को सत्ता प्राप्त हो वे उस के नशे में मदहोश न हों बल्कि सुलैमान के जीवन को तथा उन के तरीक़े को सामने रखते हुए एहसासे-ज़िम्मेदारी का सबूत दें।

26. अर्थात् उन लश्करों को फ़ौजी अनुशासन के साथ रखा जाता था, उन को पंक्तिबद्ध किया जाता था और श्रेणी बद्ध भी ताकि जिस कार्य के लिए जो उचित हों उन से वह काम लिया जाए जैसे परिन्दों से संदेशवाहक का काम आदि ।

27. अर्थात् सुलैमान का लश्कर जब मार्च करते हुए एक ऐसी घाटी में पहुँचा जहाँ चीटियों की अधिकता थी।

28. चीटियों में मिल जुल कर रहने की सीख भी होती है और अनुशासन भी अत: उन की लम्बी कतारें और उन का मिल जुल कर काम करना इस का स्पष्ट प्रमाण है। उन के कार्यकलापों से यह भी पता चलता है कि एक चींटी दूसरी चींटी को बुलाकर लाती है जिस से उन की आपसी बातचीत का भी अन्दाज़ा होता है। यह और बात है कि हम उन की आवाज़ सुन नहीं पाते। मगर हम जानवरों को इन्सान जैसा नहीं समझ सकते, जिस की जीती जागती मिसाल कुत्ते की सूँघने की शक्ति है जो इतनी तेज़ होती है कि वह इन्सान के शरीर की महक को महसूस कर के उस की पहचान कर लेता है अत: जब पुलिस किसी प्रशिक्षित कुत्ते को मौक़ा-ए-वारदात पर लाती है तो वह उह महक को सूँघ लेता है जो मुजरिम के शरीर से निकली हुई होती है। फिर वह उस ख़ास महक के पीछे जो राह की निशानदेही करती है, मुजरिम तक पहुँच जाता है। इसी प्रकार अगर चीटियों की बातचीत इतनी हल्की हो कि हम सुन न सकें तो यह कोई नामुमकिन बात नहीं है। आज हम अति सूक्ष्म चीज़ें सूक्ष्मदर्शी के द्वारा देख लेते हैं किन्तु इस से पहले उन के अस्तित्व की ख़बर भी नहीं थी। और अगर अभी ऐसा कोई यंत्र, या कोई उपकरण ईजाद नहीं हुआ है जिस के द्वारा हम हल्की आवाज़ को सुन सकें तो उस के अस्तित्व से इन्कार कैसे कर सकते हैं जब कि इस की सूचना हमें अल्लाह के कलाम के द्वारा मिल रही है। बल्कि यह तो क़ुर्आन के कुछ ऐसे भेदों से हमें परिचित करा रहा है जिन को जानने का हमारे पास कोई अन्य साधन नहीं है। यह मानव ज्ञान में ज़बरदस्त वृद्धि है। इस लिए कोई कारण नहीं कि हम इन आयतों का उल्टा सीधा कारण बता कर ज्ञान के उन दरवाज़ों को बन्द कर लें जो हम पर खुल रहे हैं और क़ुर्आन में काँट छाँट करने के अपराधी हो जाऐं । ऐसी आयतों को पढ़ कर हमारी दुआ वही होनी चाहिए कि ''रब्बी ज़िदनी इलमन''

رَبِّ زِدْنِی عِلْماً۔ (طٰہٰ۔۱۱۴)

अर्थ: ''ऐ मेरे रब मेरे ज्ञान में वृद्धि कर''

रहा यह सवाल कि चीटियों को यह कैसे मालूम हुआ कि यह सुलैमान का लश्कर है जो उस घाटी से गुज़र रहा था तो यह बात इल्हामी है। चींटी पर अल्लाह तआला की तरफ़ से इस का इल्हाम होना अर्थात् उस के दिल में डाला जाना तनिक भी विचित्र एवं असंभव नहीं। अबरहा पर कंकर पत्थर बरसाने के लिए परिन्दों के जो झुंड के झुंड पहुँचे थे वह ख़ुदा की तरफ़ से इल्हाम ही का तो नतीजा था। (देखिए सूरह फ़ील)

सुलैमान इस बात पर हँस पड़ा और दुआ की ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता पिता पर किया है और अच्छे काम करूँ जिस से तू ख़ुश हो। और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा। और उस ने परिन्दों का जायज़ा लिया तो कहा क्या बात है मैं हुद हुद को नहीं देख रहा हूँ। क्या वह ग़ायब हुआ है। *(अल-क़ुर्आन)*

19. सुलैमान इस बात पर हँस पड़ा [29] और दुआ की ऐ मेरे रब !मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता पिता पर किया है और अच्छे काम करूँ जिस से तू ख़ुश हो।[30] और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा ।[31]

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِيٓ أَنْ أَشْكُرَ
نِعْمَتَكَ الَّتِيٓ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا
تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾

20. और उस ने परिन्दों का जायज़ा लिया तो कहा क्या बात है मैं हुद हुद को नहीं देख रहा हूँ। क्या वह ग़ायब हुआ है।[32]

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ
مِنَ الْغَآئِبِينَ ﴿٢٠﴾

21. मैं उसे कड़ा दण्ड दूँगा [33] या वध कर डालूँगा या फिर वह मेरे सामने स्पष्ट हुज्जत प्रस्तुत करे।[34]

لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي
بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢١﴾

22. कुछ ज़्यादा देर नहीं हुई कि उस ने आ कर कहा, मैं ने वे बातें मालूम की हैं जिस से आप पूरी तरह भिज्ञ नहीं हैं। मैं सबा से विश्वस्नीय ख़बर ले कर आया हूँ।[35]

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ
وَجِئْتُكَ مِن سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٢﴾

23. मैं ने देखा एक स्त्री उन पर शासन कर रही है।[36] उस को सब कुछ प्रदान किया गया है।[37] और उस का सिंहासन महाविराट है।[38]

إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِن كُلِّ شَيْءٍ
وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

24. मैं ने देखा कि वह और उस की जाति अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करती है।[39] शैतान ने उन के आमाल उन के लिए ख़ुशनुमा बना दिये हैं और उन को सीधे मार्ग से रोक दिया है इस लिए वे राह नहीं पा रहे हैं।[40]

وَجَدتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِن دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

25. क्यों नहीं वे अल्लाह को सज्दा करते [41] जो आसमानों और ज़मीन की गुप्त चीज़ों को निकालता है [42] और वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो ज़ाहिर करते हो।[43]

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾

26. अल्लाह ! उस के सिवा कोई पूजने योग्य नहीं, महान सिंहासन का स्वामी है।[44]

السجدة
اللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾

27. उस ने (सुलैमान ने) कहा हम देख लेते हैं तूने सच कहा है या झूठ बोलने वालों में से है।[45]

قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

29. हज़रत सुलैमान ने चींटी की यह बात उस ज्ञान के द्वारा सुनी जो उन्हें परिन्दों की भाषा समझने के लिए चमत्कारिक रुप से प्राप्त था । चींटी की बात सुन कर उन्हें ख़ुशी हुई होगी कि उन के लाव लश्कर की ख़बर चीटियों को भी हो रही है और उन का नाम चींटी की जबान पर भी है। नन्हीं मुन्नी चींटी की बातें उन्हें इतनी अजीब लगीं कि वे हँस पड़े।

30. हज़रत सुलैमान की हँसी भी गंभीर भाव लिए हुए थी। इस लिए ख़ुशी के साथ उन के दिल में कृतज्ञता की भावना उमड़ आई और उन्होंने अपने रब से दुआ की कि मुझे कृतज्ञ और नेक (सुकर्मी) बनने की तौफ़ीक़ दे अर्थात् तेरी ओर से नेमतों की जो मुझ पर वर्षा हुई है और उस अनुकंपा में से भी मैं ने हिस्सा पाया है जो तूने मेरे माता पिता पर किया । अब मुझे तौफ़ीक़ दे कि में इन एहसानों के प्रति अपने दायित्व को अदा करूँ।

31. नबियों के दर्जे बहुत बुलन्द होते हैं किन्तु दर्जो की बुलन्दी के लिए अच्छे कार्य आधार शिला की भाँति होते हैं इस लिए नबी हज़रात नेक (सुकर्मी) बनने की तौफ़ीक़ चाहते हैं। और चूँकि जन्नत के अधिकारी नेक लोग होंगे इस लिए वे इस वर्ग में शामिल किए जाने की दुआ करते हैं।

एक ओर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की यह दुआ है जो उन के पवित्र मन तथा पवित्र भावनाओं का बोध कराती है और दूसरी ओर वे व्यर्थ की बातें तथा झूठे किस्से हैं जो बाइबिल में उन से संबद्ध बताए गए हैं।

32. हज़रत सुलैमान ने जब परिन्दों के लश्कर का जायज़ा लिया तो हुद हुद को ग़ायब पाया हुद हुद (Hoopoe) कबूतर की तरह एक पक्षी है जिस के सर पर कलग़ी (Crest) होती है इस लिए उसे राज़ पक्षी (Royal Bird) कहते हैं। यह फ़िलस्तीन और सीरिया के इलाक़े में अधिकता के साथ पाया जाता है और कबूतर ही की तरह संदेश लाने, ले जाने का काम करता है। मगर हज़रत सुलैमान के जिस हुद हुद का वर्णन यहाँ हो रहा है वह एक ख़ास और विशिष्ट क्षमता रखने वाला हुद हुद था । उस ने जो असाधारण काम किया उसे देखते हुए उसे साधारण हुद हुद नहीं समझा जा सकता । कुछ लोगों ने यह व्याख्या भी की है कि हुद हुद एक व्यक्ति का नाम था जो परिन्दों के नाम पर रखा गया था। मगर क़ुर्आन का प्रसंग इस व्याख्या से मेल नहीं खाता ऊपर गुज़र चुका है कि सुलैमान के लिए इन्सानों और जिन्नों के अलावा परिन्दों का लश्कर भी जमा कर दिया गया था । और इस आयत में परिन्दों का जायज़ा लेने का वर्णन हुआ है तथा आगे हज़रत सुलेमान का यह बयान भी उद्धृत हुआ है कि अगर हुद हुद ने अपनी अनुपस्थिति का उचित कारण नहीं बताया तो मैं उसे वध कर दूँगा ।

यह सब बातें हुद हुद के परिन्दें होने पर ख़ुला तर्क प्रस्तुत करती हैं इस लिए इस से हुद हुद नाम का व्यक्ति मुराद लेना एक ऐसी व्याख्या है जो सरासर ग़लत है।

33. कड़े दण्ड से तात्पर्य संभव है पर नोचने का दण्ड हो ताकि वह उड़ न सके।

34. स्पष्ट हुज्जत से तात्पर्य तार्किक कारण है।

35. सबा एक जाति का नाम है जो यमन में सनआ से क़रीब आबाद थी और जिस की राजधानी माअरिब था। हुद हुद ने उस जाति का हाल मालूम कर के उस की रिपोर्ट हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के सामने प्रस्तुत कर दी जिस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो गई कि वह ख़ोजबीन के काम में व्यस्त रहा इस लिए समय पर उपस्थित न हो सका ।

हज़रत सुलैमान सबा के राज्य से बेख़बर तो नहीं हो सकते थे किन्तु उस जाति के हालात विस्तार से नहीं मालूम थे जैसा कि हुद हुद के बयान से स्पष्ट होता है। इस लिए हुद हुद ने अपना आँखों देखा हाल बयान किया।

36. स्त्री के शासन पर हुद हुद को भी आश्चर्य हुआ परन्तु आज के नवीन युग में लोकतंत्र का राग आलापने वाली बुलबुलें इस से ख़ुश होंगी !

37. अर्थात् ख़ूब धन सामग्री ।

38. मालूम होता है सबा की रानी का सिंहासन सोने और जवाहरात से जड़ा हुआ था इस लिए हुद हुद ने इस को महाविराट सिंहासन कहा।

39. सबा की रानी और उस की जाति सूर्य की पुजारी थी और किसी ग़ैरुल्लाह की पूजा हुद हुद कि दृष्टि में भी एक अनुचित बात थी। स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला जब जानवर को बोलने की शक्ति प्रदान करता है तो वह बहुदेववाद का खण्डन किये बग़ैर नहीं रहता मगर मनुष्य है कि एक सृष्टा के साझीदार होने की बातें करता है।

40. यहाँ हुद हुद का बयान समाप्त हुआ । इस अवसर पर यह बात समझ लेनी चाहिए कि हुद हुद कोई साधारण पक्षी नहीं था बल्कि हज़रत सुलैमान का ख़ास प्रशिक्षण प्राप्त पक्षी था और उस को अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रुप से मानव बोध प्रदान किया था इस लिए यह संभव हुआ कि वह सबा के हालात को समझे और उस से हज़रत सुलैमान को सूचित करें। यह अल्लाह तआला की क़ुदरत का क़रिश्मा था जिस से स्पष्ट हुआ कि एक हुद हुद मानव बोध पा कर सीधी राह और गुमराही में अन्तर को समझता है और बहुदेववाद को ग़लत और शैतान का फ़रेब क़रार देता है मगर इन्सान है कि अक़्ल रख कर बेअक़्ली की बातें करता है। बुद्धिमान हो कर बुद्धिहीन बनता है।

41. हुद हुद के बयान पर यह अल्लाह तआला की ओर से वृद्धि है जैसा कि संदर्भ से प्रतीत होता है। इस का अनुमोदन इस बात से भी होता है कि इस मौक़े पर सज्दा करने का हुक्म है जो अल्लाह के अपने बयान ही से अधिक मेल खाता है। इस से अभिप्रेत सबा की जाति वालों के पद्चिन्हों पर चलने वाले बहुदेववादियों को ध्यान दिलाना कि वे एक मात्र ख़ुदा को अपना पूज्य क्यों नहीं बनाते जिस के ये और ये गुण एवं ये और ये विशेषताऐं हैं ।

स्पष्ट रहे कि मूल अरबी में ''अल्ला'' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ ''क्यों नहीं'' के भी होते हैं। जैसा कि लिसानुलअरब Vol. 15 Page 434 में बयान हुए हैं इस लिए हम ने इसी के अनुसार अनुवाद किया है।

42. आसमानों की गुप्त चीज़ों का स्पष्ट उदाहरण तो बारिश है जो बादलों में छिपी हुई होती है इसी प्रकार बिजली और दिन की रौशनी । और आधुनिक विज्ञान ने तो आसमान की कई गुप्त चीज़ों का रहस्योदघाटन किया है। जैसे पलैटो उपग्रह, प्रकाश वर्ष (Light Years) की दूरी पर स्थित सितारे, अंतरिक्ष किरणें (Cosmic Rays) आदि!

रह गई ज़मीन की गुप्त चीज़ें तो इन के स्पष्ट उदाहरण वनस्पति हैं तथा हर प्रकार के ख़निज़ पदार्थ और मौजूदा दौर में तो ज़मीन ने काला सोना (तेल की दौलत Oil mineral) भी उगल दिया है और प्लेटिनम तथा यूरेनियम जैसी क़ीमती धातुऐं भी।

43. अर्थात् जो ख़ुदा आसमान और ज़मीन की छिपी चीज़ों को जानता और बाहर लाता है वह तुम लोगों के ख़ुले और छिपे को भी जानता है। फिर जो ख़ुदा ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता है, जो परोक्ष की चीज़ों का अधिकारी है वह तुम्हारे सज्दों का अधिकारी और तुम्हारी पूजा के योग्य है या सूरज और पत्थर के बुत जो न कुछ जानते हैं और न कुछ कर सकते हैं?

44. यह आयते सज्दा है। तिलावत करने वाले और सुनने वाले को चाहिए कि वह तुरंत सज्दा करे जो वास्तव में इस बात का द्योतक है कि वह महान सिंहासन के प्रभु ही को अपना पूज्य बनाए हुए हैं।

इस अवसर पर सज्दा इस दृष्टि से भी बिलकुल उचित है कि हज़रत सुलैमान के क़िस्से में कई घटनाऐं ऐसी बयान हुई हैं कि यदि बुद्धि पर ईमान की पकड़ मज़बूत न हो तो वह क्यों और कैसे, संभव और असंभव की बहस में उलझ कर रह जाएगी । क़ुर्आन ने कुछ जगहों पर बुद्धि की परीक्षा लेनी चाही है। जो सच्चे ईमान वाले होते हैं उन की बुद्धि ऐसे नाज़ुक मौक़े पर अल्लाह के समक्ष सज्दे में जा पड़ती हैं। और यह गुण उस को अक़्लपरस्त लोगों से अलग करता है।

45. हज़रत सुलैमान का हुद हुद को यह जवाब इस बात पर प्रमाण प्रस्तुत करता है कि यह हुद हुद सच और झूठ में अन्तर करने की क्षमता रखता था और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत सुलैमान के लिए मोज्ज़े का प्रदर्शन था।

यह मेरा ख़त ले जा और उन के पास डाल दे फिर हट कर देख कि वे क्या प्रतिक्रिया वयक्त करते हैं। जब (मलिका) ने कहा, ऐ दरबार वालो ! मेरे पास महत्वपूर्ण पत्र डाल दिया गया है। वह सुलैमान की तरफ़ से है और वह यह है कि बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम (अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से)। मेरे मुक़ाबले में उद्दण्डता न दिखाओ और मुस्लिम हो कर मेरे पास हाज़िर हो जाओ । *(अल-क़ुर्आन)*

28. यह मेरा ख़त ले जा और उन के पास डाल दे [46] फिर हट कर देख कि वे क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।[47]

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ
مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۸﴾

29. जब (मलिका) ने कहा, ऐ दरबार वालो ! मेरे पास महत्वपूर्ण पत्र डाल दिया गया है।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿۲۹﴾

30. वह सुलैमान की तरफ़ से है और वह यह है कि बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम (अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से)।[48]

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۳۰﴾

31. मेरे मुक़ाबले में उद्दण्डता न दिखाओ और मुस्लिम हो कर मेरे पास हाज़िर हो जाओ।[49]

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ ع

32. उस ने कहा, ऐ दरबार वालो ! इस मामले में मुझे सुझाव दो, मैं किसी मामले का फैसला नहीं करती जब तक कि तुम लोग मौजूद न हो।[50]

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا
حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿۳۲﴾

33. उन्होंने कहा हम शक्ति शाली [51] और कठोर योद्धा लोग [52] हैं मगर फैसला आप के हाथ में है [53] देखिए, आप क्या हुक्म देना चाहती हैं।[54]

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ
وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿۳۳﴾

34. उस (मलिका) ने कहा बादशाह जब किसी आबादी में दाखिल होते हैं तो उस को तोड़ फोड़ देते हैं और उस के सम्मानित लोगों को अपमानित कर देते हैं। वे ऐसा ही किया करते हैं।[55]

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا
اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۴﴾

35. मैं उन के पास उपहार भेजती हूँ फिर देखती हूँ कि दूत क्या जवाब ले कर आते हैं।[56]

وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌ ۢبِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۳۵﴾

36. जब वह (दूत) सुलैमान के पास पहुँचा तो उस ने कहा क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो? मुझे अल्लाह ने जो कुछ दिया है वह उस से कहीं बेहतर है जो तुम लोगों को दिया है। मगर तुम लोग हो कि अपने उपहार पर गर्वान्वित हो।[57]

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ
خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿۳۶﴾

37. वापस जाओ उन के पास, हम उन पर ऐसे लश्कर ले कर आऐंगे कि वे मुक़ाबला न कर सकेंगे और हम उन को वहाँ से इस प्रकार अपमान के साथ निकालेंगे कि वे अधम (पस्त) हो कर रह जाऐंगे।[58]

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ
مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

46. स्पष्ट हुआ कि यह हुद हुद संदेश पहुँचाने की ख़िदमत भी अन्जाम देता था।

47. अर्थात् ख़त डाल कर तुरन्त वापस न आ, बल्कि किसी कोने से यह देखता रह कि वे क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं ।

48. सबा की रानी ने उस पत्र को माननीय समझा जिस का एक कारण तो यह रहा होगा कि किसी राजदूत के बग़ैर परिन्दे के माध्यम से मिल गया था। दूसरा कारण यह कि यह पत्र सीरिया और फ़िलस्तीन के महाविराट राज्य के प्रसिद्ध और प्रतापी शासक हज़रत सुलैमान की तरफ़ से था और सब से बड़ा कारण ख़त का मज़मून उस के महत्वपूर्ण होने का साक्ष्य प्रस्तुत कर रहा था । अत: उस की शुरूआत ही ''बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम'' से हुई थी । जो एक ऐसा प्रतिष्ठित एवं बरकत वाला कलिमा है कि अल्लाह को पहचानने और उस तक पहुँचने के दरवाज़े इसी चाबी से खुलते हैं। और यह इसी कलिमें की बरकत है कि सबा की रानी पर सत्यमार्ग खुल गया, जैसा कि आगे चलकर मालूम होगा।

हज़रत सुलैमान के क़लम से निकला हुआ यह कलिमा वास्तव में अल्लाह की वह्य है जिस को क़ुर्आन ने इस प्रकार सुरक्षित कर लिया है कि उस की शुरूआत ही बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम से होती है! फिर हर सूरह के लिए इस की हैसियत एक ताज की है सिवाय सूरह तौबा के जो एक बेताज बादशाह है नंगी तलवार लिए हुए।

हज़रत सुलेमान के ख़त से यह रहनुमाई भी मिलती है कि दअवती और तब्लीग़ी ख़तों की शुरुआत अल्लाह के नाम से ही करनी चाहिए।

49. एक तरफ़ हज़रत मूसा को यह हिदायत हुई थी कि फ़िरऔन के पास जाओ तो उस से नरमी से बोलो और दूसरी तरफ़ हज़रत सुलैमान का यह तरीक़ा पेश किया जा रहा है कि उन्हों ने सबा की रानी को ख़त लिखा तो चैलेन्ज का अन्दाज़ अपनाया, कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी और उद्दण्डता न दिखाओ और सीधे मुस्लिम बन कर मेरे पास आ जाओ। इस फ़र्क़ का कारण यह है कि हज़रत सुलैमान शासक होने की हैसियत से हुकूमती सतह पर दअवत पेश कर रहे थे। जब कि हज़रत मूसा को सत्ता प्राप्त नहीं थी।

मालूम हुआ कि एक शक्तिशाली इस्लामी राज्य किसी बहुदेववादी राज्य को चैलेंज के अन्दाज़ में इस्लाम की दअवत पेश कर सकता है।

चारों ख़लीफ़ाओं के ख़िलाफ़तकाल में जो देश जीते गए उन को चैलेंज के अन्दाज़ ही में दअवत पेश की गई थी अर्थात् या जिज़्या दे कर इस्लामी राज्य की मातहती क़ुबूल करो या फिर तलवार फ़ैसला कर देगी।

यह बात कि ''मुस्लिम हो कर मेरे पास हाज़िर हो जाओ'' दो टूक लफ़्ज़ों में इस्लाम स्वीकार करने की दअवत थी। और यह इस बात की दलील है कि हज़रत सुलैमान के सामने न मुल्कों को जीत कर अपने राज्य का विस्तार करना उद्देश्य था और ना शानो-शौकत की फ़ुज़ूल नुमाइश । बल्कि एक महान उद्देश्य था और वह इस्लाम का प्रसार और राज्य स्तर पर उस का स्थायित्व।

इस से यह रहनुमाई भी मिलती है कि एक इस्लामी राज्य को चाहिए कि इस को मक़्सद की हैसियत से सामने रखे और उस के लिए अपने संसाधनों का प्रयोग करे। इस्लाम का बेलाग़ सिद्धान्त यही है कि किसी भी देश में बहुदेववाद को सत्ता न प्राप्त हो क्यों कि जब हुकूमत की मशीनरी बहुदेववाद को फैलाने में लग जाती है तो जनता बुरी तरह गुमराह हो जाती है। उन की भलाई के लिए उन को बहुदेववाद के चंगुल से आज़ाद करना या कम से कम इस्लामी राज्य के प्रभाव में लाना अतिआवश्यक है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट ५७.)

50. इस से यह नतीजा निकालना सही नहीं कि सबा की रानी की शासन व्यवस्था लोकतांत्रिक थी क्यों कि बादशाह भी अपने दरबारियों और अपने मंत्रियों से परामर्श करते रहे हैं फ़िरऔन ने भी अपने दरबार वालों से परामर्श लिया था (सूरह शुअरा २५) इस लिए सबा की हुकूमत शाही हुकूमत (kingdomism) ही थी !

51. अभिप्रेत सैन्य शक्ति है।

52. अर्थात् युद्ध से घबराने वाले नहीं बल्कि इस के लिए तैयार रहने वाले लोग हैं।

53. फ़ैसले का अधिकार रानी ही को था । जो इस बात का सबूत है कि सबा की हुकुमत शाही हुकूमत थी।

54. अर्थात् हम ने अपना रूज्हान ज़ाहिर कर दिया अब फैसला करना आप का काम है अत: आप ही सोंचें कि क्या करना उचित होगा !

55. मतलब यह है कि एक बादशाह से जंग करने की सूरत में भय है कि हमारी पराजय हुई तो फिर पूरी क़ौम को तबाही का और हम को बड़े अपमान का सामना करना पड़ेगा इस लिए जंग को टालना ही बेहतर है।

इस से अन्दाज़ा होता है कि रानी नारी होने के बावजूद मर्दों से ज़्यादा सूझ बूझ रखती थी । नारियाँ सत्ता को संभालने और अदालती फ़ैसले करने की मर्दों की तुलना में कम क्षमता रखती हैं क्यों कि उन पर भावनाओं का प्रभाव अधिक होता है। परन्तु यह कोई ऐसा सुनिश्चित नियम नहीं हैं कि कोई औरत

भी इस से अलग न हो । बल्कि सही बात यह है कि कुछ औरतें मर्दों से भी अधिक सूझ बूझ वाली होती हैं और कुछ मर्द औरतों से भी कम समझ के होते हैं। रानी के मामले को समझने की शक्ति और दूर दृष्टि, निश्चय ही उस के दरबार वालों से बढ़ कर थी। और यह एक अपवाद की सूरत है।

56. सबा की रानी ने यह निर्णय किया कि इस समय हमारा संदेश ले कर एक प्रतिनिधिमण्डल उपहार के साथ सुलैमान की सेवा में उपस्थित हो और देखे कि वे क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। हो सकता है कि इस से दोस्ती की कोई सूरत निकल आए !

57. सबा की रानी ने क़ीमती उपहारों के साथ एक प्रतिनिधि मण्डल हज़रत सुलैमान के पास भेजा था परन्तु हज़रत सुलैमान ने उपहार स्वीकार नहीं किया क्यों कि उपहार इस उद्देश्य से पेश किया गया था कि सबा के शासनाधिकारियों को आप ने इस्लाम स्वीकार करने का जो न्योता दिया था उस से आप हाथ ख़ींच लें और शुभाकांक्षी के स्मबन्ध पर संतोष करें जब कि हज़रत सुलैमान इस पोज़ीशन में थे कि ताक़त के द्वारा बहुदेववादी सत्ता को समाप्त कर के सबा की जाति को शिर्क के शिकंजे से मुक्त कर दें ।

सबा वालों को अपनी दौलत और अपनी शानो-शौकत पर बड़ा गर्व था । इस लिए हज़रत सुलैमान ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे तुम से कहीं अधिक और उत्तम नेमतें प्रदान की हैं इस लिए मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं है कि मैं इस के लालच में एक बहुदेववादी राज्य के अस्तित्व को सहन करूँ!

58. हज़रत सुलैमान एक बहुदेववादी राज्य को सहन करने के लिए तैयार नहीं थे । क्यों कि उस ज़माने में आम तौर से प्रजा राजा के धर्म और जीवन प्रणाली पर हुआ करती थी । इस लिए किसी जाति को गुमराही से निकालने के लिए ज़रूरी था कि असत्य एवं बिगाड़ की व्यवस्था से उस को मुक्त कर दिया जाए । और हज़रत सुलैमान तो ज़बरदस्त ताक़त के मालिक थे इस लिए उन्होंने अपनी हैसियत से बात की और इस प्रकार बात की कि उन का प्रकोप एक बहुदेववादी एवं ताग़ूती (असुर) राज्य पर टूट रहा था। उन का प्रकोप ताक़त के घमण्ड में नहीं था। बल्कि इस लिए था कि शिर्क का ज़ोर टुटे और लोग सीधे रास्ते को जान सकें ।

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि इस्लामी राज्य के सामने एक ऊँचा मक़सद होता है और वह उस की मुनासिबत से अपने कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करते हैं। इस लिए यह समझना सही नहीं है कि उस की जंगें अपनी रक्षा (Defence) की हद् तक ही होती हैं। अगर इस्लाम में केवल रक्षात्मक जंग की इजाज़त होती तो हज़रत सुलैमान सबा के राज्य के विरुद्ध फ़ौज़ी कार्रवाई करने का इरादा ज़ाहिर न करते !

जिन्नों में से एक अफ़रीत ने कहा मैं उसे इस से पहले कि आप अपनी जगह से उठें हाज़िर कर दूँगा। मैं इस की ताक़त रखता हूँ और अमानतदार हूँ। जिस के पास किताब का ज्ञान था उस ने कहा मैं उस को आप के पलक झपकने से पहले हाज़िर किये देता हूँ। जब सुलैमान ने देखा कि वह उस के सामने रखा हुआ है तो पुकार उठा यह मेरे रब का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है ताकि वह मुझे अज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री। और जो शुक्र करता है तो उस का शुक्र करना उसी के लिए लाभदायक है। और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज़ और कृपाशील है। *(अल-क़ुर्आन)*

38. सुलैमान ने कहा ऐ दरबारियों ! तुम में से कौन उस का तख़्त मेरे पास लाता है इस से पहले कि वे मेरे पास मुस्लिम हो कर उपस्थित हों।[59]

قَالَ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْمَلَؤُا۟ أَيُّكُمْ يَأْتِينِى بِعَرْشِهَا
قَبْلَ أَن يَأْتُونِى مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾

39. जिन्नों में से एक अफ़रीत [60] ने कहा मैं उसे इस से पहले कि आप अपनी जगह से उठें हाज़िर कर दूँगा। मैं इस की ताक़त रखता हूँ और अमानतदार हूँ।[61]

قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ ٱلْجِنِّ أَنَا۠ ءَاتِيكَ بِهِۦ قَبْلَ أَن تَقُومَ مِن
مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّى عَلَيْهِ لَقَوِىٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

40. जिस के पास किताब का ज्ञान था उस ने कहा मैं उस को आप की पलक झपकने से पहले हाज़िर किए देता हूँ।[62] जब सुलैमान ने देखा कि वह उस के सामने रखा हुआ है [63] तो पुकार उठा यह मेरे रब का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है [64] ताकि वह मुझे अज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री। और जो शुक्र करता है तो उस का शुक्र करना उसी के लिए लाभदायक है। और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज़ और कृपाशील है।[65]

قَالَ ٱلَّذِى عِندَهُۥ عِلْمٌ مِّنَ ٱلْكِتَٰبِ أَنَا۠ ءَاتِيكَ بِهِۦ قَبْلَ
أَن يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَءَاهُ مُسْتَقِرًّا عِندَهُۥ قَالَ
هَٰذَا مِن فَضْلِ رَبِّى لِيَبْلُوَنِىٓ ءَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۖ وَمَن
شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّى غَنِىٌّ
كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾

41. सुलैमान ने आदेश दिया रानी के लिए उस के सिंहासन का रूप बदल दो। देखें वह हिदायत पाती है या उन लोगों में से है जो हिदायत नहीं पाते ![66]

قَالَ نَكِّرُوا۟ لَهَا عَرْشَهَا نَنظُرْ أَتَهْتَدِىٓ أَمْ تَكُونُ
مِنَ ٱلَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾

42. जब वह हाज़िर हुई तो उस से कहा गया क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है? उस ने कहा गोया कि वही है। और हम को इस से पहले ही ज्ञान प्राप्त हो गया था और हम मुस्लिम थे।[67]

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيلَ أَهَٰكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُۥ
هُوَ ۚ وَأُوتِينَا ٱلْعِلْمَ مِن قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

43. और उस को रोक रखा था ग़ैरुल्लाह की परस्तिश ने जो वह किया करती थी। वह एक काफ़िर क़ौम में से थी।[68]

وَصَدَّهَا مَا كَانَت تَّعْبُدُ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ
مِن قَوْمٍ كَٰفِرِينَ ﴿٤٣﴾

44. उस से कहा गया महल में दाख़िल हो जाओ। उस ने जब देखा तो समझी कि गहरा पानी है और अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। सुलैमान ने कहा यह महल है शीशों से जड़ा हुआ। वह पुकार उठी ऐ मेरे रब मैं अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करती रही और अब मैंने सुलैमान के साथ अपने को अल्लाह सारे जहान के रब के हवाले कर दिया।[69]

قِيلَ لَهَا ٱدْخُلِى ٱلصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً
وَكَشَفَتْ عَن سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُۥ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّن قَوَارِيرَ ۗ
قَالَتْ رَبِّ إِنِّى ظَلَمْتُ نَفْسِى وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَٰنَ لِلَّهِ
رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٤٤﴾

59. प्रसंग से यह बात स्पष्ट है कि प्रतिनिधि मण्डल वापस चला गया और उस ने जब रानी को हज़रत सुलैमान और उन की भव्य हुकूमत के बारे में आगाह किया तो वह स्वयं हज़रत सुलैमान से मिलने के लिए रवाना हो गई। और जब हज़रत सुलैमान को उस की रवानगी की ख़बर हुई तो उन्हों ने उस का सिंहासन उस की आमद से पहले मंगवाना चाहा । ताकि एक चमत्कार उस के सामने आ जाए जो उन की नुबुव्वत की दलील बने।

60. अफ़रीत अर्थात् एक ज़बरदस्त ताक़त रखने वाला!

61. जिन्न ज़मीन से आसमान तक आते जाते हैं इस लिए उन की रफ़्तार को हम इन्सानों की रफ़्तार से और उन की शक्ति को इन्सानों की शक्ति से नहीं आंक सकते । अफ़रीत ने दरबार बरखास्त होने से पहले सबा की रानी के सिंहासन को हाज़िर करने की पेशकश तो कि,और यह भी कही कि मैं उस अमानत में कोई ख़ियानत नहीं करूँगा अर्थात् मूल्यवान सिंहासन को जूँ का तूँ ले आऊँगा । परन्तु हज़रत सुलैमान ने यह मुनासिब नहीं समझा कि यह काम एक जिन्न से लिया जाए।

62. किताब से अल्लाह की किताब अर्थात् तौरात अभिप्रेत है क्यों कि कोई और अर्थ लेने के लिए कोई प्रसंग नहीं है। और ''जिस के पास किताब का ज्ञान था'' से तात्पर्य हज़रत सुलैमान के दरबार का वह व्यक्ति है जो तौरात का बड़ा ज्ञानी विद्वान और उस में गहरी समझ रखनेवाला था। वह समझ गया कि हज़रत सुलैमान चमत्कार के द्वारा रानी का सिंहासन मंगवाना चाहते हैं और उस के लिए एक इन्सान को माध्यम बनाना चाहते हैं। इस लिए इस काम के लिए उस ने अपने आप को पेश किया और चूँकि वह जानता था कि चमत्कार अल्लाह के हुक्म और उस की मर्जी से प्रकट होता है, और इस के लिए समय और स्थान (Time & Space) की दूरियाँ कोई अर्थ नहीं रखतीं इस लिए उस ने कहा मैं उसे आप के पलक झपकने से पहले हाज़िर कर सकता हूँ। मतलब यह था कि जब आप के हाथों एक चमत्कार प्रकट होने जा रहा है तो वह एक क्षण में प्रकट हो सकता है और मैं इस काम को अन्जाम देने के लिए बिलकुल तैयार हूँ ।

हज़रत सुलैमान यह चमत्कार किसी आदमी को माध्यम बनाए बग़ैर भी दिखा सकते थे परन्तु उन्हों ने तौरात के सब से बड़े ज्ञानी विद्वान को यह गौरव प्रदान किया कि यह चमत्कार उन के माध्यम से प्रकट हो । दूसरे शब्दों में यह वास्तव में हज़रत सुलैमान का ही कारनामा था जो अल्लाह के हुक्म और उस की मर्ज़ी से प्रकट हुआ जिस प्रकार दूसरे नबियों के हाथों बहुतेरे चमत्कार प्रकट हुए। अन्तर केवल यह है कि इन्होंने चमत्कारिक रूप से सिंहासन मँगवाने का काम तौरात के एक बड़े ज्ञानी विद्वान से लिया जो उन के दरबार में उपस्थित थे।

कुछ मुफ़स्सिरीन के नज़दीक ''जिस के पास किताब का ज्ञान था'' से तात्पर्य अल्लाह के महान नाम का ज्ञान है। अर्थात् वह व्यक्ति अल्लाह के महान नाम को जानता था इस लिए उस के द्वारा सिंहासन को हाज़िर किया, और फिर इस बहस में पड़ गए कि अल्लाह का महान नाम (इस्मे-आज़म) क्या है। इस प्रकार ''इस्मे-आज़म'' को एक मुअम्मा बना दिया गया। हालाँकि ख़ुदा का इस्मे-आज़म कोई रहस्य नहीं है बल्कि एक ख़ुली हक़ीक़त है और वह नाम है ''अल्लाह''। Proper Noun है और क़ुर्आन में इस का वर्णन इतनी अधिकता के साथ हुआ था कि उस को छोड़ कर किसी और महान नाम की तलाश का सवाल ही पैदा नहीं होता। यह किस प्रकार स्वीकार किया जा सकता है कि क़ुर्आन महान नाम से खाली है और बिस्मिल्लाह, सूरह फ़ातिहा, आयतलकुर्सी और सूरह इख़्लास जिन में उस एक मात्र हस्ती का परिचय कराया गया है और इसी कारण इन की ख़ास फ़ज़ीलत भी है, इस्मे-आज़म से ख़ाली हैं। इसी तरह यह बात भी किस प्रकार स्वीकार की जा सकती है कि अज़्कारे-मस्नूना में रब की प्रशंसा एवं गुणगाण के उत्तम प्रवचन तो मौजूद हैं किन्तु इस्मे-आज़म ग़ायब है। सच्ची बात यह है कि जो लोग अमलियात के गोरखधंधों में फँस गए हैं उन्हों ने इस्मे-आज़म ही का सहारा लिया है और अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी ने बिलकुल सही फ़रमाया है कि ''इस्मे-आज़म'' का विचार एक जाहिलाना और ग़ैर शरअी विचार है।

(अर्ज़ुलक़ुर्आन भाग १ पृष्ट २७०)

63. अर्थात् सिंहासन उसी क्षण वहाँ आ मौजूद हुआ। यमन और बैतुल मुक़द्दस के बीच लगभग डेढ़ हज़ार मील का फ़ासला है इस लिए यह बात यूँ तो अजीब सी मालूम होती है कि इतने दूर के फ़ासले से रानी का सिंहासन एक क्षण के अन्दर सुलैमान के दरबार में पहुँच गया। परन्तु जो लोग अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्यवान होने पर विश्वास रखते हैं उन के लिए इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं। अल्लाह जब कोई चमत्कार अपने नबी के हाथ पर दिखाना चाहता है तो सामान्य रुप से प्रचलित प्राकृतिक नियम उस में बाधा नहीं बनते। हज़रत मूसा की लाठी ज़मीन पर डालते ही साँप बन जाया करती थी। हज़रत स्वालेह के लिए असाधारण ऊँटनी का ज़हूर यकायक हुआ था। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का से बैतुलमुक़द्दस का लंबा सफ़र एक रात में तय किया था। फिर इस भौतिक जगत में भी कुछ चीज़ें बहुत तेज़ रफ़्तार हैं। जैसे प्रकाश एक लाख छियासी हज़ार मील प्रति सेकेन्ड की रफ़्तार से सफ़र तय करता है और चुम्बक (Magnet) के बल पर आवाज़ हज़ारों मील की दूरी पर आनन फ़ानन पहुँच जाती है । जो ख़ुदा अपनी क़ुदरत के

ये करिशमे दिखाता हो उस के लिए अपने नबी के हाथ पर यह निशान ज़ाहिर कर देना क्या मुश्किल है कि एक सिंहासन एक क्षण के अन्दर लम्बा फ़ासला तय कर के सुलैमान के दरबार में खिंच आए।

64. सिंहासन के असाधारण तरीक़े से दरबार में पहुँच जाने पर सुलैमान ने यह नहीं कहा कि यह मेरा कारनामा है बल्कि इस को अल्लाह का फ़ज़्ल (उदार अनुग्रह) बताया । इस से अन्दाज़ा होता है कि हज़रत सुलैमान की बादशाहत अन्य बादशाहों से कितनी अलग थी ।

65. अर्थात् मेरा रब किसी के शुक्रिये का मोहताज नहीं है। उस की शान बड़ी कृपा वाली है अत: जो नाशुक्री करता है वह अपने ही हक़ में बुरा करता है।

66. सिंहासन के रुप को बदलने का आदेश एक ख़ास मक़सद के तहत दिया गया था, और वह यह था कि रानी को सोचने का मौक़ा दिया जाए। अगर वह पहचान जाती है कि ज़ाहिरी तब्दीली के बावजूद यह सिंहासन उसी का है तो उस के मस्तिष्क में यह प्रश्न अवश्य पैदा हो जाना चाहिए कि मेरा सिंहासन यहाँ कैसे आ गया। इस प्रश्न पर जब वह विचार करेगी तो उस पर यह बात खुल जाएगी कि यह हज़रत सुलैमान का चमत्कार है जो उन के नबी होने की दलील है। इस प्रकार वह हिदायत पा सकती है। और अगर उस ने अपने सिंहासन को नहीं पहचाना तो खुल जायगा कि वह सोचविचार नहीं करती और जो सोच विचार नहीं करता वह हिदायत से महरूम रहता है।

यहाँ यह फ़िक़्ही बहस व्यर्थ है कि रानी की मिल्कियत में हाथ डालना हज़रत सुलैमान के लिए किस प्रकार जायज़ हुआ? यह सवाल इस लिए पैदा नहीं होता कि चमत्कार अल्लाह तआला की मर्जी से ही प्रकट होता है और इस मक़सद के लिए वह बन्दों की मिल्कियत में भी हाथ डालता है हज़रत स्वालेह की ऊँटनी के लिए पानी की बारी ऐसी निर्धारित कर दी कि एक दिन पानी के तमाम कुँऐं और स्रोत केवल उसी के लिए ख़ास होंगे और पूरी जाति को अपने कुँओं और स्रोतों से पानी लेने की अनुमति नहीं होगी । इसी प्रकार सबा की रानी का सिंहासन अपने पास मंगवाने और उस में परिवर्तन करने का अधिकार हज़रत सुलैमान को प्राप्त था ताकि एक चमत्कार सामने आए। और यह काम इस उद्देश्य से किया गया था कि रानी सीधे मार्ग को पा जाए ना कि सिंहासन के हीरे जवाहरात हासिल करने के उद्देश्य से !

67. रानी ने अपने सिंहासन को पहचान लिया मगर उस के रुप को थोड़ा परिवर्तित कर दिया गया था इस लिए कहा जैसे कि वही है और साथ ही इस बात को स्वीकार किया कि हज़रत सुलैमान के चमत्कारिक कारनामों का हमें पहले ही से ज्ञान हो गया था और हम इस्लामी जीवन प्रणाली अर्थात दीन इस्लाम को स्वीकार कर के मुस्लिम हो गए थे।

रानी के इस बयान से स्पष्ट होता है कि वह और उस के साथी प्रतिनिधि मण्डल की रिपोर्ट सुन कर ही इस्लाम को मान गए थे लेकिन अभी अपनी जाति के सामने खुल कर अपने मुस्लिम होने को प्रकट नहीं किया था और न अभी इस्लामी मनोभाव उत्पन्न हुआ था ।

हज़रत सुलैमान ने जो ख़त उस को भेजा था उस में यही कहा गया था कि वह मुस्लिम हो कर उन के पास उपस्थित हो जाए इस लिए रानी ने यह सफ़र इस्लाम स्वीकार करने के बाद ही किया होगा ।

68. अर्थात् रानी इस्लाम के पक्ष में तो हो गई थी परन्तु उस ने खुल कर इस्लाम स्वीकार करने को जाहिर नहीं किया था क्यों कि वह एक बहुदेववादी धर्म से सम्बन्ध रखती थी और एक काफ़िर जाति की शासक थी। उस जाति के धर्म को छोड़ कर इस्लाम में दाखिल होना उस के लिए आसान न था। परन्तु जब वह उस माहौल से निकल आई और हज़रत सुलैमान के पास पहुँच गई तो वहाँ उस को अपनी अन्तरात्मा की पुकार पर इस्लाम को खुल कर स्वीकार करने का अवसर मिल गया।

69. हज़रत सुलैमान ने सबा की रानी को उस की वैचारिक ग़लती और गुमराही में लिप्त करने वाली धारणा का एहसास दिलाने के लिए एक शीशमहल बनवाया था जिस की ज़मीन (फ़र्श) स्वच्छ काँच की थी और उस के नीचे पानी बह रहा था। देखने से धोखा होता था कि यह पानी ही पानी है। इस लिए रानी ने उस में से गुज़रने के लिए अपनी पिण्डलियों पर से कपड़े हटा दिए ताकि कपड़े पानी में भीग न जाऐं। हज़रत सुलैमान ने कहा यह शीशों से जड़ा हुआ महल है। इस पर वह तुरन्त चौक पड़ी और उस का ध्यान इस बात की तरफ़ गया कि मनुष्य यदि सोच विचार से काम न ले तो ज़ाहिरी चीज़ को देख कर धोख़ा खा जाता है जब कि हक़ीक़त कुछ और होती है। कायनात में पाये जाने वाले सूरज चाँद आदि भी ख़ुदा नहीं हैं बल्कि ख़ुदा वह है जिस का नूर पूरी कायनात में अपना जलवा दिखा रहा है। जब यह वास्तविकता उस पर खुल गई तो उसे अपनी उस गुमराही का एहसास हुआ कि वह शिर्क अर्थात् अल्लाह का साझी ठहराने जैसे महा पाप में लिप्त रही है। इस लिए उस ने अपने रब के समक्ष इस महापाप को स्वीकार किया!

अब इस्लाम उस के दिल कि गहराईयों में उतर चुका था इस लिए उस ने पूरे बोध और पूरे विश्वास के साथ अपने इस्लाम स्वीकार करने का एलान किया । इस प्रकार हज़रत सुलैमान की सूझ बूझ उस की हिदायत का कारण बनी ।

रहा वह प्रश्न कि हज़रत सुलैमान नबी थे और नबी हज़रात

वैभवशाली जीवन नहीं ग़ुज़ारते, फिर हज़रत सुलैमान ने महल किस तरह बनाया । तो सच्ची बात यह है कि नम्बर एक, यह सब कुछ दअवती मक़सद के लिए और इस्लाम की राजनीतिक कूटनीति के तहत किया गया था न कि वाह वाही तथा गर्व और नुमाइश के लिए, नम्बर दो, हज़रत सुलैमान को असाधारण संसाधन प्राप्त हो गए थे यहाँ तक कि जिन्नों से काम लेना भी उन के लिए संभव हो गया था। इस लिए उन्होंने इन संसाधनों को बैतुल मुक़द्दस के शानदार निर्माण और भव्य सरकारी महल बनवाने के लिए इस्तेमाल किया जिस का कोई प्रभाव ग़रीबों पर न पड़ता था। उन्हों ने यह निर्माण गरीबों का हक़ मार कर नहीं किया था बल्कि अल्लाह तआला ने उन को जो दौलत के ख़ज़ाने प्रदान किये थे उन को उन्होंने दीन के उच्च उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया । नम्बर तीन, एक नबी के जीवन का यह नमूना सामने आया कि तक़वा के ऊँचे मेयार पर रहते हुए एक शानदार हुकूमत भी चलाई जा सकती है और कोई इस ग़लतफ़हमी में न रहे कि किसी भी नबी के लिए संसाधनों की बोहतात नहीं हुई और न कोई नबी राज सिंहासन पर बैठ कर न्याय और परहेज़गारी का नमूना पेश कर सका ।

इस्लाम स्वीकार करने के बाद रानी अपने देश को लौट गई या नहीं इस के बारे में क़ुर्आन ख़ामोश है क्यों कि उस का ध्येय मात्र इतिहास बताना नहीं बल्कि बहुदेववाद के खण्डन में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना को प्रस्तुत करना है जिस से स्पष्ट होता है कि राज सिंहासन पाने वाली एक महिला भी जब खुले मन से ख़ुदा की निशानियों पर विचार करती है तो उस पर बहुदेववाद का ग़लत होना और एकेश्वरवाद का सत्य होना स्पष्ट हो जाता है और वह पूरे विश्वास के साथ इस्लाम में दाख़िल हो जाती है। और कोई यह ख़्याल न करे कि नबियों की दअवत से निर्धन और असहाय लोग ही प्रभावित होते रहे हैं बल्कि ऐसा भी हुआ है कि सत्ताधारी लोग दअवत को स्वीकार कर के इस्लाम की छत्रछाया में आए हैं। बाइबिल में अलबत्ता यह पुष्टि है कि सबा की रानी अपने देश को वापस लौट गई थी।

''तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई।'' (२इतिहास ९:१२)

बहरहाल सबा (अथवा शीबा) की रानी से हज़रत सुलैमान के विवाह का ज़िक्र न क़ुर्आन में हुआ है और न हदीस में और न ही बाइबिल में,और निकटतम अनुमान यही है कि वह अपने देश को वापस लौट गई होगी ताकि वह अपनी जाति को ख़ुदा परस्ती की ओर बुलाए और हज़रत सुलैमान ने सबा (शीबा) के विरुद्ध फ़ौजी कार्रवाई का जो इरादा किया था उसे इसी सूरत में त्यागा होगा जब कि सबा का शासन उन के आधीन आ गया होगा।

कुछ लोग सबा की घटना को औरत के शासक होने के पक्ष में प्रस्तुत करते हैं। उन का तर्क यह है कि हज़रत सुलैमान ने रानी को इस्लाम स्वीकार करने के बाद अपने पद पर बरक़रार रखा। पहली बात तो यह कि इस बात के पक्ष में क़ुर्आन की कोई स्पष्ट आयत नहीं है कि रानी अपने देश को वापस लौट गई और बदस्तूर रानी रही। दूसरी बात यह कि हज़रत सुलैमान ने उस को शासकीय पद प्रदान नहीं किया था बल्कि उस की जाति ने उस को शासक बनाया था। तीसरी बात यह कि उस की जाति काफ़िर और मुश्रिक थी और रानी के हिदायत पाने के बाद उस को अपनी जाति के हिदायत अर्थात् सीधा रास्ता पाने का साधन बनाया जा सकता था। इस लिए इस महान दअवती और इस्लाही उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी महिला को जिस ने पूरे विवेक के साथ इस्लाम स्वीकार किया था अपने पद पर बरक़रार रखा गया हो तो वह एक अपवाद हो सकता है। इस को शरीअत का आम हुक्म समझना सही नहीं। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत तो संपूर्ण शरीअत है जिस में परदे आदि के आदेश भी दिए गए हैं इस लिए इन की पाबन्दी करते हुए औरत का किसी देश का शासक बनना कोई संभव अथवा क़ाबिले- अमल (Feasible) बात नहीं है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

45. और हम ने समूद[70]की ओर उन के भाई स्वालेह को (यह पैग़ाम दे कर) भेजा कि अल्लाह की इबादत करो तो यकायक वे दो गिरोह बन कर झगड़ने लगे।[71]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ
فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

46. उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? अल्लाह से क्षमा क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए।[72]

قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۖ
لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

47. उन्होंने कहा हम तुम को और तुम्हारे साथियों को मनहूस (अपशगुन) समझते हैं। उस ने जवाब दिया,तुम्हारा शगुन अल्लाह के पास है। असल बात यह है कि तुम्हारी आज़माइश हो रही है।[73]

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَن مَّعَكَ ۚ قَالَ طَائِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ ۖ
بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾

48. और शहर में नौ जत्थे वाले थे जो ज़मीन में फ़साद (बिगाड़) बरपा करते और इस्लाह का कोई काम न करते ।[74]

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾

49. उन्होंने (आपस में) कहा अल्लाह की क़सम खा कर प्रतिज्ञा कर लो कि हम इस पर (स्वालेह पर) और इस के घर वालों पर रात को धावा बोलेंगे, फिर इस के वारिस से कह देंगे कि हम इस के परिवार के विनाश के समय मौजूद न थे और हम (अपने बयान में) बिलकुल सच्चे हैं ![75]

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ
مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾

50. उन्होंने एक चाल चली और हम ने भी एक तदबीर की, ऐसी कि उन्हें ख़बर भी न हुई।[76]

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾

51. तो देखो इन की चाल का क्या अंजाम हुआ। हम ने इनको और इन की पूरी जाति को विनष्ट कर दिया ।[77]

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَّا دَمَّرْنَاهُمْ
وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾

52. ये इन के घर हैं जो वीरान पड़े हैं [78]उस ज़ुल्म [79] की पादाश में जो वे करते रहें।इस में बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं।[80]

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾

53. और हम ने उन लोगों को मुक्ति दी जो ईमान लाए थे और (अल्लाह से) डरते थे।[81]

وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾

70. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ११५ से १२६ और सूरह फ़ज्र नोट १२,१३

71. अर्थात् हज़रत स्वालेह की दअवत ख़ालिस तौहीद और एक मात्र इष्ट पूज्य की इबादत की दअवत थी। यह दअवत अपने अस्तित्व में ऐसी थी कि मतभेद एवं झगड़े का कोई प्रश्न पैदा ही नहीं होता परन्तु जब उन्होंने दअवत पेश की तो पूरी जाति दो वर्गों में बट गई। एक ने दअवत को क़ुबूल किया और दूसरे ने इन्कार किया । इस प्रकार तौहीद और शिर्क तथा ईमान और कुफ़्र के बीच कशमकश बरपा हो गई । नबियों से बढ़ कर हिकमत के साथ दअवत को पेश करने वाला और कौन हो सकता है। मगर जब उन्होंने शिर्क और बुतपरस्ती पर चोट की और एक मात्र इष्ट पूज्य को ही पूज्य बताया तो उन के विरोध में एक तूफ़ान उठता रहा है मगर साथ ही एक गिरोह ऐसा भी निकलता रहा है जिस ने उन की दअवत पर हाथ उठाया और साथ निभाने का प्रण किया । यह वर्ग यद्यपि संख्या में बहुत छोटा रहा है परन्तु अपने गुणों एवं आचरणों की दृष्टि से सोसाइटी का क्रीम सिद्ध हुआ है और यह सकारात्मक परिणाम है जो दअवत से वांछित है। और ऐसे ही लोगों से जन्नत की सोसाइटी तैयार होने वाली है ।

मौजूदा दौर में इस्लामी दअवत को पेश करने वालों की भारी संख्या ऐसी है जो शिर्क और बुत परस्ती पर कारी चोट लगाने से कतराती है और उस कशमकश को मोल लेने के लिए आमादा नहीं होती जो तौहीद की बेलाग दअवत को पेश करने के फलस्वरूप बरपा होती है। इसी लिए उन की दअवत अधिक प्रभावी नहीं होती और न ही वांछित लक्ष्य ही को प्राप्त कर पाती है।

72. अर्थात् जल्दबाज़ी से काम ले कर तुम सत्य को झुठला रहे हो । परन्तु यदि तुम गम्भीरता से बिचार करो तो तुम पर सत्य स्पष्ट हो सकता है और तुम्हें अपने गुनाह का एहसास हो सकता है। फिर तुम अल्लाह से क्षमा चाहने वाले और उस की दया के पात्र बन सकते हो।

73. हज़रत स्वालेह की नियुक्ति के बाद जब अल्लाह तआला की तरफ़ से आफ़तें नाज़िल होने लगीं ताकि अचेतावस्था में पड़े लोग सचेत हों और रसूल की दअवत पर कान धरें तो इस आज़माइश का अर्थ उन्हों ने यह लिया कि यह स्वालेह और उन के साथियों का अपशगुन (नहूसत) है। हज़रत स्वालेह ने इस का जवाब यह दिया कि तुम्हारी क़िस्मत अल्लाह के हाथ में है। यह जो कुछ पेश आ रहा है यह उसी की तरफ़ से है। इस से जो चीज़ अमीष्ट है वह तुम्हारी आज़माइश ही है। इस को देवी देवता की नाराज़गी का कारण बताना और तौहीद की निमंत्रणा देने वालों को मनहूस समझना हक़ीक़त की तरफ़ से आँखें बन्द कर लेना है।

74. अर्थात् सोसाइटी में बिगाड़ ही बिगाड़ पैदा कर रहे थे । इस्लाह एवं सुधार के किसी काम से उन्हें दिलचस्पी नहीं थी।

75. नगर के उन उपद्रवी तत्वों ने मिल कर यह योजना बनाई कि सब मिल कर स्वालेह और उन के घर वालों पर रात के समय हमला करेंगे और उन का सर्वनाश करने के बाद उन के वारिस से कह देंगे कि हम घटना स्थल पर मौजूद न थे। इस तरह हम से क़सास (हत्यादण्ड) नहीं लिया जा सकेगा।

स्पष्ट रहे कि क़बीलाई व्यवस्था में क़सास (हत्यादण्ड) का विधान बड़ा महत्व रखता था। यदि किसी व्यक्ति की हत्या कर दी गई हो तो उस का वारिस क़ातिल से ख़ून का मुतालबा करता था। या तो उसे हत्या के बदले अर्थ दण्ड (ख़ून बहा) अदा करना पड़ता था या फिर उसे मृत्युदण्ड दिया जाता था। इस नियम की ज़द से बचने के लिए उन उपद्रवी तत्वों ने यह तरकीब लड़ाई कि सब मिल कर हत्या करेंगे और फिर झूठ बोलेंगे ताकि ख़ून का दावा किसी पर न किया जा सके । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी आगे जा कर ऐसे ही हालात का सामना हुआ। मक्का के विभिन्न क़बीलों ने मिल कर यह साज़िश की कि तमाम क़बीलों के सरदार मिल कर आप की हत्या करेंगे ताकि बनी हाशिम के लिए ख़ून का मुतालबा करना आसान न रहे। मगर अल्लाह तआला ने ठीक मौक़े पर आप की रहनुमाई इस तरह की कि आप ख़ामोशी के साथ मक्का से निकल गए और दुश्मनों की साज़िश नाकाम रही!

76. अर्थात् उन की साज़िश को अल्लाह तआला ने इस तरह नाकाम बनाया कि उन्होंने अपनी योजना को क्रियान्वित करने के लिए जो समय निर्धारित किया था उस से पहले ही उन को अज़ाब (प्रकोप) की चपेट में ले लिया।

77. समूद पर जो अज़ाब आया उस की व्याख्या सूरह हूद नोट १२३ और १२४ में गुज़र चुकी ।

78. अर्थात् हिज्र के इलाके में उन के खण्डहर रह गए हैं जो देखने वालों के लिए इबरत के प्रतीक हैं।

79. समूद जाति के बहुदेववादी कामों और बिगाड़ के रवैये को ज़ुल्म कहा गया है। इस से स्पष्ट होता है कि ज़ुल्म का शब्द-क़ुर्आन किन अर्थो में इस्तेमाल करता है।

80. अर्थात् जो लोग जाहिल बन कर नहीं रहते ।

बल्कि परिस्थितियों एवं घटनाओं का अध्ययन कर के उन के वास्तविक कारणों की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। उन के लिए समूद की इस घटना में इबरत की बड़ी निशानी है।

81. अल्लाह तआला की तरफ़ से जब निर्णायक अज़ाब आया जो रसूल के सच्चे होने का प्रमाण था तो उस की ज़द में काफ़िर, मुश्रिक, और उपद्रवी लोग ही आए। रहे वे लोग जिन्होंने ईमान ला कर तक़वा (ईश-भय) का रवैया अपनाया था वे उस से बचा लिये गए ।

❍ ❍ ❍ ❍

वह जिस ने ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया और उस के बीच दरया जारी किए और उस में पहाड़ खड़े कर दिए। और दो समुद्रों के बीच परदे का आड़ कर दिया क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है? नहीं बल्कि इन में से अधिकतर लोग जानते नहीं हैं। *(अल-क़ुर्आन)*

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾

54. और हम ने लूत [82] को रसूल बना कर भेजा। जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम आँखों देखते बदकारी (कुकर्म) करते हो।[83]

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ
أَنتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

55. क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास काम इच्छा के लिए जाते हो।[84] वास्तविकता यह है कि तुम लोग बड़े जाहिल हो।[85]

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ
لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾

56. मगर उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा कुछ न था कि आपस में कहने लगे, लूत के घरवालों को अपनी बस्ती से निकाल दो।[86] ये लोग बड़े पारसा बनते हैं।[87]

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا
مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٧﴾

57. आख़िरकार हमने उस को और उस के घर वालों को मुक्ति दी सिवाय उस की पत्नी के, कि हम ने तय कर दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।[88]

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿٥٨﴾

58. और हम ने एक ख़ास तरह की बारिश बरसाई।[89] तो क्या ही बुरी बारिश हुई उन लोगों पर जिन्हें ख़बरदार किया जा चुका था।

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ آللَّهُ
خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

59. कहो प्रशंसा है अल्लाह के लिए और सलाम है उस के उन बन्दों पर जिन को उस ने चुन लिया।[90] (इन से पूछो) अल्लाह बेहतर है या वे जिन को ये अल्लाह का साझी ठहराते हैं?[91]

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَأَنبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ
لَكُمْ أَن تُنبِتُوا شَجَرَهَا ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾

60. (पूज्य ये हैं) या वह जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया और उस के द्वारा सुन्दर बाग़ उगाए जिन के वृक्षों को उगाना तुम्हारे लिए संभव न था। क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है।[92] नहीं बल्कि वे लोग (सत्य से) विमुख हो रहे हैं।

أَمَّن جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ
لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

61. वह जिस ने ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया [93] और उस के बीच दरया जारी किए और उस में पहाड़ खड़े कर दिए। और दो समुद्रों के बीच परदे का आड़ कर दिया [94] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है? नहीं बल्कि इन में से अधिकतर लोग जानते नहीं है।[95]

82. हज़रत लूत का वृत्तांत कई सूरतों में गुज़र चुका है। जैसे सूरह आराफ़, सूरह हूद आदि!

83. अर्थात् एक ऐसा गंदा और घृणित काम जिस को कोई भी सूझ बूझ (Common Sense) रखने वाला बुराई और कुकृत्य ठहराए बग़ैर नहीं रह सकता। फिर तुम जानते बूझते यह घृणित कार्य क्यों कर रहे हो?

84. ये लोग समलैंगिकता (लवातित) के रोग में लिप्त थे। औरतों को उन्होंने छोड़ रखा था और मर्दों से अपनी काम इच्छा पूरी करते थे। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट १२९

85. अर्थात् तुम लोग बड़े मुर्ख हो कि खुली मूर्खता के काम करते हो । जेहल का शब्द कभी ज्ञान के मुक़ाबले में इस्तेमाल होता है और कभी बुद्धि के मुकाबले में यहाँ इस दुसरे अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

86. अपनी बस्ती में वे एक ऐसे व्यक्ति को सहन करने के लिए तैयार नहीं हुए जो उन का सच्चा हितैषी था और उन के सुधार के लिए प्रत्यत्नशील था। इस से उन की बिगड़ी एवं विकृत मानसिकता का अन्दाज़ा होता है।

87. यह कटाक्ष था लूत और उन के ईमान वाले साथियों पर जो पाकीज़गी स्वीकार करने पर ज़ोर दे रहे थे ।

88. व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११७

89. अर्थात् पत्थरों की बारिश । अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११९

90. ऊपर जो वृत्तांत बयान हुए हैं उन की समाप्ति अल्लाह की प्रशंसा और उत्तम चुनिन्दा बन्दों के लिए सलाम पर हुआ है। इन वृत्तांतों में अल्लाह तआला के न्याय, तत्वदर्शिता और दायलुता के गुणों की अभिव्यक्ति हुई है। इस लिए वह इस पर उचित रूप से प्रशंसा किये जाने का योग्य है। और उस के चुनिन्दा बन्दों (पैग़म्बरों) ने अपनी ज़िम्मेदारियों को जिस ख़ूबी के साथ अदा किया इस पर वे अल्लाह के यहाँ इस बात के पात्र ठहरे कि उन पर सलामती ही सलामती हो। ईमान वालों के दिल से उन के लिए सलामती ही की दुआऐं निकलती हैं। यही कारण है कि एक नबी के नाम के साथ ''अलैहिस्सलाम'' कहा और लिखा जाता है।

91. प्रश्न बहुदेववादियों से है कि बताओ जो ख़ुदा इस हिकमत के साथ बन्दों पर हुकूमत कर रहा है वह बेहतर है या ईंट पत्थर के वे बुत जिन को तुम ने ख़ुदा की श्रेणी में रख छोड़ा है?

92. अल्लाह के वजूद और उस के अकेले ख़ुदा होने पर क़ुर्आन का तर्क बड़ा स्वाभाविक, समझ में आनेवाला और दिलों में यकीन पैदा करने वाला है वह मन्तिक़ और फ़लसफ़ा (तर्कशास्त्र और दर्शन) की भाषा में बात नहीं करता और न विचारों की बहसें खड़ी करता है क्यों कि उस का संबोधन आम इन्सानों से है न कि किसी विशेष वर्ग से। तथा इस लिए भी कि जो बातें उलझे हुए फ़लसफ़ियाना अन्दाज़ में प्रस्तुत की जाती है वे मस्तिष्क को प्रभावित कर सकती हैं लेकिन उन का दिल में उतरना मुश्किल है। परन्तु क़ुर्आन के तर्क सादा होने के वावजूद इतने सुदृढ़ और ऐसे प्रभावपूर्ण होते हैं कि दिल और दिमाग़ में उतरते चले जाते हैं और ईमान और विश्वास का भाव पैदा हो जाता है। यहाँ भी क़ुर्आन से अल्लाह के एक मात्र इष्ट पूज्य होने पर उसी प्रकार तर्क प्रस्तुत किया गया है।

मनुष्य यदि खुले मन से आसमान और ज़मीन के अस्तित्व पर और इन के द्वारा प्राप्त होने वाली आजीविका एवं रोज़ी पर ग़ौर करे जिस पर मानव जीवन का दारोमदार है तो उस का दिल पुकार उठेगा कि वे सब कुछ आप से आप अस्तित्व में नहीं आया है बल्कि इन सब का कोई पैदा करने वाला है और यह कायनात एक पूरी व्यवस्था है जिस के विभिन्न अंग एक दूसरे से ताल मेल कर के उन उद्देश्यों को पूरा करते हैं जिन के लिए उन को बनाया गया है। अत: आसमान और ज़मीन के तालमेल से ही पानी बरसता है जिस के द्वारा मनुष्य की रोज़ी का सामान होता है। अगर आसमान की शक्तियाँ जैसे सूरज का तापमान हवाऐं आदि ज़मीन से तालमेल न करतीं तो न बारिश हो सकती थी और न रोज़ी उत्पन्न करने का सामान हो सकता था। देखने में आने वाली ये चीज़े इस बात का पर्याप्त सबूत हैं कि यह कायनात ख़ुदा के बग़ैर नहीं है और न ही यहाँ एक से अधिक ख़ुदाओं का अस्तित्व है। अगर कायनात ख़ुदा के बग़ैर होती तो न इस में कोई नियमितता होती और न उद्देश्य। और यदि एक से अधिक ख़ुदा होते तो इस के विभिन्न अंगों में ताल मेल नहीं हो सकता था। एकेश्वरवाद के ये तर्क सादा हैं लेकिन इतने गहरे, मज़बूत और अन्तिम हैं कि इन से अनीश्वरवाद की भी जड़ कट जाती है और बहुदेववाद की भी ! मतलब यह कि ख़ुदा का वजूद और उस का एक मात्र होना कोई अनुमान की बात नहीं है और न ही मन गढ़ंत है और न ही कोई दार्शनिक कल्पना है। बल्कि एक ऐसी हक़ीक़त है जिस का ज्ञान मनुष्य को प्रत्यक्ष रुप से होता है बशर्तिका कि वह अपनी आँखें खुली रखे और अपने स्वभाव को प्रदूषित न करे !

जहाँ तक आसमानों और ज़मीन की रचना की बात है क़ुर्आन साफ़ कहता है कि अल्लाह तआला ही इन को और इन के बीच की समस्त चीजों को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाया है और अरब के बहुदेववादियों की भी यही धारणा थी। किन्तु भारत के बहुदेववादियों का अक़ीदा बड़ा उलझा हुआ और बेहद गुमराह करने वाले हैं उदाहरण स्वरुप ऋगवेद में है कि

आसमान और ज़मीन ख़ुदा के अन्दर से अस्तित्व में आए हैं।

"Out of himself came the invisible world, out of himself came the sky and this earth." -(The Spiritual Heritage of India by Swami Prabhavananda, P. 32, with reference to Rig veda x 121 : 1-2).

ऋगवेद का अंग्रेज़ी अनुवाद वेद प्रतिष्ठान नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। उस की प्रस्तावना में अनुवादक ने पुष्टि की है कि ख़ुदा अकेले कायनात का रचयिता ज़रूर है लेकिन इस अर्थ में नहीं कि उस को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाया है बल्कि वैदिक दर्शन के अनुसार ख़ुदा जो कि रचयिता है और प्रकृति जो अनादिकालिक हैं दोनों का अस्तित्व हमेशा से है।

"The Vedic Philosophy is a concept of co-existence of the two eternals, God the Creator and Primordial matter, or Prakriti ;" (Rig Veda Samhita, Vol.1.P.6).

कितनी घटिया धारणा है यह ख़ुदा की कि उस को सृष्टा माना भी तो सृष्टि के स्तर पर ला कर। गोया ख़ुदा किसी चीज़ को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने पर सामार्थ्य ही नहीं रखता जब कि क़ुर्आन अल्लाह को वास्तविक अर्थों में रचयिता और सामर्थ्यवान मानने की दअवत देता है।

93. अर्थात् ज़मीन को इस तरह बनाया कि उस पर रहना और ज़िन्दगी बसर करना मनुष्य के लिए संभव हुआ। मिसाल के तौर पर अगर वायुमण्डल न होता तो ज़मीन पर ज़िन्दगी बसर करना उसी प्रकार असंभव होता जिस प्रकार चाँद पर असंभव है। इस प्रकार ज़मीन सूरज से जिस फ़ासले पर रखी गई है उस में अगर कोई कमी बेशी होती तो इस पर ज़िन्दगी का वजूद न होता। अत: जो उपग्रह सूरज से बहुत क़रीब या बहुत दूर हैं उन में ज़िन्दगी के आसार का पता नहीं चल सका है । लेकिन ज़मीन अपने स्थान की दृष्टि से ऐसे केन्द्र बिन्दु पर है कि ज़िन्दगी के लिए पूरी तरह साज़गार बन गई है। क्या यह सब कुछ आप से आप हुआ या एक सर्वशक्तिमान एवं सर्वसामर्थ्यवान की रचना का परिणाम है?

94. व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ुरक़ान नोट ७१.

95. अर्थात् ये लोग ख़ुदा से अनभिज्ञ हैं और नहीं चाहते कि ख़ुदा की सही पहचान इन्हें प्राप्त हो।

वह जो बेक़रार की फ़रियाद सुनता है जब कि वह उस को पुकारता है और उस के कष्ट को दूर करता है और तुम्हें ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाता है क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है ? तुम लोग कम ही नसीहत हासिल करते हो ! वह जो थल और समुद्र के अंधेरों में तुम्हारी रहनुमाई करता है और जो अपनी रहमत के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी लिए हुए भेजता हैं, क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है ? बहुत उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं ।*(अल-क़ुर्आन)*

62. वह जो बेक़रार की फ़रियाद सुनता है जब कि वह उस को पुकारता है और उस के कष्ट को दूर करता है [96] और तुम्हें ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाता है [97] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है ? तुम लोग कम ही नसीहत हासिल करते हो ![98]

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوٓءَ
وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ
قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

63. वह जो थल और समुद्र के अंधेरों में तुम्हारी रहनुमाई करता है [99] और जो अपनी रहमत [100] के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी लिए हुए भेजता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है? बहुत उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं।[101]

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ
الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ أَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ
تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾

64. वह जो पैदाइश की इब्तिदा करता है, फिर उस की पुनरावृत्ति करेगा, और जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी है? कहो अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो ! [102]

أَمَّنْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ
السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٦٤﴾

65. (इन से) कहो आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं जो ग़ैब का ज्ञान रखता हो, सिवाय अल्लाह के [103] और वे नहीं जानते कि कब उठाए जाऐंगे।[104]

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ ۚ
وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

66. बल्कि आख़िरत के बारे में उन का ज्ञान गड्ड मड्ड हो गया है। बल्कि ये लोग उस के बारे में शक में पड़े हुए हैं। बल्कि ये उस से अन्धे हैं।[105]

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ
مِّنْهَا ۖ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾

67. और ये काफ़िर कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो चुके होंगे तो क्या हमें (क़ब्रों से) निकाला जाएगा?

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَآبَآؤُنَا أَئِنَّا
لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾

68. इस की धमकी हम को भी दी गई है और हमारे बाप दादा को भी दी जाती रही है। मगर वह मात्र अगले लोगों के अफ़साने हैं।[106]

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَآبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هٰذَا
إِلَّا أَسٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

69. कहो, ज़मीन में चल फिर कर देख लो कि मुजरिमों का क्या अन्जाम हुआ।[107]

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عٰقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾

96. यह तजरिबा तो प्रत्येक व्यक्ति को होता है कि जब वह अत्यधिक कष्ट से पीड़ित हो जाता है तो उसे ख़ुदा याद आ जाता है, और उसे फरियाद के लिए पुकारता है। फिर उस के कष्ट को भी वही दूर करता है। यह मनुष्य के अपने अन्दर की गवाही है कि अल्लाह ही फ़रियादों का सुननेवाला है। मगर इस अन्दरुनी गवाही के बावजूद कितने ही लोग ग़ैरुल्लाह को फ़रियाद सुनने वाला और मुश्किलें दूर करने वाला ठहराने लगते हैं ।

97. वह अल्लाह ही है जिस ने इन्सान को ज़मीन पर इख़्तियार वाला बना कर भेजा कि वह उस की तमाम चीज़ों को इस्तेमाल में लाता है। और सब पर उस का वर्चस्व क़ायम है अगर किसी का यह दावा हो कि ये अधिकार किसी और ने प्रदान किये हैं तो वह इस की दलील पेश करे। मगर बहुदेववादी भी इस के क़ायल नहीं कि इन्सान को ख़ुदा के सिवा किसी और ने इख़्तियार वाला बनाया है। रहे ख़ुदा का इन्कार करने वाले तो उन के पास इस सवाल का कोई जवाब सिरे से मौजूद ही नहीं है कि मनुष्य को ये इख़्तियार कहाँ से प्राप्त हो गए?

98. अर्थात् ख़ुदा की ये मेहरबानियाँ ऐसी हैं कि मनुष्य के ध्यान को बार बार उस की ओर ख़ींच रही हैं किन्तु कम ही ऐसा होता है कि वह उस की ओर ध्यान दे।

99. अर्थात् ऐसे चिन्हों को उस ने बना दिया है कि आदमी राह पा सके और सफ़र की दिशा मालूम कर सके। जैसे पहाड़ दरिया जो थल यात्रा में रास्ता मालूम करने का साधन हैं। इसी प्रकार सितारे जो जहाज़ के सफ़र में चिन्ह का काम देते हैं।

100. मुराद बारिश है।

101. अर्थात् अल्लाह को तो बहुदेववादी भी मानते हैं किन्तु उन की ख़ुदा के बारे में धारणा बहुत घटिया होती है। अरब के बहुदेववादी ख़ुदा की महिमा और महानता की सही कल्पना करने में असमर्थ रहे और भारत के बहुदेववादी तो ख़ुदा को इन्सान से भी निम्नस्तर का ठहराते हैं।

102. अर्थात् यदि तुम्हारे पास इस बात का कोई प्रमाण है कि अल्लाह के सिवा कोई हस्ती है जो पहली बार भी पैदा करती है और फिर पुन: उस को पैदा कर सकती है और अजीविका का प्रबन्ध भी कर रही है, तो उसे सामने लाओ। लेकिन जो लोग अनेकेश्वरवाद के क़ायल हैं उन के पास न पहले कोई दलील थी और न आज है। अरब के बहुदेववादियों का कहना तो यह था कि बाप दादा से यही धारणा चलती चली आ रही है। और भारत के बहुदेववादी, बहुदेववाद को दर्शन शास्त्र की चादर में लपेट कर प्रस्तुत करते हैं मगर होती हैं बिलकुल अटकल पच्चू बातें और एक दूसरे से टकराने वाली (Contradictory) भी। एक तरफ़ ख़ुदा के अकेले होने का दावा भी।

“God alone is one.” -(Rig Veda Samhita-Introduction Vol.I.p.73)

और दूसरी तरफ़ तीन ख़ुदाओं (Trinity) का अक़ीदा भी।

“Ours is a Holy Trinity, the family of three eternals, the Infinite Supreme Self (the father) (ii)the eternal Primal matter, the Prakriti (the Mother) and (iii) the numberless infinitesimal self (the sons).” Rig Veda Samhita -Introduction Vol. 1. Page 16).

और साथ ही अनगिनत देवताओं की धारणा भी :

“There are as many Devas or spiritual Entities as there are qualities in the World.” -(Outlines of Vedanta P.131)

तथा यह दावा भी कि सर्वोच्य ख़ुदा ने दूसरे ख़ुदाओं को जन्म दिया है।

“From a part of him was born the body of Universe and out of his body were born the gods, the earth and men.” -(Spiritual Heritage of India, p.32)

इन तमाम उलझी हुई और परस्पर विपरीत बातों के विरुद्ध क़ुर्आन अल्लाह के एकमात्र होने को इतने उचित अन्दाज़ में प्रस्तुत करता है कि एक साफ़ ज़ेहन का आदमी कोई उलझन और टकराव महसूस नहीं करता और बात दिल और दिमाग़ में उतर जाती है।

103. अर्थात् जब अल्लाह के सिवा किसी को ग़ैब की जानकारी ही नहीं है तो किसी के बारे में यह विश्वास करना कि वह पुकारने वाले की पुकार को सुनता है और उस की आवश्यकताओं को पूरा करता है सरासर ग़लत और बेबुनियाद है। चाहे यह धारणा फ़रिश्तों के बारे में बनाई जाए या जिन्नों के बारे में, या पैग़म्बरों, बुज़ुर्गों और वलियों के बारे में।

अफ़सोस है कि क़ुर्आन की इस पुष्टि के बावजूद मुसलमानों का एक समूह इस गुमराही में लिप्त है कि फ़रियादों की पूर्ति और मुश्किल कुशाई के लिए बुज़ुर्गों को जो क़ब्रों में दफ़न हैं पुकारने में कोई हरज नहीं । वे क़ब्र में रहते हुए हर एक के हालात को जानते हैं उस की पुकार को सुनते हैं और उस की मदद करते हैं। हालाँकि क़ुर्आन की पुष्टि के अनुसार इन में से एक बात भी सही नहीं न उन को ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान है कि क़ब्र में रहते हुए दुनिया के एक एक व्यक्ति के हालात को जानें।

न वे ख़ुदा हैं कि कोई कहीं से पुकारे और वे उस की पुकार को सुन लें। और न वे आलमे-बर्ज़ख (यमलोक) में रहते हुए किसी की मदद ही को पहुँच सकते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भी ग़ैब (परोक्ष) के ज्ञान से सम्बन्धित बड़ी अतिश्योक्तिपूर्ण धारणा बना ली गई है और फिर इस पर बहसें और मुनाज़रे भी होते हैं। अगर साफ़ ज़ेहन से क़ुर्आन का अध्ययन किया जाए तो तमाम गुमराहियों से मुक्ति मिल जाती है। इल्मे-ग़ैब (परोक्ष के ज्ञान) की अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट ८१ और सूरह आराफ़ नोट २९१.

104. अर्थात् जो क़ब्र में दफ़न हैं उन्हें यह भी पता नहीं कि कब क़ियामत क़ायम होगी और उन्हें उठा खड़ा किया जाएगा । इसी तरह फ़रिश्तों और जिन्नों को भी क़ियामत की तारीख़ मालूम नहीं है। फिर वे ग़ैब के जानकार कैसे हुए कि किसी की भी पुकार को सुनें?

105. अरब के बहुदेववादी आख़िरत के बारे में जैसा कि ऊपर गुज़रा बिलकुल अनभिज्ञ थे। नबियों की हिदायत के जो आसार उन के पास रह गए थे उन में आख़िरत की संक्षिप्त जानकारी भी शामिल थी लेकिन उस के साथ जब अज्ञानता एवं बहुदेववादी धारणाऐं मिल गई तो उन का वह ज्ञान भी उलझ कर रह गया। जैसे उन की यह धारणा कि इन्सान जब मर कर मिट्टी हो गया तो उसे शरीर सहित दोबारा किस प्रकार पैदा किया जाएगा। इसी प्रकार उन की यह धारणा कि हमारे ये पुज्य ख़ुदा के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं। और जब हम उन की पूजा अर्चना करते हैं तो आख़िरत के हिसाब का मामला यदि सामने आ ही गया तो वे हमें अज़ाब से कैसे नहीं बचाऐंगे। इसी प्रकार जब उन का ज्ञान गड्ड मड्ड हो गया तो आख़िरत का उन्हें विश्वास नहीं रहा बल्कि शक में पड़ गए कि आख़िरत होगी अथवा नहीं । फिर यही शक उन की इच्छा भक्ति के फलस्वरुप आख़िरत के इन्कार में परिवर्तित हो गया और ऐसे अन्धे हो गए कि वे आख़िरत की ओर रहनुमाई करने वाली किसी भी निशानी को देख न सके!

और जहाँ तक भारत के बहुदेववादियों की बात है उन के यहाँ भी कर्मानुसार इनाम और दण्ड पाने की धारणा एक हद तक पायी जाती है जो अपने मूल की दृष्टि से प्रकृति की रहनुमाई और नबियों की हिदायत ही का नतीजा है। किन्तु असंख्या इष्ट पूज्यों की धारणा और आवागमन की धारणा ने इन को ऐसे उलझा दिया कि आख़िरत की उन के यहाँ कोई कल्पना ही नहीं है। कर्मानुसार फल की उन के यहाँ यह धारणा है कि जो व्यक्ति बुरा कर्म करता है उस की आत्मा मरने के बाद विभिन्न रुप धार लेती है। वह इन्सान का रुप धार कर भी दोबारा जन्म ले सकती है और एक कीटाणु के रुप में भी।

"Souls enter various forms of existence from man to worm." -(Outlines of Hinduism, by T.M. Mahadevan P.63).

फिर यह जन्म दर जन्म का चक्कर चलता रहता है जब तक कि आत्मा ब्रहमा का अध्यात्म प्राप्त नहीं कर लेती। और जिस का कर्म अच्छा होता है यहाँ तक कि उस की इच्छाऐं मर चुकी होती हैं, वह दोबारा जन्म नहीं लेता बल्कि ब्रहमा में लीन हो जाता है।

"But he in whom desire is stilled suffers no rebirth after death, having attained to the highest desiring only the self, he goes to no other world. Realising Brahman, he becomes Brahman." -(Spiritual Heritage of India, p.68).

अल्लाह की पनाह ऐसी बातों से ! कर्मफल की यह धारणा कैसी बहुदेववादी धारणा है कि अच्छा कर्म करने वाला मनुष्य ख़ुदा का अंग बन जाता है। गोया ख़ुदा भी कोई समुद्र है जिस में दरया गिर जाते हैं। इसी प्रकार बुरा कर्म करने वाले मनुष्य का दुनिया में बार बार और विभिन्न रूपों में जन्म लेना मात्र अटकल की बातें हैं जिस को दर्शन के साँचे में ढाला गया है। यह धारणा नबियों की शिक्षा के विरुद्ध होने के अलावा बुद्धि के विपरीत भी है और सत्य से परे भी। सब नबियों की शिक्षा यह है कि कर्मों का फल पाने के लिए अल्लाह तआला ने क़ियामत का दिन निर्धारित किया है जब वह समस्त इन्सानों को उनके शरीर समेत दोबारा ज़िन्दा करेगा और व्यक्तिग़त रुप से प्रत्येक व्यक्ति को अल्लाह के समक्ष अपने विचारों और अपने कर्मों की जबाबदेही करनी पड़ेगी। जिन लोगों ने ईमान ला कर नेक काम किए होंगे वे अनंत इनाम के पात्र ठहरेंगे और उन को हमेशा हमेशा की जन्नत मिलेगी। और जिन लोगों ने कुफ्र और शिर्क किया होगा वे अपनी ग़लत धारणाओं और उद्दण्डतापूर्ण रवैये के चलते सदा सर्वदा के दण्ड के पात्र ठहरेंगे और अनंत नर्क में झोंक दिये जाऐंगे । मगर आवागमन की धारणा नबियों की इस शिक्षा के विपरित है और किसी भी आसमानी किताब से इस का समर्थन नहीं होता ।

आवागमन की धारणा बुद्धि के विपरीत भी है। और यह एक चक्कर है जिस का न आरंभ है और न अन्त। पहले मनुष्य अस्तित्व में आया या जानवर। अगर जानवर अस्तित्व में आया होगा तो वह पहले जन्म में इन्सान रहा होगा। और अगर इन्सान अस्तित्व में आया तो वह पहले जन्म में क्या रहा होगा। फिर किसी को भी यह नहीं मालूम कि वह इस से पहले कितनी बार जन्म लेता रहा है और किस पाप के चलते उस ने मौजूदा

जन्म पाया है।

आवागमन की धारणा सत्य के विपरीत भी है क्यों कि मानव जाति का आरम्भ तो एक मर्द और औरत से हुआ था। अगर यह धारणा सही होती तो ये दो लोग ही बार बार जन्म लेते रहते मगर मनुष्यों की संख्या में इतनी वृद्धि कि वह अरबों तक पहुँच गई है इस धारणा का खण्डन करता है।

मतलब यह कि आवागमन की धारणा एक ग़लत और बुद्धि में न समाने वाली धारणा है। इस के विपरीत आख़िरत की धारणा बुद्धिसंगत भी है और एक बहुत बड़ी हक़ीक़त भी।

106. इस इन्कार में यह स्वीकृति मौजूद है कि क़ियामत के दिन उठाए जाने की बात ऐसी नहीं है कि जिस को पहली बार इन्होंने पैग़म्बर की ज़बान से सुना हो ! बल्कि यह एक जानी बूझी बात है जो एक नस्ल से दूसरी नस्ल में आती रही है। और यह इस बात का सबूत है कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने आख़िरत की जो शिक्षा दी थी उस के प्रभाव बनी इस्माईल में मौजूद थे।

107. अर्थात् जिन क़ौमों ने आख़िरत का इन्कार किया था उन का जीवन अपराधग्रस्त हो कर रह गया है। अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करने में उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं रही। और नैतिक बन्दिशों को तोड़ कर वे बिलकुल आज़ाद हो गए। ऐसी क़ौमों का जो अन्जाम दुनिया में हुआ इस के कुछ आसार ज़मीन पर बिखरे पड़े हैं। क़ुर्आन इस आसार को देखने और इस से इबरत हासिल करने की दअवत देता है। इस उद्देश्य से सफ़र करने को प्रोत्साहित किया गया है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

70. ऐ पैग़म्बर !तुम इन (के हाल) पर ग़म न करो। और न इन की चालों पर जो वे चल रहे हैं, दिल तंग हो।[108]

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

71. वे कहते हैं यह धमकी कब प्रकट होगी अगर तुम सच्चे हो।[109]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾

72. कहो असंभव नहीं कि जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो उस का एक हिस्सा तुम्हारे पीछे ही लगा हुआ हो।[110]

قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ
الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾

73. वास्तव में तुम्हारा रब लोगों पर बड़ा अनुग्रह (फ़ज़्ल) करने वाला है। मगर अधिकतर लोग शुक्र नहीं करते।[111]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

74. और निस्संदेह तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कुछ वे सीने में छिपाए हुए हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं।[112]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾

75. और आसमान और ज़मीन में कोई गुप्त चीज़ ऐसी नहीं जो एक स्पष्ट किताब में अंकित न हो।[113]

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي
كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾

76. निस्संदेह यह क़ुर्आन बनी इस्राईल पर उन बहुत सी बातों की हक़ीक़त स्पष्ट कर रहा है जिन में वे मतभेद कर रहे हैं।[114]

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾

77. और यह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए।[115]

وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

78. निश्चय ही तुम्हारा रब अपने हुक्म से इन के बीच फ़ैसला कर देगा।[116] वह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ है।[117]

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾

79. तो (ऐ पैग़म्बर !) अल्लाह पर भरोसा रखो निश्चय ही तुम बिलकुल हक़ पर हो।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾

80. तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते [118] और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जब कि वे पीठ फेर कर भागे जा रहे हों।

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا
وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾

108. यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तसल्ली है कि अगर वे तुम्हारी तमाम कोशिशों के बावजूद अपनी आँखें खोलने के लिए तैयार नहीं हैं तो उन के हाल पर तुम अफ़सोस और ग़म न करो और न उन की उन चालों से जो वे तुम्हारे ख़िलाफ़ चल रहे हैं परेशान हो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेंगे।

109. अर्थात् क़ियामत जिस की धमकी तुम हमें दे रहे हो कब आएगी ।

110. मतलब यह है कि तुम्हारा यह ख़्याल कि क़ियामत अगर क़ायम होने वाली है तो अभी क्यों नहीं क़ायम हो जाती? तुम्हारी जल्दबाज़ी को दर्शाता है। हालांकि क़ियामत का दिन मुजरिमों के लिए अज़ाब का दिन होगा और अगर अभी क़ियामत आने में कुछ देर है तो वह दिन तो बिलकुल निकट आ लगा है जब कि ये दुनिया ही में बुरे अन्जाम से दोचार होंगे मुराद वह अज़ाब है जो रसूल को झुठलाने वाली क़ौम पर दुनिया ही में आता है। अत: अभी कुछ ही साल गुज़रे थे कि बद्र और हुनैन की जंगों से दोचार हुए और पैग़म्बर की ज़िन्दगी ही में वे लोग विनष्ट हो कर रहे जिन का कुफ्ऱ अभी जुदा होने वाला न था । और वे मर गए तो उन की रुहों पर अज़ाब का सिलसिला शुरू हो गया । इस प्रकार जिस अज़ाब के लिए वे जल्दी मचा रहे थे वे आख़िरकार उस की ज़द में आ गए।

111. अर्थात् अल्लाह तआला की लोगों पर यह बड़ी कृपा एवं अनुकंपा है कि वह उन की उद्दण्डता के बावजूद उन्हें संभलने और अपना सुधार कर लेने का अवसर देता है। इस पर लोगों को उस का कृतज्ञ होना चाहिए लेकिन वे उस के उदार अनुग्रह की क़द्र नहीं करते और अपना रवैया नहीं सुधारते।

112. अर्थात् क़ियामत के बारे में जो अनावश्यक बहसें इन्होंने छेड़ रखी हैं उन को भी अल्लाह जानता है और उस वैमनस्य, ईर्ष्या एवं शत्रुता को भी जो इस का मूल उत्प्रेरक है और जिस को वे अपने सीनों में छिपाए हुए हैं।

113. किताब से तात्पर्य संपूर्ण जगत का वह रिकार्ड है जिस में कायनात में घटित होने वाली हर बात चाहे वह कितनी ही गुप्त क्यों न हो साफ़ साफ़ दर्ज है। मतलब यह है कि अल्लाह की जानकारी में तो हर बात है साथ ही उस ने पूरी कायनात का रिकार्ड रखने का भी प्रबन्ध किया है जिस से स्पष्ट होता है कि यह कायनात योजनाबद्ध तरीक़े पर चल रही है।

114. मक्का के आरम्भिक दौर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बनी इस्राईल से वास्ता नहीं पड़ा था। लेकिन हज़रत मूसा और हज़रत सुलेमान और अन्य नबियों के जो क़िस्से क़ुर्आन में बयान हुए हैं उन में और तौरात आदि में वर्णित क़िस्सों में अन्तर पाया जाता है इसी तरह कुछ दूसरी बातों में भी अन्तर स्पष्ट है। इसी मुश्किल का यहाँ उत्तर दिया गया है। बनी इस्राईल ने तौरात को सुरक्षित नहीं रखा बल्कि उस में काट छाँट की और नबियों के चरित्र को दाग़दार बनाया । फिर धारणाओं आदि की भी व्याख्या के चक्कर में पड़ कर परस्पर विभेद का शिकार हो गए। यहाँ तक कि वे वर्गों में बट गए और एक दूसरे के ख़िलाफ़ ज़िद पैदा हो गई और ज़्यादती पर उतर आए। मगर क़ुर्आन ने नबियों के वृत्तांत और धारणाओं एवं आदेशों को इस ख़ूबी के साथ बयान किया कि दूध का दूध और पानी का पानी हो कर रह गया। यह मूसा की लाठी थी जो उन की झूठी रिवायतों को निगल गया।

115. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट ३०८ और सूरह यूनुस नोट नम्बर ८९,९०

116. अर्थात् ऐसा फ़ैसला जो अदालती होगा और जिस के बाद किसी के लिए कुछ कहने की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहेगी बल्कि तुरन्त वह लागू हो जाएगा ।

117. वह प्रभुत्वशाली है इस लिए उस का फ़ैसला पूर्ण और अन्तिम होगा जिस के क्रियान्वयन को कोई रोक न सकेगा। और वह सर्वज्ञ है इस लिए उस के फ़ैसले में किसी ग़लती की संभावना नहीं है।

118. अर्थात् जिन के ज़मीर मुर्दा हो गए हैं उन पर तुम्हारी नसीहत कोई असर नहीं करेगी । यह बात यद्यपि व्यंजनात्मक रूप में बयान हुई है परन्तु आयत के शब्द

اِنَّکَ لَا تُسۡمِعُ الۡمَوۡتٰی

अर्थ :- ''तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते।'' से एक महत्वपूर्ण वास्तविकता भी स्पष्ट होती है और वह यह कि मुर्दे सुनते नहीं हैं और अगर मुर्दे सुनते होते तो यहाँ यह व्यंजना उचित न हो सकती थी । हाँ अल्लाह किसी व्यक्ति को जो मर गया हो कुछ सुनवाना चाहे तो यह और बात है। ऐसी अपवादिक सूरतें तो संभव हैं किन्तु उसूली वास्तविकता यही है कि मुर्दे सुनते नहीं हैं । रहा क़ब्रों की ज़ियारत के मौक़े पर क़ब्र में पड़े लोगों को संबोधित कर के सलाम और दुआ करना तो यह एक प्रभावपूर्ण शैली है जिस में ग़ायब को हाज़िर के तौर पर पेश किया जाता है ताकि ज़ियारत करने वाला यह महसूस करे कि वह मुर्दो की दुनिया में पहुँच कर उन से मुलाकात कर रहा है। और यह बात मौत को याद दिलाने वाली तथा आख़िरत का विश्वास पैदा करने वाली है अत: क़ब्र की ज़ियारत की मस्नून दुआ का अन्तिम भाग وَاِنَّا اِنۡشَآءَ اللّٰهُ بِكُمۡ لَاحِقُوۡنَ

अर्थ :- ''और हम इन्शाअल्लाह तुम से मिलेंगे''यही प्रभाव छोड़ता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बच्चे

इब्राहीम के इन्तिक़ाल पर फ़रमाया था

وَاِنَّ بِفِرَاقِکَ یَا ابراهیمُ لَمَحۡزُوۡنُوۡن

अर्थ :- ''ऐ इब्राहीम हम तुम्हारी जुदाई पर दुखी हैं '' (बुखारी क़िताबुलजनाइज़)

इस में सम्बोधन एक मरने वाले बच्चे से है परन्तु वास्तव में यह दुख अभिव्यक्त करने का एक तरीक़ा है और लोगों पर यह स्पष्ट करना अभिप्रेत था कि दुख व्यक्त करने का जायज़ तरीक़ा क्या है। ताकि वे नोहा और मातम का तरीक़ा न अपनाऐं ।

और जब उन पर हमारा फ़रमान लागू होगा तो हम उन के लिए ज़मीन से एक जानवर निकाल खड़ा करेंगे जो उन से बात करेगा कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं रखते थे। और वह दिन कि हम हर उम्मत (समुदाय) में से उन लोगों की एक फौज़ इकट्ठा करेंगा जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे फिर उन को श्रेणीबद्ध किया जाएगा ।*(अल-क़ुर्आन)*

81. और न तुम अन्धों को उन की गुमराही से हटा कर राह पर ला सकते हो। तुम तो उन ही को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और अज्ञापालक बन जाते हैं।[119]

وَمَآ أَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا
مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

82. और जब उन पर हमारा फ़रमान लागू होगा तो हम उन के लिए ज़मीन से एक जानवर निकाल खड़ा करेंगे जो उन से बात करेगा कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं रखते थे।[120]

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ
الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ أَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾

83. और वह दिन कि हम हर उम्मत (समुदाय) में से उन लोगों की एक फौज़ इकट्ठा करेंगा जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे फिर उन को श्रेणीबद्ध किया जाएगा।[121]

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ
يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

84. यहाँ तक कि जब वह सब हाज़िर हो जाऐंगे तो (अल्लाह) पूछेगा कि क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठलाया था और उन को अपने ज्ञान क्षेत्र में नहीं लाया।[122] या फिर तुम क्या करते रहे ?

حَتّٰىٓ إِذَا جَآءُوْ قَالَ أَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا
عِلْمًا أَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

85. और उन के ज़ुल्म के कारण हमारा फ़रमान उन पर लागू होगा ।[123] और वे कुछ बोल न सकेंगे।[124]

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

86. क्या वे देखते नहीं कि हम ने रात को इस लिए बनाया ताकि वे उस में सुकून हासिल करें और दिन को रौशन बनाया। निश्चय ही इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।[125]

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ
إِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾

87. और जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो वे सब जो आसमानों और ज़मीन में हैं घबरा उठेंगे, सिवाय उन के जिन को अल्लाह (उस से सुरक्षित रखना) चाहेगा [126] और सब उस के समक्ष विनीत बन कर हाज़िर होंगे।[127]

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَنْ فِى الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۚ
وَكُلٌّ أَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾

88. तुम पहाड़ों को देखते हो और समझते हो कि वे जमे हुए हैं मगर वे बादलों की तरह उड़ रहे होंगे [128] यह अल्लाह की कारीगरी होगी जिस ने हर चीज़ को मज़बूत बनाया।[129] तुम जो कुछ कर रहे हो उस से वह भिज्ञ हैं।[130]

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ
السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِىْٓ أَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ۚ إِنَّهٗ
خَبِيْرٌ ۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

119. अर्थात् तुम्हारा आयतें सुनाने का लाभ उन ही लोगों को पहुँचता है जो सत्य स्वीकार करने के लिए आमादा रहते हैं और अल्लाह की आयतों को सुन कर ईमान लाते तथा उस के आज्ञापालक बन जाते हैं। ईमान का सम्बन्ध दिल की दशा और ज़बान के इक़रार से है और इस्लाम (फ़रमाँबरदारी) का सम्बन्ध कर्म से है। मतलब यह है कि वे मात्र विचारधारा के स्तर पर मुसलमान नहीं बनते बल्कि दिल से ईमान को स्वीकारते, ज़बान से इक़रार करते और उस के अनुसार कर्म करते हैं ।

120.''दाब्बतुलअर्ज़'' (ज़मीन से निकलने वाला जानवर जो लोगों से बातें करेगा) अल्लाह की बहुत बड़ी निशानी होगी जब कि क़ियामत का समय बहुत ही निकट आ लगा होगा । जब उन पर हमारा फ़रमान लागू होगा का मतलब यह है कि जब अल्लाह काफ़िरों को अज़ाब की निशानी दिखाना चाहेगा, और क़ाफ़िरों से मुराद वास्तविक काफ़िर हैं न कि क़ुर्आन नाज़िल होने के समय के काफ़िर ।

यह एक बहुत बड़ी भविष्यवाणी है जो क़ुर्आन में की गई है। और हदीस में भी इस का ज़िक्र क़ियामत की निशानियों में हुआ है। (मुस्लिम किताबुलफ़ितन)

यह एक जानवर होगा जो ज़मीन से निकलेगा और उस की विशेषता यह होगी कि वह लोगों से बातें करेगा । ऐसी बातें जिस से स्पष्ट होगा कि लोगों का अल्लाह की निशानियों और उस की आयतों पर विश्वास न करना बिल्कुल ग़लत था। मतलब यह कि यह जानवर अल्लाह तआला की ज़बरदस्त क़ुदरत का ऐसा प्रतीक बन कर प्रकट होगा कि आख़िरत के घटित होने पर स्पष्ट तर्क तथा क़ुर्आन और पैग़म्बर की सत्यता का ख़ुला सबूत होगा। इसी सूरह में अल्लाह के इस मोज्ज़े (चमत्कार) का ज़िक्र गुज़र चुका कि कि हुद हुद ने हज़रत सुलैमान से बात की । मगर जो अल्लाह के मोज्ज़ों को नहीं मानते या सिरे से ख़ुदा ही का इन्कार करते हैं वे तो क़ुर्आन के इस बयान पर विश्वास नहीं करते। मगर जब क़ियामत के क़रीब एक ऐसा जानवर उन के सामने ला खड़ा किया जाएगा जो उन से बातचीत करेगा तो उस समय वे इस का क्या अर्थ बताएंगे अथवा बच निकलने का कौन सा रास्ता निकालेंगे।

स्पष्ट रहे कि ''दाब्बतुलअर्ज'' के बारे में क़ुर्आन ने बहुत संक्षिप्त बात कही है और हदीस में भी इस की कोई तफ़सील बयान नहीं हुई है। इस लिए यह बात कि यह जानवर किस देश में प्रकट होगा और उस की शक्ल सूरत क्या होगी और इसी प्रकार के अन्य प्रश्नों का उत्तर भविष्य के परदे में छिपा हुआ है। इस सिलसिले में अपने अपने अन्दाज़े बयान करना सही नहीं और जिन रिवायतों में ''दाब्बतुलअर्ज़'' के बारे में तफ़सीलात बयान हुई हैं वे कमज़ोर हैं और उन में परस्पर विपरीत बातें बयान हुई हैं इस लिए उन को क़ुर्आन के इस आयत की तफ़्सीर (व्याख्या) बताना सही नहीं। तिर्मिज़ी की भी एक हदीस में इस बात का ज़िक्र है कि ''दाब्बतुल अर्ज़'' के साथ हज़रत सुलैमान की अंगुठी और हज़रत मूसा की लाठी होगी । लाठी से वह मोमिन के चेहरे को रौशन करेगा और अंगूठी से काफ़िर के नाक पर मुहर लगा देगा! (तिर्मिज़ी अबवाबुत्तफ़्सीर सूरह अन्-नम्ल)

इस हदीस को तिर्मिज़ी ने यद्यपि ''हसन'' कहा है लेकिन इस का रावी (उल्लेखकर्ता) औस बिन ख़ालिद है जिस को कई मुहद्दिसीन ने कमज़ोर कहा है। अत: अस्मा-उर-रिजाल की किताब (रावियों के हालात बताने वाली किताब) तहज़ीबुत्तहज़ीब में है :-

قَالَ ازدى مُنكَر الحديث و قَالَ ابُنُ القَطّانِ اوس مجهولُ الـحـالِ لَهٗ ثلاثةُ احاديث عَنُ اَبى هريرة مُنكَر وَ ذَكَرَهٗ ابنُ حبان فى الثِقَاتِ۔ (تہذیب التہذیب۔ابن حجرج ا۔ص ۳۸۲)

अर्थ : अज्दी कहते हैं वह मुन्करल-हदीस (कमज़ोर) है और इब्ने क़तान कहते हैं औस का हाल अज्ञात है। इस ने अबू हुरैरह से तीन हदीसें रिवायत की हैं जो मुन्कर (कमज़ोर) हैं और इब्ने हबान ने उस का ज़िक्र सिक़ा रावियों (विश्वस्नीय उल्लेखकर्ता) में किया है ।

और दूसरा रावी (उल्लेखकर्ता) अली इब्ने ज़ैद है और वह भी कमज़ोर है अत: इमाम अहमद कहते हैं वह कुछ भी नहीं है। जोज़जानी कहते हैं वह कमज़ोर है। नसई ने भी उसे कमज़ोर कहा है और इब्ने हुज़ैमा कहते हैं उस की ख़राब याददाश्त के कारण मैं उस की हदीस से तर्क नहीं करता। (देखिए तहज़ीबुत्तहज़ीब जिल्द ७ पृष्ट ३२२) इस लिए यह हदीस क़ाबिले हुज्जत नहीं है।

121. अर्थात् क़ियामत के दिन हर उस समूह में से जिस को रसूल की दअवत पहुँच गई थी उन लोगों को इकट्ठा करेंगे जिन्होंने अल्लाह की निशानियों और उस की नाज़िल की हुई आयतों को झुठलाया था। ये लोग फ़ौज दर फ़ौज जमा किये जाएंगे और फिर उन के करतूतों के लिहाज़ से उन को विभिन्न टुकड़ियों (Division) में बाँट दिया जाएगा ।

122. अर्थात् तुम ने मेरी आयतों को किस बुनियाद पर झुठलाया था। क्या तुम्हें स्पष्ट रुप से मालूम हो गया था कि इस कायनात में और स्वयं तुम्हारे अपने अस्तित्व में कोई निशानी ऐसी नहीं है जो अल्लाह के वजूद, उस की वहदत (अर्थात् उस का एकमात्र होना) उस की क़ुदरत और उस की

महानता, कर्मो का फल और आख़िरत का विश्वास पैदा करती हो । और यह कि अल्लाह की जो आयतें जिस रसूल ने भी पेश कीं वे वास्तव में अल्लाह की आयतें नहीं थी? अगर पूरी खोजबीन से तुम्हें वह मालूम नहीं हो गया था और सच्चाई यही है कि तुम्हारा यह झुठलाना किसी खोजबीन का नतीजा नहीं था तो फिर क्या तुम ने बिना खोजबीन के और बिना जाने बूझे इन को झुठला दिया था?

आज बड़े बड़े पढ़े लिखे लोगों का हाल यह है कि वे डारविन के प्रगति सिद्धान्त और मार्क्स की विवादित भौतिकता और इस प्रकार के अन्य सिद्धान्तों से प्रभावित हो कर ख़ुदा और आख़िरत के इन्कार करने वाले हो गए हैं। ये लोग ज्ञान के नाम पर अज्ञानता का परिचय दे रहे हैं। यदि वे खुले मन से कायनात और उस में पाये जाने वाले चिन्हों को देखते तथा उस का अध्ययन करते और अल्लाह की उन आयतों पर जो क़ुर्आन के रुप में इन के सामने मौजूद है ग़ौर करते तो उन को सच्चा ज्ञान प्राप्त हो सकता था। मगर वैमनस्य और अहं ने उन को इस से दूर रखा।

123. अर्थात् अज़ाब का फ़ैसला उन पर लागू हो जाएगा।

124. क़ियामत के दिन मुजरिमों को विभिन्न चरणों से गुज़रना होगा । एक चरण वह होगा जब कि अल्लाह उन पर उन के उस जुल्म को जो उन्होंने अपने ही ऊपर किया था इस तरह उजागर कर देगा कि वे कोई उत्तर न दे सकेंगे!

125. अर्थात् ये लोग इस बात पर ही सोच विचार करते कि रात उन के लिए जो सुकून का साधन और दिन उन के लिए दौड़ धूप करने का साधन है तो क्या यह अल्लाह के पालनहार तथा रब होने की दलील नहीं है और क्या इस से इन्सान की ज़िन्दगी का उद्देश्यपूर्ण होना स्पष्ट नहीं होता। और क्या ये सब कुछ आँखों से देख लेना इस बात की याददेहानी नहीं करता कि मरने के बाद क़ियामत की सुबह नमूदार होने वाली है।

126. जब क़ियामत का पहला सूर फूँका जाएगा तो पूरी कायनात में ऐसी हौलनाक स्थिति पैदा होगी कि ज़मीन तो ज़मीन आसमान के रहने वाले भी घबरा उठेंगे। इस घबराहट से केवल वही सुरक्षित रहेंगे जिन को अल्लाह सुरक्षित रखना चाहेगा

127. अर्थात् जब दूसरा सूर फूँका जाएगा तो सब के सब अल्लाह के समक्ष इस तरह से उपस्थित होंगे कि विनीतभाव में झुके हुए। कोई अकड़ और घमंड न दिखा सकेगा। बड़े बड़े घमण्ड करने वालों का घमंड ख़ाक में मिल चुका होगा।

128. अर्थात् आज पहाड़ अपनी जगह जमे हुए दिखाई देते हैं लेकिन क़ियामत के दिन वे उड़ रहे होंगे।

129. अर्थात् यह अल्लाह की क़ुदरत का करिशमा होगा जिस ने हर चीज़ को ऐसे मज़बूत नियमों में जकड़ रखा है कि वे अपनी जगह या अपनी सीमा परिधि ही में रहती हैं। जैसे ज़मीन में अल्लाह तआला ने ऐसी चुम्बकीय शक्ति (Magnetic Force) रखी है कि हर चीज़ उस की ओर खींची आती है और पृथ्वी की सीमा से कोई भी चीज़ बाहर नहीं जाती। यह और बात है कि किसी दूसरे प्राकृतिक नियम के अन्तर्गत कोई चीज़ उस की आकर्षण परिधि से बाहर निकल जाए। लेकिन अगर पृथ्वी से इस शक्ति को अलग कर दिया जाए तो पहाड़ भी उसी तरह बेवज़न हो कर हवा में उड़ सकते हैं जिस प्रकार आकाश में चीज़ें बेवज़न हो कर बिखर जाती हैं।

130. वह तुम्हारे कर्मों से पूरी तरह भिज्ञ हैं। इस लिए जब क़ियामत बरपा होगी तो वह तुम्हारे कर्मों का ठीक ठीक बदला तुम्हें देगा ।

(कहो) मुझे यही हुक्म दिया गया है कि इस शहर के रब की इबादत करूँ जिस ने इसे हुर्मत वाला (प्रतिष्ठित) बनाया है और जो हर चीज़ का मालिक है। मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुस्लिम बन कर रहूँ। और यह कि क़ुर्आन पढ़ कर सुनाऊँ। जो हिदायत (सीधी राह) अपनाएगा वह अपनी ही भलाई के लिए अपनाएगा और जो गुमराह हो तो कह दो मैं तो बस ख़बरदार करने वाला हूँ। *(अल-क़ुर्आन)*

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ
يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

89. जो व्यक्ति नेकी [131] ले कर आएगा उस को उस से बेहतर अज्र (बदला) मिलेगा और ऐसे लोग उस दिन की घबराहट से सुरक्षित रहेंगे।[132]

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ۗ هَلْ
تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾

90. और जो बुराई ले कर आएगा [133] तो ऐसे लोग औंधे मुँह जहन्नम में झोंक दिए जाऐंगे । तुम को बदले में वही कुछ दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो ।[134]

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ
كُلُّ شَىْءٍ ۖ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾

91. (कहो) मुझे यही हुक्म दिया गया है कि इस शहर के रब की इबादत करूँ जिस ने इसे हुर्मत वाला (प्रतिष्ठित)बनाया है [135] और जो हर चीज़ का मालिक है। मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुस्लिम बन कर रहूँ।[136]

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾

92. और यह कि क़ुर्आन पढ़ कर सुनाऊँ।[137] जो हिदायत (सीधी राह) अपनाएगा वह अपनी ही भलाई के लिए अपनाएगा और जो गुमराह हो तो कह दो मैं तो बस ख़बरदार करने वाला हूँ।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. कहो तारीफ़ अल्लाह के लिए है।[138] वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा और तुम उन्हें पहचान लोगे।[139] तुम लोग जो कुछ कर रहे हो उस से तुम्हारा रब बेख़बर नहीं है।

131. मुराद विचार,धारणा और कर्म की नेकी है। मतलब यह है कि जो नेकी के गुण ले कर उपस्थित होगा।

132. जब क़ियामत का दूसरा सूर फूँका जाएगा और सब लोग ज़िन्दा हो कर हश्र के मैदान में जमा होंगे तो नेक लोगों पर उस रोज़ की हौलनाकी के बावजूद कोई घबराहट नहीं छाएगी क्यों कि उन्हें अच्छे अन्जाम की उम्मीद होगी ।

133. तात्पर्य विचारों, धारणाओं और कर्मों की बुराई है।

134. अर्थात् फल कर्मानुसार होगा । जैसी करनी वैसी भरनी । वे अल्लाह की आयतों से मुँह फेरते थे। इस प्रकार जब उन्हों ने अज़ाब ही की तरफ़ अपना रुख कर लिया था तो वे उचित रुप से इस के पात्र हुए कि औंधे मुँह जहन्नम में झोंक दिए जाऐं।

135. अर्थात् मक्का शहर जिस को इब्राहीम अलैहिस्सलाम के समय से हरम क़रार दिया है। और इस दृष्टि से इस का ऐतिहासिक महत्व है और इस का ऐतिहासिक महत्व इस के एकेश्वरवाद का केन्द्र होने के कारण है अत: यह बात कि अल्लाह ही इस शहर का रब है एक जानी बूझी हक़ीक़त है और उस ने आदेश यही दिया है कि मैं उस की इबादत करूँ।

136. अर्थात् अपने को अल्लाह के ही हवाले करूँ और उसी का आज्ञाकारी बन कर रहूँ ।

137. क़ुर्आन पढ़ कर सुनाने का हुक्म लोगों को इस्लाम की निमंत्रणा देने की दृष्टि से बड़ा महत्व रखता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को केवल नसीहत और दअवत ही का हुक्म नहीं दिया गया था बल्कि साथ ही यह हुक्म भी दिया गया था कि लोगों को क़ुर्आन पढ़ कर सुनाऐं। यह इस लिए कि अल्लाह के कलाम से बढ़ कर मनुष्य को प्रभावित करने वाली कोई वस्तु नहीं और इस लिए भी कि अल्लाह के कलाम के द्वारा उस की हुज्जत (पूर्ण तर्क) उस के बन्दों पर पूरी तरह क़ायम हो जाती है। यह बात कि क़ुर्आन अरबी में है और उस के पहले संबोधी अरबवासी थे, ग़ैर अरबों के सामने क़ुर्आन पेश करने में बाधक नहीं है। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोम के शासक (कैसर) को जो दअवती ख़त लिखा था उस में क़ुर्आन की आयतें नक़ल की थी और क़ैसर ने अनुवादक द्वारा उस का मतलब मालूम कर लिया था।

मौजूदा दौर में प्रत्येक भाषा में अनुवाद और प्रकाशन की सुविधाऐं उपलब्ध हो गई हैं अत: इस को प्रचार एवं प्रसार का साधन क्यों न बनाया जाए और इस के अनुवादों का बड़े पैमाने पर प्रकाशन क्यों न किया जाए?

138. सूरह की समाप्ति अल्लाह की तारीफ़ पर हो रही है कि वह हस्ती निश्चय ही प्रशंसा योग्य है जिस ने इस शान का क़ुर्आन नाज़िल किया कि ज्ञान के दरिया बहा दिए।

ध्यान रहे कि इस सूरह में ज्ञान की चर्चा बार बार हुई है जिस से उस के विभिन्न पहलू रौशन हो गए हैं। यह गोया इस सूरह की प्रमुखता है।

139. इशारा है क़ियामत की निशानियों की तरफ़ जो क़ियामत के निकट के दौर में प्रकट होगी और उन को देख कर उस दौर के इन्कार करने वाले जान लेंगे कि क़ियामत एक हक़ीक़त बन कर सामने आ रही है।

इस तरह दुनिया ही में क़ुर्आन और पैग़म्बर की सच्चाई दुनिया वालों पर स्पष्ट हो कर रहेगी। मिसाल के तौर पर दाब्बतुलअर्ज़ (دابة الارض) का आना जिस का वर्णन ऊपर गुज़र चुका। याजूज माजूज की यलग़ार (सूरह अम्बिया -९६) इसी तरह हदीस में क़ियामत की कुछ निशानियाँ बयान हुई हैं जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाज़िल होना और सूरज का पश्चिम से निकलना (बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़) आदि। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्-आम नोट २९३.

रोम के शासक (क़ैसर) के नाम
नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र

''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम''

मुहम्मद की तरफ़ से जो अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल है यह ख़त हिरक़ल रोम के शासक के नाम है। सलाम हो उस पर जो हिदायत की पैरवी करे। मैं तुम को इस्लाम की दअवत देता हूँ, इस्लाम स्वीकार कर लोगे सलामत रहोगे और अल्लाह तुम को दोगुना अज्र (इनाम) देगा। लेकिन अगर तुम ने इन्कार किया तो देशवासियों का गुनाह तुम्हारे सर होगा। ऐ अहले-किताब! एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच संयुक्त (मुश्तरक़) है, यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और न किसी को उस का साझी ठहराऐं और न हम में से कोई किसी को अल्लाह के सिवा रब बनाए। अगर ये लोग बात को न मानें तो साफ़ कह दो, गवाह रहना हम मुस्लिम हैं।''

२८.सूरह अल-क़सस

नाम : क़सस का मतलब है क़िस्से अथवा वृत्तांत बयान करना । आयत २५ में इस बात का वर्णन हुआ है कि हज़रत मूसा जब मदयन पहुँचे तो उन्होंने एक क़िब्ती का उन्हीं के हाथों ग़ल्ती से क़त्ल किए जाने की घटना बयान की। इस घटना को बयान करने के लिए क़सस के शब्द इस्तेमाल हुए हैं और इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अलक़सस है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह नम्ल के कुछ मुद्दत बाद ही नाज़िल हुई होगी ।

केन्द्रीय विषय : नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के सिलसिले में संदेहों को दूर करना और आप की रिसालत का विश्वास पैदा करना है। इस सिलसिले में हज़रत मूसा का क़िस्सा तफ़्सील से बयान किया गया है ताकि उसी परिवेश में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को देखा जा सके।

कलाम की तरतीब : आयत १ और २ भूमिका के तौर पर हैं ।

आयत ३ से ४३ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वृत्तांत बयान हुआ है। ख़ास तौर से उन के जन्म की घटनाऐं और उन के जीवन के कुछ अन्य पहलू इस में उजागर किये गए हैं।

आयत ४४ से ६१ में इन्कार करने वालों के संदेहों का उत्तर दिया गया है।

आयत ६२ से ७५ शिर्क (बहुदेववादी) का खण्डन करते हुए तौहीद (एकेश्वरवाद) को तर्क सहित प्रस्तुत किया गया है।

आयत ७६ से ८४ में एक पूँजीपति तथा धन के पुजारी की घटना जिस का नाम क़ारून था, बयान कर के इबरत दिलाई गई है।

आयत ८५ से ८८ सूरह की समाप्ति की आयतें हैं जिन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तसल्ली का सामान भी है और अपने विचार और अपने तरीक़े पर डटे रहने की हिदायत भी ।

२८.सूरह अल-क़सस

سُورَةُ الْقَصَصِ

आयतें : 88

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. ता सीन मीम [1]।

طسٓمٓ ⑴

2. ये रौशन किताब की आयतें हैं।[2]

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ⑵

3. हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन की कुछ घटनाऐं पूरी सेहत के साथ सुनाते हैं।[3] उन लोगों के लिए जो ईमान लाऐं।[4]

نَتْلُوا عَلَيْكَ مِن نَّبَإِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ⑶

4. हक़ीक़त यह है कि फ़िरऔन ज़मीन में सरकश हो गया था [5] और उस ने देश वासियों को वर्गो में विभाजित कर दिया था।[6] उन में से एक वर्ग को उस ने कमज़ोर बना रखा था। उन के लड़को को वध करता और उन की लड़कियों को ज़िन्दा रहने देता।[7] निस्संदेह वह बड़ा फ़सादी था।[8]

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا
يَسْتَضْعِفُ طَائِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَحْيِي
نِسَاءَهُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ⑷

5. और हम चाहते थे कि उन लोगों पर अपना उदार अनुग्रह (फ़ज़्ल) करें जो देश में कमज़ोर बना कर रखे गए थे और उन को पेशवा बनाऐं और उन को वारिस बनाऐं।[9]

وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الْأَرْضِ
وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ⑸

6. और ज़मीन में उन को सत्ता प्रदान करें [10] और फ़िरऔन और हामान [11] और उन के लशकरों को इन के द्वारा वह दिखाऐं जिस का उन्हें भय था।[12]

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا
مِنْهُم مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ⑹

7. और हम ने मूसा की माँ को प्रकाशना की कि इस को दूध पिलाओ फिर जब तुम्हें इस के बारे में अंदेशा हो तो इसे दरिया में डाल दो और भय और ग़म न करो। हम इस को तुम्हारे पास वापस लाऐंगे और हम इस को रसूल बनाने वाले हैं।[13]

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ
فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ
وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑺

1. विभक्त अक्षरों (हुरूफ़े-मुक़त्तआत) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट १ और सूरह यूनुस नोट १

यहाँ ط "ता" का इशारा तूर पर्वत की तरफ़ है जिस का वर्णन आयत २९ और ४६ में हुआ है जिस के दामन में हज़रत मूसा को नुबुव्वत मिली ।

س "सीन" का इशारा सुल्तान (स्पष्ट तर्क) की तरफ़ है जो हज़रत मूसा और हज़रत हारून को अल्लाह तआला ने प्रदान की थी । और जिस का ज़िक्र आयत ३५ में हुआ है ।

और م "मीम" का इशारा मूसा की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत ३ और विभिन्न आयतों में हुआ है और जिन का क़िस्सा विस्तार से इस सूरह में बयान हुआ है।

2. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूसुफ़ नोट २

3. अर्थात् ये क़िस्से बिलकुल सच्चे हैं और शब्द शब्द सही हैं। इन की सत्यता का अन्दाज़ा आदमी को उस समय होता है जब कि वह बाइबिल के उलझे हुए बयान को देखता है।

4. अर्थात् इस से लाभ वही लोग उठाऐंगे जो ईमान लाऐंगे।

5. सरकश होने का अर्थ अल्लाह से बग़ावत करना है, उस के आदेशों की जगह अपने आदेश चलाना और ज़मीन में न्याय और शान्ति स्थापित करने के बजाय ज़ुल्म ज़्यादती करना है।

6. अर्थात् वैमनस्य और अनुचित राजनितिक लाभों एवं स्वार्थों के चलते देशवासियों को उस ने विभिन्न वर्गो में बाँट रखा था। सत्ताधारी वर्ग के अधिकार सुरक्षित थे और अन्य वर्गो के अधिकार उस की दया और उस की मर्ज़ी पर निर्भर थे तथा उन के साथ भेद भाव का व्यवहार प्रचलित था दूसरे शब्दों में फ़िरऔन का शासन बदतरीन क़िस्म का साम्प्रदायिक शासन था और साम्प्रदायिक शासन का रवैया कैसा होता है इस का अंदाज़ा तो हम अपने देश भारत में आसानी से कर सकते हैं।

7. अर्थात् बनी इस्राईल को ।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मिस्र में सत्ता प्राप्त हो गई थी और बनी इस्राईल की वहाँ अच्छी पोज़ीशन हो गई थी जिस के चलते उन की संख्या में काफ़ी वृद्धि हो गई थी । मगर बाद के दौर में नस्ल और देश का वैमनस्य एवं भेद भाव उत्पन्न हो गया और फ़िरऔन को यह भय हुआ कि यह अल्पसंख्यक कहीं बहुसंख्यक में परिवर्तित न हो जाऐं इस लिए उस ने बनी इस्राईल के नवज़ात शिशुओं को जान से मार देने का आदेश जारी किया। वह बनी इस्राईल से कड़े परिश्रम का काम लेता था और उन पर तरह तरह की ज़्यादतियाँ करता था।

8. अर्थात् वह हर दृष्टि से फ़सादी था। अपने विचार और अपने कर्म की दृष्टि से भी तथा शासक होने की हैसियत से भी। अत: उस का शासन अन्याय और जोर ज़बरदस्ती का शासन था और उस ने सोसायटी में बहुत बड़ा बिगाड़ पैदा कर दिया था ।

9. अर्थात् फ़िरऔन ने बनी इस्राईल को अपने ज़ालिमाना शासन के द्वारा दबा रखा था लेकिन अल्लाह तआला का फ़ैसला यह था कि इस को उभारा जाए। और अल्लाह जब किसी को उभारना चाहता है तो वह उभर कर रहता है और कोई ताक़त उस को दबाने में सफ़ल नहीं होती।

वारिस बनाने का अर्थ नेमतों का वारिस बनाना है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह शुअरा नोट ५३)

10. अर्थात् फ़िरऔन और मिस्रीयों की ग़ुलामी से निकाल कर इन को सीरिया की ज़मीन का शासक बनाए।

11. क़ुर्आन के बयान से स्पष्ट होता है कि हामान फ़िरऔन की हुकूमत में किसी बहुत बड़े पद पर नियुक्त था। हो सकता है कि प्रधानमंत्री रहा हो । मौजूदा ज़माने के कुछ एतिराज़ करने वाले ने यह सवाल उठाया है कि हामान नाम का कोई व्यक्ति फ़िरऔन की हुकूमत में नहीं था । किन्तु यह एतिराज़ बिलकुल बेबुनियाद है क्यों कि उस ज़माने का विस्तृत इतिहास लिखित रुप से मौजूद नहीं है जिस के आधार पर यह दावा किया जा सके ।

12. फ़िरऔन वाले यह भय महसूस करते थे कि बनी इस्राईल अल्प संख्या में होने के बावजूद कहीं उन पर प्रभुत्व न पा जाऐं। और अल्लाह का फैसला यही था कि बनी इस्राईल के द्वारा फ़िरऔनियों की सत्ता उन के वजूद सहित ग़र्क हो जाए और आख़िरकार ऐसा ही हुआ जिस की तफ़सील आगे आ रही है। इस से सबक़ मिलता है कि अगर ईमान वालों के किसी वर्ग को समय की फ़िरऔनी दुष्ट शासन ने मज़लूम बनाकर रखा है तो अल्लाह तआला की ख़ामोश तदबीर उस मज़्लूम अल्प वर्ग को ज़ालिम बहुसंख्यकों का सर कुचलने का साधन बना सकती है।

हज़रत मूसा और फ़िरऔन के क़िस्से के ये अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू थे जिन को इस क़िस्से की भूमिका के रूप में प्रस्तु किया गया ताकि निगाहें उन पर केन्द्रित रहें। इस के बाद हज़रत मूसा के जन्म का हाल और दूसरे हालात बयान हुए हैं।

13. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट३४

8. अतः उस को फ़िरऔन के घर वालों ने उठा लिया कि वह उन के लिए शत्रु और ग़म का कारण बने।[14] वास्तव में फ़िरऔन, हामान और उन के लश्कर सब बड़े दोषी थे।[15]

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ
فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ﴿٨﴾

9. और फ़िरऔन की बीवी ने (फ़िरऔन से) कहा यह मेरे और तुम्हारे लिए आँखों की ठंडक है इसे क़त्ल न करो।[16] संभव है कि यह हमारे लिए लाभप्रद हो, या हम इसे बेटा बना लें। और वे अन्जाम से बेख़बर थे ।[17]

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِي وَلَكَ ۖ
لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

10. और मूसा की माँ का दिल बेक़रार [18] हो गया। क़रीब था कि वह इस राज़ को ज़ाहिर कर देती अगर हम उस का दिल मज़बूत न करते।[19] यह इस लिए किया ताकि वह मोमिन बन कर रहे।[20]

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَارِغًا ۖ إِنْ كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ
لَوْلَا أَنْ رَبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾

11. उस ने उस (बच्चे) की बहन से कहा तू इस के पीछे पीछे जा, अतः वह उस को दूर से देखती रही और उन लोगों को इस की ख़बर भी न हुई।[21]

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿١١﴾

12. और हम ने उस (बच्चे) पर पहले ही से दूध पिलाने वालियों को हराम कर रखा था।[22] उस (की बहन) ने कहा क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इस की परवरिश करेंगे [23] और इस के हितैषी होंगे।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ
أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ﴿١٢﴾

13. इस तरह हम ने उस को उस की माँ के पास लौटा दिया ताकि उस की आँखें ठण्डी हों और वह ग़म न करे।[24] और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा था मगर अधिकतर लोग जानते नहीं।[25]

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ
أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

14. और जब वह अपनी जवानी को पहुँच गया और उस में गंभीरता आ गई तो हम ने उस को हिकमत और ज्ञान प्रदान किया।[26] हम नेक लोगों को इसी प्रकार बदला (इनाम) देते हैं।[27]

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ
نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾

14. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ३६

15. अर्थात् फ़िरऔन का यह पूरा जत्था ग़लत और गुनाह करने वाला था । इस लिए अल्लाह तआला ने ऐसी तदबीर की कि आगे जा कर वह अपने सुख चैन से वंचित हो गए।

16. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ४०

17. अर्थात् यह अल्लाह की ख़ामोश तदबीर थी जो फ़िरऔन और उस के समर्थकों के ख़िलाफ़ पड़ती थी किन्तु वे इस से बेख़बर थे कि यही मूसा, जिस के पालन पोषण में लगे हुए हैं अपने साथ अल्लाह की वह लाठी भी लाए हैं जिस में आवाज़ नहीं है और जो कुछ ही समय बाद उन को परास्त करने वाली है।

18. मूसा की माँ को यद्यपि पहले ही वह्य के द्वारा इत्मीनान दिलाया गया था कि बच्चा उस के पास वापस आने वाला है किन्तु माँ फिर भी माँ है। वह बच्चे की जुदाई और एक ज़ालिम के घर उस के पहुँच जाने पर किस तरह व्याकुल न होती। दिल की यह हालत बिलकुल स्वाभाविक थी इस लिए यह कोई ऐसी बात न थी जो ख़ुदा पर भरोसा न करने के अर्थ में ली जाए।

19. माँ की ज़बान से बेक़रारी की हालत में ''मेरा बच्चा'' जैसे शब्द निकल सकते थे जिस से भेद खुल जाता । लेकिन अल्लाह तआला ने उस की ढारस बाँध दी इस लिए उस की ज़बान से ऐसा कोई शब्द नहीं निकला ।

20. मूसा की माँ ईमान वालों में से थी और इस घटना को आँखों से देख लेने के बाद उस के ईमान को कुछ और बल मिला ।

21. अर्थात् फ़िरऔन वालों को इस की ख़बर भी नहीं हुई कि यह बच्चे की बहन है जो इस के पीछे चली आ रही है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ४०.

22. यहाँ हराम का शब्द अपने शाब्दिक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है रोकना । मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने बच्चे की तबीयत में ऐसी बात पैदा कर दी कि वह अपनी माँ के सिवा किसी की छाती को मुँह न लगाए।

23. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ४०

24. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ४१

25. अर्थात् मूसा की माँ पर यह स्पष्ट हो जाए कि अल्लाह ने बच्चे को वापस लौटाने का जो वादा वह्य (अर्थात् प्रकाशना) द्वारा किया था वह बिलकुल सच्चा था और पूरा हो कर रहा इसी प्रकार अल्लाह का हर वादा पूरा हो कर रहता है किन्तु अधिकांश लोगों की निगाह इस वास्तविकता पर नहीं होती इस लिए वे इस से बे ख़बर रहते हैं।

26. हज़रत मूसा का पालन पोषण इस प्रकार हुआ कि अपनी माँ से भी वे जुड़े रहे और फ़िरऔन से भी । जब वे ज़रा बड़े हो गए तो उन को मार दिए जाने का भय नहीं रह गया क्यों कि फ़िरऔन नवजात शिशुओं की हत्या करता था या दरिया में डुबो देता था। इस लिए बाद में इस भेद को भेद समझकर बरतने की आवश्यकता नहीं रही ।और हज़रत मूसा का कुल एवं वंश सब को मालूम हो गया और वे बनी इस्राईल के एक प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में उभरे ।

उन्हें बनी इस्राईल के माहौल को भी देखने का अवसर मिला और फ़िरऔन के माहौल को भी। फिर जब वे जवान हुए और गंभीरता उन में आ गई तो अल्लाह ने उन को सूझबूझ, तत्वदर्शिता, दीन का ज्ञान और अपनी पहचान प्रदान की। नुबुव्वत तो उन को मिस्र से निकलने के बाद एक मुद्दत गुज़र जाने पर प्रदान हुई परन्तु ज्ञान और तत्वदर्शिता की यह दौलत तो उन्हें मिस्र में रहते ही मिल गई। इस प्रकार वे अपनी योग्यता के चलते मिस्र में उल्लेखनीय रहे। यही कारण है कि जब हज़रत मूसा एक मुद्दत के बाद रसूल नियुक्त हो कर मिस्र लौटे हैं तो वे बनी इस्राईल और फ़िरऔन वालों के लिए एक जाने पहचाने व्यक्ति थे।

27. अर्थात् ज्ञान एवं तत्वदर्शिता अल्लाह तआला का वह बेहतरीन इनाम है जो इस दुनिया में किसी को भी मिले। जो लोग नेकी का रवैया अपनाते हैं उन को अल्लाह तआला उन की बुद्धि एवं योग्यता के अनुसार इस इनाम से अलंकृत करता है ।

15. और (एक दिन) वह नगर में ऐसे समय प्रविष्ट हुआ जब कि लोग बेखबर थे।[28] वहाँ उस ने देखा कि दो आदमी लड़ रहे हैं। एक उस के अपने गिरोह का था [29] और दूसरा उस के शत्रु के गिरोह का । जो उस के गिरोह का था [30] उस ने उस व्यक्ति के मुक़ाबले में जो शत्रु के गिरोह से संबन्ध रखता था,उस को मदद के लिए पुकारा। मूसा ने उस को घूँसा मारा और उस का काम तमाम कर दिया।[31] (जब यह ग़लती हो गई तो) उस ने कहा यह शैतान की हरकत है।[32] निस्संदेह वह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला।[33]

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا
رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِن شِيعَتِهِ وَهَٰذَا مِنْ عَدُوِّهِ
فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِن شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ
فَوَكَزَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ
إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

16. उस ने दुआ की ऐ मेरे रब ! तू मुझे क्षमा कर अतः अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया।[34] निश्चय ही वह बड़ा क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ إِنَّهُ
هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾

17. (फिर) उस ने कहा ऐ मेरे रब ! तेरे इस एहसान के[35] बाद जो तूने मुझ पर किया मैं कभी अपराधियों का मददगार नहीं बनूँगा।[36]

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ
ظَهِيرًا لِّلْمُجْرِمِينَ ﴿١٧﴾

18. फिर (दूसरे दिन) वह सुबह के समय डरते डरते और चौकन्ना रहते हुए नगर में दाख़िल हुआ।[37] क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिस ने कल मदद के लिए उस को पुकारा था, आज फिर उसे पुकार रहा है। मूसा ने कहा तुम बिलकुल नामाकूल हो।[38]

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنصَرَهُ
بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

19. फिर जब उस ने उस व्यक्ति को जो दोनों का शत्रु था [39] पकड़ने का इरादा किया तो वह पुकार उठा ऐ मूसा क्या तुम मुझे उसी तरह क़त्ल करना चाहते हो जिस तरह कल तुम ने एक व्यक्ति को क़त्ल कर दिया था? तुम देश में जब्बार (अत्याचारी) बन कर रहना चाहते हो, इस्लाह (सुधार) करने वाले बनना नहीं चाहते।[40]

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَن يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا قَالَ
يَا مُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَن تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ
إِن تُرِيدُ إِلَّا أَن تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ
أَن تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾

20. और नगर के आख़िरी छोर से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और कहा मूसा ! हुकूमत के ज़िम्मेदार तुम्हें क़त्ल करने के लिए परामर्श कर रहे हैं, अतः तुम यहाँ से निकल जाओ मैं तुम्हारे हितैषियों में से हूँ।[41]

وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَى الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ
الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ
مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢٠﴾

28. मालूम होता है बनी इस्राईल की आबादी नगर के बाहर किनारे पर बसी थी और नगर के अन्दरूनी भाग में मिस्री (क़िब्ती) रहते थे । जिस जाति के साथ भेद भाव का व्यवहार बरता जा रहा था उस को नगर के किनारे ही जगह मिल सकती थी । एक रोज़ हज़रत मूसा ऐसे समय में अपने घर से निकल कर नगर में दाखिल हुए जो लोगों के आराम करने का समय था इस लिए रास्ते पर चहल पहल न थी । संभव है हज़रत मूसा बनी इस्राईल के हालात को जानने के लिए निकले हों जिन को मिस्रियों की ग़ुलामी करना पड़ रही थी और उन से कड़ी मेहनत मज़दूरी का काम लिया जाता था।

ध्यान रहे कि हज़रत मूसा को फ़िरऔन ने पाला अवश्य था किन्तु अल्लाह तआला ने अपनी ख़ास तदबीर से उन को जब कि वे दूध पीते बच्चे थे उन के माँ के पास पहुँचा दिया था । और क़ुर्आन यह पुष्टि नहीं करता कि बाद में वे फ़िरऔन के महल में रहने लगे थे। इस लिए सही बात यही मालूम होती है कि वे अपनी माता के पास रह कर पले बढ़े।

29. अर्थात् इस्राईली था।

30. अर्थात् मिस्री (क़िब्ती) जो फ़िरऔन की जाति से था और फ़िरऔन की जाति बनी इस्राईल की दुश्मन थी। इस लिए वह उन पर अत्याचार तोड़ती और उन के बच्चों की हत्या करती थी।

31. अर्थात् हज़रत मूसा ने इस्राईली को मिस्री से बचाना चाहा । किन्तु जब उस को बचाने के लिए मिस्री को घूँसा मारा तो उस की ताब न ला कर उस ने वहीं दम तोड़ दिया । हज़रत मूसा का इरादा उस को जान से मारने का नहीं था। मगर संयोग की बात की उन का घूँसा उस के लिए जान लेवा सिद्ध हुआ।

32. हज़रत मूसा ने इस अमल को शैतान की हरकत क़रार दिया क्यों कि शैतान की उकसाहट का उस में कुछ दखल था वरना हज़रत मूसा न ज़ोर से घूँसा मारते और न यह घटना घटती ।

33. हज़रत मूसा की शैतान से चौकन्ना रहने की यह बात उन के अपराध बोध तथा उन के ज्ञान की शान को दर्शाता है जो अल्लाह तआला ने उन्हें प्रदान किया था और जिस का ज़िक्र आयत १४ में हुआ ।

34. हज़रत मूसा के हाथों मिस्री की हत्या अनजाने में हुई थी । अर्थात् यह जान बूझ कर की गई हत्या न थी । परन्तु अपराध बहरहाल अपराध है । इस लिए हज़रत मूसा ने अपने नफ़्स की रिआयत किये बग़ैर कड़े शब्दों में अपनी इस ग़लती को अल्लाह के समक्ष स्वीकार किया अत: उन्हों ने इस अपराध को अपने नफ़्स पर ज़ुल्म क़रार दिया और अल्लाह से क्षमा याचना की ।

कुछ लोग नबियों के मासूम होने की बहस छेड़कर इस घटना की ऐसी व्याख्या करते हैं कि जैसे हज़रत मूसा से कोई ग़लती हुई ही नहीं थी लेकिन यह क़ुर्आन के स्पष्ट बयान के ख़िलाफ़ है। क़ुर्आन साफ़ कहता है कि मूसा ने अपनी ग़लती स्वीकार करते हुए अल्लाह से क्षमा याचना की थी और अल्लाह तआला ने उन्हें क्षमा कर दिया था । इस से हज़रत मूसा की नुबुव्वत पर कोई आँच नहीं आती क्यों कि पहली बात तो यह घटना नुबुव्वत से पहले की है दूसरी बात यह कि अनजाने में यह ग़लती हो गई थी न कि उन्हों ने जान बूझ कर कोई गुनाह किया था। और तीसरी बात यह कि उन्हों ने तुरन्त अपनी ग़लती मान कर अल्लाह तआला से क्षमा माँग ली थी।

कुछ मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने यह भी कहा कि मक़तूल हरबी काफ़िर था इस लिए उस को मार देना जायज़ था परन्तु यह सही नहीं क्यों कि बनी इस्राईल की तरफ़ से फ़िरऔन की जाति के विरुद्ध कोई युद्ध की घोषणा नहीं हुई थी फिर मिस्रियों के बारे में यह किस प्रकार कहा जा सकता कि वे हरबी (जिन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा हो चुकी हो) थे। रहा उन का काफ़िर होना तो किसी के काफ़िर होने के आधार पर हर हाल में उस की हत्या जायज़ नहीं होती । नबी हज़रात और उन के ईमान वाले साथियों को काफ़िर जातियों से पाला पड़ा है परन्तु उन्होंने दारूलकुफ़्र में रहते हुए उन काफ़िरों में से किसी के विरुद्ध जान से मार देने की कोई कार्रवाई नहीं कि है रहा जिहाद तो वह एक सामूहिक कारवाई है और उस की वैधता ख़ास शर्तों के साथ है।

इस्लाम का साधारण नियम यही है कि प्रत्येक मानव प्राण आदरणीय है और उस को तभी जान से मारना वैध एवं उचित है जब कि सत्य और न्याय का तक़ाज़ा हो।

وَلَاتقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۔(بنی اسرائیل۔٣٣)

अर्थ :-और किसी नफ़्स (जान) को जिसे अल्लाह ने मुहतरम ठहराया है, क़त्ल न करो, मगर हक़ के आधार पर ।

35. एहसान से तात्पर्य अल्लाह से क्षमा माँगने की वह तौफ़ीक़ है जो हज़रत मूसा को समय रहते प्रदान हुई और इसी कारण वह आशान्वित हो गए कि अल्लाह तआला उन्हें क्षमा कर देगा ।

36. इस से अन्दाज़ा होता है कि दोषी इस्राईली था परन्तु चूँकि वह एक मज़लूम जाति का था और उस ने मूसा को मदद के लिए पुकारा था इस लिए वह उस को निर्दोष समझते हुए उस की मदद के लिए गए थे। मगर बाद में जब उन्हें मालूम हो गया कि वही दोषी था तो अल्लाह तआला से प्रण किया कि आगे से मैं किसी दोषी अपराधी की मदद नहीं करूँगा

यद्यपि वह मेरी क़ौम का ही सदस्य क्यों न हो।

स्पष्ट हुआ कि इस्लाम की शिक्षाओं में जातीयता और साम्प्रदायिकता के लिए कोई जगह नहीं है। अगर किसी दारूलकुफ्र का कोई मुसलमान अपराध करता है या किसी ग़ैर मुस्लिम पर ज़्यादती करता है तो दूसरे मुसलमानों का यह काम नहीं है कि उस मुसलमान का इस आधार पर समर्थन करें कि वह उन की जाति का सदस्य है। क्यों कि यह तरीक़ा अन्यायपूर्ण भी है और अपराधियों का साहस बढ़ाने वाला भी।

37. डर इस बात का कि कहीं मुझे ग़िरफ़्तार न कर लिया जाए और मुझ पर हत्या का मुक़दमा न चलाया जाए, और चौकन्ना इस बात से कि कोई मेरी टोह में तो नहीं है।

दूसरे दिन भी हज़रत मूसा नगर के बाहर ही से आए थे जिस से साफ़ पता चलता है कि उन का मकान शहर के बाहर था और वह फ़िरऔन के महल में नहीं रहते थे क्यों कि मिस्री के क़त्ल के बाद वह फ़िरऔन के महल में जाने का ख़तरा किस तरह मोल ले सकते थे। मतलब यह है कि प्रसंग से साफ़ स्पष्ट होता है कि हज़रत मूसा बनी इस्राईल के बीच और अपने घर में रहते थे न कि फ़िरऔन के महल में।

38. अर्थात् जिस इस्राईली ने कल मदद के लिए पुकारा था आज फिर दूसरे मिस्री के साथ उलझ कर हज़रत मूसा को मदद के लिए पुकार रहा है। हज़रत मूसा को अन्दाज़ा हो गया था कि यह इस्राईली ख़ुद ही झगड़ालू है इस लिए उन्हों ने उस से कहा तुम बिलकुल नामाक़ूल आदमी हो।

39. अर्थात् मिस्री जो इस्राईली व्यक्ति और हज़रत मूसा दोनो का शत्रु था ।

40. यह बात मिस्री ने हज़रत मूसा से कही । हज़रत मूसा उस को केवल पकड़ कर अलग करने के लिए आगे बढ़े थे मगर मिस्री यह समझा कि उस को क़त्ल कर देना चाहते हैं। इस लिए उस ने क़त्ल की वही बात याद दिलाई जो एक रोज़ पहले हो चुकी थी। यह इस बात का सबूत था कि क़त्ल की बात छिपी हुई नहीं रही बल्कि इस की ख़बर किसी न किसी तरह लोगों को हो गई है।

41. मालूम होता है कि फ़िरऔन का महल नगर के आख़िरी छोर पर था । वहाँ से यह व्यक्ति जो हज़रत मूसा का हितैषि था यह ख़बर ले कर हज़रत मूसा के पास दौड़ता हुआ आया कि उन को मार देने के लिए फ़िरऔन की हुकूमत सलाह मश्वरा कर रही है और साथ ही उस व्यक्ति ने सुझाव दिया कि ऐ मूसा तुम इस देश से निकल जाओ ।

फिर उन दो औरतों में से एक उस के पास शर्माती हुई आई। और कहा मेरे पिता आप को बुला रहे हैं ताकि आपने हमारी ख़ातिर जानवरों को जो पानी पिलाया है उस का सिला आप को दें। मूसा जब उस के पास पहुँचा और उसे सारा क़िस्सा सुनाया तो उस ने कहा डरो नहीं, ज़ालिम क़ौम से तुम्हें मुक्ति मिल गई। *(अल-क़ुर्आन)*

21. यह सुन कर वह डरता हुआ होशियारी के साथ वहाँ से निकल गया और उस ने दुआ की कि ऐ मेरे रब ! मुझे ज़ालिम क़ौम से मुक्ति दे।[42]

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ
مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾

22. जब उस ने मदयन की तरफ़ रुख़ किया तो कहा उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा।[43]

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ
سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾

23. और जब वह मदयन के पानी (कुँए) पर पहुँचा तो उस ने देखा कि लोगों की एक संख्या (अपने) जानवरों को पानी पिला रही है।[44] और देखा कि उन से अलग दो औरतें अपने मवेशियों को रोके खड़ी हैं।[45] उस ने उन से पूछा तुम्हारा क्या मामला है ?[46] उन्हों ने कहा हम उस समय तक पानी नहीं पिला सकतीं जब तक चरवाहे अपने जानवर हटा न लें और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।[47]

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ
يَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ
مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا
شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾

24. यह सुन कर उस ने उन के जानवरों को पानी पिलाया,[48] फिर एक साये की तरफ़ चला गया और दुआ की ऐ मेरे रब ! जो खैर (भलाई) भी तू मुझ पर नाज़िल कर मैं उस का मोहताज हूँ।[49]

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ
اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾

25. फिर उन दो औरतों में से एक उस के पास शर्माती हुई आई।[50] और कहा मेरे पिता आप को बुला रहे हैं ताकि आपने हमारी ख़ातिर जानवरों को जो पानी पिलाया है उस का सिला आप को दें।[51] मूसा जब उस के पास पहुँचा [52] और उसे सारा क़िस्सा सुनाया तो उस ने कहा डरो नहीं, ज़ालिम क़ौम से तुम्हें मुक्ति मिल गई।[53]

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ؗ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ
لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ
قَالَ لَا تَخَفْ ٙ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

26. उन दो औरतों में से एक ने कहा अब्बा जान इन को पारिश्रमिक पर रख लीजिए। बेहतरीन आदमी जिस को आप पारिश्रमिक पर रखें वही हो सकता है जो बलवान और अमानतदार हो ।[54]

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ؗ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ
الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾

42. फ़िरऔन की हुकूमत अन्जाने में हुई हत्या का दण्ड भी हत्या ही की सूरत में देना चाहती थी । क्यों कि जिस की हत्या हुई थी वह उसी की जाति का था। जब कि मूसा बनी इस्राईल से सम्बन्ध रखते थे। स्पष्ट है यह ज़ुल्म था और फ़िरऔन ने बनी इस्राईल के साथ ज़ालिमाना बर्ताव ही अपना रखा था । हज़रत मूसा के हाथों मिस्री की हत्या की घटना बाइबिल की पुस्तक ''निर्गमन'' के अध्याय २ में बयान हुई है। किन्तु इस तफ़सील और सेहत के साथ नहीं ।

43. मदयन अक़्बा की खाड़ी के पूर्वी तट पर मिस्र से आठ दिन की दूरी पर स्थित था। चूँकि यह देश फ़िरऔन के राज्य से बाहर था इस लिए हज़रत मूसा ने इस का रुख किया। उन्हें इस सफ़र के सिलसिले में न तैयारी करने का मौक़ा मिला था और न वे रास्ते से ही परिचित हो पाए थे । बल्कि अल्लाह पर भरोसा करते हुए सफ़र का निश्चय किया था और उस से दुआ की थी कि वह सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाए अत: अल्लाह तआला ने उन पर ऐसी कृपा एवं उदार अनुग्रह किया कि वे सीधे मदयन पहुँच गए। और आगे जा कर उन पर हिदायत की राह उजागर होती चली गई।

44. अर्थात् शहर में दाखिल होने से पहले एक कुँए पर पहुँचे जहाँ काफ़ी लोग जमा थे और अपने जानवरों को पानी पिला रहे थे।

45. अर्थात् वे पुरुषों से हटकर एक ओर अपने जानवरों के साथ खड़ी थी।

46. हज़रत मूसा ने यह सवाल हमदर्दी के तौर पर किया। ऐसे मौक़े पर अजनबी औरतों से बात करने में कोई हर्ज नहीं है।

47. यह उस रीति की ओर इशारा है जो पुरुषों ने वहाँ प्रचालित कर रखा था कि पहले पुरुष अपने जानवरों को पानी पिलाऐं उस के बाद औरतों की बारी आएगी। हालाँकि औरतों को उन के कमज़ोर होने और अन्य मसहलतों के चलते पहले मौक़ा दिया जाना चाहिए था मगर यह एहसास न उस ज़माने के चरवाहों को था और न इस ज़माने के प्रगति शील आधुनिक लोगों में है।

उन औरतों को जानवरों की देखभाल और उस को पानी पिलाने के लिए कुँए पर लाने ले जाने का काम इस लिए करना पड़ रहा था कि उन के घर में सिवाय उन के बूढ़े पिता के कोई पुरुष नहीं था । इस लिए यह उन की मजबूरी थी। यद्यपि इन्साफ़ और शरीअत के अनुसार बाहर के काम काज़ की ज़िम्मेदारी पुरुषों पर ही आती है परन्तु आवश्यकता पड़ने पर औरतों के लिए काम करना मना भी नहीं है बशर्ते कि वे शरिअत की सीमा में रह कर काम करें और लोक लाज का लिहाज़ करें

48. हज़रत मूसा ने जब उन का यह हाल सुना तो जानवरों को सीधे कुँए पर ले गए और उन को पानी पीलाया। वे अति बलवान और साहसी थे इस लिए चरवाहे उन को रोक न सके। यह जनसेवा का काम था जो हज़रत मूसा ने ऐसी हालत में अन्जाम दिया जब कि वे परेशान और थके हुए थे। मगर जो काम सच्चे मन से और मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए किया जाए चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो अल्लाह तआला उस की क़द्र करता है हदीस में आता है:-

مَنْ كَانَ فِى حَاجَةِ اَخِيْهِ كَانَ اللّٰهُ فِى حَاجَتِهٖ.

अर्थ:- ''जो व्यक्ति अपने भाई की आवश्यकता को पूरा करने में लगा रहता है अल्लाह उस की आवश्यकता को पूरी कर देता है।'' (मुस्लिम किताबुलबर्र)

49. इस से अन्दाज़ा होता है कि हज़रत मूसा कितने परेशान थे । संभवता: भूखे दिन गुज़ारने की नौबत आ गई होगी । मगर उन की ख़ुद्दारी देखिए कि इस हाल में भी किसी से कोई ज़िक्र नहीं किया । माँगा तो अपने रब से,अल्लाह पर भरोसा रखने की कितनी ऊँची मिसाल है जो उन के चरित्र से ज़ाहिर होती है। फिर दुआ में उन्हों ने जिस अदब का लिहाज़ रखा है वह उन के ऊँचे शिष्टाचार की दलील है क्यों कि उन्हों ने किसी शिकवा शिकायत के बग़ैर अपनी ज़रूरत अपने रब के सामने पेश कर दी ।

50. औरत का शर्माते हुए हज़रत मूसा के पास आना उस की शराफ़त को ज़ाहिर करता है। क़ुर्आन ने उस औरत के इस गुण का विशेष रूप से उल्लेख किया है कि जिस से यह इशारा मिलता है कि अगर किसी औरत को अजनबी व्यक्ति के पास जाने और उस से बात करने की ज़रूरत पेश आए तो वह अपने नारीत्व गुण शर्म और लाज का पूरा लिहाज़ करे।

मौजूदा दौर में तो विभिन्न आवश्यकताओं के तहत औरतों का बाहर निकलना अनिवार्य सा हो गया है। मगर हया की चादर ओढ़कर बाहर निकलने और शर्म और लाज के तक़ाज़ों से बेपरवाह हो कर स्त्री पुरुष के स्वतंत्र समागम का तरीक़ा अपनाने में बहुत बड़ा अन्तर है। पहली सूरत जायज़ है और दूसरी सूरत नाजायज़।

51. औरतों ने जब अपने पिता को यह घटना बताई होगी कि एक मुसाफ़िर कुँए पर आया हुआ है जो शरीफ़ मिज़ाज का मालूम होता है कि और अगर उस ने हमारे साथ यह हमदर्दी की तो उन्हों ने यह ख़याल किया होगा कि मालूम नहीं उस मुसाफ़िर ने खाना भी खाया है या नहीं और अच्छे सुलूक का बदला अच्छे सुलूक से देना चाहिए अत: उन्हों ने अपनी लड़की को भेजा कि वे इस व्यक्ति को बुलाकर लाऐं।

52. हज़रत मूसा ने जो ख़िदमत अन्जाम दी थी उस का पारिश्रमिक वसूल करना उन का मक़सद न था लेकिन चूँकि वे मुसाफ़िर होने की हैसियत से इस बात का हक़ रखते थे कि उन की मेहमान नवाज़ी की जाए तथा उन्होंने अभी अभी अल्लाह तआला से ख़ैर और भलाई नाज़िल करने की दुआ की थी। इस लिए उस निमंत्रण को जिस से ख़ैर और भलाई की राह खुलने की संभावना थी उन के लिए स्वीकार करना ही मुनासिब था। अत: हज़रत मूसा औरत के पिता के बुलाने पर उस के घर पहुँच गए।

53. उस बुढ़े व्यक्ति ने सारा क़िस्सा सुनने के बाद हज़रत मूसा को इत्मीनान दिलाया कि इस देश में फ़िरऔन की सत्ता नहीं है अत: निर्भय हो जाओ कि अब तुम ज़ालिम क़ौम की पकड़ से बाहर हो।

ये बुज़ुर्ग आदमी जिन्होंने हज़रत मूसा को अपने घर बुलाया कौन थे ? क़ुर्आन ने उन के नाम की पुष्टि नहीं की लेकिन आम तौर से मुफ़स्सिरीन उन का नाम शुऐब बताते हैं जो कुछ कारणवश सही नहीं।

(A) अगर शुऐब मूसा के सहकक्ष होते तो क़ुर्आन स्पष्ट रूप से इस का उल्लेख करता ।

(B) हज़रत शुऐब का ज़माना हज़रत लूत के ज़माने से क़रीब रहा है। अत: हज़रत शुऐब अपनी क़ौम को लूत की क़ौम से इबरत दिलाते हुए कहते हैं :-

وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِنكُمْ بِبَعِيدٍ. (هود:٨٩)

अर्थ:- ''और लूत की क़ौम (का अन्जाम) तो तुम से कुछ दूर भी नहीं है'' (हूद - ८९)

लेकिन हज़रत लूत और हज़रत मूसा के बीच लम्बी अवधि रही है। इस लिए शुऐब अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा के सहकक्ष नहीं हो सकते ।

(C) किसी सही हदीस से यह साबित नहीं कि यह बुज़ुर्ग हस्ती हज़रत शुऐब की थी । जिन रिवायतों में इस नाम का उल्लेख मिलता है वे सही नहीं हैं। इब्ने कसीर अपनी तफ़्सीर में लिखते हैं।

''और कुछ हदीसों में मूसा के क़िस्से के सिलसिले में शुऐब के नाम का जो उल्लेख मिलता है तो उन के प्रमाण सही नहीं हैं।'' (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ट ३८५)

और अल्लामा इब्ने तैमिया फ़रमाते हैं।

''वे शुऐब नहीं थे जैसा कि कुछ ग़लत राय क़ायम करने वालों ने गुमान किया है बल्कि उल्मा-ए-सल्फ़ और अहले-किताब जानते हैं कि वे शुऐब नहीं थे।'' (संग्रह फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द २० पृष्ट ४२९)

(D) बाइबिल में एक जगह उन का नाम रुएल दर्ज है (निर्गमन २:१८) और दूसरी जगहों पर यित्रो (Jethro) (निर्गमन ३:१) और बाइबिल का टीकाकार लिखता है कि ऐसा मालूम होता है यह नाम बाद में दर्ज कर लिया गया है अर्थात् तौरात में यह नाम पहले मौजूद नहीं था।

"He is called Jethro in E-narratives though in each case the name seems to have been inserted later."-

-(The Interpreters one-Volume Commentary on the Bible P.38).

(E) ये बुज़ुर्ग काफ़ी बूढ़े थे। अगर ये हज़रत शुऐब होते तो उन का यह ज़माना उन की क़ौम पर अज़ाब आ जाने के बाद का ज़माना होता इस लिए ईमान वाले भी उन के साथ होते और उन की उपस्थिति में हज़रत शुऐब के बेटियों को पानी से रोकने का साहस कोई चरवाहा नहीं कर सकता था। इस लिए सही बात यही है कि ये बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब नहीं थे अलबत्ता इस बात की प्रबल संभावनाऐं हैं कि वे हज़रत शुऐब के वंश से रहे हों ।

54. उस बुज़ुर्ग के यहाँ जानवरों की देख भाल के लिए कोई पुरुष नहीं था और जब उन की लड़की ने देखा कि हज़रत मूसा एक शक्तिशाली पुरुष हैं और इस काम के लिए एक शक्तिशाली आदमी ही उचित हो सकता है। तथा हज़रत मूसा अपनी चाल ढाल और अपनी बात चीत से बहुत अमानतदार आदमी मालूम होते हैं और घर में किसी ऐसी ही आदमी को रखा जा सकता है जिस पर पूरी तरह भरोसा किया जा सकता हो तो उस ने हज़रत मूसा को इस काम के लिए रख लेने का सुझाव दिया जिस का दूसरा पहलू यह था कि एक मुसाफ़िर आदमी को जो कि अच्छे चरित्र का भी है शरीफ़ों के घर में सहारा मिल जाए।

लड़की के इस सुझाव से अन्दाज़ा होता है कि वह बहुत ही समझदार थी और उस का सुझाव अत्यंत उचित था। यह इस बात की दलील है कि कुछ लड़कियाँ बहुत ही तेज़ ज़ेहन की होती हैं और उन का सुझाव भी बड़ा उचित होता है। इस लिए औरतों की प्रतिष्ठा और उन के मूल्य को घटाना सही नहीं और क़ुर्आन तो प्रमुख औरतों का विशेष रूप से उल्लेख करता है।

मद्यन और तूर पर्वत

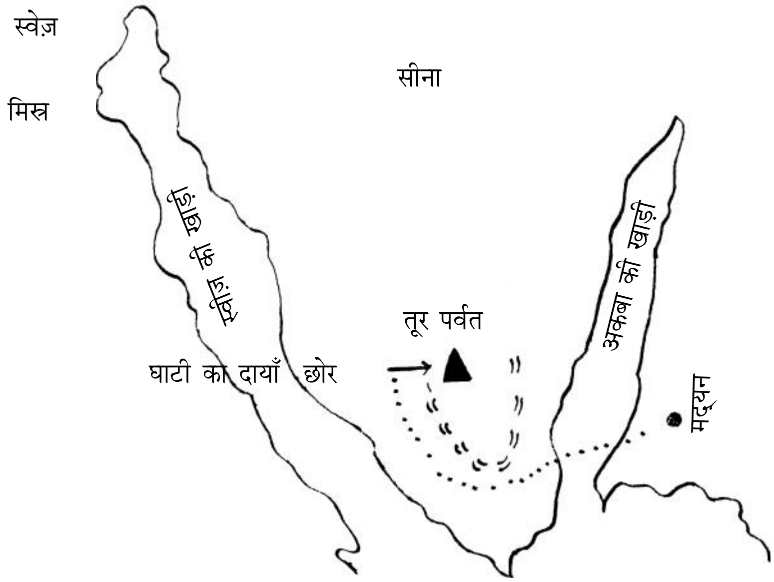

27. उस (के बाप) ने (मूसा) से कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहाँ सेवा करो। और अगर दस वर्ष पूरे करो तो यह तुम्हारी मर्ज़ी से होगा। मैं तुम को मशक्कत (कठिन परिश्रम) में डालना नहीं चाहता। इन्शाअल्लाह तुम मुझे चरित्र में अच्छा पाओगे।[55]

قَالَ إِنِّيٓ أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ٱبْنَتَيَّ هَٰتَيْنِ عَلَىٰٓ أَن
تَأْجُرَنِي ثَمَٰنِيَ حِجَجٍ ۖ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِندِكَ ۖ
وَمَآ أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۚ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ
مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٢٧﴾

28. मूसा ने कहा यह बात मेरे और आप के बीच तय हो गई। इन दोनों में से जो मुद्दत भी मैं पूरी कर दूँ मुझ पर कोई ज़्यादती न होगी।[56] और जो समझौता हम कर रहे हैं इस पर अल्लाह निगेहबान है।[57]

قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا ٱلْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَٰنَ
عَلَيَّ ۖ وَٱللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

29. जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी [58] और अपने घर वालों को ले कर चला [59] तो तूर की ओर से [60] एक आग दिखाई दी। उस ने अपने घर वालों से कहा ठहरो,[61] मुझे आग नज़र आई है, शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊँ,[62] या आग का कोई अंगारा लाऊँ ताकि तुम ताप सको।[63]

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى ٱلْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِۦٓ ءَانَسَ مِن جَانِبِ
ٱلطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ ٱمْكُثُوٓا۟ إِنِّيٓ ءَانَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيٓ ءَاتِيكُم
مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ ٱلنَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾

30. जब वह उस के पास पहुँचा तो मुबारक क्षेत्र में घाटी के दायीं ओर के वृक्ष से आवाज़ आई, ऐ मूसा ! मैं हूँ अल्लाह सारे जहान का रब।[64]

فَلَمَّآ أَتَىٰهَا نُودِيَ مِن شَٰطِئِ ٱلْوَادِ ٱلْأَيْمَنِ فِي ٱلْبُقْعَةِ
ٱلْمُبَٰرَكَةِ مِنَ ٱلشَّجَرَةِ أَن يَٰمُوسَىٰٓ إِنِّيٓ أَنَا ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٠﴾

31. और यह कि तुम अपनी लाठी डाल दो। जब उस ने देखा कि वह साँप की तरह हरकत कर रही है [65] तो पीठ फेर कर भागा और मुड़ कर भी न देखा।[66] ऐ मूसा ! आगे आओ और डरो नहीं, तुम बिलकुल सुरक्षित हो।[67]

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَءَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَلَّىٰ
مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَٰمُوسَىٰٓ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۖ
إِنَّكَ مِنَ ٱلْءَامِنِينَ ﴿٣١﴾

32. अपना हाथ गिरेबान में डालो वह रौशन हो कर निकलेगा बिना किसी दोष के।[68] और भय को दूर करने के लिए बाज़ू सुकेड़ लो।[69] ये तुम्हारे रब की ओर से दो निशानियाँ हैं।[70] फ़िरऔन और उस के दरबार वालों के समक्ष पेश करने के लिए। वे बड़े फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग हैं।

ٱسْلُكْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ
وَٱضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ ٱلرَّهْبِ ۖ فَذَٰنِكَ بُرْهَٰنَانِ مِن رَّبِّكَ
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِۦٓ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿٣٢﴾

55. मदयन के बुज़ुर्ग ने अपनी बेटी को हज़रत मूसा के निकाह में देने की जो पेशकश की तो वह कोई जज़्बाती फ़ैसला नहीं था जो उन्होंने जल्दबाज़ी में किया हो। बल्कि इस इत्मीनान के बाद किया था जो उन्हें अपने अनुभव और हज़रत मूसा की ज़बानी उन के क़िस्से को सुन लेने के बाद हासिल हो गया था। पहली बात तो यह कि एक नबी की हस्ती नुबुव्वत से पहले भी उच्च आचरण का नमूना होती है। दूसरे मदयन वालों के लिए बनी इस्राईल अजनबी नहीं थे। बल्कि दोनों में सम्बन्ध था क्यों कि हज़रत इब्राहीम की एक कनीज़ (दासी) क़तूरा थी और उस से जो लड़का पैदा हुआ वह मिद्यान था जिस को उन्होंने मद्यन के इलाक़े में बसाया और उसी के नाम से यह इलाक़ा जाना जाने लगा। हज़रत शुऐब उसी वंश से थे और जब शुऐब की क़ौम पर अज़ाब आया तो हज़रत शुऐब और उन के साथी अज़ाब से सुरक्षित रहे और क़रीब के इलाक़े में आबाद हुए जो मदयन ही कहलाया । असंभव नहीं की यह बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब के वंश से रहे हों इस लिए उन्होंने हज़रत मूसा से उन के बनी इस्राईल में से होने के चलते कुछ अपनाइयत महसूस कर ली हो। बहरहाल ये बुज़ुर्ग नेक मुसलमान थे और उन की सहानुभूतियाँ हज़रत मूसा के साथ इस लिए भी थीं कि वे मज़लूम थे और एक मज़लूम जाति के सदस्य थे ।

उस बुज़ुर्ग को अपने जानवरों की देख रेख के लिए एक मर्द आदमी की ज़रूरत थी और हज़रत मूसा को मुसाफ़िर होने के कारण सहारे की आवश्यकता थी। इस लिए उस बुज़ुर्ग ने पूरे मन की विशालता के साथ अपनी बेटी के निकाह की पेशकश की ताकि वे परिवार के एक सदस्य बन कर रहें। रही बात आठ साल तक सेवा की शर्त तो इस में एक मसलहत यह भी रही होगी कि हज़रत मूसा अपनी पत्नी को ले कर उस समय मिस्र लौटें जब कि हत्या की घटना पुरानी हो जाने के कारण फ़िरऔन की तरफ़ से उन के विरुद्ध किसी कार्रवाई का भय बाक़ी न रहे और सब से बढ़ कर अल्लाह की मर्ज़ी थी कि हज़रत मूसा उस समय मिस्र का सफ़र करें जो समय उन को रिसालत के दायित्व से अलंकृत किये जाने के लिए उचित और सुनिश्चित था। आठ वर्ष तक सेवा की शर्त मेहर की जगह पर नहीं थी क्यों कि मेहर पत्नी के लिए होता है न कि पत्नी के बाप के लिए और निकाह के लिए तो अभी किसी लड़की का निर्धारण भी नहीं हुआ था। बल्कि अपनी दो बेटियों में से कोई एक बेटी निकाह में देने की बात उस बुज़ुर्ग ने कही थी। इस लिए यह निकाह का प्रण नहीं था बल्कि एक समझौता था जिस में उस बुज़ुर्ग ने अपनी लड़कियों की मसलहत को भी सामने रखा था और हज़रत मूसा की मसहलत को भी । और यह भी संभव है कि इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मूसा के पास मेहर देने के लिए कुछ नहीं है लड़कियों ने इस रज़ामन्दी को अपने पिता के समक्ष प्रकट किया हो कि वे जिस लड़की के साथ भी उस का निकाह करेंगे, वह अपना मेहर माफ़ कर देगी। बहरहाल पिता ने जो कुछ कहा, प्रसंग से स्पष्ट है कि अपनी लड़कियों की रज़ामन्दी ही से कहा।

ज़रूरी नहीं कि निकाह समझौता की अवधि समाप्त हो जाने पर किया गया हो बल्कि संभावित अनुमान यह है कि समझौता हो जाने के कुछ समय बाद ही उस बुज़ुर्ग ने अपनी एक बेटी का निर्धारण कर के उस का निकाह हज़रत मूसा से कर दिया होगा ताकि वह परिवार के एक सदस्य की हैसियत से घर में रहे और जानवरों की निगरानी का काम भी अपने समझौते के अनुसार करते रहें ।

56. अर्थात् यदि मैं आठ वर्ष की अवधि पूरी कर के अपने पत्नी को ले कर जाना चाहूँ तो फिर मुझे रोका न जाए और यदि मैं दस वर्ष की अवधि पूरा करना चाहूँ तो इस में भी कोई रुकावट न हो ।

57. इस से अन्दाज़ा होता है कि किस स्पिरिट के साथ यह समझौता किया गया था । और जो समझौता अच्छे ढंग से पूरा करने के संकल्प के साथ और अल्लाह को निगेहबान बना कर किया गया हो उस के भले होने में क्या शक हो सकता है।

58. हज़रत मूसा ने कौन सी अवधि पूरी की, आठ वर्ष की या दस वर्ष की? इस की कोई पुष्टि क़ुर्आन ने नहीं की और बाइबिल में तो अवधि के प्रस्ताव का कोई वर्णन नहीं है। रह गई रिवायतें को बुख़ारी में हज़रत अब्बास से उद्धृत किया गया है कि उन्होंने फ़रमाया हज़रत मूसा ने उस अवधि को पूरा किया जो इन अवधियों में अधिक लम्बी और बेहतर थी लेकिन दूसरी रिवायतों में ऐसी ही बात मरफ़ूअन बयान हुई है। अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इर्शाद की हैसियत से लेकिन वे प्रमाण की दृष्टि से सही नहीं है।

(विस्तार के लिए देखिए तफ़्सीर इब्ने क़सीर जिल्द ३ पृष्ट ३८६)

59. अर्थात् मदयन से अपने बीवी बच्चों को ले कर मिस्र जा रहे थे ताकि अपने परिवार वालों के साथ रहें।

60. मद्यन से कुछ ही दूरी पर तूर पर्वत है जो जज़ीरा नुमा सीना में स्थित है और मद्यन से मिस्र जाते हुए रास्ते में पड़ता है।

61. घर वालों के लिए बहुवचन का शब्द प्रयोग हुआ है जिस से स्पष्ट होता है कि हज़रत मूसा के साथ अकेली उन की पत्नी नहीं थीं बल्कि उन के बच्चे भी थे और इस से अन्दाज़ा होता है कि हज़रत मूसा का निकाह निर्धारित अवधि गुज़र जाने से पहले ही हुआ था और वह अपने ससुर के यहाँ दामाद की

हैसियत से रह कर जानवरों की देख रेख की सेवा में लगे हुए थे। इसी दौरान उन के यहाँ बच्चे भी हुए और अवधि पूरी हो जाने के बाद जब वे मद्‌यन से निकले हैं तो उन के साथ पत्नी के अलावा उन के बच्चे भी थे ।

62. अर्थात् रास्ते का पता चलाऊँ क्यों कि अन्धेरी रात में रास्ता समझ में नहीं आ रहा था ।

63. ठंड की रात थी इस लिए हज़रत मूसा ने अंगारा जलाना चाहा ताकि उस से घर वाले गर्मी हासिल कर सकें।

64. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट १०,११ और सूरह नम्ल नोट ९

65. मूल अरबी (TEXT) में ''जान्न'' शब्द प्रयुक्त हुआ हैं जो अरबी में ऐसे साँप के लिए बोला जाता है जिस की हरकत तेज़ हो । दूसरी जगह क़ुर्आन में ''सुअ्बान'' अज़दहा का शब्द भी प्रयुक्त हुआ है और ''हैय्यतुन'' (साँप) का भी । यह एक ही चीज़ के विभिन्न पर्याय हैं अर्थात हज़रत मूसा की लाठी चमत्कारिक रूप से ऐसा साँप बन जाती थी जो देखने में अज़दहा मालूम होता था और हरकत में उस साँप की तरह था जो बहुत ही फुरतीला और तेज़ होता है।

66. व्याख्या के लिए देखिए सूरह नम्ल नोट १०

67. अर्थात् यह साँप तुम्हें कोई क्षति नहीं पहुँचा सकेगा

68. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट २३

69. हज़रत मूसा के लिए यह सब चीज़ें असंभावित थीं। ख़ास तौर से एक सुनसान इलाके में रात के समय लाठी का साँप बन जाना क़ुदरती तौर पर उन को भयभीत करने वाली बात थी। इस भय को दूर करने की तदबीर अल्लाह तआला ने यह बताई कि अपना बाज़ू सुकेड़ लो । यह अल्लाह तआला की तरफ़ से उन की असाधारण सहायता थी ।

70. अर्थात् ये दो चमत्कार (मोज्ज़े) हैं जो इस बात की स्पष्ट दलील हैं कि तुम अल्लाह की तरफ़ से रसूल बनाकर भेजे गए हो।

फिर जब मूसा उन के पास स्पष्ट निशानियाँ ले कर पहुँचा तो उन्हों ने कहा यह तो मात्र बनावटी जादू है और यह बात हम ने अगले बाप दादा से कभी नहीं सुनी। मूसा ने कहा मेरा रब ख़ूब जानता है उस व्यक्ति को जो उस की तरफ़ से हिदायत ले कर आया है और जिस के लिए आख़िरत का बेहतर अन्जाम है। निस्संदेह ज़ालिम कभी मुक्ति नहीं पाऐंगे। फ़िरऔन ने कहा ऐ दरबार वालो ! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे लिए किसी ख़ुदा को नहीं जानता। ऐ हामान ! तुम मिट्टी (ईंट) पकवा कर मेरे लिए एक ऊँचा महल बनाओ ताकि मैं झाँक कर मूसा के ख़ुदा को देख लूँ। मैं तो इसे झूठा समझता हूँ। *(अल-क़ुर्आन)*

33. उस ने निवेदन किया ऐ मेरे रब ! मैं ने उन के एक आदमी की हत्या की थी इस लिए मुझे भय है कि वे मुझे क़त्ल कर देंगे।[71]

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾

34. मेरा भाई हारून बोलने में मुझसे अधिक अच्छा (सुभाषी) है तो उस को मेरे साथ सहायक बना कर भेज ताकि वह मेरी पुष्टि करे।[72] मुझे भय है कि वे लोग मुझे झुठलाऐंगे।

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا
يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾

35. फरमाया हम तुम्हारे भाई के द्वारा तुम्हारा बाज़ू मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को ऐसे स्पष्ट तर्क (हुज्जते-काहिरा) प्रदान करेंगे कि वे तुम पर हाथ न डाल सकेंगे।[73] हमारी निशानियों के साथ (जाओ) तुम दोनों, और जो तुम्हारा अनुपालन करेंगे प्रभावी रहेंगे।[74]

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا
سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ أَنْتُمَا وَمَنِ
اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ﴿٣٥﴾

36. फिर जब मूसा उन के पास स्पष्ट निशानियाँ ले कर पहुँचा तो उन्हों ने कहा यह तो मात्र बनावटी जादू है और यह बात हम ने अगले बाप दादा से कभी नहीं सुनी ।[75]

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ
مُفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٣٦﴾

37. मूसा ने कहा मेरा रब ख़ूब जानता है उस व्यक्ति को जो उस की तरफ़ से हिदायत ले कर आया है और जिस के लिए आख़िरत का बेहतर अन्जाम है।निस्संदेह ज़ालिम कभी मुक्ति नहीं पायेंगे।[76]

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ
وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٣٧﴾

38. फ़िरऔन ने कहा ऐ दरबार वालो ! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे लिए किसी ख़ुदा को नहीं जानता।[77] ऐ हामान ![78] तुम मिट्टी (ईंट) पकवा कर मेरे लिए एक ऊँचा महल बनाओ ताकि मैं झाँक कर मूसा के ख़ुदा को देख लूँ।[79] मैं तो इसे झूठा समझता हूँ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرِي
فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا
لَعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ
مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٨﴾

39. उस ने और उस के लश्करों ने नाहक ज़मीन में घमण्ड किया[80] और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ लौटना नहीं है।[81]

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا
أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

40. तो हम ने उस को और उस के लश्करों को पकड़ा और उन सब को समुद्र में फेंक दिया[82] तो देख लो ज़ालिमों का क्या अन्जाम हुआ।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

71. अर्थात् जब मैं फ़िरऔन के सामने दअवत ले कर जाऊँगा तो इस बात का भय है कि वह मेरे विरुद्ध हत्या के पुराने मुकदमे के चलते कार्रवाई करे और दअवत का काम ही अन्जाम न पा सके। यद्यपि हज़रत मूसा मिस्र ही जा रहे थे लेकिन चूँकि क़त्ल की घटना हुए काफ़ी समय बीत चुका था इस लिए इस बात की संभावना यूँ तो नहीं थी कि फ़िरऔन उन को सज़ा देता लेकिन अब यह भय उन को इस लिए महसूस हुआ कि रसूल की हैसियत से उस के पास जाना था।

हज़रत मूसा ने यह जो कुछ निवेदन किया उस का यह मतलब नहीं था कि वे नुबुव्वत के दायित्व को क़ुबूल करने से पीछे हट रहे थे बल्कि वे इस राह की कठिनाइयों को अल्लाह तआला के समक्ष प्रस्तुत कर रहे थे ताकि अल्लाह तआला उन को दूर करे और उन की मदद करे ।

72. व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट ३०

73. अर्थात् तुम्हारा रोब और दबदबा उन पर ऐसा छा जाएगा कि वे तुम्हें कोई क्षति न पहुँचा सकेंगे।

74. प्रभावी तर्क की दृष्टि से भी और परिणाम की दृष्टि से भी । अत: जादूगरों के साथ मुक़ाबले में भी हज़रत मूसा की जीत हुई। फ़िरऔन ने जो तदबीर भी उन के विरुद्ध की थी, उलटी पड़ गई और आख़िरकार वही अपने लश्कर सहित समुद्र में डूब मरा।

75. अर्थात् यह बात कि अल्लाह हिदायत के लिए रसूल भेजता है।

76. फ़िरऔन वालों का यह कहना कि हम ने रिसालत की कोई बात अपने बाप दादा से सुनी ही नहीं, सरासर झूठ था क्यों कि कुछ ही सौ साल पहले हज़रत यूसुफ़ जैसा पैग़म्बर उन में गुज़र चुका था और उन को मिस्र का शासन भी प्राप्त हो गया था तथा बनी इस्राईल का वजूद इस बात का ज़िन्दा सबूत था कि यह जाति रिसालत के क्रम को मानने वाली जाति है फिर फ़िरऔन की जाति रिसालत की धारणा से अनभिज्ञ कैसे हो सकती थी।

हज़रत मूसा ने यह बात उन की हठ्धर्मी के जवाब में कही । अर्थात् अगर तुम कोई बात समझना ही नहीं चाहते तो फिर अन्तिम परिणाम का इन्तिज़ार करो कि किस का परिणाम अच्छा होता है और किस के भाग में नाकामी और महरूमी आती है।

77. फ़िरऔन के इस दावे से स्पष्ट होता है कि वह ख़ुदा का इन्कारी था और अपने ख़ुदा होने का दावेदार । उस के नज़दीक कोई ऐसी सर्वोच्च हस्ती नहीं थी जिस की पूजा और अनुपालन उस पर वाजिब हो । वह मिस्र का शासक होने के कारण अपने आप को पूजा के योग्य मसझता था और इस बात का भी कि उस का अंधानुपालन किया जाए। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १८०, सूरह शुअरा नोट २७ और सूरह नाज़िआत नोट १८

स्पष्ट रहे कि नबियों को काफ़िर और मुश्रिक शासकों से वास्ता पड़ा है जो अल्लाह के आदेश एवं क़ानून के बजाए अपने आदेश और क़ानून चलाते थे। लेकिन क़ुर्आन ने फ़िरऔन के सिवा किसी के बारे में यह नहीं कहा कि वह अपने पूज्य और सर्वोच्च रब होने का दावेदार था। उदाहरण स्वरूप सबा की रानी बहुदेववादी थी और अपना आदेश और क़ानून चलाती थी हज़रत सुलैमान ने उस के बहुदेववादी शासन को समाप्त करने के लिए उस को अल्टीमेटम भी दिया लेकिन कहीं भी यह नहीं कहा गया की वह अपने ख़ुदा होने या सर्वोच्च रब होने की दावेदार थी। हज़रत ईसा को भी क़ैसर के शासन से वास्ता पड़ा था जो अपने ही रचे हुए क़ानून चलाता था परन्तु उन की ओर भी इस दावे को मन्सूब नहीं किया गया जो फ़िरऔन ने किया था। इसी प्रकार मक्का में क़ुरैश की हुकूमत भी बहुदेववादी थी और वह अपने कुफ्र और उद्दण्डता की दृष्टि से फ़िरऔन ही के पदचिन्हों पर थे परन्तु उन के बारे में भी क़ुर्आन ने यह नहीं कहा कि ये अपने ख़ुदा होने और सर्वोच्च रब होने के दावेदार हैं। इस से स्पष्ट होता है कि फ़िरऔन का अपराध उन तमाम शासकों और सत्ताधारियों के अपराधों से बढ़ कर था और वह अपने दावे में बिलकुल अलग था।

78. व्याख्या के लिए देखिए नोट ११

79. फ़िरऔन ने वास्तव में यह हुक्म हामान को नहीं दिया था । बल्कि यह बात उस ने हज़रत मूसा की इस दलील का मज़ाक उड़ाने के लिए कही कि अल्लाह ज़मीन और आसमान का रब है। फ़िरऔन का जवाब यह था कि ज़मीन में तो तुम्हारा ख़ुदा दिखाई नहीं देता, रहा आसमान, तो अब मैं ऊँचा महल बनवाता हूँ ताकि उस पर चढ़ कर देख लूँ कि ख़ुदा आसमान में कहाँ छिपा हुआ है। फ़िरऔन का यह जवाब सरासर मूर्खतापूर्ण था इस लिए हज़रत मूसा ने इस का जवाब देने की ज़रूरत ही नहीं महसूस की । ख़ुदा के बारे में फ़िरऔन की ये बेतुकी बातें उस की नीच मानसिकता और उस के घमण्डी होने का स्पष्ट सबूत हैं।

80. अर्थात् फ़िरऔन को यह हक़ नहीं था कि वह अपने को बन्दगी के मक़ाम से ऊँचा समझता अगर कोई बन्दा अपने को ख़ुदा की बन्दगी से ऊँचा समझता है तो यह घमण्ड है जिस के लिए कोई औचित्य (Justification) नहीं है।

81.अर्थात् न ख़ुदा के समक्ष उपस्थित होना है और न अपने कर्मों की जवाबदेही करना है और न उन का बदला पाना है।

82. फ़िरऔन और उस के लश्कर के समुद्र में डूब मरने की घटना सूरह यूनुस और सूरह शुअरा में विस्तार के साथ बयान हुई है।

41. हम ने इन को जहन्नम की ओर निमंत्रण देने वाला पेशवा बनाया [83] और क़ियामत के दिन इन की कोई मदद नहीं की जाएगी।[84]

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ
لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

42. हम ने इस दुनिया में इन के पीछे लानत लगा दी [85] और क़ियामत के दिन वे बहुत बुरी हालत में होंगे।

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةًۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ
مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾

43. हम ने अगली क़ौमों को तबाह करने के बाद मूसा को किताब प्रदान की जो लोगों के लिए अन्तर्दृष्टि का सामान और हिदायत और रहमत थी ताकि वे याददेहानी हासिल करें।[86]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَهْلَكْنَا
الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى
وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

44. और तुम (ऐ पैग़म्बर !) उस समय (तूर के) पश्चिम की ओर मौजूद न थे जब हम ने मूसा के लिए फ़रमान उतारा और न तुम उस के गवाहों में से थे।[87]

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا
كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾

45. मगर हम ने बहुत सी नस्लें उठाईं और उन पर एक लम्बी अवधि गुज़र गई।[88] और तुम मदयन वालों के बीच भी मौजूद न थे कि हमारी आयतें इन को सुना रहे हो। लेकिन हम तुम को रसूल बनाने वाले थे।[89]

وَلٰكِنَّاۤ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا
فِيْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَاۙ
وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾

46. और न ही तुम तूर की तरफ़ मौजूद थे जब हम ने (मूसा को) पुकारा था।[90] लेकिन यह (वह्य) तुम्हारे रब की रहमत है ताकि तुम एक ऐसी क़ौम को ख़बरदार करो जिस के पास तुम से पहले कोई ख़बरदार करने वाला नहीं आया।[91] ताकि वे याददेहानी (नसीहत) हासिल करें।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾

47. और कहीं ऐसा न हो कि वे अपने करतूतों के कारण मुसीबत में पड़ें तो कहें, ऐ हमारे रब ! तूने क्यों न हमारी तरफ़ कोई रसूल भेजा ? कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाने वालों में से हो जाते।[92]

وَلَوْلَاۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

83. अर्थात् जो भी फ़िरऔन वालों के पद्चिन्हों पर चलेंगे वे क़ियामत के दिन उन ही के नेतृत्व में जहन्नम की तरफ़ बढ़ेंगे।

84. अर्थात् क़ियामत के दिन न गुमराह लीडर अपने अनुयायियों की कुछ सहायता कर सकेंगे और न ये गुमराह अनुयायी अपने लीडरों के कुछ काम आ सकेंगे। उन में से प्रत्येक बिलकुल असहाय होगा ।

यह बहुत बड़ी चेतावनी है लीडरों के लिए भी और उन के पीछे चलने वाली जनता के लिए भी। प्रत्येक व्यक्ति सोच ले कि वह किधर जा रहा है और किस के पीछे चल रहा है।

85. दुनिया फ़िरऔन और उस के साथियों पर लानत ही भेजती है। मुसलमान, ईसाई और यहूदी सब उस की निन्दा करते हैं और दुनिया फ़िरऔन को ज़ालिम ही की हैसियत से जानती है।

86. अर्थात् पिछली उद्दण्ड क़ौमों को विनष्ट कर के अगली नस्लों के लिए इबरत का सामान किया और उन की रहनुमाई और हिदायत के लिए मूसा को किताब (तौरात) प्रदान की। इस आयत से कुछ महत्वपूर्ण बातों पर रौशनी पड़ती है।

एक यह कि हिदायत के लिए पहली विस्तृत किताब तौरात थी जो हज़रत मूसा पर नाज़िल हुई । इस से पहले रसूलों के द्वारा ग़ैर किताबी शक्ल में हिदायत का सामान होता रहा । जैसे हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत स्वालेह के द्वारा या फिर छोटे छोटे सहिफ़े नाज़िल किये गए । अत: इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सहीफ़ा प्रदान हुआ था । (सूरह आला-१९) स्पष्ट रहे, तौरात चूँकि कई हिस्सों पर आधारित थी इस लिए उस को भी सहीफ़ा कहा गया है वरना कुल मिला कर वह एक विस्तृत किताब थी। तौरात से पहले विस्तृत किताब नाज़िल न किये जाने का कारण यह समझ में आता है कि उस ज़माने में लिखने पढ़ने का आम प्रचलन नहीं हुआ था इस लिए अल्लाह की हिदायत का मूल साधन नबी हज़रात के इरशादात रहे।

दूसरे यह कि हज़रत मूसा से पहले कोई विस्तृत किताब नाज़िल ही नहीं हुई थी तो बहुदेववादी धारणाओं के अनुयायी अपनी धार्मिक किताबों जैसे मनुस्मृति, वेद आदि के बारे में, अल्लाह की किताब होने का जो दावा करते हैं वह एक बेबुनियाद दावा है जब कि ये किताबें ख़ुद इस बात का दावा नहीं करतीं कि उन का नाज़िल करने वाला सर्वोच्च ख़ुदा (Supreme Being) है । इस लिए उन के अनुयायियों का दावा मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त की भाँति है।

तीसरे यह कि तौरात केवल बनी इस्राईल के लिए नहीं बल्कि आम इन्सानियत के लिए हिदायत की किताब थी क्यों कि आयत में هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلنَّاسِ ''लोगों के लिए हिदायत और रहमत'' फ़रमाया गया है। अत: बनी इस्राईल की जाति में नियुक्त होने वाले नबी दूसरी जातियों को भी इस्लाम स्वीकार करने की दअवत देते रहे हैं। जिस का उदाहरण हज़रत सुलैमान का सबा की रानी को दअवत देना है। इसी आधार पर बनी इस्राईल को दुनिया में नेतृत्व करने का पद प्राप्त रहा और यह वह श्रेष्ठता है जिस के चलते वह अन्य जातियों में प्रमुख रहे।

87. तात्पर्य तूर पर्वत का पश्चिमी भाग है जहाँ हज़रत मूसा को तौरात प्रदान हुई थी। मूसा के लिए फ़रमान उतारने से तात्पर्य तौरात है। और उस के गवाहों से मुराद बनी इस्राईल हैं जिन को शरीअत प्रदान करते समय उस की पाबन्दी की प्रतिज्ञा ली गई थी।

आयत का मतलब यह है कि जिस समय हज़रत मूसा को तूर पर्वत के पश्चिमी भाग की तरफ़ तौरात प्रदान की गई उस समय ऐ पैग़म्बर तुम वहाँ मौजूद न थे और न इन घटनाओं के चश्मदीद गवाह हो जो तूर पर्वत के दामन में बनी इस्राईल को पेश आए। फिर क़ुर्आन के द्वारा तुम्हारा मूसा के वृत्तांत को पूरी सच्चाई और तमाम ज़रूरी तफ़्सीलात के साथ पेश करना जब कि अहले किताब के पास तौरात का जो हिस्सा मौजूद है वह भी उन के रद्दोबदल कर देने के कारण दोषपूर्ण है, क़ुर्आन के अल्लाह की वह्य होने तथा तुम्हारे पैग़म्बर होने का स्पष्ट सबूत है।

88. अर्थात् हज़रत मूसा के बाद काफ़ी दौर ग़ुज़र चुके हैं। मगर तुम ऐ पैग़म्बर इस क़ुर्आन के द्वारा हज़रत मूसा के वृत्तांत को इस तरह प्रस्तुत कर रहे हो जैसे ये सब तुम्हारी आँखों देखी घटनाऐं हैं और यह इस बात की दलील है कि यह अल्लाह का कलाम है।

89. अर्थात् ऐ पैग़म्बर मद्यन की जो घटना तुम ने बयान की (जो इस सूरह की आयत २३ से २८ में बयान हुई है) वह इस प्रमाणिक तफ़्सील के साथ किसी भी किताब में बयान नहीं हुई है लेकिन तुम ने इस को इस तरह पेश कर दिया कि जैसे तुम्हारा आँखों देखा हाल है। यह बात तुम्हारे नबी होने तथा सच्चे होने को उजागर करती है। इतिहास के इन गुमशुदा पन्नों को तुम क़ुर्आन की आयतों के द्वारा मक्का वालों के सामने इस लिए पेश कर रहे हो कि हम ने तुम्हें रसूल बना कर भेजा है वरना इस को जानने का कोई साधन तुम्हारे पास मौजूद न था ।

90. इशारा है उस घटना की तरफ़ जब तूर की तरफ़ वादी-ए-ऐमन (तूर की घाटी) में अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा को पुकारा और उन्हें रिसालत का दयित्व सौंपा जैसा कि इस सूरह की आयत ३० में बयान हुआ है।

91. बनी इस्माईल अर्थात् अरबों में इब्राहीम और इस्माईल अलैहिस्सलाम के बाद कोई नबी नहीं आया। इन दो नबियों ने जो शिक्षा,जो चिन्ह,जो शरीअत और जो आसार छोड़े थे वही

इस क़ौम के लिए दीन की पूँजी थी। अलबत्ता हज़रत मूसा पर नाज़िल शुदा तौरात बनी इस्राईल के माध्यम से उन के लिए याददेहानी का साधन बनी। मगर चूँकि एक लम्बी अवधि से इस क़ौम में नबी नहीं आया था और वह ग़फ़लत में पड़ी हुई थी इस लिए अल्लाह की रहमत जोश में आई और उस ने अपने आख़िरी रसूल को इस क़ौम में नियुक्त कर के इस को उठाने और अल्लाह की दया का पात्र बनने का सामान किया।

92. अर्थात् रसूल हम ने इस लिए भेजा ताकि तुम पर अल्लाह की हुज्जत क़ायम हो जाए और क़ियामत के दिन यह बहाना करने का मौक़ा न मिले कि कोई संदेशवाहक तो हमारी तरफ़ आया नहीं था कि हम ईमान लाने वाले बनते।

अगर वे तुम्हारे इस मुतालबे को पूरा नहीं करते तो जान लो कि ये अपनी इच्छा के पीछे चलने वाले हैं। और उस व्यक्ति से बढ़कर कौन गुमराह होगा जो अल्लाह की हिदायत को छोड़ कर अपनी इच्छाओं की पैरवी करे? अल्लाह ऐसे ज़ालिमों पर हरगिज़ राह नहीं खोलता। और हम ने इन को निरन्तर अपना कलाम पहुँचाया ताकि वे याददेहानी (नसीहत) हासिल करें। जिन लोगों को हम ने इस से पहले किताब प्रदान की थी वे इस पर ईमान लाते हैं। *(अल-क़ुर्आन)*

48. मगर जब हमारी तरफ़ से हक़ (सत्य) उन के पास आ गया तो कहने लगे क्यों न दी गई इस को वैसी चीज़ जैसी मूसा को दी गई थी।[93] क्या इन लोगों ने उस चीज़ का इन्कार नहीं किया जो इस से पहले मूसा को दी गई थी?[94] उन्होंने कहा दोनों जादूगर हैं जो एक दूसरे की मदद करते हैं।[95] और कहा हम सब के इन्कारी हैं।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِیَ
مِثْلَ مَآ اُوْتِیَ مُوْسٰی ؕ اَوَلَمْ یَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِیَ مُوْسٰی
مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۟ وَقَالُوْۤا
اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿۴۸﴾

49. इन से कहो अगर तुम सच्चे हो तो लाओ अल्लाह की तरफ़ से ऐसी किताब जो इन दोनों से अधिक हिदायत प्रदान करने वाली हो, मैं उस की पैरवी करूँगा।[96]

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰی مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۹﴾

50. अगर वे तुम्हारे इस मुतालबे को पूरा नहीं करते तो जान लो कि ये अपनी इच्छा के पीछे चलने वाले हैं।[97] और उस व्यक्ति से बढ़कर कौन गुमराह होगा जो अल्लाह की हिदायत को छोड़ कर अपनी इच्छाओं की पैरवी करे?[98] अल्लाह ऐसे ज़ालिमों पर हरगिज़ राह नहीं खोलता।[99]

فَاِنْ لَّمْ یَسْتَجِیْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا یَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ
وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَیْرِ هُدًی مِّنَ اللّٰهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۰﴾

51. और हम ने इन को निरन्तर अपना कलाम पहुँचाया ताकि वे याददेहानी (नसीहत) हासिल करें।[100]

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾ ؕ

52. जिन लोगों को हम ने इस से पहले किताब प्रदान की थी वे इस पर ईमान लाते हैं।[101]

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾

53. और जब यह (क़ुर्आन) उन को सुनाया जाता है तो कहते हैं हम इस पर ईमान लाए। निस्संदेह यह हमारे रब की तरफ़ से हक़ है। हम पहले ही से मुस्लिम हैं।[102]

وَاِذَا یُتْلٰی عَلَیْهِمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِهٖۤ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا
مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِیْنَ ﴿۵۳﴾

54. ये वे लोग हैं जिन को इन का अज्र (इनाम) दो बार दिया जाएगा इस कारण से कि वे साबित क़दम रहे।[103] वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं।[104] और जो रिज़्क़ हम ने उन को दिया है उस में से वे ख़र्च करते हैं।[105]

اُولٰٓئِكَ یُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَیْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَیَدْرَءُوْنَ
بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ﴿۵۴﴾

93. अर्थात् जो मोज्ज़े (चमत्कार) मूसा को दिए गए थे वह इस पैग़म्बर को क्यों नहीं दिए गए।

94. अर्थात् जो मोज्ज़े (चमत्कार) मूसा को दिए गए थे उस का भी तो इन ही जैसे काफ़िरों ने इन्कार किया था।

95. दोनों से मुराद हज़रत मूसा और हज़रत हारून हैं। इन के मोज्ज़ों को उस समय के काफ़िरों ने जादू बताया था। और इस में अतिश्योक्ति से काम लेते हुए इन के व्यक्तित्व को ही जादू कह डाला था अर्थात् यह तो पूरे जादूगर हैं।

96. अर्थात् तौरात और क़ुर्आन से अधिक हिदायत प्रदान करने वाली अल्लाह की कोई किताब तुम्हारे पास मौजूद है तो उसे प्रस्तुत करो मैं उस का अनुपालन करूँगा । क्यों कि असल चीज़ अल्लाह की हिदायत का अनुपालन ही है।

स्पष्ट हुआ कि क़ुर्आन नाज़िल होने के समय दो ही किताबें हिदायत का साधन थीं एक तौरात और दूसरे क़ुर्आन जो नाज़िल हो रहा था । रही बात ज़बूर और इन्जील की तो वे तौरात के ही आधीन थीं इस लिए उन का अलग से ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं थी। और जब उस ज़माने में उन दो किताबों के अलावा कोई हिदायत की किताब मौजूद नहीं थी कि उस का अनुपालन किया जाए तो मौजूदा ज़माने में विभिन्न धर्मों की किताबों के बारे में यह दावा किस तरह सही हो सकता है कि वे ख़ुदा का कलाम और हिदायत का साधन हैं।

यह बात भी ख़याल में रहे कि इन आयतों में मक्का के बहुदेववादियों से सम्बन्धित दीन की मौलिक धारणाऐं तौहीद, रिसालत और आख़िरत में मिलने वाले कर्मफल बहस में हैं और इस बारे में तौरात की शिक्षा भी मूल रूप से वही है जो क़ुर्आन की है।

यह बात भी स्पष्ट रहे कि क़ुर्आन के सामने तौरात की जो प्रति मौजूद थी उस में और जो प्रतियाँ अब पाई जाती हैं उस में काफ़ी अन्तर है।

97. अर्थात् उन का यह तरीक़ा बड़ा विचित्र है कि न तौरात को मानते हैं और न क़ुर्आन को और न ही किसी ईश्वरीय ग्रंथ की निशानदेही करते हैं जिस में इन से बेहतर हिदायतों की सामाग्री उपलब्ध हो । इस का मतलब तो यही हुआ कि वे सिरे से अल्लाह का अनुपालन करना ही नहीं चाहते बल्कि चाहते हैं कि वे अपनी इच्छाओं के पीछे चलने में आज़ाद रहें।

98. आज शिक्षा का आम प्रचलन हो गया है और मनुष्य के लिए वह ज्ञात करना आसान हो गया है कि ख़ुदा की हिदायत कहाँ है परन्तु वे अपनी इच्छाओं के मामले में आज़ाद रहना चाहता है इस लिए उस में ख़ुदा की हिदायत की चाह पाई ही नहीं जाती ।

99. अर्थात् जब तक ऐसे ग़लत लोग अल्लाह कि हिदायत के इच्छुक नहीं बनते अल्लाह उन को हिदायत से वन्चित रखता है।

100. अर्थात् क़ुर्आन की आयतें निरंतर उतारीं और बराबर उन की याददेहानी का सामान किया।

101. मुराद वे लोग हैं जो अहले-किताब में से थे और क़ुर्आन पर ईमान लाए थे। स्पष्ट रहे कि अहले-किताब के लिए क़ुर्आन में साधारणतया الذين اوتوا الكتاب (जिन्हें किताब दी गई थी) का वाक्य प्रयुक्त हुआ है परन्तु जब क़ुर्आन ख़ास तौर से इस गिरोह के उन लोगों का वर्णन करता है जो सच्चे ईमान वाले हैं तो उन के लिए الذين اٰتينهم الكتاب "जिन को हम ने किताब प्रदान की" का वाक्य प्रयोग करता है जिस में कृपा एवं अनुकम्पा का पक्ष उभरा हुआ है।

102. इशारा है अहले-किताब में से उन लोगों की तरफ़ जो असली दीन इस्लाम पर जमे थे । जो तौहीद और आख़िरत के साथ ख़ुदा की समस्त किताबों और रसूलों को मानने की दअवत देता है, और जब क़ुर्आन के साथ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति हुई तो वे उन पर भी ईमान लाए और आप की पैरवी स्वीकार की। गोया उन्हों ने अपने ईमान के क्रम ही में क़ुर्आन और उस के पैग़म्बर को पाया था इस लिए वे पहले भी मुस्लिम थे और बाद में भी मुस्लिम रहे। दीन को बदलने (Conversion) का सवाल उन के लिए पैदा ही नहीं हुआ।

इस से इस धारणा का खण्डन होता है कि जब क़ुर्आन के अवतरण का आरम्भ हुआ तो कोई मुस्लिम मौजूद न था, या यह कि इस्लाम धर्म का आरम्भ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से होता है। सच्चाई यह है कि इस्लाम समस्त नबियों का दीन रहा है और क़ुर्आन के अवतरण के समय भी ऐसे लोग मौजूद थे जिन का दीन इस्लाम था। इस लिए उन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं हुआ। (इस्लाम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकर: नोट १५२, सूरह आले-इमरान नोट १०५, १०६,१०८)

103. अर्थात् वे पहले भी इस्लाम पर जमे रहे इस लिए इनाम पाने के भागीदार थे और जब क़ुर्आन पर ईमान ला कर उस के पैग़म्बर के अनुयायी बन गए तो दूसरी बार भी इनाम पाने के हक़दार बन गए। हदीस में आता है:-

"तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन को दो बार अज्र (इनाम) दिया जोएगा। एक वह जो अहले-किताब में से था और अपने नबी पर ईमान रखता था, फिर मुझ पर ईमान लाया।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ३ पृष्ट ३९३ बुखारी के हवाले से)

104. अर्थात् जो लोग इन सच्चे मुसलमानों के साथ उलझते हैं उन की गालियों का जवाब वे गालियों से नहीं देते

बल्कि बुराई का मुक़ाबला भलाई से करते हैं।

105. अर्थात् उन का एक सराहनीय गुण यह है कि वे कन्जूस और रुपये के पुजारी नहीं हैं बल्कि दिल के बड़े और दानशील हैं कि अल्लाह की राह में उस का दिया हुआ माल ख़र्च करते हैं और ज़रूरतमन्दों की मदद करते हैं।

इस से यह इशारा भी मिलता है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करने से ख़ैर और भलाई की राहें खुलती हैं और अधिक तौफ़िक़ मिलती है।

और जब वे कोई लग़्व (ऊँट पटाँग) बात सुनते हैं तो उस से किनारा कश हो जाते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। तुम को सलाम। हम जाहिलों से उलझना नहीं चाहते। (ऐ पैग़म्बर !) तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है और वह ख़ूब जानता है हिदायत स्वीकार करने वालों को। *(अल-क़ुर्आन)*

55. और जब वे कोई लग़ो (ऊँट पटाँग) बात सुनते हैं तो उस से किनारा कश हो जाते हैं [106] और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म [107]। तुम को सलाम ।[108] हम जाहिलों से उलझना नहीं चाहते ।[109]

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجَٰهِلِينَ ٥٥

56. (ऐ पैग़म्बर !) तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है [110] और वह ख़ूब जानता है हिदायत स्वीकार करने वालों को।

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ٥٦

57. वे कहते हैं कि यदि हम तुम्हारे साथ उस हिदायत की पैरवी करने लगें तो अपनी ज़मीन (देश) से उचक लिए जाऐंगे। क्या हम ने शान्ति वाले हरम में इन्हें जगह नहीं दी जिस की तरफ़ हर प्रकार के फल खिंचे चले आ रहे हैं हमारी तरफ़ से रिज़्क़ के तौर पर ! परन्तु इन में से अधिकतर जानते नहीं हैं।[111]

وَقَالُوا إِنْ نَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا
أَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ
شَيْءٍ رِزْقًا مِنْ لَدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٥٧

58. और कितनी ही आबादियों को हम विनष्ट कर चुके हैं जो अपने ऐश पर इतरा गई थीं।[112] तो ये हैं उन के ठिकाने (घर) जो उन के बाद कम ही आबाद हुए।[113] और हम ही उन के वारिस हुए।[114]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسَٰكِنُهُمْ
لَمْ تُسْكَنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَٰرِثِينَ ٥٨

59. और तुम्हारा रब बस्तियों को विनष्ट करने वाला न था जब तक कि उन की केन्द्रीय बस्ती में एक रसूल न भेज देता जो उन को हमारी आयतें सुनाता ।[115] और हम बस्तियों को उसी सूरत में विनष्ट करते हैं जब कि उन के रहने वाले ज़ालिम हों।[116]

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا
عَلَيْهِمْ آيَٰتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَٰلِمُونَ ٥٩

60. तुम लोगों को जो कुछ दिया गया है वह बस सांसारिक जीवन का सामान और उस की ज़ीनत है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर और बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम समझते नहीं ?[117]

وَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَٰعُ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا وَمَا
عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦٠

61. क्या वह वयक्ति जिस से हम ने अच्छा वादा कर रखा है और जिस को वह ज़रूर पाएगा [118] उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिस को हम ने सांसारिक जीवन का सामान दिया है फिर वह क़ियामत के दिन (सज़ा के लिए) हाज़िर किया जाने वाला है ?[119]

أَفَمَنْ وَعَدْنَٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَٰقِيهِ كَمَنْ مَتَّعْنَٰهُ مَتَٰعَ
الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ٦١

106.''लग़ो'' की व्याख्या के लिए देखिए सूरह मोमिन नोट ३.

यहाँ इशारा इस बात की तरफ़ है कि ये लोग अपने विरोधियों की बेहूदा बातों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देते और न ऐसी बातों का जवाब देने से उन को कोई दिलचस्पी होती है।

107. अर्थात् हम अपने कर्मों के ज़िम्मेदार हैं और तुम अपने कर्मों के ज़िम्मेदार। हम अपने कर्मों के फल को पायेंगे और तुम अपने कर्मों के।

108. यह सलाम उस सामान्य अर्थों में नहीं है जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को करता है। बल्कि यह सलाम सलामती के साथ विदा लेने के अर्थ में है अर्थात् हमारा सलाम लो हम इजाज़त चाहते हैं। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ुर्क़ान नोट ९२)

109. क़ुर्आन की शिक्षा यह है कि दीन के मामले में जो लोग जिहालत पर उतर आऐं उन के साथ ईमान वाले उलझें नहीं बल्कि ख़ूबसूरती के साथ उन के पास से विदा ले लें। मज़हबी झगड़ों से कोई लाभ नहीं होता अलबत्ता यदि सुनने वाला कुछ सुनने के लिए आमादा हो तो उसे सच्ची बात ज़रूर सुनाई जाए।

110.अर्थात् हिदायत क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ देना अल्लाह ही का काम है। तुम्हारे बस में यह नहीं है कि किसी के दिल में हिदायत उतार दो और उसे सीधी राह पर चला दो। और जब एक पैग़म्बर किसी के दिल में हिदायत नहीं उतार सकता तो अन्य लोग क्या कर सकते हैं।

111. क़ुरैश यह समझे थे कि मक्का में उन को जो प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है और जो शान्तिपूर्ण वातावरण उपलब्ध है वह इस लिए है कि उन्होंने बुत परस्ती के सिलसिले में उदारता बरत रखी है। और प्रत्येक क़बीले के बुत को ख़ाना-ए-काबा में जगह दे दी है अब अगर वे पैग़म्बर की एकेश्वरवादी निमंत्रणा को स्वीकार कर लेते हैं तो मक्का में न कोई बुत रहेगा और न बुत परस्ती । जिस के फल्सवरूप अरब क़बीलों का विरोध उन्हें मोल लेना पड़ेगा इस का प्रभाव उन के व्यपार और उन के आर्थिक जीवन पर भी पड़ सकता है और उन की शान्ति और सुकून पर भी । उन के इस विचार का खण्डन करते हुए कहा गया कि तुम्हें सुकून और शान्ति की जो नेमत एक ऐसे देश में जहाँ मार काट और लूट पाट आम तौर से प्रचलित है, इस उदारता के चलते नहीं मिली है जो तुम ने बुत परस्ती के सिलसिले में अपना रखी है बल्कि इस लिए मिली है कि अल्लाह तआला ने मक्का को सुरक्षित हरम बना दिया है। उस के हरम होने ही के कारण अरब इस शहर का आदर करते हैं और इस में अशान्ति फैलाने को बहुत बड़ा गुनाह समझते हैं। इस लिए क़ुरैश को जो शान्ति और सुकून मयस्सर है वह हरम के चलते है न कि बुत परस्ती के चलते। इसी प्रकार मक्का के उन भागों में जो खेती योग्य नहीं है हर प्रकार के फलों और पैदावार की जो आयात विभिन्न दिशाओं से हो रही है वह भी उस के तौहीद का केन्द्र होने के कारण है और अल्लाह के विशेष अनुग्रह का परिणाम है। मगर जो बात तौहीद के पक्ष में जा रही थी उस को उन्हों ने अपनी नासमझी से शिर्क (बहुदेववाद) के पक्ष में डाल दिया। वे ये ग़लत बातें कहते रहे मगर कुछ सालों के बाद ही दुनिया ने देख लिया कि तौहीद का परचम उठाने वाले पूरे अरब पर छा गए। और उन के लिए कोई भय और कोई ख़तरा बाक़ी नहीं रहा।

आज भी मसलहत परस्त राजनीतिक लीडर लोगों को ख़ुदा और उस के दीन से दूर ही रखना चाहते हैं ताकि शान्ति और सुकून बना रहे। हालाँकि सुकून और शान्ति ख़ुदा और उस के दीन पर ईमान लाने और उस के तक़ाज़ों को पूरा करने से ही प्राप्त होती है।

112. अर्थात जिन को अपने खुशहाल जीवन और अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति पर गर्व था ।

113. अर्थात् कम ही ऐसा हुआ कि इन उजड़ी हुई बस्तियों में कोई बसा हो ।

114. अर्थात् ये लोग दुनिया से इस तरह चले गए कि इन को अपनी सारी संपत्ति छोड़ देनी पड़ी । इस तरह आख़िरकार इन चीज़ों के हम ही मालिक हो गए।

115. अर्थात् जिन बस्तियों पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल हुआ वह उस सूरत में हुआ जब कि एक रसूल के द्वारा उन को ग़फ़लत से जगा देने का सामान कर दिया गया था मगर उन्होंने रसूल की दअवत पर कान नहीं धरा।

इस आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि रसूल की नियुक्ति हर हर बस्ती में नहीं बल्कि किसी केन्द्रीय बस्ती में होती रही है ताकि उस की दअवत आसानी के साथ दूसरी बस्तियों में भी पहुँच जाए।

116. अर्थात ख़ुदा का इन्कार करने वाली तथा बहुदेववादी धारणाओं और कर्मों के चलते वे बिलकुल ग़लत हो कर रह गए हों और ख़ुदा के प्रति उन का रवैया सरासर अन्याय और ज़्यादती पर आधारित हो।

117. यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि अगर तुम पैग़म्बर की सच्ची दअवत को बस इस लिए स्वीकार नहीं कर रहे हो कि इस सूरत में तुम्हारे आर्थिक और सांसारिक लाभ ख़तरे में पड़ जाऐंगे तो याद रखो कि दुनिया के लाभ कुछ ही दिन के हैं । इस के मुक़ाबले में आख़िरत की नेमतें कई गुना बेहतर भी

हैं और अनन्त भी। फिर क्या यह बुद्धिमानी है कि आदमी क्षणिक और तुच्छ लाभों को हमेशा मिलने वाली नेमतों पर वरीयता दे।

118. मुराद अच्छे कर्म करने वाला मोमिन है जिस से अल्लाह तआला ने जन्नत का वादा कर रखा है।

119. मुराद काफ़िर है जिस को गिरफ़्तार कर के क़ियामत के दिन अल्लाह के समक्ष उपस्थित किया जाएगा ताकि उस को उस के कुफ्र और बग़ावत की सज़ा दी जाए।

वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई इष्ट पूज्य नहीं। उसी के लिए प्रशंसा है दुनिया में भी और आख़िरत में भी। हुक्म उसी का है। और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। *(अल-क़ुर्आन)*

62. और जिस दिन वह उन को पुकारेगा और पूछेगा कि कहाँ हैं मेरे वे साझीदार जिन का तुम को दावा था?[120]

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾

63. जिन पर हमारा फ़रमान लागू होगा,[121] वे कहेंगे ऐ रब ! यही लोग हैं जिन को हम ने गुमराह किया था। हम ने इन को उसी तरह गुमराह किया जिस तरह हम गुमराह हुए।[122] हम तेरे समक्ष (इन से) बरी होना ज़ाहिर करते हैं।[123] ये हमारी पूजा नहीं करते थे।[124]

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾

64. और उन से कहा जाएगा कि (अब) पुकारो अपने ठहराए हुए साझीदारों को।[125] ये उन को पुकारेंगे किन्तु वे उन को कोई जवाब न देंगे।[126] और ये लोग अज़ाब देख लेंगे। काश उन्होंने हिदायत (सीधी राह) अपनाई होती।[127]

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾

65. और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और पूछेगा कि तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया ?[128]

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

66. उस दिन उन से कोई जवाब न बन पड़ेगा। और न वे आपस में एक दूसरे से ही पूछ सकेंगे?[129]

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾

67. तो जिस ने तौबा की, ईमान लाया और नेक अमल किया वह आशा है सफ़ल होने वालों में से होगा।[130]

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

68. और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहता है और पसंद करता है जो चाहता है। इनको कोई इख़्तियार नहीं।[131] अल्लाह पाक और उच्च है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं।[132]

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

69. तुम्हारा रब जानता है जो कुछ ये अपने दिलों में छिपाये हुए हैं और जो ये ज़ाहिर करते हैं।[133]

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

70. वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई इष्ट पूज्य नहीं। उसी के लिए प्रशंसा है दुनिया में भी और आख़िरत में भी।[134] हुक्म उसी का है।[135] और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।[136]

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

120. क़ियामत के दिन अल्लाह तआला यह सवाल उन लोगों से करेगा जो दुनिया में उस का साझी ठहराते रहे हैं। जिन का दावा यह रहा है कि इश्वरीय शक्ति (Divine Power) दूसरों को भी प्राप्त हैं।

121. यह अल्लाह की अदालत में शैतानों का जवाब होगा जो गुमराही का नेतृत्व किया करते थे। उन पर अल्लाह का यह फ़रमान लागू हो चुका होगा कि ये लानत के भागीदार और जहन्नमी हैं।

122. उन शैतानों का यह जवाब होगा कि हम इन लोगों की गुमराही के ज़िम्मेदार नहीं हैं। इन को हम ने गुमराह ज़रूर किया मगर जिस प्रकार हम अपनी मर्ज़ी से गुमराह हुए थे उसी तरह ये अपनी मर्ज़ी से गुमराह हुए। हम ने इन को ज़बरदस्ती गुमराह नहीं किया था, कि इन की गुमराही की सज़ा हम को भुगतना पड़े।

123. अर्थात् अपने इन अनुयायियों से बे तअल्लुक़ी व्यक्त करते हैं।

124. अर्थात् ये वास्तव में अपने मन और अपनी इस्छा के पीछे चलने वाले थे।

125. शैतानों और गुमराह नेताओं के इस जवाब के बाद जो ऊपर बयान हुआ, आम बहुदेववादियों से कहा जाएगा कि अब पुकारो अपने ठहराए हुए साझीदारों को जिन को तुम ने अपना मददगार और सिफ़ारिशी समझ रखा था।

126. अर्थात् जिन फ़र्ज़ी देवताओं को वे पूजते थे उन का कोई अस्तित्व ही नहीं होगा की उन का जवाब दे सकें।

127. यह उन के हाल पर हसरत का इज़्हार है कि अगर उन्होंने हिदायत स्वीकार की होती तो आज इस अन्जाम को न पहुँचते। बहुदेववादियों के इस अन्जाम का चित्रण क़ुर्आन में इस तरह प्रस्तुत कर दिया गया है ताकि लोग शिर्क और बुत परस्ती को मामूली बात न समझें।

128. यह दूसरा प्रश्न रिसालत के बारे में होगा कि जो पैग़ाम ले कर हमारे रसूल तुम्हारे पास आए थे उस पैग़ाम को तुम ने स्वीकार किया या नहीं और उन की दअवत का तुम ने क्या जवाब दिया।

129. अर्थात् क़ियामत के दिन उन के पास कोई तर्क और कोई हुज्जत नहीं होगी जिस को वे रसूल के इन्कार के पक्ष में पेश कर सकें। इस लिए कोई बात उन्हें सुझाई नहीं देगी और वे आपस में एक दूसरे से कुछ पूछ भी न सकेंगे कि इस सवाल का क्या जवाब दिया जाए क्यों कि रसूलों की सत्यता उन पर इस तरह स्पष्ट हो चुकी थी कि इस बारे में बहाना करने का कोई मौक़ा न होगा।

130. यह ख़ुदा का इन्कार करने वाले काफ़िरों और बहुदेववादियों को प्रायश्चित की प्रेरणा है कि आज तुम्हें दुनिया में इस का अवसर प्राप्त है तो जो कोई कुफ्र और शिर्क से बाज़ आएगा और ईमान ला कर व्यवहारिक रूप से नेक बनेगा वह उचित रूप से आख़िरत की सफ़लता की आशा बाँध सकता है।

131. अर्थात् अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। इस में किसी का कोई हस्तक्षेप नहीं। इसी प्रकार वह अपनी सृष्टि में से इनामों से अलंकृत करने के लिए उचित लोगों को खुद ही चुन लेता है। बहेदेववादियों ने जिन को सिफ़ारिशी ठहरा रखा है उन का इस मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं। वे बिलकुल बेबस हैं।

132. अर्थात् यह ख़याल कि ख़ुदा के कामों में कोई हस्तक्षेप करने वाला है सरासर शिर्क है। ये बहुदेववादी अपने माबूदों के बारे में यही गुमान रखते हैं मगर अल्लाह की हस्ती इस से बहुत बुलन्द है कि उस के कामों, उस के फैसलों और उस के चुनाव के बारे में कोई उस पर अपना प्रभाव रख सके और कोई बात उस से मनवाई जा सके।

133. इशारा है इस बात की तरफ़ कि बहुदेववादी जिस शिर्क और बुत परस्ती को एलानिया अपना धर्म बनाए हुए हैं उस के पीछे जो मानसिकता काम कर रही है और जो विकृत भावनाऐं एवं उत्प्रेरक हैं उन को भी अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

134. अर्थात् अल्लाह ही इस का हक़ रखता है कि दुनिया में भी उसी के गुण गाऐं और आख़िरत में भी उसी के गुण गाए जाऐंगे।

135. अर्थात् इस कायनात में उसी का हुक्म और उसी का निर्णय लागू हो सकता है और वही इस का हक़ रखता है कि मनुष्य उस के शरअी आदेशों और फैसलों की पाबन्दी स्वीकार करे तथा उस के किसी आदेश का भी उल्लंघन न करे।

136. अर्थात् तुम्हें आख़िरकार अल्लाह ही के समक्ष उपस्थित होना है।

71. इन से कहो क्या तुम ने इस बात पर ग़ौर किया कि अगर अल्लाह क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए रात तारी कर दे ,तो अल्लाह के सिवा वह कौन सा ख़ुदा है जो तुम्हारे लिए रौशनी लाए? क्या तुम सुनते नहीं ?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿۷۱﴾

72. इन से कहो क्या तुम ने यह भी सोचा कि अगर अल्लाह क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन तारी कर दे तो अल्लाह के सिवा वह कौन सा ख़ुदा है जो तुम्हारे लिए रात को लाए कि तुम उस में सुकून हासिल कर सको?[137]क्या तुम देखते नहीं?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ
اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۲﴾

73. और यह उसी की रहमत है कि उस ने तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और उस का अनुग्रह तलाश करो, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।[138]

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ
وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾

74. और वह दिन जब वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा कहाँ हैं मेरे वे शरीक जो तुम ने ठहराए थे ?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۴﴾

75. और हम प्रत्येक उम्मत में से एक गवाह निकाल लाऐंगे [139] और लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो।[140] उस समय उन्हें मालूम हो जाएगा कि हक़ (सत्य) अल्लाह ही के लिए है।[141] और जो झूठ वे गढ़ते रहे हैं वह सब गुम हो जाएगा।[142]

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ
فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۷۵﴾

76. क़ारून मूसा की जाति में से था किन्तु वह उन के विरुद्ध ज़्यादती पर उतर आया [143] और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दे रखे थे कि उन की कुंजियाँ एक शक्तिशाली गिरोह मुश्किल से उठा सकता था।[144] जब उस की क़ौम के लोगों ने उस से कहा इतराओ मत [145]अल्लाह इतराने वालों को पसन्द नहीं करता।[146]

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ
مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۗ
اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿۷۶﴾

77. अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है उस के द्वारा आख़िरत का घर तलब करो [147] और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूलो।[148] एहसान करो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हारे साथ एहसान किया है।[149] और ज़मीन में फ़साद (बरपा करने) पर तुल न जाओ।[150] अल्लाह फ़साद बरपा करने वालों को पसंद नहीं करता ।

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ
مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ
الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۷۷﴾

137. रात और दिन के आने जाने की जो व्यवस्था इस पृथ्वी पर चल रही है वह जीवन के लिए अत्यंत अनुकूल है। अगर रात के अन्धकार में उसे सुकून मिलता है तो दिन के उजाले में उस के लिए आर्थिक दौड़ धूप करना आसान होता है। यह अल्लाह तआला की क़ुदरत और रहमत का बहुत बड़ा करिश्मा है मगर इन्सान का हाल बहुत अजीब है, वह वातावरण की अनुकूलता को तो महसूस करता है किन्तु इस बात पर सोच विचार करने का कष्ट नहीं उठाता कि वातावरण की यह अनुकूलता एक व्यवस्था के अन्तर्गत है और व्यवस्था का होना उस के स्थापित करने वाले के अस्तित्व पर तर्क प्रस्तुत करता है। फिर जिस हस्ती ने यह व्यवस्था चला रखी है वह इस को परिवर्तित भी कर सकती है। यदि वह सदा के लिए रात ही को स्थापित कर दे या दिन ही मुसल्लत कर दे तो इन्सान कितनी बड़ी नेमत से महरूम हो जाएगा और उस को कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा?अगर वह इस पहलू से सोचें तो वह अपने रब को पहचान ले और उस के अन्दर उस के प्रति कृतज्ञता का भाव पैदा हो। और जब उस की कृतज्ञता का भाव पैदा हो जाए तो वह उस के एकेश्वरवाद की पुकार की ओर लपक जाएगा जो क़ुर्आन और उस का पैग़म्बर पेश कर रहे हैं।

आज का मानव तो अत्यधिक भौगोलिक जानकारी रखता है। वह जानता है कि उत्तरी ध्रुव पर छ महीने दिन और छ महीने रात होती है इसी कारण से वहाँ आबादी न होने के बराबर है। इस के विपरीत अक्षांश (Latitude) पर जहाँ रोज़ाना दिन और रात के आने जाने का क्रम बना रहता है, इन्सानी आबादी से भरा पड़ा है। फिर वह यह भी जानता है कि दिन और रात का अस्तित्व पृथ्वी का अपनी धुरी पर चक्कर काटने के फलस्वरूप है। किन्तु वह इस प्रश्न पर सोच विचार करने के लिए आमादा नहीं होता जो इस अवसर पर निश्चित रूप से पैदा होता है, और वह यह कि क्या चक्कर काटने की यह व्यवस्था इस बात पर तर्क प्रस्तुत नहीं करती कि इस के पीछे एक तत्वपूर्ण हस्ती का हाथ निहित है जो पृथ्वी को घुमा रहा है। यदि वह इस के चक्कर को रोक दें तो क्या आधी पृथ्वी पर दिन ही दिन और आधी पृथ्वी पर रात ही रात नहीं होगी? और ऐसी दशा में वह कौन सा ख़ुदा है जो ज़मीन के चक्कर को जारी कर दे। स्पष्ट है यह अल्लाह के सिवा किसी के बस की बात नहीं है। फिर इस हकीक़त को जानते बूझते अल्लाह का साझीदार ठहराने का क्या मतलब? और यदि इस बारे में इन लोगों को कहीं से ठोकर लग रही है तो वे नसीहत करने वाले की बात सुनने के लिए आमादा क्यों नहीं होते?

138. अर्थात् रात में सुकून हासिल कर सको और दिन में कमाई के सिलसिले में दौड़ धूप कर सको और इन दोनों नेमतों से लाभ उठा कर अपने दयावान ख़ुदा के कृतज्ञ बन जाओ।

139. अर्थात् हर उम्मत में से एक रसूल को जो उस की तरफ़ भेजा गया था गवाह के तौर पर सामने लाऐंगे। क़ुर्आन में दूसरी जगह फ़रमाया गया है :-

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ
وَجِئْنَابِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا۔ (سورہ نساء:۴۱)

अर्थ:-"उस दिन (उन का) क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाऐंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बना कर खड़ा करेंगे।" (सूरह निसा : ४१)

140. अर्थात् शिर्क और बुत परस्ती के पक्ष में और इस्लाम को छोड़ कर जो अन्य धर्म तुम ने स्वीकार कर रखे थे उन के सत्य होने की यदि कोई दलील तुम्हारे पास थी तो उसे पेश करो।

141. अर्थात् अल्लाह ने अपने रसूलों के द्वारा जो हिदायत भेजी थी और जो कलाम नाज़िल किया था वही सत्य था।

142. अर्थात् उन के अपने रचे हुए ख़ुदा भी गुम हो जाऐंगे और उन के मनगढ़ंत धर्म भी हवा हो जाऐंगे।

143. क़ारून के बारे में क़ुर्आन पुष्टि करता है कि वह मूसा की जाति में से था, परन्तु वह अपनी जाति से बग़ावत कर के फ़िरऔन से जा मिला था। दूसरे शब्दों में उस ने अपनी मिल्लत से ग़द्दारी कर के फ़िरऔन के पास महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया था और बनी इस्राईल के विरुद्ध जो एक मुस्लिम समुदाय था ज़ुल्म और ज़्यादती पर उतर आया था। क़ुर्आन यह भी पुष्टि करता है कि मूसा को जिस प्रकार फ़िरऔन और हामान के पास भेजा गया था उसी प्रकार क़ारून की तरफ़ भी भेजा गया था जिस से स्पष्ट होता है कि यह सब कुफ्र और उद्दण्डता की दृष्टि से एक ही थैली के चट्टे बट्टे थे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوسٰى بِاٰيَاتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَهَامَانَ وَ قَارُوْنَ فَقَالُوْا سَاحِرٌ كَذَّابٌ۔ (سورہ المؤمن:۲۳۔۲۴)

अर्थ:- "हम ने मूसा को अपनी निशानियों और खुली हुज्जत के साथ फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ भेजा तो उन्हों ने कहा यह बड़ा झूठा जादूगर है।" (अलमोमिन २३,२४)

इस से यह भी स्पष्ट होता है कि क़ारून की घटना उस समय की है जब कि हज़रत मूसा मिस्र में थे। इस लिए जिन मुफ़स्सिरीन ने इस को उस समय की घटना बताई है जब कि बनी इस्राईल के वीराने में भटकने के समय कोरह (korah)

ने जो हज़रत मूसा के ख़िलाफ़ बगावत की थी और इस की सज़ा उन को यह मिली थी कि ज़मीन उन को निगल गई (गिनती-१६) तो यह हो सकता है कि कोरह दूसरा व्यक्ति रहा हो क्यों कि नाम के अन्तर के अलावा बाइबिल उस के पूँजीपति होने का वर्णन नहीं करती और यह भी संभव है कि क़ारून की घटना लोगों के ज़ेहनों में सही तौर से सुरक्षित न रही हो और बाइबिल के संकलनकर्ताओं ने इसे उलझे हुए अन्दाज़ में पेश कर दिया हो। अत: इस्राईलियात को नज़रअन्दाज़ कर के हमें क़ुर्आन के बयान पर संतोष करना है जो स्पष्ट भी है और शिक्षा प्रद भी ।

144. क़ारून के ख़ज़ानों की कुन्जियों को आजकल की कुन्जियों जैसा न समझा जाए जिन का साइज भी छोटा होता है और वज़न में भी हल्की होती हैं। पुराने ज़माने में ख़ज़ाना रखने के लिए तिजोरियों और सेफ़ नहीं हुआ करते थे बल्कि ज़मीन में गाड़ कर के या किसी सुरक्षित जगह पर रख कर दरवाज़े में बहुत बड़ा ताला लगा दिया जाता था जिस को खोलने के लिए बड़ी और वज़नदार चाबियाँ हुआ करती थी अल्लाह तआला ने क़ारून को इतनी दौलत दी थी कि वह कई ख़ज़ानों का मालिक था और उन ख़ज़ानों की भारी कुन्जियों को उठाकर एक जगह से दूसरी जगह रखने के लिए कई मज़दूरों की आवश्यकता पड़ती थी। जो मुश्किल से इन कुन्जियों को उठा पाते थे। असंभव नहीं कि ये कुन्जियाँ सलाखों की आकृति में रही हो इस लिए उन के इस क़दर वज़नी होने में अतिश्योक्ति की कोई बात नहीं बल्कि वास्तविकता की अभिव्यक्ति है। यह भी स्पष्ट रहे कि पुराने ज़माने में ख़ज़ाना सोने चाँदी के रूप में हुआ करता था। नोटों का चलन तो आधुनिक युग की देन है।

145. क़ारून को इस बात पर बड़ा घमण्ड था कि वह बहुत बड़ा पूँजीपति आदमी है इस लिए वह इतराने और घमण्ड करने लगा था।

146. इतराता वही व्यक्ति है जो किसी नेमत को पाकर उस को अल्लाह का एहसान समझने के बजाए अपनी क्षमता एवं योग्यता का परिणाम समझने लगता है इस लिए उस का मन फूले नहीं समाता । ऐसा व्यक्ति ख़ुदपसंद होता है। ख़ुदा इस को हरगिज़ पसंद नहीं करता ।

147. अर्थात् ये दौलत अल्लाह तआला ने इस लिए नहीं दी है कि इस पर साँप बन कर बैठो और न इस लिए दी है कि इस पर गर्व करो, बल्कि इस लिए दी है कि इस को अल्लाह की राह में ख़र्च करो । आख़िरत की सफ़लता का साधन बनाओ । धन को अपनी और अपने बीवी बच्चों की आवश्यकताऐं पूरी करने के बाद एक उचित सीमा तक बचा कर रखना सही है ताकि आगे भी ज़रूरतें पूरी होती रहे लेकिन ख़ज़ानों के रूप में जमा करना सही नहीं। ख़ास तौर से तब जब कि ख़ुदा के दूसरे बन्दे भूखे रह रहे हों या अत्यधिक हाजतमंद हों या दीन के प्रचार एवं प्रसार और मिल्ली तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए धन की अत्यधिक आवश्यकता हो।

मिस्र में जब हज़रत मूसा इस्लाम की दअवत ले कर उठे हैं तो बनी इस्राईल की हालत बड़ी दयनीय थी । इस लिए क़ारून को चाहिए था कि अपने ख़ज़ाने अल्लाह के दीन और अपनी जाति बनी इस्राईल की मदद एवं सहयोग के लिए खोल देता और इस भले काम को कर के अपने परलोक को सुधारता परन्तु वह पूँजी पति पूँजी भक्त बन गया और माल ख़र्च किया भी तो नुमाइशी कामों में ।

यह और इस प्रकार की दूसरी आयतों से यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि इस्लाम इस बात की अनुमति नहीं देता कि दौलत जमा कर के तिजोरियाँ भर दी जाऐं या बैंक बैलेंस में पूँजी का अंबार सुरक्षित कर दिया जाए। यह पूँजी भक्ति अथवा लक्ष्मी पूजा है न कि ईश्वर भक्ति व ईश पूजा । एक ईश भक्त तथा परलोक को अपनी सफ़लता समझने वाला व्यक्ति दौलत का ढेर लगा कर क्या करेगा? यह काम तो वही व्यक्ति कर सकता है जिस का लक्ष्य दुनिया हो। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह तौबा नोट ६८)

148. इस का मतलब यह नहीं कि दुनिया ज़रूर कमाओ क्यों कि एक पूँजी पति को यह कहने की ज़रूरत ही नहीं बल्कि मतलब यह है कि इस बात को न भूलो कि दुनिया की कमाई में तुम्हारा हिस्सा बहुत थोड़ा है। दुनिया के फ़ायदे कुछ ही दिन के हैं और उस धन में जो तुम्हें मिला है तुम्हारा हिस्सा तुम्हारी अपनी ज़रूरत के जितना ही है। बाक़ी सब ख़ुदा के बन्दों की ज़रूरतों को पूरा करने के और दीन के कामों पर ख़र्च करने के लिए है। धन के बारे में यह धारणा पूँजीवाद (Capitallsm) की जड़ काट देता है।

149. अर्थात् जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हारे साथ यह भलाई की कि तुम्हें दौलत से मालामाल कर दिया उसी प्रकार तुम भी ख़ुदा के बन्दों के साथ भलाई करो और उन की निर्धनता को दूर करने के लिए दिल खोल कर अपना माल ख़र्च करो ।

150. फ़साद का मतलब बिगाड़ के हैं और यहाँ फ़साद से मुराद वह बिगाड़ है जो समाज की मूल धारणाओं, नैतिकता, संस्कृति तथा राजनीति में पैदा किया जाता है। पूँजीपतियों की दौलत समाज के बिगाड़ का बहुत बड़ा साधन बनती हैं अत: आजकल के क़ारून भी समाज के लिए नासूर ही बने हुए हैं।

उस ने कहा वह सब कुछ मुझे अपने व्यक्तिगत ज्ञान के कारण मिला है। क्या उस को यह मालूम न था कि अल्लाह इस से पहले कितनी ही जातियों को विनष्ट कर चुका है जो शक्ति में उस से कहीं अधिक और जत्थे में उस से बढ़ कर थीं। और अपराधियों से उन के गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जाता। *(अल-क़ुर्आन)*

78. उस ने कहा यह सब कुछ मुझे अपने व्यक्तिगत ज्ञान के कारण मिला है।[151] क्या उस को यह मालूम न था कि अल्लाह इस से पहले कितनी ही जातियों को विनष्ट कर चुका है जो शक्ति में उस से कहीं अधिक और जत्थे में उस से बढ़ कर थीं।[152] और अपराधियों से उन के गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जाता।[153]

قال إنما أوتيته على علم عندي ۚ أولم يعلم أن الله قد
أهلك من قبله من القرون من هو أشد منه قوة وأكثر
جمعا ۚ ولا يسئل عن ذنوبهم المجرمون ﴿٧٨﴾

79. फिर वह अपनी पूरी शानो-शौकत के साथ अपनी क़ौम के सामने निकला।[154] जो लोग सांसारिक जीवन के इच्छुक थे वे कहने लगे काश हमें भी वही कुछ मिलता जो क़ारून को मिला है। यह तो बड़ा भाग्यशाली है।[155]

فخرج على قومه في زينته ۖ قال الذين يريدون الحيوة
الدنيا يليت لنا مثل ما أوتي قارون
إنه لذو حظ عظيم ﴿٧٩﴾

80. किन्तु जिन को ज्ञान प्रदान हुआ था उन्होंने कहा, अफ़सोस तुम पर ! अल्लाह की बख़्शिश (सिला) बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे। और यह दौलत सब्र करने वालों ही को मिलती है।[156]

وقال الذين أوتوا العلم ويلكم ثواب الله خير لمن
ءامن وعمل صلحا ۚ ولا يلقىها إلا الصبرون ﴿٨٠﴾

81. आख़िरकार हम ने उसे और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया।[157] फिर कोई गिरोह ऐसा न हुआ जो ख़ुदा के मुक़ाबले में उस की मदद करता और न वह स्वयं अपना बचाव कर सका।[158]

فخسفنا به وبداره الأرض فما كان له من فئة ينصرونه
من دون الله وما كان من المنتصرين ﴿٨١﴾

82. और वही लोग जो कल उस के मक़ाम (पद) की तमन्ना कर रहे थे कहने लगे हाय ग़ज़ब ! अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपा तुला देता है।अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी धंसा देता।हाय ग़ज़ब ! काफ़िर (इन्कार करने वाले) फ़लाह नहीं पाते।[159]

وأصبح الذين تمنوا مكانه بالأمس يقولون ويكأن الله
يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر ۖ
لولا أن من الله علينا لخسف بنا ۖ ويكأنه
لا يفلح الكفرون ﴿٨٢﴾

83. यह आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिए ख़ास कर देंगे जो ज़मीन में बड़ाई नहीं चाहते और न फ़साद करना चाहते हैं और परिणाम की भलाई मुत्तक़ियों (अल्लाह का डर रखने वालों) ही के लिए है।[160]

تلك الدار الأخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا
في الأرض ولا فسادا ۚ والعقبة للمتقين ﴿٨٣﴾

151. अर्थात् मैं ने ये दौलत ज्ञान और कला के द्वारा प्राप्त की है। यह ख़ुदा का प्रदान किया हुआ नहीं है कि मेरे लिए उस का शुक्र अदा करना ज़रूरी हो। काफ़िरों के सोचने का अन्दाज़ यही होता है कि वे प्राप्त पूँजी को अपनी क्षमता एवं योग्यता का परिणाम समझते हैं और फिर उस पर इतराने लगते हैं और कितने ही कम क्षमता के लोग हैं जो पूँजी पति बन जाते हैं। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि धन दौलत अल्लाह के प्रदान करने से मिलती है न कि मात्र ज्ञान और कला के कारण !

152. अर्थात् ऐसी काफ़िरना बात कहते हुए उसे याद न रहा कि जिन जातियों को अपनी शक्ति और अपने जत्थे पर गर्व था उन का क्या अन्जाम हुआ? क्या उसे आद और समूद की घटनाऐं मालूम नहीं जो अपनी कला और अपनी जन शक्ति पर फूली जाती थीं परन्तु किस तरह विनष्ट हो कर रह गईं। फिर यह उसी रास्ते पर चल कर किस तरह अपने को अज़ाब से सुरक्षित समझ रहा है।

153. अर्थात् जब किसी अपराधी जाति के विनाश का समय आता है तो फिर अल्लाह तआला उस से उस के बारे में पूछता नहीं बल्कि उस को तुरंत विनष्ट कर के रख देता है। क्यों कि जब उन की मोहलत समाप्त हो गई तो वे अपने अपराधों के चलते दंड के भागीदार हो गए। यदि उन से पूछा जाए तो वे बहाना ही करेंगे। और सज़ा किसी भी तरह से टल नहीं सकती।

154.अर्थात् एक रोज़ क़ारून ने अपनी क़ौम के सामने अपनी शानो-शौकत का प्रदर्शन किया।जब वह अपने क़ीमती एवं आकर्षक वेषभूषा में अपने पूरे वैभव के साथ जुलूस की शकल में प्रकट हुआ और अपनी दौलत एवं ऐश्वर्य की नुमाइश करते हुए लोगों के सामने से गुज़रने लगा तो यह दृश्य बड़ा आकर्षक एवं दिलफ़रेब था।

155. यह बात कहने वाले बनी इस्राईल ही में से थे जिन पर सांसारिकता छायी हुई थी। उन्हों ने जब क़ारून का यह वैभवशाली जुलूस देखा तो उस की मोह माया में आ गए और कहने लगे कि इतनी दौलत जिस को नसीब हो वह बड़ा भाग्यशाली है। काश हमें भी यह चीज़ नसीब होती।

आज भी बड़े बड़े पूँजीपतियों की शानो-शौकत को देख कर लोगों के दिलों में ऐसी ही तमन्नाऐं करवटें लेने लगती हैं मगर इस से अन्दाज़ा होता है कि उन के नज़दीक सौभाग्य एवं दुर्भाग्य तथा सफलता एवं असफलता का मेआर क्या है।

156. ज्ञान से मुराद वास्तविक ज्ञान है अर्थात् जिन की नज़र आख़िरत पर थी उन्होंने इन सांसारिक लोगों की मानसिकता पर अफ़सोस प्रकट करते हुए कहा कि असली सफलता धन दौलत की सफलता नहीं है बल्कि वह सदा बाक़ी रहने वाला इनाम है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से चरित्रवान मोमिन बन्दों को मिलने वाला है। इस इनाम का हक़दार बनने के लिए दुनिया में सब्र ज़रूरी है। अर्थात् आख़िरत को लक्ष्य बना कर सत्य पर डटे रहना और जायज़ साधनों से जो कुछ मिले उस पर संतोष करना। जो व्यक्ति अपने अन्दर यह गुण पैदा कर लेगा वही वास्तव में बड़ा भाग्यशाली है।

मालूम हुआ कि मिस्र में बनी इस्राईल के अन्दर बिगड़े हुए सांसारिक लोग मौजूद थे और ऐसे सुलझे हुए ईमान वाले भी जिन्हों ने आख़िरत को वास्तव में अपना लक्ष्य बनाया था । मौजूदा दौर के मुसलमानों में भी इसी तरह दोनों ही प्रकार के लोग पाए जाते हैं।

157. अर्थात् क़ारून पर अल्लाह का प्रकोप इस रूप में आया कि वह अपने घर सहित ज़मीन में धंस गया। वह घर जिस में उस ने ख़ज़ाने जमा कर रखे थे उस की क़ब्र बन गया। क़ारून का यह इबरतनाक अन्जाम एक उद्दण्ड और ज़ालिम पूँजीपति का अन्जाम है जो रहती दुनिया तक लोगों के लिए इबरत का नमूना है। गोया अल्लाह ने आख़िरत के अज़ाब की एक झलक इस दुनिया ही में लोगों को दिखा दी है ताकि वे पूँजी भक्ति अथवा लक्ष्मी पूजा से बाज़ आऐं जो मनुष्य को ख़ुदा के प्रति उद्दण्ड और सांसारिक बना देती है।

158. अर्थात् जब अल्लाह का अज़ाब आता है तो तमाम सहारे बेक़ार हो जाते हैं। न क़रीबी साथियों के बस में होता है कि उस की मदद करें और न हुकूमत के बस में, और न उस के अपने बस में होता है कि अपने को बचाए।

159. बनी इस्राईल के उस गिरोह ने जिस पर सांसारिकता छायी हुई थी क़ारून के इस अन्जाम से इबरत हासिल की। उन्हें एहसास हुआ कि ये धनवान लोग और ये पूँजी पति जो अपनी शानो-शौकत का मनमोहक प्रदर्शन करते हैं, इस की इच्छा मन में नहीं बसानी चाहिए। अल्लाह जिसे चाहता है अथाह दौलत प्रदान करता है और जिसे चाहता है नपा तुला देता है ताकि उस की आज़माइश हो। अत: किसी का मालदार होना उस की सफ़लता की ज़मानत नहीं।

160. अर्थात् आख़िरत की सफ़लता एवं मुक्ति उन्ही लोगों के लिए ख़ास होगी जो अहं में लिप्त हो कर दुनिया में बड़े बन कर रहना नहीं चाहते और न मानव समाज में बिगाड़ (फ़साद) पैदा करना चाहते हैं बल्कि तक़वा (परहेज़गारी) का रवैया अपनाते हैं।

स्पष्ट हुआ कि घमण्ड और उपद्रवी गतिविधियाँ तक़वा

(ईश-भय और परहेज़गारी) के ठीक विपरीत हैं। अगर आदमी आख़िरत की सफ़लता चाहता है तो उसे चाहिए कि अपने को अल्लाह की बन्दगी के मक़ाम ही पर रखे। उस से ऊँचा उठने का विचार तक अपने दिल में न लाए । ख़ुदा के बन्दों के साथ न्याय का रवैया अपनाए और उन की वास्तविक सफलता एवं कल्याण के काम करे।

आज मानव समाज का हाल बड़ा ही विचित्र है। प्रत्येक व्यक्ति पर बड़ा बनने का भूत सवार है। छोटा बन कर रहने के लिए कोई भी तैयार नहीं। पूँजीपति अपने धन को बड़ा बनने के लिए निस्संकोच ख़र्च करते हैं और लीडर अपने राजनैतिक संसाधनों को इसी उद्देश्य के लिए प्रयोग करते हैं। यही कारण है कि आज मानव समाज में बिगाड़ ही बिगाड़ है और बनाव एवं सुधार का कोई काम भी नहीं हो पाता।

और ये लोग तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोकने न पाऐं बाद इस के कि वे तुम पर अवतरित की जा चुकी हैं।तुम अपने रब की तरफ़ दअवत दो और हरगिज़ बहुदेववादियों में शामिल न हो। और अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को न पुकारो। उस के सिवा कोई पुज्य नहीं है। हर चीज़ विनष्ट हो जाने वाली है सिवाय उस के स्वरूप के। फैसले का इख़्तियार उसी को है। और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे । *(अल-क़ुर्आन)*

84. जो व्यक्ति भलाई ले कर आएगा उस के लिए उस से बेहतर भलाई है और जो बुराई ले कर आएगा तो बुराइयाँ करने वालों को बदले में वही कुछ मिलेगा जो वे करते रहे हैं।[161]

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا
يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾

85. निस्संदेह जिस ने तुम पर क़ुर्आन फ़र्ज़ किया है वह तुम्हें एक बेहतरीन अन्जाम को पहुँचाएगा।[162] कहो मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन हिदायत ले कर आया है और कौन खुली गुमराही में पड़ा है।[163]

اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ۭ
قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ
هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۸۵﴾

86. तुम इस बात की आशा न रखते थे कि किताब तुम पर नाज़िल की जाएगी। मगर यह तुम्हारे रब की रहमत है [164] अतः तुम काफ़िरों के हामी (समर्थक) न बनो।[165]

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً
مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۶﴾

87. और ये लोग तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोकने न पाऐं बाद इस के कि वे तुम पर अवतरित की जा चुकी हैं।[166] तुम अपने रब की तरफ़ दअवत दो और हरगिज़ बहुदेववादियों में शामिल न हो।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ
وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۸۷﴾

88. और अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को न पुकारो । उस के सिवा कोई पुज्य नहीं है । हर चीज़ विनष्ट हो जाने वाली है सिवाय उस के स्वरूप के।[167] फैसले का इख़्तियार उसी को है।[168] और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।[169]

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۣ كُلُّ شَيْءٍ
هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۭ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۸﴾

161. दुनिया में मनुष्य ने नेकी की हो या बदी वह उस को अपने साथ ले कर जाने वाला है और क़ियामत के दिन उस के साथ उपस्थित होगा ।

भलाई का इनाम अल्लाह तआला अपनी कृपा एवं अनुग्रह से कहीं बेहतर देगा । लेकिन बुराई की सज़ा उतनी ही दी जाएगी जितनी कि बुराई होगी ।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट २९७ और सूरह नम्ल नोट १३४

162. संबोधन पैग़म्बर से है । आप को इत्मीनान दिलाया गया है कि जिस हस्ती ने तुम पर क़ुर्आन का अनुपालन करने और उस को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का दायित्व डाला है वह तुम्हारे विरोधियों की इच्छाओं के विपरीत तुम्हें दुनिया में भी अच्छे अन्जाम को पहुँचाएगा और आख़िरत में भी । अत: दुनिया में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस सुन्दर अन्जाम से दो चार हुए वह एक खुली वास्तविकता है और क़ुर्आन की सच्चाई का सबूत भी।

163. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो नुबुव्वत के उम्मीदवार थे और न आप को इस बात का कोई अन्दाज़ा था कि क़ुर्आन जैसा ग्रंथ आप पर अवतारित किया जाएगा। बल्कि यकायक आप पर वह्य का अवतरण शुरू हुआ और आप पर नुबुव्वत का दायित्व डाला गया । और यह आप के सच्चे नबी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

164. अर्थात् यह किताब अल्लाह ने तुम्हारे तलब करने पर नहीं भेजी है बल्कि इस लिए भेजी है कि उस की दयालुता ही इस का तक़ाज़ा कर रही थी।

165. अर्थात् तुम काफ़िरों की बातों में न आओ। यह बात कही गई है पैग़म्बर से लेकिन इस से अभिप्रेत काफ़िरों पर यह स्पष्ट करना है कि तुम पैग़म्बर से यह हरगिज़ आशा न रखो कि वे तुम्हारी बातों में आऐंगे।

166. अर्थात् विरोध की परवाह न करते हुए तुम अल्लाह की आयतें लोगों को सुनाओ और उन की ठीक ठीक पैरवी करो । काफ़िरों के साथ ऐसी उदारता न बरतो कि अल्लाह के आदेशों को ठीक ठीक पहुँचाने या उन पर अमल करने में नरमी और आसानी और आराम का पहलू ढूँढने लगो।

167. अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो अपने अस्तित्व को बरक़रार रखने वाली हो। बल्कि अल्लाह जिस चीज़ को जब तक बरक़रार रखना चाहता है वह बाक़ी रहती है वरना समाप्त हो जाती है।

दूसरे शब्दों में सृष्टि की विशेषता ही यह है कि वह विनष्ट और समाप्त हो जाएगी जब कि सृष्टा की विशेषता हमेशा बाक़ी रहना है। अत: अल्लाह ही अनिवार्य अस्तित्व रखने वाला है और जब उसी का स्वरूप सदैव बाक़ी रहने वाला है तो वही अकेला ख़ुदा है और वही अकेला पूज्य। दूसरी कोई चीज़ भी जब अनिवार्य अस्तित्व रखने वाली नहीं है तो ख़ुदा कैसे हुई और पूज्य कैसे क़रार पाई?

168. यहाँ विशेष रूप से इनाम और सज़ा के फैसले की ओर संकेत किया गया है कि क़ियामत के दिन अल्लाह ही अपने बन्दों के बीच फैसला कर देगा ।

169. अर्थात् तुम सब अल्लाह ही के समक्ष उपस्थित किए जाओगे।

सूरह
अल-अन्कबूत

२९.सूरह अल-अन्कबूत

नाम : आयत ४१ में ग़ैरुल्लाह को काम बनाने वाला तथा सहायक बनाने वालों को अनकबूत अर्थात् मकड़ी की व्यंजना दी गई है, जिस का घर सर्वाधिक कमज़ोर होता है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-अन्कबूत है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और मज़मून पर ग़ौर करने से अन्दाज़ा होता है कि यह हब्शा की हिजरत के कुछ समय बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय : जो लोग ईमान ला कर दीन इस्लाम में दाख़िल हो जाते हैं उन को जिन कठिन हालात से गुज़रना पड़ता है उस को देखते हुए उन को प्रोत्साहित करने तथा साहस बढ़ाने का सामान और धैर्य एवं दृढ़ता की तल्क़ीन ।

कलाम की तरतीब : आयत १ से १३ में उन लोगों की रहनुमाई की गई है जो ईमान लाने के कारण सताए और परेशान किये जाते हैं और जिन्हें तरह तरह की आज़माइशों से गुज़रना पड़ता है।

आयत १४ से ४० में कई नबियों की जीवनी का यह पक्ष उभारा गया है कि वे किस प्रकार उन सख़्तियों एवं कठिनाइयों का सामान करते रहे जो उन की जाति के लोगों ने उन के साथ की, और आज़माइश में किस प्रकार हक़ पर जमे रहे।

आयत ४१ से ४४ में बहुदेववादियों के लिए सोचने और विचार करने की दअवत है ।

आयत ४५ से ६० में इन्कार करने वालों के संदेहों को दूर भी किया गया है और ईमान वालों को हालात के अनुसार हिदायतें भी दी गई हैं।

आयत ६१ से ६८ में उन सच्चाइयों को जो स्वीकृत एवं सर्वमान्य हैं, प्रस्तुत कर के तौहीद की ओर मस्तिष्क को मोड़ दिया गया है ।

आयत ६९ अन्तिम आयत है जिस में अल्लाह की राह में संघर्ष करने वालों को इत्मीनान दिलाया गया है कि उन को अल्लाह की तरफ़ से तौफ़ीक़ और उस का सान्निध्य प्राप्त होगा।

२९.सूरह अल-अनकबूत

سُورَةُ الْعَنكَبُوتِ

आयतें : 69

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ , लाम , मीम [1]

الٓمٓ ۚ ﴿١﴾

2. क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे यह कह देने पर छोड़ दिए जाऐंगे, कि हम ईमान लाए, और उन को आज़माया न जाएगा?[2]

أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا
آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾

3. हालाँकि जो लोग इन से पहले गुज़रे हैं उन की हम आज़माइश कर चुके हैं [3] तो अल्लाह उन लोगों को ज़रूर जान कर रहेगा, जो सच्चे हैं और उन लोगों को भी जो झूठे हैं।[4]

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿٣﴾

4. क्या इन लोगों ने जो कि बुराइयाँ कर रहे हैं, यह समझ रखा है कि वे हमारे क़ाबू से निकल जाऐंगे? बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं।[5]

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَن يَسْبِقُونَا ۚ
سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾

5. जो कोई अल्लाह से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो तो (उसे जान लेना चाहिए कि) अल्लाह का निश्चित किया हुआ समय ज़रूर आने वाला है।[6] और वह सब कुछ सुनने और जानने वाला है।[7]

مَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ ۚ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾

6. और जो (अल्लाह की राह में) जद्दोजहद करता है वह अपने ही फ़ायदे के लिए जद्दोजहद करता है। अल्लाह दुनिया वालों से बेनियाज़ है।[8]

وَمَن جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾

7. जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन की बुराइयाँ हम उन से दूर कर देंगे और उन को उन के कर्मों का बेहतरीन फल देंगे।[9]

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧﴾

8. हम ने इन्सान को ताकीद की है कि अपने माता पिता के साथ अच्छा सुलूक करे लेकिन अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू मेरे साथ किसी को शरीक (साझीदार) ठहरा जिस के साझी होने का तुझे कोई ज्ञान नहीं है [10] तो उन का आज्ञापालन न करो [11] मेरी ही तरफ़ तुम सब को पलटना है फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम क्या करते रहे हो। पारा २०

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِن جَاهَدَاكَ
لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ
مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

1. हुरूफ़े-मुक़त्तआत (विभक्त अक्षरों) की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट १ और सूरह युसूफ़ नोट१

इमाम राज़ी ने इस मौक़े पर हुरूफ़े-मुक़त्तआत के बारे में एक महत्वपूर्ण बात कही हैं और वह यह कि वे अक्षर अपने संबोधी को सचेत करते हैं ताकि वह अचेतावस्था से जाग जाऐं। एक वैद्य अपनी बात रखने से पहले संबोधी का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है । ये अक्षर भी अर्थपूर्ण रचना से पहले आए हैं ताकि इन के माध्यम से संबोधी को पहले सावधान किया जाए। अत: इन अक्षरों को जब अलग अलग पढ़ा जाता है तो उनकी आवाज़ चौंका देने वाली होती है और इस से कलाम में तासीर पैदा हो जाती है।

(देखिए तफ़्सीर कबीर जिल्द २५ पृष्ट २६)

इस सूरह में ''अलिफ़'' का इशारा ईमान की तरफ़ है जिस का वर्णन इस सूरह में बार बार हुआ है जैसे आयत २, ७, ९, ११, १२, २४, ४४, ४६ आदि में ''लाम'' का इशारा लिक़ा अल्लाह (अर्थात अल्लाह की मुलाक़ात) की तरफ़ है जिस का वर्णन आयत ५ और २३ में हुआ है।

और ''मीम'' का इशारा मुनाफ़िक़ीन (पाखण्डियों) की तरफ़ है जिन का वर्णन आयत ११ में हुआ है। इस के अलावा इस सूरह में जगह जगह पाखण्ड की मानसिकता (मुनाफ़िक़त) पर उंगली रखते हुए सच्चे ईमान वालों की विशेषताऐं प्रस्तुत की गई हैं।

2. इशारा है उन कठिन एवं परीक्षा के हालात की तरफ़ जिन से क़ुर्आन और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाने वाले दो चार थे। मक्का के काफ़िर उन को तरह तरह के कष्ट पहुँचा रहे थे यहाँ तक कि वे अपने घरबार और अपने देश को त्यागने पर विवश हो गए थे। अत: मुसलमानों का एक समूह मक्का से हिज़रत कर के हब्शा पहुँच गया था। इस परिस्थिति को देखते हुए कुछ लोगों के मन में यह सवाल पैदा हो रहा था कि ईमान लाने के बाद हालात की यह ख़राबी कैसी? इसी सवाल का जवाब इन आरम्भिक आयतों में दिया गया है।

इस आयत का मतलब यह है कि लोगों ने यह समझ रखा है कि इस्लाम स्वीकार करने के बाद ईमान के दावे को परखने के लिए उन्हें आज़माइशों से नहीं गुज़ारा जाएगा तो यह उन की बहुत बड़ी ग़लत फ़हमी है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ३१०)

3. अर्थात् अल्लाह की सुन्नत (नियम) यही रही है कि जिस ज़माने में भी लोग किसी नबी पर ईमान लाए हैं उन के ईमान को परखने के लिए वह उस को आज़माइशों से गुज़ारता रहा है। अत: अगर आज पैग़म्बर और क़ुर्आन के अनुयायियों को कठिन हालात से गुज़रना पड़ रहा है तो इस में आश्चर्य की अथवा अनहोनी बात क्या है?

4. अर्थात अल्लाह इन को आज़माइश की भट्टी में डाल कर देखेगा कि सोना खरा है या खोटा उन का ईमान मात्र दिखावा था या सच्चे दिल से उन्हों ने स्वीकार किया था।

काफ़िरों के हाथों जो कष्ट ईमान वालों को पहुँचते हैं इस पर यदि वह धैर्य एवं दृढ़ता से जमे रहते हैं तो उन का अपने ईमान में सच्चा होना साबित हो जाता है। और इस राह में जो क़ुर्बानियाँ उन्हों ने दीं उन की वजह से उन का सम्बन्ध अल्लाह से और मजबूत हो जाता है। और उन के चरित्र एवं आचरण में दृढ़ता पैदा हो जाती है। परन्तु वे लोग जो अपने पूरे विवेक और आत्मबोध के साथ ईमान नहीं ला चुके होते, जब काफ़िरों के हाथों सताए जाते हैं तो वे या तो खुल्लम खुल्ला इस्लाम से फिर जाते हैं या इस्लाम से बस नाम मात्र का सम्बन्ध बाकी रखते हैं, वे अल्लाह से बदगुमान होते हैं और उस के दीन की ख़ातिर क़ुर्बानी देने का कोई जज़्बा उन के अन्दर नहीं उभरता । वे इस्लाम के लिए कोई सरगर्मी न दिखा कर काफ़िरों से अपने हितों एवं स्वार्थों को सुरक्षित करा लेते हैं। ऐसे लोग वास्तव में निफ़ाक़ (पाखण्डी मनोवृत्ति) में लिप्त होते हैं और अल्लाह के नज़दीक वे अपने ईमान के दावे में झूठे होते हैं।

आज भी जो लोग अपने पैतृक धर्म का त्याग कर इस्लाम में दाख़िल हो जाते हैं। उन को उन ही के माता पिता या परिवार वालों या उन की जाति अथवा सम्प्रदाय के लोगों के ज़ुल्म और सितम का निशाना बनना पड़ता है। और अगर कोई लड़की इस्लाम क़ुबूल कर लेती है तो फिर उस की ख़ैर नहीं है। मगर इन हालात का मुक़ाबला करने के लिए वे लोग तैयार हो जाते हैं जो सोच समझकर इस्लाम क़ुबूल कर लेते हैं और जिन के दिलों में ईमान उतर चुका होता है।

5. यह उन लोगों को चेतावनी है जो इस्लाम स्वीकार करने वालों पर ज़ुल्म करते हैं। वे इस ख़ाम ख़्याली में न रहें कि ऐसी हरकतें कर के वे ईमान वालों की राह रोक सकेंगे जब कि अल्लाह ने उन को विजयी करने का फैसला कर लिया हो। उन्हें समझ लेना चाहिए कि वे अल्लाह के फैसले को लागू होने से रोक नहीं सकते। न उस की पकड़ से वे खुद बच सकते हैं।

6. ईमान वालों को जो अल्लाह से मुलाकात के उम्मीदवार हैं यह इत्मीनान दिलाया जा रहा है कि उस का सुनिश्चित किया हुआ मुलाकात का समय जरूर आएगा अर्थात् क़ियामत के दिन जब सब की पेशी अल्लाह के दरबार में होगी और ईमान वाले अल्लाह से मिल कर ख़ुश होंगे कि वे अपनी मुराद को पहुँच गए।

अल्लाह से मुलाक़ात की यह मनोकामना जब दिल में करवटें लेने लगती हैं तो वह काफ़िरों के ज़ुल्म और सितम के मुक़ाबले में बचाव की ज़बरदस्त अन्त: शक्ति पैदा करती है और ऐसा व्यक्ति पहाड़ की तरह अपनी जगह जमा रहता है।

7. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह मज़लूम ईमान वालों की फ़रियाद सुनता है और जानता है कि कौन ज़ालिम है और कौन मज़लूम और जब वह यह सब कुछ सुनता और जानता है तो वह दिन कैसे नहीं आएगा जिस में मज़लूम ईमान वालों की फ़रियादें सुनी जाऐं और ज़ालिम काफ़िरों को उन के बुरे अन्जाम को पहुँचाया जाए।

8. मूल अरबी में शब्द ''युजाहिदु'' इस्तेमाल हुआ है जो मुजाहिदे से है और जिस का मतलब ऐसी जद्दोजहद और ऐसे संघर्ष के हैं जिस में आदमी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरी शक्ति लगाए और कशमकश में पड़ कर कठिनाइयों को सहन करे। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिन में इस्लाम पर क़ायम रहने, उस के सत्यधर्म होने की गवाही देने और उस के अमली तक़ाज़ों को पूरा करने में माहौल के साथ बड़ी कशमकश करना पड़ती हैं। खास तौर से उन लोगों को जो नए नए इस्लाम में दाखिल हुए हैं। यहाँ इसी जान तोड़ मेहनत को जो अल्लाह की राह में की जाए मुजाहिदा (जिहाद) कहा गया है और स्पष्ट किया गया है कि इस संघर्ष और इन बलिदानों का लाभ उसी व्यक्ति को मिलेगा जो दीन के लिए संघर्ष करता और क़ुर्बानियाँ देता है कि इस प्रकार वह अपने को अल्लाह की रहमत और इनाम का हक़दार बनाता है। अल्लाह को इस से कोई फ़ायदा पहुँचने वाला नहीं है। वह बेनियाज़ है उस को किसी की हाजत नहीं ।

9. अर्थात् ईमान ला कर सदाचार एवं शिष्टाचार का जीवन व्यतित करने वालों के दामन पर बुराइयों के जो दाग़ धब्बे पड़े होंगे उन को अल्लाह तआला मिटा देगा और उन के अच्छे कर्मों का आदर करते हुए उन्हें बेहतरीन बदला देगा।

10. अर्थात् किसी को अल्लाह का साझीदार ठहराना एक ग़लत और मनगढ़ंत बात है और जो बात ग़लत और मनगढ़ंत हो उस में आस्था व्यक्त करने का क्या अर्थ?

''जिस का तुझे ज्ञान नहीं'' का मतलब यह है कि जिस के बारे में (ऐ इन्सान !) तू नहीं जानता कि सचमुच ये चीज़ें खुदा हैं बल्कि लोगों ने मात्र अटकलों से इन को ख़ुदा बना लिया है।

11. माता पिता के साथ अच्छे बर्ताव की हिदायत, इश्वरीय शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है मगर इस का यह मतलब नहीं कि माता पिता का अनुपालन अल्लाह के अनुपालन पर हावी है। तमाम तरह की आज्ञा पालन अल्लाह के अनुपालन के अधीन हैं। और सृष्टा की अवज्ञा में सृष्टि की आज्ञा का पालन कदापि जायज़ नहीं। यदि माता पिता अल्लाह के साथ शिर्क या कुफ्र करने या उस के दीन को स्वीकार न करने का आदेश देते हैं तो यह खुली गुमराही और स्पष्ट पाप है। और ऐसे कामों में माता पिता के अनुपालन का सवाल ही पैदा नहीं होता । अत: इस मामले में उन का कोई दबाव नहीं स्वीकार करना चाहिए ।

हज़रत सअद बिन अबी विक़्क़ास का क़िस्सा है कि उन के ईमान लाने के बाद उन की माँ ने उन पर बहुत दबाव डाला कि वे इस्लाम को त्याग दें यहाँ तक कि उस ने क़सम खा ली कि वह न उन से बात करेगी और न खाएगी और न पियेगी जब तक कि वे इस दीन को छोड़ न दें। इसी सिलसिले में यह आयत नाज़िल हुई । हज़रत सअद इस्लाम पर जमे रहे और उन की माँ को अन्तत: अपनी क़सम तोड़ना पड़ी ।

(देखिए सही मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल)

हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा और वह उन के बीच पचास साल कम एक हज़ार साल रहा। फिर उन को तूफ़ान ने ज़द में ले लिया इस हाल में कि वे ज़ालिम थे। मगर हम ने उस को और नाव वालों को निजात दी और उसे दुनिया वालों के लिए एक बड़ी निशानी बनाया। और इब्राहीम को भेजा जब कि उस ने अपनी क़ौम से कहा अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। *(अल-क़ुर्आन)*

9. और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किये उन को हम ज़रूर स्वालिहीन में दाख़िल करेंगे।[12]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾

10. लोगों में ऐसे भी हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए लेकिन जब अल्लाह की राह में सताए जाते हैं तो लोगों की तरफ़ से पहुँचने वाली तकलीफ़ को अल्लाह के अज़ाब की तरह समझने लगते हैं।[13] और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से मदद आ गई तो यही लोग कहेंगे कि हम तो आप लोगों के साथ थे।[14] क्या अल्लाह लोगों के दिलों के हाल से अच्छी तरह परिचित नहीं है?[15]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ
فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ
جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ
اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾

11. और अल्लाह ज़रूर जान कर रहेगा कि कौन लोग ईमान वाले हैं और कौन मुनाफ़िक़ हैं।[16]

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿١١﴾

12. और काफ़िर ईमान लाने वालों से कहते हैं कि तुम हमारे तरीक़े पर चलो हम तुम्हारे गुनाह अपने ऊपर ले लेंगे [17] हालाँकि वे उन के गुनाहों में से कुछ भी अपने ऊपर लेने वाले नहीं हैं। वे बिलकुल झूठे हैं।[18]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا
وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ
مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾

13. और (ऐसा ज़रूर होगा कि) वे अपने बोझ भी उठाऐंगे और अपने बोझ के साथ कुछ दूसरे बोझ भी।[19] और जो झूठ वे गढ़ते रहे उस के बारे में क़ियामत के दिन उन से ज़रूर पूछ ताछ होगी।[20]

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ؗ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾ ع

14. हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा [21] और वह उन के बीच पचास साल कम एक हज़ार साल रहा।[22] फिर उन को तूफ़ान [23] ने ज़द में ले लिया इस हाल में कि वे ज़ालिम थे।[24]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ
اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

15. मगर हम ने उस को और नाव वालों को निजात दी [25] और उसे दुनिया वालों के लिए एक बड़ी निशानी बनाया।[26]

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

16. और इब्राहीम को भेजा [27] जब कि उस ने अपनी क़ौम से कहा अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो [28] यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।[29]

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾

12. अर्थात् स्वालिहीन (सुलझे और सुधरे हुए लोगों) के समूह में रखेगा जो आख़िरत में कामयाब होने वाला समूह है।

13. अर्थात् ईमान के वे दावेदार उस तकलीफ़ से घबरा उठते हैं जो दीन स्वीकारने के बदले में काफ़िरों की तरफ़ से उन को पहुँचती है। ऐसी परिस्थिति में वे ईमान के तक़ाज़ों को नज़रंदाज़ कर देते हैं और रसूल और ईमान वालों का साथ भी छोड़ देते हैं। इस प्रकार वे दीन की राह में सांसारिक खतरों को मोल न ले कर अल्लाह की तरफ़ से दी जाने वाली सज़ा को गवारा करने के लिए तैयार हो जाते हैं हालांकि लोगों की तरफ़ से पहुँचने वाली तकलीफ़ें उस अज़ाब के मुक़ाबले में कोई हक़ीक़त नहीं रख़तीं जो आख़िरत में भुगतना होगा।

आज कितने ही लोग इस्लाम को सही समझने के बावजूद केवल इस लिए इस को स्वीकार करने से दामन बचाते हैं कि इस सूरत में उन्हें अपने घर वालों या अपनी जाति के लोगों की तरफ़ से तकलीफ़ों का सामना करना पड़ेगा। रहा इस्लाम स्वीकार न करने की सूरत में आख़िरत का अज़ाब, तो यह मरहला जब पेश आएगा तब देखा जाएगा। इस प्रकार वे अल्लाह के अज़ाब को मनुष्यों द्वारा पहुँचने वाले कष्टों के समान समझने लगते हैं और इसी के चलते अल्लाह के अज़ाब को गवारा करने के लिए तैयार हो जाते हैं। लेकिन दुनिया वालों के हाथों पहुँचने वाली तकलीफ़ को गवारा करने के लिए तैयार नहीं होते।

14. इशारा है इस बात की तरफ़ कि जब इस्लाम अल्लाह की सहायता से एक शक्तिशाली दीन बन जाएगा तो यही लोग जो अभी ईमान वालों से मात्र दिखावटी सम्बन्ध पर अटके हुए हैं उस से आगे नहीं बढ़ रहे हैं, पूरे गर्व के साथ यह कहने लगेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ रहे हैं अर्थात् मुसलमानों में शामिल रहे हैं। इस तरह वे मुफ़्त का क्रेडिट हासिल करने की कोशिश करेंगे और इस बात को भूल जाऐं कि आड़े समय में उन्हों ने इस्लाम का साथ बिलकुल नहीं दिया था।

15. यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि ये लोग सच्चे दिल से ईमान नहीं लाए थे। अगर वे सच्चे दिल से ईमान लाए होते तो इस्लाम का आगे बढ़कर समर्थन करते । आज़माइशों में अपना रवैया दुरुस्त रखते और अल्लाह की ख़ातिर क़ुर्बानियाँ देते ।

16. ''अल्लाह जानकर रहेगा'' अर्थात् अल्लाह ज़रूर देखेगा कि कौन अपने को सच्चा मोमिन सिद्ध कर दिखाता है और कौन अपने मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) होने का सबूत देता है। आज़माइशी हालात मोमिन और मुनाफ़िक़ के अन्तर को उजागर कर देते हैं ।

स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआला के यहाँ वही ईमान विश्वस्नीय एवं मान्य है जो सही धारणा और दिल की स्वीकृति के साथ हो। यह ईमान दिल में एक विशेष भाव और विशेष प्रकार की ज्योति पैदा कर देता है जिस से मोमिन की पूरी ज़िन्दगी जगमगा उठती है। इस के विपरीत मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) ईमान की अभिव्यक्ति तो करता है परन्तु उस का दिल उस को स्वीकार नहीं करता इस लिए उस के दिल में ईमान सिरे से मौजूद ही नहीं रहता। यही कारण है कि वह ईमान के तकाज़ो को पूरा करने के लिए आमादा नहीं होता और न उस की ज़िन्दगी में ईमान के प्रभाव ही झलकते महसूस होते है।

17. यह बड़े लोगों की बातें हैं जो वे जन साधारण से और विशेष रूप से अपने मातहत लोगों से कहते हैं कि तुम हमारे बताए हुए रास्ते (मज़हब) पर चलते रहो और इस को छोड़ कर इस्लाम स्वीकार न करो । वे कहते हैं पहली बात तो यही है कि क़ियामत आने वाली नहीं है और अगर आ ही गई और उस दिन मालूम हो गया कि इस्लाम ही सत्यधर्म था, तो तुम हमारे मज़हब को अपना कर जिन गुनाहों में लिप्त हुए होंगे उन की ज़िम्मेदारी हम क़ुबूल कर लेंगे और तुम्हारे गुनाह अपने सर ले लेंगे ।

18. अर्थात् क़ियामत के दिन वे उन लोगों का गुनाह जिन को वे आज अपने मज़हब पर चलने का सुझाव दे रहे हैं, अपने सर लेने के लिए कदापि तैयार न होंगे वे झूठ बोल कर अवाम को बेवकूफ़ बना रहे हैं।

19. अर्थात् वे अपने गुनाहों का बोझ तो उठाऐंगे ही साथ ही दूसरों को गुमराह करने का बोझ भी उन्हें उठाना होगा। हदीस में आता है :-

مَـنْ دَعَااِلَى الضَّلَالَة كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْاِثْمِ مِثلَ اٰثَامٍ مَنْ
تَبِعَهٗ لَا يَنْقُصُ ذٰلِکَ مِنْ اٰثَامِهِمْ شَيْئًا۔ (مسلم کتاب العلم)

अर्थ:-''जो व्यक्ति गुमराही की तरफ़ बुलाएगा तो उस पर भी गुनाह का बोझ होगा जिस तरह उस पर चलने वाले गुनहगार हुए हैं और इस से उन के गुनाहों में कोई कमी न होगी ।'' (मुस्लिम किताबुलइल्म)

20. अर्थात् धर्म के नाम से जो झूठ वे गढ़ते रहे और खुदा से जो ग़लत बातें वे जोड़ते रहे उन के बारे में क़ियामत के दिन उन्हें ख़ुदा के समक्ष जवाबदेही करना होगी ।

21. यहाँ हज़रत नूह और अन्य रसूलों के वृत्तांत संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किये गए हैं जिस से अन्दाज़ा होता है कि नबियों को कैसे कठिन हालात और कैसी सख़्त आज़माइशों से गुज़रना पड़ा है।

हज़रत नूह के बारे में सविस्तार जानने के लिए देखिए सूरह

आराफ़ नोट ९५.

22. क़ुर्आन घटनाओं की लम्बी तफ़सील में नहीं जाता इस लिए उस ने किसी पैग़म्बर की भी आयु बयान नहीं की परन्तु चूँकि यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि नूह अलैहिस्सलाम ने एक असाधारण अवधि लोगों को निमंत्रणा देने के संघर्ष में व्यतीत की जो आज़माइशी हालात में सब्र का उच्च उदाहरण है। इस लिए इस बात की पुष्टि कर दी कि वे अपनी जाति वालों के बीच नौ सौ पचास वर्ष तक रहे और इस अवधि को पचास कम एक हज़ार वर्ष की शैली में बयान करने का कारण भी यही है कि हज़ार की संख्या अवधि की लम्बाई को बयान करने के लिए अधिक प्रभावी है।

हज़रत नूह ने नौ सो पचास वर्ष तो अपनी जाति के मध्य गुज़ारे और जाति के सर्वनाश के बाद वे कितनी अवधि तक जीवित रहे इस की पुष्टि क़ुर्आन ने नहीं की। इस लिए हम नहीं कह सकते कि हज़रत नूह की कुल आयु कितनी थी लेकिन यह बात ज़ाहिर है कि उन की आयु नौ सो पचास वर्ष से अधिक ही थी अलबत्ता बाइबिल में उन की कुल आयु नौ सौ पचास वर्ष बयान हुई है। प्राचीन काल में लोगों की आयु आजकल की औसत आयु से कहीं अधिक हुआ करती थी। अत: बाइबिल में हज़रत नूह के पिता की आयु सात सो सत्हत्तर वर्ष और दादा की आयु नौ सौ उन्हत्तर वर्ष बयान हुई है। (देखिए किताब उत्पत्ति अध्याय ५) उस समय का भौतिक वातावरण आजकल के माहौल से बहुत भिन्न था और लगावट दिखावट से बिलकुल विरक्त। तथा उस समय इन्सानी आबादी बहुत ही कम थी इस लिए लम्बी आयु के लिए अनुकूल प्राकृतिक कारण थे।

23. तूफ़ान से मुराद पानी का तूफ़ान अर्थात् सैलाब है जिस में नूह की क़ौम डुबो दी गई।

24. अर्थात् उन्हों ने शिर्क और कुफ्र कर के अपने ऊपर ज़ुल्म किया था और इस ज़ुल्म पर वे अंत तक डटे रहे ।

व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १०३

26. अर्थात् नूह की नाव को दुनिया वालों के लिए इस घटना की यादगार बनाया । जब तक यह नाव लोगों के देखने में आती रही इस घटना की याद दिलाती रही और लोगों के लिए इबरत का निशान बनी रही। इस के बाद नाव की घटना को इतिहास के पन्नों ने तथा क़ुर्आन ने इस तरह सुरक्षित कर लिया कि रहती दुनिया तक लोगों को यह सबक़ मिलता रहेगा कि अल्लाह के अज़ाब से मुक्ति पाने वाले वही लोग हैं जो उस पर ईमान ला कर उस के रसूल का अनुपालन करते हैं।

27. अर्थात् इब्राहीम को रसूल बना कर भेजा । (व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट १२७)

28. अल्लाह से डरो अर्थात् उस की अवज्ञा से डरो । और अल्लाह की सब से बड़ी अवज्ञा शिर्क और बुतपरस्ती है।

29. अर्थात् अगर तुम जिहालत को छोड़ दो और यह जानने की कोशिश करो कि तुम्हारी अपनी भलाई किस चीज़ में है तो यह बात सरलता पूर्वक तुम्हारी समझ में आ सकती है कि एक ख़ुदा की इबादत करना और उस से डरते हुए जीवन बिताना ही सही, परिणामदायक और सफ़लता का कारण है।

जिस को चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे रहम फ़रमाए और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। तुम न ज़मीन में उस के क़ाबू से बाहर निकल सकते हो और न आसमान में। और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला है और न सहायक। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और उस की मुलाक़ात का इन्कार किया वही हैं जो मेरी रहमत से निराश हो गए। और वही हैं जिन के लिए दुखदायिनी यातना है। *(अल-क़ुर्आन)*

17. तुम अल्लाह को छोड़ कर बुतों की पूजा करते हो [30] और तुम झूठ गढ़ते हो।[31] तुम अल्लाह के सिवा जिन की परस्तिश करते हो वे तुम्हें रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते। बस अल्लाह ही से रोज़ी माँगो [32] और उसी की इबादत करो और उस के कृतज्ञ बनो। तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।[33]

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ
إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ
وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾

18. और यदि तुम झुठलाते हो तो तुम से पहले कितनी ही क़ौमें झुठला चुकी हैं। और रसूल पर स्पष्ट रूप से पहुँचा देने के सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं है।[34]

وَإِن تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا
عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

19. क्या [35]इन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह किस तरह पैदाइश की शुरूआत करता है, फिर उस की पुनरावृत्ति करेगा। निस्संदेह यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।[36]

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

20. इन से कहो ज़मीन में चल फिर कर देख लो कि अल्लाह ने किस प्रकार पैदाइश की शुरुआत की, फिर अल्लाह दोबारा उठा खड़ा करेगा। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।[37]

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ
الْخَلْقَ ۚ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

21. जिस को चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे रहम फ़रमाए [38] और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।[39]

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

22. तुम न ज़मीन में उस के क़ाबू से बाहर निकल सकते हो और न आसमान में।[40] और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला है और न सहायक।[41]

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا
لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

23. और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और उस की मुलाक़ात का इन्कार किया वही हैं जो मेरी रहमत से निराश हो गए [42]। और वही हैं जिन के लिए दुखदायिनी यातना है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا
مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

30. अर्थात् जिन को तुम पूज रहे हो वे ख़ुदा नहीं बल्कि मात्र बुत हैं। पत्थर की ये मुर्तियाँ कोई भी ईश्वरीय गुण अपने अन्दर नहीं रखतीं । इन की हक़ीक़त मिट्टी पत्थर से अधिक कुछ नहीं । फिर इन को ईश्वर समझ कर पूजने का क्या मतलब?

बुत परस्ती का बुद्धि संगत न होना बल्कि नामाक़ूल होना बिलकुल स्पष्ट है और इस के वैध होने का सिरे से कोई प्रमाण ही नहीं है । किन्तु आश्चर्य है कि अतीत ही में नहीं वर्तमान में भी जो ज्ञान और बुद्धि का युग कहलाता है बहुत से लोग बुत परस्ती में लिप्त हैं और जब बुत परस्ती के पक्ष में कोई तर्क नहीं मिलता तो बड़ी विचित्र बातें कहने लगते हैं। आउट लाइन्ज़ आफ़ हिन्दू इज़्म की कुछ पंक्तियाँ देखे:-

"The Idol is the most concrete of God's form."

''बुत ईश्वर का सर्वाधिक ठोस रूप है।''

"and the belief is that God descends into the idol and makes it divinely alive so that he may be easily accessible to his devotees." -(Outlines of Hinduism by T.M.P. Mahadevan p.193-194).

और (इस के पीछे) धारणा यह है कि ईश्वर उतर कर बुत के अन्दर प्रविष्ट होता है और उसे ईश्वरीय जीवन प्रदान करता है ताकि उस के भक्त सरलता पूर्वक उस तक पहुँच सकें।''

जब बुत परस्ती के पक्ष में कोई तर्क नहीं मिलता तो उस के पक्षधर ऐसी ही बेहूदा और बेसिर पैर की बातें करने लगते हैं। काश ये लोग बुद्धि का प्रयोग करते।

31. अर्थात् तुम्हारे इष्ट पूज्य भी मनगढ़ंत हैं और तुम्हारा धर्म भी मनगढ़ंत है। इस प्रकार झूठ ही झूठ है जिस को तुम ने ईश्वर और धर्म का नाम दे रखा है।

32. अर्थात् रोज़ी देना न इन बुतों के बस में है जिन को तुम अन्नदाता समझ कर पूजते हो और न किसी अन्य के बस में, बल्कि केवल अल्लाह के बस में है अत: उसी से रोज़ी माँगो । فَابۡتَغُوۡا عِنۡدَاللّٰهِ الرِّزۡقَ

अर्थ:- ''रोज़ी अल्लाह से ही माँगो''

की स्पष्ट हिदायत के बावजूद मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग ''औलिया'' से रोज़ी माँगता है जो खुला शिर्क है। वह जब ख़्वाजा को पुकार कर झोली भरने के लिए कहते हैं तो उन्हें शिर्क में लिप्त हो जाने का कोई एहसास नहीं होता। यह इस लिए कि जाहिल उलमा ने उन को यही पट्टी पढ़ा दी है।

यदि वे क़ुर्आन का खुले मन से अध्ययन करते तो उन पर सत्य खुल जाता और वे गुमराही से बच जाते।

33. अर्थात् मरने के बाद न तुम बुतों की तरफ़ लौटाए जाओगे और न देवी देवताओं की तरफ़ और न किसी और की तरफ़ बल्कि अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाओगे और वही तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देगा अत: तुम्हारा वास्तविक पूज्य वही है जिस की ओर तुम्हें पलटना है।

34. अर्थात् रसूल का काम अल्लाह का संदेश साफ़ साफ़ पहुँचा देना है, मानना न मानना तुम्हारा काम।

35. हज़रत इब्राहीम का बयान ऊपर की आयत पर समाप्त हुआ। यहाँ से आयत २३ तक का मज़मून अल्लाह तआला की ओर से वृद्धि है जैसा कि शैली से स्पष्ट है, ताकि मौक़े की मुनासिबत से क़ुर्आन के संबोधियों को सोचने और विचार करने की दअवत दी जाए ।

36. आख़िरत का इन्कार करने वाले दोबारा जीवन प्रदान किये जाने को असंभव समझते थे उन की इस शंका को दूर करने के लिए उन्हें पैदाइश के आरंभ पर सोचने और विचार करने का न्योता दिया गया है कि जिस हस्ती के लिए मनुष्य जैसी सृष्टि को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाना संभव हुआ उस के लिए अपनी ही पैदा की हुई चीज़ को पुन: पैदा करना क्या मुश्किल है?

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हज्ज नोट ७ और सूरह मोमिन नोट १८)

37. मनुष्य जब अपने माहौल से बाहर निकलता है तो सृजन के अजीब अजीब नमूने उस को देखने में आते हैं और उसे सोच विचार का निमंत्रण देते हैं। उदाहरण स्वरूप समुद्री सफ़र में नित नई मछलियाँ नज़र आएंगी। मैदानी सफ़र में रंग बिरंग परिन्दे, जंगल में भाँत भाँत के विचित्र जानवर मतलब यह कि बाह्य जगत एक चिड़िया घर लगेगा जहाँ जीवन के हज़ारों रूप दिखाई देंगे। अगर अनुभव करने वाले का ज़मीर जाग रहा हो तो वह पुकार उठेगा कि यह एक ऐसी ही हस्ती की रचना है जो बड़ी महिमावान सामर्थ्यवान, स्वामी, ज़बरदस्त कारीगर, जीवन की रचना पर पूरा समार्थ्य रखने वाला सर्वज्ञ, तत्वदर्शी, सुन्दर और अपने आप में पूर्ण है। सृष्टा की यह पहचान उस के अन्दर यह विश्वास पैदा करेगा कि वह मनुष्य को दोबारा पैदा करने पर भी पूरा सामर्थ्य रखता है और क़ुर्आन दूसरी बार उठा खड़ा करने की जो बात कहता है वह बिलकुल सत्य है। यहाँ क़ुर्आन ने इसी उच्च उद्देश्य (Noble Cause) को ध्यान में रखते हुए ज़मीन में सफ़र करने का न्योता दिया है।

मालूम हुआ कि ज्ञान और खोज के उद्देश्य से जो अल्लाह की राह में हो सफ़र करना ख़ैर और बरकत का कारण है।

38. इशारा है इस बात कि तरफ़ कि ज़मीन में सफ़र करने से जातियों के उत्थान और पतन का इतिहास भी तुम्हारे सामने आएगा और तुम्हें मालूम हो जाएगा कि कितनी क़ौमें हैं जो अल्लाह के अज़ाब का निशाना बनी और कितनी हैं जो अज़ाब से बचा ली गईं तथा अल्लाह की दयावान छत्र छाया में प्रगति की ओर बढ़ीं ।

39. अर्थात् आख़िरकार तुम्हें पहुँचना अल्लाह ही के दरबार में है ।

40. जिस प्रकार मनुष्य अल्लाह के भौतिक नियमों (Physical law) में जकड़ा हुआ है उसी प्रकार उस के इनाम और दण्ड के नियम से भी बंधा हुआ है। वह हर जगह अल्लाह की पकड़ में है चाहे ज़मीन के किसी भाग में चला जाए या कितनी ही ऊँचाई पर पहुँच जाए। आज का मानव तो हवाई जहाज़ में बैठ कर आसमान की सैर करता है किन्तु उस की बेबसी का हाल यह है कि जब अल्लाह तआला उस को किसी घटना का शिकार बनाना चाहता है तो अपने को बचाना उस के लिए संभव नहीं होता ।

41. अर्थात् तुम्हारे लिए वास्तव में काम बनाने वाला और सहयोगी अल्लाह के सिवा कोई नहीं अत: किसी और को काम बनाने वाला या सहायक समझ कर उस के साथ वह मामला न करो जो केवल अल्लाह के साथ किया जाना चाहिए याद रखो यदि अल्लाह तुम को अपने अज़ाब की चपेट में लेना चाहे तो कोई नहीं है जो तुम्हें उस से बचा सके या तुम्हारी मदद कर सके।

42. इस आयत में इन्कार करने वालों से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण वास्तविकता बयान हुई है और वह यह कि ये लोग अगर अल्लाह से इनाम और उस की दया में हिस्सा पाने की आशा रखते तो न उस की आयतों को रद्द करते और न उस की आख़िरत का इन्कार करते । मगर जब उन्होंने इन्कार किया तो यही समझ कर किया कि न आख़िरत होगी और न हमारे लिए अल्लाह की रहमत एवं उस की दया से लाभान्वित होने और उस से इनाम पाने का कोई मौक़ा होगा । ज़िन्दगी तो बस दुनिया की ज़िन्दगी है । इस के बाद मर कर मिट जाना है। अल्लाह की रहमत में हिस्सेदार बनने के लिए हम बाक़ी ही कहाँ रहेंगे । और जब उन्होंने अल्लाह की रहमत के बारे में निराशाजनक आस्था दिल में बिठा ली तो कोई कारण नहीं कि वे आख़िरत में अल्लाह की रहमत में हिस्सा पा सकें। इस लिए वे रहमत से दूर फेंक दिए जाऐंगे और उन्हें दुखदायिनी यातना भुगतनी होगी।

जो लोग काफ़िरों के बारे में अपने दिल में नर्मी रखते हैं वे जहन्नम की कभी न समाप्त होने वाली सज़ा को जो काफ़िरों को दी जाएगी अजीब अजीब व्याख्या करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह की रहमत में से वे भी हिस्सा पाऐं किन्तु वे इस वास्तविकता को नज़रंदाज़ करते हैं कि काफ़िर स्वयं अल्लाह की रहमत से निराश हैं । अगर वे उस की रहमत के उम्मीदवार होते तो आख़िरत पर ज़रूर ईमान लाते।

तो लूत ने उस की पुष्टि की और इब्राहीम ने कहा मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूँ वह ग़ालिब है, हिकमत वाला। और हम ने उस को इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किए और उस के वंश में नुबुव्वत और किताब रख दी और हम ने इस का सिला उस को दुनिया में भी दिया और आख़िरत में वह निश्चय ही स्वालिहीन (अच्छे लोगों) में से होगा। और हम ने लूत को भेजा। जब उस ने अपनी क़ौम से कहा तुम लोग बेहयाई का यह काम करते हो जो तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया। *(अल-क़ुर्आन)*

24. उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा इस को क़त्ल करो या जला डालो।[43] मगर अल्लाह ने उस को आग से बचा लिया।[44] निस्संदेह इस में निशानियाँ हैं उन लागों के लिए जो ईमान लाऐं।[45]

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ ٱقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ
فَأَنجَىٰهُ ٱللَّهُ مِنَ ٱلنَّارِ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَـٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

25. उस ने कहा तुम ने दुनिया की ज़िन्दगी में तो अल्लाह को छोड़ कर बुतों को आपस की मुहब्बत का माध्यम बना लिया है। फिर क़ियामत के दिन तुम एक दूसरे से असम्बद्धता प्रकट करोगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे। तुम्हारा ठिकाना जहन्नम की आग होगी और तुम्हारा कोई मददगार न होगा।[46]

وَقَالَ إِنَّمَا ٱتَّخَذْتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ أَوْثَـٰنًا مَّوَدَّةَ
بَيْنِكُمْ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ ثُمَّ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ
يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا
وَمَأْوَىٰكُمُ ٱلنَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّـٰصِرِينَ ﴿٢٥﴾

26. तो लूत ने उस की पुष्टि की [47] और इब्राहीम ने कहा मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूँ [48] वह ग़ालिब है, हिकमत वाला।[49]

فَـَٔامَنَ لَهُۥ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّى مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّىٓ ۖ إِنَّهُۥ
هُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾

27. और हम ने उस को इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किए [50] और उस के वंश में नुबुव्वत और किताब रख दी [51] और हम ने इस का सिला उस को दुनिया में भी दिया [52]और आख़िरत में वह निश्चय ही स्वालिहीन (अच्छे लोगों) में से होगा।[53]

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَـٰقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِى ذُرِّيَّتِهِ
ٱلنُّبُوَّةَ وَٱلْكِتَـٰبَ وَءَاتَيْنَـٰهُ أَجْرَهُۥ فِى ٱلدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُۥ
فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ لَمِنَ ٱلصَّـٰلِحِينَ ﴿٢٧﴾

28. और हम ने लूत को भेजा।[54] जब उस ने अपनी क़ौम से कहा तुम लोग बेहयाई का यह काम करते हो जो तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया।[55]

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ ٱلْفَـٰحِشَةَ
مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ ٱلْعَـٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾

29. क्या तुम पुरूषो से काम इच्छा पूरी करते हो और रहज़नी करते हो [56] और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो।[57] तो उस क़ौम के पास इस के सिवा कोई जवाब न था कि उन्होंने कहा ले आओ अल्लाह का अज़ाब अगर तुम सच्चे हो।[58]

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ ٱلرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ ٱلسَّبِيلَ وَتَأْتُونَ
فِى نَادِيكُمُ ٱلْمُنكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوا۟
ٱئْتِنَا بِعَذَابِ ٱللَّهِ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّـٰدِقِينَ ﴿٢٩﴾

30. उस ने दुआ कि, ऐ मेरे रब ! इन फ़सादी लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद कर।[59]

قَالَ رَبِّ ٱنصُرْنِى عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

43. अर्थात् इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के सामने जो बातें रखीं उन का जवाब उन्होंने दिया तो यह दिया कि इस व्यक्ति को ख़त्म कर दो ताकि ये ''अशुभ बातें'' हमें सुनना न पड़ें ।

44. आख़िरकार उन लोगों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाल दिया किन्तु अल्लाह ने उन्हें चमत्कारिक रूप से जलने से बचा लिया । जैसा कि सूरह अंबिया आयत ६९ में स्पष्ट रूप से बयान हुआ है।

45. हज़रत इब्राहीम के इस क़िस्से में तौहीद के सत्य होने, इब्राहीम अलैहिस्सलाम के रसूल होने का इन्कार करने वालों द्वारा सताये जाने और अल्लाह की सहायता चमत्कारिक रूप से ज़ाहिर होने की निशानियाँ मौजूद हैं।

46. हज़रत इब्राहीम का यह बयान जैसा कि क़ुर्आन की शैली से स्पष्ट होता है उन के आग से सही सलामत बाहर निकल आने के बाद का है और इस इरशाद का मतलब यह है कि ये बुत तुम्हारे नज़्दीक जातीय एकता (अथवा राष्ट्रीय एकता) और पारस्परिक सद्भाव का साधन हैं और तुम यह महसूस करते हो कि इन बुतों को छोड़ना राष्ट्रीय विघटन का कारण होगा। अपने इस भ्रम में तुम ने बुत परस्ती के उन परिणामों को बिलकुल नज़रंदाज़ कर दिया जो आख़िरत में पेश आने वाले हैं। क़ियामत के दिन जब शिर्क (बहुदेववाद) का ग़लत असत्य एवं संगीन जुर्म होना तुम पर खुल जाएगा तो तुम्हारी यह राष्ट्री एकता, और यह राष्ट्रीय सद्भाव कहाँ बाक़ी रहेगा । उस समय तुम गुमराही की ज़िम्मेदारी दूसरों पर डालना चाहोगे और आपस में एक दूसरे को बुरा भला कहोगे तो ऐसी राष्ट्रीय एकता और समाजी सम्बन्ध किस काम के जो तुम्हें जहन्नम की आग का मज़ा चखाऐं ।

आज भी कितने ही बुत परस्त, बुत परस्ती को अनुचित समझने के बावजूद मात्र इस लिए छोड़ने और बहुदेववादी धर्म से बाहर निकल आने के लिए आमादा नहीं होते कि इस का असर उन के समाजी सम्बन्धों पर पड़ेगा और उन का सम्बन्ध उन की अपनी जाति से कट जाएगा। कैसे बुद्धिजीवी हैं ये लोग कि इस सांसारिक खतरे को मोल लेने के लिए तैयार नहीं होते लेकिन आख़िरत की स्थायी यातना को भुगतने के लिए तैयार हो जाते हैं।

47. अर्थात् पूरी क़ौम में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की बात मानने वाला केवल एक व्यक्ति निकल आया और वे थे लूत जिन्होंने उन की बातों की पुष्टि की और उन की रिसालत पर ईमान ले आए।

हज़रत लूत बाइबिल के कथानुसार हज़रत इब्राहीम के भतीजे थे । वे हिजरत के बाद स्वयं नबी नियुक्त किये गए। जो व्यक्ति नबी होता है वह पहले ही दिन से अपने सच्चे स्वभाव पर क़ायम रहता है। इस लिए हज़रत इब्राहीम की तौहीद की दअवत उन के लिए कोई अनोखी चीज़ नहीं थी। अत: उन्होंने आगे बढ़कर हज़रत इब्राहीम की बातों की पुष्टि की और उन की रिसालत पर ईमान ले आए।

48. अर्थात् मैं अपने रब की ख़ातिर उसी के हुक्म से और उसी की रहनुमाई में हिजरत करता हूँ वह जहाँ ले जाएगा मैं जाऊँगा कि वास्तव में मेरा रब ही मेरा अभीष्ट लक्ष्य है।

क़ौम पर पूरी तरह हुज्जत क़ायम करने के बाद हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह के आदेशानुसार अपना देश छोड़ा ताकि दीन का काम एक देश में नहीं तो दूसरे देश में अन्जाम दिया जा सके वे उर (इराक़) के रहने वाले थे। फिर उन का निवास ''हिरान'' में रहा और वहाँ से सीरिया देश (कन्आन) हिजरत कर गए। इस हिजरत में उन के साथ हज़रत लूत भी थे और बाइबिल के अनुसार उन की पत्नी सारा भी थीं । तीन लोगों पर आधारित ईमान वालों का यह छोटा सा काफ़िला था मगर उस ने दुनिया का इतिहास बदल दिया ।

49. हिज़रत के मौक़े पर हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह के इन दो गुणों का वर्णन इस लिहाज़ से किया कि अल्लाह का फैसला लागू हो कर रहता है। और वह तत्वदर्शी (हकीम) है इस लिए उस की कोई योजना हिकमत (तत्वदर्शिता) से खाली नहीं हो सकती । हिज़रत के बाद हज़रत इब्राहीम के हाथों जो बड़े बड़े काम अन्जाम पाये उस से अल्लाह की तत्वपूर्ण योजना पूरी तरह ज़ाहिर हो गई।

50. इस्हाक़ इब्राहीम के बेटे और याक़ूब उन के पोते हैं। दोनों को अल्लाह तआला ने नबी नियुक्त किया ।

51. नुबुव्वत और किताब का सिलसिला हज़रत इब्राहीम ही के वंश में चला और इमामत इसी वंश में रही । इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए हज़रत इब्राहीम के बाद के दौर के किसी व्यक्तित्व के बारे में जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वंश से न हो नबी होने का गुमान नहीं किया जा सकता। मिसाल के तौर पर महात्मा बुद्ध के नबी होने का प्रश्न नहीं उठता जब कि वे इब्राहीम के वंश से नहीं थे। इसी प्रकार हज़रत इब्राहीम के दौर के बाद की कोई किताब जो किसी ऐसे धार्मिक नेता से सम्बन्ध हो जो इब्राहीम के वंश से न था आसमानी किताब नहीं हो सकती । भारत की असंख्य धार्मिक पुस्तकों का जो कि पवित्र समझी जाती हैं यही हाल है।

आयत का जो मतलब हम ने बयान किया है उस का अनुमोदन अल्लामा इब्ने क़सीर के इस स्पष्टीकरण से भी होता है।

فَلَمْ يُوْجَدْ نَبِىٌّ بَعْدَ اِبْرَاهيم عليه السلامُ

اِلاوهُوَ مِنْ سُلالَتِهٖ ۔ (تفسیر ابن کثیر ج ۳ ص ۴۱۱)

अर्थः- "इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद कोई नबी ऐसा नहीं हुआ जो उन की नस्ल से न हो" (तफ़्सीर इब्ने क़सीर जिल्द ३ पृष्ट ४११)

और अल्लामा शौकानी फ़रमाते हैं।

فَلَمْ يَبْعَثِ اللّٰهُ نَبِيًّا بَعْدَ اِبْرَاهِيْمَ اِلَّا مِنْ صُلبِهٖ ۔

(فتح القدیر ج ۴ ص ۱۹۹)

अर्थः- "अल्लाह ने इब्राहीम के बाद कोई नबी नहीं भेजा मगर यह कि वह उसी की सुल्ब से था।" (फ़त्हुलक़दीर जिल्द ४ पृष्ट १९९)

52. हज़रत इब्राहीम को आज़माइशों से गुज़ारने के बाद उन की नेकियों का जो सिला अल्लाह तआला ने दुनिया में उन्हें प्रदान किया उस में उन के लिए सच्ची इज़्ज़त, बुलन्दी, इमामत, नबी बेटे, वंश में नुबुव्वत और किताब का सिलसिला ज़बानों पर उन की भली चर्चा और ईमान वालों के दिल से निकलने वाली सलाम और रहमत की दुआऐं जैसी भलाईयाँ शामिल हैं जिन के मुकाबले में दुनिया की दौलत कुछ भी नहीं।

53. अर्थात् आख़िरत में स्वालिहीन (अच्छे लोगों) के समूह में शामिल होगा जिन को इनामों से अलंकृत किया जाने वाला है।

54. हिजरत के बाद हज़रत लूत को सदोम और अमूरा की बस्तियों की तरफ़ भेजा गया जो मृत सागर (Dead Sea) के किनारे पर स्थित थी। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १२७

55. इस की व्याख्या सूरह आराफ़ नोट १२९ में गुज़र चुकी।

56. मालूम होता है कि ये लोग रास्तों में लूट मार और अपहरण आदि का काम भी करते थे। इस लिए हज़रत लूत ने उन्हें गुन्डा गर्दी करने से मना किया।

57. अर्थात् वे ऐसे निर्लज्ज हो गए थे कि बुराई और कुकर्म खुले तौर पर अपनी मजलिसों में भी करने लगे थे।

मौजूदा दौर में सामूहिक रूप से बुरे कामों में लिप्त होने के लिए नाइट क्लब जैसी चीज़े अस्तित्व में आ गई हैं जो सोसायटी में बिगाड़ का बहुत बड़ा साधन हैं।

58. एक ओर हज़रत लूत थे जो पूरी हमदर्दी के साथ अपनी जाति के सुधार के लिए प्रयासरत थे और दूसरी ओर उन की जाति थी जो पूरी ढिटाई के साथ अल्लाह के प्रकोप को निमंत्रण दे रही थी।

59. जब हजरत लूत को अपनी जाति की ओर से निराशा हुई तो उन्हों ने यह दुआ की।

और हम ने मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को भेजा । उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! अल्लाह की इबादत करो और आख़िरत के दिन के उम्मीदवार रहो और ज़मीन में फ़साद बरपा करते न फिरो । मगर उन्हों ने उसे झुठला दिया तो उन को लरज़ा देने वाली आफ़त ने आ लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। *(अल-क़ुर्आन)*

31. और जब हमारे दूत इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी ले कर पहुँचे, तो उन्होंने कहा हम उस बस्ती के लोगों को विनष्ट करने वाले हैं। उस के वासी बड़े ग़लत काम करने वाले लोग हैं।[60]

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ إِبْرٰهِيمَ بِالْبُشْرٰى
قَالُوٓا إِنَّا مُهْلِكُوٓا أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ إِنَّ أَهْلَهَا
كَانُوا ظٰلِمِينَ ﴿٣١﴾

32. उस ने कहा वहाँ तो लूत भी हैं।उन्होंने कहा वहाँ जो भी हैं हम उन को ख़ूब जानते हैं। हम उस को और उस के घर वालों को बचा लेंगे सिवाय उस की पत्नी के। वह पीछे रह जाने वालों में से है।[61]

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا
لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ كَانَتْ
مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٣٢﴾

33. फिर जब हमारे दूत लूत के पास पहुँचे तो वह बड़ी चिन्ता में पड़ गया और दिल तंग हुआ।[62] उन्होंने कहा न डरो, न ग़म करो। हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी पत्नी के। वह पीछे रह जाने वालों में से है।

وَلَمَّآ أَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ
ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنَجُّوكَ
وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٣٣﴾

34. हम इस बस्ती के लोगों पर इन की नाफ़रमानियों के कारण आसमान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं।[63]

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلٰىٓ أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾

35. और हम ने इस की एक स्पष्ट निशानी छोड़ी है [64] उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लें।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾

36. और हम ने मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को भेजा ।[65] उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! अल्लाह की इबादत करो [66] और आख़िरत के दिन के उम्मीदवार रहो [67] और ज़मीन में फ़साद बरपा करते न फिरो।[68]

وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾

37. मगर उन्हों ने उसे झुठला दिया तो उन को लरज़ा देने वाली आफ़त ने आ लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।[69]

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جٰثِمِينَ ﴿٣٧﴾

38. और आद [70]और समूद [71] को भी हम ने विनष्ट किया और तुम पर उन की बस्तियों के आसार स्पष्ट हैं।[72] शैतान ने उन के कर्मों को उन के लिए शोभायमान बना दिया और उन को सीधी राह से रोक दिया हालाँकि वे बड़े होशियार लोग थे।[73]

وَعَادًا وَّثَمُودَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٨﴾

60. हज़रत इब्राहीम उस समय हिबरून (फ़िलस्तीन) में थे और उस से कुछ मील की दूरी पर सदोम था जहाँ लूत की क़ौम आबाद थी। फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम के पास इस्हाक़ और याक़ूब की पैदाइश की खुशख़बरी ले कर पहुँचे थे। इस मौके पर उन्हों ने हज़रत इब्राहीम को यह ख़बर भी दी कि हम लूत की क़ौम को विनष्ट करने के लिए भेजे गए हैं। अर्थात् उन्हों ने एक ओर अल्लाह की रहमत की ख़ुशख़बरी सुनाई जो हज़रत इब्राहीम के लिए सुखद थी और दूसरी तरफ़ एक कुकर्मी जाति पर उस के प्रकोप के टूट पड़ने का समाचार भी ।

61. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १३२

62. इस की व्याख्या सूरह हूद नोट१०८में ग़ुजर चुकी

63. अत: लूत की क़ौम पर पत्थरों की बारिश हुई और इस अज़ाब को नाज़िल करने के लिए अल्लाह तआला ने इन फ़रिश्तों को नियुक्त किया था ।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह हूद नोट ११९

64. अर्थात् इस विनष्ट हुई बस्ती के कुछ आसार (चिन्ह) इबरत के लिए छोड़ दिए हैं। ये आसार लम्बी अवधि तक बाक़ी रहे। बाद में यह भाग समुद्र में दब गया जो मृत सागर (Dead Sea) कहलाता है और इसी का दूसरा नाम लूत सागर है जो इस बात की याददेहानी कराता है कि ज़ालिमों के अस्तित्व को किस प्रकार मिटा दिया जाता है। मृत सागर का पानी इतना अधिक खारा है कि उस में मछली आदि कोई चीज़ ज़िन्दा नहीं रह सकती ।

(देखिए इन्साइकलोपीडिया ब्रिटानिका जिल्द ५ पृष्ट ५२५)

65. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १३४

66. अर्थात् केवल अल्लाह की पूजा और बन्दगी करो ।

67. अर्थात् अल्लाह की इबादत करते हुए उम्मीद रखो कि बदला मिलने का एक दिन आने वाला है। जब तुम अल्लाह से मुलाक़ात करोगे और वह तुम्हें इस बात पर कि तुम ने उसी की इबादत की थी और उसी के बन्दे बन कर रहे थे, भरपूर सिला देगा ।

68. समाज में बिगाड़ वही लोग पैदा करते हैं जिन को न अल्लाह की इबादत से दिलचस्पी होती है और न वे आख़िरत में अल्लाह से इनाम पाने के उम्मीदवार होते हैं वे केवल सांसारिक लाभों के इच्छुक होते हैं फिर वह जिस तरीक़े से भी उन्हें प्राप्त हो ।

69. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट १४७

70. व्याख्या के लिए देखिए सूरह फज्र नोट ८

71. व्याख्या के लिए देखिए सूरह फज्र नोट १३

72. आद क़ौम के आसार क़ुर्आन अवतरण के समय बाक़ी थे किन्तु अब न रहे परन्तु समूद की क़ौम के आसार (चिन्ह) अब भी मदीना के उत्तर में अल-उला के इलाक़े में बाकी हैं।

73. अर्थात् वे अपने सांसारिक मामलों में बड़े होशियार और बुद्धिमान लोग थे । परन्तु जहाँ अल्लाह और उस के दीन का मामला आ जाता उन की बुद्धि मारी जाती । यही हाल मौजूदा ज़माने के लोगों का है । उन्होंने अपनी बुद्धि की क्षमता को काम में ले कर ज़बरदस्त भौतिक प्रगति की है किन्तु ख़ुदा और आख़िरत के बारे में बिलकुल कोरे हैं।

39. और क़ारून [74] और फ़िरऔन और हामान [75] को भी हम ने विनष्ट कर दिया। मूसा उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आया था मगर उन्होंने ज़मीन में अपनी बड़ाई का अभिमान किया हालाँकि वे ज़मीन में हमारे क़ाबू से निकल जाने वाले न थे।

وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۣ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى
بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

40. तो (देखो) हर एक को हम ने उस के गुनाह के कारण से पकड़ा। किसी पर हम ने पत्थर बरसाने वाली आँधी भेजी और किसी को प्रचण्ड धमाके ने आ लिया, और किसी को हम ने ज़मीन में धंसा दिया और किसी को डुबो दिया ।[76] अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे ।[77]

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ
وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا
بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾

41. जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरे कर्ता धर्ता बना लिए हैं उन की मिसाल मकड़ी की सी है जिस ने एक घर बना लिया । और तमाम घरों में सब से कमज़ोर घर मकड़ी ही का होता है। काश वे इस (वास्तविकता) को जानते ।[78]

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ
الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۚ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ
لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

42. बेशक अल्लाह उन चीज़ों को जानता है जिन को यह उस को छोड़ कर पुकारते हैं।[79] और वह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी ।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَىْءٍ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾

43. और ये मिसालें हम लोगों (को समझाने) के लिए बयान करते हैं किन्तु इन को वही लोग समझते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं।[80]

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ
اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

44. अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है।[81] निस्संदेह इस में बहुत बड़ी निशानी है,[82] ईमान लाने वालों के लिए।

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ اِنَّ فِىْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

45. तिलावत करो उस किताब की जो तुम्हारी तरफ़ वह्य की गई है [83] और नमाज़ क़ायम करो। बेशक नमाज़ बेहयाई से और बुरे कामों से रोकती है।[84] और अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है [85] अल्लाह जानता है जो कुछ तुम लोग करते हो।

اُتْلُ مَآ اُوْحِىَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ۗ
اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۗ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾

74. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़सस नोट १४३

75. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़सस नोट ११

76. अर्थात् विभिन्न क़ौमों पर विभिन्न प्रकार के अज़ाब आए। इन उद्दण्ड क़ौमों के विनाश के वृत्तांत क़ुर्आन मजीद में कई जगहों पर विस्तार से बयान हुए हैं।

77. जो व्यक्ति अपने को आग में डालेगा जल कर रहेगा क्यों कि विधाता के विधान का उल्लंघन करने का परिणाम यही है अत: अपने विनाश का ज़िम्मेदार वह ख़ुद है न कि ख़ुदा । इसी प्रकार जो क़ौमें अल्लाह से बग़ावत करती हैं वे अल्लाह के न्याय विधान को चैलेंज करती हैं । अत: यदि उन पर उस का प्रकोप टूट पड़ता है तो उस के ज़िम्मेदार वे स्वयं हैं कि उन्होंने स्वयं अपने को तबाही में डाल दिया । अल्लाह पर इस की कोई ज़िम्मेदारी नहीं आती । वह तो पूरे न्याय के साथ संसार पर शासन कर रहा है।

78. यह ग़ैरुल्लाह के भक्तों की मिसाल है कि उन का विश्वास और भरोसा जिन पूज्यों पर होता है वे अपना कोई बल बूता नहीं रखते । न वे उन की हाजतों को पूरा कर सकते हैं और न उन की तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं और न अल्लाह के समक्ष सिफ़ारिशी बन कर किसी को कुछ दिला सकते हैं अत: उन के ये सहारे मकड़ी के जाल से अधिक कोई अस्तित्व नहीं रखते । जिस प्रकार मकड़ी जाला तान कर अपना घर बनाती हैं परन्तु वह इतना कमज़ोर होता है कि हवा का एक झोंका ही उसे उड़ा देने के लिए काफ़ी होता है। इसी प्रकार जो लोग अल्लाह के सिवा किसी और को अपना संरक्षक अपना कर्ता धर्ता बना लेते हैं वे मात्र भ्रम एवं अंधविश्वास की आधार शिला पर आशाओं और तमन्नाओं का घर बना लेते हैं परन्तु जब परिणाम निकलने का समय आएगा तो उस का कहीं अस्तित्व नहीं होगा। मकड़ी की मिसाल बाइबिल में भी बयान हुई है:-

''और भक्तहीन की आशा टूट जाती है। उस की आशा का मूल कट जाता है और जिस का वह भरोसा करता है वह मकड़ी का जाला ठहरता है। चाहे वह अपने घर पर टेक लगाए परन्तु वह न ठहरेगा ।'' (अय्यूब ८:१३,१४,१५)

79. अर्थात् अल्लाह के सिवा ये जिन को भी हाजतों को पूरा करने के लिए पुकारते हैं उन की वास्तविकता क्या है यह अल्लाह को भली भाँति मालूम है। मतलब यह है कि अल्लाह का साझी ठहराने वाले उन के बारे में ईश्वरीय अधिकारशक्ति एवं सार्मथ्यवान होने के या उन के ईश्वर के समक्ष सिफ़ारिशी होने के कैसे ही दावे करें अल्लाह अच्छी तरह जानता है कि ये सारे दावे झूठे और ग़लत हैं और कोई भी इस लायक नहीं कि उस को हाजतों एवं आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पुकारा जा सके।

स्पष्ट रहे कि मुसलमानों का समूह जो शिर्क और बिदअतों में लिप्त है इस प्रकार की आयतों को जिन में ग़ैरूल्लाह को पुकारने की निन्दा की गई है देवी देवताओं को पुकारने की हद तक सीमित समझता है। रहा औलिया आदि को पुकारना तो यह उन के निकट शिर्क नहीं है। वे कहते हैं इन को पुकारना ऐसा ही है जैसा प्रशासन अथवा पुलिस को सहायता के लिए पुकारना । परन्तु यह तर्क ऐसा ही है जैसे मारो घुटना और फूटे आँख । यदि कोई व्यक्ति इस बात के उत्तर में कि अल्लाह के सिवा किसी के आगे सर न झुकाओ,यह कहे कि सर तो बारबर के सामने भी झुकाया जाता है तो यह केवल कटहुज्जती होगी। क्यों कि हर बात का एक मौक़ा होता है। अगर उस को वहाँ से हटा दिया जाए तो उस का अर्थ ही बदल जाएगा । सब जानते हैं कि प्रशासन या पुलिस को मदद के लिए बुलाने और किसी वली को जो दूर कहीं दफ़न है सहायता के लिए पुकारने में ज़मीन और आसमान का अन्तर है। पहली चीज़ व्यवहारिक जगत से सम्बन्ध रखती है और दूसरी चीज़ परोक्ष लोक से। पहली चीज़ के बारे में ईश्वरीय अधिकार की कोई कल्पना नहीं होती जब कि दूसरी चीज़ के बारे में यह धारणा होती है। इसी के चलते तो उन से उन गुणों एवं विशेषताओं को सम्बोध किया जाता है जो अल्लाह के लिए ख़ास होती हैं जैसे ''ग़ौस'' अर्थात् फ़रियादों का सुनने वाला,''मुश्किलकुशा'' अर्थात् मुश्किलों को दूर करने वाला आदि । वास्तव में किसी के साथ वह मामला करना जो अल्लाह ही के साथ किया जा सकता है उस को ख़ुदा के बराबर ठहराना है। अल्लाह की तरह औलिया को हाज़िर और नाज़िर (हर जगह मौजूद रह कर सब कुछ देखने वाला) समझ कर सहायता के लिए पुकारना शिर्क नहीं तो और क्या है?

80. अर्थात् जो जिहालत के अन्धकार में नहीं रहते, बल्कि ज्ञान के प्रकाश में चलते हैं । और क़ुर्आन की बातें ऐसे ही लोगों की समझ में आती हैं।

81. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट १२४

82. अर्थात् तौहीद के हक़ होने की निशानी जिस से शिर्क का खण्डन होता है।

83. सत्य और असत्य की इस कशमकश में जिस का वर्णन ऊपर हुआ है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और आप के माध्यम से आप के अनुयायियों को क़ुर्आन की तिलावत और नमाज़ क़ायम करने की हिदायत, इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि यदि ये इन्कार करने वाले अपने जीवन व्यर्थ नष्ट कर रहे हैं तो करने दो, तुम्हें अपने अन्दर ऐसे गुण पैदा करने चाहिए जो तुम्हारे जीवन को संवारने वाला और तुम्हें परलोक की मुक्ति दिलाने वाला हो । और वो गुण हैं अल्लाह से गहरा सम्बन्ध । और अल्लाह से गहरा सम्बन्ध

अल्लाह की किताब की तिलावत और नमाज़ के आयोजन से पैदा होता है।

क़ुर्आन करीम की तिलावत का पूरा पूरा लाभ तो उसी सूरत में प्राप्त हो सकता है जब कि इस प्रकार तिलावत की जाए जिस तरह तिलावत करने का हक़ है। يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ अर्थात् सब से पहले आदमी का उस पर ईमान हो, फिर उसे समझने की कोशिश करे, उस में चिन्तन मनन करे, उस से नसीहत हासिल करने पर आमादा हो और उस की रहनुमाई को स्वीकार करते हुए अपने व्यवहारिक जीवन को उस के अनुरूप बनाए। लेकिन इस का यह अर्थ नहीं कि अरबी न जानने वाला मुसलमान हर समय अनुवाद के साथ ही क़ुर्आन पढ़े। ऐसा करना संभव नहीं है क्यों कि नमाज़ में केवल तिलावत ही की जाती है,अनुवाद पढ़ने का वहाँ सवाल ही पैदा नहीं होता। असल बात यह है कि क़ुर्आन करीम की तिलावत अल्लाह का कलाम होने की हैसियत से स्वयं एक इबादत है और अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का बहुत बड़ा साधन । क्यों कि जब कोई व्यक्ति इस किताब पर ईमान रखते हुए सच्चे दिल से उस का पाठ (तिलावत) करता है तो वह अल्लाह को याद करता है और अल्लाह के कलाम की तासीर से उस पर ईश-भय और अल्लाह से लगाव की भावना छा जाती है। और यह बहुत बड़ी रूहानी दौलत है। इसी लिए इस के एक एक शब्द पर इनाम मिलता है। अत: क़ुर्आन करीम की तिलावत के महत्व को घटाया नहीं जा सकता इस का जितना अधिक आयोजन किया जाए उतना ही फलदायक होगा। इस का प्रोत्साहन क़ुर्आन में भी दिया गया है और हदीस में भी, रहे वे लोग जो क़ुर्आन की तिलावत तो ख़ूब करते हैं लेकिन कभी इस को समझने की कोशिश नहीं करते तो यह ऐसा ही है जैसे नमाज़ को लोग पढ़ते हैं मगर यह जानने की कोशिश नहीं करते कि वे उस में क्या पढ़ते हैं। यहाँ तक कि उन्हें सूरह फातिहा और रुकू एवं सज्दे की तस्बीह का अर्थ भी मालूम नहीं होता और न वे ये जानते हैं कि नमाज़ में वे किस चीज़ का इक़रार करते हैं और किस चीज़ का इन्कार । जिस प्रकार ऐसी नमाज़ अदा तो हो जाती है लेकिन अपने परिणामों, अपनी बरकतों और अपने प्रतिफल की दृष्टि से अपूर्ण होती है उसी प्रकार क़ुर्आन की तिलावत से इबादत का लाभ तो अवश्य प्राप्त हो जाता है परन्तु इस के भावार्थ की ओर से बेपरवाही के फलस्वरूप न केवल यह कि इस इबादत के प्रतिफल (इनाम) में कमी आ जाती है बल्कि ऐसा व्यक्ति क़ुर्आन से लाभान्वित नहीं हो पाता। और अपनी तरबियत,शुद्धिकरण और मार्गदर्शन के लिए जो संबन्ध क़ुर्आन से बनाना चाहिए वह नहीं बना पाता और यह बहुत बड़ी महरूमी है। क्या ऐसे लोग यह समझते हैं कि अल्लाह उन से यह न पूछेगा कि जब अल्लाह की किताब तुम्हारे पास मौजूद थी तो तुम ने उसे समझने की कोशिश क्यों नहीं की? क्या यह किताब मात्र तिलावत के लिए उतारी गई थी या इस लिए उतारी गई थी कि तुम इस से रौशनी हासिल करो?

84. यह नमाज़ का वह असर है जिसे महसूस किया जाता है।इन से विचारों में पवित्रता और कर्मों में शालीनता और परहेज़गारी आ जाती है । फिर भी कितने लोग ऐसे हैं जो नमाज़ी भी हैं और बुराइयों में लिप्त भी । परन्तु यह उन का अपना कुसूर है। क्यों कि वही नमाज़ अपने प्रभाव छोड़ती है जो पूरे लगन और ईश भय के साथ अदा की गई हो। और अल्लाह तआला ने उन्हीं ईमान वालों को परलोक की सफलता एवं मुक्ति की ज़मानत दी है जो अपनी नमाज़ में ईश-भय और परहेज़गारी अपनाते हैं। (देखिए सूरह मोमिनून आयत २ और नोट २) यदि नमाज़ परहेज़गारी और ईश-भय से ख़ाली हो तो पापों से बचने की भावना परवान नहीं चढ़ती ।

85. इस से अल्लाह के ज़िक्र (उस की चर्चा) का महत्व स्पष्ट होता है कि यह महान इबादत है और नमाज़ अल्लाह के ज़िक्र की बेहतरीन शक्ल है। ज़िक्र में दिल से अल्लाह को याद करना ज़बान से उस का नाम जपना और उस के गुण गाना दोनों बातें शामिल हैं जो व्यक्ति अल्लाह को याद करता है वह अपने रब से सम्बन्ध को बनाता है और इस के असाधारण प्रभाव उस के दिल और दिमाग़ पर और उस के व्यवहारिक जीवन पर पड़ते हैं फिर अल्लाह के ज़िक्र में जो मिठास, जो मधुरता और जो आनन्द है उस का अन्दाज़ा उन लोगों को हरगिज़ नहीं हो सकता जिन को इस से लगाव नहीं होता।

अल्लामा इब्ने तैमिया ने अल्लाह के ज़िक्र की अहमियत को बड़े अच्छे अन्दाज़ से स्पष्ट किया है फ़रमाते हैं।

''नमाज़ बेहयाई और मुन्कर जैसी अप्रिय चीज़ों को दूर करती है। और अल्लाह की याद को जो एक प्रिय चीज़ है ताज़ा करती है। और इस प्रिय चीज़ का प्राप्त हो जाना अप्रिय चीज़ों को दफ़ा करने के मुक़ाबले में बड़ी चीज़ है क्यों कि ज़िक्र-इलाही, अल्लाह की इबादत है और अल्लाह के लिए दिल की इबादत अपने आप में अभीष्ट है जब कि बुराई का उस से दूर होना स्वाभावत: दूसरी चीज़ के लिए अभीष्ट है।'' (संग्रह फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द १०, पृष्ट १८८)

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह ताहा नोट १६

क्या इन लोगों के लिए यह निशानी काफ़ी नहीं है कि हम ने तुम पर किताब नाज़िल की जो इन को पढ़ कर सुनाई जाती है। निस्संदेह इस के अन्दर रहमत और नसीहत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाऐं। (ऐ पैग़म्बर !) कहो अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है। वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। जो लोग बातिल (असत्य) में विश्वास रखते हैं और अल्लाह से कुफ्र करते हैं वही तबाह होने वाले हैं। *(अल-क़ुर्आन)*

46. और अहले-किताब से बहस न करो मगर बेहतर तरीक़े से, सिवाय उन के जो उन में से ज़ालिम हैं और कहो हम ईमान लाए हैं उस चीज़ पर भी जो हमारी तरफ़ भेजी गई है और उस चीज़ पर भी जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई थी। हमारा और तुम्हारा ख़ुदा एक ही है और हम उसी के मुस्लिम (आज्ञा पालक) हैं।[86]

ولا تجادلوا أهل الكتب إلا بالتي هي أحسن إلا
الذين ظلموا منهم وقولوا آمنا بالذي أنزل إلينا
وأنزل إليكم وإلهنا وإلهكم واحد ونحن له
مسلمون ﴿٤٦﴾

47. हम ने इसी तरह तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है।[87] तो जिन को हम ने (पहले) किताब प्रदान की थी वे इस पर ईमान लाते हैं [88] और इन लोगों में से भी कुछ इस पर ईमान ला रहे हैं।[89] और हमारी आयतों का तो इन्कार वही लोग करते हैं जो काफ़िर हैं ।[90]

وكذلك أنزلنا إليك الكتب فالذين آتينهم الكتب يؤمنون
به ومن هؤلاء من يؤمن به وما يجحد بآيتنا
إلا الكفرون ﴿٤٧﴾

48. (ऐ नबी !) तुम इस से पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न उस को अपने दाहिने हाथ से लिखते थे। अगर ऐसा होता तो मिथ्या वादी लोग शक करते।[91]

وما كنت تتلوا من قبله من كتب ولا تخطه بيمينك
إذا لارتاب المبطلون ﴿٤٨﴾

49. वास्तव में ये खुली आयतें हैं उन लोगों के सीनों (दिलों) में जिन को ज्ञान प्रदान हुआ है।[92] और हमारी आयतों का इन्कार तो ज़ालिम ही करते हैं।

بل هو آيت بينت في صدور الذين أوتوا العلم وما يجحد
بآيتنا إلا الظلمون ﴿٤٩﴾

50. ये लोग कहते हैं इस पर इस के रब की तरफ़ से निशानियाँ क्यों नहीं उतारी गई।[93] कहो निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं और मैं तो बस खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।

وقالوا لولا أنزل عليه آيت من ربه
قل إنما الآيت عند الله وإنما أنا نذير مبين ﴿٥٠﴾

51. क्या इन लोगों के लिए यह निशानी काफ़ी नहीं है कि हम ने तुम पर किताब नाज़िल की जो इन को पढ़ कर सुनाई जाती है। निस्संदेह इस के अन्दर रहमत और नसीहत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाऐं।[94]

أولم يكفهم أنا أنزلنا عليك الكتب يتلى عليهم إن في ذلك
لرحمة وذكرى لقوم يؤمنون ﴿٥١﴾

52. (ऐ पैग़म्बर !) कहो अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है।[95] वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। जो लोग बातिल (असत्य) में विश्वास रखते हैं और अल्लाह से कुफ़्र करते हैं वही तबाह होने वाले हैं।[96]

قل كفى بالله بيني وبينكم شهيدا يعلم ما في السموت والأرض
والذين آمنوا بالبطل وكفروا بالله أولئك هم الخسرون ﴿٥٢﴾

86. यह सूरह उस समय नाज़िल हुई जब कि मुसलमानों का एक समूह बहुदेववादियों के अत्याचारों के कारण हिज़रत कर के हब्शा पहुँच गया था जहाँ ईसाइयों की हुकूमत थी। इस प्रकार मुसलमानों को ईसाईयों के सामने क़ुर्आन की दअवत प्रस्तुत करने का अवसर मिल गया था । इसी मुनासिबत से यहाँ यह हिदायत दी गई कि उन से अच्छे तरीक़े से बहस करें और इस की पुष्टि आगे कर दी कि बहस की शुरूआत सहमति वाले बिन्दु से की जाए और वह यह कि जो किताबें उन की तरफ़ नाज़िल हुई थीं उन पर हमारा भी ईमान है और यह कि हमारा तुम्हारा ख़ुदा एक ही है। फिर जो किताब आज उस ने नाज़िल की है उस पर हम क्यों न ईमान लाऐं और यदि दीन की मूल शिक्षा मानना और स्वीकार करना है तो हम उस के इस रसूल पर जो उस ने हम सब की हिदायत के लिए भेजा है ईमान ला कर उस के समक्ष आत्मसमर्पण क्यों न करें ।

दअवत के सिलसिले में बेहतरीन तरीक़ा और अच्छी शैली अपनाने की हिदायत एक उसूली हिदायत है। मुनाज़रा बाज़ी और उलझावी बहसों से कुछ प्राप्त नहीं होता । अलबत्ता संजीदा बहस, तर्क की शक्ति और अपील करने वाला अन्दाज़ दिलों को जीत लेता है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह नहल नोट १८६)

रहे ज़ालिम अर्थात् वे लोग जो सूझ बूझ से काम लेने के लिए तैयार नहीं हैं और अपने ग़लत रवैया पर जमे रहना चाहते हैं तो दअवत का कितना ही बेहतरीन तरीक़ा अपनाया जाए वे कदापि प्रभावित होने वाले नहीं हैं।

87. अर्थात् जिस प्रकार हम इस से पहले किताबें अवतरित करते रहे हैं उसी प्रकार ऐ पैग़म्बर हम ने यह किताब तुम पर उतारी है।

88. क़ुर्आन ''किताब प्रदान की थी'' और ''किताब दी गई थी'' एक ख़ास अन्तर के साथ प्रयोग करता है। ''किताब प्रदान की थी'' से मुराद वे अहले-किताब हैं जो अल्लाह की किताब का मूल्य समझने वाले तथा उस का आदर करने वाले बने और ''किताब दी गई थी'' से साधारण अहले-किताब अभिप्रेत हैं।

यहाँ जिन अहले-किताब के ईमान लाने का वर्णन हुआ है वे उन के सच्चे लोग थे जो अल्लाह की किताब पर पहले ही से ईमान रखते थे और जब क़ुर्आन उन के सामने आया तो वे उस पर भी ईमान लाए। ख़ास तौर से इशारा हब्श के उन ईसाइयों की तरफ़ है जो क़ुर्आन और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाए थे और उन में वहाँ का शासक नजाशी आगे आगे था।

89. अर्थात् मक्का के बहुदेववादियों में से भी ऐसे लोग निकल रहे हैं जो ईमान लाते हैं।

90. यहाँ काफ़िर से तात्पर्य वे लोग हैं जो ईमान लाने के लिए किसी तरह तैयार नहीं है अर्थात् कट्टर काफ़िर।

91. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने की इस से अधिक स्पष्ट दलील और क्या हो सकती है कि आप लिखना पढ़ना नहीं जानते थे बल्कि उम्मी थे। अहले-किताब के पास जो तौरात और इन्जील थी उस को न आप ने कभी पढ़ा था और न उस में से कभी कोई चीज़ अपने हाथ से नक़ल की । और यह बात मक्का के बहुदेववादियों और अहले-किताब सब को मालूम थी। इस लिए किसी ने भी आप के उम्मी होने का खण्डन नहीं किया। ऐसी सूरत में यह प्रश्न उठता है कि क़ुर्आन जैसी किताब जो ज्ञान का ख़ज़ाना है और नबियों के इतिहास के वृत्तांत को भी पूरे प्रमाण के साथ प्रस्तुत कर रही है जो दिलों को रोग मुक्त करने वाली भी है और शिष्टाचार से मनुष्यों को संवारती है और जिस की एक एक बात जंची तुली और एक एक शब्द अमूल्य है और जिस में इष्ट पूज्य का सही परिचय भी है और इन्सान की रहनुमाई का सामान भी किया गया है। इस शान की किताब का प्रस्तुत करना एक उम्मी (अनपढ़) के लिए कैसे संभव हुआ? इस प्रश्न का उत्तर इस के सिवा कुछ नहीं हो सकता कि क़ुर्आन आप की रचना नहीं बल्कि अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब है और यह आप के रसूल होने का स्पष्ट प्रमाण है।

नबी होने के बाद आप ने लिखना पढ़ना नहीं सीखा था और न किसी सही हदीस को इस बात की ताईद में प्रस्तुत किया जा सकता है कि आप बाद में उम्मी नहीं रहे थे। आप का उम्मी (अनपढ़) होना तो कोई दोष की बात नहीं । बल्कि इस लिहाज़ में गौरव की बात है कि उम्मी होने के बावजूद क़ुर्आन जैसी तत्वपूर्ण पुस्तक को प्रस्तुत करना खुला मोज्ज़ा (चमत्कार) है जो क़ियामत तक के लिए है।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आराफ़ नोट २३४

92. यह क़ुर्आन के अल्लाह की रचना होने का एक और सबूत है। क़ुर्आन की दअवत फ़ितरत की पुकार है और एक सच्चे मन का आदमी उस की आयतों को सुन कर महसूस करता है कि यह एक अलग ही तरह का कलाम है और यह अल्लाह ही है जो बोल रहा है। फिर यदि उसे उन किताबों का भी ज्ञान हो जो इस से पहले अवतारित हो चुकी हैं तो वह यह भी महसूस करेगा कि दोनों का स्त्रोत एक ही है। गोया ज्ञान वाले और बुद्धि जीवी क़ुर्आन की आयतों को अपने दिल की बात समझते हैं।

देखना तक़रीर की लज़्ज़त कि जो उस ने कहा
मैं ने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है

दूसरे शब्दों में क़ुर्आन की आयतें ज्ञान और सूझ बूझ

रखने वालों के ह्रदय पट पर लिखी हुई हैं और यह इस के अल्लाह के कलाम होने की खुली शहादत है।

93. तात्पर्य महसूस किये जाने वाले मोज़्ज़े हैं।

94. यह उन की इस बात का जवाब है कि यह व्यक्ति यदि वास्तव में पैग़म्बर है तो कोई चमत्कार (मोज़्ज़ा) क्यों नहीं दिखाता है। जवाब दिया गया कि यह किताब स्वयं बहुत बड़ा मोज़्ज़ा है। इस के रहते किसी और मोज़्ज़े की क्या आवश्यकता बाक़ी रह जाती है।

फिर यह मोज़्ज़ा अपने आप में अत्यंत लाभप्रद है। जो लोग इस पर ईमान लाऐंगे उन पर अल्लाह की रहमत का अवतरण होगा और वे इस से नसीहत हासिल करेंगे।

95. अर्थात् क़ुर्आन के हुज्जत होने के बाद रिसालत के बारे में फिर और किसी तर्क एवं प्रमाण की आवश्यकता बाक़ी नहीं रहती । अल्लाह ने इस किताब को उतार कर मेरी रिसालत की जो गवाही दी है वह काफ़ी है।

96. बातिल का अर्थ सत्य के विपरीत अर्थात् असत्य के हैं । अल्लाह इस कायनात का सब से बड़ा सत्य है जिस का सही ज्ञान एवं परिचय उस के रसूल और उस की किताब के द्वारा प्राप्त होता है । इस सत्य के विरूद्ध आदमी जैसी भी धारणा और जो भी सिद्धान्त अपनाएगा वह असत्य (बातिल) होगा और इस का परिणाम तबाही के सिवा कुछ नहीं ।

और कितने ही जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फ़िरते। अल्लाह उन को रोज़ी देता है और तुम को भी। वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। अगर तुम इन से पूछो कि किसने आसमान और ज़मीन पैदा किए और किस ने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है तो वे कहेंगे अल्लाह ने। फिर वे किस तरह हक़ (सत्य) से फेरे जाते हैं ? *(अल-क़ुर्आन)*

53. ये लोग तुम से शीघ्र अज़ाब की माँग कर रहे हैं। यदि एक समय निर्धारित न किया गया होता तो इन पर अज़ाब आ चुका होता।[97] और निश्चय ही वह इन पर अचानक आ जाएगा इस हाल में कि इन्हें ख़बर भी न होगी।[98]

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ
وَلَيَأْتِيَنَّهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾

54. ये तुम से शीघ्र अज़ाब की माँग कर रहे हैं हालाँकि जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है।[99]

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾

55. वह दिन कि अज़ाब इन को ऊपर से भी ढाँक लेगा और उन के पाँव के नीचे से भी,और वह फ़रमाएगा कि चखो मज़ा अपने करतूतों का जो तुम करते रहे।

يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ
وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

56. ऐ मेरे बन्दों ! जो ईमान लाए हो मेरी ज़मीन विशाल है तो मेरी ही इबादत करो ।[100]

يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

57. हर प्राणी को मौत का मज़ा चखना है ।[101] फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौटाए जाओगे।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾

58. जो लोग ईमान लाए और जिन्हों ने अच्छे कर्म किए उन को हम जन्नत की बुलन्द मन्ज़िलों में जगह देंगे।[102] जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वहाँ वे हमेशा रहेंगे । क्या ही अच्छा बदला है अमल (कर्म) करने वालों के लिए।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ نِعْمَ
أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٨﴾

59. जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब पर भरोसा रखा ।[103]

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾

60. और कितने ही जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फ़िरते। अल्लाह उन को रोज़ी देता है और तुम को भी।[104] वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।[105]

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾

61. अगर तुम इन से पूछो कि किसने आसमान और ज़मीन पैदा किये और किस ने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है तो वे कहेंगे अल्लाह ने । फिर वे किस तरह हक़ (सत्य) से फेरे जाते हैं ?[106]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾

97. अर्थात् अल्लाह ने इन के लिए कर्म करने की मोहलत की जो अवधि निर्धारित की है उस के समाप्त होने से पहले अज़ाब नहीं आ सकता। अगर अल्लाह तआला का नियम यह न होता कि उस के रसूल का इन्कार करने वालों को संभलने का अवसर दिया जाए तो अवश्य ही इन पर अज़ाब आ चुका होता ।

98. अर्थात् ये यदि अपने इन्कार और कुफ्र के रवैये पर डटे रहे तो मोहलत समाप्त हो जाने पर तय है कि अज़ाब आ जाएगा और इस तरह आएगा कि इन को ख़बर भी न होगी कि कोई अज़ाब आ रहा है।

बाद में चूँकि लोग ईमान लाते रहे और रसूल के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि होती चली गई इस लिए जो काफ़िर रह गए थे उन पर आसमान से अज़ाब नाज़िल करने के बजाय अल्लाह की हिकमत का यह तक़ाज़ा हुआ कि ईमान वालों की तलवार उन पर उस के प्रकोप के रूप में बरसे । अत: कुफ्र और इस्लाम का संग्राम छिड़ा और उस में काफ़िरों का इस तरह विनाश हुआ कि वे इस का गुमान भी नहीं कर सकते थे।

99. अर्थात् यह तो रहा दुनिया में अज़ाब का मामला । रही बात आख़िरत के अज़ाब की तो जहन्नम काफ़िरों से दूर नहीं है। वह उन को चारों ओर से घेरे हुए है, अर्थात् वे हर तरह से जहन्नम की ज़द में हैं ।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह कहफ़ नोट ४७

100. इस सूरह के अवतरण के समय मक्का में मुसलमान मुट्ठी भर थे । उन के इस्लाम स्वीकार कर लेने के चलते बहुदेववादी उन को अपने अत्याचार का निशाना बनाए हुए थे। इस परिस्थिति को देखते हुए उन्हें हिदायत की गई कि यदि मक्का में तुम्हें अल्लाह की इबादत करने की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो रही है और तुम्हारे दीन और ईमान के लिए खतरा पैदा हो गया है तो तुम किसी अन्य देश में हिजरत कर जाओ । अत: हब्शा की ओर हिज़रत का सिलसिला जारी रहा ।

इस्लाम की उसूली शिक्षा यही है कि जिस देश की ज़मीन चाहे वह मक्का जैसे पवित्र शहर की धरती ही क्यों न हो यदि ईमान वालों पर इतनी तंग हो जाती है कि वे न अपने ईमान को प्रकट कर सकते हैं और न एक अकेले ख़ुदा की पूजा अर्चना कर सकते हैं तो उन्हें इस देश को छोड़ कर किसी ऐसी जगह जाना चाहिए जहाँ उन्हें अपने दीन की बुनियादी बातों पर अमल करने की आज़ादी प्राप्त हो सके। ऐसे मौक़े पर क़ौम और वतन की मुहब्बत आड़े नहीं आनी चाहिए। क्यों कि अपने दीन और ईमान की ख़ातिर क़ौम, वतन और घर बार को छोड़ा जा सकता है किन्तु क़ौम और वतन और घर बार की ख़ातिर दीन और ईमान को नहीं छोड़ा जा सकता ।

حُبُّ الْوَطَنِ مِنَ الْإِيْمَانُ

अर्थ:- ''वतन की मुहब्बत ईमान से है'' एक गढ़ी हुई हदीस है जिस को लोग बिना जाँचे परखे परस्तुत करतें हैं और इस से अभिप्रेत यह स्पष्ट करना होता है कि इस्लाम देश-भक्ति का समर्थन करता है हालाँकि क़ुर्आन में हिजरत को जब कि वह आवश्यक हो जाए, ईमान के तक़ाज़े की हैसियत से प्रस्तुत किया गया है जो देश भक्ति के बिलकुल विपरीत है।

101. अर्थात् जब प्रत्येक व्यक्ति को मरना है तो फिर मौत के बाद के जीवन की ही चिन्ता होनी चाहिए। मौत की याद दीन की राह में सामने आने वाले कष्टों को सहन करने पर आमादा करती है और दुनिया के ऐश्वर्य में डूबने से बाज़ रखती है। हदीस में आता है:-

اَكْثِرُوْ اذِكْرَهَا ذِمِ اللَّذَّاتِ يعنى الموت۔(ترمذی ابواب الزہد)

अर्थ: ''ख़ूब ख़ूब याद करो लज़्ज़तों को समाप्त करने वाली चीज़ को ''अर्थात मौत को ।'' (तिर्मिज़ी अबवाबुज़्ज़ुहद)

102. ऊपर दीन की राह में घर बार छोड़ने का वर्णन था इस लिए यहाँ इस त्याग के इनाम की मुनासिबत से जन्नत की बुलन्द मन्ज़िलों का वर्णन विशेष रूप से किया गया है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ुर्क़ान नोट १०९)

103. यहाँ ईमान वालों के दो महत्वपूर्ण गुणों की चर्चा हुई है। एक सब्र और दूसरे अल्लाह पर भरोसा । प्रसंग से स्पष्ट है कि यहाँ सब्र से तात्पर्य कठिन परिस्थितियों में भी डटे रहना और उन तकलीफ़ों और मुसीबतों को सहन करना है जो दीन की राह में पेश आ जाऐं। रहा अल्लाह पर भरोसा तो इस का मतलब यह है कि ईमान वालों का असली भरोसा भौतिक साधनों पर नहीं बल्कि अल्लाह पर हो जो साधनों को पैदा करने वाला है और हालात को अपनी मंशा के मुताबिक बदलता है। अल्लाह पर भरोसा वास्तव में हृदय की वह दशा है जो अल्लाह के संरक्षक होने पर विश्वास के फलस्वरूप पैदा होती है।

104. हिजरत करने की दशा में रोज़ी एवं आजीविका की समस्या पैदा हो जाती है। इस लिए इस वास्तविकता की ओर ध्यानाकृष्ट किया जा रहा है कि रोज़ी देना अल्लाह के ज़िम्मे है वह जानवरों को रोज़ी देता है तो तुम को क्यों नहीं देगा। तुम देखते हो कि असंख्या पशु पक्षी और पानी में रहने वाले जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते किन्तु अल्लाह उन की रोज़ी का प्रबन्ध हर जगह कर रहा । इसी प्रकार इन्सानों को भी वह बराबर रोज़ी दिए जा रहा है अत: तुम्हें चिन्ता उस की पूजा अर्चना की होनी चाहिए न इस बात की कि खाऐंगे क्या ।

रोज़ी के सिलसिले में अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़मानत का यह अर्थ नहीं कि मनुष्य रोज़ी प्राप्त करने के प्रयास न करे। प्रयास तो जानवरों को भी किसी न किसी हद तक करना ही पड़ता है वरना न मकड़ी जाला बनाती और न चींटियाँ पंक्ति बनाकर चलतीं। और न ही पक्षी सुबह होते ही खाने की तलाश में निकलते

لَو اَنَّكُمْ تَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ لَرُزِقْتُمْ كَمَا تُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُوخِمَاصًا وَتَرُوْحُ بِطَانًا ـ(الترمذی ابواب الزہد)

अर्थ:- ''अगर तुम अल्लाह पर भरोसा करते जैसा कि भरोसा करने का हक़ है तो तुम्हें उसी तरह रोज़ी दी जाती जिस तरह पक्षियों को दी जाती है कि वे सुबह भूखे निकलते हैं और शाम को भर पेट लौटते हैं।''

(तिर्मिज़ी अबवाबुज़्ज़ुहद)

अलबत्ता अल्लाह पर भरोसा करने (तवक्कुल) की यह शिक्षा मुसलमानों को रोटी का पुजारी बनने से ज़रूर रोकती है जो मौजूदा ज़मानों में कम्यूनिष्ट सोच की पैदावार है।

105. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह तुम्हारी फ़रियाद को सुनता है और तुम्हारे हालात को जानता है ।

106. मक्का के बहुदेववादी इस बात के क़ायल थे कि आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह ही है और उसी ने सूरज और चाँद को पैदा कर के सेवा में लगा रखा है। किन्तु इस वास्तविकता को मानने के बावजूद वे इस के तक़ाज़ों से मुँह चुराते थे और अल्लाह का साझीदार ठहराते थे । यहाँ इसी पर आश्चर्य व्यक्त किया गया है कि जब इस वास्तविकता को स्वीकार करते हैं तो फिर क्या चीज़ है जो इन को इस के तक़ाज़ों को पूरा करने से रोकती है । और ये किस तरह बहक जाते हैं?

ताकि हम ने इन पर जो मेहरबानी की उस की वे नाशुक्री (कृतघ्नता) करें और (दुनिया की ज़िन्दगी के) मज़े उड़ाऐं । तो बहुत जल्द इन्हें मालूम हो जाएगा । क्या ये देखते नहीं हैं कि हम ने एक अमन वाला हरम बनाया है और हाल यह है कि लोग इन के इर्द गिर्द से उचक लिए जाते हैं । फिर क्या वे असत्य को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं ।*(अल-क़ुर्आन)*

62. अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है और जिस के लिए चाहता है तंग कर देता है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।[107]

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾

63. और यदि इन से पूछो कि किस ने आसमान से पानी बरसाया और इस से ज़मीन को जब कि वह मुर्दा हो चुकी थी ज़िन्दा किया तो वे कहेंगे अल्लाह ने । कहो प्रशंसा है अल्लाह के लिए [108] मगर अधिकतर लोग बुद्धि से काम नहीं लेते।[109]

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

64. और यह दुनिया की ज़िन्दग़ी कुछ नहीं है किन्तु खेल कूद और बहलावा (लहव व लअिब) और आख़िरत का घर ही असल ज़िन्दगी (की जगह) है।[110] काश ये लोग जान लेते।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾

65. जब ये लोग नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, दीन (विनम्रता एवं दासता) को उस के लिए ख़ालिस करते हुए।[111] फिर जब वह उन्हें बचाकर थल की तरफ़ ले आता है तो ये यकायक शिर्क करने लगते हैं।

فَاِذَا رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾

66. ताकि हम ने इन पर जो मेहरबानी की उस की वे नाशुक्री (कृतघ्नता) करें और (दुनिया की ज़िन्दगी के) मज़े उड़ाऐं । तो बहुत जल्द इन्हें मालूम हो जाएगा ।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

67. क्या ये देखते नहीं हैं कि हम ने एक अमन वाला हरम बनाया है और हाल यह है कि लोग इन के इर्द गिर्द से उचक लिए जाते हैं।[112] फिर क्या वे असत्य को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं ।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

68. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या हक़ (सत्य) को झुठलाए जब कि वह उस के पास आ चुका हो ।[113] क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा?

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًی لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

69. और जो लोग हमारी राह में जद्दोजहद करेंगे [114] हम ज़रूर उन पर अपनी राहें खोल देंगे [115] और निश्चय ही अल्लाह सुकर्मियों के साथ है।[116]

وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

107. अर्थात् यदि ये अपनी रोज़ी में वृद्धि के लिए ग़ैरूल्लाह को पुकारतें हैं तो इन्हें समझ लेना चाहिए कि रोज़ी का मामला अल्लाह के हाथ में है और उस की तमाम तदबीरें हिकमत से भरी होती हैं । वह अपने बन्दों के अच्छे बुरे को ख़ूब जानता है । और यह उस की नीतिपूर्ण तदबीर है कि किसी को वह अधिक रोज़ी देता है और किसी को नपी तुली ।

108. अर्थात् अल्लाह का शुक्र है कि तुम ने यह मान लिया कि यह सब कुछ अल्लाह का किया धरा है। और जब तुम ने यह स्वीकार कर लिया कि ये सब अल्लाह ही की क़ुदरत है तो फिर उसी के गुण गाओ और उसी की प्रशंसा करो ।

109. अर्थात् यदि वे बुद्धि से काम लेते तो विपरीत बातें न करते। एक तरफ़ एक बड़ी वास्तविकता को स्वीकारते भी हैं और दूसरी तरफ़ मुँह भी फेरते हैं।

110. अर्थात् मूल, वास्तविक और अनंत जीवन आख़िरत ही का जीवन है जहाँ की नेमतें स्थायी, जहाँ के बाग सदाबहार और जहाँ का आनन्द एवं ऐश्वर्य हमेशा के लिए है। इस के विपरीत सांसारिक जीवन कुछ ही क्षणों का है और जिस के लाभ बिलकुल तुच्छ हैं परन्तु सांसारिक जीवन की मोह माया ऐसी है कि आदमी का दिल बहल जाता है और इस के लाभों एवं चमक दमक में मग्न हो जाता है। आख़िरत में जब मनुष्य आँखें खोलेगा तो उसे एहसास होगा कि असली जीवन तो यही आख़िरत का जीवन था और दुनिया में जो जीवन मैं ने गुज़ारा यह अपने लाभों एवं स्वार्थों और अपने वैभव एवं ऐश्वर्य की दृष्टि से बस खेल कूद और दिल का बहलावा था। इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए इन्सान को चाहिए कि वह दुनिया को नहीं बल्कि आख़िरत को अपना लक्ष्य बनाए और दुनिया में इस प्रकार जीवन बिताए कि आख़िरत की सफ़लता उसे प्राप्त हो जाए।

सांसारिक जीवन की यह तुच्छता उस के ख़ालिस भौतिक लाभों और उस की चमक दमक के पहलू से आख़िरत के जीवन की तुलना में है वरना क़ुर्आन ही के अनुसार सांसारिक जीवन एक परिक्षा का जीवन है और जो व्यक्ति ईमान ला कर नेक ज़िन्दगी गुज़ारता है वह बाकी रहने वाली नेकियों की बहुत बड़ी दौलत को समेट लेता है। और यह उस की बेहतरीन सफ़लता एवं उत्तम उपलब्धि है।

111. व्याख्या के लिए देखिए सूरह यूनुस नोट ४२

112. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़सस नोट १११

113. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट ४०

114. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अनकबूत नोट ८

115. तात्पर्य ख़ैर और भलाई की राहें हैं। जो व्यक्ति अल्लाह की राह में कठिन परिश्रम एवं कष्ट सहन करता है अल्लाह उस पर ख़ैर और भलाई की राहें खोल देता है अत: उस के अन्दर अच्छे गुण परवान चढ़ने लगते हैं। उस का हौसला बढ़ जाता है वह असत्य का मर्दानगी के साथ मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो जाता है। उस के अन्दर सूझ बूझ और अन्त: दृष्टि पैदा हो जाती। उस की क्षमताऐं बढ़ जाती हैं और वह अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों पर नेकियाँ हासिल करता हुआ अपने रब के पास पहुँच जाता है।

116. यहाँ मुहसिनीन (सुकर्मियों) से तात्पर्य विशेष रूप से वे लोग हैं जो अल्लाह की राह में जद्दोजहद करने वाले, उस की ख़ातिर अनथक प्रयास और जान लड़ा देने वाले और उस के दीन पर जमने और उस के प्रचार एवं प्रसार की राह में हर प्रकार के कष्टों को सहन करने वाले हों। ऐसे सुकर्मियों को अल्लाह तआला ने अपने साथ की ख़ुशख़बरी सुनाई है। और जिस को अल्लाह तआला का साथ हासिल हो गया, तय बात है कि क़दम क़दम पर उस की सहायता होगी और वह सफ़लता की मन्ज़िल को अवश्य पहुँचेगा ।

शब्द सूचि
(Index)

शब्द सूचि (Index)
(पृष्ठ नं.)

अल्लाह
---- हिकमत वाला 56, 254, 542, 592, 628, 718, 818, 819, 824
---- बाख़बर 56
---- क्षमा करने वाला 69, 214, 276, 310, 366, 450, 451, 546, 586, 600, 634, 722, 766
---- दया करने वाला 69, 88, 214, 215, 546, 547, 586, 600, 612, 634, 666, 686, 692, 694, 702, 704, 712, 722, 766,
---- ही की इबादत 96, 404, 405, 416, 432, 434
---- ही पर तवक्कुल 96
---- एकमात्र पूज्य 74, 75, 84, 388, 508, 509,530, 582
---- ही के लिए ग़ैब 96,158,746,747
---- निगराँ है 60
---- मुहब्बात रखने वाला 88
---- को मानना और फिर शिर्क करना 146,147
---- अर्श पर बुलन्द 2, 4, 430, 431
---- आसमान और ज़मीन का मालिक 28, 34, 162, 430, 431, 726, 727
---- जिलाने और मारने वाला 28
---- लोगों पर मेहरबान 30, 31
---- की औलाद नहीं 34, 35, 338, 339, 422, 423,
---- हर चीज़ पर क़ादिर (सर्व सामर्थ्यवान) 56, 256, 257, 625,
---- का सिंहासन पानी पर था 60, 61
---- अल्लाह की तरफ़ झूठ मंसूब करना 62,63
---- की मुलाक़ात का विश्वास 154
---- सज़ा देने में सख़्त 158
---- सब से बड़ा 158, 546, 547
---- ऊँचे दर्जे वाला 158, 546
---- को पुकारना सही है 162, 163
---- के आगे झुकना 162,163,250,251,524, 525
---- प्रत्येक वस्तु का सृष्टा 162, 220
---- के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान 168,169
---- प्रभुत्वशाली 182, 198, 254, 666, 686, 692, 694, 696, 702, 704, 712, 718, 750, 818, 824
---- ख़ूबियों वाला है 182, 546
---- की नेमतों को गिन नहीं सकते 192, 193, 238, 239
---- ज्ञान वाला 220, 238, 348, 604, 628, 746, 748, 824, 836
---- और बुलंद 230, 231,
---- के हुक्म से हर चीज़ वजूद में आती है 230, 234, 246, 247, 792, 793
---- पर भरोसा 246
---- स्नेह करने वाला 250
---- सुनने वाला 290,310, 348
---- सिंहासन वाला 310, 311, 478, 576, 582
---- सहनशील 310
---- का क़ुर्ब तलाश करना 314
---- काम बनाने वाला 76, 77
---- या रहमान कह कर पुकारना 334, 335,
---- के लिए सब अच्छे नाम 334, 430
---- के लिए सारी तारीफ़ 334, 335, 338
---- के लिए बड़ाई 334
---- के हुक्म में कोई साझीदार नहीं 348
---- के आदेशों को कोई बदल नहीं सकता 348,349
---- के लिए सारे अधिकार 358, 359
---- ज़ुल्म नहीं करता 358, 360
---- की बातें लिखने के लिए समुद्र रौशनाई बन जाए तो काफ़ी न हो 388
---- बेटा बनाना उस की शान के ख़िलाफ़ 404, 405, 422, 578, 579
---- की तरफ़ सब लौटाए जाऐंगे 408,792,793
---- का वादा पूरा हो कर रहना है 412, 413

---- से डरने वालों के लिए जन्नत 412, 413
---- बिगड़े हुए लोगों को संभलने का मौक़ा देता है 421
---- गुप्त बातों का जानने वाला 430, 431
---- के सिवा कोई इष्ट पूज्य नहीं 430, 432, 458, 792
---- ही के लिए आसमान और ज़मीन की बादशाही 616, 618, 634
---- का मूसा से हमकलाम होना 432, 433
---- का ज्ञान हर चीज़ पर हावी है 458, 459
---- हैय्यु व क़य्यूम 460
---- किसी के आगे जवाबदेही नहीं 478, 479
---- अनेकेश्वरवाद की धारणा ग़लत और असत्य है 478, 479
---- से डरने की हिदायत 516, 517
---- के बारे में बग़ैर ज्ञान के बहस करना 516, 520, 521,
---- ही का हक़ है 520, 521, 546, 600, 794, 795
---- मुर्दों को ज़िन्दा करता है 520, 521
---- की राह से रोकना 526, 527
---- की हुर्मतों का आदर 530, 531
---- के नज़दीक एक दिन एक साल के बराबर 538, 540
---- हलीम है 546, 547
---- विशाल है 604, 610
---- सुक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला 546, 547
---- बेनियाज़ 546, 547
---- को मज़बूत पकड़ने का मतलब 550
---- तौबा क़ुबूल करने वाला 592
---- आसमानों और ज़मीन का नूर 612, 613
---- बड़ा ही बरकतवाला 634, 658
---- के नूर होने का मतलब 613
---- के बरकत वाला होने का मतलब 634
---- की योजना बद्धता 634, 635
---- ज़िन्दा है और कभी मरने वाला नहीं 654, 655
---- का डर उस की महानता दिल में बिठाने से पैदा होता है 689
---- के लिए प्रशंसा 742, 758, 792, 799, 836
---- बेक़रार की फ़रियाद सुनने वाला 746, 747
---- का अस्तित्व, एक वास्तविकता 743
---- के सिवा कोई पूज्य नहीं 802
---- के सिवा हर चीज़ विनष्ट होने वाली है 802
---- ही को फैसले का अधिकार है 802
---- का सहयोग नेक लोगों को 836

अल्लाह का राजसिंहासन
---- पानी पर था 61

अल्लाह का घर (देखिए बैतुल्लाह) 526

अल्लाह के चिन्हों का आदर 530, 531

अंतरिक्ष के उपग्रहों का अपने मदार में तैरना 480, 481,

अंधविश्वास 279

अबू बक्र (रजि.) 315

अय्यूब (अलैहिस्सलाम)
---- का बीमारी में मुब्तिला होना और फिर अच्छा होना 500, 501

अरब वासियों का बेटियों को कमतर समझना 254, 255

अली (रजि.) 315

असत्य (देखिए बातिल) 662, 663

असहाबुर्रस 648
---- कौन थे 649

अहले किताब 174, 175
---- में सत्य प्रिय 179, 332,
---- यहूदियों का अपनी किताब को टुकड़े टुकड़े कर देना 227
---- में से वे लोग जो किताब पर ईमान लाए 784, 785, 824, 825
---- से बहस का तरीक़ा 828, 829

(आ)

आख़िरत
---- का बदला 64
---- का अज़ाब 174, 294, 466
---- में कौन लोग तबाह होंगे 300
---- का इच्छुक 298, 300
---- जीवन लक्ष्य 300
---- बेहतर 302, 303
---- पर ईमान लाने वाले 312, 718, 719
---- में अन्धा 320, 321
---- पर ईमान न रखने वाले 64, 574, 575, 718, 719

---- आवागमन एक बुद्धि विरुद्ध सिद्धान्त 581, 748
---- के बारे में बहुदेववादियों की जानकारी गड्ड मड्ड 746, 748
---- का घर किन लोगों के लिए है 798, 799
आद 76, 184, 648, 692, 822
आदम (अलैहिस्सलाम) 412
---- का वृत्तांत 462, 463, 462, 463
---- को जिस जन्नत में रखा गया था उस की परिस्थिति 462, 463
---- शैतान का आदम को बहकाना 462, 463
---- से भूल 462, 463
आयत
---- शाब्दिक अर्थ 155
---- आयते-इलाही के द्वारा नसीहत 662, 663
आसमान और ज़मीन
---- बिना स्तंभो के 154, 155
---- की रचना सत्य के साथ 168, 220, 221, 230,231,824,825
---- में बुर्ज 206, 207,
---- पाकी बयान करता है 310
---- सात आसमान 310
---- चिराग़ और रौशन चाँद 658, 659
---- के ख़ुदा के अस्तित्व के अन्दर से वजूद में आने का ऋग्वेद का ग़लत सिद्धान्त 743
---- का पैदा करने वाला
---- की पैदाईश ६ दिनों में 654

(इ)

इन्सान
---- सब एक समुदाय थे 12, 13
---- का हाल दया उन्डेले जाने पर 60
---- का हाल कष्ट में डाले जाने पर 60, 61
---- की पैदाइश निरुद्देश्य नहीं 189
---- की पैदाइश मिट्टी से 210, 211, 212,
---- डारविन के सिद्धान्त का खण्डन 211
---- का अस्तित मात्र भौतिक नहीं 212
---- की पैदाइश पानी की बूँद से 654, 655
---- जल्दबाज़ सिद्ध हुआ है 294, 296, 484, 485
---- आख़िरत के लिए पैदा किया गया है 302
---- बड़ा नाशुक्रा 318
---- श्रेष्ठ सृष्टि 321
---- और फ़रिश्तों के बीच श्रेष्ठता का सवाल 321
---- बड़ा तंग दिल 332,333
---- पर ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं 355
---- दुनिया में हमेशगी किसी को नहीं 480, 482
---- की पैदाइश के मरहले 516, 517, 518, 554, 555, 560, 561
---- सत्ता के योग्य कौन लोग हैं 538, 539
---- नसब और ससुराल के रिश्ते 654, 655
इच्छा भक्ति 650, 651
इतिहास की मौजूदा किताबों की बहुत बड़ी त्रुटि 693
इदरीस (अलैहिस्सलाम) 410,411,500,501
ईनाम और दण्ड (देखिए जज़ा और सज़ा) 198, 272
इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में ख़र्च) 166,168,192
''इन्शाअल्लाह'' कहना 348,349
इफ़्क (दोषारोपण) की घटना 592, 593, 594
---- उस रिवायत की समीक्षा जिस में बयान हुआ है कि आइशा (रज़ि.) पर दोषरोपण लगाया गया था 594, 595, 596,597
इबादत
---- अल्लाह के सिवा किसी की नहीं 56, 57, 64, 74, 76, 84, 302, 501, 502, 658, 659
---- का मतलब 56, 57
---- अपने रब की 226, 227, 244
---- और इताअत का अन्तर 303
---- अल्लाह की इबादत में किसी को साझी न बनाने की **हक़ीक़त** 433, 434
---- एक किनारे पर रह कर अल्लाह की इबादत करना 520, 521
---- का तरीक़ा अल्लाह ने तय किया है 548,549
इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) 80, 81, 538
---- के पास फ़रिश्तों का पहुँचना 78, 79, 818,819
---- की पत्नी 80, 81
---- की दुआ 192, 193, 682, 683
---- के मेहमानों का क़िस्सा 216, 217
---- मिसाली व्यक्तित्व 282, 283
---- के तरीक़े की पैरवी का हुक्म 282, 283
---- निहायत सच्चे 408, 409
---- की अपने बाप को एकेश्वरवाद की दअवत 408,409
---- की शिर्क और बुत परस्ती की मुख़ालफ़त 408, 409, 494, 495, 678, 679, 814, 815

---- के लिए सच्चाई की ज़बानें बुलंद कर दी गईं 410, 411, 682, 683
---- को उन के शान के अनुकूल हिदायत 486,487
---- का अपने बाप को बुत परस्ती से मना करना 486, 487
---- पर आग का ठन्डा होना 494,495, 818
---- इब्राहीम और लूत की हिजरत बरकत वाली ज़मीन की तरफ़ 494, 495, 818, 819
---- उस हदीस की हक़ीक़त जिस में हज़रत इब्राहीम की तरफ़ तीन झूठ मन्सूब किए गये है 492, 493
---- को इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किए गये 494,495
---- के लिए बैतुल्लाह की जगा सुनिश्चित की गई 526, 527
---- का दीन 550, 551
---- की अपने पिता और क़ौम को दअवत 678, 679, 880, 812
---- नुबुव्वत इब्राहीम ही की नस्ल में है 818, 819
---- को दुनया में सिला 818, 819

इब्लीस
---- का इन्सान को सज्दा करने से इन्कार 210, 211, 318, 362
---- का एतिराज 318
---- इन्सान का दुश्मन 312
---- जिन्नों में से 362, 363

इमारतें बनाना
---- अहं और गर्व के लिए 696, 697

इस्माईल (अलैहिस्सलाम) 196, 197, 500
---- वादे के सच्चे 410, 411

इस्रा की घटना 290, 291, 292
---- आखों देखा 314, 316

इस्लाम
---- व्यापक अर्थ में दीन है 587
---- सामाजिक जीवन से सम्बन्धित हिदायत देता है 578
---- की एक दंड संहिता भी है 587
---- यह ग़लत विचार है कि इस्लाम का आरम्भ क़ुर्आन के पैग़म्बर से हुआ और क़ुर्आन अवतरण के समय कोई मुस्लिम मौजूद न था 785
---- क़ुबूल करने के बाद आज़माइश 806, 807

इस्लामी तहरीक़ें और नबियों की दअवत 689

इस्हाक़ (अलैहिस्सलाम) 80,196,197,410,411
---- ज्ञान वाले 216, 217

(ई)

ईमान का फ़ल 7

ईमान वाले
---- का बेहतरीन अन्जाम 526, 527
---- का अल्लाह की तरफ़ से बचाव 534, 535
---- से वचन कि वह उन्हें सत्ता प्रदान करेगा 624,625
---- के लिए क्षमा और इज़्ज़त की रोज़ी 542, 543
---- के गुण 554, 555, 556, 570, 571
---- के लिए जन्नत का वादा 446, 447
---- के लिए कोई भय न होगा 570, 571
---- रसूल का फैसला स्वीकार करते हैं 620, 621

ईमान वालो के गुण 166, 167, 168, 169, 170, 214, 215, 272, 273, 283

ईसा (अलैहिस्सलाम)
---- का जन्म स्थल 399, 400, 401, 566, 567
---- का पालने में बात करना 404, 405
---- बुद्धि का प्रयोग शरीअत के आदेशें पर चलने में 630, 631

ईसाइयों का मतभेत 404, 405

(ऋ)

ऋग्वेद
---- में प्रकृति के अनादिकालिक होने की कल्पना 744

(ए)

एलोरा और अजन्ता की गुफ़ाऐं
---- बुतपरस्ती और बेहयाई को बढ़ावा देने वाला आर्ट 697

(ऐ)

ऐका वाले 220,221,702, 703

(औ)

औरत
---- कुछ औरतें मर्दों से अधिक सूझ बूझ वाली होती हैं 731, 732
---- सबा की रानी की समझ शक्ति 731, 732
---- की सरदारी का मसला और सबा की रानी 737

औलिया अल्लाह (अल्लाह के दोस्त) 30, 31, 32

(क)

क़त्ल 306, 307
---- हराम है 658

---- हक़ की बिना पर जायज होने की व्याख्या 660, 661
---- काफ़िर जाति के सदस्य को नाहक क़त्ल करना जायज़ नहीं 767
---- क़त्ले औलाद 306, 307
क़ब्र पूजा 346
कम्युनिज़्म की तरफ़ दौड़ना 719
करामत की हक़ीक़त 349,350
कर्म फ़ल 309,320,321,358,359
कर्मों का आकारथ जाना 384
कलिमा तैय्यिबा की मिसाल 190, 191
कलिमा ख़बीसा की मिसाल 190, 191
क़ल्बे सलीम (शुद्ध हृदय) 682, 683
क़स्मों को विश्वासघात का साधन न बनाओ 268, 269
कहफ़ और रक़ीम वाले 340,341,342, 344, 345, 346, 348, 349, 350
---- रक़ीम से मुराद 341
---- का स्थल आधुनिक शोध के अनुसार ओमान के निकट 341
---- की घटना यमलोक के जीवन का तर्क प्रस्तुत करती है 342
---- रक़ीम के पहाड़ का दृश्य 347
---- और करामत 349
---- अर्रक़ीम कहाँ पर स्थित है 352
काफ़ पर्वत 347
काफ़िर
---- के कर्मों की मिसाल 188,189,616,617
---- का एक दिन मुस्लिम होने की तमन्ना करना 202, 203, 686, 687
---- काफ़िरों के लिए जहन्नम की सज़ा 624, 625
---- काफ़िरों के लिए अपमानजनक अज़ाब 542,543
---- के कर्म धूल की भाँति उड़ा दिए जाऐंगे 666,667
---- का पछतावा 644, 645, 686
---- ख़ुदा की निशानियों को झुठलाने वाले काफ़िर ही हैं यद्यपि उन पर किसी नबी के द्वारा हुज्जत न क़ायम हुई हो 649
---- को कुफ्र के अलावा अन्य अपराधों की भी सज़ा मिलेगी 661
---- अल्लाह की रहमत से मायूस 814, 816
कायनात
---- खेल के तौर पर नहीं बनाई गई हैं 476, 477
---- हिन्दु दर्शन लीला का खण्डन 477
---- में जो कोई है अल्लाह ही की तस्बीह कर रहा है 616, 617
---- का रेकार्ड रखने वाली किताब 31,56,58
क़ारून 794, 795
काहिन (ज्योतिषी)
---- पामिस्ट्री कहानत की एक क़िस्म 713
---- बावाओं की ओर संपर्क करना 713
क़ियामत
---- का दिन 46, 92
---- के दिन काफ़िरों के पेशवाओं की बेबसी की तस्वीर 189
---- के दिन हिसाब क़ायम होना है 196
---- की हौलनाकी 196, 197
---- के दिन काफ़िरों का गुनाहों के बोझ उठाना 238,239
---- के दिन काफ़िरों के लिए अपमान 242,243
---- का मामला आँख झपकने की तरह 264,265
---- के दिन कर्म पत्र निकाले जाऐंगे 298,299
---- से पहले कोई आबादी नहीं जो विनष्ट न हो 314, 315
---- के दिन हर व्यक्ति अपने लीडर के साथ होगा 321
---- के दिन काफ़िर अन्धे उठाए जाऐंगे 330, 331
---- के दिन ज़मीन चटियल मैदान 338,339
---- के दिन पहाड़ चलाए जाऐंगे 358, 359
---- के दिन सब को इकट्ठा किया जाएगा 358,359
---- के दिन ख़ुदा के हुज़ूर पेशी 358, 359
---- का दिन ज़ालिमों के लिए हसरत का दिन होगा 408, 409
---- के दिन सब अकेले अकेले उपस्थित होंगे 422
---- की घड़ी आने वाली है 432, 433
---- के दिन सूर का फूँका जाना 458, 459, 580, 581
---- के दिन पहाड़ धूल बन कर उड़ेंगे 458, 459
---- के दिन सब की आवाज़ें पस्त 1070,1071
---- हिसाब की घड़ी निकट आ लगने का मतलब 475
---- के दिन इन्साफ़ का तराज़ू 486, 487
---- के दिन आसमान लपेट दिए जाऐंगे 508, 509
---- की घबराहट सच्चे ईमान वालों को परेशान नहीं करेगी 508, 509, 754, 756

---- का ज़लज़ला 516, 517
---- के दिन बादशाही अल्लाह की है 542
---- के दिन मतभेदों का फैसला 548
---- के दिन ज़बान और हाथ पाँव गवाही देंगे 600
---- की घड़ी को झुठलाने वालों का अन्जान 638,639
---- के दिन आसमान का फट जाना 644,645
---- के दिन निशानियाँ दिखाई जाऐंगी 758, 759
---- के दिन हर उम्मत से एक गवाह पेश किया जाएगा 794, 795
---- के दिन कोई किसी का बोझ उठाने वाला नहीं 810, 811
---- निकटतम नातेदारों को अल्लाह से डराने का हुक्म 708, 709

क़ुर्आन

---- किताबे-हिकमत (तत्वपूर्ण ग्रंथ) 2,3
---- में नबी भी संशोधन नहीं कर सकता 10,11
---- मनगढ़न्त नहीं 22, 23, 40, 41
---- सारे जहाँ के रब की ओर से 22, 38, 40, 704, 705
---- का चैलेंज कि उस जैसा कलाम बना कर लाओ 22, 23, 62, 63, 328, 329
---- हिदायत और रहमत 30, 31, 146,147
---- नसीहत 30, 31
---- शिफ़ा 30, 31
---- कि आयतें पुख्ता 56, 57
---- रौशन किताब 100,101, 202, 203,718,719,762
---- अरबी में 100, 101, 174, 175, 460, 704, 705
---- केवल तिलावत के लिए नहीं बल्कि समझने के लिए भी 101
---- का ग़ैब की ख़बरें बताना 146, 147
---- मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम सब के समझने की चीज़ 171
---- रौशनी में लाने वाली किताब 182, 183
---- एक पैग़ाम 198, 199
---- का असली मिशन 199
---- की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने ली है 202, 203
---- के शाब्दिक अर्थ 203
---- अपने असली रूप में सुरक्षित 203, 204
---- सबअ मसानी 226, 227
---- क़ुर्आने-अज़ीम 226, 227
---- को बयान करने का काम रसूल के सुपुर्द 246
---- पढ़ते समय शैतान से अल्लाह की पनाह माँगना 272, 273
---- की रहनुमाई सीधी राह की तरफ़ 294, 295
---- में हर तरह से स्पष्टीकरण 310, 311
---- के और काफ़िरों के बीच परदा 312, 313
---- कि क़िर्अत फ़ज्र की नमाज़ में 324, 325
---- शिफ़ा और रहमत 324
---- में बातों को दोहराने की हिकमत 329
---- हक़ के साथ नाज़िल हुआ है 332, 333
---- का अवतरण क्रमानुसार 334, 335 644, 645
---- को पढ़ते हुए करूणा भाव और सज्दा 334,335
---- सीधी सच्ची किताब 338,339
---- की प्रमुख विशेषताऐं 339
---- आम इन्सानों को सुनाने का आदेश 350
---- में तरह तरह की मिसालें 362, 363
---- अवतरण का उद्देश्य 430, 431
---- एक याद्देहानी 430, 431, 476
---- ज़िक्र है 458, 459
---- से मुँह फेरने वाले 458, 459
---- में चेतावनियाँ 460, 461
---- एक बरकत वाला ज़िक्र 486, 487
---- स्पष्ट दलील 524
---- का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है 586, 802, 803
---- के मन गढ़न्त होने का आरोप 634, 635
---- को छोड़ देना 644, 645
---- को समझने की कोशिश न करना 645, 826
---- के द्वारा जिहाद 650, 651, 652
---- का अनुवाद इस का भाव व्यक्त करने का एक प्रयास है 705
---- पिछले सहीफ़ों में मौजूद है 704, 705
---- ग़ैर अरब वालों के लिए भी हुज्जत 705, 706
---- को सुनने से शैतान दूर रखे गए हैं 708, 709
---- शायरी नहीं 714
---- यह समझना सही नहीं कि तफ़सीर के बग़ैर क़ुर्आन को समझा ही नहीं जा सकता 719
---- पढ़ कर सुनाने का आदेश 758, 759

---- की आयतें ज्ञान रखने वालों के दिलों में हैं 828, 829
क़ुर्बानी
---- का मूल तक़वा और परहेज़गारी है 530, 531
क़ौमी यादगारों की स्थाप्ना 697
क़ौमों का विनाश 426,227,476,477,538, 539, 560

(ख)

ख़र्च में संतुलन 658, 659
ख़लीफ़ा ज़मीन का 10, 11
ख़िज़्र
---- नबी थे 369
---- फ़रिश्ते नहीं थे 369
---- ख़ियानत करने वाले अल्लाह को प्रिय नहीं 534, 535
---- ख़िलाफ़त का अर्थ 625
ख़ुदा
---- के बारे में धर्म विद्वानों की फ़लसफ़ियाना बातें 655
---- के बारे में बहुदेववादियों की घटिया धारणा 747
---- के बारे में यह दावा भी कि वह एक है और साथ ही त्रीश्वरवाद की धारणा भी और साथ ही अनेकेश्वरवाद की धारणा भी ! 747
---- का अन्य ख़ुदाओं को जन्म देने की धारणा 747
खूशू का मतलब 555
ख़ून की हुर्मत 278

(ग)

गवाही
---- तोहमत लगाने वालों की क़ुबूल न करना 586, 588
---- गुप्तांगो की रक्षा करना 604, 605,606
गुमान के पीछे चलना 22, 23
गुलाम (ममलूक) जो आज़ाद होना चाहते हो उन से लिखित समझौता करना 612, 613
ग़ैरूल्लाह को पुकारना 520, 521, 525

(घ)

घटनाओं में विहित मसलहतें 369
घर
---- इजाज़त ले कर घरों में प्रवेश करने की हिदायत 600, 601
---- में प्रवेश करते समय सलाम करने की हिदायत 600, 601, 628
---- बच्चों के लिए तीन समयों में इजाज़त लेने कि हिदायत 628, 629
---- अपंगों को घरों से खाने की छूट 630
---- रिश्तेदारों और दोस्तों के घरों से खाने में कोई हर्ज नहीं 630, 631

(च)

चाँद की मन्ज़िलें 6, 7

(ज)

जंग
---- की अनुमति 534, 535
---- की मस्लहतें 534, 535
---- बराबरी का बदला लेना 546, 547
ज़कारिया
---- की बेटे के लिए दुआ 392,393,500,502
ज़कात
---- का हुक्म घर वालों को देना 410, 411
---- देना ईमान वालों की विशेषता 554,555, 718
---- से ग़फ़लत न बरतने वाले 616, 617
---- देने का हुक्म 628
ज़क़्क़ूम का वृक्ष 316
जज़ा और सज़ा 196, 198, 276
---- कर्मानुसार 187, 189, 272
---- जरूर होगी, इस के प्रमाण 7
जन्नत 6, 7, 94, 166, 174, 175, 190, 191, 242, 520
---- सलामती का घर 16, 17
---- की ज़िन्दगी 215, 354, 355
---- फ़िरदौस 384
---- में कोई व्यर्थ बात सुनने में नहीं आएगी 412,413
---- में सुबह और शाम रिज़्क़ 412, 413
---- में बुलन्द दर्जे 446, 447
---- में केवल सलमती की बातें होंगी 412
---- वाले आरामगाह में 644
---- परहेज़गारों के लिए करीब लाई जाएगी 682, 684
---- की बुलन्द मन्ज़िलें 832
ज़बूर 314, 315, 508, 509

ज़मीन
---- का फैलाव 154
---- क़ियामत के दिन बदल दी जाएगी 198, 199
---- पर अकड़ कर न चलो 310, 311
---- का ऐश्वर्य आज़माइश के लिए 338, 339
---- के वारिस 508, 509
---- में चलना फिरना 538, 539, 746, 748
---- में फ़साद बरपा करना 696, 697
---- अल्लाह की सृष्टि को अवलंबन करने के लिए ज़मीन में सफ़र करने की दअवत 814, 815
ज़हन्नम 6, 62, 64, 92,96,154, 242, 294, 310, 330, 331, 384
---- में पीप लहू 186, 187
---- बुरा ठिकाना 190
---- के दरवाज़े 214, 215
---- की क़नातों से जहन्नम को घेर रखा है 354,355
---- पर वारिद होने वाले 416, 417
---- वारिद होने का अर्थ 417, 418
---- में अपराधी न जिऐंगे न मरेंगे 446, 447
---- बुत जहन्नम का ईंधन 504, 505
---- में प्रवेश पाने वालों का हाल 580, 581
---- की तरफ़ काफ़िर मुँह के बल घसीटे जाऐंगे 648
---- का अज़ाब चिमट कर रह जाने वाला है 658,659
---- बेनिक़ाब कर दी जाएगी 686, 687
---- में औंधे मुँह डाले जाने वाले लोग 758, 759
जादू
---- का हज़रत मूसा के मोज्ज़े के सामने बातिल हो जाना 444, 445
---- जादूगरों का ईमान लाना 446, 447, 674, 675
---- जादूगरों का ईमान लाने के बाद फ़िरऔन को चैलेन्ज 446, 447
----में यह असर नहीं कि किसी को पागल बना दे 445
जाफ़र बिन अबी तालिब
---- की शाह हब्श के दरबार में तक़रीर 391
ज़िक्र
---- का अर्थ 434
---- अल्लाह के ज़िक्र से मुँह फेरने वालों के लिए तंगी 462, 463
---- अल्लाह के ज़िक्र से सम्बन्धित मुसलमानों के विभिन्न समूहों के विभिन्न दृष्टिकोण 467
---- से दिल दहल जाना 530, 531
ज़िक्र और दुआ
---- सुबह उठते ही 651
---- बहुत बड़ी चीज़ 824, 826
ज़िना
---- की मनाही 306,307
---- के मुकदमे 307
---- की सज़ा 586,590
---- ज़ानी से निकाह हराम 586,590
---- का आरोप लगाने वालों के लिए सज़ा 586,590
---- एक संगीन गुनाह 587
---- बलात्कार 613
---- के गवाहों की संख्या 587
---- विवाहित व्यभिचारी एवं व्यभिचारीणी के लिए संगसार करने का हुक्म सुन्नत से साबित है 588, 589
---- यह रिवायत की पत्थरवाह करने की आयत क़ुर्आन में थी ग़लत है 589
---- का आरोप अपनी पत्नी पर लगाना 586, 593
---- की आख़िरत में सज़ा 658, 659
जिन्न
---- की पैदाइश 210, 211
---- अफ़रीत 734, 735
---- ज़िन्नों का लश्कर 722, 723
ज़ीनत (औरतों की)
---- का मतलब 605
---- ज़ाहिर होने वाली ज़ीनत को छिपाने का हुक्म 604, 606, 607
---- किन लोगों पर ज़ाहिर की जा सकती है 604
---- सत्रे-औरत (छिपाने के अनिवार्य अंश) 607
---- चेहरा और हथेलियों का खुला रहना 607,608
---- दुपट्टे का हुक्म 604,606
---- घर का परदा 608, 609
---- ज़ेवर की झंकार 604,609
---- की नुमाइश करना जाइज़ नहीं 628, 629
---- बूढ़ी औरतों के लिऐ दुपट्टा न लेने की छूट
ज़ुन्नून (यूनुस) 500, 502
ज़ुलक़रनैन की दीवार 378
ज़ुल-किफ़्ल 500, 501
जूदी 70, 71
ज्योतिषी (देखिए काहिन) 713
ज्ञान

---- में वृद्धि के लिए दुआ 460, 461
---- से मुराद 461

(ट)

---- टीटस (Titus) रोमी 295

(त)

तक्लीद (अंधानुकरण) के लिए ग़लत तर्क 247
तक़वा 174, 175
---- अपनाने वालों का फल नष्ट नहीं होता 140,141
---- अपनाने वालों का बेहतरीन अन्जाम 141, 466, 468
---- और नेकी का बदला दुनिया में 243
---- का मतलब 468, 689
तज़्किय:
---- पाकीज़गी अपनाने वाले 446, 447
तबुर्रुज का मतलब 629
तराज़ू
---- सही तराज़ू से तौलना 702
तवक्कुल
तस्बीह
---- कायनात की 310, 311, 616, 618
---- करने का आदेश 466, 467
---- के कलिमात और उन की फ़ज़ीलत 467,468
ताग़ूत
---- से बचना 244, 245
---- से मुराद 345
---- ताविले-हदीस का मतलब 102
तुवा की पवित्र घाटी 432, 433, 435
तौबा
---- करने का आदेश 604, 609
---- की हक़ीक़त 662, 663
तौरात 292
---- आम इन्सानों के लिए हिदायत की किताब थी 781
---- की वह प्रति जो क़ुर्आन अवतरण से समय मौजूद थी 785
तौहीद की निशानियाँ 154,155,156,157, 208, 230, 231, 232, 234, 235, 254, 255, 264, 265
---- की शिक्षा तौरात में 292
---- के प्रमाण एवं तर्क 576, 577, 578, 620, 624, 648, 649, 650, 651, 666, 667, 726, 727, 728, 742, 743, 778, 779,

(द)

----दरयाओं के बीच आड़ 654, 655
दाऊद 314,315
---- और सुलैमान का मुक़दमें में फैसला करना 496, 497
---- के सहयोग के लिए पहाड़ और पक्षी वशीभूत कर दिए गए 496, 497
---- को ज़िरह बनाने की शिक्षा 496, 497
---- को ज्ञान 722, 723
दाब्बतुल अर्ज़
---- ज़मीन से जानवर का निकलना क़ियामत की बड़ी निशानी 754, 754
दअवत
---- का क़ुर्आनी अन्दाज़ 27, 75, 689
---- अल्लाह की ओर दअवत 146, 150, 802
---- पेश करने में नर्मी बरतने की हिदायत 438, 440
---- बहुदेववादी हुकूमत को चैलेंज के अन्दाज़ में 731
---- शिर्क और बुतपरस्ती पर चोट करने से पीछे हटना दअवत का तरीक़ा नहीं है 339
---- क़ुर्आन के तर्क सादा हैं 743
---- क़ुर्आन के द्वारा दअवत 759
---- जाहिलों से न उलझना 788, 789
दिल
---- का अंधापन 538, 539
---- के दुरूस्त होने का महत्व हदीस में 539
दीन
---- को ग़ालिब करना 27
---- दुनिया की मिसाल 16, 17
---- को टुकड़े टुकड़े करने वाले 504, 505, 570, 571
दुआ
---- क्षमा और दया की दुआ 582, 583
---- तज़्किय: के लिए दुआ 599
दुनिया
---- की ज़िन्दगी आख़िरत की तुलना में 168, 169, 276, 277
---- की मिसाल 358, 359
---- को लक्ष्य बना कर जीवन गुज़ारना 385
---- ही के लिए संघर्ष 385

---- क़ियामत के दिन एहसास होगा कि दुनिया में केवल कुछ ही दिन रहे 458,459,582,583
---- को ऐश्वर्य की जगह समझना 695, 697
---- की ज़िन्दगी का सामान 788, 789
---- की ज़िन्दगी का बेक़िमत होना आख़िरत की तुलना में 836, 837
दुनिया का अज़ाब 175
दूसरा जीवन 174
---- पर तर्क 157, 254, 255, 330, 333, 560, 561
---- सुनिश्चित 238, 312, 313
दोषारोपण (तोहमत)
---- पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाने वालों पर लानत 600, 601

(न)

नमाज़
---- क़ायम करना 42, 43, 166, 192, 196, 197, 324, 325, 628, 718
---- के प्रभाव 94, 95
---- का समय 324, 325
---- फ़ज्र की क़िर्अत 324, 325
---- तहज्जुद 324, 325
---- में क़िर्अत के आदाब 334, 335
---- जमाअत के साथ की मसलहत 351
---- का हुक्म घर वालों को देना 410, 411,466 467, 468
---- नष्ट करने पर डरावा 412, 413
---- अल्लाह की याद के लिए क़ायम करना 432, 433
---- क़ायम करने की हिदायत नबियों को 494,495
---- में अल्लाह का लगाव (खुशू) 554, 555
---- से ग़फ़लत न बरतने वाले 824, 826
---- बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है 824, 826
नातेदारों की मदद 268,269,302,303
नाप तौल
---- में कमी 88, 89
---- सही तराज़ू से 306
निकाह
---- व्यभिचारी एवं बहुदेववादी से हराम 586,590
---- व्याभिचारिणी एवं बहुदेववादी महीला से हराम 586, 590
---- के लिए उचित मेल (कुफ़ू) 600, 601
---- मुजर्रद (ब्रह्मचारी) लोगों के निकाह कर देने का निर्देश 604, 609, 610
---- नेक ग़ुलामों और लौंडियों का निकाह कर देने का निर्देश 604, 609, 610
---- लम्बी आयु तक निकाह न करना 610
निगाहें नीची रखो (स्त्री पुरुष दोनों को निर्देश) 604, 605, 606,
निशानी (मोज्ज़े) की माँग 168, 169, 328, 329, 330, 331
नुबुव्वत
---- और कहानत (ज्योतिष) में अन्तर 207
---- अल्लाह का उपहार 231
---- प्रयासों से प्राप्त नहीं की जा सकती 719,720
नूर
---- अल्लाह की पहचान तथा उस तक पहुँच का ज़रिया 613
---- ईमान का 613
नूह (अलैहिस्सलाम) 38, 39, 184, 290, 291, 412, 538
---- की नाव 38, 39, 290
---- का वृत्तांत 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 562, 563
---- क्या तूफ़ाने-नूह पूरी ज़मीन पर आया था? 71
---- की दुआ क़ुबूल 496, 497
---- की क़ौम को डुबो दिया गया 648, 810
---- की अपनी क़ौम को दअवत 688, 689, 692, 693
---- और ईमान वालों का निजात पाना 688, 689
---- की आयु 810, 812
नैतिक शिक्षाओं को सियासी रंग में प्रस्तुत करना 303
न्याय करने का आदेश 268, 269

(प)

पत्नी और संतान को आँखों की ठण्डक बनाने की दुआ 662, 663
परहेज़गार (देखिए मुत्तक़ी) 422
पानी
---- जीवन का मूल है 480, 481
---- प्रोटोप्लाज़्म 481
पेशवा

---- जहन्नम की ओर दअवत देने वाले 480, 481
प्रतिज्ञा
---- को पूरा करना 166,167,268,269,306
---- को तोड़ना 268, 269
---- अल्लाह से 208
प्रभुत्व के लिए दुआ करना 324, 326

(फ़)

फ़रिश्ते
---- मेहमानों के रूप में 216, 217
---- को रूह के साथ भेजना 230, 231
---- का इन्सानों को मौत देना 242, 243
---- उद्दण्ड नहीं 250
---- अल्लाह की आज्ञा का पालन करते हैं 250,251
---- को बेटियाँ बताना 310, 311
---- का इन्सान को सज्दा करना 318, 362
---- इबादत से थकते नहीं हैं 478, 479
---- अगर ख़ुदा होने का दावा करें तो जहन्नम में झोंक दिए जाऐं 480, 481
---- में से संदेशवाहक 550, 551
---- उतारे जाने की माँग 640, 641
फ़ितना और फ़साद से रोकने की ज़िम्मेदारी 96,97
फ़िरऔन 40, 41, 90, 332, 333
---- का डूबते समय ईमान लाना 42, 43
---- की लाश बचा ली गई 42, 44
---- उद्दण्ड 436, 437, 438, 762, 763
---- से यह माँग कि वह बनी इस्राईल को देश से जाने दें और उन को कष्ट न पहुँचाऐं 438, 439
---- का जादूगरों को इकट्ठा कर के हज़रत मूसा के मुक़ाबले में आना 444, 445
---- का जवाब मूसा को 668, 669
---- का रब्बुलआलमीन को मानने से इन्कार 672, 673, 778, 779
---- का दावा मात्र राजनीतिक संप्रभुता का नहीं था 669, 670
---- का डूबना 678, 679, 778, 824
---- के पास जाने का मूसा को आदेश 722, 723
---- की वर्गों में बांटे रखने की पॉलीसी 762, 763
फ़िलस्तीन 47
फ़ुज़ूल ख़र्ची की मनाई 302, 304
फ़ुर्क़ान 634
---- का मतलब 635

(ब)

बख़्त नसर (Nebuchadrezzar) 293
बदला लेने की अनुमति 286, 287
बनी इस्माईल
---- में आख़िरी पैग़म्बर से पहले कोई रसूल नहीं आया 780, 781
बनी इस्राईल 290, 291, 332, 333
---- के समुद्र पार करने का क़िस्सा 44
---- पर दुश्मन का मुसल्लत होना 290, 292
---- के निर्गमन का रास्ता 45,446,447,448
---- की बाबिल में क़ैद के दिन 293
---- पर अल्लाह के एहसान 450, 451
---- की गऊ पूजा 954, 455
---- नेमतों के वारिस बनाए गए 676, 677
---- मिस्र में कहाँ रहते थे ? 677
---- के उलमा 704, 704
बनी क़ुरैज़ा 295
बनी क़ैनक़ाअ 295
बनी नज़ीर 295
बहुदेववाद (देखिए शिर्क)
बाइबिल
---- के उस बयान का खण्डन कि बनी इस्राईल ने मिस्रीयों को लूट लिया था 455
बाग़ वाले का क़िस्सा 354,355,356,357
बातिल
---- का गवाह न बनना 662, 663
बादलों की गरज अल्लाह की प्रशंसा करती है 162, 163
बारिश की व्यवस्था 192, 193
बिजलियों के द्वारा नसीहत 160
बिद्अत से अभिरूचि 571, 572
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
---- हज़रत सुलैमान के ख़त की शुरुआत 730,731
---- की बरकतें 731
---- दअवती और तबलीग़ी खतों की शुरूआत इस मुबारक कलिमें से 731
बुज़ुर्ग
---- बुज़ुर्गों में आस्था शिर्क की हद तक 447
---- मुसलमानों का क़ब्र में दफ़न बुज़ुर्गों को मुश्किलकुशाई के लिए पुकारना 747
---- वलियों से रोज़ी माँगना 815

---- वलियों को, हाजतों को पूरा करने के लिए पुकारना शिर्क है 825

बुतपरस्ती

---- बुतों की गन्दगी से बचना 530, 531

---- बुतों को तोड़ना 490, 491

---- का बुद्धि के विपरीत होना 686, 687, 814, 815

---- मुश्रिकों के बीच परस्पर प्रेम का साधन 818,819

बुद्धि

---- से काम लेना 154

---- का सदुपयोग 166

---- काम न लेना 836, 837

बुराई

---- को बेहतर तरीक़े से दूर करना 578, 579

---- बुराईयों को भलाई से बदल देने का मतलब 663

बेहयाई के काम

---- समलैंगिकता 818, 820

---- पत्नी और सन्तान को आँखों की ठन्डक बनाने की दुआ 662, 668

बैतलहम

बैतुल्लाह (अल्लाह का घर)

---- के लिए अल्लाह की तरफ़ से जगह निर्धारित की गई 526, 527

---- को पाक रखने की हिदायत 526, 528

---- प्राचीन घर 526, 529

(भ)

भारतवर्ष में क़ौमों की तबाही के आसार 185

मूल हत्या (देखिये क़तले- औलाद) 306, 307

(म)

मकड़ी की मिसाल 824, 825

मक्का

---- अमन का शहर 192, 193

---- हुर्मत वाला शहर 758, 759

---- शान्ति वाला हरम 788,789,836,837

मज्मउल-बहरैन 367, 373

मरयम

---- की पूर्व की ओर गोशा नशीनी 396, 397

---- के सामने फ़रिश्ते का प्रकट होना 396, 398

---- का रहमान की पनाह माँगना 396, 398

---- का गर्भवस्था में दूर के स्थान पर चला जाना 400, 401

---- बाइबिल के बयान का खण्डन कि मरयम की मंगनी युसूफ़ नाम के एक व्यक्ति से हुई थी 401

---- मसीह का जन्म 400, 401

---- का पाकदामन होना 504, 505

---- के प्रसव के लिए शांत टीले की जगह मुहैया की गई 567

मस्ज़िदें

---- इन को बुलन्द करने का हुक्म 612, 613

---- का आदर 614

---- के निर्माण का उद्देश्य 614

मस्जिदे-अक़सा (परिभाषिक नाम) 291

मस्ज़िदे-हराम 290, 291, 527

---- से लाभ उठाने का सब को समानाधिकार है 528, 529

माता-पिता

---- के साथ अच्छा व्यवहार 302,303, 304, 806, 808

---- शिर्क के मामले में उन का कहना न मानना 806, 808

मायूसी

---- अल्लाह से 524, 525

''माशाअल्लाह'' कहना 356, 357

मिस्कीन का हक़ अदा करना 302, 304

मुज़रिम

---- का अंत 422

मुतआ

---- का हराम होना 556

---- की इजाज़त कभी नहीं दी गई 555, 557

---- की छूट वाली रिवायतों की समीक्षा 556, 557

मुत्तक़ी

---- रहमान के दरबार में शाही मेहमानों की तरह जमा किये जाऐंगे 422, 423

---- के लिए ख़ुशख़बरी 426

---- को इमाम बनाने की दुआ 662, 663

मुनाफ़िक़

---- अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन से मुँह फेरने वाले 620, 621

---- रसूल की मजालिस से खिसक कर निकल जाने वाले 630, 632

मुर्दार हराम है 278

मुर्दे सुनते नहीं 750,751, 752
मुसलमानों का शिर्क में लिप्त होना 267
मुस्लिम अल्लाह का रखा हुआ नाम 550, 551
मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
---- का दीन 50, 51
---- की रिसालत समस्त जातियों के लिए 159,635
---- क़ुर्आन का चमत्कार 175, 176
---- ख़बरदार करने वाले 226, 542,543,634
---- क़ियामत के दिन गवाह की हैसियत से 266,267
---- पर सिखाने का आरोप 272, 273
---- और असरा की घटना 290, 291,292
---- जादू से प्रभावित होने का आरोप 312, 313, 638, 639
---- के लिए मक़ामे-महमूद 324, 325
---- एक मनुष्य 330, 331, 338
---- की रिसालत पर पिछले सहीफ़ों की गवाही 470, 471
---- आप पर शायर होने का आरोप 474, 475
---- दुनिया वालों के लिए रहमत 508, 509
---- पर जुनून का संदेह व्यक्त करने वाले 574,575
---- पर क़ुर्आन के गढ़ने का झूठा आरोप 634,635
---- ख़ुशखबरी देने वाले और ख़बरदार करने वाले 654, 655
---- ने कोई मुआवज़े की माँग नहीं की 654, 655
---- को लोगों के ईमान न लाने का ग़म 666, 667
---- का पत्र रोम के क़ैसर के नाम 759, 760
---- पहले से किताब नाज़िल होने की उम्मीद कहीं रखते थे बल्कि वह यकायक नाज़िल होने लगी 802, 809
---- न किताब पढ़ते थे और न अपने हाथ से लिखते थे 828, 829
मूसा (अलैहिस्सलाम) 182, 183, 290
---- को नौ निशानियाँ 332, 333
---- और ख़िज्र का क़िस्सा 368, 369,370, 371, 372, 374, 375
---- चुने हुए बन्दे 410, 411
---- को नुबुव्वत प्रदान किए जाने का क़िस्सा 430, 431
---- की लाठी के साँप बन जाने का क़िस्सा 432, 434
---- के हाथ के रौशन होने का मोज्जा 432, 434
---- की दुआ 436, 437
---- की माँ की तरफ़ प्रकाशना 436, 437
---- के दरया में छोड़ दिए जाने का क़िस्सा 438,439
---- की फ़िरऔन को तौहीद की दअवत 438, 440
---- की सामरी को फटकार 458, 459
---- का बछड़े को ख़ाक बना कर दरया में बहा देना 458, 459
---- और हारून को फ़ुरक़ान और रौशनी 486, 487
---- को फ़िरऔन की ओर नियुक्त किया जाना 566, 666, 667
---- को किताब प्रदान की गई 648, 649, 780, 781
---- की ग़लती से हुई हत्या को स्वीकारना 668, 669
---- का चमत्कार 672, 674, 718, 719, 774, 775
---- का लाठी के द्वारा समुद्र के फट जाने का चमत्कार 678, 679
---- को अल्लालह रब्बुल आलमीन की पुकार 718, 719
---- का जन्म 762, 763
---- को इल्म और हिक़मत 764, 765
---- के हाथों अनजाने में हुई हत्या 766, 767
---- का मदयन की तरफ़ सफ़र 770, 771
---- को निकाह की पेशकश 774, 775
---- का औरतों के जानवरों को पानी पिलाना 770, 771
---- मदयन के बुज़ुर्ग शुऐब नहीं थे 772
---- को तूर की दिशा में आग का दिखाई देना 774, 775
मेराज की रात मनाना साबित नहीं 292
मोमिन
---- वास्तव में कौन है 630, 631
मौत के बाद पुनः उठाया जाना 416
मौत का मज़ा हर व्यक्ति को चखना है, 832, 823

(य)

यतीम के माल के क़रीब न जाना 306, 307
यहूदी और ईसाई (देखिए अहले किताब) 174,175
यहया (अलैहिस्सलाम) 392
---- के जन्म की ख़ुशख़बरी 392
---- नाम की विशेषता 394
---- की असाधारण तरीक़े पर पैदाइश 392, 393
---- को मज़बूती के साथ किताब पकड़ने की हिदायत

396, 397
---- को बचपन ही में हिकमत का मिल जाना 396, 397
---- के गुण 396, 397
याक़ूब (अलैहिस्सलाम) 80, 101, 132, 133, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 818
---- की नस्ल में नुबुव्वत और किताब 818, 819
याजूज माजूज 378, 379
---- का उमड़ पड़ना 504, 505
---- के बारे में बेसिर पैर की रिवायतें 506
यासिर 277
यूनुस (अलैहिस्सलाम) 1
---- की क़ौम की आबादी 49
यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम)
---- का वृत्तांत 99 से 147
---- का वृत्तांत बेहतरीन क्यों हैं ? 101
---- का स्वप्न और उस का फल 100,101,102
---- का वंश क्रम 102
---- और उस के भाइयों के वृत्तांत में निशानियाँ 100, 103
---- को गुलाम बना लिया जाना 106
---- को अन्धे कुएें में फेंक दिया जाना 106
---- पर बेग़म अज़ीज़ का डोरे डालना 110,111
---- के बुरहान देख लेने का मतलब 111, 112
---- की बेगुनाही 110, 113
---- मिस्री महिलाओं की सभा 114, 115
---- क़ैदखाने में प्रचार 118, 119, 120
---- को दोनों जवानों को उन के स्वप्न फल बताना 118, 119
---- बादशाह का स्वप्न 122
---- बादशाह के स्वप्न का फल बताना 123
---- सच्चा स्वप्न ख़ुदा की निशानी 123, 124
---- के रिहा होने से इन्कार और मिस्री महिलायों की साज़िश की जाँच की माँग 122, 124
---- बेगम मिस्र का अपराध स्वीकार करना और यूसुफ़ का निर्दोष सिद्ध हो जाना 126, 127
---- को मिस्र में शासन 126, 127
---- के शासन की स्थिति 128, 129
---- यूसुफ़ के भाइयों का मिस्र आना 126, 129
---- मिस्र में राशन सिस्टम 131
---- शाही पैमाने का गुम हो जाना 132
---- का बिन यमीन को मिस्र में रोक लेना 134, 135
---- चोरी की सज़ा का क़ानून 134, 135
---- कि कूटनीति 137
---- का अपने को ज़ाहिर करना 140
---- का अपने भाइयों को क्षमा करना 140, 141
---- की महक 140, 141
---- शिष्टाचार और शराफ़त की ऊँची मिसाल 141
---- के कुर्ते से याक़ूब की दृष्टि का लौट आना 142, 143
---- के भाईयों का अपने पिता से क्षमा की विनती करना 142, 143
---- याक़ूब के परिवार का मिस्र स्थानांतरण 142,143
---- का अपने माता पिता को तख़्त पर बिठाना 142,143
---- यूसुफ़ के आगे उन के भाईयों का झुक जाना और **स्वप्न का पूरा होना** 142, 144
---- ताज़ीमी सज्दे की बहस 143, 144
---- की दुआ 142, 144
---- के वृत्तांत की महत्वपूर्ण कड़ियाँ बाइबिल से गायब 147
---- यहूदियों पर क्या चीज़े हराम कर दी गई थी 278, 279

(र)

रसूल
---- हर उम्मत के लिए 26, 27
---- केवल पुरुषों में से 146, 148
---- और नबी का अन्तर 411, 543
---- पर ज़िम्मेदारी 624
---- की सुन्नत का महत्व 625
---- को पाक चीज़ें खाने और अल्लाह से डरने की हिदायत 566, 630
---- का बुलाना एक दूसरे को बुलाने की तरह नहीं 630, 632
---- की आज्ञा के बग़ैर मजलिस छोड़ कर न जाना चाहिए 630, 632
---- पर आपत्ति व्यक्त किये जाने की सूरत में संयम से काम लेना 641
---- केन्द्रीय बस्ती में 788, 789
रहमान
---- को सज्दा करने का आदेश 654, 655
---- के बन्दे 658, 659
राजनीति

---- को ख़ुदा और धर्म से अलग करना 719
रात और दिन
---- की निरंतरता याद देहानी के लिए 658, 659
---- में निशानियाँ 754, 756
---- सुकून हासिल करने और अनुग्रह तलाश करने के लिए 794, 795
राष्ट्रवाद को अपना लक्ष्य बनाना 832, 833
रिज़्क़ (रोज़ी)
---- अल्लाह के राज़िक़ होने पर भरोसा 836
रुशदी की शैतानी आयतें 709
रुहुल अमीन (जिब्रील) 705

(ल)

लगो (व्यर्थ एवं बेहूदा)
---- बातों से बचना नमाज़ का एक लाभ 554, 555
---- चीज़ से अच्छे अन्दाज़ से गुज़र जाना 662, 663
---- बातें आधुनिक युग में आधुनिकता के रुप में 663
लिआन का आदेश
लूत (अलैहिस्सलाम)
---- का वृत्तांत 80, 83, 84
---- को इल्म और हिकमत 496, 497
---- की दअवत 696,697,700,701,742,743
---- की क़ौम का अन्जाम 742, 743
---- ने इब्राहीम की पुष्टि की 818, 819
---- की क़ौम के विनाश की स्पष्ट निशानी 822, 823
लौंडी (दासी)
---- अपनी लौंडी से शारीरिक सम्बन्ध 554, 555, 556
को कुकर्म पर मजबूर न करना 612, 613

(व)

वह्य (प्रकाशना) 246, 247, 328, 329
---- का इन्कार करने वाले 23
---- को न छोड़ने की ताकीद 60, 61
वासिक बिल्लाह ख़लीफ़ा 380
विभक्त अक्षरों की व्याख्या (देखिए हुरूफ़े मुकत्तआत) 3, 101, 393, 431
वतन परस्ती (देश-भक्ति) 833
---- का खण्डन 833
---- हुब्बुल वतन की हदीस एक गढ़ी हुई हदीस 833
वेदान्त
---- कायनात के सृष्टा की धारणा 31

(श)

शआइर का आदर 534, 535
शफ़ाअत
---- वही कर सकेगा जिस ने रहमान से फ़रमान हासिल कर लिया हो 422, 423
---- की ग़लत धारणा का खण्डन 422, 423, 481
शराब 256, 257
शहद
---- की मक्खी पर प्रकाशना 256, 257
---- में शिफ़ा 256
शहाब 206, 207
शायर
---- की पैरवी करने वाले 712, 713, 714
---- हर वादी में भटकने वाले 712, 714
---- बेअमल 712, 714
---- बे हूदा शायरी 714
---- उमरा-उल-क़ैस, फ़रज़ौक, ख़ैय्याम, मीर और ग़ालिब की शायरी 714
---- वे शायर इस से अलग हैं जो नेक और सुलझे हुए हों 714
---- दरबारे-रसूल के शायर हज़रत हस्सान 714
शिर्क
---- और बुत परस्ती 12, 13, 146, 147
---- बहुदेववादी धर्म की बुनियाद 31
---- और अनीश्वर के विरूद्ध दलील 58
---- ग़ैरुल्लाह को संरक्षक बनाना 10
---- अल्लाह का सहकक्ष बनाना 190, 191
---- का खण्डन 238, 239, 254, 255, 260, 261, 262, 314, 315, 318, 319, 335, 338, 420, 421, 478, 479, 634, 654, 655, 742, 743, 792, 793, 836
---- अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराना 254, 255
---- दो ख़ुदाओं की धारणा 251
---- त्रीश्वरवाद 251
---- शरीक (साझीदार) ठहराने की मनाई 302, 303, 310, 311
---- के फलस्वरूप तबाही की मिसाल 530, 531
---- अल्लाह के सिवा अन्य को पुकारना 546, 547
---- ग़ैरुल्लाह की परस्तिश 548, 549
---- की कड़ी सज़ा 708, 709

---- के अड्डों और मन्दिरों की सैर करना और पूजा पाठ के अवसर पर मौजूद रहना 663
---- दूसरों को संरक्षक बनाना ऐसा ही है जैसे मकड़ी का घर बनाना 824, 825

शुक्र (कृतज्ञता) का मतलब 185

शुऐब (अलैहिस्सलाम)

---- का वृत्तांत 84, 90
---- की दअवत 84, 86, 89

शैतान

---- का क़ियामत के दिन स्वीकार कर लेना 188
---- मरदूद 206, 207
---- का लोगों के करतूतों को भला बनाना 254
---- का ज़ोर किन लोगों पर चलता है 272,273,318
---- मनुष्य का शत्रु 312
---- के वादे 318
---- के वजूद का सबूत 363
---- काफ़िरों को उकसाते रहते हैं 422, 423
---- को दोस्त बनाना 516
---- के उत्पन्न किये हुए संदेह 542,543,544
---- के वस्वसों से पनाह माँगना 578, 579
---- इन्सान का साथ छोड़ने वाला 644, 645
---- किस पर उतरते हैं ? 708, 709

(स)

संघर्ष (देखिए जद्दोजहद) 836, 837

सत्ता और संप्रभुता दीन के लिए वांछित है 326

सत्य और असत्य की कशमकश का उदाहरण 162, 163, 164

सबा

---- की राजधानी 727
---- की रानी 726, 727, 728
---- सूरज के सामने झुकने वाली क़ौम 726, 727
---- हज़रत सुलैमान का सबा की रानी को मुस्लिम हो कर उपस्थित होने का आदेश 730,731
---- की हुकूमत लोकतांत्रिक नहीं थी 731
---- सबा की रानी की सूझ बूझ 731
---- सबा की रानी का इस्लाम स्वीकार करना 734, 736

सब्त का हुक्म किन लोगों को दिया गया था 282, 284

सब्र 60, 94, 140, 166, 167, 182, 186, 246, 276, 286, 466, 467, 582,

---- के फलस्वरुप जन्नत के बाला खाने 662, 664 832
---- ईमान लाने के बाद कठिन हालात 806, 807
---- समलैंगिकता 85

समुद्र

---- दो समुद्रों के बीच परदा 742, 744

सअद बिन अबी वक्कास की घटना 808

समूद 76, 78, 90, 184, 648, 694, 702, 738, 739, 740

---- हिज्र वाले 220, 221
---- के आसार 224
---- के लिए निशानी ऊँटनी 314

सरकशों का अन्जाम 416, 417

सलाम

---- अल्लाह के बन्दों पर जिन को उस ने चुन लिया 742, 743

सहाबा को बुरा कहने वाले 539

साइरस

---- का बाबुल को जीतना 376
---- का परिचय 375
---- का पश्चिमी सैन्याक्रमण 376, 381
---- का पूर्वी सैन्याक्रमण 377, 382
---- का तीसरा सैन्याक्रमण 379, 383

सामरी

---- का बनी इस्राईल को गुमराह करना 454, 455
---- का बछड़े को ढालना 454, 455
---- का गोल मोल जवाब 454, 455
---- रसूल के पद्चिन्हों से मुट्ठी भर लेने का अर्थ 454, 456
---- को दुनिया में इबरतनाक सज़ा 458, 459
---- साबई 524

साया का अल्लाह को सज्दा करना 250, 251

सिकन्दर मकदूनी 375

---- ज़ुलकरनैन की दीवार 378

सुअर का गोश्त हराम 278

सुनी सुनाई बातें बयान करना 599

सुमैया 277

सुलैमान

---- के लिए तेज़ हवा वशीभूत 496, 497
---- को ज्ञान 722, 723
---- के लिए शैतान का वशीभूत होना 500, 501

---- को पक्षियों की बोली सिखाई गई थी 722, 723
---- के लिए जिन्नों का लश्कर 722, 724
---- का चींटी की बात सुन कर हँसना 722, 724
---- की दुआ 726, 727
---- का हुद हुद 726, 727
---- हुद हुद का सबा से ख़बर ले कर आना 726, 727
---- सबा की रानी का भव्य सिंहासन और उस को हाज़िर करने का चमत्कार 734,735,736,737
---- हुद हुद का संदेश लाना 726, 727
---- के ख़त का मज़मून 730, 731
---- का सत्ता को इस्लाम के प्रसार के लिए इस्तेमाल करना 731
---- का सबा की रानी के उपहार को स्वीकार करने से इन्कार 730, 732
---- के दरबार में किताब का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति जिस ने सबा की रानी के सिंहासन को आँख झपकने से पहले हाज़िर किया 734, 735
---- का शीशमहल 734, 735

सूरज
---- का गतिशील होना 155

सूरह मरयम
---- का हब्श के दरबार में सुनाया जाना 391

स्वालेह (अलैहिस्सलाम)
---- का वृत्तांत 76, 77
---- की दअवत 694,695,738,739
---- की ऊँटनी का मोज़्ा 996,997

(ह)

हज्ज
इब्राहीम को हज्ज की घोषणा करने का निर्देश 526, 528
---- के मनासिक 530,531,534,535

हदीस
---- ''तिल्कल ग़रानीक'' एक गढ़ी हुई हदीस 543, 544

हदीस की अपनी व्याख्या का मतलब (देखिए तावीले- हदीस- का मतलब) 102
---- हराम को हलाल ठहराना 30,31
---- हलाल और हराम का हुक़्म अपनी ओर से न लगाओ 278, 279

हामान 762, 763, 769, 778, 824

हारून (अलैहिस्सलाम) 38
---- नबी 410, 411
---- मूसा के वज़ीर 436, 437, 648, 649
---- पर बाइबिल का ग़लत आरोप 455
---- को रसूल बनाने के लिए मूसा की दुआ 668, 669, 778, 779

हिकमत की बातें 310

हिजरत 246, 247,276,326
---- हब्शा की हिजरत 247
---- कौन सी मान्य है? 547
---- अल्लाह ही की इबादत की जाए चाहे वतन छोड़ देना पड़े 832, 833

हिदायत
---- देना अल्लाह के हाथ में है 330
---- में वृद्धि 420, 421
---- देना केवल अल्लाह का काम है 330
रसूल जिस को चाहे हिदायत नहीं दे सकता 788, 789

हिन्दू धर्म ग्रन्थ
---- मनुस्मृति वेद आदि के बारे में अल्लाह की किताब होने का दावा बेबुनियाद 781

हुरूफ़े-मुक़त्तआत की व्याख्या 101,155,393,431
हुरूफ़े मुक़त्तआत के बारे में इमाम राज़ी का बयान 807

हूद (अलैहिस्सलाम) 55
---- का वृत्तांत 74, 75
---- की दअवत 692, 693

زیر اہتمام: محمد صدیق قریشی
Pixel Arts
Mobail : 9820790615
Printed at : Fatima Printers
Tilak Nagar , Saki Naka Mumbai 400070

इदाऱ्याची मराठी प्रकाशने

✸ दअवतुल क़ुर्आन

(पवित्र क़ुर्आनाचे अनुवाद व भाष्य)

भाष्य ;शम्स पीरज़ादा (रह.)

मराठी अनुवाद ;मुहम्मद यूसुफ अत्तार   मुहम्मद शफ़ी अन्सारी

संपूर्ण तीन खंडात

खंड १ (पारा १ ते १०)सूरह फातिहा ते सूरह तौबा	१२०/-
खंड २ (पारा ११ ते २०)सूरह यूनुस ते सूरह अंकबूत	१२०/-
खंड ३ (पारा २१ ते ३०)सूरह रूम ते सूरह नास	१२०/-
जवाहिरूल हदीस	६५/-
तनवीरूल हदीस	७०/-
काय क़ुर्आनास अर्थासह वाचणे आवश्यक नाही	४/-
ऐका आपल्या पालनकर्त्याचे	९/-

वरीळ पुस्तकांची उर्दू , गुजराती, हिन्दी अणी इंग्रेज़ी भाषांतरे उपलब्ध आहेत

English Publications Of Idara

✲ Tafseer Dawatul Qur`an

by Maulana Shams Pirzada (Rh.) ✲ Eng. **Trans. by Abdul Karim Shaikh**

✲ **Vol.I. Surah Al-fatiha to Surah Taubah** (Para 1 to 10)	**270/-**
✲ **Vol.II. S.Yunus to S.Ankaboot** (Para 11 to 20)	**285/-**
✲ **Vol.III. Surah Room to Surah Annas** (Para 21 to 30)	**460/-**
Jawahirul Hadith	**60/-**
Tanveerul Hadith	**60/-**
Talaq When & How ?	**8/-**
Is it not necessary to read Qur'an with understanding?	**10/-**
The Prevalence of concocted and weak Hadith	**7/-**
Listen to Your Lord	**10/-**
Triple Talaq In the light of Quran & Sunnah	**10/-**
What a Corrupt Society is this !	**8/-**
English Parah Amm	**70/-**

Idara Dawatul Qur'an

59, Muhammad Ali Road Mumbai- 400 003 ✲ Phone: 23465005

इदारे की हिन्दी प्रकाशन

दअ्वतुल क़ुर्आन

तफ़सीर :

शम्स पीरज़ादा (रह.)

हिन्दीअनुवाद :

मुहम्मद नसरुल्लाह

जिल्द १

(पारा१से पारा१०तक) सूरह फातिहा ता सुरह तौबा ३००/-

जिल्द २

(पारा ११ से पारा२०तक) सूरह यूनुस ता सूरह अंकबूत ३५०/-

जिल्द ३

(पारा २१ से पार ३०तक) सूरह रूम ता सूरह नास

- मौज़ूअ और ज़ईफ हदीसों का चलन ९/-
- क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना जरुरी नहीं? ६/-
- तलाक़ कब और कैसे ? ६/-
- सुनो अपने रब (पालनहार की) १०/-
- पारा अम्म ६५/-
- तफ़सीर दअ्वतुल क़ुर्आन उर्दू मुकम्मल सेट १२००/-
- पारा अम्म उर्दू ७०/-
- तफ़सीर दअ्वतुल क़ुर्आन अग्रेज़ी मुकम्मल सेट १०१५/-
- पारा अम्म अंग्रेज़ी ७०/-

इस के अतिरिक्त मराठी, गुजराती, अंग्रेज़ी तथा उर्दू की तफ़सीरों के अलावा छोटी छोटी पुस्तकें भी हैं, जो समाज के लिए बेहतर उपलब्धीयां हैं ।

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-४०००३

फोन ; 23465005

તફસીર દઅવતુલ કુર્આન

તફસીરઃ

શમ્સ પીરઝાદા

ગુ. અનુવાદ :

સુલ્તાન અખ્તર પટેલ

- ભાગ ૧ સૂરહ ફાતિહા થી સૂરહ તવબહ પારા ૧ થી ૧૦ ૩૫૦/-
- ભાગ ૨ સૂરહ યૂનુસ થી સૂરહ અનકબૂત પારા ૧૧ થી ૨૦ ૧૮૦/-
- ભાગ ૩ સૂરહ રુમ થી સૂરહ નાસ પારા ૨૧ થી ૩૦ ૩૦૦/-
- પારએ અમ્મા સૂરહ નબા થી સૂરહ નાસ (પારા ૩૦) ૬૫/-
- તન્વીરુલ હદીસ ૭૫/-
- મૌઝૂઅ અને ઝઈફ હદીસોનુ ચલણ ૭/-
- શુ કુર્આનને સમજીને પઢવુ જરૂરી નથી ? ૧૦/-
- સાભળો તમારા રખને (સાચા સ્વામી ને) ૧૦/-
- આ કેવી દીનદારી છે ? ૧૦/-

Urdu, Marathi, Hindi, and English virsions of above Books are also available.

ઇદારા દઅવતુલ કુર્આન

૫૯, મુહમ્મદ અલી રોડ,
મુમ્બઇ-૪૦૦૦૦૩
ફોનઃ ૨૩૪૬૫૦૦૫